मजमुआ बयानात

मौलाना मुहम्मद यूसुफ साहब कान्धलवी रह०

मुकम्मल 6 हिस्से

मुरत्तिब
मुफ़ति रौशन शाह क़ासमी

मज्मूआ बयानात

मुकम्मल (6 भाग)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब कांधलवी रह०

(भाग –1)

यासीन बुक डिपो
2127, रोदगरान, दिल्ली–6

यासीन बुक डिपो

पुस्तक का नाम

मज्मूआ बयानात (मुकम्मल 6 भाग)

लेखक: हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी (रह०)

प्रकाशन : 2011

YASEEN BOOK DEPOT
2127, Gali Peerji Wali, Rodgran, Lal Kuan, Delhi-110006 (INDIA)
Phone. (S):+ 91-11-23215065,23215066,Telefax :+ 91-11-23218023
E-mail : info@yaseenbookdepot.com
Web : www.yaseenbookdepot.com

Designed & Printed in India

Typesetted at :-- Bright Graphics, ph : 9211375652
2115, Rodgran lal kuan Delhi-6

विषय सूची

क्या कहां

तर्तीब देने पर बात

इस आजिज़ नाकारह बन्दे पर अल्लाह तआला के बेशुमार एहसानात में से एक यह भी है कि इसने हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के बयानात पहला हिस्सा को तर्तीब देकर मंज़रे आम पर लाने का ज़रिया बनाया।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से यक़ीन के साथ उम्मीद है कि जिन बन्दों में ख़ैर व हिदायत की कुछ इस्तिदाद होगी वह इन बयानात को पढ़ने से इनशाअल्लाह ज़रूर मुतासिर होंगे।

यह बन्दा अल्लाह तआला के दूसरे बेशुमार एहसानात की तरह इस करम व एहसान का भी अदाए शुक्र से आजिज़ व क़ासिर है और बस दुआ करता है कि जिस तरह महज़ अपने लुत्फ़ व करम से इसने यह काम लिया है इसी तरह इसको कुबूल फ़रमाए और अपने बन्दों के लिए नाफ़ेअ बनाए और मेरे लिए ज़रिया निजात बना दे। आमिन

मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी सनुरवी
मदरसा दारूलउलूम हुसैनिया बासम रोड़ अकोला
18 सितम्बर सन 1994

हज़रत जी रह० के बयानत के बारे में अकाबिर उम्मत के तअसर्रात

साहब बयानात आरिफ बाअल्लाह, मुजाहिद फ़ि सबिल्लिाह, दाई इल्लल्लाह हज़रत अक़्दस मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ नूर अल्लाह मरकदाह की ज़ात गिरामी मुहताज तअरूफ़ नहीं। रहे आपके मुआविज़ बयानात तो इसके नफ़े व तासिर की शहादत में ऐसे चंद अकाबिर उम्मत के तअसर्रात व ख़्यालात जिन का इल्म व अमल मुसल्लम है, नक़ल कर दुनिया काफ़ी समझता हूं।

हज़रत शेखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब रह० तहरीर फ़रमाते हैं:—

'चचा जाना हज़रत मौलाना मुहम्मद हज़रत इलयास साहब रह० के विसाल के बाद ही एक परवाज़ इसने (यानी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० ने) कि जिसके मुताल्लिक़ इस नाकारा का और हज़रत अक़्दस मौलाना रायपूरी रह० का यह ख़्याल हुआ कि चचा जान नूरअल्लाह की निस्बत खासा मुंतिक़ल हुई और हर हर बात में इसका ख़ूब मुशाहेदा होता रहा। हज़रत मदनी कुद्दस सर्राह के विसाल के बाद से मरहूम में एक जोश की केफ़ियत पैदा हुई और किसी बड़े से बड़े ज़ी व जाहत शख़्स के सामने भी अपनी बात को निहायत जुर्रात और बेख़ौफ़ी से कहने का ज़हूर हुआ और वह बढ़ता ही रहा, इसके बाद हज़रत अक़्दस रायपूरी नूरअल्लाह मरकदाह के विसाल के बाद इसकी बातचीत और तकरीर में अनवर व तजलियत का ज़हूर पैदा हुआ, क्या बाईद है कि इन दोनों बुज़ुर्गों की ख़ास तवज्जोह और मरहूम के साथ ख़ास शफ़क़त और मुहब्बत का यह समरह हुआ।

मौलाना मुहम्मद युसूफ़ मरहूम के हादसे के बाद लोगों ने अजीब–अजीब सपने देखे और लिखे लेकिन एक औरत का सपना जो इस नाकारह के नज़दीक लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ वाक़ेअ है। इस औरत के मुताल्लिक मालूम हुआ कि वह मरहूम के हादसे पर हर वक़्त रोती थी, किसी वक़्त भी चुप न होती थी, बार–बार वुज़ू करती और तस्बीह लेकर बैठ जाती। और वह इसी हाल में वुज़ू करके तस्बीह लेकर बैठी थी कि इसको गुनुदगी आ गई, इसने अज़ीज़ मरहूम को (सपने) में देखा, वह फ़रमा रहे है कि क्यों पागल हो गई है, मरना तो सभी को है, ताल्लुक़ मालिक से पैदा करें, बंदे से नहीं, इस पर उस औरत ने वलहाना अंदाज़ में यों कहा—

हज़रत जी यह एक दम ही हुआ ?

मरहूम ने कहा कुछ भी नहीं, कुछ दिनों से जब मैं तक़रीर किया करता था तो मुझ पर तजल्लीयाती इलाहिया का इतना ज़हूर हुआ कि मेरा दिल इसको बरदांश न कर सका और दौरा पड़ गया। और इसके बाद मुझको एक बहुत बड़ा गुलाब का फूल सूंघाया गया, इसके साथ मेरी रूह निकल गई।

हज़रत शेख़ रह० का इर्शाद है

हज़रत शेख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिया साहब रह० फ़रमाते हैं कि काम करने वाले हज़रात से इसरार के साथ मेरी दरख़ास्त है कि हज़रत मौलाना इलयास साहब रह० के और हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० के मलफ़ूज़ात और इरशादात और दोनो की सवानिह उम्रयां और मकातीब बहुत एहतमाम से अध्यान में रखा करें कि यह काम करने वालों के लिए बहुत कीमती मोती हैं (इन मलफ़ूज़ात व इरशादात और मकातीब में जो उसूल हैं) इन उसूलों की पाबंदी काम में इज़ाफ़ा तरक्की और बरकत का सबब है।

माख़ूज़ार : जमाअत तब्लीग़ पर एतराज़ात के जवाबात पृ० 125

हज़रत मौलाना मुहम्मद मंज़ूर नौमानी तहरीर फ़रमाते हैं:–

इस आजिज़ ने पढ़ने के ज़माने में खुदा के फ़ज़्ल से मेहनत से पढ़ा, और पढ़ाने के ज़माने में भी मेहनत से पढ़ाया। ज़ेहन व हाफ़्ज़ा की नेमत से भी अल्लाह तआला ने महरूम नहीं रखा था, लिखना पढ़ना और अध्यन ही खास मशग़ला रहा। इसका नतीजा यह है कि अपने उस्ताद हज़रत मौलाना मुहम्मद अनवर शाह कश्मीरी रह० के बाद कभी किसी के इल्म से मरऊब व मुतास्सिर न हो सका, लेकिन हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० की ख़िदमत में जब हाज़िरी नसीब हुई तो महसूस हुआ कि इनको अल्लाह तआला की तरफ़ से एक इल्म अता हुआ है जो मदरसा और कुतुब ख़ाना का इल्म नहीं है।

इनके बाद मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० तक़रीरों में भी साफ़ महसूस होता था कि वही इल्म इनको भी अता हुआ है, और कुव्वत बयान मज़ीद बराँ। आपकी तक़रीर से ईमान में जान पड़ती थी और खुली तरक्क़ी महसूस होती थी और कुरआन मजीद की जिन आयतों में ईमान की ज़्यादती और इज़ाफ़ा का ज़िक्र किया गया है इनकी सही तफ़्सीर समझ में आती थी। आपकी तक़रीरों को सय्यद अब्दुल क़ादिर जिलानी सर्राह के मुआविज़ से बढ़ी क़रीबी मुशाबहत थी।[1]

1. बयानात हज़रत जी रह० पृ० 685 तज़करह मौलाना युसूफ़ साहब रह०

मक्तूब गिरामी

आरिफ़ बअल्लाह हज़रत अक़्दस मौलाना क़ारी सिद्दीक अहमद साहब बंदवी जामेअ हथूरा बांदा यूपी।

मकरमी जनाब मुफ़्ती रोशन शाह साहब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

हालात का इल्म हुआ आपकी तसनीफ़ करदा किताबें 1. मलफ़ूज़ात पहला हिस्सा 2. बयानात पहला हिस्सा 3. मकातिब हज़रत जी

मौलाना मुहम्मद युसूफ़ रह० पहला हिस्सा मौसूल हुई। बहुत पसन्द आई। यह सिलसिला आप जारी रखें बहुत से लोगों को फ़ायदा पहुचेगा। अल्लाह तमाम मुवानए दूर फ़रमाए। मेरे लिए दुआ करते रहें। अहकर सिद्दीक अहमद

मुफ़क्कर इस्लाम हज़रत मौलाना अबुल हसन अली मियां नदवी तहरीर फ़रमाते हैं:—

मुझे अपनी बे—बज़ाअती तही दामनी का पूरा अहसास है, लेकिन यह एक तक़्दीरी बात है कि इसको इस्लामी मुल्क की रिहायत और आलिम इस्लामी से वक़फ़ियत के ऐसे ज़राए और मौके मय्यसर आए जो (बिला किसी तंफ़िस व तहकीर के) इसके हमवतनों और ख़ास मुल्क आरबिया के दीनी, इल्मी और रूहानी हलक़ों को बहुत क़रीब से देखने और बरतने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। आज के दौर की मुश्किल से कोई तहरीक और कोई अज़ीम शख़्शसीयत होगी जिससे मिलने और तआरूफ़ हासिल करने की सआदत हासिल न हुई हो। इस वसीअ व वक़फ़ियत की बिना पर (जो किसी का ज़ाती कमाल और सरमाया फ़ख़र नहीं) यह कहने की जुर्राइत की जाती है कि:—

अपनी तक़ारीर व बयानात में ईमान ग़ैब की दावत और तासिर की वुसअत व कुव्वत में इस ना—कारा ने इस दौर में मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० का कोई मुकाबिल नहीं देखा।

---

1. तज़कारा मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह०।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती नसीम अहमद साहब रह० फ़रीदी अमरोहवी लिखते हैं

मैंने हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० के जानशीन इकलौते बकमाल साहबज़ादे हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० को क़रीब से देखा दूर से देखा, सफ़र में देखा, हज़र में देखा। खलूत में देखा, जलूत में देखा, उमूमी इज्तिमाओं में देखा, ख़ास महफ़िल व मज्लिस में देखा, इनकी रूह परूर बातें सुनी इनकी तक़रीरें सुनीं, इनकी तक़रीर की महफ़िल में कभी-कभी एक ही दिन में आदमी की काया पलट हो जाती थी।

यक़ीनन अकाबिर दीन की यह शहादतें हमारे इत्मीनान व तस्दीक़ के लिए काफ़ी व वाफ़ी हैं, लिहाज़ा इन बयानात का हक़ यह है कि इनको पढ़े और इन पर अमल करें। अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाए और हमें तमाम मुसलमानों को पढ़ने और अमल करने की तौफ़िक़ मरहमत फ़रमाए। आमिन

मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी

1. तज़किरा मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० पृ० 40, 43

बयान न० 1

हम ज़िक्र वाले बन गए तो ?

हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० का एक ख़सूसी खुत्बा जुमातुल मुबारक तारीख़ 6, ज़िल हिज्जा 1378 हि०

भाइयों दोस्तों और बुज़ुर्गों ! अल्लाह दुनिया और आख़िरत में कामियाबियों के हसूल के लिए और नाकामियों से बचने के लिए दीन मरहम्मत फ़रमाया है। दीन बेमाइने कुल्ली एक मुशअरा है जिसमें अलग–अलग तब्क़ात के लोग मिलकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं। दीन खुदा की ज़ात से इस्तिफ़ादा का तरीक़ा है। वह एक मेहनत को चाहता है। दीन गैर अल्लाह की वजूद की बुनियाद पर नहीं है, बल्कि खुदा तआला की वजूद की बुनियाद पर है, गैर की नफ़ी की जाती है और खुदा का ज़ात का इज़्हार किया जाता है। परवरिश न करना, इज़्ज़त और ज़िल्लत देने का ताल्लुक़ गैर से नहीं है बल्कि खुदा की ज़ात है, इसलिए यह रियायत दीन में की गई है कि यह ज़मीन, मकान, रूपये–पैसे से बढ़ जाएं बल्कि खुदा को राज़ी करने की रियायत रखी गई है। माल सामने रखकर दीन नहीं दिया गया, जो लोग यों देखेंगे कि किस सूरत से माल, मुल्क, मकान मिलता है वह दीन पर नहीं चलेंगे। सिर्फ़ एक बात सामने रखकर दीन दिया गया है, पेट भरना इज़्ज़त देना वगैरह आया खुदा की ज़ात से मौकूफ़ है और गैर से होगा।

(ला इलाह इल्ला का मतलब) यह है कि खुदा तआला

अगर चाहे सारे ग़ैरों के बग़ैर इज़्ज़त देकर दिखला देंगे, सेराब करके दिखला देंगे, और एक का वजूद खुदा के देने से क़ायम है जिस वक़्त चाहे एक शक्ल व सूरत को दूसरी से तब्दील कर दें। वजूद व अदम, इज़्ज़त–ज़िल्लत किसी पर मौक़ूफ़ नहीं बल्कि ख़ुदा की ज़ात पर मौक़ूफ़ है। पहले तो ग़ैर ख़ुदा में इख़्तियार नहीं। जो इन्सान देख रहा है वह कब्ज़ा खुदा में है और लामहदूद है।

'ला इलाह इल्लल्लाहु' का काम है ग़ैर के वजूद का इंकार और अल्लाह की ज़ात पर इक़रार करना और लाइन्तहा बतलाना अल्लाह अक्बर का काम है। हुकूमत में जो कुछ दिखाई दे रहा है वह ज़ाती नहीं है बल्कि ख़ुदा की ज़ात में मौजूद है लिहाज़ा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' का मतलब यह हुआ कि ग़ैर अल्लाह से रवाबत क़ायम करने के बजाए तुम खुदा की ज़ात से राब्ता क़ायम करो। फिर तुम्हारे लिए ऐसा इंतिज़ाम हो जाएगा जो खुदा की रज़ा में है। 'ला इलाह इल्लल्लाहु' में वजूद की नफ़ी भी है, इस्बात भी है वजूद का ताल्लुक़ कहां है कहां नहीं है। कलिमा ग़ैर अल्लाह से हमारे ताल्लुक़ को तोड़कर खुदा की ज़ात से क़ायम करता है।

दुनिया और आख़िरत में सूरखुई का नुस्ख़ा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' दिया है, दरियों, हवाओं, पहाड़ों के ताबेअ तुम न होंगे, बल्कि यह सब तुम्हारे ताबेअ हो जाएंगे, बशर्तेकि राब्ता सही क़ायम हो जाए। ज़मीनदार को कहा जा रहा है कि ज़मीन से दिली राब्ता रखने के बजाए खुदा से राब्ता क़ायम कर, जिस वक़्त ज़मीन में मेहनत को कहा जाए मेहनत कर और जब छोड़ने को कहा जाए छोड़ दे। मुलाज़मत से दिली लगाव मत रख, खुदा के हुक्म को आगे रखकर मुलाज़मत के सारे शोब्हे चलेंगे। सिर्फ़ यों देखना पड़ेगा कि असल वह चीज़ है या खुदा की ज़ात है जिसने शक्लें बनाई और आइंदा वह इन पर क़ब्ज़ा रखता है और जिस वक़्त चाहे बदल कर रख दे।

'ला इलाह इल्लल्लाहु' यह है कि हमें सिर्फ़ एक अल्लाह को सामने रखकर चलना है। वजूद के सारे सिलसिले सिर्फ़ एक ज़ात के

इशारे से चल रहे हैं। मां के पेट में, ज़मीनों के अन्दर बीच के उगने वग़ैरह तक में जो हो रहा है वह सिर्फ़ खुदा की ज़ात के हुक्म से हो रहा है। यहां तक कि नबियों तक भी दख़ल नहीं है। नबियों के हाथों नबीनों का बीना होना, कोढ़ का अच्छा होना, यह मुअजज़ात है। मुअजज़ात ऊंचे हैं यह हिदायत मौज़ुओ नुबूवत मुअजज़ात नहीं है। बल्कि मौज़ुओ नुबूवत हिदायत है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इसलिए नहीं भेजे गए कि वह मुर्दों को ज़िंदा करके दिखला देंगे बल्कि वह खुदा का रास्ता दिखलाने आए। जो इन्सानों को मंज़िल मक़्सूद तक पहुंचा दे। मक़्सद यह है कि वह लोगों में मख़्लूक नज़र हटाकर ख़ालिक़ की ज़ात का यक़ीन पैदा करें। मुअजज़ात के दलाइल नुबूवत से साबित करते हैं और मौज़ूअ नुबूवत ख़लिके खुदा को सीधा रास्ता दिखाना, अगर इसी मक़्सद में इन्होंने अपने अमल को बिगड़ लिया तो इन्होंने दुनिया में फ़साद की सूरत पैदा कर दी।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिदायत तुम्हारे हाथ में नहीं है, अल्लाह के हाथ में है। वह जिसको चाहेगा हिदायत देगा। अल्लाह का फ़रमान है।

لَا تَهْدِىْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَاۤءُ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ

यह आयत इस वक़्त उतरी जब अबू तालिब हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अपनी जान निसार करते थे। बग़ैर ईमान मर रहे थे। अबू तालिब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखते थे तो कलिमे का ख़्याल आता था लेकिन दूसरी जगह अबू जहल वग़ैरह बैठे हुए थे और वह इनका लिहाज़ करते थे। आख़िर यह कहते हुए जान दे दी कि में अब्दुल मुत्तिलब के मज़हब पर मरता हूं। जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिदायत का सरचश्मा बनकर आए हैं। अगर इनमें भी कुव्वत हिदायत नहीं है बल्कि खुदा का इस मौज़ूअ पर क़ब्ज़ा है, तो फिर ज़मीन का मौज़ूअ ज़मीन नहीं है और ग़ल्ले का मौज़ूअ ग़ल्ला नहीं, शक्लें सूरतें सब है, लेकिन हर शक्ल पर

खुदा का क़ब्ज़ा है और खुदा की ज़ात पर किसी का क़ब्ज़ा नहीं है।

खुदा की कुदरत आज़ाद है सबके बग़ैर जो चाहें बना दें। जिस तरह जन्नत दोज़ख़ फ़रिश्ते व आसमान, ग़ल्ला और फल और इंसान और जानवर जब पहले नहीं थे, इन्हें खुदा ने महज़ अपनी कुव्वत से बनाया। अब खुदा की कुदरत बदल नहीं गई। शक्लों में वजूद में आने की वजह से जिस तरह इस वक़्त खुदा की ज़ात पर मौकूफ़ थी। इसी तरह से आज भी वजूद में आ जाने के बाद खुदा ही पर मौकूफ़ है। हर जिन्स का हर जज़्ू का वजूद खुदा की रज़ा पर मौकूफ़ है। ज़रूरी नहीं कि खेती होगी तो ग़ल्ला पैदा होगा। अल्लाह चाहे तो बग़ैर खेती के ग़ल्ला बनाकर दिखला दें। बुनियाद तो इसी की ज़ात है जो सारी ज़ातों को अपनी माशियत के हिसार में लिए हुए है। लिहाज़ा दीन की शक्लें इसी वक़्त ज़िंदा होंगी जब और ज़ातों को नज़र अंदाज़ किया जाने लगे। जब जज़्बा यहां आ जाए कि चीज़ों को बनना बिगड़ना और इनका तग़य्यूर और तब्दुल एक सफ़ पर आ जावें और सिर्फ़ खुदा की रज़ा ही रह जाए तो दीन बहुत आसान है। मक़सद का रास्ता आसान है। अगर रास्ता बदलते हैं तो रसाई शक्ल बन जाती है। दरिया पर पुल बना हुआ है तो पुल पर गुज़रना आसान है और पुल छोड़कर गुज़रना मुश्किल है। यह ख़्याल अगर यों करूंगा तो पैसे नहीं मिलेंगे। इसलिए दीन का मुक़ाबला शुरूआत ही में माल और चीज़ों से डाला है। जब इम्तिहान में पास हो जाए यानी यह कि शक्लों को कितना मानते हैं और शक्लों के बनाने वाले खुदा को कितना मानते हैं हालांकि शक्लों और सूरतों में कुछ नहीं रखा हक़ीक़त खुदा की माशियत और इसके अहकामत में है। अगर इंसान थोड़े दिन में इस इम्तिहान में पास हो जाए तो इसके लिए कामियाबी के रास्ते खुल जाते हैं। शख़्सी तौर पर चलता है तो शख़्स के लिए मजमूई तौर पर चलता है तो मज्मे के लिए जो सब कुछ खुदा की कुदरत में मानना है। और खुदा की कुदरत को लेने के लिए दीन को देखकर चलता है, तो थोड़ी सी मेहनत के बाद ख़ूबसूरत वादियों में पहुंच जाएगा।

हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के दीन में क्या फ़र्क़ है ? हज़रत अबूबक्र के मुक़ाबले में बच्चे नज़र आते हैं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से तशरीफ़ ले गए और आप सल्ल० अपनी आख़िरी सांस में यह हुक्म फ़रमा चुके थे कि मुल्क शाम को लश्कर उसामा रज़ि० की इमारत में रवाना हो जाए सब लोग मस्जिद में जमा थे कि उम्मे ऐमन रज़ि० ने कहा जिनकी नीयत ऐसी थी कि किसी और की नहीं थी। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पानी मांग लेती थी। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि मेरी मां के बाद उम्मे ऐमन मेरी मां है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इनकी मिज़ाज पुर्सी को जाया करते थे। हज़रत अबूबक्र हज़रत उमर रज़ि० हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद इनकी ज़ियारत को तशरीफ़ ले गए। वह इन्हें देखकर बहुत ही रोयीं। उन्होंने तसल्ली दिलाई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए वह दर्जा है जो ख़ुदा के पास है। इन्होंने फ़रमाया कि मैं इस बात पर नहीं रो रहीं, बल्कि यों रो रही हूं कि अब वही का सिलसिला ख़त्म हो गया।

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर उसामा रज़ि० को अभी न भेजे, इनसे कुछ न हो सकेगा। हज़रत उसामा रज़ि० आए तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनको दुआ दी। एक सुबह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत हशाश बशाश थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपने घर जाने की इजाज़त चाही। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इजाज़त दे दी और सब बीवियां नहाने धोने चली गईं। और हज़रत आइशा सिद्दिका रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गोद में लेकर बैठ गईं। फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चेहरा मेरी तरफ़ किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ेहन मुबारक से ज़रा से लुआब निकाला जिसके पड़ने से मेरे बदन में सनसनी फैल गई। लोग मुल्क

शाम को रवाना हो रहे थे, इनके क़दम रकाबों में जा चुके थे, सब इसी वक़्त रूक गए। इसके बाद पूरे अरब में सिवाए मक्का व मदीना और ताईफ़ के, अरतदाल फैल गया और अफ़राद छिपते फिर रहे थे। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु जो यमन के गवर्नर थे वह भी परेशान थे। वहां अस्वद अन्सी ने नुबूवत का दावा किया था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तहज़ीज़ व तकफ़ीन के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक ने हज़रत उसामा रज़ि० के लश्कर को मुल्क शाम जाने का हुक्म फ़रमाया, लोग हैरान थे कि मुसलैमा कज़्ज़ाब ज़बरदस्त लश्कर लेकर मदीना मुनव्वरा पर आ रहा था। शुजा इसके साथ मिलकर अपना लश्कर लाया। ऐसी सूरत में हम शाम में लश्कर भेजे या न भेजे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० ने सबको जमा किया, सबकी राय भेजने की थी। लोगों ने कहा यह हालात हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने नहीं थे। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही आती थी।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० ने लश्कर को मुल्क शाम रवाना होने को हुक्म फ़रमाया, और बाक़ी डेढ़ सौ ग़ाज़ियों को लेकर क़बीलों की तरफ़ बढ़ गए। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक लश्कर रोकने पर तैयार न हुए तो हज़रत उमर ने अमीर बदलने की दरख़ास्त की अबूबक्र रज़ि० ने इनकी ढाढ़ी पकड़कर खींची और फ़रमाया इस शख़्स को अमीर न बनाए जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न अमीर बनाया। ज़ाहिर के ख़िलाफ़ चलने से यह हुआ कि रात दिन जो मुसाफ़िर जा रहे थे वह अपने अपने इलाक़ों में जाकर कहते कि हमने मुसलमानों को एक-एक लश्कर फ़्लां जगह देखा और जिस क़ाफ़िले को हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० लेकर निकले, इन्होंने कहीं सुबह कहीं शाम और कहीं शब ख़ूब मारा तो लोगों ने समझा कि मुसलमानों के पास ज़बरदस्त लश्कर है। जब रूमियों को ख़बर मिली कि मुसलमानों की कितनी फ़ौज मदीना मनुव्वरा में है। असल मुक़ाबला रूमियों से बाद

में हुआ। इस वक़्त तो शुरूआत हुई।

हज़रत उमर फ़ारूख़ रज़ियल्लाहु अन्हु हमेशा फ़रमाया करते थे कि मैं अपनी सारी उम्र की नेकियों को हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की चौबिस घंटों की नेकियों से बदलने को तैयार हूं। वह दिन जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ। और वह रात जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ग़ार में गुज़ारी। इस बात में हज़रत अबूबक्र रज़ि० सबसे आगे हैं कि ज़ाहिर के ख़िलाफ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म पर क़दम उठाया। आप फ़रमाया करते थे कि अगर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म को नज़र अंदाज़ कर देता तो सारा मदीना मुनव्वरा आग की भट्टी बन जाता। शक्लें बनाने वाले ने बनाई हैं। अगर वह चाहेगा तो शक्लों को हमारे मुवाफ़िक़ कर देगा। शक्लों और सूरतों को सामने रखकर दीन नहीं दिया गया। इंसान के सामने शक्लें आएंगी, और दीन के मुक़ाबले में आवेगा बल्कि शक्लों को वजूद देने और इसमें तब्दीली पैदा करने वालों को सामने रखकर दीन दिया गया है। मुक़ाबले के वक़्त शक्लों को नज़र अंदाज़ किया जाए और ख़ुदा के हुक्म पर पूरा अमल किया जाए। शक्ल तो अल्लाह तआला के हाथ में है। कल इसने यह शक्ल बिगड़ दी तो तुम क्या कर सकोगे। इस्लाम अमल की शक्लों का नाम है। तिजारत, खेती बाड़ी, हुकूमत में कौने सी शक्ल दीन है, अमली शक्लों का नाम ही दीन है, ख़ुदा की तजवीज़ की गई शक्लें ऐसी हैं जिसमें मजमूआ ज़िंदगी के नफ़े को सामने रखा गया है। हाकिमों, महक्मों, ताजिरों और खेती बाड़ी वालों को वह शक्ल दी है जिन से इज्तिमाई ज़िंदगी कामियाब बने। जब इन शुब्हों को अल्लाह तआला की बतलाई हुई शक्लों को लायेंगे। तो इनके अंदर सरसब्ज़ी लाएंगे। चीज़ों के एतबार से, मद्दे के एतबार से जो शक्लें बनकर आती हैं इनको नज़र अंदाज़ करना है और ख़ुदा की बतलाई हुई शक्लों को इख़्तियार करना है। जब ऐसा मुआशरा तैयार हो जाए। एक तरफ़ हाकिमों को इनकी ज़िम्मेदारियों

का एहसास दिलाया जाए और महकमों को इनकी ज़िम्मेदारियों का तो सही ज़िंदगी वजूद में आएगी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया गया कि लकड़ी हाथ से डाल दो तो वह फ़ौरन अज़्दा बन गई। और अज़्दे पर हाथ डाला तो वह फिर लकड़ी बन गई। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम घबराकर मुल्क मिस्र से भागे थे। लेकिन जब खुदा तआला के हुक्म को लेकर हज़रत मूसा अलै० जा रहे थे तो इनके साथ ज़बरदस्त ताक़त थी। अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि फ़िरऔन के सामने अल्लाह की तौहिद पैश करो अगर वह मुक़ाबले पर आएंगे, तो अल्लाह पाक इनको तोड़-फोड़ कर रख देंगे। हज़रत मूसा अलैहिस्सालम बेधड़क फ़िरऔन के पास आए और फ़रमाने लगे मैं अल्लाह का रसूल हूं, वही मूसा अलैहिस्सलाम इसकी सी. आई. डी. से छिपकर चले गए थे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन का मुक़ाबला शुरू हुआ, और बात वही कही जिससे वह गुस्से में आ जाए, यानी यह कि तू खुदा नहीं है जिसने सारे जहानों को बनाया है और मैं उसका रसूल हूं।

अंदाज़ा लगाओ इस बात से फ़िरऔन को किस क़द्र गुस्सा आया होगा, खुदा ने इस यक़ीन की कुव्वत पर शक्लें तोड़कर दिखाई, कारून को ज़मीन में धंसाकर दिखा दिया कि माल कोई ताक़त नहीं।

मुआज्ज़ात में खुदा की कुदरत को दिखलाया है। एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत सताया गया और आप बहुत ज़्यादा परेशान बैठे हुए थे। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तश्रीफ़ लाए और कहा इस पेड़ को बुलाओ। वह पेढ़ घिसटता हुआ हाज़िर हुआ तो आप सल्ल० खुश हो गए। सारी मुखालफ़त की शक्लों को मुवाफक़्त से बदल दिया। वह साहिल जो मुहम्मद रसूल अल्लाह लिखने को तैयार नहीं था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वुज़ू फ़रमा रहे थे, वुज़ू के पानी को हाथ मुंह और सीने पर मल रहा था, असल शक्ल नहीं है बल्कि वह खुदा असल है जिसकी कुदरत से शक्लों का वजूद हो रहा है। जिन्होंने शक्लों की रियायत नहीं की

और दीन पर चले और शक्लों को तोड़ा, इनके लिए शक्लों को वजूद मरहम्मत फ़रमाया। दीन शक्लों को सामने रखकर चलना नहीं बल्कि अल्लाह तआला के अहकाम को सामने रखकर चलने का नाम है। इंसान की नज़र सिर्फ़ इस बात पर जाती है जो ख़ुदा की कुदरत से ज़ाहिर हो गई है। इंसान शक्लों से मुतासिर होकर क़दम उठाते हैं और अमली ग़लतियां करते हैं, अमल ख़राब करते हैं तो शक्लें बद से बदतर हो जाती हैं, सारी ख़राबियां शक्ल परस्ती से आती हैं। और अगर ख़ुदा की कुदरत को सामने रखा जाएगा तो कमालात आएंगे।

एक शख़्स मकान वाला तो बन गया, लेकिन इसने यतीमों का माल दबाकर, बेवाओं पर ज़ुल्म करके बनाया है तो इसी मकान के नक़्शे में अल्लाह तआला इसको ज़लील करके दिखलाएंगे और अगर अमल की वजह से चीज़ों के नक़्शे ख़राब हो गए तो अल्लाह तआला अपनी कुदरत से चमका कर दिखला देंगे।

सारे शोब्हों में अमली म्यार क़ायम किया गया है इसे सामने रखकर चलना दीन है। कुदरत मुख़ालिफ़ और मुवाफ़िक़ दोनों तरह हो सकती है, अगर मुख़ालिफ़ हो गई तो चीज़ों के सारे नक़्शे ख़राब हो जाएंगे। दुनिया के अन्दर जितने शोब्हे हैं इनको छोड़कर मेहनत का मैदान क़ायम किया जाएगा कि शक्लें ख़ुदा के हाथ में हैं। अगर ख़ुदा तआला हमसे राज़ी होंगे तो चीज़ों को हमारे मुवाफ़िक़ इस्तेमाल करेंगे और अगर नाराज़ हो गए तो हमारे ख़िलाफ़ इस्तेमाल करेंगे। दावत इतनी चले कि साथियों में से जो भी शक्ल से मुतासिर हो इसकी जगह दूसरा दाई बन जाए। घर के अन्दर बच्चे मचल गए और बीवियां किसी शक्ल से मुतासिर हो गई तो इनको दावत देकर तैयार किया जाए। पहले दौर में औरतें दावत देतीं थीं कितनी औरतें है जिनकी दावत पर मर्द मुसलमान हुए हैं, कुरआन ही तो दावत है, पहले ज़माने में दस साल तक दावते कुरआन ही दी गई इसमें अगर पिटाई हुई तो इस पर सब्र किया। दस साल तक वह एक ही बात

करते रहे कि अख़्लाक़ इसका नाम है कि अपनी जान व माल से दूसरों को फायदा पहुंचाया जाए और दूसरों के हकूक़ की अदाएगी जान व माल से की जाए।

अगर नमाज़ ज़रिया यक़ीन बन गई, इल्म के हलके क़ायम होने लगे और हम ज़िक्र करने वाले बन गए तो ऐसे दाइयों का जहन सबसे पहले बदलेगा। और ऐसे लोगों को देखकर हज़ारों की ज़िंदगियों के नक़्शे बदलेंगे और फिर जो ठोकरें मारने वाले हैं वह जूते उठाने वाले बन जाएंगे इस मेहनत के लिए यह निज़ाम बनाया है कि एक बार इन्सान उम्र में तीन चिल्ले दे दे और साल एक चिल्ला देता रहे, हर माह में तीन दिन दिया करे और हफ़्ते में दो गश्त किया करें। एक दफ़ा अपने मुहल्ले में और दूसरी दफ़ा क़रीबी मुहल्ले में। अगर उम्र का तीन चिल्लों का मामूल बन जाए तो सारे मुल्कों में जमाअतों के जाने का एहतिमाम होगा। जब तुम अमल की हिम्मत पैदा करोगे तो अल्लाह तआला भी तुम्हारे कामियाबी के लिए दरवाज़े खोल देंगे।

बयान न० 2

मदीना मुनव्वरा में हज़रत जी रह० का एक खिताब

तारीख़ 3 अक्तूबर 1959 ई०

इस वक़्त सारी दुनिया में मुसलमान अपनी अपनी मुसीबतों से निकलने की कोशीश कर रहें हैं इनकी कोशीश का रूख़ सही या गलत। हमारी इस मेहनत का मक़सद यह है कि सारे मुसलमानों की कोशीश सही हो ये अपनी मुसीबतों से निकल जाएं। यह मेहनत दुनिया के सारे मोतबर से ऐसी है जैसे एक चींटी की हैसियत या लाखों की नमाज़ में एक नमाज़ की हैसियत, लेकिन अल्लाह ने एक चींटी पर भी बता दिया, और एक आदमी पर भी बताया कि वह क्या मामला करते हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बारिश की दुआ मांगने के लिए सारी कौम को लेकर चले, लेकिन रास्ते से ही वापस आ गए और फ़रमाया कि एक चींटी ने दुआ मांग ली और इसकी दुआ कुबूल हो गई। इसी तरह अगर तुम्हारी मेहनत के हालात अल्लाह को पसंद आ गए तो ज़रूरी नहीं कि सब इस काम में लग जाए, तभी इनकी मुसीबत दूर हो, बल्कि सिर्फ़ तुम्हारी मेहनत पर सबकी मुसीबत दूर हो जाएगी, अगर तुम्हारी मेहनत अल्लाह को पसंद आई।

इसी तरह अगर लाखों की नमाज़ में एक अख़्लास वाला होगा तो सबकी नमाज़ कुबूल हो जाएंगी जो एक को मिलेगा वह सबको मिलेगा।

तुम पूरी उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए दरवाज़े खुलवा सकते हो, बशर्तेकि तुम कुबूल हो गए, और अगर

तुम्हारी मेहनत कुबूल हो गई तो अल्लाह तआला सब कुछ इस पर दे देंगे।

एक हाजी ने हज के बाद सपना देखा कि दो फ़रिश्ते आपस में एक-दूसरे से कह रहे हैं कि अल्लाह तआला ने एक-एक के बदले एक लाख हज कुबूल किया, सिर्फ तुम्हारा जाना इलाक़ों के लिए दफ़इ बिला का सबब बन सकता है। अगर तुम्हारा जाना अल्लाह को पसंद आ जाए। इस रास्ते में इन्सान तबियत को चीज़ों को छोड़कर जाता है लेकिन तबियत और नफ़्स को नहीं छोड़ सकता। नफ़्स जिस तरह अपनी चीज़ों में लगाता है, इसी तरह दूसरी जगह भी अपनी ऐड़ी लगाए बगैर नहीं रहेगा। नफ़्स साथ है, शैतान साथ है चाहे कितनी चीज़ें छोड़कर जाएं ये दोनों साथ हैं, और यही ख़तरे की बात है। अब यह मुजाहेदे की बात है, अब यह मुजाहेदे का काम है हम चौकन्ने रहें और इन दोनों से बचे रहें।

अगर मज़दूरी करनी है तो सुबह से शाम तक घिस-घिस कर इतना ही मिलेगा जितना काम करेंगे लेकिन अगर बहाना तलाश कर रहे हैं तो? मुजाहेदा करना होगा नफ़्स और शैतान के करीब से बचना होगा।

मस्जिद नुबूवी की तामिर के वक्त तुर्कों ने एलान किया कि जो मस्जिद में हाथ भी लगा देगा इसको पूरे दिन की उजरत दी जाएगी चुनांचे अपने दूध पीते बच्चे को लेकर और इनका हाथ लगवाकर पूरे दिन की मजदूरी ले जाते थे। यह तो इंसानों की मिसाल है इंसानों को अल्लाह पाक से क्या। अल्लाह तआला दुनिया चाहे तो इनके बहाने के क्या कहने, वह मेहनत के वास्ते मेहनत नहीं कराते बल्कि देने के लिए बहाने बनाने को मेहनत करा रहे हैं। वह उम्मत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ख़ुसूसी मामला हदीस शरीफ़ में आता है कि एक शख़्स ने कुछ मज़दूरों को ज़ुहर तक काम पर लगाया। इनको इनकी मज़दूरी पूरी-पूरी दे दी, दूसरे

मज़ूदरों ज़ुहर से असर तक लगा दिया। इनको भी इतनी ही मज़दूरी दे दी, तीसरे मज़दूरों को असर से मग़रिब तक लगाया, उनको सबसे ज़्यादा उजरत दी। हालांकि इनका वक़्त बहुत कम था, यह उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

अल्लाह पाक हमको देने के लिए बहाना बनाने को करार है करने के लिए नहीं करार हैं बस इस काम को करने के लिए तीन पहलूओं की शबाहत पैदा हो जाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सारी रात नमाज़ पढ़ी, टांगों पर वरम हो गया। हमने अगर पिछली रात चार रक्अत नमाज़ भी पढ़ ली तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुशबहत हो गई और सारी रात की इबादत का सवाब मिल गया, जब पांच मिनट इनकी शबाहत हुई।

यह सफ़र ख़ुदा की दहश वाला सफ़र है। सारे काम करने वालों के लिए यह काम एक बहाना है हमसे मेहनत लेना महज़ देने का एक बहाना है। अब इसमें ज़रूरी है कि इनको ख़ुश कर दें हम पर भी यह करम है सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अजमईन वाला पचासवां हिस्सा भी कर ले तो वह ख़ुश हो जाएंगे और वे देंगे जो सहाबा किराम को दिया। हमको अल्लाह से फ़ैसले कराने हैं। जैसे सुलह हुदैबिया में फ़ैसले हुए थे। देखने में हम यह कि हम दब गए, हमारी नाक काट गई। लेकिन हक़ीक़त में वह फ़त्ह मुबीन थी। क्योंकि ख़ुदा की बात पूरी हो गई। और इस पर अल्लाह पाक ख़ुश हो गए, और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी तबियत पर ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ क़ाबू पा लिया। फिर बग़ैर ज़ाहिरी अस्बाब के अल्लाह पाक ने ऊंचे–ऊंचे सहाबा रज़ि० को इस्लाम में दाख़िल किया। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के आने के बाद चरवाहे ने भी कहा कि मक्का की कुजियां हमारे हाथ में आ गईं।

अल्लाह के रास्ते में निकलना बग़ैर तबियत को दबाए नहीं होता, हर मौक़े पर तबियत चलेगी बस इसको दबाना है, कुफ़्र की

शिकस्त की असली चीज़ अपनी तबियत को दबा जाने पर क़ादिर हो जाए, सिर्फ़ इस सिफ़त से सारे कुफ़्फ़ार शिकस्त खा जाएंगे।

तबियतें हज़रत ख़ालिद को चाहती थीं, लेकिन इनको मग़रूल कर दिया। सहाबा रज़ि० को सारी उम्र अपनी तबियतों को दबाना पड़ा। जब तक वे ऐसे रहे तो इज्तिमआ बाक़ी रहा और दूसरा अनासीर ग़ालिब हो गया तो इज्तिमआ टूट गया, ख़ुफ़िया दुश्मन अन्दर से मश्विरे देगा, और तबियत को उभारेगा ताअत को भी तबियत लगने से न करो। ताअत अमाले सालिहा को इनकी तर्तीब से करने का काम है। ताअत वह बनेगी कि अपनी तबियतों को दबाकर जिस चीज़ का अल्लाह का हुक्म है उसको करें। अल्लाह को ख़ूश करने वाली चीज़ यह है कि अपनी तबियत को दबाकर हुक्म की लाईन से काम किया जाए। तुम उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अमराज़ और परेशानियों का इलाज हो, बशर्तेकि तबियत को दबाकर चलो। आज अंकाया है कि अल्लाह के दीन को बुलन्द होने के लिए अपनी तबियत को दबाकर आपस में जुड़ जाएं। हममें यह इख़्लास हो कि अल्लाह का काम और दीन का काम सारे आलम में चल जाए। तबियत को दबाकर मश्विरों से काम किया जाए। अगर मश्विरा न किया जाए या मश्विरा न माना जाए तब भी तबियत उभरेगी। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के अमीर यज़ीद और अब्दुल मालिक बने वह दीन के लिए न निकले, फिर सारी उम्र रोते रहे कि मुझे अमीर से क्या लेना था, मैं क्यों न अल्लाह के रास्ते में गया। इमाम हसन रज़ि० और इमाम हुसैन रज़ि० और इमाम जाफ़र सबके सब यज़ीद के इमारत में निकले और अब्दुल मालिक की इमारत में फिरे हैं।

जो अल्लाह के लिए इस्तेमाल होने वाला बन जाएगा, और अपनी तबियतों को तोड़ने वाला बन जाएगा तो उस पर अल्लाह की रहमतें आएंगी और जो उनमें अव्वल नम्बर होगा तो इसकी वजह से सारी जमाअत अल्लाह को प्यारी होगी, तुम ये काम करोगे अल्लाह

तआला दूसरे नक़्शों को अपनी क़ुदरत से बद लेंगे।

आज मुसलमानों से शऊर निकल गया कि किस काम में हमारी आफ़ियत है और किसमें हलाकत, अल्लाह तआला इस शऊर को बदल देंगे, अगर तुम इसको सबब बन गए तो आख़िरत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ास में तुम्हारा शुमार होगा। क्योंकि जो लोग उम्मत के फ़साद को दूर करने के लिए इस्तेमाल होंगे इनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुशाबहत हो जाएगी, जितना तुम कर सकते हो अगर इतना कर लो तो अल्लाह तआला इसके दरवाज़े खोलेंगे जो हम नहीं कर सकते। वक़्त अपना इस तरह गुज़ारों कि अल्लाह को तुम्हारा निकलना पसंद आ जाए। मदीना मुनव्वरा से निकलना बहुत क़ीमती है।

काम का सारा नक़्शा जब क़ाबू में आ जाएगा जब सारी जमाअत का मज्मूई तौर से अपनी तबियत दबानी आ जाए।

एक बादशाह का वाक़िया

एक बादशाह अपने महल में सोया हुआ था। आधी रात के वक़्त उसकी आंख खुली, और दिल में अपने ख़ज़ाने को देखने की ख़्वाहिश पैदा हुई, उसी वक़्त उठकर चाबियां लेकर ख़ज़ाने को खोलकर इन्होंने जब सोने–चांदी, लाल व जवाहर को देखा जो चमक रहे थे तो दिल में ख़्याल आया कि यह ख़ज़ाना तो मेरी दस पुश्तों तक के लिए काफ़ी है। बादशाह की यह बात अल्लाह को पसंद नहीं हुई और बादशाह को दिखाने के लिए बल्कि पूरे इन्सानों को समझाने के लिए वज़ीर की भी आधी रात को आंख खुली, और ख़्याल हुआ कि मैंने हिसाब के लिए असर के वक़्त ख़ज़ाने को खोला था, लेकिन याद नहीं कि मैंने दरवाज़े को खुला छोड़ा था या बंद किया था।

इसी वक़्त चाबियां लेकर जब ख़ज़ाने के पास आया तो दरवाज़ा

खुला हुआ था, अन्दर जाए बग़ैर ही दरवाज़े को बन्द कर दिया। बादशाह ख़ज़ाने के अन्दर ही बन्द हो गया, सुबह जब बादशाह दरबार को नहीं आया तो वज़ीरों ने महल के अन्दर पैग़ाम भेजा, लेकिन महल से जवाब आया कि बादशाह आधी रात के वक़्त महल से निकले हुए हैं, और हमें कोई पता ही नहीं कि कहां गए हैं। बहरहाल बहुत दिनों तक तलाश किया, मगर कोई पता नहीं चला। पंद्रह बीस दिनों बाद जब ख़ज़ाने को खोला तो बादशाह मुर्दा हालात में ख़ज़ाने के अन्दर पड़ा हुआ मिला। और साथ एक पर्चा लिखा हुआ पड़ा था कि जो दुनिया के सोने–चांदी और जवाहरात के साथ दिल लगाता है, उसका हश्र मेरे जैसा होगा। जैसा कि मेरा हुआ।

अल्लाह पाक की मदद उतारने के लिए तीन चीज़ें अख़्तियार करनी होगी :–

तक़्वा, सब्र दुआ

बयान न० 3

कुरबानी तमाम परेशानियों का इलाज है

ढ़ाका (पुर्वी पाकिस्तान) में हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब की तक़रीर

मेरे भाइयों और दोस्तों !

दुनिया में जितने भी मुसलमान हैं, वे सबके सब अपनी जगहों पर परेशान है। और आज दुनिया में कहीं ऐसी अक़लियत और तायदाद नहीं कि चंद सौ मुसलमान हो और करोड़ों ग़ैर मुस्लिम हो, मज्मूई तौर पर ग़ैर मुस्लिम सारी दुनिया के मुसलमानों से दो गुना हैं। बहुत बड़ी तायदाद में हुकूमतें, फ़ौजों और अस्बाब व वसाईल के साथ मुसलमान हैं और मद्दी तौर पर चमकने के सारे सामान मौजूद हैं। इसके बावजूद हर जगह के हर तब्क़े के मुसलमान परेशान हैं परेशानी इन सबके लिए शआर हो गई। परेशानियों के एहसास के तब्क़े अलग–अलग हैं। कुछ दीनी नुक़्ते नज़र से परेशानियों को क़यास करने वाले हैं। तिजारत, ज़राअत, सन्अत, हुकूमत के एतबार से भी परेशानियां सोची जा रही हैं। और हर तब्क़े में परेशानी से निकलने की तदबीरें की जा रही है। रिवाज के मुताबिक़ जो समझ में आए इसका इलाज करना चाहते हैं। रिवाज के एतबार से तरीक़ा अख़्तियार करते हैं, जो मज़ीद परेशानी का सबब बनते हैं।

आज मेहनतों का रुख़ अल्लाह तआला की मदद के उसूलों पर

नहीं, बल्कि इनको छोड़कर रिवाजी तरीक़ों पर है, अल्लाह तआला मुसलमानों की आंखें खोल दें और वह रिवाज पर से मेहनतें हटाकर अल्लाह की मदद के उसूलों पर ले आएं तो यह वायदा है।

كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة باذن الله

कितनी छोटी–छोटी जमाअतें बड़ी–बड़ी जमाअतों पर ग़ालिब आ जाएं। और इनके मुक़ाबिल को घुटने टेकने पड़ें, छोटी जमाअत से जिस वाक़िया की तरफ़ इशारा है, इसमें तीन सौ तेरह थे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ भी तीन सौ तेरह थे और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बद्र में तीन सौ तेरह थे, हुनैन में तायदाद इससे भी कम है। सो जो थे वे बारह हज़ार पर ग़ालिब है। हदीस शरीफ़ में आया है कि बारह हज़ार अक़लियत होने की वजह से मग़्लूब नहीं होंगे। और जो वजुहात से बारह करोड़ भी मग़्लूब हो सकते हैं। वे वजुहात जिनकी वजह से मग़्लूब होंगे वे रिवाजी तरीक़े हैं। हमारा असली काम रिवाज से निकलकर इस्लाम के तरीक़े पर क़ुर्बानी देना। हम तो होंगे कुरबान और दूसरों की ज़िंदगी बनेंगी। हमारी कामियाबी होगी कि हमारी कुरबानी उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परेशानियों से निकल कर जाने का सबब बन गई। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत हाजरा अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की कुरबानी पर उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वजूद हो गया, यही इनकी कामियाबी है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कामियाबी क्या है और इनके साथियों की कामियाबी क्या है ? हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जो कुछ उम्मत के लिए कुरबानी देकर अल्लाह से मांगी थी इन्होंने कुरबानी देकर ऐसी उम्मत का वजूद करा लिया। जो उम्मत वजूद में थी ही नहीं।

परेशानियों के ख़ात्मे की सूरत क्या है ? और परेशनियों के वजूद में आने के अस्बाब क्या हैं ? हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उसूल ज़िंदगी से निकल गए, इस वास्ते परेशान हो रहे

हैं, न ज़िंदगी में उसूल न इलाज में उसूल। जितनी मेहनत बढ़ाते हैं इतनी ही बेउसूलियां करते हैं। जितनी ही बेउसूलियां बढ़ेंगी इतनी ही परेशानियां बढ़ रही हैं। आज मेहनत करने से मस्अला और ज़्यादा उलझ रहा है जैसे शिकार जाल के अन्दर जितना फड़फड़ाता है और ज़्यादा फंसता है। हम को परेशानी से निकलने के लिए ज़्यादा आदमी नहीं थोड़े आदमी दरकार है।

कुरबानी की कुछ साढ़ियां हैं, एक आध मस्अला में कुरबानी देना या कुरबानी का मफ़हूम नहीं है असल यह है कि तमाम मस्अलों में कुरबानी की तमाम सीढ़ियों से गुज़र जाना और इसकी छत पर पहुंच जाना, और सौ या तीन तौ तेरह पहुंच जाएंगे तो तमाम उम्मत की पेरशानी दूर हो जाएगी। वे आदमी जोहर सीढ़ी को पार कर जाएं दरकार है। हमारे काम करने वाले यों सोचते हैं कि वे तीन चिल्ले दे दें हालांकि तीन चिल्ले तो कुरबानी की पहली सीढ़ी है। कुरबानी में तरक्की कैसे होगी। जिन आदमियों ने कुरबानी पर क़दम उठाया है इनका अगला क़दम कुरबानी पर डाल दे।

जितनी क़िस्म की परेशानी और मुश्किलें सामने आती हैं। इतने क़िस्म के एतबार से इन्तिज़ामात सामने आते हैं। कुरबानी के बाद कुरबानी का मुतालबा और कुरबानी के बाद जो मुश्किल आई, इसका हल यह कि मज़ीद कुरबानी दे, ये सारी दुनिया के मसाइब हादसों और परेशानियों का हल है। हर काम करने वाला यह सोचे कि मुझको कुरबानी की चोटी पर पहुंचना है। वह उम्मते मुस्लिमा जिनकी परेशनियों के तसव्वुर से आप सल्ल० रोए हैं। आज वह हमारे सामने परेशान है और हमारा कुरबान हो जाना इस उम्मत की सारी परेशानियों का इलाज है। आप सल्ल० के सामने एक चोर लाया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इसके हाथ काट दो, और आपका चेहरा ज़र्द हो गया, जैसे ख़ून ही नहीं है, और आंखों से आसूं बहने लगे। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, आप परेशान हैं। आप सल्ल० ने फ़रमाया हां मेरे ऊपर यह क्यों शाक़ न गुज़रे कि तुम सबके

दर्मियान में मेरे एक उम्मती का हाथ काटा जा रहा है, अर्ज़ किया फिर आप हुक्म नहीं देते। वह बदतरीन हाकिम है जिसके सामने खुदा की हद पहुंचे और वह इसको पूरा न करे। तुमने अपने भाई की मदद न की, इसे मेरे पास क्यों लाए, तुमने खुद ही इनको क्यों न समझा लिया, तुमने शैतान का हाथ दिया। जिसने नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल में उम्मत के चोर के मुताल्लिक़ यह ख़्याल हो तो पूरी उम्मत के बारे में कितना ख़्याल होगा। जब चोर तक पर यह रहम है तो इनके दिल के अंदर इनकी उम्मत हर हालत में घर किए हुए है। वह अपनी उम्मत के हर आदमी का भला चाहते हैं, फ़ासिक़ लोगों का भी भला चाहते हैं, ज़िंदगी पूरी कुरबानियों में गुज़र दी। गोया इनकी ज़िंदगी के सारे मस्अले कुरबान हुए हैं। अपने मुतिअल्लक़ीन के मस्अलों को क़ियामत तक के लिए कुरबान कर दिया। जो हमसे मुहब्बत करे वे बलाओं के लिए तैयार हो जाए। जिस तरह कोई चीज़ पहाड़ की तरफ़ से फेंकी जाए, इस तरह हर मुहब्बत करने वाले पर बलाएं आती है। मुसलमानों मुस्तिकल आमद की सूरत ज़कात है। और आज हुकूमतें तक इस लालच में हैं कि ज़कात को लेकर ख़र्च करें लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ियामत तक के लिए अपने घरवालों को इससे महरूम फ़रमाएंगे।

हज़रत हारिस रज़ि० और हज़रत अब्बास रज़ि० दोनों के बच्चे जवान हैं और शादी के लिए माल की ज़रूरत है, दोनों के बापों ने अपने बेटों को ज़कात के शोब्हों में काम करने को पेश किया कि इनको भी काम करने से कुछ मिल जाएगा। बात कान में पड़ते ही आप सल्ल० ने छत पर निगाह डाली, और चुपचाप बहुत देर तक सोचते रहे। यों सोच रहें होंगे कि यह उम्मत सय्यदों को तो क्या देगी, एक ज़कात थी वह भी बन्द करके जा रहा हूं। वह फ़रमाते हैं कि आप सल्ल० ने इतनी ख़ामोशी इख़्तियार की कि हम समझे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जवाब ही न देंगे। वह जाने लगे तो हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने इनको रोका और

ख़िम्स में से इनको कुछ दे दिया, लेकिन ख़ुद इनको कुछ नहीं मिला। दामाद को कह गए कि अपना गला कटवा दें तेरी वजह से किसी का गला न कटे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर फ़ाक़ा पड़ रहा है, प्यास से बुरा हाल है। लोगों ने कहा मुक़ाबला करके दुश्मनों को ख़त्म कर दें। आप सल्ल० ने फ़रमाया मेरी वजह से किसी का गला न कटे। बीवी को पानी के लिए भेजा ख़ुद दरवाज़े की नीयत कर ली। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़्वाब में ज़ियारत हुई, अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० आपकी उम्मत ने पेरशान किया है, मैंने बहुत तक्लीफ़ उठाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बस अब हमारे पास आ जाओ। एक रात को ख़्वाब देखा, अगली रात को शहादत हो गई। आपको मालूम है मेरी उम्मत अमीरों के साथ क्या करेगी। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बराबर उम्मत के लिए कुरबानियां करते रहे।

अरफ़ात में दुआ मांगी, पहले नबी आते रहते थे, शैतान से मुक़ाबला होता रहता था अब नबी नहीं आएगा। शैतान के पंजे में फंस न जाए, मेरी सारी उम्मत की मग़्फ़िरत कर दे, दुआ क़ुबूल कर ली। सारी उम्मत की मग़्फ़िरत कर दी सिवाए ज़ालिम के। आप फिर दुआ करते रहे कि ज़ालिम की भी मग़्फ़िरत कर दे, मुज़दलफ़ा की रात वह दुआ भी क़ुबूल हो गई।

दो मस्अले हैं, एक मेरा घर, एक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत, अगर सारी उम्मत का मस्ला घर के बराबर भी नहीं तो यह दीन का काम क्या करेगा। अपने घरवालों के भूख की वजह से मारा मारा फिर रहा है और उम्मत की कोई फ़िक्र नहीं। एक तो है कुरबानी देना और एक है कुरबानी को मुकम्मल करना, और अपनी ज़िंदगी को तक्लीफ़ में डाल देना, जब दीन की मेहनत करोगे तो एक तो काम के तक़ाज़े होंगे और एक घर के तक़ाज़े होंगे। कुरबानी यह कि मेहनत करते रहे। अपने जितने तक़ाज़े आते रहें और इसके लिए जितनी शक्लें सूरतें सामने आती रहें इनके ऊपर

थूक कर दीन के लिए कुरबानी देते चले जाएं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी उठाकर देखो, इंसान के अपने जितने क़िस्म के मस्अले होते हैं और इनके एतबार से इंसान जो कुछ करना चाहता है, इस सबको छोड़कर वह कर रहे हैं जो खुदा तआला चाहते हैं। सोसाइटी और मक़ाम कुरबान हुए। शाम को छोड़ा, क़ौम को छोड़ा, बच्चे का और बच्चे की शादी का मस्अला भी कुरबान हुआ।

कामियाबी की सूरत क्या है ? यह कि तुम उम्मत की तमाम परेशानियों का हल इस काम में समझाओ इफ़तराक़ पैदा होगा कुरबानी की कमी है, इज्तिमआ टूटेगा कुरबानी की कमी से, हर वक़्त जो ज़रूरतें आएंगी अगर वे पूरी न हो सकेंगी तो इसकी वजह निकलेगी कुरबानी की कमी, चोटी पर वे पहुंचेगा जो ये सोचकर कुरबानी करेगा कि मेरा मौज़ूअ है, कि मैं कुरबानी की इस शर्त को पूरा कर दू जो इस उम्मत के मुसीबतों से निकलने के लिए ज़रूरी है, इसी पर पूरा मुआशरा बदल जाएगा।

माल वाले, हुकूमतें, ताजिर, अमीर या तायदाद कभी भी सबब नहीं बनेंगे। उम्मत के परेशनियों के खात्मे का सबब वह बनेगा जिसने अपने अपने ओहदे, अपनी इज़्ज़त, अपने रिश्तेदार, अपने दोस्त, अपना माल, अपनी जान कुरबान करना आ जाएगा। यह सबब बनेगा माल वालों हुकूमत वालों की पेरशानियों के दूर होने का।

कुरबानी की बुनियाद मेहनत के रास्ते हैं। दूसरे की मुसीबतों से निकलने के लिए अपने को मुसीबतों में डालने में डालने की बुनियाद पर एक काम है, इसकी बुनियाद कुरबानी पर है। माल व राहत ऐश जितने मस्अले घरवालों के हैं वे यहां कुरबान हैं। सहाबा रज़ि० के अन्दर बड़े दर्जे वाले जो हैं वह अपनी हर शक के एतबार से खूब कुरबानी वाले हैं। ये नबियों के शोबों के इन्सान हैं जिनकी तक्लीफ़ उठाने की वजह से अब तक हम चल रहे हैं। हमारा वजूद इनकी कुरबानियों पर है लेकिन अल्लाह तआला कुरबानियों को तसलसुल

चाहते हैं, ताकि उम्मत की मुश्किलें दूर करते जाएं, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, और इस्माईल अलैहिस्सलाम, हज़रत युसूफ अलैहिस्सलाम इन सबकी कुरबानियों की तरह कुरबानी देने वाले हैं। हज़रत सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अजमईन उम्मत का वजूद तो है और क़ियामत तक चलेगा लेकिन इस उम्मत को मुसीबतों से निकलने के लिए अल्लाह पाक ने कुरबानी को शर्त क़रार दिया है।

हुकूमत में जो अहकाम हैं, अगर अल्लाह तौफ़ीक़ दें और वह इन अह्काम को पूरा कर दें, कुरबानियां देकर तो इन हुकूमत वालों की पेरशानियां दूर हो जाएंगी, हुकूमत और ताक़त से नहीं बल्कि कुरबानी से दूर होगी, कुरबानी का एक ज़र्राह भी होगा तो इतना ज़्यादा मिलेगा कि आप हैरान रह जाएंगे कि ख़ुदा ने क्या दे दिया। लेकिन मसाइल ज़र्राह भर कुरबानी से हल नहीं होंगे। इसके लिए पूरी कुरबानी होगी। बातिल तो चलता है ख़्वाहिशात के पूरा करने के साथ। और हक़ चलता है ख़्वहिशात की कुरबानी के साथ।

زين للناس حب الشهوات .... بالعباد قل انبئكم
..... تحتها الانهار.....

इंसानों में औरतों के माल की साज़ व सागान की शेहवत है। बातिल ज़िंदगी तो इससे चलेगी कि औरतों के हासिल करने में ख़ूब मेहनत करें।

हदीस शरीफ़ में आता है कि जन्नत की औरतों को चाहे जितना कपड़ा पहना दो, इनका हुस्न नहीं छिपेगा, इनसे तो यह नहीं हो सका। कपड़े वालियां सुगियां बना दें बातिल तो इससे चलेगा कि एक मिनट के लिए भी इसको मलाल नहीं पहुंचेगा। बातिल तो औरतों में लगाएगा इनकी लज़्ज़ात में लगाएगा। बातिल तो माल से औरतों से, दुकानों से और जायदादों से बढ़ेगा, लेकिन अल्लाह तआला हैं—

انبئكم بخير من ذلكم۔

तर्जुमा—क्या मैं इससे बेहतर बात न बताऊं वह यह कि दुनिया

के ऐश को और शेहवतों के पूरा-पूरा होने को तुम आख़िरत पर डाल दो। और यहां थोड़े से मेहनती और मुतक़्क़ी बन जाओ। जिस तरह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु ने सारी ख़्वाहीशात छोड़ दी। आम लोग हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने को फ़तोहात और माल के लिए याद करते हैं। जब कानून बनता है तो इसके ऐश पर निगाह जाती है और टेक्स लगता है तो हज़रत उमर रज़ि० याद आते हैं। लेकिन वह और दूसरों की शहवतों को पूरा नहीं करते थे। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहकामात के साथ एक बात चाहना और पूरी करना तो है तक़्वा और इन अहकामात के ख़िलाफ़ और बात चाहना फ़िस्क़ है। हज़रत उमर रज़ि० के दौर में क्या है ? ख़ुद मुत्तक़्क़ी बने और जिस हाथ में लगाम दी उसे भी मुत्तक़्क़ी बना दिया, गवर्नरों की पिटाइयां हो रहीं हैं। मुत्तक़्क़ी बनने के पांच जुज़्व है।

1. साबिरीन यानी ख़्वाहिशात पर सब्र करना।

2. सादिक़ीन यानी पहलूओं के नक़्शे पर पूरे उतारने वाले और हर वक़्त की तक्मील करने वाला बन जाना और इसके मुक़ाबिल की ख़्वाहिश को कुरबान करना।

3. कानितीन यानी जान देने के अहकाम को बजा लेना।

4. मुनाफ़िक़ीन यानी माल देने के अहकाम पर पूरे उतारने वाला।

5. मुस्तग़फ़रीन यानी गुनाह न करना और अपने गुनाह का इक़रार देकर माफ़ी मांगना।

यह ही मुतक़्क़ी हैं।

इसका काम फैलाओ है। एक इसका गहराव है, जिन्होंने अपने को इस काम में लगाया है। इनके कुरबानियों के नक़्शे पर पूरा उतारना, जड़ो के साथ फलों तक का राब्ता मौजूद हो, कुरबानियां रंग लाएंगी। एक काम है, और एक काम करने वालों की कुरबानियां हैं। लोग समझते हैं कि काम से इस्लाम ज़िंदा हो जाएगा, ख़्वाहिश को पूरा करने वाला बना और कुरबानी कहां हुई। कुरबानी न हुई तो दीन

कहां है, और दीन नहीं तो मसअले कैसे दूर होंगे। राहतों में कुर्ब नहीं है, तक्लीफ़ों में कुर्ब है अल्लाह और इसके रसूल सल्ल० का।

एक कुरबानी देना है और एक कुरबानी देते रहना। कुरबानी देने पर जन्नत में दाख़िल होगा। और कुरबानी देते रहने पर असल फ़ैसले होंगे। اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا के तरज़ पर कुरबानी करना। मैं लाखों करोड़ों को नहीं कहता इनके बारे में तो फ़ैसले कराने हैं। फ़ैसले कराने के लिए चन्द सैकड़ों की ज़रूरत है, हमारी मौत कुरबानी पर आए, ख़्वाहिश पर न आए कुरबानी ही से बंगला की नौय्यत सही सही पैदा होगी, कुरबानी पैदा होगी तो इकराम होगा। जहां जाना चाहें वहां पहुंचेंगे, चाहे घरवालों को जितनी तक्लीफ़ पहुंचे, हम पूरा वक़्त देंगे। जितनी ज़रूरत हो, कुरबानियों के बग़ैर या रंग नहीं लाएगा, काम सूरत और इसकी सीरत इसकी ताक़त ग़ैबिया, इस काम में जैल में कुरबानी देना है, तालीम के वक़्त तालीम करनी है, तस्बीह के वक़्त तस्बीह, गश्त के वक़्त में गश्त करना है चाहे कुछ हो जाए, जब तुम इस काम के करने के बाद इस काम के लिए कुबुलियत के शराअत को पूरा करोगे तो फ़ैसले होंगे।

जिनकी खजूरों पर सारे अरब की मेहमानी हुई, जिनकी ज़मीनों पर सारे मुहाजिर आकर ठहरे, जिनके घरों में सारे अरब आकर ठहरे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियां रहीं, इनसे यों कह दिया कि तुमको मिलेगा हौज़े कौसर।

ग़रूर में आ जाना की हममें ताक़त है, हम यह करेंगे, मौत का आ जाना, हुनैन के वाकिआ में तर्बीयत है, हुनैन में क़बीला हवाज़न के साथ टक्कर होते ही सब भागे, सिर्फ़ बारह-बारह रह गए इनमें अकाबिर सहाबा रज़ि० है। अब हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि ऊंची आवाज़ से या मामअश्रूल अंसार यामअश्रूल अंसार कहो। अंसार दौड़े और सौ आए। बाहर सौ को भगा दिया, सौ के ज़रिए से यह बतलाया गया कि करने वाला मैं हूं, माल बहुत सा आया तक्सीम में सारा मक्का वालों को दे दिया। अंसार को कुछ नहीं मिला,

उस वक़्त अंसार पर क्या गुज़री होगी कि काम तो करें हम और माल दिया जाए दूसरों को।

हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० आए और कहा कि मेरी कौम क्या कह रही है कि जब लड़ाई का वक़्त आए तो ऐ अंसार ! ऐ अंसार! और जब तक़्सीम का वक़्त आए तो आ मेरी कौम आ मेरी कौम। फ़रमाया तुम क्या कहते हो, कहा में भी कौम का फ़र्द हूं। फ़रमाया कौम को जमा करो, चुनांचे कौम को जमा किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ऐ अंसार ! क्या तुम यह पसंद नहीं करते कि ये लोग अपने घरों को माल लेकर जाएं और तुम अपने घरों को अल्लाह के रसूल को लेकर जाओ। आप सल्ल० भी बहुत रोए और सहाबा रज़ि० को भी ख़ूब रूलाया, आप सल्ल० पर क्या गुज़रती थी आप बहुत देर तक रोते रहे, ऐ अंसार ! लोग मेरे ऊपर का लिबास हैं और तुम मेरे अन्दर का लिबास हो, अन्दर का लिबास हिफ़ाज़त का होता है, उम्मत की हिफ़ाज़त तुमसे है और मेरे ज़्यादा कुर्ब तुम्हारे साथ है, अगर अंसार एक वादी में चलेंगे और लोग दूसरी वादी में चलेंगे तो मैं अंसार वाली वादी में चलूंगा।

आप सल्ल० के सामने था कि मेरे अंसार के ऊपर मेरे बाद क्या गुज़रेगी, एहसान का एहसास और इसका बदला जितना आप दे गए इतना मख़्लूक़ में कोई दे नहीं सकता। ऐ अल्लाह ! अंसार की मग़्फ़िरत फ़रमा, इनके बेटों, पोतों और गुलामों की मग्फ़िरत फ़रमा।

ग़रज़ ख़ूब काम करना और आख़िरत में लेना या इनका मिज़ाज बना दिया था। फ़रमाया कि मेरे बाद माल में दूसरों को तुम्हारे ऊपर तर्जीह दी जाएगी। बनू कुरैज़ा वग़ैरह के माल की तक़्सीम आई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह ज़मीन दूसरों को दे दो। तुमने जो दिया है वे वापस ले लें या सब में बराबर तक़्सीम कर लें, न ये लेते हैं न वापस लेते हैं। हमारा आप का मामला जन्नत पर है हम जो कुछ अल्लाह के नाम पर दे चुके वे दे चुके, वापस नहीं ले सकते, अब जो आया है इसे मुहाजिरीन को दिला दीजिए। अंसार को

अपने बाग़ों के लिए ज़रूरत थी नहर निकलने के लिए। हुज़ूर सल्ल० के पास मश्विरा करके आए, वाह वाह अंसार आओ जी आओ अजी जो मांगोगे मैं अल्लाह से कहूंगा और जो अल्लाह से कहूंगा वह दे देंगे। फिर उन्होंने मश्विरा किया और कहा हमें तो आख़िरत में चाहिए, मग़फ़िरत की दुआ फ़रमा दीजिए। जो मुसलमानों को इंतिहाई उरूज का वक़्त था। इस वक़्त अंसार के घरों में फ़ाक़े पड़ रहे हैं। लोग दूसरों को कुरबानी करने को कुरबानी कहते हैं। और वह कुरबानी अपनी ज़ात पर हैं। ईमान और ईमान के तरीक़ों को क़ायम करके दिखला दो, अपनी मसाइल की कुरबानी के साथ। कुरबानी की लम्बी चौड़ी किताब है। हर मौक़े पर जो काम करना चाहिए वह काम करना और अपने मसाइल को क़ुरबान करना। कुरबानी की एक आध शाख़ नहीं है, इस काम के बड़े उसूल हैं, बड़ी नज़ाकतें हैं। और दूसरे शोब्हों को यों कह दे कि इनकी ज़रूरत नहीं तो ये बातें अदावतों का सबब बनेगी, और अगर यों कह दें कि ये सब ज़रूरी हैं, अल्लाह सबको चला दें, और जिन क़ुरबानियों पर यह चलते हैं इन कुरबानियों की हमें तौफ़ीक़ दें तो यह बात मेहनतों का सबब बनेंगी। ज़ुबान की ज़रा-सी बद उन्वानी बड़े बिगाड़ का सबब बन सकती है। अपनी अपनी जगह की थोड़ी-थोड़ी देनदारी पर धोखे के मत खाओ। ला दीनी और इलहाद के तूफ़ान इन जगहों से उठ रहे हैं जहां से तौहीद और इरफ़ान के समुंद्र चला करते थे। आज शैतान की मुअशरत चल रही है, जहां हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुअशरत चली थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी आंखों से शैतान को देखा है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह मेरा ख़लीफ़ा है, इसे नवाज़ता हूं, इसे सज्दा करो, और इसे एज़ाज़ वाला नहीं समझा। शैतान के धितकारे जाने की वजह इंसान है, नवाज़े हुए के साथ मिल जाए तो चलो इसका कुसूर माफ़ कर दें नहीं फ़रमाया जो तेरे साथ मिल जाएगा तो तेरी तरह धितकारा हुआ हो जाएगा। यह आपकी हयात का जान का माल का दुश्मन है। पहले इन सीढ़ियों पर लाना

है कि आपकी आख़िरत बिगड़ जाए फिर दुनिया बिगड़ जाए। यह आपकी हायात नहीं चाहता। आपके घरवालों के अन्दर आगे लगवाना चाहता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चौबीस घंटे की मुअशरत में शैतान के बचने के तरीक़े बतलाए हैं। पाख़ाने में जाओ या बद फ़ालियां करता है, जंगल में जाओ तो लोगों को बे पर्दगी के लिए लाता है, इसके लिए फ़रमाया कि परदे की जगह जाओ, वरना रेत की मुंडेर बना लो और यह दुआ पढ़ लो। सोया करो तो आग और रोशनी को बुझाकर सोया करो, ताकि शैतान जानवरों को तुम्हारे घरों को आग लगाने का ज़रिया न बनाए। (खाने पर एक आदमी और एक लड़की के आने का वाक़िआ) फ़रमाया खुदा की क़सम इन दोनों के हाथों के साथ मैंने शैतान को भी पकड़ा है। कई सहाबा रज़ि० का वाक़िआ रात को शैतान को पकड़ लिया, चोरी कर रहा था। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु वाले वाक़िआ में सदक़े की खजूरें हैं। और इब्ने अबी काब रज़ियल्लाहु अन्हु के वाक़िआ में ज़ाती खजूरें हैं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० वाले क़िस्से में है कि आपने सुबह को फ़रमाया रात को तुम्हारे क़ैदी का क्या हुआ ? कहा हुज़ूर सल्ल० अह्द कर गया है, अब नहीं आएगा। फ़रमाया झूठ बोलता है, अब के फिर आएगा। फिर पकड़ा, कहने लगा आयतुल कुर्सी पढ़ लिया करो शैतान नहीं आएगा। फ़रमाया है, तू झूठा, लेकिन बात सच्ची कह गया है। खाने में शरीक होता है शैतानियत का मद्दा पैदा हो जाए और खाना थोड़ा हो जाए, घर के किवाड़ बिस्मिल्लाह कहकर लगाया करो, तो शैतान तुम्हारे घर में दाख़िल नहीं होगा।

एक क़िस्म इंसानों की ऐसी है जो शैतान और इंसान के मिले हुए नुत्फ़े से तैयार होती है सूरत इंसान और ख़सलत शैतान। शैतान की एक मुअशरत है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसके मुक़ाबले में अपनी मुअशरत को खड़ा किया है, शैतान की मुअशरत की बुनियाद औरत और माल के नक़्शे हैं, औरत इत्र वह लगाए जिसकी ख़ुशबू न हो, रंग मिला हो, जो औरत अपने घर के अलावा सज कर

निकले, वह औरत ज़ानिया के हुक्म में है।

साहब क्या करें बीवी नहीं मानती, निकाह ऐसे हो, मकान ऐसा हो बीवी ऊपर बैठी हुई हैं, वह क़ौम कभी फ़्लां नहीं पा सकती जो अपने मस्अले पर औरत को ग़ालिब कर दे, हर मुल्कों में अलग-अलग जगहों में औरतों को बिठाना या फिर ख़ुद अपने पैरों पर कुलहाड़ी मारना है, शैतान चाहता है कि औरत जिसके ज़रिए जन्नत से निकाला है, आगे ही औरत ही को इस्तेमाल करे कि एक औरत से हज़ारों को दोज़ख़ में पहुंचा दें। फ़रमाया जो दो मर्द व औरत एक जगह इकट्ठे हों तो तीसरा शैतान वहां होगा। भाईयों-भाईयों, खानदानों, क़ौमों की लड़ाई लाता है, औरत और माल के रास्ते से लिबास में मुक़ाबला, ग़िज़ा में मुक़ाबला, औरतों के ज़रिए से मुअशरत की जो बेदीनी है आपकी नमाज़, रोज़ा, तालीम को ख़त्म कर देगी, शैताना ऐसे मुअशरह को उठाता है कि सारा माल अपने आप पर लगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसके मुक़ाबले में एक मुअशरत लाए हैं। मुअशरत की बेदीनी जिस जगह पर आएगी, बाक़ी सारे दीन को लेकर डूब जाएगी अब मस्अले यह है कि कुरबानी दो तब मअशरा बदल देगा। हज में मुल्क को छोड़ना है, ज़कात में माल का ख़र्च करना है, रोज़े में शहवत को दबाना है, नमाज़ में ख़्वाहिशात और तफ़ुक्कुरात को रोकना है, इनकी बुनियाद का मुअशरा उठेगा, अनासीर अरबा से कमाई का नक़्शा तैयार करो, यानी ईमान, अख़्लाक़ इल्म ध्यान कमाई के नक़्शे अगर अनासीर अरबा नहीं आए तो हमारी नमाज़ कमज़ोर है हमारा रोज़ा कमज़ोर है, हमारी ज़कात कमज़ोर है,। कुत्ते और सूअरों की सी मुआशरत पर चल रहे हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसे ख़ैर-खवाह की मुआशरत महबूब न हो और शैतान की मुआशरत महबूब हो, जब तक मुआशरे का मुक़ाबला करता रहा, मुसलमान भी फल-फूलता रहा और जब मुक़ाबल ख़त्म हो गया तो मुसलमान भी ख़त्म हो गया, दुश्मन असल कौन है ? कामुहीद बनना मुम्किन नहीं। काफ़िर असली दुश्मन नहीं, इनका हर वक़्त इम्कान है कि कलिमा पढ़

लें मुहीद हो जाएं, ये तो दुश्मन के साथी हैं, इस वास्ते दुश्मन हो गए। सांप इतना दुश्मन नहीं जितना शैतान दुश्मन है, अभी दुश्मन का यक़ीन नहीं, मुअशरत की तरफ़ वह लिए चला रहा है। पढ़ लो नमाज़ बेहतरी देखी नमाज़, मुआशरत को एक धक्का आएगा तो सब नमाज़ ख़त्म हो जाएगी। पहले जो तूफ़ान आया, बहुत कुछ ख़त्म हो गया, इससे अगला तूफ़ान आएगा, बाक़ी रहा सहा भी ख़त्म हो जाएगा। शैतान की मअशरत में ग़ीबातें बोहतान हैं, ऐबों को उछालना, हंसी उड़ाना है, फिर कदोरतों के ऊपर डालना है, आख़िरत में नुक़्सान है ही, दुनिया में भी नुक़्सानात है। मुआशरत के एतबार से आज का दौर बदतरीन दौर है। कुत्तों, सूअरों की तरह मुआशरत की जा रही है और यह नहीं जानते कि चक्के के अन्दर ज़ेहर दिया जा रहा है, जो महबूब हैं। खुदा की क़सम इनकी मुआशरत महबूब है। और जो मबग़ूज़ हैं, इनकी मुआशरत मबग़ूज़ है, आपस की अदावतें, बहुत से रास्तों से आ रही हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपस क़ी मुहब्बतें बहुत से रास्तों से चलाई थीं। हायात वाली मअशरत तो ख़त्म हो गई, मौत वाली मुआशरत में हम आ गए, फिरने में भी कुरबानी होगी, फिरने में किस तरह फिरो। दूसरों की रियायत के साथ, अफ़हाम व तफ़हीम के साथ फिरो, इसके अन्दर अल्लाह तआला ऐसा करें और नेमतों के दरवाज़े खोल दें, कोई आकर पांच लाख रूपये दे दे, उसे लगाओ और फिर कुरबानी दो कि जी आकर लगाना सीख लीजिए, फिर खुद चलाये।

कुरबानी देते हुए मुल्क व माल पर ठोकर मारते हुए ईमान की दावत के लिए मेहनत करते हुए और अपनी जज़बात को कुरबान करते हुए हर वक़्त निकलो जिस तरह अपने जज़बात को कुरबान करना पड़ेगा। दूसरों की ख़राबी में वजह निकाल लो, इस्लाम की और अपनी ख़ूबी में वजह निकाल लो, अपने कुछ न होने की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कह रहे है कि ख़ालिद रज़ि० को मार दो, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नहीं इसने मुसलमान समझकर

क़त्ल नहीं किया है, मुसलमान न क़रार देने में इनका फ़ैसला ग़लत है इसकी बीवी से निकाह किया रहम कर दो। इसने ग़ैर मुस्लिम की बीवी क़रार देकर निकाह किया, फ़ैसला में ग़लती की तो यह दूसरी बात है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में ख़राबी आ जाए, तो सब छोड़ देते हैं। अपने बच्चे को पख़ाना की वजह से नहीं छोड़ते। इख़्लास और इकराम मुस्लिम का मफ़हूम अगर अपना वजूद गिरामी पर किया तो ख़ूब जूता चलेगा। जो अपने को नीयत के एतबार से टटोलेगा, अपनी हैसियत को अपनी निगाह में गिरा लेगा। जिसकी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ मांगते हैं।

ऐ मेरे रब तू मुझे अपनी बारगाह में पसंद फ़रमा ले, ऐ मेरे रब तू अपने लिए मुझको मेरी नज़रों में ज़लील रख और दूसरों की नज़रों में इज़्ज़त वाला कर दे। शैतान इसी में तो मरा कि मैंने इतना किया और यह कल का बच्चा इसको मुझसे सज्दा कराएं।

सही नीयत का मतलब सिर्फ़ इतना ही नहीं कि जब अमल करो तो नीयत सही हो। बात यह है कि शरू में नीयत ठीक की जाए और आख़िरी में ख़ुद ख़राब क़रार दी जाए। जब अपनी निगाह में हक़ीर होगा वह कभी शोहरत नहीं चाहेगा, करने में सही नीयत करके करना और करने के बाद अपने आपको गिरा देना कि मैंने ठीक नहीं किया। जब तुम तालिब इकराम के बनोगे तो ख़ुदा तुम्हारा इकराम नहीं कराएंगे, बल्कि दुश्मन बना लेंगे और अगर इकराम करांएगे तो अलकाए शर के एतबार से इकराम करांएगे और अगर तुम इकराम की तालीब नहीं बनोगे तो फिर वह इकराम करांएगे।

मैं कुछ नहीं मैं ख़राब हूं, जो मैंने किया वह ऐसा नहीं किया जो मेरी कहीं पूछ लें, पूछने के क़ाबिल नहीं हूं। वह अपने करम से पूछ लें, मैं इसकी ख़िदमत करूं। ताकि ख़ुदा इसकी वजह से ग़लतियों की वजह से, बेउन्वानियों की वजह से मुस्लिम का इकराम करना मत छोड़ो दो निस्तबतें हैं, एक तो अपने ईमान की निस्बत है, और एक

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उम्मती होने की निस्तबत है, ज़रूर जन्नत में जाएगा चाहे वह सज़ा के बाद जाए, और चाहे करम करके शुरू ही में पहुंचा दें। मैं तो उनका उम्मती होने की वजह से इसका इकराम नहीं करता तो क्या गुस्सा नहीं होंगे। नमाज़ी होने की वजह से भी इकराम करो। खुश अख़्लाक़ होने की वजह से भी इकराम करो। और कुछ नहीं तो मुसलमान होने की वजह से भी इकराम करो। और अपने को नीयत के एतबार से गिराओ। और दूसरे को उम्मती होने के एतबार से इकराम करके उठाओ। अपने को अपनी नज़र में गिराना सही नीयत है, दूसरे की ग़लती नज़रअन्दाज़ करना इकरामे मुस्लिम है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु गश्त किया करते थे, एक बूढ़ा था इसको इसकी बांदी शराब पिला रही थी, हज़रत उमर रज़ि० अन्दर गए। उसने कहा मैंने एक जुर्म किया है और आपने कई जुर्म किए हैं। एक यह कि हुक्म है कि बे इजाज़त किसी के घर में न जाओ, आप बग़ैर इजाज़त आए, दूसरे यह कि सलाम करके जाओ, आप बग़ैर सलाम के आए हैं, तीसरे यह कि दरवाज़े से आओ, आप दीवार फंदकर आए, चौथे यह कि तजस्सूस मत करो, आपने तजस्सूस किया। हज़रत उमर रज़ि० रोते हुए चल दिए। दरबार में कई दिन बाद नज़र पड़े, तख़्लीया ने बताया कि मैंने उसी दिन छोड़ दी। ज़ैद बिन अरकत रज़ि० क्या पी रहे हैं ? यही तो है तज्ज़सूस, मेरे से गुनाह हो गया, इसका कफ़्फ़ारा क्या है ? इसका कफ़्फ़ारा यह है कि इस बात के देखने से पहले जो वक़अत तुम्हारे दिल के अन्दर थी, इसकी वह वक़अत बाकी रहे। इकरामे मुस्लिम की बात यह है कि अपना तो किसी पर एक ज़र्रा के बराबर भी इस्तहक़ाक मत समझो, एक दूसरे के काम आना तो यहूद व नसारा में मिल जाएगा। वे एक दूसरे के साथ नेकियां करते हैं नेकियां लेने के लिए। जिस बात की वजह से आदमी चाहता है कि मेरा इकराम हो। इस वजह ही को ख़त्म कर दो, यह भी कुरबानी होगी, सब कुछ लगा दिया, और कुछ न तलब किया,

एक–एक की कुरबानी लाखों की मुसीबतों के ख़ात्मे का सबब बनेगी, या चीज़ों का जादू ख़त्म हो जाए और बातिल टूट जाए, इसके लिए कुरबानी की ज़रूरत है। इसके आगे का मस्अला यह है कि जो जितनी कुरबानी का आदी हो, इससे आगे की सतह पर आए।

ग़ज़्वा उहूद में जब मुसलमान के पैर उखड़े हैं। सहाबा ने कहा, इसमें मरना है लेकिन हमें यह नहीं बरदाश्त करना कि जहां हमें होना चाहिए था, वहां हम नहीं।

मुसलैमा कज़्ज़ाब को दौर चल रहा था, दो क़िस्में हैं, एक तौबा वाले, एक मेहनत वाले, आजकल तब्लीग़ वाले तौबा में ज़्यादा हैं। यानी वजुहात पर जो चिल्ला दें। मुसलैमा कज़्ज़ाब से मुक़बाले में दोनों जमा हैं। तौबा वालों में जमाओ ही नहीं है, मर यह नहीं सकते, कुरबान यह नहीं हो सकते, मुसलैमा कज़्ज़ाब के मुक़ाबले में दोनों इकट्ठे हो गए। एक अबूबक्र ! हमारी तौबा क्या है ? फ़रमाया तौबा यह कि जिस नुबूवत का तुमने इक़रार किया था, इस नुबूवत से जाकर तुम मुक़ाबला करो, वहां मरने की वजह से तौबा थी, यह मौत दिखलाई दी, तो यहां तौबा हो गई। जब लोग मैदान से भागने लगे तो एक तबक़ा पुरानों का कहने लगा कि हमसे यह बात देखी नहीं जाती कि जहां हमको होना चाहिए था वहां हम न हो, और वहां हो, जहां हमें होना न चाहिए। ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ि० और सालिम हुज़ैफ़ा रज़ि० ने अपने आपको घुटनों से ऊपर तक ज़मीन में दबा लिया, बाक़ियों ने सोचा कि इस तरह मस्अला हल नहीं होगा। आवाज़ लगाई ऐ अंसार! अबू अक़ील अंसारी सहाबी ज़ख़्मी पड़े हुए थे ख़िसकते हुए वहां तक पहुंचे, जहां से आवाज़ लगाई गई थी। और कहा कि अंसार तुमने काम करके दिखलाया था, जिस तरह पहले करके दिखलाया था, अब फिर करके दिखलाओ।

चालीस हज़ार दुश्मन बाग़ में छूप गए। एक पुराने हज़रत बराअ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मुझे अन्दर फेंक दो, मैं दरवाज़ा खोलूंगा। पंद्रह को क़त्ल किया, नव्वे ज़ख़्म खाए और किवाड़

खोल दिए।

ऐसे सैकड़ों पूरी दुनिया के नक़्शे बदलने की गारन्टी और ज़मानत अपने अन्दर लिए हुए हैं। इसमें मुआशरत बदलेगी। ऐसे मकान और ऐसे ठिकाने फिर नहीं रहेंगे सिवाए मरने के सिवाए कुरबान होने के, सिवाए इस्लाम और दीन के नक़्शे क़ायम होने के।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हज़रत ख़ालिद रज़ि० के दिल की चाह बस एक थी, शिर्क वाले ज़लील हो जाएं, और इस्लाम और इस्लाम वाले चमक जाएं।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं अल्लाह की राह की नक़्ल व हरक़त की वजह से कुरआन पाक पूरा न पढ़ सका, खुदा के रास्ते की तक्लीफ़ की रात में जिसकी सुबह को में क़त्ल किया जाऊं वह मज़ा आता है जो इस रात में नहीं आता, जिसमें एक नई दो शीज़ह मेरे निकाह में आई हो,

मरते वक़्त हज़रत ख़ालिद रज़ि० दुआ कर गए, ऐ अल्लाह ! इन बुज़ुर्गों को रात को नींद न आए, अब कुरबानी वाले जो दुआ कर गए तो फिर हमारी पेरशानियां कैसे दूर हो। हर आदमी को अपनी सतह बुलंद करनी है, कुरबानी पर इस्लाम चमकता है। एक कुरबानी दो नक़ल व हरक़त के एतबार से, एक उसूल इख़्तियार करने के एतबार से है।

बयान न० 4

दावत ईमान व अमल

(हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० की एक तक़रीर मज़मून के पैरीया में।)

ज़िला बस्ती के एक इज्तिमा से वापस आते हुए हज़रत मौलाना मम्दूह 29 मई 1962 ई० को लखनऊ तशरीफ़ लाए और उस दिन यही कियाम फ़रमाया। सुबह आठ बजे के बाद यहां के तब्लीगी मरकज़ में आपने एक आम इज्तिमे में को ख़िताब फ़रमाया। इस नाचीज़ ने मौलाना की इस तक़रीर को सुनने के साथ–साथ क़लमबन्द भी करने की कोशीश भी की थी। इसी को मैंने नाज़रीन 'अल फुर्क़ान' के लिए मन्दरज़ैल मज़मून की शक्ल में मूरत्तब कर दिया है। अब यह जिस शक्ल में नाज़रीन के सामने है पूरे लफ़्ज़ों के साथ हज़रत मम्दूह की तक़रीर तो नहीं है, लेकिन यह वह ज़रूर है जो मैंने समझकर अदा करने की कोशीश की है, जहां तक मुझसे बन पड़ा, मैंने हज़रत मौलाना के अन्दर को भी निभाने की कोशीश की है। बहरहाल अब जिस सूरत में इसको इशाअत के लिए मैं दे रहा हूं, इसकी ज़िम्मेदारियां हों।

(ख़ाकसार मुहम्मद नक़ी फ़ारूक़ी)

<u>ख़ुत्बा मस्नूनह के बाद।</u>

दीनी भाईयों और दोस्तो !

अल्लाह तआला के कानून है कि इस दुनिया में जो कोई जिस मक़सद के लिए भी इसके तरीक़े पर मेहनत करेगा, उसे वह मक़सद किसी न किसी तरीक़े में ज़रूर हासिल होगा। अब अगर कोई शख़्स

दुनिया में किसी चीज़ को कोई मक़्सद बनाकर दुनिया के तरीक़े पर इसके लिए मेहनत करे, अल्लाह तआला जिस हद तक चाहते है इसको वह चीज़ अता फ़रमा देते हैं, और जो शख़्स आख़िरत को मौज़ूअ और मक़्सद बनाकर उसके लिए सही मेहनत करे, उसको अल्लाह तआला आख़िरत की नेमतें भरपूर इनायत फ़रमाऐं।

आख़िरत की मेहनत के दो दर्जे हैं। एक यह कि आदमी पूरी ज़िंदगी तो इस तरह न गुज़ारे जिस तरह आख़िरत के तालिब को गुज़ारनी चाहिए और अपने आपको दीन को पूरा–पूरा ताबेअ तो न बनाए मगर कुछ काम अल्लाह की रज़ा वाले करे, इसकी मिसाल उस शख़्स की सी है जो किसी कारख़ाने में थोड़ा–सा हिस्सा डालकर शरीक हो जाए, यह आदमी कारख़ाने में हिस्सेदार तो ज़रूर हो जाता है लेकिन अपने हिस्से का नफ़ा भी जब ही मिलेगा, जब कारख़ाने का हिसाब हो और मुनाफ़े की तक़्सीम का वक़्त आए, दर्मियान में अगर इसे ज़रूरत हो तब भी नहीं मिल सकता। हत्ता कि अगर अपनी किसी ज़रूरत के लिए अपना माल ही इसमें से निकालना चाहे तो इसका निकलवाना भी इसके इख़्तियार में नहीं है।

इस तरह जो शख़्स आख़िरत के लिए अमल करता है वह आख़िरत की नेमतों में हिस्सेदार तो ज़रूर बन गया, लेकिन इस हिसाब में इसको उसी वक़्त कुछ मिलेगा जब आख़िरत में पूरी ज़िंदगी का हिसाब–किताब होगा। और जो शख़्स अपनी पूरी ज़िंदगी दीन के हवाले कर दे और अपने हर काम में अल्लाह की रज़ा और आख़िरत को सामने रखे, इसकी मिसाल उस शख़्स की सी है जो अपने ज़ाती माल से अपना कारख़ाना क़ायम करे, वह जब चाहे कारख़ाने के मुनाफ़े में से और असल माल में से भी निकाल सकता है।

मोमिन कामिल का हाल यही है, वह अपने ईमान और अमल का फल आख़िरत से पहले दुनिया में भी पाता है और अल्लाह तआला इसको इस दुनिया में भी 'हयाते तय्यिबा' अता करता है, वह दुआ करके भी अल्लाह तआला से अपने मसाइल हल करा लेता है।

अल्लाह और इसके रसूल की असल दावत इसी दर्जे के लिए हैः–

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً۔

ऐ ईमान वालो ! पूरे पूरे इस्लाम में आ जाओ और अपनी पूरी ज़िंदगी को ख़ुदा की फ़रमांबरदरी में दे दो

जो लोग ऐसा करेंगे उनके लिए अल्लाह का वायदा है कि अल्लाह के ग़ैब से इनके मसाइल हल करेगा।

۔(وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ لَا يَحْتَسِبُ)۔

ज़िंदगी के मसाइल के लिए मेहनत के दो तरीक़े हैं। एक तरीक़ा यह है कि इस कायनात के जिन चीज़ों से मसाइल हल होते नज़र आएं सीधे उन चीज़ों पर ही मेहनत की जाए जैसे ग़ल्ला हासिल करने के लिए ज़मीन पर (यानी ज़राअत पर) मेहनत की जाए। दौलत हासिल करने के लिए दुकानों पर (यानी तिजारत पर) मेहनत की जाए। यानी जो चीज़ इस दुनिया में जहां से हासिल होते हुए नज़र आए, उसके हासिल करने के लिए बस उसी शै पर मेहनत की जाए। यह तरीक़ा आम इंसानों को बल्कि हेवानों को भी है। दुनिया के सारे हेवानात का यही हाल है कि इनको जो चीज़ जहां से निकलती हुई दिखाई देती है उसको वहीं से हासिल करने की वह कोशीश करते हैं, इसके आगे–पीछे वह कुछ नहीं जानते हैं।

दूसरा तरीक़ा अंबिया अलैहिस्सलाम और इनके साथियों का है, वह यह यक़ीन रखते हैं कि सब कुछ अल्लाह के क़ब्ज़े इख़्तियार में है और इसके ज़ैरी हुक्म है। ग़ल्ला जो ज़मीन से निकलता हुआ दिखाई देता है वह अल्लाह के हुक्म से निकलता है।

(وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ)۔

सेहत व शिफ़ा जो बज़ाहिर दवा से हासिल होती हुई मालूम होती है। दरअस्ल अल्लाह के हुक्म से हासिल होती है।

(وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ)

इसी तरह नफ़ा जो बज़ाहिर तिजारत और दुकानदारी से हासिल होता हुआ नज़र आता है वह अल्लाह के हुक्म से मिलता है, अगर अल्लाह न चाहे तो न मिले।

ग़रज़ इस कायनात की किसी चीज़ से जो कुछ होता हुआ नज़र आता है, अंबिया अलैहिस्सलाम ने बतलाया कि वह दरअस्ल उस चीज़ से नहीं होता, बल्कि अल्लाह के हुक्म से होता है

مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

इसलिए उनका और उनके मानने वालों को तरीक़ा यह है कि वह तमाम मसाइल की कुंजी अल्लाह तआला के हाथ में यक़ीन करते हुए उन आमाल व अख़्लाक़ पर ज़ोर देते हैं जिनसे अल्लाह तआला की रज़ा वबस्ता है, वह पूरे यक़ीन के साथ कहते हैं कि अल्लाह की रज़ा वाले आमाल व अख़्लाक़ इख़्तियार करो अल्लाह के इरादे से तुम्हारे मसाइल की तरफ़ मुतावज्जोह हो, इसलिए कभी—कभी तो वह ज़ाहिरी व दुनियावी अस्बाब को हाथ लगाए बग़ैर ही बिल्कुल मुअज्ज़ाना तौर पर अल्लाह तआला से बड़ी बड़ी तब्दिलियां करा लेते हैं। जैसे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और उन पर ईमान लाने वालों को जब इनकी क़ौम ने बहुत सताया और इन पर अर्सा हायात तंग कर दिया तो इन्होंने बस अल्लाह की बरगाह में हाथ उठाए और पूरी क़ौम की तबाही मांगी

(رَبِّ اِنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ)

رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا

अल्लाह तआला ने एक सख़्त तबह करने वाला सेलाब भेजा, जिसने एक ज़ालिम को भी ज़िंदा न छोड़ा।

(فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ـــــ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ)

इसी तरह जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब अजिज़ आ गए

तो इन्होंने फिऔन और उसकी हुकूमत का ज़ोर तोड़ने के लिए कोई दुनियावी और मद्दी तदबीर तो नहीं की, इनके हालात ऐसे थे, बल्कि अल्लाह तआला की कुदरत और ताक़त पर कामिल यक़ीन करते हुए नमाज़ों के बाद दुआ की कि:—फिऔन जिस दौलत व हुकूमत के बल पर यह जुल्म ढा रहा है और तेरे बन्दों को तेरी बन्दगी के रास्ते से रोक रहा है, ऐ अल्लाह ! तू उस माल व दौलत और ताक़त व हुकूमत को मिटा दे और झाड़ू फेर दे। رَبَّنَا

إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهُ زِينَةً وَّأَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ

अल्लाह तआला ने उनकी यह दुआ कुबूल की, और फिऔन और फिऔनियत को निस्ते नाबूद कर दिया गया।

इसी तरह क़ौमे समूद, क़ौमे आद, क़ौम मदाइन और क़ौमे लूत यह सब भी सीधे अल्लाह तआला के हुक्म से तबह हुईं, इनको ख़त्म करने के लिए कोई दुनियावी और मद्दी कोशीश इनमें आने वाले पैग़म्बरों ने और इनके साथियों ने नहीं की थी।

इसी तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब अपनी और नोमुलूद बच्चे हज़रत इस्माइल अलैहिस्सलाम को अल्लाह के हुक्म से उस एकेली वादी में छोड़ा, जिसमें इन्सानी ज़िदंगी का कोई सामान नहीं था, हत्ता के पानी का एक क़तरा भी नहीं था तो उनके लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सामाने हायात पैदा करने की कोई दुनियावी और अस्बाबी कोशीश बिल्कुल नहीं की बल्कि अपने मालिक और परवरदिगार से दुआ की:—

ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ۔

अल्लाह तआला ने सीधे अपनी ख़ास कुदरत से इनके लिए ज़म ज़म का चश्मा जारी किया, जिसका पानी आज भी मश्रिक़ व मग़्रिब तक पिया जाता है और उस बग़ैर पानी की वादी को ऐसा मरकज़ बना दिया कि हर तरफ़ से खाने-पीने की चीज़ें वहां पहुंचने लगी और आज तक पहुंच रही हैं ये सब कुछ अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ के सदक़े में अपनी कुदरत से किया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसके लिए दुआ के सिवा कोई अस्बाबी मेहनत नहीं की थी।

जो कभी ऐसा भी होता है कि अंबिया अलैहिस्लाम और इनके साथ वाले अल्लाह ही के हुक्म से अस्बाब के रास्ते से भी मेहनत करते हैं, लेकिन इस मेहनत में भी उनके दिल की निगाह अल्लाह के अस्बाब पर ही जमी होती है। वे यक़ीन रखते हैं और ज़ुबान से कहते भी है कि जो कुछ हम कर सकते हैं, वह अल्लाह के हुक्म से कर रहे हैं और करेंगे, लेकिन असल करने वाला अल्लाह तआला ही है, वजूद में वही आएगा जो इसका फ़ैसला हो।

ग़ज़वा बद्र से लेकर फ़त्ह मक्का तक जितने ग़ज़वात हुए उनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप सल्ल० के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इम्कान भर अस्बाबी जद्दोजहद भी की, और जो कुछ उस वक़्त कर सकते थे वह सब कुछ किया, लेकिन हर वक़्त दिल इस यक़ीन में मअमूर रहा कि असल करने वाला अल्लाह तआला ही है, जो कुछ होगा उसी के इरादा और फ़ैसले से होगा। चुनांचे तमाम ग़ज़वात में जब आप सल्ल० को फ़त्ह हासिल हुई तो आप सल्ल० ने अल्लाह तआला की हम्द व शुक्र के साथ बार-बार इसका एलान फ़रमाया कि जो कुछ हुआ है अल्लाह की मदद से, बल्कि सिर्फ़ इसी के करने से हुआ है।

बहरहाल अंबिया अलैहिस्सलाम और उनके साथियों का तरीक़ा यह है कि वह आख़िरत और जन्नत की तरह दुनिया के चीज़ों के बारे में भी यह यक़ीन करते हैं कि उनका दुनिया न देना अल्लाह ही के

हाथ में है। इसलिए यहां की चीज़ों के लिए भी उनकी असल और शुरूअती मेहनत अल्लाह की रज़ा वाले अमल पर होती है। ख़ुदा से ग़ाफ़िल होकर कि वह दुनिया की किसी चीज़ पर मेहनत बिल्कुल नहीं करते। अंबिया, सिद्दीक, शोहदा और सालिहीन का तरीक़ा यही है, और इसी तरीके से अल्लाह की मदद के दरवाज़े खुलते हैं।

दुनिया की चीज़ों के लिए सीधे सिर्फ़ उन चीज़ों पर मेहनत करना जैसा कि मैंने कहा आम इंसानों का बल्कि जानवरों को तरीक़ा है। इनके पास अपने तजुर्बे और मुशाहेदे के सिवा इल्म व यक़ीन का कोई ज़रिया नहीं है, और हमारे पास हक़ीक़ी इल्म और यक़ीन का ज़रिया अंबिया अलैहिस्सलाम की इत्तिलात हैं। कायनात में से जिन चीज़ों का निकलना, जो हमको नज़र आता है, अंबिया अलैहिस्सलाम 'ला इलाह इल्लल्लाह' के ज़रिया इसकी नफ़ी करते हैं, वह फ़रमाते हैं कि:–

चीज़ों को वजूद नज़र आने वाली चीज़ों से नहीं है, बल्कि अल्लाह के हुक्म से है जो नज़र नहीं आता।'

वह फ़रमाते हैं:–

'असल वह नहीं है जो आंखों को नज़र आ रहा है, बल्कि अल्लाह का वह हुक्म और इरादा है जो नज़र नहीं आ रहा।'

यही ग़ैब पर ईमान है, इसलिए अंबिया अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वालों का तरीक़ा क़ियामत तक के लिए यही होना चाहिए कि उनकी नज़र में असल अहमियत चीज़ों की मेहनत न हो, बल्कि उससे ज़्यादा फ़िक्र उस ईमान और उन अमल व अख़्लाक़ की हो जिन पर अल्लाह तआला की मदद होती है।

बदक़िस्मती से इस वक़्त मुसलमानों का हल यह है कि अपने मसाइल के लिए इनकी सारी मेहनतें उस तरीक़े पर हो रही हैं जो आम इंसानों और जानवरों का तरीक़ा है। हमारा कहना यह है कि मुसलमान इन अमल को बदलें और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दिगर अंबिया अलैहिस्सलाम और ताबइन का तरीक़ा इख़्तियार

करें। इस तरीक़े पर मेहनत करने से अल्लाह तआला की ग़ैबी ताक़तें साथ हो जाती हैं, ये वह ताक़तें है जो रूस या अमेरिका के ऐटम बमों और राकेटों से भी शिकस्त नहीं खा सकतीं, बल्कि यह राकेट और ऐटम बम अल्लाह की ग़ैबी ताक़तों के मुक़ाबले में मच्छर और मक्खी की तरह बे हक़ीक़त है। जो लोग अल्लाह को और इसकी ताक़तों को नहीं जानते उनको ये बातें अजीब सी मालूम होंगी, लेकिन हक़ीक़त बिल्कुल यही है

قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ ———— اِنَّمَآ اَمْرُهٗۤ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ○

मुसलमान जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दिगर अंबिया अलैहिस्सलाम वाले इस तरीक़े को इख़्तियार करने का फ़ैसला करेंगे तो सबसे पहला काम यह होगा कि वह अपने अन्दर के यक़ीन को ठीक करें और चीज़ों और मद्दे से कुछ होने के बजाए अल्लाह के हुक्म से होने का यक़ीन पैदा करें, यह यक़ीन इस ज़माने की हालत में ख़ास मश्क़ और मुजाहेदा के बग़ैर और इन्हामाक और मद्दियात की मश्ग़ूलियात में कमी किए बग़ैर हासिल नहीं हो सकता।

इसके अलावा भी ज़िंदगी के नक़्शे में बहुत बड़ी तब्दीलियां करनी पड़ेंगी। नफ़्स की ख़्वाहिश के बजाए अल्लाह के अहकाम के तहत ज़िंदगी गुज़ारनी पड़ेगी। सहाबा किराम रज़ि० की ज़िंदगी के नक़्शे को सामने रखकर तै करना पड़ेगा कि ज़िंदगी में से कितना वक़्त कमाने में लगना चाहिए और कितना वक़्त तालीम और ताल्लुम में और कितना ज़िंदगी को सही करने वाली मश्क़ व मेहनत में ? फिर कमाई को अल्लाह के अहकाम का पाबंद करना पड़ेगा, रिश्वत छोड़नी पड़ेगी, ज़्यादा नफ़ा हासिल करने के लिए झूठ जिसका अब आम रिवाज हो गया है, बिल्कुल छोड़ना पड़ेगा।

इसके अलावा जो नाजायज़ तौर तरीक़े आज कल कमाई में आम तौर से राइज हो गए हैं सबको छोड़ना पड़ेगा, फिर इसकी वजह से कमाइयों में कमी आएगी, इसको भी बरदाशत करना पड़ेगा। फिर यह भी तै करना होगा कि अपनी कमाई में से कितना अपने आप पर ख़र्च किया जाए और कितना अल्लाह के दूसरे ज़रूरतमंद बन्दों पर।

आज हालत यह है कि जिस शख़्स की कमाई ज़्यादा है वे कारून की तरह अपना ख़ज़ाना बढ़ाया जा रहा है या अय्याशों की तरह अपनी फिज़ूल ख़र्चों में इज़ाफ़ा किया जा रहा है। एक मकान मौजूद है तो इससे आलिशान दूसरा मकान बनाना चाहता है। सवारी के लिए एक मोटर मौजूद है तो दूसरी इससे बढ़िया ख़रीदना चाहता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से उन बुराइयों को मिटाने आए थे, जब मुसलमान अपनी ज़िंदगी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर लाने की कोशीश करेंगे तो उन्हें यह करना पड़ेगा और ख़ुद छोटे मामूली मकान में गुज़ारा करें और अपनी फ़ाज़िल कमाई से अल्लाह के बे-घर बन्दों के लिए मकान बनवाऐं, खुद सादा और मामूली खाएं, और इस तरह जो बचत हो इससे उन भूखों को रोटी का इंतिज़ाम करे जिनके पास पेट भरने का सामान नहीं हैं। अपने बेटे और बेटियों की शादी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर कम से कम ख़र्च करें। और जिन ग़रीबों की बेटियां नादारी की वजह से घर बैठी हुई हैं अपनी कमाई से इनकी शादियों का बन्दोबस्त करें। फिर इन मामलात में मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम की भी तफ़रीक़ नहीं होगी, अल्लाह तआला ने यह हकूक़ सब हाजतमंदों के लिए रखे हैं, इसलिए यह सुलूक सबके साथ करना होगा।

आज माल व दौलत के बारे में और कमाई और इसके ख़र्च के मामले में हमारा तरीक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला तरीक़ा नहीं है, हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० वाला तरीक़ा नहीं है बल्कि यहूदियों और महाजन बनियों वाला

तरीक़ा है, जिस पर अल्लाह की तरफ़ से लानत और ग़ज़ब का फ़ैसला हो चुका है।

ग़रज़ यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर आने के लिए मुसलमानों को अपनी पूरी ज़ाहिरी और बातिनी ज़िंदगी का नक़्शा बदलना होगा और इस सबके साथ ईमान और अच्छे अमल और अख़्लाक़ वाली ज़िंदगी को दुनिया में फैलाने और फ़रोग देने के लिए मेहनत और मुजाहेदा भी पड़ेगा और इसमें नीयत सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा और इसके बन्दों की ख़ैर ख़्वाही और नफ़े के लिए होगी, जब जाकर ज़िदंगी वह बनेगी जिसको लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया में आए थे।

यह ज़िदंगी अगर कुछ अफ़राद इख़्तियार कर लेंगे तो अल्लाह तआला इनके इन्फ़िरादी मस्अले इस दुनिया में भी हल फ़रमाएगा और आख़िरत में भी इन्हें ख़ास–ख़ास नेमतों से नवाज़ा जाएगा, और यह ज़िंदगी मुसलमानों की इज्तिमाई ज़िंदगी बन जाए और इनका मुआशरा इस रंग में रंगा जाए तो अल्लाह तआला इनके इज्तिमाई मसाइल भी अपनी ख़ास क़ुदरत से हल करेगा, जिनके दिलों में इनकी दुश्मनी है या तो इनके दोस्त और फ़िदाई बना दिए जाएंगे, और जो इसके बाद भी दुश्मनी पर क़ायम रहे तो यह तो तबाह और बर्बाद कर दिए जाएंगे या ज़िल्लत का अज़ाब इन पर मुसल्लत होगा, यही अल्लाह का वायदा है, और यही सुन्नत अल्लाह है।

"فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا"

हम मुसलमानों को इस ज़िंदगी के हासिल करने और अपनाने की दावत देते हैं, न सिर्फ़ इसलिए कि इनके मौजूदा मसाइल और मुश्किलात हाल हो बल्कि इसलिए कि दरअस्ल यही मक़सद तख़्लीक़ है इसलिए तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम आए।

हमारा ईमान है कि अगर हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला रास्ता इख़्तियार किया है तो दुनिया की बड़ी से बड़ी

ताक़तें हमारे सामने झुकने पर मजबूर होंगी, और दुनिया का हर मस्अला हमारे मस्अले के ताबेअ कर दिया जाएगा। अल्लाह तआला के वायदे माल व मुल्क पर नहीं है ईमान और अच्छे अमल पर हैं, इसलिए अंबिया अलैहिस्सलाम और इनके साथियों के नज़दीक सबसे अहम और पहला ईमान और आमाल की दुरूस्ती की फ़िक्र और जद्दो–जहद है, ख़ासकर हमारी कामयाबी और फ़लां इसी से वाबस्ता है।

मस्जिदों की मीनारों से पांचों वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यह दावत और पुकार आज भी दोहराई जाती है कि:–

حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ ؛ حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ

'नमाज़ को आओ, यहां तुम्हारी कामयाबी का सामान है, इसको यहां मस्जिद में आकर हासिल करो'

मस्जिद में दरअसल ईमान हासिल करने की जगह और ईमानी ज़िंदगी की तालीम व तर्बीयत का मरकज़ था, वहां हर वक़्त ईमान अफ़रूज़ माहौल और ईमान के तज़्किरे रहते थे, और नमाज़ अल्लाह तआला के साथ ज़िंदा ताल्लुक़ क़ायम करने और पूरी ज़िंदगी में यानी ज़िंदगी की हर नक़ल व हरकत में अल्लाह तआला की फ़रमाबर्दारी और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी की मश्क़ व तर्बीयत का एक निज़ाम था, लेकिन अब मस्जिद मुहल्ले के सरमायादारों की बात चलती है क्योंकि मुअिज़्ज़न और इमाम साहब को वही तंख़्वाह देते हैं और दूसरे इंतिज़ाम भी वही करते है, इसलिए वहां भी उन्हीं की चलती है, और इसलिए कुदरती तौर पर मस्जिदों में भी उन्हीं का मिज़ाज और तरीक़ा होता है।

अब मस्जिदों और नमाज़ों के साथ लोगों का ताल्लुक़ सिर्फ़ इतना है कि घड़ी देखकर सिर्फ़ चंद मिनट के लिए आते हैं और जिन तक़ाज़ों और मश्ग़लों से निकलकर आए थे, बस जल्दी–जल्दी बे–जान क़िस्म की चंद रक्अतें पढ़कर अपने उन्हीं तक़ाज़ों और मश्ग़लों में

वापस चले जाते हैं।

मैं यह नहीं कहता कि ये मस्जिदें अब मस्जिदें नहीं हैं और नमाज़ें—नमाज़ें नहीं हैं, हां यह कहता हूं कि इन मस्जिदों और नमाज़ों में अल्लाह तआला के साथ ज़िंदा ताल्लुक़ और वह ईमानी ज़िंदगी हासिल नहीं हो रही और नहीं हो सकती जिससे हमारी कामियाबी वबास्ता है और जिसके लिए हमको
कहकर पुकारा जाता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमको किसी मुल्क या हुकूमत के सहारे नहीं छोड़ा था, बल्कि बताया था कि तुम्हारी असल ताक़त ईमान और अख़्लाक़ है, तुम्हारी कामियाबी उन्हीं से वबास्ता है, और ईमान व आमाल व अख़्लाक़ पैदा करने और इनकी तर्बीत हासिल करने के लिए आप सल्ल० मस्जिद को एक मरकज़ बना गए थे और अपने अमल से इसको एक ख़ास माहौल और नक़्शा भी बना गए थे जो आप सल्ल० के ज़माने में मस्जिद नुबूवी सल्ल० को माहौल और नक़्शा था, और बाद में हज़रत ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में भी वही माहौल और नक़्शा रहा।

हम इस जद्दो—जहद के ज़रिए जिसका नाम 'तब्लीग़' पढ़ गया है यही कोशीश करना चाहते हैं कि मस्जिदों को फिर वही माहौल व नक़्शा बने जो मस्जिद नुबूवी का था। वहां ईमानी तज़्किरे और ईमानी मज्लिसें हो, तालीम व ताल्लुम का हलकें हों, ज़िक्र व इबादत और खशियत व अनाबत की फ़साद हो, दीनी तक़ाज़ों की फ़िक्रें और इनके बारे में मश्विरे हों, दीनी जद्दो—जहद और दीनी तक़ाज़ों के लिए नक़ल व हरकत का वह मरकज़ हूं।

ग़रज़ यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने मुबारक में मस्जिद नुबूवी और दूसरी मस्जिदों में चौबीस घंटे जो कुछ होता था और जो निज़ाम चलना था वही हमारी मस्जिदों में हुआ करे, लेकिन यह जब ही हो सकेगा जब मस्जिदों वाले इस ज़िंदगी और इस नक़्शे के आदी बन जाएंगे और यह जब ही मुम्किन है जब लोग लम्बे

वक़्तों के लिए अपने घरों और मशग़लों से निकलकर इस ज़िंदगी की मश्क़ और तर्बीयत हासिल करें और दूसरों पर भी इसके लिए मेहनत करें।

हम बस इसी की दावत देते हैं, न हम अपने तरफ़ बुलाते हैं न अपनी क़ायम हुई किसी तंज़ीम और पर्टी में शामिल होने के लिए कहते हैं, बल्कि मश्क़ और मुजाहेदे के ज़रिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई ईमानी ज़िंदगी हासिल करने और दुनिया में इसको फ़रोग़ देने के वास्ते मेहनत करने की दावत देते हैं।

बयान न० 5

शादी की तक़रीब में हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ रह० की एक अहम तक़रीर

तमिल नाडू के मशहूर मकाम 'डंडी गली' में जनवरी 1985 ई० में तीन दिन को बड़ा तब्लीग़ी इज्तिमाअ हुआ था, इज्तिमाअ के दौरान ही मकामी हज़रत की तलब पर बहुत निकाह भी हुए इस मौक़े पर हज़रत मौलाना ब्याह–शादी की इस्लामी रूह के मुतल्लिक़ मुख़्तसर सी मगर अहम तक़रीर फ़रमाई हज़रत मौलाना ने फ़रमाया:–

इस वक़्त चंद निकाह हो रहे हैं, यह ऐसा अमल है जिसमें हम अपनी तमाम ताक़तों को ख़र्च कर देते हैं, माल भी जान भी, लेकिन वह खराफ़त और हंगामे जो निकाह में होते हैं, वे इन निकाहों में नहीं हो रहे थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप सल्ल० के मुबारक साथी भी इंसान थे। इंसानी तक़ाज़े वे भी पूरे फ़रमाते थे, मगर इनका ज़्यादा माल व जान खुदा की राह में ख़र्च होता था, उम्मत के लिए कुछ अस्बाब ऐसे हैं जिनको इख़्तियार करने से उम्मत फलती–फुलती है और कुछ अस्बाब ऐसे हैं जिनको अख़्तियार करने से बिगाड़ आते हैं जिनकी सारी दिलचस्पियां अपने ज़ुबानी और नफ़सानी ख़्वाहिशों में आ जाती हैं, वह मिट जाते हैं जिन इंसानों की सोच सिर्फ़ माल हासिल करना हो, और माल को अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश और ज़ुबान पर ख़र्च करना हो और मिटा करते हैं, बड़ी–बड़ी हुकूमतों और मालदार इंसान इन दोनों चीज़ों में फंसकर अपना माल ख़र्च करते हैं वह दुनिया में मुसीबत और आख़िरत में अज़ाब में मुब्तला होते हैं, निस्ते–नाबूद हो जाते हैं, इनकी जड़ें कट जाती हैं। और जिनको

अल्लाह तआला चमकाने का इरादा करते हैं इनको इन दोनों चीज़ों से निकालते हैं। वे इन दोनों चीज़ों पर अपना पैसा ख़र्च नहीं करते, बल्कि वे ईमान व अख़्लाक़ की राह में अपने माल और जान को ख़र्च करते हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथियों ने बहुत निकाह किए हैं, जब वह ग़रीब थे और हुकूमतें इनके क़ब्ज़े में थीं, दोनों वक़्तों में निकाह और शादियां हो जाती थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग्यारह निकाह हुए, वलीमे में कोई ख़ास इंतिज़ाम खाने का नहीं हुआ, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी बेटी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह में बहुत मामूली ख़र्च किया। हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु जब वह गवर्नर थे निकाह किया तो ससूराल वालों ने मकान सजा रखा था तो फ़रमाया कि काबा किन्दा में मुन्तिकल हो गया है या तुम्हारे मकान को बुख़ार चढ़ रहा है जो तुमने कपड़े पहना रखे हैं ? जवाब मिला कि शादी के लिए सजाया था। फ़रमाया मेरे हबीब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे मकान में रहने से मना फ़रमाया है जिसको कपड़ों से सजाया गया हो, पहले मकान की ज़ीनत सारी की सारी उतारकर रखी गई, तब मकान में दाख़िल हुए फिर बहुत से गुलाम बादियां ख़िदमत के लिए सामने आईं इस पर फ़रमाया सब क़ियामत में हिसाब–किताब का ज़रिया बनेगी। इसलिए मैं इनको नहीं लूंगा। आगे बहुत साज़ो–सामान देखा, सब सामान वापस किया, आगे गए तो बहुत–सी औरतें जमा थीं जो दुल्हन को रूख़्सत करने के लिए आई थीं, सबको उठा दिया और इसके बाद अपनी बीवी के पास गए।

हज़रत इब्ने अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी में मकान सजाया गया, हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु ने शिर्कत से मना फ़रमाया जिसमें मकान शादी की वजह से सजाया जावे।

एक गवर्नर ने एक बारात की रूख़सती देखी जिसमें बहुत–से लोग रोशनी में दुल्हन को लिए जा रहे थे तो आपने दर्रा लेकर सबको

मारना शुरू किया, सब दुल्हन को छोड़कर भाग गए और अगले रोज़ ख़ुत्बा दिया कि ख़ुदा ऐसे लोगों पर लानत करे जिन्होंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े के ख़िलाफ़ शादी की।

'यही वे लोग हैं जो ग़रीबों पर माल ख़र्च करते थे और ख़ुदा की राह में ख़र्च के लिए सारा माल लाकर पेश कर दिया करते थे। अगर हम चाहते हैं कि हमारी शादियों में अंबिया अलैहिस्सलाम, सहाबा रज़ि० और औलिया वाली बरकतें पैदा हों और हमारी औलाद नेक और सालेह हो तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला तरीक़ा इख़्तियार करना चाहिए। निकाह में एक मर्द को एक औरत से मिलना होता है, अगर ख़ुदा की मख़्लूक़ को ख़ुदा से मिलाए तो कितना सवाब मिलेगा। निकाह में नीयत यह हो कि गुनाह से बचूंगा। बीवी और इसके रिश्तेदारों के हकूक़ अदा करूंगा तो यह शादी जन्नत दिलाएगी।'

इसके बाद हज़रत मौलाना मौसूफ़ ने ख़ुत्बा निकाह पढ़कर एजाब व कुबूल कराया।

बयान न० 6

लाइलपुर में हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब का परवानों से ख़िताब

अप्रैल 1941 ई०

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया और आख़िरत की भलाइयों और कामियाबी लेने के लिए बहुत से आमाल लेकर तशरीफ़ लाए हैं। ताजिर, हाकिम, कमाने वाले, न कमाने वाले जितने भी इंसान हैं हर एक को आपने वह तरीक़े बताए हैं जिस पर अगर कोई चौबीस घंटे की ज़िन्दगी गुज़ार दे तो हर तब्क़ा ख़ूब फले–फूले, दुनिया में और मरने के बाद आख़िरत में ख़ूब मज़े की ज़िदगी गुज़ार दे, इस तरीक़ा का काम अमले सालह है। और इसको ताल्लुक़ ईमान से है। अब चौबीस घंटे की ज़िदगी को दीन बनाने के लिए हर हर आदमी को इसके लिए तैयारी करनी पड़ती है, जैसे नमाज़ की जमाअत की तैयारी करनी पड़ती है, इमाम को भी तैयारी करनी पड़ती है, और मुक़्तदियों को भी अलग–अलग तैयारी करनी पड़ती है। हर एक की तहारत करनी पड़ती है हर एक को वुज़ू करना पड़ता है। हर एक को नीयत करनी पड़ती है। फिर एक आदमी आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ता है। इसी तरह हर हर आदमी को दीन पर पढ़ने के लिए तैयारी करनी पड़ती है। अगर इमाम तैयार होकर आए लेकिन सारे मुक़्तदी बे–वुज़ू हों, या ना–पाक कपड़े पहने हुए हों, या किसी का मुंह पुर्व की तरफ़ हो, किसी का उत्तर की तरफ़ हो, और इमाम नमाज़ पढ़ाता हो तो वह जमाअत की नमाज़ नहीं होगी, बल्कि एक की नमाज़ होगी। इसी तरह दीन पर चलने वालों को और चलाने वालों को तैयारी करनी पड़ती

है। मजमूआ में से हर एक के अंदर, इल्म, अख़्लाक़, इख़्लास लाना सारी उम्मत का फ़रीज़ा है। जब सारे मिलकर सबमें कोशीश करेंगे तो सबमें दीन क़ायम होगा। एक दूसरे को समझाकर एक दूसरे को तालीम मे हलक़ों में डालकर एक दूसरे को रज़ा—जुई की बातें बताकर जब कोशीश करेंगे तो सब ख़ुशी—ख़ुशी दीन पर चलेंगे। इसी तरह बे—तैयारी सबका दीन पर चलना मुश्किल और ख़ाम—ख़्याली है जिस तरह बे—वुज़ू की नमाज़ नहीं होती, सारे तबक़ात में वह बातें चल पड़ीं। इसलिए दीन की मेहनत की जितनी कीमती तज्वीज़ हुई और इतनी किसी और चीज़ की नहीं हुई। अपनी ज़ात पर दीन पर चलने वालों की जन्नत घटिया क़िस्म की है और दीन पर मेहनत करने वालों की जन्नत अल्लाह ने अपने हाथ से बनाई है। जैसे दुनिया को अपने हुक्म से बनाया, और इंसान को अपने ख़ास तरीक़े से बनाया।

इसी तरह जन्नत की दो क़िस्में हैं। मेहनत करने वालों की जन्नत को अपनी ख़सूसीयात से बनाया है, मेहनत का हक़ अगर पूरा कर दिया जाए और मेहनत की शक्लें पूरी कर दी जाएं हर आदमी को पच्चीस लाख हूरें दी जाएंगी। और दुनिया में मेहनत करने वालों की दुआएं इस तरह कुबूल करेंगे जिस तरह नबियों की दुआएं कुबूल होती हैं। नबियों की दुआओं से अंधों को बीना करके दिखलाया, नबियों की दुआओं से आग को गुलज़ार करके दिखलाया है। वह जब होगा जब इनकी मेहनत में कमाल पैदा होगा।

एक आदमी बातें कर रहा है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं तू झूठ बोल रहा है फ़रमाया इनसे बाज़ आ, वरना बद—दुआ करूंगा, तू अंधा हो जाएगा, कहा नहीं मैं सच बोल रहा हूं, बद—दुआ की और वह अंधा हो गया।

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को कहा कि हज़रत अली रज़ि० और इनके साथियों को बदद आमत दो, वह न माना, आप गए, वुज़ू किया, दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह इसे इबरत नाक सज़ा देदे। मदीना मुनव्वरा की गलियों से एक ऊंट आया

और इस आदमी को खोपड़ी से पकड़कर उठा-उठाकर इस तरह मारा कि वह ख़त्म हो गया।

मेहनत करने वालों की दुआओं से इज़्ज़त वाले ज़िल्लत वाले बनते हैं, इनकी दुआओं से ज़िल्लत वाले बनते हैं। इनकी दुआओं से बे-इख़्तियार ब-इख़्तियार बनता है। इनकी दुआएं मुल्क वालों पर चलती हैं, माल वालों पर चलती हैं, इनके सब मुहताज बनते हैं और यह किसी का मुहताज नहीं होता, यह दस बीस पर नहीं होगा। बल्कि सहाबा रज़ि० के नक़्शे को सामने रखो कि इस नक़्शे को कैसे भूख प्यास में टिड्डियां खा-खाकर और गर्म हवाओं में और सर्दियों में ख़ूफ़ में सारी तक्लीफ़ें अपनी जान पर झेल कर चलाया, और नक़ल व हरकत को क़ायम किया, सब कुछ छोड़कर दीन की मेहनत के तक़ाज़ों को दिन-रात पूरा किया। तब अल्लाह तआला ने उनको दुआओं के मक़ाम पर पहुंचा दिया, हर तरह की माज़ूरी में चलते रहें, हाथ कट गया और चल रहे हैं, ग़रज़ काम करने का एक नक़्शा है, अगर वह ज़िंदा हो जाए तो इनकी दुआओं पर अल्लाह फेर देंगे, फिर फ़ित्नों के नक़्शे ख़त्म होकर रहमत के नक़्शे सामने आ जाएंगे। इनकी दुआओं पर फ़ित्ने वालों के दिल ताअत की तरफ़ फेरेंगे। अभी हम अपने दिल पलटवाने की तरफ़ जा रहे हैं, यह दिल जो बीवी के साथ टिका हुआ है, और तन परवरी के साथ अटका हुआ है, माल में अटका हुआ है। पहले तो अपने लगने के वास्ते मेहनत करनी होगी कि अल्लाह हमें इस तरीक़े पर डाल दें, जिस पर अल्लाह दिलों को पलटते हैं। चौबीस घंटे का वक़्त कैसे गुज़रे, मेहनत करना और मांगना कि तेरी तरफ़ जितना मुतालबा है इतना हम इसी में तेरी आवाज़ और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आवाज़ लेकर चप्पे-चप्पे में फिरने वाले बन जाएं, पहला क़दम यह है।

यह मत समझो कि चिल्ला मेहनत है और वापस आकर वही नक़्शे चलाते हैं। बल्कि इस मेहनत को बढ़ाना है और ज़िंदगी के सारे नक़्शों को दुरुस्त करना है, इसी तरह चलने से परे बातिल को हक़

की तरफ़ फेर देंगे।

वक़्ती तौर पर जोश में तीन चिल्ले देकर जो कमाई में लगते हैं तो मक़ामी गश्त का पता नहीं जैसे दीमक लकड़ी में लगती रहती है। इसी तरह दिन-रात काम में लगे रहो, जिस वक़्त खुदा की आवाज़ लगे, हम सारी चीज़ों को निकाल खड़े हों।

यमामा में पन्द्रह सौ सहाबा रज़ि० शहीद हुए, दो तरह के सहाबा थे। एक तो तौबा वाले, एक वाक़ाई काम करने वाले, तौबा वाले कौन थे ? सारे अरब मुर्तद हो गए, और लोग भागकर मदीना मुनव्वरा आए, और बोले, ऐ अबूबक्र रज़ि० ! हमारी तौबा, फ़रमाया तुम्हारी तौबा यह है कि इनके मुक़ाबले में जाओ। दूसरी वह क़िस्म थी, जिनको तक्लीफ़ें उठानी थीं, और अल्लाह पर मरना आता था, वे नेमतों के लिए काम नहीं करते थे बल्कि नेमतों को कुरबान करने के लिए काम करते थे, इनके जज़्बे थे कि ख़ुदा के लिए इनके नाक-कान काट दिए जाएं, न वे औरतों के तालिब थे, न ओहदों के, न मुल्क के, वह खुदा के लिए तक्लीफ़ें उठाना चाहते थे।

आपने फ़रमाया कि किसी को तक्लीफ़ पहुंचे तो अल्लाह तआला इसके गुनाह माफ़ कर देते हैं वहीं दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! बुख़ार दे जो न तालीम से मुझे रोके, न नक़ल व हरकत से रोके, वहीं बुख़ार चढ़ गया।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को मौत आ रही थी और वह दुआ मांग रहे थे कि अल्लाह मैं जानता हूं कि तुझको मुझसे मुहब्बत है, मुझे और तक्लीफ़ पहुंचा। तौबा वाले वह हैं जिनको अबूबक्र उभार रहे हैं कि वहां जाकर लड़ो। यह तुम्हारी तौबा है, तौबा वाले चिल्ले को चले जाते हैं कि इम्तिहान में पास हो जाएं, मुक़दम्म रहे, जीत जाएं, ज़मीन का क़ब्ज़ा ठीक हो जाए, एक बार भी दुआ नहीं मांगते कि दीन पर मरना नसीब हो, चिल्ला देकर मरदम शुमारी कर देते हैं, कमाई में ध्यान लगा हुआ है। ख़त आ गया, बीवी परेशान है, बस भाग गए, देहाती सहाबा भाग गए, यह तमाम हालातों में दीन की

मेहनत के लिए नहीं निकलते थे, फिर जोड़ा, फिर भाग गए, मख़लूत खड़े थे, तौबा वाले भागे, तो काम करने वाले भी भाग खड़े हुए, लेकिन आवाज़ लगी कि इनकी जानें चली जाएं और दीन का काम हो जाए।

इब्ने उजरा कहते हैं कि मैंने देखा कि एक सहाबी रज़ि० के बीस–पच्चीस ज़ख़्म आए थे और बेहोश पड़े थे। आवाज़ लगी तो इनको होश आया, सरकना शुरू किया, पूछा कहां जा रहे हो, कहा आवाज़ पर जा रहा हूं। काम करने वालों को बुला रहे हैं, ज़ख़्मियों को नहीं बुला रहे हैं। फ़रमाया मेरी क़ौम को आवाज़ लगी हुई है, रेत पर घिसटते हुए पहुंच गए, सहारा लेकर खड़े हुए, तीन–चार हमले कहे परवानों में बिजली सी दौड़ गई। ऐ अंसार ! हुनैन की तरफ़ पलटकर दिखाओ, और बद्र की तरफ़ जमकर दिखाओ, मुसलैमा कज़्ज़ाब के आदमी भाग गए। हज़रत बराअ रज़ि० ने कहा कि क़िला में मुझे फेंक दो, मैं अन्दर से कुंड़ी खोल दूंगा, हज़रत बराअ रज़ि० अन्दर गए और पैन्तालिस हज़ार को मुक़ाबला अकेले किया। ग़ालिब आए और किवाड़ खोल दिए, नव्वे जख़्म खाए।

हर हालत में जमे रहना, मेहनत करते रहो और बढ़ते रहो, यहां तक कि तुम्हारी ग़रीबी पर कस–पुरसी पर ग़िज़ा को तरस आ जाए। दीन ज़ोर से ज़िंदा नहीं होता, दीन ज़र से ज़िंदा नहीं होता, दीन ज़ारी से ज़िंदा होता है। ज़िंदा दीन मुल्क व माल आने के बाद मिट गया, हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ि० जैसे ख़ाल–ख़ाल मिलेंगे। जिन्होंने मुल्क व माल आने के बाद अपने पहले वाली कुरबानी पर बाक़ी रहे, दीन चलाती है, इनकी कुरबानियों पर, दीन के लिए तक्लीफ़ों पर ख़ुदा को तरस आता है, खाने को न हो फिर भी निकलें, सवारी न हो, पैदल निकलें, पत्ते खाकर चलें, दीन जो आज सैकड़ों सालों में जो मंज़िले तै नहीं कर सका, चंद सालों में तै करेगा। पहले अपने आपकों इस मेहनत पर खड़ा करने के लिए जा रहे हैं। वह मेहनत जिसको करने से दीन ज़िंदा होता है, हर हाल में ज़ब्त करके मेहनत करके चला जाए। मेहनत के तक़ाज़ों में कमी न आए, वह

मेहनत रंग लाएगी, इनको मेहनत करते करते क्या मिलेगा? यह मेहनत करते करते फ़क़ीर बन जाएगे, लेकिन क़ियामत के दिन हिसाब से पहले अल्लाह एलान फ़रमाएंगे मेरे अहबाब को मेरे क़रीब कर दो, तमाम अंबिया व रसूल हैरान होंगे कि ऐ अल्लाह ! आपके भी अहबाब हैं ? वे ग़रीब, मुहाजिरीन जो एक जगह से आए दूसरी जगह रवाना कर दिए गए, यहां तक कि वे अपनी हाजतों को दिल में लेकर मर गए, मौक़ा न मिला छप्पर बनाने का, इलाज कराने का, वह मेरा अहबाब हैं। ये सबसे पहले जमा किए जाएंगे, और अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि तुम्हारे मैदाने महश्र होते हुए मुझे हिसाब–किताब करते हुए शर्म आती है कि कभी इनको दूसरों के हिसाब से तक्लीफ़ न पहुंच जाए, वह पांच–सौ साल पहले जन्नत में जाएंगे, फ़रिश्ते रोक लेंगे कि हिसाब दो, वह कहेंगे कि अल्लाह ने हमको दिया क्या था जो हिसाब मांग रहे हो। वहीं से अल्लाह की आवाज़ आएगी, ये सच कह रहे हैं। यह महबूबीयात की बात है, वरना पांच–सौ बरस इबादत करने वाले आबिद से पानी के एक प्याले के औस सवाल कर रहे हैं कि हमने चश्मा चला रखा था और अनार का पेड़ था, लेकिन एक प्याले पानी के औस पांच–सौ साल की इबादत दे बैठा, बाक़ी प्यालों और अनारों की क़ीमत ला, वह घबरा जाएगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, जा मेरे फ़ज़्ल से जन्नत में जा, अल्लाह हमको आंख की क़ीमत पर पकड़ सकते हैं। जो तब्क़ा अल्लाह के अहबाब हैं, अगर अल्लाह हमारी आंखें खोलें तो हम समझेंगे कि असली शराफ़त और इज़्ज़त है, चौबीस घंटें में जो कुछ करो, अल्लाह को राज़ी करने के लिए करो। जो कुछ इसमें नीयत की तजदीद करते रहो। लोग ऐसा–ऐसा कहेंगे, तारीफ़ करेंगे। यह भी दिल में न हो, बस अल्लाह तआला राज़ी हो जाए, इससे चीज़ क़ीमती बनती है और दूसरे जो वायदे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किए, इन सारी बातों पर यक़ीन करके करो। जो नमाज़ों पर बतलाया इन पर यक़ीन करके नमाज़ी हों। यक़ीन करना और चीज़ है, जिस पर यक़ीन न हो उस पर नीयत मत करो। नमाज़ पर जन्नत का

यक़ीन करो, नीयत करो।

अल्लाह को राज़ी करने का, यह अन्दाज़ की बातें हैं, कहीं नीयत के ज़ोर में यक़ीन में फ़र्क़ न आ जाए। वक़्त इनमें गुज़ारो, दावत में, तालीम में, इबादत में, ज़िक्र में।

हर एक में चार–चार शक्लें हैं। 1. ख़ुसूसी ग़श्त। इनमें सबको एक लाठ से मत हांको, तमीज़ भी करनी पड़ेगी और मौक़े महल के मुताबिक बात भी करनी पड़ेगी।

2. उमूमी गश्त। इसमें कलिमे के मफ़हूम की बात की जाएगी अल्लाह तआला ज़िंदगी बनाते हैं।

बयान न० 7

अह्दे नुबूवी में दीनी मेहनत का नक़्शा

दीनी मेहनत कराने वाले साथियों से हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० का एक ख़िताब

यों समझे कि एक दीनी मेहनत है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने एक ख़ास नक़्शे के साथ की है। हम चाहते है कि इस मेहनत को इनके तरीक़े पर सीखें और करें।

अलहम्दु लिल्लाह अहबाब ने चंद मकामात में थोड़ा–थोड़ा इस मेहनत को सीखना शुरू किया है लेकिन किसी जगह की मेहनत कामिल नहीं है बल्कि इब्तिदाई दर्जों में है। अब अगर हर जगह के मेहनत करने वाले यह समझें कि पूरी मेहनत यही है जो हो रही है तो असल शक्ल पर कोई नहीं पहुंच पाएगा। अब जो इंसान भी मेहनत शुरू करते करते इस शक्ल पर पहुंचता है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और आप सल्ल० के साथियों ने की थी, जब वह असल मेहनत को सामने रखकर नीयत करे कि इनशाअल्लाह तरक़्क़ी करके इन्तिहा तक पहुंचाना है।

अब एक तो यह सोचना है कि इस मेहनत का फ़ायदा क्या है? दूसरा यह समझना है कि वह मेहनत क्या है ?

इस मेहनत का फ़ायदा यह है कि मेहनत करने वालों को और साथ ही साथ दूसरे इंसानों को हिदायत मिल जाए और इंसान दीन

पर इतना ही चलेंगे जितनी खुदा की तरफ़ से हिदायत मिलेगी।

तो अब मेहनत की सतह जितनी बुलन्द होती जाएगी इतनी ही खुदा की तरफ़ से हिदायत की तक़सीम आम हो जाएगी। वह मेहनत जब ख़त्म हो जाती है तो हिदायत मुसलमानों में से निकलना शुरू हो जाती है, पहले हिदायत कारोबार और मुअशरत में से निकलती है कि कारोबार में जो दीन के अहकामात है इनको छोड़कर दूसरे तरीक़ों से कारोबार चलाने लगते हैं, फिर फ़राइज़ निकालते हैं और फ़िर अलग–अलग बुराइयां दाख़िल होने लगती हैं। और मुसलमान दीन से निकलने लगते हैं, और जब यह दीन की मेहनत की जाती है तो हिदायत खुदा की तरफ़ से आनी शुरू हो जाती है। फिर जिस दर्जे में मेहनत तरक़्क़ी करती जाएगी हिदायत फेलती जाएगी।

हिदायत की एक सतह यह है कि नमाज़ पढ़ने लगें, दूसरे यह कि रोज़े, ज़कात, हज अदा करें, तीसरे यह कि माल कमाने और ख़र्च करने में अहकामात शरिया के तामील होने लगे इससे आगे यह होता है कि खुदा तमाम इंसानों को हिदायत देने लगे। हिदायत के ब–क़द्र दीन ज़िंदा होगा और हिदायत मेहनत के ब–क़द्र आएगी। तो अब हम जो यह देखते हैं कि लोग दीन पर नहीं चल रहे हैं, बल्कि इससे निकलकर बे–दीनी में दाख़िल हो रहे हैं, इसकी वजह यह है कि यह मेहनत निकल चुकी है। अब भी जहां के बन्दों ने दीन की मेहनत शुरू कर दी है, इतनी अल्लाह तआला ने हिदायत देनी शुरू कर दी है, और ब–क़द्रे हिदायत के दीन ज़िंदा होना शुरू हो गया। ज़हां नमाज़ी नहीं थे, वहां कुछ नमाज़ी हो गए, जहां रोज़े नहीं थे, वहां कुछ रोज़े ज़िंदा हो गए, जहां हज नहीं था, वहां कुछ हज क़ायम हो गए, जहां तालीम का रिवाज न था वहां तालीम होने लगी, लेकिन हिदायत इस सतह की अभी नहीं मिली कि कमाइयों के अन्दर के अहक़ाम पूरे करें और खाने–पीने मकान बनाने में और लेन–देन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली रहा इख़्तियार करें, तो अभी हम मुसलमान भी इसके मुहताज है कि मेहनत की सतह बुलन्द हो ताकि पूरी ज़िंदगी में

इस्लाम पर चलने की सआदत हासिल हो और दूसरे इंसानों को भी इस्लाम के समझने की हिदायत मिले। अब इस मेहनत में दो हालतें हैं। एक तो मेहनत करने वालों की तायदाद बढ़ाना, दूसरे यह मेहनत जो लोग कर रहे हैं इनकी मिक्दार मेहनत की शक्लों में बढ़ना, यह दो अलग लाइनें हैं। अगर लाखों मेहनत करने वाले बन जाएंगे मगर मेहनत थोड़ी–थोड़ी करें तो हिदायत थोड़ी–थोड़ी आएगी, अगर ख़ुदा ऐसी सूरत कर दे कि जो मेहनत कर रहे हैं, इनकी मिक्दार मेहनत बढ़ जाए तो मुसलमानों को भी हिदायत मिलेगी और तमाम इंसानों को भी मिलेगी।

अभी तक जो हमारी मेहनत की हालत है वह यह है कि मशग़ूल लोग और मशग़ूलियत में से थोड़ा–थोड़ा वक़्त इस तरह निकाल रहे हैं कि इनके दुनियावी मशग़िल में फ़र्क़ न पड़े, अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इनके साथियों से दीन के लिए कुरबानियां दिलवाई तो अब मेहनत करने वालों में जितनी हुज़ूर वाली कुरबानियां पैदा होगी मेहनत की सतह बुलन्द होगी। अब मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इनके साथियों की मेहनत बताना चाहता हूं जिससे हम अभी बहुत दूर हैं, लेकिन अगर इस मेहनत को सामने रखकर चलते रहेंगे तो ख़ुदा वहां तक पहुंचा देगा, तो हर काम करने वाले को मेहनत के इस इंतिहाई नक़्शे को सामने रखकर वहां तक पहुंचने की नीयत कर लेनी चाहिए।

यह बात तो आप लोग जानते हैं कि सारे अरब में मदीना वालों की मेहनत से दीन फैला है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने का अरब का रक़बा छोटा नहीं था, हिन्दुस्तान के बराबर नहीं तो इससे कम भी न था। उस वक़्त दुनिया में जो कमाइयों के जो तरीक़े रिवाज में थे वे भी न थे। पूरे मुल्क में कोई हुकूमत क़ायम न थी जिसके दफ़ातर वग़ैरह की नौकरियों के ज़रिए भी रिज़्क़ की सहूलात हासिल नहीं थी। उस ज़माने में बैतुल्लाह पर आने वाले हुज्जाज से भी वहां कुछ वसूल नहीं

किया जाता था, हुज्जाज की मदारत में हर क़बीला कुछ ख़र्च करता था, लिहाज़ा हज का शोब्हा भी इस ज़माने में कमाई का शोब्हा नहीं था, खेत और बाग़ात भी गोया नहीं थे। तिजारती निज़ाम भी मक्का मुअज़्ज़मा वग़ैरह के अलावा न था, कहीं-कहीं खजूर, अंगूर और अनार के कुछ बाग़ात थे, चंद मक़ामात थे छोटे पैमाने पर तिजारत होती थी।

ग़रज़ की पूरा अरब आम तौर स नंगा, भूखा, प्यासा अरब था, न सबके पास कपड़े थे न मकानात थे, पानी और खाना पूरे अरब को नहीं मिलता था, भूख की शिद्दत में कीड़े मकोड़े भी खा जाते थे। यहां तक कि ज़मीन पर पड़ा हुआ ख़ून बग़ैर तहक़ीक़ किए किस चीज़ का है, किस जगह का है चाट जाते थे। अक्सर इलाक़े कमाई से ख़ाली और भूख से भरे हुए थे, बादशाहों तक कि हिम्मत नहीं थी कि इस मुल्क पर हुकूमत करें। हुकूमत करने के लिए भी ख़र्च की ज़रूरत है। उस वक़्त न पैट्रोल था, न सोना अरब के किनारे पर क़ैसर व किसरा कि हुकूमतें फ़ौजी निज़ाम रखती थीं कि अरब इन पर किसी वक़्त भी चढ़ाई न कर दें वरना कोई निज़ाम हुकूमत पूरे अरब भर में न था, तो जिस मुल्क में निज़ाम चलाने के लिए हुकूमतें तक की हिम्मत न पढ़ती हो, उस मुल्क में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेहनत की। ये जो मक़ामात तिजारत व ज़राअत के मरकज़ थे वे सब ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले में आए, सिवाए मदीना पाक के आदमियों के, सारे मुल्क ख़ुशहाल कबीले मुख़ालिफ़ थे, सारा अरब मुंतज़िर था कि मक्का वाले इस्लाम लाएं तो हम भी लाएं, और मक्का वालों ने आप सल्ल० की ज़िंदगी के आख़िरी दौर तक मुक़ाबला किया। अब ऐसे हालात में जितना काम हुआ तमाम का तमाम मदीना की बस्ती से हुआ। जहां भी कोई ईमान लाता, इसे मदीना में बुलाया जाता तो मदीना ऐसी बस्ती बन गया जहां लोग ख़ानदान और बिरादरी छोड़-छोड़कर आकर बस्ते रहे। और जब क़ौम से निकलकर आते थे तो अपना माल भी लेकर नहीं आ सकते

थे, मदीना वालों को इनके रहने, खाने–पीने का इंतिज़ाम करना पड़ता था। अब यह ऐसी बस्ती बन गई जहां मुहाजिर और मक़ामी बराबर हो गए।

आने वालों में कुछ तो थे ही फ़क़ीर, कुछ के रोज़गार टूट गए, कुछ के अम्वल मक़ाम वालों ने छिन लिए। ग़रज़ यह है कि मदीना में आने वाले सब ही फ़क़ीर बनकर आए। उन फ़क़ीरों और मदीना के असांर को लेकर आप सल्ल० ने दीन की मेहनत का काम शुरू किया। बाहर से आने वालों को कारोबार करने से नहीं रोका गया, जब तक कमाई की शक्लें वजूद में आई मुक़ामियों ने सबकी ज़रूरत का इंतिज़ाम किया, ग़रज़ यह है कि मदीना में बसने वालों पर इतना बोझ पड़ गया था और इनके हालात ऐसे हो गए थे कि कम से कम दस साल अपने कारोबार जमाने या ज़्यादा ख़र्च करने के सबब इनको कहीं बाहर नहीं निकलना चाहिए था, कमाई वाले निज़ाम का यही तक़ाज़ा था, अंसार पर चूंकि सब आने वालों का ख़र्च भी पड़ गया था इसलिए खेतों और बाग़ात के काम में भी ज़्यादा इन्हिमाक की, और ज़्यादा वक़्त लगाने की ज़रूरत थी ताकि आने वालों के ख़र्च पूरे कर सकें, क्योंकि मदीना के अंसार के बहुत से घरों पर कहीं–कहीं ख़ानदान ठहरे हुए थे, ग़रज़ इन ज़रूरतों के एतबार से बाहर निकलने को बिल्कुल मौक़ा नहीं था, लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना वालों की कमाई छुट्टी देने के बजाए दीन की पूरी मेहनत इसी दस साल में की और कराई और दीन की मेहनत का एक नक़्शा क़ायम किया गया कि इंसानी ज़िंदगी में जो तक़ाज़े हैं घरवालों की देखभाल, माल व दौलत कमाने का अमल, इन दोनों अमलों को बार–बार छुड़ाकर दीन की मेहनत के अमल को आगे बढ़ाया या और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को इसी तर्बीयत दी की जिस वक़्त अल्लाह के रास्ते में निकले को कहा जाए और जहां के लिए कहा जाए सब तक़ाज़ों को छोड़कर निकल जाएं। यहां तक कि मग़्रिब के वक़्त निकलने को कहा, उन्हें मदीना में सोने नहीं दिया। जिस तरह पक्के

नमाज़ी आज़ान की आवाज़ सुनकर तमाम काम छोड़कर नमाज़ के लिए खड़े हो जाते थे। जिस वक़्त अल्लाह के रास्ते में ईमान व दीन के तक़ाज़ों पर आवाज़ लगती, या आवाज़ सौदे ख़रीदते वक़्त सुनें या दुकान खोलते वक़्त कान में आए, ख़रीदो-फ़रोख़्त के इंतिहाई इंहिमाक के वक़्त सुनी जाए, या आवाज़ ख़जूर के बाग़ों में ख़जूरों के तोड़ने के वक़्त लगे, निकाह होने के वक़्त लगे, या रुख़्सती होने के वक़्त लगे, औरतों के बच्चा पैदा होने के वक़्त लगे या बीमारी के वक़्त लगे या क़रीबी और घरवालों की मौत के वक़्त लगे, इसकी मश्क़ कर ली थी जिस वक़्त आवाज़ सुनें, सब छोड़-छाड़कर निकज जाएं, जो पास हो ले लें, जहां ज़रूरत हो चले जाएं, जितने वक़्त का तक़ाज़ा हो वहां गुज़ारें, जो जान पर बीते उसे झेलें। यह मिज़ाज बन गया था ख़ुदा के रास्ते में निकलने वालों का।

मदीना पाक के दस साल के क़ियाम में डेढ़-सौ जमाअतें निकल जिसमें पच्चीस सफ़रों में आप सल्ल० खुद तशरीफ़ ले गए। किसी में दस हज़ार आदमी निकले, किसी में पचास हज़ार निकले, किसी में तीस या चालीस निकले, किसी में तीन-सौ तेरी निकले, मुद्दत के एतबार से किसी में दो माह ख़र्च हुए, किसी में तीन माह, किसी में बीस दिन, किसी में पंद्रह दिन ख़र्च हुए बाक़ी सौ जमआतें निकालीं, इनमें भी हज़ार निकले, पांच सौ भी छः सौ भी कम-ज़्यादा सब तरह निकलते रहे, मुद्दत माह चार माह सब तरह का वक़्त लगा। अब हिसाब लगाओ कि हर आदमी के हिस्से में बाहर गुज़ारने का कितना वक़्त पढ़ा और साल में कितने सफ़र किए, अगर सब सफ़रों को जोड़कर हिसाब करोगे तो साल में छः माह या सात माह हर आदमी के हिस्से में आएंगे। अब इस नक़ल व हरकत की कोशीश से अलग-अलग मक़ामात के इंसानों को मदीना आने की दावतें मिलें कि इस्लाम मदीना में आकर सीखो। चूंकि इस्लामी ज़िंदगी माहौल से आएगी, इस ज़िंदगी का माहौल सिर्फ़ मदीना में था तो बाहर निकलने वालों को मदीना मुनव्वरा के क़ियाम के ज़माने में बाहर से आने वालों

को दीन सिखना पड़ता था। फिर मदीना वालों को अपने लिए भी इल्म हासिल करने के लिए वक़्त निकलना पड़ता था। मदीना में क़ियाम का ज़माना में मस्जिदों के लिए वक़्त मांगा जाता था, ताकि सिखने-सीखाने को निज़ाम मस्जिदों में क़ायम रहे और आने वालों को संभाला जाए।

उन लोगों ने रोज़ाना की ज़िंदगी ऐसी बनाई कि अगर दो आदिमयों ने मिलकर तिजारत शुरू की तो बारी लगाई, एक-एक दिन की, कोई किसी वक़्त, कोई किसी वक़्त, कोई कमाकर पहुंच जाता है, कोई शाम को पहुंचता और कोई रात को रहता, इशा बाद से इबादत में लगा रहता, फिर सोता, कुछ इशा पढ़ते ही सो जाते और पिछले वक़्त में तहज्जुद अदा करते। इस तरह चौबीस घंटे मस्जिद में मक़ामी मुसलमान मौजूद रहते। अब जा बाहर से जिस वक़्त पहुंचते, आदमी मस्जिद में इनको संभालने को मौजूद मिलतें, कभी तालीम के हलक़े हो रहे हैं तो आने वालों को इसमें बिठाते, नमाज़ हो रही है तो इसमें शामिल कर रहे हैं। ज़िक्र-अज़्कार जिस वक़्त हो रहे है इसमें जुड़ रहे हैं। इसी तरह आने वाले भी अपने को ख़ाली किसी वक़्त नहीं समझेंगे।

अब हिसाब लगाओ छः सात माह तो बाहर ख़र्च हुए, मस्जिदों की बारी में भी दो-ढाइ माह निकल गए। अब दुनियावी ज़रूरतों के लिए कितना वक़्त रह गया। हर शख़्स का वक़्त बेरूनी नक़ल व हरक़त में बहुत-सा लग गया और काफ़ी वक़्त मदीना आने वालों के संभालने में लग गया, आमदनी का ज़रिया तो आम हालत से भी कम हो गए और ख़र्चे कई गुनाह ज़्यादा बढ़ गए। बाहर की नक़ल व हरक़त का ख़र्च, अपना और घरवालों का ख़र्च जो दूसरी बाहर से मदीना में आएं जो इनका ख़र्च जो मदीना के ग़रीब बाहर निकल रहे हैं इनका सफ़र ख़र्च, सवारी, लिबास, खाना, बाहर वाले ख़ुशहाल आएं, इनकी भी दावतें करना, फिर जिन इलाक़ों में कहत होता वह भी मदीना पाक आते, इनकी भी मदद करना, ग़रज़ यह है कि ख़र्च

तो नक़ल व हरकत के ज़माने में भी और क़ियाम के ज़माने में भी बहुत बढ़ गया और कमाई की शक्लें टूट गयीं।

नतीजा यह हुआ कि बाहर भी और मकाम पर भी फ़ाक़े झेलने पड़े, सर्दी भी सहनी पड़ी, गर्मी भी बरदाश्त करनी पड़ी। ग़रज़ यह है कि हर क़िस्म की तक्लीफ़ उठानी पड़ी। अपना पेट काट–काटकर मुक़ामी और बेरूनी ख़ाकों को चलाया। तो जब ईमान का काम करने वालों ने ईमान के तक़ाज़ों को कमाइयों और घर के तक़ाज़ों पर कर दिया तो अल्लाह तआला ने इस नक़्शे से ख़ुश होकर तमाम अरब के बसने वाली क़ौमों को इस्लाम में दाख़िल कर दिया और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथियों की कुरबानी की बरकत से इन तमाम इंसानों की तर्बीयत हो गई जिनकी तर्बीयत की हुकूमतों को भी हिम्मत नहीं होती थी। आप ऐसी हालत से दुनिया से तशरीफ़ ले गए, जब सारा अरब इस्लाम से मुनव्वर हो चुका था और मदीने का एक–एक घर माल से खाली हो चुका था। फिर अल्लाह तआला ने क़ियामत तक के आने वालों को यह दिखाने के लिए कि इस्लाम ज़ाते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपकी मेहनत से फैला है।

आप सल्ल० के तशरीफ़ ले जाने के बाद अक्सर अरब कबीलों को फिर मुर्तद बना दिया ताकि क़ियामत तक के आने वालों को पता चल जाए कि जब भी हम इस मेहनत को लेकर उठेंगे तो सारे आलम के ख़ाके दुरूस्त हो जाएंगे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिक़ाल होते ही हज़रत सिद्दीक अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना मुनव्वरा के मुसलमानों को बैठने नहीं दिया, बल्कि एकदम सबको खुदा के रास्ते में निकाल दिया, इस भूख और प्यास में, इसी ग़म की हालत में निकाला। यहां तक कि तीन दिन और तीन रातें मदीना पर ऐसी गुज़री हैं कि हर वक़्त हमले का ख़तरा था और मदीना पाक बालिग़ मर्दों से गोया बिल्कुल ख़ाली था। अक्सर तो मुल्क शाम के रूख़ पर उसामा रज़ि० में भेजे गए।

बाक़ी डेढ़–सौ कुर्ब व ज्वार में निकले, ज़ाहिर के एतबार से निकलने का मौक़ा बिल्कुल न था। सिर्फ़ हुक्म की तामील के जज़्बे से निकले। अल्लाह तआला ने इस मेहनत की पूरी दुनिया को क़ीमत दिखाई। एक क़लील अर्से में सारा अरब इस नक़्शे पर आ गया, एक अरब घराना इस्लाम से बाहर नहीं रहा, और इसमें सिर्फ़ एक माह लगा, सिर्फ़ यही नहीं कि मुसलमान बन गए, बल्कि ईमान की पूरी मेहनत पर लौट आई।

तो अस्ल ईमान की मेहनत क़ा नक़्शा यह है कि ऐसी फ़िज़ा पैदा हो जाए कि जिसको जिस वक़्त जहां के लिए कहा जाए, सब मशाग़िल छोड़कर ख़ुदा की राह में चला जाए, और जब बाहर के आदमी दीन सीखने के लिए इसके मक़ाम पर आएं तो यहां भी इनके साथ लग जाए तो अब आप ग़ौर कीजिए कि आज की मेहनतों में और उस मेहनत में कितना फ़र्क़ है। तो अस्ल समझो इस नक़्शे को और यह समझो कि हमारी वाली मेहनातें इब्तदाई हैं और हमें इन जैसी मेहनत करने वाला बनना है पूरी–पूरी जान लगाने वाला बनना है।

मुख़्तसर सी ज़िंदगी है, इसमें थोड़ा–सा वक़्त ज़रूरतों के कमाने के लिए लगाएंगे और बाक़ी तमाम दीन की मेहनत पर ख़र्च करेंगे।

अब ज़हन में यह रखें कि चूंकि यह कुरबानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० के अन्दर से निकली है, इसलिए इनके बदन और रूह के अन्वार इस कुरबानी में मौजूद हैं, लिहाज़ा जितनी कुरबानियां काम करने वालों में बढ़ेंगी इतनी ही हिदायत अल्लाह तआला की तरफ़ से आएगी।

दीन मालों से नहीं फैलेगा, बल्कि दीन की मेहनत से कमाइयों के नक़्शे में जो नुक़्सान और कमाइयां आएगीं उस कुरबानी से फैलेगा, तो इन कौमों को आपके ज़रिए हिदायत मिलेगी जो आसमान पर उड़ रही हैं और हम ग़रीबों की तरफ़ देखती भी नहीं, और वह मुसलमान जो ज़िंदगी के किसी शोब्हे में इस्लाम की बात सुनने को तैयार नहीं, वे अपने तमाम कामों को इस्लाम के अहकामात के मुताबिक़ बना लेगा।

और आप हज़रत की कुरबानियों को बदला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हौज़े–कौसर पर खड़े होकर दिलवाएंगे। जहां आप सल्ल० ने अंसार से मिलने और इनकी कुरबानियों को सिला दिलवाने का वायदा फ़रमाया है। बशर्तेकि ये तै कर लो कि ख़ुदा जो कुछ इन मेहनतों के बाद देगा वह हासिल करके दूसरों को देंगे और ख़ुद न लेंगे। ऐसा करने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की झलक पाई जाएगी क्योंकि आप कुरबानियों के दौर में सहाबा किराम रज़ि० के साथ थे और जब नेमतें मिलने का वक़्त आया तो आप तशरीफ़ ले गए।

इस तरह जो हज़रात अपनी जान व माल की कुरबानी करेंगे और दुनिया में जो कुछ लेना नहीं चाहेंगे और सिर्फ़ आख़िरत पर निगाह रखेंगे वही हज़रात आख़िरत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सबसे ज़्यादा क़रीब होंगे। इन्शाअल्लाह।

बयान न० 8

ख़ुदा की राह में निकलने वाले क़ाफ़िलों के लिए

हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० की हिदायत

तब्लीग़ी इज्तिमात का प्रौग्राम अक्सर यह होता है कि पहले एक दो दिन पूरे ज़ोर और ताक़त के साथ हाज़िर लोगों को इसकी दावत और तर्ग़ीब दी जाती है कि वे ईमान व यक़ीन वाले अमल अपने अन्दर पैदा करने के लिए कुछ मुद्दत के लिए अपना माहौल और रोज़ाना के मशाग़िल से निकलें और दूसरे ख़ुदा के बन्दों को भी इनकी दावत देने के लिए एक ख़ास प्रौग्राम के मुताबिक़ वह मेहनत और मुजाहेदा करें।

अल्लाह के जो बन्दें इस दावत को कुबूल कर लेते हैं इनकी जमआतें तर्तीब दी जाती हैं और इज्तिमे की आख़िर में इनको हिदायत देकर और दुआ करके रूख़्सत कर दिया जाता है

अप्रैल 1962 ई० में कलकत्ता के क़रीब मगराहाट में एक इज्तिमा हुआ था राक़म सतूर भी इनमें शरीक था। पहले दो दिन की दावत व तर्ग़ीब के नतीजे में एक हज़ार से कुछ ऊपर ख़ुदा के बन्दों के नाम लिखवाये जिनको क़रीब–क़रीब सौ जमाअतों में तक़्सीम कर दिया गया। आख़िरी दिन हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० ने जमाअतों को रूख़्सत करते वक़्त जो तक़रीर फ़रमाई थी वह इस आजिज़ ने

इशारात में क़लमबन्द कर ली थी। वही ज़ैल में दरज की जा रही है। इसमें जो कुछ है वह मज़्मून के हद तक हज़रत मौलाना मरहूम का है, लेकिन शब्द के बारे में यह बात नहीं कही जा सकती।

खुत्बा मस्नूना के बाद मौलाना ने फ़रमायाः—

आफ़ताब नूरानी है, इसके अन्दर नूर है, वह अपने नूर के साथ चक्कर लगाता है तो दुनिया में नूर फैलता है, अगर बजाए नूरानी के वह खुद ज़ुल्माती होता और इसमें नूर के बजाए ज़ुल्मत होता तो ज़ुल्म फैलने का ज़रिया बनता। आप लोग अपने घर छोड़कर निकल रहे हैं और दूर क़रीब की दुनिया में फिरेंगे। अगर आप में नूर होगा तो आपके ज़रिए नूर फैलेगा। और अगर आपके अन्दर ज़ुल्मत होगा तो वही ज़ुल्मत फैलेगा। इसलिए आपको कोशीश करनी है कि आपके अन्दर नूर हो और आप खुद नूरानी बनें।

किसी इन्सान की ज़ात में नूर नहीं है, नूर वाले आमाल से इन्सान से नूर आता है इसलिए आप लोगों को नूर वाले आमाल करने हैं ताकि आपके अन्दर नूर आए और आपके ज़रिए नूर फैले और ज़ुल्मत वाले आमाल से अपने आपको बचाना है आप ज़ुल्मत फैलाने का ज़रिया न बनें।

नूर वाले अमल वह मुहम्मदी आमाल है जो अल्लाह की रज़ा के लिए किए जाएं, उन आमाल को इतनी कसरत से और तसल्सुल और लगातार करने की ज़रूरत है कि आप इनके नूरानी रंग में रंगे जाएं। वे नूरानी आमाल ये हैंः—

1. इख़्लास के साथ ईमान व यक़ीन हासिल करने की दावत जो अंबिया अलैहिस्सलाम की ख़ास मिरास और अल्लाह की मख़्लूक़ के साथ सबसे बड़ी ख़ैर—ख़्वाही है।

2. नमाज़ और इबादात में जिसमें ज़िक्र व तिलावत, दुआ, इस्तिग़फ़ार सब शामिल हैं।

3. इल्म में मश्ग़ूलीयत, ख़ासकर वह इल्म जिसमें इंसानों के

आमाल व अफ़आल के आख़िरत में ज़ाहिर होने वाले नताइज का बयान हो, यानी तर्ग़ीब व तर्हीब।

4. अच्छे अख़्लाक़ जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ थे और जिनकी आप सल्ल० ने तालीम दी, जिसका ख़ुलासा और हासिल है अल्लाह की रज़ा के लिए इसकी मख़्लूक़ की ख़िदमत और इसके साथ अच्छा बर्ताव।

यह हैं वह नूरानी अमल जिनकी लगातार और कसरत से करने से नूर पैदा होता है, और ज़िंदगी नूरानी बनती है, आपको इन्हीं आमाल में मश्ग़ूल रहते हुए फिरना है।

याद रखें कि आप सिर्फ़ अपना घर, अपने घरवालों, और अपने ख़ास माहौल को छोड़कर जा रहे हैं नफ़्स और शैतान को छोड़कर नहीं जा रहे हैं। यह दोनों दुश्मन हर क़दम पर और दिन–रात आपके साथ रहेंगे। आपकी बुरी आदतें भी आपके साथ जा रही हैं, यह सब चीज़ें आपको उन आमाल की तरफ़ खींचेंगी जिनसे आपमें ज़ुल्मत आए और आप ख़ुदा से दूर और इसकी रज़ा से महरूम हो, आप इन दुश्मनों के शर से सिर्फ़ इस तरह बच सकते हैं कि इस बात का पूरा एहतिमाम करे कि सोने के छः–सात घंटों के अलावा दिन–रात के तमाम वक़्त में अपने को नूरानी अमल में मश्ग़ूल रखे, या आप ईमान की और ईमान वाले आमाल की दावत देते हों, या नमाज़ और ज़िक्र तिलावत वग़ैरह किसी इबादत में मश्ग़ूल हों, या तालीम व ताल्लुम में लगे हो, या कोई ख़िदमत वाला काम अंजाम दे रहे हों।

नफ़्स और शैतान के शर से बचने की सिर्फ़ यही सूरत है कि आपका वक़्त इन कामों से फ़ारिग़ और ख़ाली न हो।

"خانۂ خالی را دیو می گیرد"

फिर यह आमाल भी नूर हासिल होने का ज़रिया इसी सूरत में बनेंगे जबकि सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए और आख़िरत के सवाब पर निगाह रखते हुए किए जाएं। अगर अल्लाह न करे नीयत ख़ालिस

न रही तो यही आमाल जहन्नम में खींच ले जाएंगे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की मशहूर हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत में सबसे पहले तीन आदमियों के बारे में जहन्नम का फ़ैसला किया जाएगा और जहन्नम में सबसे पहले इन्हीं को फूंका जाएगा, इनमें एक वह आलिमे दीन और आलीमे कुरआन जो उम्र भर कुरआन सीखने, सिखाने में मश्गूल रहा। और दूसरा एक दौलतमंद सख़ी होगा जिसको दुनिया में अल्लाह ने ख़ूब दौलत से नवाज़ा था और वह अल्लाह की दी हुई दौलत नेकी के कामों में ख़ूब खुलकर ख़र्च करता था, और तीसरा शख़्स एक शहीद होगा जो जिहाद के मैदान में दुश्मन की तलवारों से शहीद हुआ होगा।

लेकिन इन तीनों ने ये आमाल सिर्फ़ अल्लाह के लिए नहीं किए थे दुनिया में नाम, शौहरत और इज़्ज़त हासिल करने के लिए किए थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन ये तीनों क़िस्म के आदमी अल्लाह तआला के हुज़ूर में पेश होंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि हम दिलों और नीयतों का हाल जानते हैं, तुम लोगों ने ये नूरानी और अच्छे आमाल हमारी रज़ा के लिए नहीं किए थे, बल्कि दुनिया में नाम और शौहरत के लिए किए थे और ये चीज़ तुम्हें दुनिया में मिल चुकी, अब तुम्हारे लिए यहां कुछ नहीं। इसके बाद इनको इनके इन्हीं आमाल की वजह से घिसटकर जहन्नम में फूंक दिया जाएगा, बल्कि हदीस में यह भी है कि यह पहले वह जहन्नमी होंगे जिनके लिए सबसे पहले जहन्नम का फ़ैसला किया जाएगा।

सोचिये किस क़द्र लर्ज़ा देने वाली बात है यह हदीस, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु इस हदीस को रिवायत फ़रमाते तो कभी–कभी मारे ख़ौफ़ के इनकी चीख़ें निकल जातीं और इन पर बेहोशी का दौरा पड़ जाता था।

और एक दफ़ा किसी ताबई ने यही हदीस हज़रत अबू हुरैरह

रज़ियल्लाहु अन्हु से सुनकर हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने नक़ल की तो अमीर मुआविया रज़ि० इतना रोए कि लोगों को इनकी जान का ख़तरा हो गया। बहुत देर के बाद इनकी हालत ठीक हुई, और इन्होंने फ़रमायाः—

صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ۔ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۝

अल्लाह पाक ने कुरआन पाक में सच फ़रमाया है, और इसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह की तरफ़ से बिल्कुल सही पहुंचाया है कि 'जो कोई अपने अमल से दुनिया और दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत चाहेगा, इसको इसके आमाल का पूरा नतीजा दुनिया में हम दे देंगे और इनके लिए इसमें बिल्कुल कमी नहीं की जाएगी। इन लोगों के लिए आख़िरत में सिवाए दोज़ख़ की आग के और कुछ न होगा, और जो अमल इन्होंने किए थे वे बेकार जाएंगे और बेकार वाला हासिल होंगे इनके आमाल।'

बहरहाल नूरानी आमाल नूर पैदा करने का ज़रिया इसी सूरत में हो सकते हैं जब कि वह ख़ालिस अल्लाह की रज़ा के लिए और आख़िरत के लिए किए जाए, इसलिए आपको एक तरफ़ तो अपने तमाम वक़्त इन्हीं आमाल में मश्ग़ूल रखना है और दूसरी तरफ़ इसका एहतिमाम करना है कि नीयत सही रहे। जब किसी बन्दें को अच्छे अमल हटा नहीं सकता तो इसकी नीयत में फ़साद डालने की कोशीश करता है।

अल्लाह वाले अगर अमल अगर ग़ैर अल्लाह के लिए किए जाएं तो इनमें अल्लाह वाली निस्बत नहीं रहती। और अगर अल्लाह की रज़ा के लिए वे आमाल किए जाएं जो हक़ीक़त में रज़ा वाले आमाल नहीं हैं तो इनमें अल्लाह की निस्बत नहीं आती वे अल्लाह की रज़ा

का वसीला नहीं बनते इसलिए दोनों की कोशीश ज़रूरी हैं।

एक अल्लाह की रज़ा वाले आमाल में मश्गूलियत, हमदम ऐसी मश्गूलियत कि इनका रंग चढ़ जाए।

और नीयत की सेहत का एहतिमाम, जिसका मतलब यह है कि हर अमल से मक्सद अल्लाह की रज़ा हो, सारी कामियाबी बस अल्लाह की रज़ा में है और इसकी नाराज़ी में तमाम नाकामी और ना–मुरादी है।

मैं बता चुका हूं कि इस निकलने के ज़माने में बस चार कामों में अपने आपको मश्गूल रखना है। सबसे पहली चीज़ है ईमान व यक़ीन की और ईमान वाले आमाल की दावत। इस दावत के लिए उमूमी गश्त होंगे, ख़सूसी गश्त होंगे, जिनके उसूल व आदाब गश्त के लिए निकलते वक़्त बतलाए जाएंगे। इनको ध्यान से सुना जाए। और जिस वक़्त आप गलियों और बाज़ारों में निकलेंगे तो शैतान आपको वहां के नक्शों की तरफ़ मुतवज्जोह करेगा। इसलिए सबसे पहले दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला शैतान व नफ़्स के शर से बचाए और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ काम करने की तौफ़िक़ दे, पूरे गश्त में इसका एहतिमाम रहे कि बस अल्लाह के जलाल व जमाल पर और इसकी सिफ़ाते आलिया पर नज़र रहे। निगाहें नीची रहें और अपना मक्सद निगाह के सामने रहे।

जिस तरह जब किसी मरीज़ को अस्पताल लेकर जाते हैं तो ख़ुद मरीज़ और इसके साथी अस्पताल की आलीशान इमारतों को वहां के नक्शे को दिलचस्पी से नहीं देखते, बल्कि इनके सामने बस मरीज़ का इलाज होता है।

ख़सूसी गश्त में अगर देखा जाए कि वह साहब जिनसे आप मिलने गए हैं, उस वक़्त तवज्जोह से बात सुनने को तैयार नहीं हैं तो मुनासिब तरीक़े से जल्दी बात ख़त्म करके इनके पास उठ आना चाहिए, और इनके लिए दुआ करनी चाहिए। और अगर देखा जाए कि वह साहब मुतावज्जोह हैं तो फिर पूरी बात उनके सामने रखनी

चाहिए और वक़्त फ़ारिग़ करने के लिए भी कहना चाहिए।

खुसूसी गश्त में जब दीनी अकाबीर की ख़िदमत में हाज़िरी हो तो इनसे सिर्फ़ दुआ की दर्ख़ास्त की जाए, और उनकी तवज्जोह देखी जाए तो काम का कुछ ज़िक्र कर दिया जाए। उमूमी गश्त करके लोगों को मस्जिद में जमा किया जाए और इनके सामने ईमान व यक़ीन, नमाज़, अल्लाह का ज़िक्र, इल्मे दीन, अख़्लाक़ और दीनी जद्दो–जहद की बात रखी जाए और तशकील की कोशीश की जाए, फिर तशकील करके मुतमइन न हो जाएं बल्कि जिन लोगों ने वायदे किए हैं और नाम लिखवाये हैं इनको अल्लाह के रास्ते में निकाल देने की और वायदों को अमल ले आने की पूरी कोशीश करें और अपने इम्कान भर इसका इंतिज़ाम करें कि इनका वक़्त अच्छी तरह गुज़रे।

जो लोग उस वक़्त निकलने का फ़ैसला न कर सकें, इनको मक़ामी गश्त, मक़ामी इज्तिमआ, तालीम, नमाज़, ज़िक्र की पाबन्दी पर राज़ी किया जाए और इन कामों को निज़ाम बना दिया जाए।

जब दावत के सिलसिले की सारी मेहनत कर चुकें तो इस किसान की तरह जो ज़मीन में बीच बिखेर देता है और फिर अल्लाह से लो लगाता है पूरे दिल के साथ अल्लाह से दुआ करें, वही दिलों के हाल को जानने वाले है, वही जिसको चाहे ईमान और ईमान वालें आमाल देता है जिसके लिए नहीं चाहता इसको महरूम रखता है।

दावत के बाद दूसरा काम तालीम है, जब तालीम के लिए बैठें तो अदब से बैठें, दिल रसूलुल्लाह के लाए हुए इल्म अज़्मत से दबा हुआ हो, फ़ज़ाइल का तज़्किरा हो, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम फ़रमाई हुई दुआएं याद की जाएं।

जो वक़्त दावत और तालीम से खाली हो और दूसरा कोई ज़रूरी काम भी उस वक़्त न हो, इसमें नवाफ़िल पढ़ी जाएं, या कुरआन मजीद की तिलावत की जाए या ज़िक्र व तस्बीह में मश्ग़ूल किया जाए, या अल्लाह के किसी बन्दे की ख़िदमत की जाए।

जिस तरह नमाज़ में आदमी क़ियाम में होता है या रूकूअ में या

सज्दे में या क़ायदे में, इसी तरह अल्लाह के रास्ते में निकलने के बाद आदमी दावत में लगा हो, या तालीम या ताल्लुम में, या ज़िक्र व इबादत में, या अल्लाह की किसी मख़्लूक़ में की ख़िदमत में—यह चार काम इस पूरे ज़माने में बतौर असल मक़्सद के लिए किए जाएंगे और इतने किए जाएंगे कि यही आदत व मिज़ाज बन जाए। यह इज्तिमाई भी किए जाएंगे और इंफ़िरादी भी। इजितमाई से मतलब वह है जो जमाअती निज़ाम के तहत हो जैसे ख़ूसूसी गश्त और उमूमी गश्त में दावत और जमाअत की तालीम के वक़्त में तालीम और जमाअत के साथ फ़र्ज़ नमाज़ें और इनके आगे–पीछे की सुन्नतें और जमाअती तक़्सीम–कार के मुताबिक खाने वग़ैरह के इंतिज़ाम की दौड़–धूप, ये सब आमाल इज्तिमाई हैं, इंफ़िरादी तालीम, इंफ़िरादी इबादत, इंफ़िरादी ख़िदमत वह होगी जो जमाअती प्रौग्राम के अलावा कोई शख़्स अपने इस ख़ाली वक़्त में करे जिसमें कोई इज्तिमाई काम नहीं है, मिसाल के तौर पर दोपहर के खाने के बाद ज़ुहर तक कोई जमाअती काम दावत या तालीम वग़ैरह नहीं है, हर शख़्स को इजाज़त है कि वह इसमें आराम करे।

अब अगर कोई अल्लाह का बन्दा अपने इस वक़्त में आराम करने के बजाए किसी शख़्स के पास जाकर दावत ईमान की बातें करे या किसी अल्लाह के बन्दे को कोई दुआ याद कराए, या इसकी नमाज़ सही कराए या मस्जिद के किसी कोने में खड़े होकर नफ़्लें पढ़ने लगे या किसी साथी की कोई ख़िदमत करने लगे तो ये सब शक्लें इंफ़िरादी अमल की होंगी।

बहरहाल अल्लाह के रास्ते में निकले के ज़माने में या चार काम असल मक़्सद के तौर पर किए जाएं ज़रूरी हाजत के अलावा अपना पूरा वक़्त इन्हीं कामों में मश्ग़ूल रखे जाएं, इसलिए कि इनके ज़रिए ज़िंदगी में नूर आएगा और इन्शाअल्लाह वह नूर मुताअद्दी होगा और फैलेगा।

इन चार कामों के अलावा चार ही काम ख़ास ज़रूरत के तौर

पर किए जाएंगे और सिर्फ़ ज़रूरत के ब–क़द्र ही किए जाएंगे। वह चार ये हैं:–

1. खाना–पीना।
2. क़ज़ाए हाजत
3. सोना
4. आपस में बात–चीत करना।

या ना–गुज़ीर ज़रूरतें हैं, इनको बस इतना ही वक़्त दिया जाए जितना ज़रूरी और ना–गुज़ीर हो। सोने के लिए दिन–रात में छः घंटे काफ़ी हैं।

चार बातें वे हैं जिनसे पूरे एहतिमाम से बचा जाए:–

1. किसी से सवाल न किया जाए बल्कि किसी के सामने अपनी अपनी कोई ज़रूरत ज़ाहिर न की जाए यह भी एक तरह का सवाल है।

2. अश्राफ़ से भी बचा जाए। अश्राफ़ यह है कि जुबान से तो सवाल न करे, लेकिन दिल में किसी बन्दे से कुछ हासिल होने की चाहत हो, गोया बजाए जुबान के दिल में सवाल हो।

3. इसराफ़ से बचा जाए, इसराफ़ यानी फ़िज़ूल ख़र्ची हर हाल में मअयूब और मुज़र है लेकिन अल्लाह के रास्ते में निकले के ज़माने में इसके नतीजे अपने हक़ में भी बहुत बुरे होते हैं और दूसरे साथियों के हक़ में भी।

4. बग़ैर इजाज़त किसी साथी की भी कोई चीज़ इस्तेमाल न की जाए, कभी–कभी इससे बड़ी चोट पहुंचती है, शरीअत में यह बिल्कुल हराम है, हां इजाज़त लेकर इस्तेमाल करने में कोई हरज नहीं है।

बस यह ज़रूरी–ज़रूरी बातें जिनकी पाबन्दी इस रास्ते में निकलने वालों के लिए ज़रूरी है। आप लोगों के चौबीस घंटे इन पाबंदियों में गुज़रने चाहिये, इन आमाल की पूरी पाबंदी करते हुए आप अल्लाह की ज़मीन में और अल्लाह की मख़्लूक़ में फिरें और अपने लिए

और पूरी उम्मते मुस्लिमा के लिए और आम इंसानों के लिए अल्लाह से हिदायत मांगये। बस यही आपका अमल और आपका वज़ीफ़ा है, अगर आपने ऐसा किया तो अल्लाह तआला जो अरहमर्र–राहिमीन है हरगिज़ महरूम नहीं रखेगा।

बयान न० 9

सहाबा किराम रज़ि० की मेहनत से सारे आलम में इस्लाम फैला

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० की एक अहम तक़रीर

देहली और सीलून के दोस्तों से ख़िताब

बुज़ुर्गों और दोस्तों !

यों समझये कि एक मेहनत है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने एक ख़ास नक़्शे के साथ की हैं। हम भी चाहते है कि हम इस मेहनत के तरीक़े सीखें। और अल–हम्दु लिल्लाह और दोस्तों ने अलग–अलग मुल्कों में इसको सीखना शुरू भी कर दिया है, लेकिन किसी जगह की मेहनत इंतिहा को पहुंची हुई नहीं है। बल्कि अलग–अलग दर्जों में है। अगर हर जगह की मेहनत करने वाले यों समझें की पूरी मेहनत यही है और इसकी शक्ल भी यही है तो मेहनत की असल शक्ल पर कोई नहीं पहुंच सकेगा। जो भी मेहनत करे वे यों समझे कि मैं जो मेहनत कर रहा हूं यह शुरूअती मेहनत है, और मुझे मेहनत करते–करते हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत के नक़्शे पर पहुंचना है, अब जब वह इसी मेहनत को असल जानेंगे तो इंसान समझेगा कि इसके मुक़ाबले में यह मेहनत छोटी–सी है, असल नहीं है। अगर वह असल मेहनत सामने हो तो फिर इंसान समझेगा कि मेरी मेहनत इस मुक़ाबले में बहुत छोटी है,

इसलिए असली मेहनत पर पहुंचना है।

अब एक तरफ़ तो यह सोचना है कि इस मेहनत का फ़ायदा क्या है और दूसरी तरफ़ यह समझना है कि मेहनत क्या है ? इस मेहनत का फ़ायदा तो यह कि मेहनत करने वालों को और दूसरों को हिदायत मिल जाए, क्योंकि लोग दीन पर इतना चलेंगे और दीन को इतना कुबूल करेंगे जितना खुदा की तरफ़ से हिदायत मिलेगी। और खुदा की तरफ़ से हिदायत इतनी मिलेगी जितनी मेहनत की सतह बुलंद होती जाएगी। अगर यह मेहनत ख़त्म हो जाती है तो मुसलमान से हिदायत निकलनी शुरू हो जाती है, पहले कारोबार में से हिदायत निकलती है, यानी लोग कारोबार में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े छोड़कर दूसरे तरीक़े अख़्तियार करते हैं, फिर निकलते–निकलते सारे फ़राइज़ निकल जाते हैं और बुराइयां दाख़िल हो जाती हैं। यहां तक कि मुसलमान दीन से निकल जाते हैं। और अगर फिर भी मेहनत की तवज्जोह न हो तो इस्लाम निकलकर कुफ़्र आ जाता है। और जब यह मेहनत शुरू कर दी जाती है तो खुदा की तरफ़ से हिदायत आनी शुरू हो जाती है। फिर जिस दर्जे मेहनत बुलन्द होती जाएगी, हिदायत आम होती जाएगी। और लोगों को हिदायत मिलती जाएगी।

हिदायत की एक सतह तो यह है कि लोग नमाज़ पढ़ने लगें, ज़कात देने लगें, रोज़े रखने लगें, हज करने लगें। दूसरी यह कि अपनी कमाइयों और ख़र्चों को अपने दीन के मुताबिक़ ले आएं। और इससे अगली सतह यह है कि ग़ैर–मुस्लिमों को खुदा हिदायत फ़रमा दें। मेहनत के ब–क़द्र हिदायत आएगी, और हिदायत के ब–क़द्र दीन ज़िंदा होगा। हिदायत खुदा की तरफ़ से मेहनत की ब–क़द्र आएगी। अब हम जो देख रहे हैं कि मुसलमान दीन पर नहीं चल रहे हैं और दीन से निकलकर कुफ़्र व शिर्क और जिहालत में जा रहा है और इस्लाम से निकलकर दूसरे बातिल मज़हब अख़्तियार कर रहा है। इसकी वजह यह है कि दीन के लिए मेहनत निकल चुकी है। अब

जितनी जहां लोगों ने मेहनत शुरू का दी इतनी ही खुदा ने हिदायत शुरू कर दी। और ब–क़द्रे हिदायत दीन ज़िंदा होने लगा। बहुत–सी जगह नमाज़ नहीं थी, नमाज़ पढ़ी जाने लगी, रोज़े नहीं थे, रोज़े रखे जाने लगे, हज नहीं था, हज किया जाने लगा। तालीम नहीं थी, तालीम करने लगे, लेकिन हिदायत अभी इस सतह की नहीं मिली कि कमाइयों के अन्दर के अहकाम पूरे होने लगे, और खाने–पीने मकान बनाने में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली राह और तरीक़े को अख़्तियार करें तो अभी हम मुसलमान भी इसके मुहताज है कि मेहनत की सतह बुलन्द हो ताकि पूरी ज़िंदगी दीन इस्लाम पर चलने की हिदायत मिले, और ग़ैर–मुस्लिमों को भी दीन समझने की हिदायत मिले। हम मुसलमान भी मुहताज हैं कि हिदायत इस दर्जे की मिल जाए कि हम पूरे दीन पर अमल करने वाले बनें और यह कि ग़ैर–मुस्लिमों को भी ख़ुदा हिदायत दे।

अब इस मेहनत में दो मेहनतें हैं। एक तो मिक़्दार में मेहनत बढ़ाना, दूसरे जो लोग मेहनत कर रहे हैं इनकी मेहनतों का सही शक्ल पर पढ़ना। अब यह दो अलग–अलग लाइनें हैं अगर हज़ारों लाखों आदमी मेहनत करने वाले बन जाएं, लेकिन थोड़ी–थोड़ी करें तो हिदायत भी थोड़ी–थोड़ी आएगी और अगर खुदा ऐसी सूरत कर दे जो थोड़ी मेहनत कर रहे हैं वही मेहनत की मिक़्दार को बढ़ा दें तो मुसलमानों को भी हिदायत मिलेगी और ग़ैर–मुस्लिमों को भी।

अभी तक हमारी मेहनत की हालत यह है कि मश्गूल आदमी मेहनत के लिए थोड़ा–थोड़ा वक़्त अंदाज़ से निकालते हैं कि इनकी कमाइयों के नक़्शे में फ़र्क़ न पड़े।

अल्लाह तआला ने बातिल तरीक़ों के फैलने के लिए तो माल के नक़्शे दिए हैं, यानी हुकूमत, तिजारत, सामान वग़ैरह। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो तरीक़े हैं, इनके लिए साथियों से कुरबानियां दिलवाईं तो मेहनत करने वालों में जितनी इनकी वाली कुरबानियां करने वाले पैदा होंगे तो इनकी मेहनत की सतह बुलंद

होगी।

अब मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की मेहनत की सतह बतलाता हूं, जिससे अगरचे हम अभी तक बहुत दूर हैं, लेकिन अगर हम इसको सामने रखकर चलते रहें तो अल्लाह तआला हमें किसी वक़्त वहां पहुंचा देंगे। हर काम करने वाले को मेहनत के इस आख़िरी नक़्शे को सामने रखकर वहां तक मेहनत करनी चाहिए। ये सब लोग जानते हैं कि अरब में जो इस्लाम फैला है वह मदीना मुनव्वरा वालों की मेहनत से फैला है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने के अरब का रक़्बा हिन्दुस्तान से अगर बड़ा नहीं था तो छोटा भी नहीं था, अगरचे आबादी के एतबार से हिन्दुस्तान के बराबर नहीं था। दुनिया के अलग–अलग इलाक़ों में इस वक़्त कमाई की जितनी शक्लें निकली हुई थीं और इस अरब के इलाक़े में नहीं था। सारे अरब में कोई हुकूमत नहीं थी, जिसके दफ़्तर और शोब्हे क़ायम हों। उस ज़माने में हाजियों से लोग वसूल नहीं करते थे, बल्कि अपने घर से खिलाते थे। लिहाज़ा हज के शोब्हे में कोई ज़रिया नहीं था, खेतियां भी पूरे मुल्क भी नहीं थीं बाग़ात भी नहीं थे, कहीं–कहीं किसी इलाक़े में खजूर अंगूर वग़ैरह के बाग़ात पाए जाते थे मगर अक्सर इलाक़ा इससे ख़ाली था। अलग–अलग मरकज़ थे, जहां छोटे पैमाने पर तिजारत होती थी, लेकिन सारा मुल्क आमतौर पर तिजारती नहीं था। यह सारा अरब भूखा–प्यासा अरब था, सारे अरबों के पास न पहनने के लिए कपड़े थे, न रहने के लिए मकान थे, न पूरे अरब के अन्दर ज़िंदगी गुज़ारने के लिए पानी था, भूख की शिद्दत में कीड़े और सांप भी खा जाते थे, यहां तक कि अगर किसी जगह ख़ून पड़ा हुआ मिल जाता बग़ैर तहक़ीक़ के कि किस चीज़ का है और किस जगह का है चाट जाया करते थे, अक्सर इलाक़े कमाई से ख़ाली और भूख से भरा था, कहीं–कहीं थोड़ी–थोड़ी तिजारत थी। बड़ी हुकूमतों तक कि हिम्मत नहीं होती थी कि इस मुल्क पर हुकूमत करें, क्योंकि हुकूमत करने के

लिए भी हुकूमतें यों सोती थीं कि ऐसे इलाक़े में हुकूमत हो जहां से आमदनी हो, उस ज़माने में न तो पेट्रौल ज़ाहिर हुआ था न सोना निकाला जाता था।

अरब के अलग-अलग किनारों पर दूसरी हुकूमतें अपना फ़ौजी निज़ाम रखती थीं, ताकि यह हमला न कर दें, तो जिस इलाक़े में अपना निज़ाम चलाने की हुकूमतों तक की हिम्मत न हो, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे इलाक़े में मेहनत की। और जितने मरकज़ थे खेतियों, तिजारतों, बाग़ों, और कमाइयों के वह मुख़ालिफ़ थे, सारा अरब इंतिज़ार कर रहा था कि जिस दिन मक्का मुसलमान होगा, उसी दिन हम मुसलमान होंगे। इस जगह जितना काम हुआ है सारा मदीना मुनव्वरा की बस्ती से हुआ है और मक्का वालों ने आख़िरत तक मुक़ाबला किया। जहां कोई-कोई, कहीं-कहीं मुसलमान होता था, इसको कहा जाता था कि वह अपना वतन छोड़कर मदीना मुनव्वरा पहुंच जाए।

लिहाज़ा मदीना मुनव्वरा ऐसी बस्ती बन गया जहां लोग घर और मकान छोड़कर आते थे कि पूरा माल लेकर नहीं आ सकते थे, और इस तरह निकलकर आते थे कि पूरा माल लेकर नहीं आ सकते थे। लिहाज़ा मदीना मुनव्वरा के रहने वाले अंसार रज़ि० को इन सबका इंतिज़ाम करना पड़ता था। अब मदीना मुनव्वरा ऐसी बस्ती बन गई कि जितने मक़ामी लोग थे, इतने ही बाहर के आकर बस गए। इनमें बहुत से तो ऐसे आए कि जिनके घर में कुछ था ही नहीं। गोया फ़क़ीर आकर सर पड़ गए। और बहुत से वे आए जिनकी कमाइयां होती थीं, इनकी कमाइयां छूट गयी और यहां फ़क़ीर बन गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन फ़क़ीरों और मदीना मुनव्वरा वालों को साथ लेकर मेहनत की। इन बाहर से आने वाले फ़क़ीर लोगों को कमाई से रोका नहीं बल्कि तिजारत में लगाया। लेकिन जब तक इनकी कमाई की शक्लें वजूद में आईं उस वक़्त तक मक़ामियों से इनकी सब ज़रूरतें पूरी कराईं, इनको खाना, कपड़ा वग़ैरह सब कुछ

दिलवाया। अब कमाई के एतबार से शुरूआती दस साल कारोबार करने के थे और तक़ाज़ा यह था कि मदीना मुनव्वरा छोड़कर कहीं बाहर न जाएं,

और चूंकि सबका ख़र्च अंसार पर पड़ गया था तो इनके खेतों का भी तक़ाज़ा यह था कि वह ज़्यादा वक़्त इसमें लगाएं। और ज़्यादा कमाई करके खुद भी खाएं और दूसरों को भी ख़िलाएं। इसलिए कि मदीना मुनव्वरा के हर घर पर कहीं कहीं घरों के ख़र्च पड़ गए थे। लिहाज़ा कमाई के एतबार से कहीं जाने का मौक़ा बिल्कुल नहीं था। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना मुनव्वरा वालों को छुट्टी देने के बजाए मेहनत इन दस सालों में कराई। मेहनत का एक ऐसा नक़्शा पैदा किया कि इंसान की ज़रूरत के दोनों अमल यानी कमाई करना और बच्चों का पालना इन दोनों को नीचे रखा और दीन के अमल को बढ़ाया। और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को ऐसी तर्बीयत दी कि इनको जिस वक़्त अल्लाह के रास्ते में निकलने को कहा जाता और जहां को कहा जाता सब छोड़कर निकल जाते। यहां तक कि अगर कोई मग़्रिब के बाद निकलने को तैयार हुए, तो इनको रात मदीने मनुव्वरा में सोने नहीं दिया, बल्कि बाहर निकाल दिया और इन्होंने जंगल में रात गुज़ारी। जिस तरह पक्के नमाज़ी हर काम को अज़ान की आवाज़ पर छोड़कर खड़े हो जाते हैं, इसी तरह मदीना मुनव्वरा वाले, निकलने की आवाज़ जब भी इनको दीन की आवाज़ लगती थी, फ़ौरन खड़े हो जाते थे और छोड़कर चले जाते थे, चाहे वे सौदा ख़रीदने के वक़्त लगे या सौदा बेचने के वक़्त लगे या दुकान खोलने के वक़्त या खेतों में बीच डालने के वक़्त या बाग़ों में खजूरें उतारने के वक़्त लगे या किसी के मरने के वक़्त लगे, चाहे वह आवाज़ रूख़्सती और निकाह के वक़्त लगे, चाहे बीमारी के वक़्त लगे, चाहे वह आवाज़ बच्चे के पैदा होने के वक़्त लगे या मरने के वक़्त। ग़रज़ जिस वक़्त वह आवाज़ लगे फ़ौरन छोड़कर निकल जाओ, जो कुछ पास हो ले लो, जितनी दूर कहीं चले जाओ, और जितने दिन

कहीं गुज़ारो, और जो कुछ तुम्हारी जान पर पड़े बरदाश्त करो, यह मिज़ाज बन गया निकलने का।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दस साल में डेढ़–सौ जमाअतें निकाली

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दस साल के अन्दर डेढ़–सौ जमाअतें निकालीं, जिसमें 25 सफ़र वे हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद तशरीफ़ ले गए, किसी में दस हज़ार निकले, किसी में पांच सौ, किसी में हज़ार, किसी में तीस या चालीस हज़ार, किसी के अन्दर तीन–सौ–तेरह, किसी के अन्दर सिर्फ़ दस या पंद्रह ही गए। किसी में सात और किसी में आठ निकले, किसी में दो महीने, किसी में तीन महीने, किसी पर बीस दिन, किसी पर पंद्रह दिन ख़र्च हुए। अपने अलावा जो सवा–सौ जमाअतें निकालीं, इनमें हज़ार भी निकले, पांच सौ भी निकले, छः सौ और कमी–बेशी इस तरह निकले छः छः माह के लिए भी और कम वक़्त के लिए भी निकले। अब तुम हिसाब लगाओ कि एक–एक आदमी के हिस्से में साल के अन्दर कितने सफ़र आए। अगर तुम हिसाब लगाओगे तो हर एक आदमी के हिसाब में छः या सात माह निकलेंगे।

अब इसके बाद ये नकल व हरकत हुई। फिर जिधर ये नक़ल व हरकत करते थे, इनसे कहते थ कि जब तुम इस्लाम ले आए हो तो इस्लाम मदीना मुनव्वरा में आकर सीखो, क्योंकि इस्लामी ज़िंदगी माहौल से बनेगी, और इस्लामी ज़िंदगी का माहौल सिर्फ़ मदीना मुनव्वरा में था, अब इस्लाम के लिए और दूसरों को इस्लाम सीखाने के लिए वक़्त और इल्म की ज़रूरत है। इसलिए मदीन में इक़ामत के ज़माने में इनके वक़्त मस्जिद के लिए लगे, लिहाज़ा इन्होंने रोज़ाना की ज़िंदगी ऐसी बनाई कि अगर दो आदमियों ने तिजारत शुरू की,

जैसे हज़रत उमर रज़ि० और एक असांरी ने तिजारत शुरू की तो पाबन्दी लगाई कि एक दिन एक काम करे और दूसरा दीन की मेहनत के लिए मस्जिद में वक़्त लगाए, दिन का कुछ हिस्सा मस्जिद में कुछ कमाई में, कोई कुछ सुबह का वक़्त देता है फिर कमाता है, कोई थोड़ा कर जाता है, कोई सुबह का देता है, कोई ज़ुहर का कोई असर का कोई मग़्रिब के दर्मियान, कोई मग़्रिब और इशा के दर्मियान का, कोई इशा के बाद तहज्जुद पढ़ता है और कोई इशा के बाद सोता है, और रात में तहज्जुद पढ़ता है, तो चौबीस घंटे मस्जिद में मक़ामी मौजूद है। अब जो बाहर वाले आते हैं, चाहे जिस वक़्त पहुंचे मक़ामी आदमी इनको संभालने के लिए मिलते हैं, कभी तालीमों में हो इनको तालीम में बिठाएंगे, नमाज़ों में होंगे तो इनको नमाज़ों में लगाएंगे, कभी तस्बीहात में होंगे तो तस्बीहात में लगांऐ, ग़रज़ कोई आने वाला भी ख़ाली नहीं रहेगा। अब यह हिसाब लगाओ कि सात माह बाहर निकल गए, डेढ़–दो माह मस्जिद में निकल गए, तो कमाई के लिए वक़्त कितना रहा। हर शख़्स का बेरूनी नक़ल व हरकत में वक़्त लग गया। बाक़ी बाहर से आनेवालों को संभालने में लग गया, कमाई तो कम, ख़र्चे बहुत ज़्यादा बढ़ गए। बाहर की नक़ल व हरकत का अपना ख़र्च उठाओ, जो दूसरे नक़ल व हरकत वाले ग़रीब निकल रहे हैं, इनका ख़र्च उठाओ, सवारी के लिए भी, खाने–पीने के लिए भी, लिबास के लिए भी, इसके अलावा वह बाहर से आनेवालों को खिलाना–पिलाना, ज़ियाफ़तें करना, फिर यह भी कि बग़ैर हदिया कोई न जाने पाए। जब किसी के यहां कहत (सूखा) पड़े इनके लिए दिलवाना, अब ख़र्चा चार गुनाह हो गया। नक़ल व हरकत के ज़माने में भी, क़ियाम के ज़माने में भी फ़ाक़े झेलने पड़े, सर्दी–गर्मी बरदाश्त करनी पड़ी, पेट काटकर मक़ामी और बेरूनी ख़र्च को चलाया। जब ईमान का काम करने वालों ने ईमान के लिए कमाने के तक़ाज़ों पर ईमान के तक़ाज़ों को आगे कर दिया। तो अल्लाह तआला ने इस नक़्शे से ख़ुश होकर और सारे अरब की बसने वाली क़ौम को इस्लमा में दाख़िल फ़रमाकर और हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इनके साथियों की कुरबानियों की बरकत से इन सारे लोगों की तर्बीयत फ़रमा दी, जिनकी तर्बीयत की हुकूमतें तक हिम्मत न रखती थीं। आप सल्ल० इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए कि सारा अरब इस्लाम से मुनव्वर हो चुका था, लेकिन मदीना मुनव्वरा वालों के घर ख़ाली हो चुके थे। फिर अल्लाह तआला ने तमाम क़ियामत तक आने वाले आदमियों को यह दिखाने के लिए कि इस्लाम सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात से नहीं फैला बल्कि मेहनत से फैला है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया से पर्दा फ़रमाने के बाद सारे अरब को मुर्तद बना दिया कि क़ियामत तक के आने वालों को पता चल जाए कि जब भी हम इस नक़्शे को लेकर उठेंगे तो सारे आलम के ख़ाके दुरुस्त हो जाएंगे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विसाल होने के बाद भी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना मुनव्वरा के मुसलमानों को बैठने नहीं दिया, एक दम सबको निकाल दिया, ऐसी भूख व प्यास की हालत में और आपके विसाल के ग़म की हालत में निकाल दिया। यहां तक कि तीन दिन और तीन रात मदीना मुनव्वरा में ऐसी हालत में गुज़रे कि हर वक़्त हमले का ख़तरा था। एक बालिग़ भी मर्द भी मदीना मनुव्वरा मौजूद नहीं था। एक—सौ पचास तो कुर्ब व ज्वर में निकले, बाक़ी मुल्क शाम को निकल गए। अल्लाह तआला ने इस मेहनत की पूरी दुनिया को क़ीमत दिखाई कि कम अर्से में सारा अरब इस नक़्शे पर आ गया जिस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छोड़कर गए थे न यह कि सब मुसलमान हो गए बल्कि इसी तरह पूरी मेहनत पर आ गए तो असल इस्लाम का नक़्शा यह है कि ऐसी फ़िज़ा पैदा हो जाए कि जिसको जिस वक़्त जहां कहीं भी कहा जाए सब कुछ छोड़कर इनके साथ लग जाएं। अब आप ही बतलाएं कि आज की मेहनतों में और उस मेहनत में कितना फ़र्क़ है। तो असल समझो इस नक़्शे को। और यह समझो की हमारी मेहनत शुरू हुई हैं, और हमें वह मेहनत करने वाला बनना है, पूरी जान लगाने वाला बनना है। पूरे

माल लगाने वाला बनना है, थोड़ी–सी ज़िंदगी है, इसका थोड़ा–सा वक़्त कमाई के लिए निकाल लें, बाक़ी सब दीन के लिए लगा देंगे। पस यह ज़हन में रखे कि असल मेहनत का नक़्शा यह है। अब जितनी कुरबानियां हममें पैदा होंगी क्योंकि यह कुरबानियां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक बदन और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु अन्हुम के बदनों से निकली हैं, इसलिए इनके बदन और रूह के अन्वारात इसमें होंगे।

अब जितनी यह कुरबानियां यह काम करने वालों में होंगी इतनी हिदायत अल्लाह की तरफ़ से आएगी। दीन पैसे से नहीं फैलेगा बल्कि इस काम की मदद से फैलेगा जो कमाइयों के नक़्शे में परिवर्तन कराएगा और कुरबानी से फैलेगा। जब तुम्हारी कुरबानी कमाई को ख़ीचेगी, उन क़ौमों तक को तुम्हारे जरिए हिदायत देगा जो आसमानों पर जा रही हैं, और हम ग़रीबों की तरफ़ देखती भी नहीं। जो मुसलमान ज़िंदगी के किसी शोब्हे में इस्लाम की बात सुनने के लिए तैयार नहीं, यह कुरबानी इनको भी अपने सारे शोब्हों समीत इस्लाम पर ले आएगी और तमाम कुरबानियों को बदला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हौज़े–कौसर पर दिलवांएगे बशर्तेकि यह तै कर लो कि ख़ुदा जो कुछ इन मेहनतों के बदले देगा वह दूसरे को देंगे, ख़ुद न लेंगे, क्योंकि ऐसा करने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की झलक पाई जाएगी, कुरबानी के दौर में आप सल्ल० सहाबा रज़ि० के साथ थे और जब नेमतें मिलने का वक़्त आया जो आप सल्ल० तशरीफ़ ले गए।

किसरा की तो सलतनत ही जा चुकी थी, जब क़ैसर व किसरा के मुहल्लों में रहने वाले बने इनके लोगों में फिरने वाले बने तो इस ऐश में आप इनके साथ नहीं थे।

इसी तरह जो अपनी जान व माल को पूरी तरह कुरबान कर जाएंगे, और यहां न लेना चाहेंगे वे आख़िरत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़्यादा क़रीब होंगे। इन बातों का मुज़ाकरा करो,

और नीयत पूरे दीन की करो।

जो कुछ कर रहे हो, इसको शुरूआत समझो और अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला तुम्हारी कुरबानियों को कुबूल करे, तुम्हारे यहां के आने, खाने–पीने बैठने वग़ैरह को और हर तरह की तक्लीफ़ करने पर अज्र देगा।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने दूसरी क़ौमों में ज़िंदगी गुज़ारी हैं शाम मुल्क, मिस्र, इराक़, शर्क़, अरदन वग़ैरह अरबी मुल्क नहीं थे। वहां की ज़ुबान दूसरी थी। सहाबा किराम उन मुल्कों में पहुंचे, तक्लीफ़े बरदाश्त कीं, दूसरी ज़ुबान में तर्जुमान के ज़रिए ईमान की बातों को पहुंचाया। अल्लाह तआला को इनकी कुरबानियां पसंद आई। अल्लाह तआला ने इन तमाम मुल्कों को इनकी ज़ुबान से नवाज़ दिया।

इसी तरह हम आज भी ज़ुबान के इख़्तिलाफ़ से न घबराएं, तो क्या अजब है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबान हमें मिल जाए और हिन्दुस्तान के लोग बाहर मुल्क में और बाहर के लोग हिन्दुस्तान में फिरें, फिर दोनों मुल्कों के लोग अरब जाएं। और अरब के लोगों को यहां लाएं तो क्या अजब है कि तुम्हारी ज़ुबान भी अरबी हो जाए। यह सब कुरबानी से होगा, लिहाज़ा तुम यानी सिलवन वाले इन चिल्ले को बहुत क़िमती ख़्याल करो।

اَلْحِیْلَۃُ النَّاجِزَۃ

अल–हिलातुन–नाजीज़ह

मज़्लूम औरतों की मुश्किलों का शरअी हल

आजकल जाहिल और बे–रहम शौहरों के ज़ुल्म और ज़्यादती की शिकायत आम होती जा रही है, कुछ लोग बीवी छोड़कर बाहर चले जाते हैं और किसी क़िस्म की ख़बर नहीं लेते, कुछ पास रहते हुए वुसअ्त के बावजूद बीवी को ज़रूरी ख़र्च और दूसरे हक़ूक़ अदा नहीं करते, कुछ मजनून हो जाते हैं या ना–मर्द हो जाते हैं।

और हिन्दुस्तान में चूंकि क़ाज़ी शरअी मौजूद नहीं, इसलिए इन औरतों के बारे में एक एतराज़ व शुब्हा पैदा होता था कि ऐसी जो औरतें मुसीबत में मुब्तला हैं, क्या इस्लाम ने इनको निजात दिलाने के लिए कोई राह निकाली ?

इसलिए ज़रूरत थी कि इन औरतों के लिए कोई शरअी हुक्म निजात दिलाने के लिए तहक़ीक़ के साथ बयान किया जाए, अल–हम्दु लिल्लाह कि हज़रत थानवी रह० ने इसकी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाकर उर्दू में इसी किताब के अन्दर फ़िक़ह हनफ़ी के मसाइल मुस्तानब्त करके पेश फ़रमा दिए जो इन मुश्किलों को वाज़ेह हल है

बयान न० 10

सही मेहनत कामियाबी की मंज़िल है

बयान तब्लीग़ी मरकज़ गौजरानवाला में मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि

जुमेरात के दिन 1985 ई०

भाइयों ! दोस्तों और बुज़ुर्गों !

अल्लाह तआला ने मेहनत की दौलत अता फ़रमाई है। और ये मेहनत की दौलत बेकार भी नहीं की जा सकती है। और ठिकाने भी लगाई जा सकती है। मगर जो अपनी मेहनत को बेकार करेगा वह नाकामी का मुंह देखेगा, और जो सही तौर पर लगा देगा वह कामियाबी पाएगा। बड़ी-बड़ी हुकूमतें अपनी नीयत की ग़लती पर निस्ते-नाबूद हो जाती हैं और मौत के घाट उतार दी जाती हैं। जबकि मामूली-मामूली इंसान अपनी मेहनत की सेहत पर बड़ी-बड़ी कामियाबी पर पहुंच जाते हैं। हर एक की मेहनत इसके बदन से निकलती है। जो भी सही मेहनत इख़्तियार करेगा कामियाबी की मंज़िल पर पहुंच जाएगा।

और एक रूख़ मेहनत का ग़लत है, इस पर जो क़दम उठाएगा वे ना-काम होगा। ग़लत रूख़ यह है कि इंसान अपनी इंसानियत के हालात से जो देखता है और जो उसकी ज़ाती तहक़ीक़ है, जब महज़ इसको मंज़िल समझेगा तो ठोकर खाएगा और इसकी यह मेहनत सही

नहीं होगी। इंसान जब अपने आप पर ग़ौर करेगा तो इंसानियत को समझाने में आसानी होगी। यह बात नहीं कि वजूद का सिलसिला जहां से चल रहा है इंसान को नज़र नहीं आता। वज़ीरों, हाकिमों, साइंस–दां और जिस क़िस्म का भी इंसान हो, उसको सब कुछ दिखाई नहीं देता, और बहुत–सा ग़ैब है। और मस्अले का ताल्लुक़ ग़ैब या मुशहेदा से है। इंसान को मद्दा जिस्म शक्ल–सूरत दिखाई देती हैं और यह भी पूरी नज़र नहीं आतीं। इसको मद्दा जिस्म शक्ल–सूरत नज़र आती है, लेकिन कमा हक़्क़हू पूरा नज़र नहीं आती। इंसान अपने अहाते के अन्दर है और जो अहाते में है और इसको मुहीत नज़र नहीं आता। जो इंसान मस्जिद के अन्दर बैठा हुआ है, इसको पूरी मस्जिद दिखाई नहीं देती। जो अहाते में है, उसे मुहीत नज़र नहीं आता। सिर्फ़ अन्दर के रूख़ से नज़र आता है। और अन्दर से भी पूरा नज़र नहीं आता। अन्दर के छः रूख़ हैं, इसमें से भी जिधर देखता है, वह नज़र आता है। जब इन्सान को छोटा–सा मकान पूरा नज़र न आए तो इसको सातों जमीन और सातों आसमान जो उसको घेरे हुए हैं, वे पूरे किस तरह नज़र आ सकते हैं।

मिसाल के तौर पर यों समझो, जब तक इंसान मां के पेट में होता है, वह यों समझा होगा कि कुल कायनात मां का रहम होता है। और बाहर की किसी चीज़ की उसको ख़बर न थी जब वह इस अहाते से बाहर आया, पूरी औरत नज़र आई, इस तरह से मौत पर इसकी तहक़ीक़ात बदल जाएगी।

फ़िऔन जोकि أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ कहता था, वह भी मौत के वक़्त कह उठा कि मैं इस ख़ुदा पर ईमान लाया हूं, जो मूसा और हारून अलैहिस्सलाम का ख़ुदा है। इंसान जो कुछ देख रहा है, इसकी तहक़ीक़ कर रखी है, वह भी उसको पूरी नज़र नहीं आती। और रूह जो उन्हें पूरी नज़र नहीं आई इसका भी इंकार करते हैं, अपने अन्दर रूह का वजूद सारे मानते हैं। बा–एतबार इंसान होने के रूह की तहक़ीक़ यह है कि दिखाई नहीं देती है, जिस्म में होती है, हम जिस्म

से बोलते नज़र आते हैं, लेकिन यह बोलना रूह की ताक़त से हो रहा है, अगर रूह निकाल दी जाए तो सारे अंग अपना काम छोड़ देंगे, जो दिखाई दे रहा है, या वजूद असलिया नहीं है, बल्कि वजूद ताबेअ होता है, असली वजूद बिल्कुल नज़र नहीं आता, वह ग़ायब है। और जो इंसान के जिस्म में मौजूद है वह इंसान के मुशाहेदे से ग़ायब है।

आगे चलिये वह ख़ुदा की ज़ात जिससे रूह और जिस्म चल रहे हैं। इसी ने सबका अहाता किया हुआ है, अल्लाह तआला ने ज़मीन और आसमान का निज़ाम चलाया, जिससे ग़िज़ाएं तैयार हुईं। और जिनको इन्होंने खाया और इससे ख़ून बना, ख़ून से मद्दा तैयार हुआ, जो रह्म मदर तक पहुंचा और जिससे जिस्म हुआ। आग रूह से जिस्म पैदा नहीं हुआ, बल्कि रूह को अल्लाह तआला ने सीधे फ़रिश्ते के ज़रिए रह्म मदर में दाख़िल किया। यह हक़ीक़त न वज़ीरों को न मालदारों को और न साइंस-दां को नज़र आती है, इसलिए वह मेहनत की बुनियाद इस जिस्म को सामने रखकर उठाएंगे। इस तरह नफ़े की हक़ीक़त किस तरह सामने आएगी ? जिस तरह इंसान के जिस्म में रूह को इस्तिक़लाल नहीं, इस तहर ग़ल्ले से पेट भरना भी इस्तिक़लाल नहीं कहला सकता। सूरज के अन्दर रोशनी और पानी सेराबी हक़ीक़त नहीं है। जब तक अल्लाह तआला इनमें यह ख़ूबी क़ायम रखेंगे क़ायम रहेगी, इंसान को ज़ाहिर शक्लों का पता है लेकिन हक़ीक़त का पता नहीं है। इंसान को यह पता है कि ऐटम-बम से जानदार मर जाएंगे लेकिन इंसान की नज़र से यह ग़ायब है कि वह अल्लाह इसके अन्दर से ताक़त को निकाल दे और ऐटम-बम से चींटी भी न मरे, माल की हक़ीक़त मालूम नहीं। इंसान को इसकी तहक़ीक़ नहीं कि कब इससे नफ़ा हासिल होगा। अंबिया अलैहिस्सलाम का मोज़ूअ यह है कि वह हाज़िर और ग़ैब दोनों बता दें कि कितना इंसानों के सामने है और कितना इनकी नज़र से ग़ायब है। इंसान को इल्म, इसके तर्जुबे और इसकी आमाल की बुनियादें नाक़िस हैं और जो नाक़िस पर मेहनत उठाएंगे, वह नुक़्सान उठाएंगे।

अंबिया अलैहिस्सलाम ने यही बताया कि ये जो दिखाई दे रहा है, ये हक़ीक़त नहीं है। ये मालूम नहीं कि ख़ुदा इनकी किस तरह ख़ासियत को बदल सकते हैं। सबसे ज़्यादा कुरआन, तौरात, ज़बूर और इंजिल में बतलाई।

'ला इलाह इल्लल्लाह' यह कलिमा सिर्फ़ दो बोल नहीं हैं बल्कि जितनी लाइन से हम नाक़िस हैं, इन सब में कमाल पैदा करने के लिए ला इलाह इल्लल्लाह जो कामियाबी और नाकामी जो इज़्ज़त जो ज़िल्लत तुम्हें मख़्लूक़ में दिखाई दे रही है, बनाने वाले के करम से इसमें है, मख़्लूक़ में ज़ाती तौर पर कुछ नहीं है, बल्कि ख़ुदा यानी बनाने वाले के क़ब्ज़े में है। जब चाहेगा आग में जलाना और पानी में से सेराबी निकालकर रख देगा, मुस्तक़िल तौर पर किसी में कुछ नहीं है और ख़ुदा की ज़ात में मुस्तक़िल तौर पर है, ख़ुदा ने जो तासीर किसी चीज़ में रखी है, जब चाहेगा उसे बदल देगा। जो तुम्हें चांद में, ज़मीन में, हवा में दिखाई देता है वह इनमें नहीं है, बल्कि ख़ुदा की ज़ात में है, सबके वजूद को ख़त्म करना एक ख़ुदा के वजूद को साबित करना अंबिया अलैहिस्सलाम ने बताया है। कौन–सी ज़ात ताबेअ है और कौन–सी मतबूअ है। ज़मीन और आसमान अल्लाह तआला की कुदरत के मुज़हर हैं। और इंसान अपनी ग़लत फ़हमी की वजह से उन्हें असल समझा है, हुकूमत, माल वग़ैरह से अपना मस्अला तै करते हो, मस्अला अल्लाह तआला से तै कर लो तो कामियाब हो जाओगे, ताबेअ को वजूद असल नहीं है, बल्कि ख़ुदा के हाथ में है।

हिदायत अंबिया अलैहिस्सलाम के हाथ में नहीं बल्कि ख़ुदा के हाथ में है। ग़रज़ कि जितनी भी चीज़ें हैं इनका वजूद ज़ाती नहीं है, बल्कि ख़ुदा की ज़ात में है। यह अपनी बड़ी तहक़ीक़ है फ़ौरन 'ला इलाह इल्लल्लाह' को सामने लाओ, ख़ुदा तआला चाहे तो नफ़ा वाले में नुक़्सान और नुक़्सान वाले में नफ़ा, इज़्ज़त वाले में ज़िल्लत और ज़िल्लत वाले में इज़्ज़त ले आएं।

ख़ुदाई निज़ाम

शक्लें बदलना मामूली बात है और यह ख़ुदा का काम है, लकड़ी को अज़दाह और अज़देह को लकड़ी बना दें। ख़ासियतों का बदलना ख़ुदा की ज़ात में है। चीज़ों के वजूद का सिलसिला सीधा ख़ुदा की ज़ात से चल रहा है। चीज़ें बनाने वाले अल्लाह तआला हैं। एक जिन्स से दूसरी जिन्स बना दें। अगर ख़ुदा का निज़ाम इंसान के मुक़ाबले में आ जाएगा, तो सारी मेहनत राइगां हो जाएगी। ख़ुदा का निज़ाम असली निज़ाम है। वह निज़ाम इंसानी निज़ाम में तब्दीली कर देगा और इंसानी निज़ाम बादल के साए की तरह है। ख़ुदा का अपना निज़ाम सातों आसमानों और ज़मीनों में फैला हुआ है। अल्लाह तआला चाहेंगे तो इस पूरे निज़ाम के बग़ैर जो चाहे बनाकर दिखला दें। हुकूमतें अपना निज़ाम बनाती हैं। और छः माह के बाद जब इसके ख़िलाफ़ होता देखते हैं तो मश्विरे करने के लिए मिल बैठते हैं। ख़ुदा का अपना निज़ाम है जो सातों आसमानों और ज़मीन पर फैला हुआ है। अगर इंसानी निज़ाम इसके मुक़ाबले में आ जाएगा तो पाश–पाश हो जाएगा। इंसान चीज़ों को वजूद अपनी मेहनत में देखता है, मुल्क तुम्हारी मेहनत और तुम्हारे निज़ाम के मातहत नहीं मिलेगा, बल्कि ख़ुदा के निज़ाम के मातहत किसी को मुल्क मिलता है, किसी से छिनता है। ख़ुदा के अपने निज़ाम से चीज़ों को वजूद और चीज़ों की तक़सीम है, परवरिश ख़ुदा की तरफ़ से ही होगी। हालात चीज़ों से मुरत्तब नहीं होंगे, बल्कि ख़ुदा की तरफ़ से मुरत्तब किए जाएंगे चीज़ों के बनने की मेहनत और परवरिश के लिए मेहनत तो ख़ुदा की तरफ़ से है।

अब तुम्हारा हमारा क्या काम हुआ, हमारा मौज़ूअ चीज़ों के बनने, चीज़ों के तक़सीम करने और परवरिश को सामने रखकर मेहनत नहीं करना है, बल्कि इनके पैदा करने वाले और काबू रखने वाले

खुदा को राज़ी करने की मेहनत की जाए। जब हम खुदा को राज़ी करने की मेहनत करेंगे तो साइल भी मरहम्मत फ़रमांएगे। और परवरिश भी अच्छी करके दिखलाएंगे दुनिया भर की चीज़ें खुदा की कुदरत से बनती हैं और कुदरत से तक़्सीम होंगी। और अल्लाह तआला इनसे जो चाहेंगे ज़ाहिर फ़रमा देंगे। मेहनत की दो बुनियादें हैं। एक तो चीज़ों को सामने रखकर मेहनत करना और चीज़ों की शक्ल पर आमाल की परवाह न करना। आज हुकूमतों वाले, तिजारत वाल, खेती वाले इसी पर मेहनत की बुनियाद उठा रहे हैं कि चीज़ें बन जाएं। सड़क और मकान की शक्ल के पीछे चलिये और इसकी परवाह न की कि इसमें किसी का हक़ तो ज़ब्त नहीं किया जा रहा है।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपना मकान बनाने का हुक्म दिया पैमाइश में एक बुढ़िया का मकान आ गया। अभी बुनियाद ही भरी जा रही थी कि फ़रिश्ता आया और अल्लाह तआला का पैग़ाम में लाया कि ऐ दाऊद ! मेरी इज़्ज़त की क़सम अब मैं तुझसे अपना घर नहीं बनवाऊंगा हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम डर गए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह ! अगर मुझसे नहीं बनवाते तो मेरे लड़के सुलेमान से बनवा लें। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का ज़माना आया तो बुढ़िया से ज़मीन का मामला किया, इसने लाखों अशरफ़ियां मांगी। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने सोचा। अल्लाह तआला की तरफ़ से वही आई, हमारे माल से देते हो या अपने माल से, अगर हमारे माल से देते हो तो फिर सोच किस बात की ?

आमाल की ख़राबी की वजह से बड़ी-बड़ी हुकूमतें, बड़ी-बड़ी तायदाद बर्बादा हो जाती हैं। लिहाज़ा चीज़ों से शक्लों को सामने रखकर मेहनत की बुनियाद रखी जाए। किसी कि ज़मीन दबा ली और यह कहकर अपने दिल को समझा लिया कि अल्लाह तआला गफ़ूरूर-रहीम हैं।

अल्लाह तआला की दूसरी सिफ़ात भी हैं। बड़ी-बड़ी क़ौमें, मुल्क, मुसीबतों की भट्टियों के अन्दर झोंक दिए जाते हैं। अपने आमाल की ख़राबी पर ये दो बुनियादें हैं, या तो चीज़ों की शक्लें हासिल करने में आमाल की परवाह न करोगे या आमाल की दुरूस्तगी के लिए चीज़ों की परवाह न करोगे।

लिहाज़ा सारे शोब्हों में घुसने से पहले जहां तुम जाओगे वहां तुमको शक्लों से वास्ते पढ़ेगा, वहां घुसने से पहले अपने दिल में अहद कर लो कि हम चीज़ों की परवाह न करेंगे। बल्कि आमाल की सेहत का लिहाज़ करेंगे। दीन इस्लाम, तिजारत, खेती, वग़ैरह का इंकार नहीं, बस इनमें घुसने से पहले अपने यक़ीन को दुरूस्त कर लो। मुलाज़मत में घिसने से पहले अमल की अहमियत दिल में बिठा लो, करोड़ों की मालियत की परवाह न करते हुए अपने अमलों को दुरूस्त रखा जाए। इंसान का अपना एक मिज़ाज है, एक खुदा की निस्बत है, इंसान की निस्बत फ़ायदे लेने की है। खुदा की निस्बत फ़ायदे देने की है। तिजारत का एक तरीक़ा तो इंसान इख़्तियार करेगा वह यह कि इसको फ़ायदा हासिल हुआ। और एक खुदा का बतलाया हुआ तरीक़ा है जिसमें दूसरों को फ़ायदा पहुंचेगा। दीन में इज्तिमा फ़ायदा को सामने रखकर तिजारत करने का तरीक़ा बतलाया गया है।

अल्लाह तआला हाकिमों के और महकुमों के भी खुदा हैं, तो वह ऐसा तरीक़ा बतलाएंगे जिससे दोनों को फ़ायदा पहुंचे।

इस्लाम की बुनियाद तौबा है कि दूसरे के मुफ़ाद का लिहाज़ करते हुए आमाल की तश्कील की गई है। और इंसानी मिज़ाज के अन्दर दूसरों को नज़र-अंदाज़ किए बग़ैर अपने फ़ायदे के लिए क़दम उठाना है। इस्लाम एक मुजाहेदा वालों का नक़्शा है, इसमें ज़ाहिर पर से नज़र हटे, अपनी ज़ात पर से नज़र हटे। बल्कि खुदा की ज़ात पर नज़र करके मेहनत करने की सूरत पैदा की गई है।

जिस तरह तुम्हें हर तरह नज़र आने वाली चीज़ पर यक़ीन है, इसी तरह तुम रहम व इंसाफ़ पर सच्चाई पर सादिक़ कामिल से

यक़ीन पैदा करो। पहले आसमानी किताबों को उठाओ, वहां तुमको आमालों की मेहनत मिलेगी। ख़ून चूसने और ख़ून की हिफ़ाज़त करने से क्या होगा तुम्हें यह बात अंबिया अलैहिस्सलाम बता देंगे। तुम चीज़ों और शक्लों में परवरिश न समझो बल्कि चीज़ों के बनाने वाले पर यक़ीन करके चलो। कभी अल्लाह तआला चीज़ों को देकर इम्तिहान लेंगे और कभी छीनकर देखेंगे। महज़ अपनी आंख से देखकर चलने में इंसान की कुछ ख़ासीयत नहीं है, ऐसे तो सारे कर ही रहे हैं, फिर इंसान को क्या फ़ायदा हुआ। अगर सिर्फ़ जानवरों की तरह अपनी ज़ात, अपने बच्चों ही की फ़िक्र करने वाला बने तो इंसान और जानवरों में क्या फ़र्क़ रहा।

भूरे चीटों ने तीन—चार पत्ते जोड़कर ऐसा कर लिया, कि एक सूराख़ में वह आ—जा रहे थे, अगर हमने सिर्फ़ इन्हीं चीज़ों को किया तो जानवरों के हद से नहीं निकले। अल्लाह तआला ने इंसानों को वे आमाल दिए हैं जिनसे हज़ारों, लाखों इंसानों की ज़िंदगियां बनती हैं।

आज यों कहा जाता है कि आज़ादी है। जिसका जो जी चाहे कर ले, चौराहे का सिपाही खड़ा हुआ ट्रैफ़िक को जो रोक रहा है, इसमें हज़ारों की हिफ़ाज़त हो रही है। बच्चा आग की तरफ़ जाता है, छत से गिरना चाहता है लेकिन मां इसको रोकती है। जितनी पाबंदियां लगा रखी हैं, इनका मक़्सद कामियाबी है, और जितने आमाल मुक़य्यद नहीं रहते इनका ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ता है। यह तो फ़िक्र है कि सवारी, सड़कें, लिबास खुर्द व नोश का म्यार बेहतर से बेहतर बनाया जाए। जबकि ज़रूरत यह है कि अमल में बेहतरी पैदा की जाए, वसाइल चाहे कम हो, लेकिन अमल के नक़्शे सही आ जाएं। जब अच्छे आमाल अपनायेंगे, इनको ये आमाल दुनिया व आख़िरत, पुल सिरात, बर्ज़ख़ ग़रज़ यह है कि हर मक़ाम पर आसानी का ज़रिया साबित होंगे। ख़ुदा की इबादत, ख़ुदा का ज़िक्र, अच्छे अख़्लाक़ हर जगह काम देंगे। आमाल का म्यार तुम्हारे साथ जाएगा, जहां आज़ा जाएंगे वहां इनसे निकले हुए आमाल साथ जाएंगे, जहां तुम होंगे वहां

तुम्हारा अमल होगा।

कुरआन क्या कहता है।

कुरआन और हदीस पुकार—पुकारकर कह रहे हैं कि नेक आमाल अपनाने पर ही अज्र मिलता है चीज़ें ज़मीन से निकलती हैं और ज़मीन ही पर रहती हैं, लेकिन आमाल आगे भी काम आएंगे। दाएं जानिब अच्छे आमाल लिखने वाला और बाएं जानिब बुरे आमाल लिखने वाला फ़रिश्तो मुक़र्रर है। जब इंसान अच्छा अमल करता है, तो इसकी रूह के अन्दर खुशबू और राहत पैदा होती है। और जब बुरे अमल क़िए जाते हैं तो इनके अन्दर बदबू और ज़ुल्मत पैदा होती है। अगर आसमानों पर ख़राब अमल पहुंचाए जा रहे हैं तो वहां से हमारे किए धरे का बदला ही मिलेगा।

कलाम मतकलम में से निकलता है। अल्लाह तआला की बात अल्लाह तआला में से निकलती है, इसलिए जमाअत अह्ले सुन्नत कहते हैं कि कुरआन मख़्लूक़ नहीं है जब तुम कुरआन पर अमल करोगे तो वह आसमानों पर जाएगा, और वहां से कामियाबी के अहकामात आएंगे। अगर तुम सैकड़ों भी हुए और तुम्हारे पास कोड़ियां भी हुईं तो तुम चमकोगे। ऐसे चाहे जितने भी नक़्शे बनाओ बनते रहेंगे बिगड़ते रहेंगे, मगर इंस्रानों को कामियाबी नसीब न होगी। जब चीज़ों की मेहनत करते हैं तो चीज़ों के म्यार बढ़ते हैं। जब अमल का म्यार क़ायम होगा तो लोग मामूली—मामूली मकान बनाएंगे, झूठा—मूटा खाएंगे।

दुनिया में एक ज़बरदस्त मेहनत की ज़रूरत है कि चीज़ों को यक़ीन हटे, खुदा की ज़ात का यक़ीन जमे, और इसके जमाने के लिए मेहनत करोगे कि चीज़ों की तुम्हारी नज़रों में कुछ हैसियत बाक़ी नहीं रहेगी। आमाल की हैसियत है। और अगर आमाल अच्छे होंगे खुदा तआला ज़िंदगी को कामियाब बना देंगे। फिर नमाज़ों की, इल्म की,

ज़िक्र की, अख़्लाक़ की, मुजाहेदों की मश्क़ करनी होगी। इस बात की तहक़ीक़ करके चलेंगे कि ख़ुदा किस बात के करने से ख़ुश होंगे। जब अल्लाह वाले तरीक़ों को इख़्तियार करके चलोगे तो तुम्हारी मुलाज़मत, तिजारत, खेती–बाड़ी वग़ैरह सब दीन का काम शुमार होगा। इस तरह अपने ख़ंगी हक़ूक़ पूरे करने में भी ख़ुदा की रज़ामंदी हासिल करोगे। आज हम अपने मेहनतों में चीज़ें समझ बैठते हैं। यह ज़ेहन कारून और अबू लहब का था। सही ज़ेहन यह है कि अगर हमारे अच्छे अमल होंगे तो हम कामियाब होंगे। इसलिए कहा जा रहा है कि अपनी ज़िंदगी के दिन–रात में से कुछ वक़्त निकाला जाए। इसके अन्दर ईमान और अमल की आवाज़ बुलंद की जाए कि अच्छे यक़ीन और अच्छे अमल से क्या होगा। चीज़ों की आवाज़ तो रात–दिन बुलन्द की जा रही है, आमाल की आवाज़ बुलन्द की जाए।

जिस तरह से चीज़ों पर मेहनत की जाती है, इसी तरह से आमाल भी दुनिया में मेहनत से आते हैं। ये तो सब कहते है कि अच्छे अमल से ज़िंदगी बनती है, मगर मैं यों कहता हूं कि अच्छा अमल मेहनत से वजूद में आता है, अगर थोड़े दिन अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन करते हुए इस मेहनत पर सर्फ़ करते हैं तो इसके लिए तीन चिल्ले (चार महीने) मांगते हैं। और हर साल चिल्ल (चालीस दिन) देते रहो। जब इस तरह से दावत अमल का यह झंडा बुलन्द करते रहोगे, तो मुल्क और माल वाले भी कुबूल करेंगे हां कि अमलों को दुरुस्त करना ज़रूरी है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक लतीफ़ म्यार था। आमाल के सही होने से रूह में ताक़त पैदा होती है। और आमाल के ख़राबी से रूह में कमज़ोरी आती है। रूह वाली चीज़ें अच्छे आमाल हैं, इन्हीं से रूह के अन्दर पाकी पैदा होती है।

माख़ूज़ार मज्मूआ तक़ारीर हज़रत जी मौलान मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० पृ० 21।

बयान न० 11

मदीना मुनव्वरा से रूख़सत होने वाली जमआतों को हिदायत

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० की एक यादगार तक़रीर

तारीख़ 8. अक्तूबर. 1959 ई०.

अल्लाह पाक का बड़ा करम है कि इसने अपने फ़ज़्ल व एहसान से बग़ैर इसतिहाक़ के हमको अपने दीन में लगने की तौफ़िक़ अता फ़रमाई, और बावजूद इसके कि हमने एक मेहनत को सुना, और जाना-पहचाना, लेकिन जो इसकी बड़ाई थी उसका कभी ख़्लाल नहीं किया, जो रूजूअ करना चाहिए था वह नहीं किया, और इस नेमत की क़द्र नहीं की, जैसे करनी चाहिए थी। तो अल्लाह तआला ने इसको ग़लती क़रार देकर हमको धक्के देकर निकल नहीं दिया, बल्कि इसमें लगाए रखा। हमसे लगातार इसमें कोताहियां होती रही, नीयत के एतबार से भी अमल के एतबार से भी, उसूल के एतबार से भी और जज़्बात के एतबार से भी, लेकिन बावजूद इसके वह हमको बढ़ाते चले गए, यहां तक कि काम शहरों से मुल्कों में जा पहुंचा। अगरचे काम बढ़ रहा है, लेकिन अब तक हम इसको सही तरीक़े पर और इस तरीक़े पर जैसे अल्लाह चाहते हैं करने के लाइक़ नहीं बने। यह काम जिस तरह होना चाहिए, नहीं हो रहा है। लेकिन फिर भी वह चल रहे हैं। और इसको बढ़ा रहे हैं, यह इसका बड़ा करम है। यहां तक कि आज हमको

अल्लाह ने अपने हबीब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दियार से अपने रास्ते में निकलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

दोस्तो ! सबसे बड़ी नेमत यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काम के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद से रवाना हो जाए। अगर आज हमको सारी दुनिया की हुकूमत दे दी जाती तो वह कोई बड़ी बात नहीं होती। लेकिन यह एक बहुत बड़े फ़ख़र की बात है कि जहां से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम जिस काम के लिए जाया करते थे। आज उसी जगह से उस बड़े मक़सद के लिए उनकी मुशबहत में हम रवाना हो रहे हैं।

इंसान जो अमल करता है इसके असरात नीयत के एतबार से कोशीश होती है। लिहाज़ा काम करने वाला अपनी नीयत को दुरूस्त करके क़दम उठाए, दुनिया की इज़्ज़त, सर–बुलन्दी और कामियाबी हासिल करने की नीयत कोई बुलन्द नीयत नहीं है, बल्कि बड़ी और सही नीयत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली मेहनत को करते करते उस सतह पर पहुंचा दें जिस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत थी।

एक मनी के क़तरे से इंसान बनता है, वे इंसान नबी भी होता है, वली भी बनता है सिद्दीक़ भी शहीद भी। ये सब अल्लाह तआला ही बनाते हैं, खुद कोई कुछ नहीं बन सकता, हम जो काम करते हैं इसको काम न क़रार दिया जाए बल्कि इसको मनी के क़तरे की तरह गंदा समझकर इसको इसलिए इख़्तियार किया जाए और मांगा जाए कि इसको बढ़ाते–बढ़ाते अल्लाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुशाबा कर दें, बस हम इसी मेहनत पर मर जाएं, यह सबसे बड़ी कामियाबी है। हमारी मेहनत का नक़्शा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत के मुशाबा बन जाना सबसे बड़ी कामियाबी है। हम हर काम में हर चीज़ में इनकी मुशाबाहत की कोशीश करें, जब पेशाब या पाख़ाना में मुशाबहत मतलूब हैं, तो इस सबसे ऊंचे काम में किस क़द्र

ज़्यादा मतलूब होगी। दीन की मेहनत सबसे ज़्यादा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुशाबहत ज़ाहिरी और बातिनी होनी चाहिए। यह हमारी इंतिहाई उरूज है कि हमारी मेहनत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुशाबा क़रार दे दी जाए। क़दम उठाते वक़्त यह यक़ीन करें कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले में मेरी हैसियत एक जद (पकड़) की निस्बत से है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निस्बत से काम न हम इस यक़ीन पर कर रहे हैं। जैसे हमें कुछ घर छोड़ना आता है तो उस घर छोड़ने के एतबार से तो कुछ मुशाबहत ज़रूर आ गई, लेकिन अजज़ा के एतबार से शबाहत बिल्कुल नहीं आई, बल्कि इसके ख़िलाफ़ है। मेहनत करते–करते असली शबाहत पर पहुंचना है। अगर हमने यह समझा कि काम करने वाले हो गए तो हम गिर गए, और अगर हम यह समझें कि अल्लाह हमें काम करने वाला बना दें तो तरक़्क़ी होगी।

काम बिगड़ने वाला ही सही काम करने वाला बनता है। बशर्तेकि वह तलब पैदा करे, और लगातार मेहनत करता रहे। अगर हमारे दिल की तहों तक में यह बात आ जाए तो हमको मेहनत आ जाएगी और हम जहां तक पहुंच सकेंगे। इसके आगे अल्लाह तआला हमको नीयत की हैसियत से सवाब अता फ़रमांएगे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम आलम की नीयत लिए हुए थे बल्कि आपकी नीयत दुनिया से निकलकर आख़िरत पहुंची हुई थी, यानी क़ियामत के दिन गुनाहगारों की शफ़ाअत करा के इनको जन्नत में दाख़िल कराना।

एक तो हम यह नीयत कर लें कि हम अपना सब कुछ लगाकर सारी दुनिया में मेहनत करने वाले बनें। दूसरे यह नीयत करें कि हम इसलिए निकलते हैं कि मेहनत करते–करते हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा के मुशाबा होते जाएं और हमारी मेहनत का ख़ाका हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा रज़ि० की मेहनत के ख़ाके के मुशाबा हो जाए।

आलम पर तुम्हारी मेहनत के ब–क़द्र असरात नहीं पढ़ेंगे, बल्कि नीयत के मुताबिक़ असरात पढ़ेंगे। जहां–जहां तुम्हारी मेहनत की नीयत है। अल्लाह इन सब जगह असरात डालेंगे और हिदायत लाएंगे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक आवाज़ लगाई। एक मक़ाम और एक वक़्त पर लेकिन आजतक इसके असरात सारे आलम पर मुरतब्ब हो रहे हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत के नक़्शे सामने रखो, और यह शौक़ और जोश दिल में रखो कि वह मेहनत हासिल हो जाए जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत थी। और इसकी कोशीश भी करो, और दुआ भी करो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत सरासर मुशक़्क़त और तक्लीफ़, और हमारी मेहनत सरासर आराम है। तो हम कैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नक़्शे पर पहुंच सकते हैं। लिहाज़ा नीयत के साथ–साथ दुआ को मिलाया जाए, और हम अल्लाह तआला से बहुत दुआएं मांगे कि अल्लाह हमको मेहनत के इन नक़्शों पर पहुंचा दें, जिस नक़्शे पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० थे।

हम अपने आपको इस तरीक़े पर लगा दें, जिस तरह पर दुआ कुबूल हुआ करती है, अब इस मेहनत में अपनी ताक़त के मुताबिक़ बहुत ज़्यादा कोशीश करनी चाहिए, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत के बहुत से बाब हैं। इनमें से एक बाब वह है जो आप सल्ल० बाहर की ज़िंदगी में किया करते थे इसकी मश्क़ शुरू कर दी जाए। निकलते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकलने का तरीक़ा अख़्तियार करना चाहिए। अगर हमको बाहर निकलने के ज़माने में इनकी मेहनत का नक़्शा आ गया तो वापस आकर हमको मेहनत का वह नक़्शा क़ायम करना आसान होगा, और बाहर निकलने के दौरान ही यह नीयत करनी चाहिए कि घर जाकर इस नक़्शे को इख़्तियार करेंगे जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नक़्शा था।

नीयत में यह है कि सफ़र और हज़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम के तरीक़े पर मेहनत करना है। अगर निकलने के ज़माने में शबाहत जानदार होगी। तो अपने मक़ाम पर भी शबाहत करना उसको इख़्तियार करना आसान होगा, इससे इस्तिदाद पैदा होगी मेहनत में शबाहत की।

हमारे पसमंदगान इस वक़्त बहुत आराम से हैं ये निस्बत सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु के बच्चों के, जब वे घर से निकलते थे और हम अपने को उन तक्लीफ़ों पर नहीं डाल रहे जिन पर वे डाल रहे थे। उनके घरों में तो उनके निकलने के दौरान फ़ाक़े होते थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत के नक़्शे के एतबार से हर एक कोताह है। ज़ाहिरी शक्ल व सूरत के एतबार से कोताह और नाक़िस है तो बातिनी एहसान यानी नीयत और इख़्लास को क्या ज़िक्र। क्योंकि ये तो अन्दर की चीज़ें हैं, हमारी नीयत, नीयत नहीं, बल्कि नीयत करने की सोच है। नीयत बहुत देर से आएगी। बार–बार नीयत करते रहें ताकि हमें असली नीयत करनी आ जाए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत क्या है ?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत क्या है ? मदीना मुनव्वरा में बसने वाले तीन क़िस्म के लोग थे। एक यहूदी थे जो बिल्कुल दुश्मन थे, दूसरे मुनाफ़िक़ लोग जो यहूदियों की तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मन थे और यहूदियों की तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शहीद कर देने की हर वक़्त योजनाएं बनाते रहते थे, तीसरे पक्के मोमिन, मुनाफ़िक़ीन हमेशा तक्लीफ़ देने की ग़रज़ से साथ हुआ करते थे, जिनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सख़्त तक्लीफ़ें उठानी पढ़ती थी। यहूदियों को आप सल्ल० ने पहले ही जवाब दिया था, एक दफ़ा एक वफ़्द आया कि हम आपकी मदद करना चाहते

हैं। आपने पूछा क्या तुम मोमिन हो? उन्होंने कहा नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हम मुश्रिकीन की मदद नहीं लेते।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक गुलाम था जो नसरानी (इसाई) था, आप इससे कहा करते थे कि इस्लाम कुबूल कर ले, ताकि तुझे मुसलमानों के काम के लिए इस्तेमाल करूं, अब दो किस्में रह गईं।, एक मुसलमान एक मुनाफ़िक़। मुनाफ़िक़ों से आपको हमेशा बहुत तक्लीफ़ें उठानी पड़ी हैं। एक काफ़िला उतरा, या गज़्वा अरसिया का वाक़िआ है। दो आदमी पानी के लिए चले, एक अंसारी रज़ि० और एक मुहाजिर रज़ि०, इन में झगड़ा हो गया, मुहाजिर रज़ि० अंसारी रज़ि० को थप्पड़ मारा, तो दोनों ने अपने-अपने क़ाबिलों को बुलाया, लेकिन चंद समझदार लोगों ने इस मामले को ख़त्म कर दिया। जब यह ख़बर अब्दुल्लाह बिन उबई के ख़ेमे में पहुंची तो उसने कहा कि हमने तो पहले ही कहा था कि इनको जगह मत दो, तुमने इन कुत्तों को खिला-खिलाकर मोटा कर दिया। नाअजुबिल्लाह मिन ज़ालिक़) तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे कुत्ते को मोटा कर दिया। अब ये तुम ही पर भौंक रहे हैं, मदीना मनुव्वरा में पहुंचकर इन ज़लीलों को निकाल दो।

हज़रत ज़ैद रज़ि० इब्ने अरक़म ने यह ख़बर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहुंचाई, और इसको अब्दुल्लाह बिन उबई को पता चल गया। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और आकर क़सम खाकर कहा कि मैंने ऐसा नहीं कहा था। बड़े-बड़े सहाबा किराम रज़ि० ने भी कहा कि लड़के को समझाने में ग़लती हो सकती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ौरन कूच का हुक्म दे दिया। एक सहाबा रज़ि० ने कहा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आज आपने इस क़द्र जल्द क्यों हुक्म दे दिया ? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि तुमने सुना नहीं कि उसने क्या कहा। उन्होंने कहा कि हुज़ूर सल्ल० अब इसकी कोई हैसियत नहीं है जो चाहे बकता फिरे।

सार दिन चलाया, यहां तक कि क़फ़्ली अक़्ल से लेकर मदीना मुनव्वरा में तीन दिन में तै किया। यहां तक कि जब सहाबा रज़ि० उतरे

तो उतरा नहीं गया। बल्कि गिर गए और गिरते ही गर्म रेत पर सो गए।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि चलो, आख़िरकार मदीना मुनव्वरा पहुंच गए। आप सल्ल० ने इस वास्ते चलाया था कि थकन की वजह से कोई बात ऐसी न करे, जब मदीना मुनव्वरा पहुंचे तो अब्दुल्लाह बिन उबई का लड़का तलवार सौंत कर खड़ा हो गया कि तू ज़लील है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इज़्ज़त वाले हैं और तूझे मदीना मुनव्वरा में जाने की इजाज़त नहीं है। अब्दुल्लाह बिन उबई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और अर्ज़ किया मेरे लड़के से कह दीजिए कि मुझे मदीना में जाने दे, तो आप सल्ल० ने उससे इजाज़त दिलवादी। यह कितनी ज़िल्लत है कि बेटे से इजाज़त लेने के लिए उस ज़ात की सिफ़ारिश करानी पड़ी, जिसको ज़लील कहता था वह मस्जिद नुबूवी में खुत्बा दिया करते थे। अब यह खुत्बा देने के लिए खड़ा हुआ तो सबने उसे पकड़कर खींच लिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ि० से फ़रमाया कि अगर पहले मैं इसे क़त्ल करने को कहता तो फ़ित्ना खड़ा हो जाता। लेकिन इसका आज कोई भी साथी नहीं है, आज चाहो तो क़त्ल करा सकते हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि आपकी बात आपकी बात है उमर की बात उमर ही की बात है।

सब चीज़ों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ूब बरदाश्त करते रहे। अब एक क़िस्म मोमिन यानी सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की रह गई। इनको साथ लेकर आप सल्ल० ने एक मेहनत उठाई उसकी इस तरह तर्बीयत फ़रमाई कि जिस वक़्त आवाज़ लगाई जाए, या जवाब न आए कि मैं नहीं जा सकता, चाहे लाखों को नुक़्सान, कोई वजह उज़्र सामने न आए, जान और माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च होने कोई चीज़ सामने न आई।

एक अदा यह थी अगर यह बात आ जाए कि अल्लाह का यह हुक्म था और हो न सका तो घबराहट आ जाए। खंदक़ की जंग से

वापसी पर हाथियार उतार दिए, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और कहा कि हम फ़रिश्तों ने तो अभी हाथियार उतारे नहीं। आपने क्यों उतार दिए आप सल्ल० घबरा गए और फ़रमाया क्या बात है ? हज़रत ज़िब्रील अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बनू कुरैज़ा का मामला बाक़ी रह गया। आप सल्ल० ने हुक्म दिया कि फ़ौरन सब जाओ और असर की नमाज़ जाकर बनू कुरैज़ा में पढ़ो, सहाबा रज़ि० दौड़ते हत्ता कि सूरज डूबने लगा, अब दो फ़िर्के हो गए। एक फ़िर्के ने असर की नमाज़ बनू कुरैज़ा में पढ़ी, दूसरे फ़िर्के ने आख़िरी वक़्त में रास्ते में पढ़ी। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आप बाहर से पहुंचे, हम अन्दर से पहुंचते हैं, और हम इनको आपके पहुंचने से पहले मरऊब कर देंगे। इनके जाने ने उनको मरऊब कर दिया, और आप सल्ल० भी वहां पहुंच गए, और बहुत जलाल का इज़्हार किया कि कभी ऐसा नहीं किया था और फ़रमाया कि ऐ बन्दरो ! सूअरों ! और बहुत ज़लील करने वाले शब्द से पुकारा, जिससे वह बहुत मरऊब हो गए उन्होंने कहा कि हमने पहले आपसे ऐसे लफ़्ज़ नहीं सुने थे। हम अबू लबाबा रज़ि० से पूछ लें, क्योंकि ये सब अच्छे थे, वह रोने लगे, अबू लबाबा रज़ि० भी रोने लगे, जब इन्होंने पूछा कि क्या होगा तो आपने इशारे से कहा कि गले कटेंगे, फिर इनको बड़ी नदामत हुई कि मैंने एक राज़ ज़ाहिर कर दिया। उस पर आकर मस्जिद नुबूवी के सतून से अपने को बांध दिया, इनकी बीवी आईं, नमाज़ के वक़्तों पर खोल देतीं, और फिर बांध देतीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर यह मेरे पास आ जाते तो मैं इनकी मग्फ़िरत करा देता अब जो शक्ल इन्होंने अपने लिए खुद तजवीज़ की है जब तक इस शक्ल पर माफ़ी नहीं आएगी मैं इनके लिए माफ़ी नहीं मागूंगा, और खोलूंगा भी नहीं। ग़रज़ बहुत दिनों बाद इनकी तौबा कुबूल हुई।

हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ंदक़ में ज़ख़्मी हो गए, इनके गले में तीर लगा और ख़ून बहने लगा, इन्होंने दुआ की कि ऐ अल्लाह ! अगर कुरैश का हमला बाक़ी है तो मुझे हमले तक ज़िंदा रख

और अगर नहीं है तो मुझे ज़िंदगी की ज़रूरत नहीं और कहा कि इस मुद्दत के लिए ज़िंदा रख कि ग़द्दारों का फ़ैसला अपनी आंखों से देख लूं, इनका ख़ून बहना बंद हो गया। अपने इनका ख़ेमा मस्जिद के सेहन में डालवा दिया, और फ़रमाया जब तुम इनका फ़ैसला करोगे वह हमें मंज़ूर है इसके बाद हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० गए और बनू कुरैज़ा से पूछा कि तुमको मेरा फ़ैसला मंज़ूर है इसके बाद फिर इनकी तरफ़ मुंह करके पूछा कि आपको मेरा फ़ैसला मंज़ूर है। रास्ते में सहाबा किराम रज़ि० इनसे कहते जाते थे कि ये सब अपने ही हैं अगर एक ग़लती हो गई है तो क्या है। वह सुनते जाते थे, क़ौल व क़रार के बाद आपने फ़ैसला दिया कि मेरी क़ौम के सब बालिग़ क़त्ल किए जाएं, और इनकी औरतों और बच्चों को गुलाम बना दिया जाए और मुहाजिरीन में तक़्सीम किया जाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुमने वह फ़ैसला दिया जो सातों आसमानों में हो चुका था। रात को जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और पूछा कि आज किसका इंतिक़ाल हो गया। आपने घबराकर फ़ौरन साद रज़ि० को देखा कि इनके गले का ख़ून जारी हो चुका था और आख़िरी सांस ले रहे थे। आप सल्ल० ने इनका सर अपनी ज़ानूओं पर रख लिया, सहाबा किराम रज़ि० चाह रहे थे। साद रज़ि० का ख़ून हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर न आए, बल्कि इन हज़रात पर गिरे, इसलिए इनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लेना चाहते थे, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने ऊपर ही इनका ख़ून ले रहे थे।

फिर जब हज़रत साद रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया तो फ़रमाया कि जल्दी इनका जनाज़ा तैयार करो क्योंकि फ़रिश्ते बड़ी तायदाद में आए हैं, कहीं हमारे हाथ से हंज़ला रज़ि० की तरह यह भी न चले जाएं, फ़रिश्तों की कसरत की वजह से आप सल्ल० पंजों के बल चले रहे थे और फ़रमाते थे कि कोई जगह फ़रिश्तों से ख़ाली नहीं।

एक तरफ़ जान ख़र्च करने वाला बनाया, हुक्म पूरा करने से पहले न उठना और जब तक पूरा न हो न हटना, और जो अपने ऊपर गुज़रे

इसकी परवाह न करना, इस जान पर चाहे कुछ गुज़रे फ़ौरन हुक्म पूरा करने के लिए उठना। और जब तक हुक्म पूरा न हो न हटना और मालियात के एतबार से ऐसा बन जाना कि घरवालों की रिआयत से पैसे न ख़र्च करना, बल्कि नक़्ल व हरकत की रिआयत से ख़र्च, चाहे घरवालों पर कुछ गुज़रे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि इन नए मुसलमानों को इतनी-इतनी खजूरें हदिए में दे दो। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम हमारे घरवालों के पास सिर्फ़ इतनी खजूरें हैं जो सिर्फ़ छः माह चल सकती हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने सुनकर फ़रमाया कि ऐ उमर ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात पर ऐसे कहते हो, और बहस करते हो, इनको तंबीह हुई, और फ़रमाया ज़रूर दूंगा। वे इन मुसलमानों को अपने साथ ले गए और फ़रमाया कि हर शख़्स अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ ले ले, वह कहते है कि खजूरें सिर्फ़ एक आदमी की ज़रूरत की थीं, लेकिन अल्लाह तआला ने बरकत दी, और सबने अपनी हाजत के मुताबिक़ ले लीं, और फिर भी वह बची रहीं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया मुझे मालूम नहीं खजूरें सबके लेने से पहले ज़्यादा थीं या बाद में ज़्यादा बचीं।

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला को कोई क़र्ज़ देता है ? हज़रत अबूद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह भी क़र्ज़ चाहता है ? आपने सल्ल० ने फ़रमाया कि हां। अबूद्दर्दा रज़ि० ने अपना अंगूठा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हथेली पर रखकर कहा कि यह लीजिए मेरा बाग़। इसके बाद वहां से चले और बाग़ के बाहर ही से पुकारे कि ऐ उम्मेद्दर्दा रज़ि० यह बाग़ मैं अल्लाह तआला को क़र्ज़ दे चुका हूं। अब मेरा नहीं रहा, इसलिए तुम बाहर निकल आओ।

अलग-अलग वक़्त में अलग-अलग तक़ाज़ें होंगे, अगर इसमें नए जाएंगे तो काम नहीं होगा, आपको ही जाना है, चाहे मकान ही क्यों न

बेचना पड़े। जान और माल को हर वक़्त हुक्म की तामील में ख़र्च करना, और हुक्म को अपनी हद तक पहुंचाना।

दुआ करो कि ऐ अल्लाह ! इस तरह मेहनत करना वाला बना दे, हम अभी बहुत दूर हैं, जाना है, चाहे मकान, जायदाद, कपड़े बेचना पड़ें, यह जज़्बा पैदा करो, बीवी बच्चों पर कितनी ही तंगी आ जाए, बहरहाल मुझे जाना है, इस सतह से अभी हमारा काम बहुत दूर है। नीयत करो कि अल्लाह हमें इस तरह काम करने वाला बना दें। जब इस नीयत से काम होगा तो अपनी मुआशरत को बदलना पड़ेगा। मोटे–थोड़ा खाने में कनाअत करो, सादे कपड़ों तरीक़ों पर कनाअत, दीन पर पैसा लगे हौसले के साथ और जान लगे हर वक़्त, लेकिन अपने मुतल्लीक़ीन पर माल बहुम कम।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के कुछ सफ़र ऐसे हुए हैं कि चमड़ा जलाकर इसकी राख फांकी गई सफ़रों में टिड्डियां खाईं, किसी में पत्ते खाए, कई सफ़रों में कुछ खाने को नहीं मिला, गए और आ गए बग़ैर खाए हुए, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ से ताक़त में कमी नहीं आई।

हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी को फ़ाक़ा, यहूदी के घर से गोश्त पकने की ख़ूशबू पर कई बार आग लेने को जाना, लेकिन गोश्त न मिलना, इनका रोना, फिर यहूदी का इनके घर गोश्त का भिजवाना। इनके शौहर वह है जिन्होंने सबसे पहले इस्लाम के लिए तलवार सौंती।

काम करने वाले अगर फ़ाक़े उठाएंगे जो यह दिलों को हिला देने वाली चीज़ होगी, सहाबा रज़ि० बाहर जाते रहे और बाहर वाले यहां आते रहे। अब मदीना मुनव्वरा में रहने वाले जो बाहर गए तो बाहर वाले मदीना में आए, इनकी ख़िदमत इनकी ज़िम्मेदारी जो मदीना मुनव्वरा में रहने वाले थे, मदीना में तक़्सीमकार थी। आनेवाले को लेकर बैठना और तालीमें करना, अलग–अलग काम करना। चार सौ का एक क़बीला आया, इसको एक क़ौम की तरफ़ ले गया और दीन सिखाया। एक हफ़्ते

के बाद वे आए, तो आपने इनका इम्तिहान लिया और फ़रमाया कि इनमें दीन की कुछ–कुछ समझ पैदा हो गई है, फिर दूसरा मुहल्ला ले गया, दीन सिखाया, और पंद्रह दिन में वे दीन के पक्के बन गए। आप सल्ल० ने इनसे पूछा कि मेरे सहाबा रज़ि० को कैसा पाया, कहा अपने बिस्तरे हमारे नीचे बिछा दिए, अपने खाने हमको खिला दिए, और दिन में हमें ख़ूब दीन सिखाया। तबूक से यमन तक के लोग आते थे और इन सबको मदीना मुनव्वरा वाले लोग खिलाते थे। साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु अस्सी (80) महमानों को अपने घर ले जाते थे, काम करने वालों से तोहफ़े दिलवाते थे, लेकिन काम करने वालों को बाहर आने वालों से कुछ नहीं लेने दिया। सब देने वाले थे लेने वाला कोई नहीं था।

हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में अरब हा अरब का माल आया, हज़रत उमर और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० दोनों नमाज़ में मश्ग़ूल हो गए, कोई पहरा नहीं, क्योंकि सब देने वाले थे, लेने वाला कोई नहीं।

शादी–ब्याह के नक़्शा नक़ल व हरकत के ताबेअ हो गया, बात तै हो गई, ब्याह हो गया, लिबास, खाना–पीना, मकान, शादी–ब्याह बिल्कुल बदल गया था, निकलने के ज़माने में अगर हमने अपने दिलों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नक़्शों की तरफ़ मोड़ लिया, तो हम अपनी मुआशरत के नक़्शे को बदल सकेंगे, मेहनत को इनके नक़्शे पर लेकर सारी ज़िंदगी को इनके नक़्शे पर लाना है,

जिस तरह नमाज़ में चार चीज़ें हैं, क़ियाम, रूकूअ, सज्दा, कायदा, इसी तरह बाहर निकलकर तब्लीग़ में भी चार चीज़ें हैं, दावत, तालीम, नमाज़, ज़िक्र। इनमें से हर एक की चार शक्लें हैं।

1. दावत 2. ख़ुसूसी ग़श्त 3. इज्तिमाई दावत 4. इंफ़िरादी दावत।

इज्तिमाई दावत में एक शख़्स दावत देगा, बाक़ी उसकी दावत तवज्जोह से सुनेंगे। इसी से इसकी दावत में ताक़त होगी। पूरी जमाअत हर दावत सुनती रहे तो इसके ईमान में ताक़त पैदा होगी।

आज की बीमारी यह है कि ईमान की बातें हमारी ज़ुबानों पर हैं, दिल में नहीं उतरीं, कुछ ज़राए हैं जिनसे बातें दिल में उतारती हैं, इसको सोचो, इसी की बात करो, इसी को देखो, इसी की तरफ़ चलो, इसी की बात गुनगुनाओ, वे चीज़ें दिल में उतार जाएगी। यह सारे ज़राए ईमान के लिए इस्तेमाल करो।

जब बात ज़ुबान पर हो और दिल में न हो तो यह निफ़ाक़ है, इससे डरना चाहिए, ज़ुबान ही को ज़रिया बनाया जाए, दिल के अन्दर ईमान के उतर जाने का। अब दावत ही को इसका ज़रिया बनाया जाएगा, दिल के अन्दर ईमान के उतार जाने का। ज़िक्र करने वालों को देखें नमाज़ पढ़ने वालों को देखें, सारी तदबीरें और ईमान तक़्वीयत के लिए करनी है। ईमान को सोचना और इसी के लिए अल्लाह पाक से दुआ मांगना।

कहने वाले को अपने ईमान की तक्वीयत की नीयत से दावत का देना। सुनने वाले को इस नीयत से सुनना, कोई यह न सोचे कि बात मैं करूं, अगर मश्विरे में आ पड़ी तो अल्लाह की मदद होगी। यह हमारे नफ़्स वाला दाइया नहीं रहा। दावत का वक़्त है, और कोई नहीं, तो अब यह अल्लाह की तरफ़ से मुझ पर आ पड़ी।

2. तालीम। इज्तिमाई तालीम में तर्ग़ीबात और तर्हीबात पहले हैं, मसाइल बाद में हैं। मक्का में तर्ग़ीबात और तर्हीबात हैं। मदीना मनुव्वरा में दोनों, जब तर्ग़ीबात और तर्हीबात ज़िंदा होंगी, तब मसाइल आएंगे। सुनने की इस तरह मश्क़ करें कि रग़बत की बात से शौक़ और तर्हीब की बात से डर की कैफ़ियत पैदा हो जाए। दूसरी शक्ल सीखना तीसरा सिखाना, चौथा याद करना।

3. इबादात पिछले की अदाएगी, हाल की अदाएगी, सुन्नतों की अदाएगी, नफ़्लों की अदाएगी।

4. ज़िक्र, कुरआन की तिलावत, अज़्कार व तस्बीहात, दुआ, मुराक़बा व मुहासबा, ज़िक्र वाला नम्बर रूह की हैसियत रखता है, शक्ल दूसरे नम्बरों से मिलेगी लेकिन रूह ज़िक्र से बढ़ेगी, इसके अलावा चार

ख़िदमतें आएंगी।

अपने नफ़्स की ज़रूरी ख़िदमत करना, अपने अमीर की ख़िदमत, अपनी जमाअत की ख़िदमत, इनके अलावा जो मिले यानी ख़ालिके ख़ुदा की ख़िदमत।

आमाल पर जन्नत मिलती है, ख़िदमत पर ख़ुदा मिलता है, अपने अन्दर तज़ल्लुल का मद्दा जब ही पैदा होगा जब हम दूसरों की ख़िदमत करेंगे। मुस्लिम वह है जो हर एतबार से दूसरों को अपने से बढ़या समझकर ख़िदमत करे।

चार चीज़ों को कम करना है, खाने–पीने को, सोने को, पेशाब या पाख़ाने को, सवारी का एहतिमाम व अशग़ाल को कम करना है।

सिर्फ़ ब–क़द्र ज़रूरत खाना–पीना, सोना और सवारी का इस्तेमला कम से कम इन सबमें वक़्त लगाना और इस्तेमाल।

चार चीज़ें बिल्कुल बचने की हैं। इशराफ़, सवाल, बग़ैर इजाज़त इस्तेमाल को। इशराफ़ क्या है, तबीयत का मिलान, अगर ज़ुबान पर आ गया। अन्दर दाइया रहा, तो इशराफ़ है वह खाना पाक नहीं रहता, जिसमें इशराफ़ आ गया, सवाल से तो हराम हो जाता है, लेकिन इशराफ़ भी मकरूह है। इशराफ़ वाला किसी न किसी दिन में सवाल में पढ़ जाएगा। दूसरों के माल और खाने पर बिल्कुल नज़र न हो, इशराफ़ से सारा काम किरकिरा रह जाएगा।

दूसरे की चीज़ का बग़ैर इजाज़त इस्तेमाल करना हराम है। सबसे बेहतर यह है कि दूसरों और अपनी चीज़ों की इजाज़त दे दे, लेकिन ख़ुद किसी की चीज़ इस्तेमाल न करे।

हर हाल में हर चीज़ में इसराफ़ से बचना है।

चारों तरफ़ निगाह न जाए, चारों तरफ़ जमाअतें जाएं, उसर में यूसर है।

ख़ूब अल्लाह से दुआ मांगो, अंधेरे, उजाले, इकट्ठे अकेले, चारों तरफ़ जमाअतें, चारों हाल में भेजो, चारों के दीन में दाख़िल होने की सूरत हो जाएगी, यहूद, नसारा, मुशरीक़ीन, मुलहदीन।

चारों हाल ठीक हो जाएंगे, दुनिया, बर्ज़ख़, हश्र, और और आलमे इस्तक़रार।

मेहनत करके अल्लाह से यूं ही दुआ मांगो कि अल्लाह तो हमारी मेहनत को क़ुबूल कर ले जैसे तूने मेहनत की तौफ़िक़ अता फ़रमाई, मुझको भी और सब मुसलमानों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली मेहनत अता फरमाएं, मुझको भी और सब मुसलमानों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर चलने की तौफ़िक़ अता फ़रमाए, ग़ैर–मुस्लिमों को इस्लाम में दाख़िल होने की दुआएं मांगो।

इन चीज़ों को हमसे इतनी मुनासबत पैदा होनी चाहिए कि अपने मक़ाम पर पहुंचकर हमको इनसे रक़बत बाक़ी रहे, और अपनी मुआशरत को इस नक़्शे पर ले आएं, आज के नक़्शों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नक़्शे का पहचानना बड़ा मुश्किल काम हो गया। आज की मस्जिद से मस्जिद नुबूवी सल्ल० पहचानना, हमारी मुशक़्क़तों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुशक़्क़तों का पहचानना अपनी मुआशरत से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुआशरत को पहचानना मुश्किल हो गया, हक़ीक़त सामने नहीं आती, लफ़्ज़ सामने आते हैं, लफ़्ज़ अख़्लाक़ बोलते हैं। अख़्लाक़ ज़ेहन में नहीं आते, सादगी बोलते हैं, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सादगी ज़ेहन में नहीं आती, मौजूदा मुआशरा हिजाब बन रहा हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नक़्शे को समझने का, काश हमारे अन्दर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी पर चलने वाले दाई पैदा हो जाएं।

1. मेहनत इस तरह हो जाए, जिस तरह अल्लाह तआला चाहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े वाली मेहनत।

2. फिर अल्लाह से मेहनत वाली शक्ल के सही होने की दुआ की जाए, अपने लिए, अपने ख़ानदान वालों के लिए, अपने इलाक़े वालों के लिए दुआएं हों, नमाज़ पढ़कर दुआ मांगो कि नमाज़ पढ़ी जाए, सादगी इख़्तियार करके मांगो कि सादगी आ जाए। ज़िक्र करके मांगो कि ज़िक्र

करना आ जाए, मेहनत करके मांगो कि मेहनत करनी आ जाए। अल्लाह से मांगो जिस तरह तू चाहता है वैसा करने वाला बन जाऊं। अपनी मेहनत को इनसे मत मिलाओ जो नहीं कर रहे। इन से मिलाओ जिन्होंने पहले मेहनत की, मेहनत करो और पहलूओं को देखकर शर्मिंदा होते रहो, यह बढ़ने की चीज़ है, दूसरे करने की है, हम अपने को करने वाला क़रार न दें। हम न करने वाले हैं, और अल्लाह से मांगे कि जो हक़ीक़ी मेहनत करने वाले थे इन जैसा हमको कर दे।

अपने साथियों का इकराम करो। और सोचो कि इस ज़माने में इतना भी कोई करने वाला नहीं, जितना यह कर रहा है।

मज्मूआ बयानात

मुकम्मल (6 भाग)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब कांधलवी रह०

(भाग -2)

यासीन बुक डिपो
2127, रोदगरान, दिल्ली-6

विषय सूची

क्या ? कहां ?

विषय सूची

तर्तीब देने पर बात

अल्लाह तआला के इन बे–शुमार एहसानात में से जो इस ना–चीज़ पर हमेशा रहे एक बड़ा एहसान यह है कि इसने मुझे बहुम कम उम्र में हज़रत अक्दस मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपूरी रह० के साए में रखा और उनकी मुहब्बतों और इनायतों को मोरू बनाया। हज़रत मौलाना की ये मुहब्बतें और इनायतें अलग–अलग ज़मानों में अलग–अलग तरीक़ों में मेरे साथ रही। ख़ास तौर पर हज़रत मौलाना ही की इनायत और ज़र्रा नवाज़ियों के बलबूतें पर मुझे बर्ज़ुगाने दीन के मजफूज़ात व मकातिब बयानात वग़ैरह आम मंज़र पर लाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ और हो रहा है। अल्लाह तआला हज़रत मौलाना के साए को पूरी इंसानियत पर आफ़ियत के साथ क़ायम रखे।

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के बयानात का पहला हिस्सा आम मंज़र पर खुदा के फ़ज़्ल से मक़्बूले आम व ख़ास हुआ और कई ख़त बुर्ज़ुगों के और काम करने वाले अहबाब के दूसरे हिस्से को जल्द आम मंज़र पर लाने के सिलसिले में इस ना–कारा को मिले। अब अल्–हम्दु लिल्लाह इसका यह दूसरा हिस्सा भी खुदा ने अपने फ़ज़्ल से तैयार करवा दिया है जो इस वक़्त अपने हाथों में है। कई अहबाब ने इसकी तसीह व तर्तीब में मेरा साथ दिया। मैं इन सबका शुक्रिया अदा करते हुए और दारेन की तरक़्क़ी के लिए दुआ हो ख़ास जनाब मुहम्मद अहमद हाजी मुहम्मद अहमद साहब ज़ैद मुजदहम माहेम बम्बई वाले के इन्होंने मेरी मुरब्बत करदा सभी किताबों को आम मंज़र पर लाने में शुरू ही से मेरा साथ दिया अल्लाह तआला इनको अपनी शायाने शान बदला अता फ़रमाए।

हमने अपनी बिसात के मुताबिक़ इस किताब की तर्तीब व तसीह में कोशीश की मगर हमारा यह हरगिज़ दावा नहीं कि यह किताब ग़लतियों से ख़ाली है बल्कि बात यह है कि किसी भी इंसानी कोशीश को ग़लती व ख़ता होना ना–मुम्किन है अपनी ग़लती व ख़ामी को खुद को महसूस हो जाना या आमतौर से ज़रा मुश्किल भी है इसलिए इस किताब के पढ़ने वाले अहबाब से मेरी दरख़्वास्त है कि इसमें वाकाई ग़लतियों से मुझे मुतालअ फ़रमाएं। मैं इनका बहुत शुक्रगुज़ार हूंगा और अगले एडिशन में इन्शाअल्लाह इसकी तसीह कर दी जाएगी। जो अहबाब इस बयानात से इस्तिफ़ादा करें इनसे मेरी आजिज़ाना गुज़ारिश है कि साहब बयानात हज़रत जी रह० के तरक़्क़ी व दरजात और मुझ नाकारा और मेरे मुआवानें के लिए मग़्फ़िरत की दुआ फ़रमाएं।

नोट——इस किताब की तर्तीब के काम से बन्दा 27, फ़रवरी, 1997 ई० दिन, जुमेरात को फ़ारिग़ होकर किताबत के लिए कंप्यूटर पर दे दिया था। अगोला में कंप्यूटर पर उर्दू की किताबत करने वाले हज़रात को मश्क़ न होने की वजह से किताबत करने में काफ़ी देर लगी।

बहरहाल जब किसी का मरहला किसी तरह मुकम्मल हुआ तो तबाअत के लिए इदारा इशात दीनियात देहली को किताबत शुदा कापी भेज दी गई इदारा इशाअत के मैंगिज़िन डायरेक्टर भाई मुहम्मद अनस साहब ज़ैद मुजदम्म और इनके मुआवीनीन ने इस किताबत को ना–पसंद करके दोबारा उम्दे तरीक़े पर किताबत कराने को कहा चुनांचे दोबारा किताबत की गई आज 15 अगस्त 1997 ई० दिन जुमा को बन्दा इस किताब की तसीह वग़ैरह से फ़ारिग़ हुआ।

ऊपर की तफ़सील लिखने की वजह यह पैश आई कि जिस वक़्त बन्दे ने किताब के मसूदह को किताबत के लिए दिया था उस वक़्त मेरे दोस्त हज़रत मौलाना उमर साहब पालनपूरी रह० हायात थे और उम्मीद थी कि किताब हज़रत मौलाना रह० की हायात में मंज़र

आम पर आ जाएगी लेकिन अल्लाह पाक ने हज़रत मौलाना रह० को 21 मई 1997 ई० को हमसे जुदा करके अपने पास बुला लिया।

अल्लाह पाक हज़रत मौलाना रह० की क़ब्र को नूर से मुनव्वर फ़रमाए और जिस काम में हज़रत मौलाना रह० ने अपनी पूरी ज़िंदगी लगा दी इस काम के लिए अल्लाह पाक हम सबको पूरी ज़िंदगी के लिए कुबूल फ़रमाए। (आमीन)

मुहम्मद रोशन शाह कासमी सूनोरी

मदरसा हायातुल उलूम सूनोरी ज़िला अगोला

15. अगस्त 1997 ई० दिन जुमा।

एक ज़रूरी वज़ाहत

हज़रात इससे क़ब्ल दावत तब्लीग़ के सिलसिले में अकाबिर के मलफ़ूज़ात मक्तूबात और बयानात वग़ैर की सूरत में मेरी चंद किताबें आम मंज़र पर आईं और इन्शाअल्लाह आइंदा भी आती रहेंगी। लेकिन इनके साथ बात की वज़ाहत करना ज़रूरी समझता हूं कि यह दावत वाला मुबारक काम सिर्फ़ किताबों के पढ़ने से समझ में नहीं आएगा। हां इतनी बात ज़रूरत है कि इन किताबों में जो कुछ लिखा गया वह सब इस काम के बड़ों की बातें हैं इसलिए यह किताबें काम के समझने में किसी दर्जा में मुआविन तो बन सकती है काम की हक़ीक़त काम के फ़ायदे इस काम के ज़रिए पूरे आलम से बे-दीनी का दौर होना अल्लाह पाक से ताल्लुक़ सुन्नतों को शौक आमतौर से पूरी इंसानियत का और ख़ास तौर पर उम्मते मुस्लिमा का दर्द व फ़िक्र दिल में आना, ईमान व आमाल में तरक़्क़ी का होना या तो दावत के काम में अमली हिस्सा लेने से होगा। इसलिए इस काम के बड़ों ने जो बाहर की नक़ल व हरक़त के साथ मक़ामी काम की तर्तीब बताई है इसमें ख़ूब जमकर हिस्सा लिया जाएगा सिर्फ़ किताबों के पढ़ने पर इक्तिफ़ाना किया जाए।

अल्लाह पाक हम सबको इख़्लास के साथ अपनी इस्लाह की नीयत से ज़िंदगी के आख़िरी सांस तक दीन की ख़िदमत के लिए क़ुबूल फ़रमाए।

काम के उसूल की बातें इन किताबों में भी मिलेंगी, मगर एक उसूल यह है कि बंगले वाली मस्जिद देहली के शौरा की जमाअत हालाते हाज़रा के एतबार से जिस उसूल की जो तशरीह क़ुरआन व

हदीस की रोशनी में करे वह उसूल ठहरेगा। लिहाज़ा हमें बराबर बंगले वाली मस्जिद की शौरा की जमाअत से रोशनी हासिल करते रहनी पड़ेगी कि इस वक़्त वहां से किया हिदायत मिल रही हैं वह मक़द्दम होंगी।

अल–अरज़–: मुहम्मद रोशन शाह कासमी सूनोरी

27, फ़रवरी, 1997 ई० दिन जुमेरात

हज़रत जी के बयानात के बारे में अकाबिर उम्मत के तास्सर्रात

साहब बयानात आरिफ़ बा–अल्लाह, मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह, दाइ इल्ललाह हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब नूर–अल्लाह मरक़ादह की ज़ाते गिरामी मुहताज नहीं है। रहे आपके मुआविज़ और बयानात तो इसके नफ़े व तासीर की शहादत में ऐसे चंद अकाबिर उम्मत के तास्सर्रात व ख़्यालात जिनका इल्म व अमल मसल्लम (पूरा) है, नक़ल कर देना काफ़ी समझता हूं। यक़ीनन मंदरजा ज़ैल अकाबिर उम्मत के तास्सर्रात और शहादतें इत्मिनान व तस्दीक़ के लिए काफ़ी व वाफ़ी हैं। लिहाज़ा इन बयानात का हक़ यह है कि इनको ख़ूब पढ़े और इन पर अमल करें। अल्लाह तआला कुबूल फ़रमाए और हमें और तमाम मुसलमानों को पढ़ने की और अमल करने की तौफ़ीक़ मरहम्मत फ़रमाए। आमीन

अब अकाबिर उम्मत के तास्सर्रात मुलाहज़ा करें।

मुहम्मद रोशन शाह कासमी, सूनोरी

हज़रत शेखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब रह० तहरीर फ़रमाते हैं।

चचा जान हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० के विसाल के बाद ही एक परवाज़ इसने (यानी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० ने) की जिसके मुताल्लिक़ इस ना–कारा का और हज़रत अक़्दस मौलाना रायपूरी रह० का यह ख़्याल हुआ कि चचा जान नूरअल्लाह मरक़ादह की निस्बत ख़ासा मुंतिक़ल हुई और हर–हर बात में इसका ख़ूब मुशाहदा होता रहा। हज़रत मदनी कुद्दूस सर्रा के विसाल के बाद से मरहूम में एक जोश की कैफ़ियत पैदा हुई और किसी बड़े से बड़े ज़ी व जाहत शख़्स के सामने भी अपनी बात को निहायत जुराइत और बे–ख़ौफ़ी से कहने का ज़हूर हुआ और वह बढ़ता ही रहा। इसके बाद हज़रत अक़्दस रायपूरी नूर–अल्लाह मरक़ादह के विसाल के बाद इस की बात–चीत तक़ारीर में अनवार व तजल्लियात का ज़हूर पैदा हुआ, किसी बाइद है कि इन दोनों बुज़ुर्गों की ख़सूसी तवज्जोहात और मरहूम के साथ ख़ास शफ़क़त और मुहब्बत का यह समराह है।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मरहूम के हादसे के बाद लोगों ने अजीब–अजीब ख़्वाब देखे और लिखे, लेकिन एक औरत का ख़्वाब जो इस ना–कारा के नज़दीक लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ वाकअ है इस औरत के मुताल्लिक़ मालूम हुआ कि वह मरहूम के हादसे पर हर वक़्त रोती थी किसी वक़्त भी वुज़ू करके तस्बीह लेकर बैठ जाती थी कि इसको

गुनुदगी आ गई, इसने अज़ीज़ मरहूम को (ख़्वाब) में देखा, वह फ़रमा रहे हैं कि क्यों पागल हो गई है, मरना सभी को है, ताल्लुक़ मालिक से पैदा करें, बन्दे से नहीं, इस पर औरत ने वल्हाना अन्दाज़ में यों कहा—:

हज़रत जी यह एक दम ही हुआ ?

मरहूम ने कहा कुछ भी नहीं, कुछ दिनों से जब में तक़रीर किया करता था तो मुझ पर अल्लाह की तजल्लियात का ख़ास ज़हूर होता था। इस मर्तबा में रात तक़रीर कर रहा था तो इन तजल्लियात का इतना ज़हूर हुआ कि मेरा दिल इनको बर्दाश्त न कर सका और दौरा पड़ गया। इसके बाद मुझे बहुत बड़ा गुलाब का फूल सुंगाया गया, इसके साथ मेरी रूह निकल गई।

हज़रत शेख़ रह० का इर्शाद है

हज़रत शेख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिया साहब रह० फ़रमाते हैं कि काम करने वाले हज़रात से इसरार के साथ मेरी दरख़ास्त है कि हज़रत मौलाना इलयास साहब रह० के और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के मलफ़ूज़ात और इरशादात और दोनो की सवानिह उम्रयां और मकातीब बहुत एहतमाम से अध्यान में रखा करें कि यह काम करने वालों के लिए बहुत कीमती मोती हैं (इन मलफ़ूज़ात व इरशादात और मकातीब में जो उसूल हैं) इन उसूलों की पाबंदी काम में इज़ाफ़ा तरक्की और बरकत का सबब है।

मक्तूब गिरामी आरिफ़ बअल्लाह हज़रत अक़्दस मौलाना क़ारी सिद्दीक़ अहमद साहब बांदवी जामेअ अरबिया हतूरा बांदा यूपी।

जनाब मुफ़्ती रोशन शाह साहब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

हालात का इल्म हुआ आपकी तसनीफ़ करदा किताबें 1. मलफ़ूज़ात पहला हिस्सा 2. बयानात पहला हिस्सा 3. मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० पहला हिस्सा मौसूल हुई, बहुत पसन्द आई। यह सिलसिला आप जारी रखें बहुत से लोगों को फ़ायदा पहुचेगा।

अल्लाह तमाम मवानए दूर फ़रमाए, मेरे लिए दुआ करते रहें।

अहकर सिद्दीक अहमद

इस्लाम के फ़िक्रमंद हज़रत मौलाना अबुल हसन अली मियां नदवी तहरीर फ़रमाते हैं:–

मुझे अपनी बे–बज़ाअती तही दामनी का पूरा अहसास है, लेकिन यह एक तक़्दीरी बात है कि इसको इस्लामी मुल्क की सहायत और आलिम इस्लामी से वक़फ़ियत के ऐसे ज़राए और मौके मय्यसर आए जो (बिला किसी तंफ़िस व तहकीर के) इसके हमवतनों और ख़ास मुल्क आरबिया के दीनी, इल्मी और रूहानी हलक़ों को बहुत क़रीब से देखने और बरतने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। आज के दौर की मुश्किल से कोई तहरीक और कोई अज़ीम शख़्शसीयत होगी जिससे मिलने और तआरूफ़ हासिल करने की सआदत हासिल न हुई हो। इस वसीअ व वक़फ़ियत की बिना पर (जो किसी का ज़ाती कमाल और सरमाया फ़ख़्र नहीं) यह कहने की जुर्राइत की जाती है कि:–

अपनी तक़ारीर व बयानात में ईमान ग़ैब की दावत और तासिर की वुसअत व कुव्वत में इस ना–कारा ने इस दौर में मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० का कोई मुकाबिल नहीं देखा।

हज़रत मौलाना मुहम्मद मंज़ूर नौमानी तहरीर फ़रमाते हैं:-

इस आजिज़ ने पढ़ने के ज़माने में खुदा के फ़ज़्ल से मेहनत से पढ़ा, और पढ़ाने के ज़माने में भी मेहनत से पढ़ाया। ज़हन व हाफ़ज़ा की नेमत से भी अल्लाह तआला ने महरूम नहीं रखा था, लिखना पढ़ना और अध्यन ही अस्ल मशग़ला रहा। इसका नतीजा यह है कि अपने उस्ताद हज़रत मौलाना मुहम्मद अनवर शाह कशमीरी रह० के बाद कभी किसी के इल्म से मरऊब व मुतासिर न हो सका, लेकिन हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० की ख़िदमत में जब हाज़िरी नसीब हुई तो महसूस हुआ कि इनको अल्लाह तआला की तरफ़ से एक इल्म अता हुआ है जो मदरसा और कुतुब खाना का इल्म नहीं है।

इनके बाद मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० तक़रीरों में भी साफ़ महसूस होता था कि वही इल्म इनको भी अता हुआ है, और कुव्वत बयान मज़ीद बराअं। आपकी तक़रीर से ईमान में जान पड़ती थी और खुली तरक़्क़ी महसूस होती थी और कुरआन मजीद की जिन आयतों में ईमान की ज़्यादती और इज़ाफ़ा का ज़िक्र किया गया है इनकी सही तफ़्सीर समझ में आती थी। आपकी तक़रीरों को सय्यद अब्दुल क़ादिर जिलानी सर्राह के मुआविज़ से बड़ी क़रीबी मुशाबहत थी।

हज़रत जी रह० पृ० 586
तज़कारा मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० पृ० 31

हज़रत मौलाना मुफ़्ती नसीम अहमद साहब रह० फ़रीदी अमरोहवी लिखते हैं

मैंने हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० के जानशीन इकलौते बकमाल साहबज़ादे हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब रह० को क़रीब से देखा दूर से देखा, सफ़र में देखा, हज़र में देखा। खलूत में देखा, जलूत में देखा, उमूमी इज्तिमाओं में देखा, ख़ास महफ़िल व मज्लिस में देखा, इनकी रूह परूर बातें सुनी इनकी तक़रीरें सुनीं, इनकी तक़रीर की महफ़िल में कभी–कभी एक ही दिन में आदमी की काया पलट हो जाती थी।

मक्तूब गिरामी

उस्ताज़ी हज़रत अक्दस मौलाना मुफ़्ती शब्बीर अहमद साहब उस्ताद हदीस व सदर मुफ़्ती मदरसा शाही मुरादाबाद
खलीफ़ा आरिफ़ बा–अल्लाह हज़रत अक्दस मौलाना क़ारी सिद्दिक़ अहमद साहब
बन्दवी रहमतुल्लाहि अलैहि
सुब्हाना व तआला
बरादर अज़ीज़ हज़रत मौलाना मुहम्मद रोशन शाह साहब
अल्–हम्दु–लिल्लाह हम तुम्हारी दिली दुआओं से ख़ैर व आफ़ियत हैं। खुदा करे तुम भी बा–आफ़ियत हो तुम्हारी मुरतब्ब करदा तीन किताबें मलफ़ूज़ात पहला हिस्सा, बयानात पहला हिस्सा, मक्तूबात पहला हिस्सा, हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० मौसूल हुई। यह तुम्हारी बहुत बड़ी खुश क़िस्मती है कि दुनिया के शहरे अफ़ाक़ बुज़ुर्गों के रूहानी हालात और अक़वाले व अरा पर काम करने की तौफ़ीक़ हुई। यह खुश–नसीबी हर किसी को नसीब नहीं होती मुझे तुम्हारी इस खुश क़िस्मती पर कितनी खुशी हो रही है इसकी इंतिहा नहीं है यह तुम्हारे काम की इब्तिदा है इन्शाअल्लाह तआला आंइदा अलग–अलग जो सले और तसनीफ़ी काम के लिए राहे फ़राहम होने वाली है ज़द–फ़ज़द।

अभी इस महीने में इज़ाहल मसालिक़ के नाम से अल्लाह तआला ने एक किताब तैयार कर वादी है जो मंज़र आम पर आ चुकी है। तुम्हारे लिए रखी हुई है किसी मौक़े से अरसाल करेंगे और दूसरी किताब हज व उमरा के मौज़ूअ पर भी अल्लाह तआला ने तैयार करा दी है जो जो इज़ाहुल मुनासीक के नाम से तबाअत के लिए जा चुकी है इन्शाअल्लाह छपकर आने पर तुम्हारे पास भेज दि जाएगी तुमको इज़ाहुल तहावी जिल्द सालिस मिली है या नहीं मिली अध्यन कर देना इस ख़ाकसार की फ़लां दारेन के लिए दुआ फ़रमाएं बंदा तुम्हारे लिए हर वक़्त ख़ैरियत ख़्वाह है। वस्सलाम
दुआ गौ व आ जो शेर अहमद अफ़ाअल्लाह अन्हु
दारूल अफ़ताआ मदरसा शाहीद मुरादाबाद
मई, 1995 ई०

बयान न० 1

इंसानियत की तमाम क़िस्मों में मुहब्बत व हमदर्दी कैसे पैदा हो ?

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह०

16, अक्तूबर, दिन बुधवार बाद नमाज़ असर

मेरे भाइयों और दोस्तों

जो अह्ले निस्बत कहलाते हैं इनको अल्लाह तआला ने ज़िंदगी गुज़ारने का एक तरीक़ा महरम्मत फ़रमाया है और तरीक़ा हर कलिमे वाले को मिला है। वह तरीक़ा उलफ़त और मुहब्बत पैदा करने वाला है। इंसानियत की जितनी भी क़िस्में हो सकती है इनके अन्दर मुहब्बत और हमदर्दी पैदा हो और फ़रमाया कि जितना यह तरीक़ा वजूद में आएगा इसके बाद कामियाबी दूंगा। लोग माल हासिल करने के लिए इज़्ज़त हासिल करने के लिए अपने इंसानी तरीक़े को बिगड़ते हैं अल्लाह तआला ने इंसान में कुछ तक़ाज़े रखे हैं इनकी ख़ातिर वह अपने पाकीज़ा तरीक़ों को कुरबान कर देता है। जितने अल्लाह ने अपनी ख़िलाफ़त के जोहर रखे हैं इनको अपने तक़ाज़ों को पूरा करने में ख़राब कर देता है। हालांकि अल्लाह तआला ने ज़िम्मेदारी ली है कि तो अपने तरीक़ों की सेहत में कुव्वत पैदा कर

मैं ज़िम्मेदारी लेता हूं कि तेरे सारे तक़ाज़ों को पूरा करूंगा। मुल्क, माल, बड़ाई, रिज़्क़ वग़ैरह के वायदे किए हैं। या तो हम अपने तरीक़े ठीक करें और इन चीज़ों की परवाह निकाल दें, या चीज़ों के हासिल करने की फ़िक्र करें और तरीक़ों की सेहत की परवाह न करें। अल्लाह तआला अपने वायदों को पूरा करते हैं सच्चे हैं लिहाज़ा मैं अल्लाह और रसूल के बताए हुए तरीक़े को बुनियाद बनाकर अपनी ज़िंदगी गुज़ारूंगा, हो सकता है कि थोड़े दिन इस तरीक़े के जमाव में कुछ तकालिफ़ बरदाश्त करनी पड़े।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब मैं किसी के साथ एहसान करता हूं या नेकी करता हूं अपने और इसके दर्मियान नूर महसूस करता हूं। और दूसरी शक्ल में ज़ुल्मत महसूस करता हूं। इंसान का मिज़ाज अल्लाह ने ऐसा बनाया है कि हर एक की दूसरे के साथ हाजत अटकी हुई होती है। अगर हर एक दूसरे से लेने पर आ जाए तो अदावत की राह बन जाएगी और अगर एक दूसरे को देने पर आ जाए तो उलफ़त का रास्ता बने। ग़रीब ख़िदमत को करना न चाहें तो मालदारों से मुफ़ाद चाहें या इसी तरह से मालदार ख़िदमत तो लें और ग़रीबों के मुफ़ाद का लिहाज़ न रखें, ऐसी सूरत में नज़ाइ रूख़ पड़ जाता है। और यह नज़ाइ शक्ल बन जाने के बाद जितना भी सरमाया होगा वह मज्मूआ की ज़िंदगी के बनने के लिए ना–काफ़ी होगा।

असल बिगाड़ यह है कि तबक़ात का जोड़ सही नहीं है। लोग या तो अपने तबक़े को इतना बढ़ाना चाहेंगे कि कोई तबक़ा न रहे या दूसरे तबक़ों को दबाने की फ़िक्र में रात–दिन रहें। यह तो नज़ाइ सूरत है। और इस्लाम ने एक के दूसरे पर हक़ूक़ बतलाए हैं। हाकिम के हक़ूक़ महक्मों और महक्मों के हक़ूक़ हाकिमों पर मालदार के ग़रीबों पर और ग़रीबों के मालदारों पर हर एक को इसी ज़िम्मेदारी की अदाएगी के लिए कहा गया है। फ़क़ीर

अपने फ़क्र में ख़ुदा के दिए हुए तरीक़े को इख़्तियार करे तो वह सबको महबूब होकर ज़िंदगी गुज़ारेगा, अल्लाह से मुआवज़ा लेने के लिए अपनी जान को मुफ़ाद को दूसरों तक पहुंचाओ। इसका सब तबक़ात से मुतालबा किया, और ग़रीब इस वजह से आगे बढ़ जाएंगे कि इसके अन्दर दूसरों तक पहुंचाने की इस्तिदाद ज़्यादा है। मालदारों को बतलाया गया है कि यह माल जो तुम्हारी मिल्क में है थोड़े दिनों के लिए तुम्हारे पास बतौर अमानत है इसमें दूसरों के हक़ूक़ रखें हैं। यह ख़ुद तो दूसरों के हक़ूक़ महसूस कर रहा हो और दूसरों की नज़र इसकी तरफ़ न हो तो ऐसी सूरत में अगर यह चार पैसे भी देगा तो दूसरे को इससे मुहब्बत पैदा होगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालदारों पर हक़ूक़ क़ायम कर दिए और फ़रमाया कि तो माअलिया की तहक़ीक़ कर और ख़ुद इसकी अदाएगी की फ़िक्र कर। जब लोग एक–दूसरे के साथ बग़ैर मुतालबे के एहसान करेंगे तो यही वजह मुहब्बत बन जाएगी।

हर तबक़े को ज़रूरत पेश आई इस्लाम की। जो तबक़े एक–दूसरे का ख़ून बहाने वाले बनते, इस्लाम ने इन्हीं के एक–दूसरे पर हक़ूक़ क़ायम कर दिए हर तबक़े को इसकी वाली ज़िंदगी का नक़्शा दे दिया गया। अगर ग़रीब अपने नक़्शों पर आ जाए और मालदार अपने नक़्शों पर आएं तो ग़रीब लोगों की मदद शुरू हो जाएगी। इसी तरह से जब हर एक तबक़ा अपने माअलिया पर आ जाए। तबक़ाती ज़ज़्बात के ख़िलाफ़ आदमी सआी करने वाला बन जाए मिसाल के तौर पर वतनी जज़्बा है जो बेरूनी से टकराता है, ग़रीब का भी कोई जज़्बा है और मालदार का भी कोई जज़्बा है। ग़रीब इस बात पर बैठता हो उखड़ता रहेगा कि इन मालदारों के पास कितना कुछ है और वह अलग–अलग सूरतों से इनसे हासिल करना चाहेगा। इस सूरत में

जो ताक़तें एक–दूसरे का सर–सब्ज़ी का ज़रिया बनतीं, वही एक–दूसरे की तहज़ीब का ज़रिया बन जाएंगी।

ला इलाह इल्लल्लाह में ग़ैर–ख़ुदा के जज़्बात को निकाला गया है और ख़ुदा का जज़्बा पैदा हो गया है। तबक़ाती जज़्बों को निकल जाना और सारे तबक़ात के बारे में ख़ुदा का बतलाया हुआ जज़्बा पैदा हो जाए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यानी इस जज़्बे को पूरा करने के लिए शक्ल रसूलुल्लाह की चलाई जाए, और अल्लाह का जज़्बा पैदा किया जाए। जज़्बा अल्लाह का और शक्ल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की। यह बहुत मेहनत तलब बात है अगर लोग सिर्फ़ कलिमे को पढ़ें लेकिन इस पर मेहनत न की जाए तो इसके अन्दर हक़ीक़त नहीं आएगी। जो ग़ैर–मुस्लिम की ज़िंदगी है अगर मुस्लिम की ज़िंदगी भी वही है तो ग़ैर–मुस्लिम के इस्लाम की तरफ़ आने की काई सूरत नहीं होगी। तब्दीली पैदा करने के लिए ज़रूरी है कि ग़ैर–मुस्लिम तो किसी तरीक़े को और तरह से चलाता है और मुस्लिम दूसरे तरीक़े से। अगर ग़ैर–मुस्लिमों को मुआशरा मुस्लिम चला रहा है हो तो ग़ैर–मुस्लिम को इस्लाम की तरफ़ आने की कोशीश बाक़ी नहीं रहती। जितने नक़्शे दुनिया में क़ायम होंगे या बिगड़ेंगे वह एक ज़ाती अल्लाह तआला के साथ लिहाज़ा हम ख़ुदाई जज़्बे पर ज़िंदगी उठाएंगे, और इन जज़्बात से हम अपने को निकाल लेंगे जो जज़्बे ग़ैर हैं। बुनियाद तो यह है कि अल्लाह के सिवा सामने रखकर चलना नहीं है और दलील इसकी यह है कि अल्लाह की ज़ात के सिवा किसी से होता नहीं है। जब अल्लाह के जज़्बे पर आएंगे तो अल्लाह पाक हर एक से अपनी नियाबत का काम लेंगे। हर एक अंदर के एक जोहर को सबके काम आने का मुतालबा करेंगे। सख़ावत, रहम, ख़ुश ख़लक़ी वग़ैरह ग़रज़ यह है कि जिस क़िस्म के

जवाहारात रखे हैं इनको दूसरों पर ख़र्च करने का मुतालबा करेंगे। जब एक आदमी हज़ार पर अपने जवाहरात इंसानी को लगाता है तो हज़ार के जवाहारात एक के काम आएंगे। देखने में तो सबके जज़्बात टूटेंगे इसलिए कि इंसान की तबियत अपनी निस्बत को अपने ऊपर ही लगाना चाहती है। इंसान का जज़्बा तो यह है कि अपनी जान-माल के मुफ़ाद को अपने ही दायरे पर लगा दे इससे दायरे में टकराव होता रहता है और इनकी कामियाबी की कोई शक्ल नहीं होती। हमसे मुतालबा है कि अपने जान और माल के मुफ़ाद को अपने दायरों में मुख़्तसर मत रखो बल्कि इस्लाम ने बताया है कि तुम्हारे जान-माल के मुफ़ाद के हिस्से दूसरों के लिए कितने-कितने हैं। हर मज़्लूम की हिमायत पर, भूखे के लिए खाना हर नंगे के लिए कपड़ा तै करना अपने ऊपर रखा गया। अल्लाह तआला तो माबूद हैं और बन्दे अब्द है अल्लाह तआला ख़ुद नहीं खाएंगे सिर्फ़ दूसरों को खिलाएंगे, ख़ुद मकानों में नहीं रहेंगे लेकिन इंसान ख़ुद मकान में रहेगा और दूसरों के लिए मकान की फ़िक्र करेगा। यह ख़िलाफ़त ख़ुदावंदी कहलाएगी। जब सबकी इज्तिमाइ ज़िंदगी इस्लाम बनेगी तो एक-दूसरे के लिए अपनी जान-माली मुफ़ाद को लगाने वाला बनेगा। पहले तालीम मस्जिद में हुआ करती थी। इबादत के लिए मस्जिदों में सबको जमा किया जाता था। रोज़े रखने में सबको पता चल जाएगा कि भूख की कितनी तक्लीफ़ होती है। इससे मालदारों को ग़रीबों की भूख का एहसास पैदा होगा। नमाज़ रोज़े में जान लगाने से तमाम तबक़ात में मुसावात का जज़्बा पैदा हो जाएगा। एक तरफ़ नमाज़ दे दी, दूसरी तरफ़ रोज़ा और हर एक को नमाज़ पढ़ने और रोज़ा रखने का हुक्म दिया गया है इससे कोई मुस्तसनी नहीं निकलेगा। आज अगर कोई नमाज़ नहीं पढ़ता या रोज़ा

नहीं रखता तो वह इस्लाम की जिंदगी को लात मारकर बे-नमाज़ी और बे-रोज़े वाला बना है इस सूरत में इस्लामी जिंदगी से बुअद पैदा हो जाएगा नमाज़ का फ़ायदा यह है कि खुदा की इताअत को मद्दा पैदा हो जाए और रोज़े से दूसरे के फ़ाक़े की तक्लीफ़ का एहसास हो।

कुछ अहकामात ऐसे हैं कि इनकी फ़ौरी तौर पर तामिल की जाएगी और अगर हम अपने खाने के तक़ाज़े और बीवी की ख़्वाहिश की वजह से इसके पूरा करने में ताख़ीर करेंगे तो बड़े नुक़्सान का ख़तरा है लिहाज़ा रोज़े के ज़रिए इनके बरदाश्त का मिज़ाज पैदा किया गया है। भूख और प्यास की बरदाश्त की मश्क़ के लिए साल भर में एक माह के रोज़े रखे गए हैं। अगर पूरी उम्मत में दोनों फ़रिज़ें आम हो जाएं तो बहुत ज़्यादा कुर्ब पैदा हो जाएगा और दूसरे फ़रिज़े माल वाले हैं। एक हद इस्लाम की वह है जो मालदार और ग़ैर-मालदार दोनों के ज़िम्मे है और दूसरी हद वह है जो सिर्फ़ मालदारों पर ही है। जानी अहकाम को ग़रीबों के साथ करने वाले होंगे, और फिर माल वाले अहकामात की तामील करेंगे तो इस सूरत से ग़रीबों के साथ उलफ़त और मुहब्बत पैदा हो जाएगी तबक़ा बदलने की ज़हमत गवारा करनी नहीं पड़ेगी। जब हम इनके साथ नमाज़ पढ़ने वाले बन जाएंगे। इनके तालीम के हलक़ में बैठने वाले बन जाएंगे अगर वे अपना घर खाने के लिए बुलाएं या कोई ग़रीब तबक़े का मर जाए और कोई मालदार इसकी क़ब्र खोदने में हाथ लगाए तो इससे उलफ़त और मुहब्बत बढ़ जाएगी।

मिनाफ़स्त, माल के अन्दर नहीं है बल्कि तक़्वे के अन्दर है एक हद तो यह है कि नमाज़ रोज़ा सबकी जान लग जाए और जब वह मज़ीद करने वाले होंगे माली मसाइल में तो इनके

अन्दर ख़सूस पैदा हो जाएगा। ग़रीब मालदारों से मुहब्बत करने वाले बन जाएंगे इस्लामी जान हदूद से बढ़कर माली नक़शा क़ायम हुआ। जिसमें ग़रीब इज्तिमआ ज़िंदगी के सर–सब्ज़ करने वाले आमाल में लगने वालों के हक़ूक़ क़ायम किए गए हैं पहली चीज़ दीन की वह ज़िंदा होगी जो सब तबक़ों से ताल्लुक़ रखती है। इस तरह दावत हर तबक़े में आएगी, इसमें सब तबक़े जुड़ेंगे जिस तबक़े का भी दाई खड़ा होगा, सबको सुनना होगा। एक चीज़ तो ऐसी है जिसमें तफ़रीक़ नहीं है। बल्कि सब तबक़ों के ज़िम्मे बराबर तौर पर है और सही ज़िंदगी की तरफ़ पुकारना, नमाज़ रोज़े से भी आगे है। इससे इस्लाम की कामियाबी का ज़हन बनेगा। तबक़ात, मुआशरत के फ़सादा ने तमाम चीज़ों के मुफ़ाद से रोक रखा है। जिस तरह नमाज़ पर सब लोग जुड़ेंगे इसी तरह नमाज़ की तालीम पर भी सब जुड़ेंगे और अख़्लाक़ और मुआशरत की तालीम भी बराबर तौर पर सब पर आएगी और हर मस्जिद में इस तरह की तालीम को ज़िंदा किया जाए और तालीम में भी इनको आगे किया जाए जो फ़ज़ाइल की हैं। आज चूंकि हम इज्तिमआ के रूख़ पर नहीं हैं, इस वजह से मसाइल की तालीम उमूमी हलक़ों के अन्दर नहीं रखी गई। जब तबक़ात के ज़िम्मे यह है कि इकट्ठे हो–होकर तालीम करें और दावत को जज़्बात से बनाएं। इधर नमाज़ रोज़ा आम हो जाए तो फिर थोड़ी–सी कोशीश मालदारों और ग़रीबों में माल के मुताल्लिक़ की जाएगी। मालदारों को इनका मा–अलिया और ग़रीबों को इनका मा–अलिया बता दिया जाए।

कमाना नम्बर दो का दर्जा रखता है। इसलिए मुसलमान की बुनियाद कमाई नहीं है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि हम तुमसे कमवाना नहीं चाहते रोज़ी तो हम ख़ुद देंगे। तुम ज़रा

तरीक़े को सही करने की मश्क़ कर लो। इसके लिए ही हम दावत तालीम रोज़ा वग़ैरह के लिए कहते हैं।

बयान न० 2

हालात की ख़राबी की बुनियाद माहौल पर मेहनत न करते हुए ग़ैर माहौल पर मेहनत करना है

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाहि अलैहि

16, अक्तूबर, दिन बुधवार, मग़्रिब की नमाज़ के बाद 1957 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तों
तब्लीग़ के ज़रिए जिस तरफ़ मुतवज्जह किया जा रहा है, इसका रिवाज नहीं है। इस वजह से इनका समझना इसके मुताबिक़ मेहनत करना मुश्किल होता है। लिहाज़ा तमाम दोस्तों से अर्ज़ है कि ध्यान के साथ बात सुनें।

जितने आलम में इंसान, यूरोप और एशिया में हैं, वे सब कामियाबी के लिए मेहनत कर रहे हैं। लेकिन बावजूद मेहनत के कामियाबी की हक़ीक़त हासिल नहीं हो रही अगर कुछ को सूरत हासिल हो जाती है और कामियाबी से महरूमी की वजह मासवा पर मेहनत करना है। जो करने वाला है इसकी तहक़ीक़ नहीं की जा रही है, जो चीज़ें आलात के तौर पर हैं इन पर

मेहनत की जा रही है।

जब तक फ़ाइल और मफ़ऊल को न पहचाना जाए तो आलात का हसूल इंसानों को कामियाबी पर नहीं पहुंचाएगा। जिस क़द्र आलात की कसरत आज है पहले किसी ज़माने में नहीं रही है लेकिन इन सबके बावजूद कामियाबी हासिल नहीं हो रही है, हर चीज़ की एक सूरत होती है और एक हक़ीक़त। अनार की सूरत भी है और हक़ीक़त भी, क़िला, बाग़ की सूरत भी है, हक़ीक़त भी है। सूरत तो मिट्टी और कागज़ से हासिल की जाती है, लेकिन हक़ीक़त थोड़ी–सी जान लगाने और थोड़े–से माल लगाने से हासिल नहीं होती बल्कि इसके लिए ज़बरदस्त मेहनत करनी और जान लगानी पड़ती है। आप बाज़ार जाएं चंद कोड़ी और पैसों में सूरत को ले आए लेकिन बाग़ की हक़ीक़त फूलों को हक़ीक़त हासिल करने के लिए ज़बरदस्त मेहनत करनी पड़ती है। सूरत के मिलने पर खुश फहमी हासिल हो जाएगी लेकिन हक़ीक़त के जितने मुफ़ाद है वह हासिल नहीं होंगे, इसलिए कि सूरतों से हक़ों का ताल्लुक़ नहीं है। एक तो कामियाबी की सूरत और एक इसकी हक़ीक़त है पैसे का हाथ में आ जाना, बाग़ मिल जाना, ये कामियाबी की सूरत है और हक़ीक़त कामियाबी वह है जिनके लिए हमने इन चीज़ों को हासिल किया है। ज़रूरतों का पूरा हो जाना, अम्न व आफ़ियत मिल जाना, सेहत व तन्दुरुस्ती का मिल जाना।

ये कामियाबी की हक़ीक़त है, और अगर हम एक दूसरे के दुश्मन हैं और पगड़ियां उछालते हैं और परेशानी की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं तो यह कामियाबी नहीं है और वक़्ती तौर पर किसी चीज़ का मिल जाना भी कामियाबी नहीं है। इज़्ज़त न मिलना, इज़्ज़त मिलकर छिन जाना, माल न मिलना या माल मिलकर छिन जाना, दोनों ना–कामियां। अक़्लमंदों के नज़दीक

कामियाबी का म्यार यह है कि चीज़े मिलकर छिनती नहीं और हमेशा के लिए चीज़ों का मिल जाना कामियाबी है। अगर वक़्ती तौर पर हालात दुरूस्त हो जाएं और हमेशा के लिए बिगड़ जाएं तो ये ना–कामी है। कामियाबी की जो हक़ीक़तें हैं, इनका ताल्लुक़ अल्लाह पाक की ज़ात के साथ है। अल्लाह करने वाले हैं और इंसान की ज़ात वह है जिसके साथ किया जा रहा है। जब हम इस दुनिया में चले जाएंगे तो इस आलम को तोड़–फोड़ दिया जाएगा। अल्लाह ख़ुद फाइल हैं और इंसान मफ़ऊल, और आलात बदलते रहते हैं इनको जिसके लिए इस्तेमाल करेंगे वह इस्तेमाल हो जाएंगे।

हालात की ख़राबी जो बुनियाद है वह माहौल पर मेहनत न करना और ग़ैर–माहौल पर मेहनत करना है मेहनत न होना वजह ना–कामी नहीं है बल्कि माहौल पर मेहनत न होना ना–कामी की वजह है। ग़ैर–माहौल पर करने से थोड़ी सूरतें हासिल हो जाती हैं जो वक़्ती होती हैं और इसके बाद फ़ना हो जाती हैं। अल्लाह तआला अपने निज़ाम को क़ायम फ़रमाएंगे। चीज़ों की तर्तीब देंगे और इससे हालात को दुरूस्त फ़रमाएंगे और वह इंसान पर निगाह डालकर करेंगे। क़ियामत में हर शख़्स सीधा अल्लाह के सामने खड़ा किया जाएगा और इसकी मेहनत के सही और ग़लत होने पर इसके मुताल्लिक़ फ़ैसला किया जाएगा।

इसके अन्दर की तहक़ीक़ की जा रही होगी और इसके लिए हालात के बिगाड़ का या हालात के सुधार का फ़ैसला देंगे और इसके बाद वे हालात हमेशा रहेंगे। हालात जब आते हैं तो माल, सरमाया, पर्टी वग़ैरह को नहीं देखते बल्कि इंसानियत के हिस्से को देखते हैं। ख़ुदा तो मुख़्तसर सा हिसाब लगाते हैं कि इंसानों के सर से लेकर पैरों तक हिस्से किस सूरत में

इस्तेमाल हो रहे हैं। अगर ख़ुदा के उसूलों पर आता है तो बनाने का फ़ैसला करते हैं और अगर उसूलों के ख़िलाफ़ होता है तो बिगाड़ का फ़ैसला फ़रमाते हैं। जब वह बनाना चाहते हैं तो मछली के पेट में ले जाकर बनाते हैं। आग में डालकर बचाते हैं। सारी कायनात ताबेअ है अल्लाह की माशियत के और अल्लाह का इरादा इंसानों को देखकर होगा। अगर इंसान इन उसूलों पर पूरा होगा जो ख़ुदा के मुक़र्रर किए हुए हैं तो इसकी सर–सब्ज़ी का फ़ैसला आ जाएगा। और सारा आलम इसके लिए मवाफ़क़्त में आ जाएगा। और अगर मेहनत ग़ैर–माहौल पर होगी तो पूरा आलम ख़िलाफ़ आ जाएगा।

आज ज़मीन से निकलकर चांद और सूरज पर मेहनत की जा रही है। एक–एक चीज़ पर मेहनत की जा रही है और अगर मेहनत नहीं की जा रही तो इंसान पर जो कायनात की जड़ और बुनियाद है (बुनियाद का दर्जा रखता है) आज मुल्क, माल, लकड़ी, लोहा, पत्थर वग़ैरह की मेहनत हो रही है। इसलिए कि आज इंसान अल्लाह की रबूबियत से ग़ाफ़िल होकर मेहनत करता है। तब्लीग़ में इस तरफ़ मुतावज्जोह किया जा रहा है कि थोड़े दिन सही मेहनत कर लो फिर देखना कि अल्लाह तआला क्या कुछ ज़ाहिर फ़रमाते हैं जिस पर कायनात पर मेहनत करने के बजाए, इंसान की ज़मीन को बनाना पड़ेगा। इंसान की इंसानियत के साथ सारी कायनात को वा–बस्ता किया है। कायनात के सारे ज़र्रे अल्लाह की माशियत में जकड़े हुए हैं। अगर इंसान अल्लाह के हुक्मों पर चलता है तो कायनात इसके मुवाफ़क़्त में इस्तेमाल होती है। और अगर इंसान अल्लाह के हुक्मों को तोड़ने वाला बनता है तो कायनात इसके ख़िलाफ़ में इस्तेमाल होती है। अगर कोई चाहता है कि दुनिया आख़िरत में फले–फूले तो इसको अपने और अल्लाह के दर्मियान के राब्ते

को मज़बूत करने के लिए मेहनत करनी पड़ेगी। अल्लाह की रबूबियत का यक़ीन करके इंसानियत को ख़ुदा के अह्काम के मुताबिक़ करने की मेहनत करनी पड़ेगी।

हज़रत मौलाना सय्यद अहमद खां मक्की के मकातिब व बयानात जिनको मौलाना मुफ़्ती रोशन शाह क़ासमी ने मुरतब्ब किया

मकातिब हज़रत मौलाना सय्यद अहमद खां साहब मक्की पहला हिस्सा

मकातिब हज़रत मौलाना सय्यद अहमद खां साहब मक्की दूसरा हिस्सा

मकातिब हज़रत मौलाना सय्यद अहमद खां साहब मक्की तीसरा हिस्सा—जैरए तज

मकातिब हज़रत मौलाना सय्यद अहमद खां साहब मक्की चौथा हिस्सा—जैरए तज

बयानात हज़रत मौलाना सय्यद अहमद खां साहब मक्की पहला हिस्सा—जैरए तज

बयानात हज़रत मौलाना सय्यद अहमद खां साहब मक्की दूसरा हिस्सा—जैरए तज

बयान न० 3

अल्लाह ने तमाम अह्वाल की दुरुस्तगी को दीन के साथ जोड़ दिया और दीन को मेहनत के साथ

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाहि अलैहि

18, अक्तूबर दिन जुमा नमाज़ फ़जर के बाद 1957 ई०

ख़ुत्बे मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया
अल्लाह तआला ने आख़िरत की तमाम कामियाबियों और मरने से पहले तमाम अह्वाल की दुरुस्तगी को दीन के साथ जोड़ दिया और दीन को मेहनत के साथ जोड़ दिया। एक तरफ़ तो आख़िरत को और दूसरी तरफ़ दुनिया को जोड़ दिया। दोनों जहां के तमाम अह्वाल तो दीन के साथ वा–बास्ता और दीन मेहनत के साथ वा–बास्ता। जितना कोई दीनदार बनता चला जाएगा उसी के ब–क़द्र दुनिया के अह्वाल भी दुरुस्त होते रहेंगे। पहला दर्जा मेहनत का है फिर दीन का फिर कामियाबियों हैं। जितने ऊंचे पैमाने पर मेहनत को उठाता जाएगा। और जितनी ये मेहनत अल्लाह के यहां प्यारी होगी और इसके ब–क़द्र आलम में दीन आएगा। और फिर कामियाबी की सूरतें

पैदा होंगी। मेहनत के नक़्शे में तमाम अंबिया ने मेहनतें की हैं। किसी से इसके घर के अन्दर, किसी से बस्ती के अन्दर, किसी से क़ौम के अन्दर किसी से इलाक़े में मेहनत कराई। मदाइन वालों की तरफ़ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम को भेजा। हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को क़ौम हूद की तरफ़ भेजा। जितना दायरा मेहनत का बड़ा है इसी के ब–क़द्र दीन बढ़ेगा और फिर इसी के हिसाब और पैमाने पर कामियाबी होगी। पहले अंबिया की मेहनत मिटी तो एक क़ौम मिटी चमकी तो एक क़ौम चमकी लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वह मेहनत दी गई जिसका असर पूरे आलम पर पड़ेगा। सारे अंबिया में वे बातें नहीं मिलेंगी जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में मज्मूई तौर पर दी गई हैं। इस एतबार से आपको मेहनत के वे सारे शोब्हे मिले जो आपसे पहले अंबिया को मिले थे। अपने घर में अपने शहर में, अपने क़ौम में, अलग–अलग शोब्हों वालों में भी मेहनत करना मिला। एक आपकी ख़सूसी हालत है मेहनत की।

तिजारत में आए, इसकी बुनियाद है ताजिरों में दीन के ज़िंदा होने के लिए मेहनत करना। हर क़ौम, हर शहर, हर घर, हर शोब्हा में मेहनत होने लगे। या चालू किस तरह होगी। वह आप सल्ल० की ख़ास मेहनत है जिसके ज़रिए से यह वजूद में आएंगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सारी क़ौमों, सारी ज़बान वालों सारे ज़मानों के नबी बनाकर भेजे गए। जिस मेहनत पर पहले अंबिया उठा करते थे वह आपकी ख़ूससी मेहनत है। और हर क़ौम हर घर, हर इलाक़ा और हर शोब्हा में मेहनत करना आप सल्ल० के ज़िम्मे है, ग़रज़ यह है कि क़ियामत तक के सारे ज़मानों में मेहनत करना आप सल्ल० के ज़िम्मे है। जितनी दायरे में वुस्अत होगी इतनी ही अमल में वुस्अत की जाती है। जब आप सल्ल० को क़ियामत तक मेहनत

करने वाला क़रार दिया गया तो फिर आप सल्ल० की उम्मत को यह ज़िम्मेदारी दे दी गई। आपका जो भी इत्तिबआ करे इसके ऊपर सारी दुनिया में दीन के लिए मेहनत करना आ जाता है। जो इनकी इत्तिबआ में कामियाबी देखता है आप सल्ल० की ख़ास मेहनत घर में बैठकर या क़ौम में रहकर या इलाक़े में फिरकर नहीं है। यानी आप सल्ल० की मेहनत नक़ल व हरक़त के साथ है जो हर मुल्क व इलाक़े में पहुंच रही है।

मेहनत में इज्तिमआ और मेहनत में नक़ल व हरक़त आप सल्ल० की ख़सूसीयत है। अल्लाह की दावत में आप सल्ल० के साथ पूरी उम्मत को शरीक कर दिया गया। अल्लाह का किसी को यह फ़रमाना कि तो किस को जाकर दावत दे, ये बहुत ताक़त है। इतनी ताक़त का कोई अम्र है ही नहीं। अगर यह दावत वाला अम्र पूरा किया जाए और इस अंदाज़ से पूरा हो जाए जो पूरा होने का हक़ है तो इसके नूर से पूरी की पूरी हुकूमत निस्ते–नाबूद हो सकती है। जो इसके मुक़ाबले के लिए आ जाए। पहले यह अम्र ख़ास नबी को मिला करता था हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने य अम्र मुसतश्ना कराया, जब अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा को अम्र वाहिद दिया कि जा फ़िऔन के पास वह सरकश हो गया है। हज़रत मूसा ने बड़ी तहमीद् क बाद अल्लाह की जनाब में दरख़ास्त की कि मेरे वाले इस अम्र में मेरी भाई हारून अलैहिस्सलाम को भी शामिल कर दी जिये। हज़रत सुलेमान अलैहिस्स्लाम को ऐसी हुकूमत मिली जो आप से पहले किसी आदमी को नहीं मिली थी। इसके लिए तो सिर्फ़ इतनी दुआ की गई है कि अल्लाह मुझे ऐसा मुल्क अता फ़रमा जो अब से पहले किसी को न मिला हो लेकिन दावत में वाहिद मुसना बनाने के लिए एक लम्बी चौड़ी दुआ करनी पड़ी। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की दुआ पर तो सिर्फ़ एक जुमला इर्शाद

फ़रमाया कि فسخرنا(*) लेकिन मूसा अलैहिस्सलाम की दरख़्वास्त पर अल्लाह तआला ने एहसानात गिनवाने शुरू किए और पैदा होने से अब तक जितने एहसानात थे सब गिनवाए, इसलिए कि यह मामूली बात न थी, हुकूमत मिल जाना, माल मिल जाना, मामूली बात है लेकिन किसी को दावत अम्र मिल जाना बहुत ऊंची बात है। मांगने वाला बहुत बड़ी चीज़ समझकर बहुत तमहिदात के बाद मांग रहा है और अल्लाह तआला भी बहुत बड़ी तमहीद के बाद इसका जवाब इर्शाद फ़रमा रहे हैं। एक सूरत तो यह थी कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को इसकी शिर्कत के लिए फ़रमा देते, लेकिन दावत वाली ताक़त एक ही रहती। लेकिन जब अल्लाह तआला ने हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को भी इसमें शामिल कर दिया तो अब ताक़त दोहरी हो गई। दावत में ऐन ताक़त बारी तआला है और दुनिया की सारी ताक़तें तो कायनात से ली हुई हैं। वह अल्लाह की ताक़त के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखतीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को असली सूरत में देखा है, वह यह कि इनका सर अर्श इलाही से और पैर सातों ज़मीनों के नीचे और इनके छः सौ पर ज़मीन व आसमान को घेर लेते हैं। इतना बड़ा जिस्म अल्लाह तआला की हैबत से सुकड़े-सुकड़े एक छोटी चुड़िया के बराबर रह जाता है। अल्लाह की ज़ात की ताक़त अम्र के साथ फ़रिश्ते अलग अलग होते हैं। कायनात अलग झुकती है अल्लाह की ज़ात के साथ हो जाने पर, ओ अम्र इलाहिया गैबी ताक़त बारी तआला को लेने के लिए हैं। वह ताक़त जिसको आप यों कहते हैं कि वह मख़्लूक़ नहीं बल्कि ख़ालिक़ है। वह ताक़त ज़ाहिर सिफ़ात के साथ हो जाती है और दावत के और अम्र के इम्तिसाल पर, और

इसके अन्दर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली शक्ल पर दावत आ जाएगी, आपका मौज़ूअ ब–असत है इन सबमें काम करें। जब आप सल्ल० वाली ख़ूससी मेहनत की जाएगी तो बातिल में भूचाल आ जाएगा, बातिल नक़्शों में कामियाबियां मिलनी बंद हो जाएगी। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए तो जिन्नात आसमानों पर चले जाते थे और वहां से ख़बर लेकर आते, लोगों को सुनाते। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तशरीफ़ लाने पर इनका आसमान पर जाना मौक़ूफ़ कर दिया। अब अगर वह जाते हैं तो इनके तारे मारे जाते हैं और इनको आसमान पर चढ़ने से रोक दिया जाता है। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए तो वह आग जो हज़ारों बरस से जल रही थी एक दम बुझ गई और दरिया एक दम खुश्क सा हो गया। जब आप सल्ल० की ज़ात ने आलम में ऐसा तग़य्यूर कराया तो फिर जिस मेहनत को लेकर आप सल्ल० तशरीफ़ लाए, अगर वह दुनिया में ज़िंदा हो तो फिर कितनी ज़बरदस्त कामियाबियां वजूद में आ सकती हैं और ग़ैर किसी दर्जा ना–काम हो सकते हैं। तमाम दुनिया के लोग मिलकर जितनी स्कीमें बनांएगे वे सारी रखी रह जाएगी। अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नक़्शे पर मेहनत को उठाया जाएगा। आपके अन्दर जामियत और कमाल है इसी वास्ते आप सल्ल० की उम्मत के लिए ज़बरदस्त मैदान मिल गया आलम के नक़्शे में मुशरीक़ीन, यहूद और नसारा की ज़िल्लत के साथ तब्दीली हो जाना, ख़ाली इस मेहनत से नहीं होगा बल्कि आलम में खवाहिशत और मुज़लिमों का जो मुआशरा क़ायम है वह ख़ाली वुसअत पर अमल करने से नहीं होगी अगरचे वुसअत के मुताबिक़ जो मेहनत होती है इसके असरात भी अल्लाह के हाथ में है। लेकिन आपके वाले

एतबार से लेना है तो इसके वुस्अत से काम नहीं चलेगा। लोग कहते है कि दीन में तो वुस्अत बहुत है, तुम इतनी तंगी क्यों करते हो हालांकि वुस्अत पर अमल करते रहने में जो मुसीबतें आती हैं वे भी बयान की गई हैं वुस्अत वाला दायरा तो इतना है कि जिसने अभी एक मर्तबा कलिमा पढ़ लिया वह एक ना एक दिन जन्नत में चला जाएगा। लेकिन हम जितना मेहनत को बढ़ाएंगे दीन वजूद में आएगा। दीन तो मेहनत का नतीजा है जिस दायरे में मेहनत की जाएगी इसमें दीन आएगा पहला दर्जा मेहनत के ज़िंदा होने का है। आप वाली ख़ास मेहनत वह है जो हर ज़ुबान हर शहर हर कौम में, हर शहर में मेहनत उठा रही हो। वह मेहनत बुनियादी मेहनत होगी, इससे दूसरी मेहनतें पैदा होंगी, क़ौमवार, इलाक़ेवार, ज़ुबानवार मेहनतें उठाएंगी। और जब वह अलग–अलग मेहनत की लाइन उठाएंगी तो सबमें दीन आएगा। पहले नबियों की मेहनत ज़्यादा दिन नहीं चलती थी बल्कि थोड़ी दिन की मेहनत पर बिगड़ने वाले बिगड़ जाते थे और बनने वाले बन जाया करते थे। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में ऐसी शक्लें तो नहीं होंगी कि पत्थर बरसाकर पूरी क़ौम को हलाक़ और बर्बाद कर दिया जाए मगर निज़ाम में तब्दीली की सूरतें ज़रूरत पैदा होती रहेंगी। आज एक क़ौम की इज़्ज़त और नेमतें मिली हुई हैं कल को इससे छीनकर दूसरी क़ौम को दे दी गई, नक़्शे हर एतबार से बदलते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तशरीफ़ लाकर मेहनत की जिस नहज को उठाया है वे मेहनत सारे शोब्हों में क़ायम करने के लिए है। और वे मेहनत सारे दीन को सारे शोब्हों में क़ायम करने वाली है। अगर हम ख़ाली अपने घर में बैठे या ख़ाली अपने शहर में फिरकर मेहनत करते रहे तो इससे सारे आलम में किस तरह से दीन वजूद में आ

जाएगा। घर पर मेहनत करने वाले इस तर्तीब से मेहनत नहीं करते बल्कि अपने मशागिल की तर्तीब पर मेहनत करते हैं। लिहाज़ा इनकी मेहनत बहुत नाकि़स हो गई। ताजिर, मुलाज़िम, वग़ैरह अपनी तर्तीब पर मेहनत करते हैं। यानी जब अपने सारे मशाग़िल से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो कुछ दीन के लिए भी मेहनत कर लेते हैं। हज़रत अंबिया किराम मेहनत के अन्दर पत्थर खाते थे, मुसीबतें उठाते थे, भूख–प्यास बरदाश्त करते थे तो फिर इस मेहनत के अन्दर ताक़त थी, चूंकि हमारी मेहनत हमारी अपनी तर्तीब पर है, तीन दिन बताएंगे, असल में एक दिन होगा, एक आधी छुट्टी का दिन आ जाता है एक आधे दिन आकर वह अपने घर–बार को देख लेते हैं। ऐसी सूरत में चूंकि कोई ख़ास कुरबानी नहीं है इसलिए अल्लाह तआला की तरफ़ से भी कोई ख़सूसी इम्दाद नहीं होती। एक लाइन के मुफ़ाद को कुर्बान करना पड़ता है दूसरी लाइन के वजूद में लाने के लिए पहले दर्जे में तो शैतान इस बात की कोशीश करेगा कि मेहनत ही न होने पाए और अगर मेहनत पर ही आ जाए तो इस तरह से मेहनत करता है कि तसव्वुर में तो यों आ जाए कि बहुत मेहनत कर रहा है लेकिन हक़ीक़त में वह मेहनत मेहनत ही शुमार न की जाए। असल मेहनत वह है जिससे शैतान की सारी ताक़तें ख़त्म हो जाएं ऐसी पट्टी पढ़ाता है कि मेहनत ऐसी सूरत से कर ली जाए कि अपने नक़्शे के अन्दर कोई नुक्सान और तब्दीली पैदा न हो जाए।

जिस मेहनत के होने पर आप यों चाहते हैं कि अल्लाह की ताक़तें आ जाएं तो इसके लिए ज़बरदस्त कुरबानी देनी पड़ेगी। सुबह को आ जाने ने बच्चों को जवान और जवान को बूढ़ा बना दिया। सर्दी ज़द है और गर्मी ज़द है सर्दी का अंधेरा और चांदना इज़्दाद हैं अगर चांदनी में सोना चाहेंगे

तो भी अंधेरा करना पड़ेगा या अंधेरे में कोई मशग़ला करना चाहेंगे तो उजाला करना पड़ेगा। जिस तरह रात–दिन की अम्दो–रफ़्त है इसी तरह इंसानों के अह्वाल की अम्दो–रफ़्त है अगर कोई इंसान यों चाहे कि अल्लाह की ताक़त इसके साथ हो जाए तो वह बहरहाल मैं करने वाला बन जाऊं जब खाने को मिले तब भी करे और जब खाने को न मिले उस वक़्त भी करता रहे। नमाज़, रोज़ा, ज़िक्र और सारे अवामीर का यही हाल है। जब इनको हर हाल में बजा लाया जा रहा होगा तो अल्लाह की ताक़त पैदा हो जाएगी।

हर अम्र के असरात अलग–अलग हैं, कुछ तो इंसानी ज़िंदगी के साथ कुछ क़ौमी ज़िंदगी के साथ कुछ इलाक़े और मुल्क की ज़िंदगी को अपने अन्दर लिए हुए हैं। अल्लाह के रास्ते की मेहनत जब इज़्दाद में को निकल जाए जो इसके अन्दर ज़बरदस्त ताक़त हो जाएगी। शैतान इसको अच्छी तरह देख रहा है और नक़ल व हरकत तो चालू हो गई इससे बचने की सूरत यह है कि एक–एक ज़ेहन में यों डाले कि अब करने वाले बहुत हो गए हैं मैं न जाऊंगा तो क्या हरज होगा। अगर यह शख़्स अपनी फ़ुर्सत की तर्तीब बिठाले तो ग़ैबी ताक़त पैदा नहीं होगी। इसलिए कि एक रूख़ की बात होगी यानी तन्दुरूस्ती में करते हों, बीमारी में न करते हों, फ़राग़त में करते हों, मश्ग़ूली में न करते हों तो वह ख़ास बात पैदा नहीं होगी। चाहे हज़ारों मेहनत करने वाले बन जाएं। मेहनत में कमाल उस वक़्त पैदा होगा, जो हर हाल में निकलने वाले हों। ये सूरत के एतबार से है मेहनत का ख़ाका तो यह है कि हर हाल में निकला जाए अगर कोई बीमार है तो बीमारी न रोके अगर खेती का वक़्त है तो इसको न देखे बल्कि इस हाल में भी अल्लाह के दीन की मेहनत के लिए निकलने वाला बन जाए। जो सिर्फ़ एक हाल में

करने वाला बनेगा इसको अज्र व सवाब तो मिल जाएगा अल्लाह की ताक़तें साथ न होंगीं। अंधेरों में बहुत निकलने वालों को क़ियामत के दिन रोशनी की ख़बर सुना दो यों मस्जिद में वैसे भी जाने का सवाब है। मकारा पर वुज़ू में मुबालग़ा का बहुत ज़्यादा अज्र व सवाब बतलाया गया है। अल्लाह के कुछ बन्दे हर हाल में निकलने वाले बन जाएं तो ये अलग-अलग शोब्हों में मेहनतों को ज़िंदा करा देंगी और इन मेहनतों से दुनिया में दीन आएगा। और फिर अल्लाह की मदद से मुइद हो जाएंगे। हर शख़्स को अपनी ज़ात के बारे में यह फ़िक्र हो कि हालत जैसी भी हो, इसी में दीन के लिए निकलने वाले बन जाएं। अगर हज़रत अबूबक्र रज़ि० नामोफ़क्ह में काम करने वाले न होते तो ज़बरदस्त ख़राबी पैदा हो जाती। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने नज़ा की हालत में सारा काम कराया है। मश्विरा लिया हज़रत उमर रज़ि० को बुलाया और ख़ूब वसीयतें कीं। हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत उस्मान रज़ि० से वसीयत नामा लिखना शुरू किया तो बे-होशी हो गई। और اِنِّی استخلفتکم علیکم तक लिखवाने न पाए थे हज़रत उस्मान रज़ि० ने इससे आगे उमर रज़ि० लिख दिया।

एक वफ़्द आया कि आप रज़ि० उम्मत की गरदन उमर के हाथ में देकर जा रहे हो, तो तुम अल्लाह को क्या जवाब दोगे क़ियामत के दिन, इसी हालत में जवाब देने के लिए उठे और इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह को और उमर रज़ि० को तुमसे ज़्यादा जानता हूं। अगर अल्लाह ने सवाल फ़रमाया तो अर्ज़ कर दूंगा कि ऐ अल्लाह ! मैं सबसे बेहतर शख़्स के हवाले उम्मत को कर आया हूं। बहुत देर तक अलग-अलग आयतें तिलवातें फ़रमाते रहे और दुआ फ़रमाते रहे कि ऐ अल्लाह मैंने उमर रज़ि० को बेहतर ही जानकर ख़लीफ़ा बनाया है अगर यह

आंइदा चलकर बिगड़ जावे तो खुद ही जानने वाला है। मुस्नी बिन हारसा रज़ि० आए और एक इलाके के इरतादाद की ख़बर सुनाई तो इर्शाद फ़रमाया कि ऐ उमर ! अगर मैं रात में मर जाऊं तो सुबह होने से पहले और दिन को मर जाऊं तो शाम होने से पहले लश्कर को रवाना कर दिया जाएगा और इर्शाद फ़रमाया गया कि अगर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिक़ाल के वक़्त उसामा रज़ि० के लश्कर को रवाना न करता तो मदीना आग की भट्टी बन जाता। जो एक हाल में करने वाले होंगे इनकी तरफ़ का हर वक़्त डर है कि ना–मालूम वह किस वक़्त पतझड़ की सूरत से काम से जाते रहें। हां अगर हर हाल में मेहनत की जाएगी तो दीन वजूद में आएगा और इससे सारे आलम का मुआशरा बदल जाएगा। दुनिया के कारोबार में भी बहुत–सी तब्दीलियां आतीं हैं, बिगड़ती हैं, टूटती हैं, नुक़्सान आता है इसी तरह दीन की मेहनत में भी ऐसी शक्लें आएंगी लेकिन मरकर करते चले गए तो फिर अल्लाह की मदद आ जाएगी। हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के फ़रमान के मुताबिक़ लश्कर रवाना करने का इरादा फ़रमा लिया सबको जमा करके बहुत तर्ग़ीब दी लेकिन कोई नहीं बोला। आख़िर तीन दिन के बाद एक सहाबी ने अपना नाम पेश किया, इन्हीं को अमीर बनाया गया। मिज़ाज तो बद्रियों को अमीर बनाने का था लेकिन ख़फ़गी की वजह से आप रज़ि० ने एक छोटे दर्जे के सहाबी को अमीर बनाया। अबू उबैदा रज़ि० आवाज़ लगा रहे थे कि पुल यहां है लेकिन मुसलमानों पर ख़ौफ़ का ऐसा नक़्शा तारी था कि समुंद्र में गिरकर मर रहे थे। और वजह इसकी यह हुई कि पहले दिन के चांद में जिनको रवाना हो जाना था, वह चौथे दिन रवाना हो सके। अगर हम यह चाहते हैं कि तू यह शर्फ़ मरहम्मत फ़रमा दे कि हम दीन का काम करने

वाले बन जाएं, तो हमें हर हाल में इसकी मेहनत करनी है। जो हाल में कोशीश करने वाले बन जाएंगे तो फिर शैतान इसकी मेहनत करेगा कि इनकी नीयतें ख़राब हो जाएं एक–दूसरे को इक्राम करने वाले न रहें वगै़रह। जिससे अपना अमल ख़राब हो जाए, दूसरों के बारे में मुसलमानों होने के एतबार से अच्छी सोच हो, लिहाज़ा अपने ऊपर तोहमतें लगाकर नुक़्स निकाल रहा हो। नमाज़, ज़िक्र, वगै़रह की कसरत करता रहा और उमूमी गश्त की शिर्कत करता रहा तो अल्लाह तआला कामियाबी की शक्ल मरहम्मत फ़रमा देंगे कुछ मशाइख़ को जब आख़िर में तस्बीह लेते देखा तो पूछा कि हज़रत अब तस्बीह की क्या ज़रूरत है तो फ़रमाया कि इसकी बरकत से ही अल्लाह तआला ने यह मर्तबा दिखाया है (मरहम्त फ़रमाया है) अब इसको कैसे छोड़ा जाए। दुनिया के शोब्हे तो कबर पर, नख़ूत पर चल रहे हैं लेकिन ख़ुदा का काम कबर व नख़ूत और बड़ाई के साथ नहीं चलता, इस वास्ते अपने लिए यह है कि उमूमी काम में हम बराबर हिस्सा लेते रहें। अगर हम ग़रीब इंसानों का इकराम करने वाले बनेंगे तो फिर हर एक का इकराम करना आ जाएगा और इसकी एक तर्तीब है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे कसमपुर्स लोगों में तलाश करो। उमूमी, ख़ासूसी तालीमात का एहतिमाम रखा जाए, ज़िक्र तस्बीहात का एहतिमाम हो, दूसरों को इकराम और अख़्लाक़ के साथ उसूल की तरफ़ मुतवज्जह करते रहें। यह हरकत जिस दर्जे मुल्कों और इलाक़ों में चालू हो गई तो दीन की मेहनत वजूद में आएगी। और जब यह मेहनत आम होगी तो सारे आलम में दीन आएगा, और दीन के ऊपर जो इनाम मिलेंगे वे हासिल होंगे।

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० के मकातिब व मलफ़ूज़ात जिनको मौलाना मुफ़्ती रोशन शाह साहब क़ासमी ने मुरतब्ब किया

1. मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद इलयास साहब
2. मलफ़ूज़ात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद इलयास साहब

बयान न० 4

बा–उसूल कुरबानी तरक़्क़ी की सीढ़ी है

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाहि अलैहि पुरानों के मज्मे में

24, अप्रैल, 1940 ई० दिन इतवार चाश्त के वक़्त

भाइयों और दोस्तों देखो बात यह है यह तब्लीग़ का काम बहुत नाज़ुक है कि कोई हद और हिसाब नहीं। इस काम के करने से आदमी बन भी सकता है। इससे बने तो एसा बने कि ऐसा मिलना मुश्किल हो, इससे बिगड़े तो ऐसा बिगड़े कि ऐसा मिलना मुश्किल। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का क़ौल यह है कि सारी दुनिया की उम्मतें अपने–अपने ज़ालिम को लाकर पेश करें और हम हुज्जाज को पेश करें जो हमारा पलड़ा भारी हो जाएगा। और इनके बाद वालों ने यह कहा कि अगर सारी उम्मतें अपनी अदलों को लाएं और हम उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को बुलाएं तो हमारा पलड़ा भारी हो जाएगा। हुज्जाज का काम यह है कि इस्लाह हो जाए इसक बावजूद इस काम के करने वाले का शुमार सारी उम्मतों में सबसे बड़े ज़ालिमों में है। एक उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० हैं जिनको कहते हैं उम्मतें मिलकर

ऐसा अदल पेश नहीं कर सकतीं। हुज्जाज के सामने यह बात थी कि इख़्तिलाफ़ व इंतिशार को ख़त्म किया जाए वह साफ़–साफ़ कहता था अगर मैं तुमको यों कहूं कि इस दरवाज़े से निकल जाओ और तुम इस पास वाले दरवाज़े से निकलो तो मेरे नज़दीक तुम्हारा खून बहाना जायज़ है मानते क्यों नहीं। बावजूद इसके कि जिहाद का शोब्हा इनके ज़माने में क़ायम था। दुनिया में सबसे ज़्यादा ज़ुल्म शुमार हुआ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने तमाम अरब मुल्कों और इससे भी आगे बढ़कर काम किया ऐसी इस्लाह की कि इनको ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन में शुमार करने लगे। यों कहते हैं कि उस ज़माने में पहले नम्बर आदमी उमर हैं। एक ने इस्लाह का काम, दूसरों के सारे नफ़ों को कुरबान किया। एक ने अपने सारे नफ़ों को कुरबान किया। काम करने वाला हमेशा बेहतर नहीं बना करता। अगर काम करने वाला बेहतरीन बन गया तो उम्मत परेशानी से निकल जाएगी और अगर हमारी इस्लाह न हुई तो उम्मत हमारी वजह से परेशान हो जाएगी। हज़रत मौलाना इलयास रह० का क़ौल है यही काम ख़ैरों का भी और फ़ित्नों का भी लाने वाला है इस काम के जो दोज़ख़ी होंगे काम करने वालों के एतबार से होंगे यह काम अपनी इस्लाह का है। इस्लाह का मफ़हूम जितना बुलन्द होगा, इतना तो हम दिल से यह समझेंगे कि हमारी इस्लाह के लिए यह ज़रूरत है और जितना इस्लाह का मफ़हूम छोटा होगा इतनी जल्द हम फ़ारिग़ हो जाएंगे। अगर इस्लाह का मफ़हूम यह है कि अत्तिहियात आ जाए, नमाज़ आ जाए, जमाअत ले जाने आ जाए वग़ैरह अगर यह मफ़हूम है तो फिर जल्दी से समझकर इस्लाह हमारी हो गई, दूसरे की फ़िक्र में लग जाएंगे।

कुरबानी का मफ़हूम यह नहीं है कि उस वक़्त कोई न

कोई आदमी आकर इस काम को कर दे बल्कि कुरबानी का मफ़हूम यह है कि उस वक़्त में जिस आदमी के आने से यहां काम उसूल से हो वह आदमी आकर काम करे। एक तबक़ा ऐसा होगा वह तबक़ा अगर कुरबानी दे दे तो यह सब उसूल के मुताबिक़ होकर उम्मत में सुलाह हो जाए। और अगर न दे तो सुलाह न आए। जो कुछ हम कर रहे हैं इसके वास्ते आदमी मिल जाए इन दोनों में फ़र्क़ है। हर काम करने वाले को यह बताने के लिए वाक़िआत सहाबा हैं कि हम सुलह में नाक़िस हैं। ये अज़ाइम पैदा करो कि हम मेहनत करें, अल्लाह हमारी इस्लाह कर दे, इस काम को जब उठाया गया है तो उठाने वालों ने अपने उसूल सोच–सोचकर नहीं दिए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक सीरत और मुबारक ज़िंदगी इस काम के उसूल हैं। ऐसी हिक्मत से आए कि वह कुबूल कर ली जाए ठुकराई नहीं जाए यह भी उसूल में है। हज़रत उमर रज़ि० के पास बात पहुंची कि इराक़ और इरान ने मिलकर बग़ावत कर दी, आप रज़ि० ने तैयारी का हुक्म फ़रमाया, सब तैयार हो गए, किसी को नहीं पता कहां जा रहे हैं। यह उसूल मिलेगा, आप रज़ि० ने तर्बीयत फ़रमाई थी, एक जमाअत रवाना फ़रमाई थी, एक जमाअत रवाना फ़रमाई उसको पर्चा दिया कि तीन दिन तक चलो और फिर पर्चा खोलो, फिर जैसा लिखा हो वैसा करो। अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ियल्लाहु अन्हु ने पर्चा उठाया आंखों से लगाया और चूमा इसमें लिखा हुआ था कि कुरैश के फ़लां क़बीले की हालत मालूम करो अगर कोई न जाए तुम्हारे साथ तो तुम ख़ुद ही चले जाओ। मरने के लिए तैयार होकर सब साथ हो गए आठ नौ आदमी थे। कुछ आदमी मिले इनसे लड़ाई हो गई। दो तीन अलग हो गए इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया वापस आए डांट पड़ी अल्लाह ने आयत नाज़िल फ़रमाकर तसल्ली

दी, हम बिल्कुल काम करने वाले नहीं बने, जब काम करने को कहा जाए, जिस वक़्त आवाज़ लगे, उस वक़्त जितनी भी तुम्हारी वुस्अत हो इसके मुताबिक़ लेकर चल दो। मकान बेच कर चल दो कुरबानी उसूल के साथ दो। हज़रत उमर रज़ि० की आवाज़ पर सब चल दिए इतना अरबाबे हल व अकदा का एहतराम भी उसूल में दाख़िल है। किसी की यों हिम्मत नहीं हुई, यों कह दे कि साहब कहां ले जा रहे हो यह तो बता दो। बहुत चलने के बाद हज़रत उस्मान रज़ि० ने अमीरूल मोमिनीन से चुपके से पूछा कहां जा रहे हो ? सबको ठहरा लिया फिर जो निज़ाम क़ायम किया था उससे तग़य्यूर किया एक आदमी मदीना मुनव्वरा भेजा। हज़रत अली रज़ि० को वहां से बुलाकर लाओ, मश्विरा करेंगे दो आदमी मेमना भेजे और दो आदमी यसरा भेजे दो मुक़दम्मा पर भेजकर मश्विरा वालों को बुलाया हमारा काम का वक़्त और मश्विरे लेकर बैठ गए काम का वक़्त निकल गया वहां काम को लेकर चल दिए और फिर मश्विरे कर रहे हैं। सबकी राय हज़रत उमर रज़ि० को साथ लेकर चलने की थी, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मेरी बुज़दिली क़रार दे लो, उमर रज़ि० को लेकर न जाओ लोगों को ढहारस रहेगी। हज़रत उमर रज़ि० ने खड़े होकर कहा, सब अमीर के ताबेअ है और अमीर मश्विरों वालों के ताबेअ, नौमान इब्ने मक़रन को रवाना किया इतना ज़बरदस्त मरहला और ज़ाहिर के एतबार से हज़रत उमर रज़ि० की ज़रूरत थी।

मानने वाले थे कि मश्विरा तै हो गया। यह कहना मुनासिब नहीं कि मेरी राय यह थीं हज़रत उमर रज़ि० की राय हज़रत ख़ालिद रज़ि० को माज़ूल से आगे क़त्ल करने की थी। क़त्ल की राय नहीं, फिर इनको अमीर न रखो, इनकी तलवार में तेज़ी है, ख़ून ज़्यादा करते हैं हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ नहीं माने,

शुरू में दो–चार बाद कहने के बाद हज़रत उमर रज़ि० ने इतना किया कि हज़रत ख़ालिद रज़ि० को डांट–डपट करने के लिए मैदान से बुलाया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० अपने हुजरे में और हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत ख़ालिद रज़ि० को ख़ूब डाट–डपट की। पचासों तेज़ बातों में से एक का भी जवाब हज़रत ख़ालिद ने न दिया। अकाबिर सहाबा हज़रत ख़ालिद के साथ थे अन्दर गए हज़रत ख़ालिद की सफ़ाइयां सहाबा ने दीं, दो एक बातें तंक़िद की थीं। मुसलमान तो दफ़न भी न हुए इन्होंने ब्याह रचा लिया। बाहर निकलकर हज़रत ख़ालिद बरस रहे थे उमर रज़ि० चुप पहले ख़ालिद रज़ि० के ज़हन में यह था कि अमीर के जेहन में यह बात थी और फिर उमर रज़ि० यह समझ रहे थे कि अमीर राज़ी हो गया। पहले वह सुनने वाले थे, या बोलने वाले थे, अब वह बोलने वाले थे यह सुनने वाले थे। यह उसूल नहीं आ सके। पूर काम करने वालों में किसी का ज़हन यह नहीं था कि मैं काम करने वाला हूं, अगर ना–मानी तो रोज़ी जाएगी। यह बात बिल्कुल न थी यह मसअ्ला यहां तक पहुंचा हुआ था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० को आम आदमी ने झल्लाकर जवाब दिया मुग़ीरह बिन शौबा ने छुटते ही यह पूछा कि इजाज़त दीजिए मैं इसका गला काट दूं। आपने फ़रमा दिया। तंहाई मे बुलाकर पूछा कि बिल्कुल मार देता तौबा तौबा यह हुज़ूर का मक़ाम है। हज़रत अबूबक्र रज़ि० को गाली देने वाला नहीं मारा जा सकता तो और किसी को क्यों मारा जाएगा। फिर सुनते हैं। काम करने वाले हैं। नौमान लेकर चले। अख़रोट व ख़रोट के क़िस्से इन सहाबी के हैं। हज़रत मुग़ीरह बिन शौबा रज़ि० जो अरब के चार अक़्लों में से एक हैं। अगर क़िला एक हज़ार दरवाज़ों का है और हर दरवाज़ा ऐसा हो कि बग़ैर नई तर्कीब के न निकला जा सकता हो तो मुग़ीरह सब में

से निकल जाएंगे ऐसे आदमी बिल्कुल बच्चे बने हुए हैं। वाक़िआ ऐसा अहम है कि हज़रत उमर रज़ि० तशरीफ़ ला रहे हैं और नाइब ऐसा बना कि ज़मीन व आसमान के निज़ाम में तग़य्यूर को अपनी आंख से देख रहा हूं। तदबीर के अलावा कोई और बात है जिसे नौमान जानते थे। वह वक़्त आ गया तो यों इर्शाद फ़रमाया कि मैं तीन तक्बीरें कहूंगा, पहली पर वुज़ू कर लेना, दूसरी पर तैयार हो जाना और तीसरी पर हमला कर देना। मैं क़सम देता हूं, दुआ मांग रहा हूं, आमीन कहना ऐ अल्लाह ! मुसलमानों को फ़त्ह अता फ़रमा नौमान की शहादत के साथ, जो काम करने में अपने आपको कुरबान करेगा और उसूल इख़्तियार करेगा। तुफ़रक़ा ख़त्म होगा और

पर जो अल्लाह की मदद में मदद है वह आएंगी और इस दुनिया में हिदायत आएगी। यह कुरबानी की बेरूनी हालत है जिस पर खुदा हमको पहुंचाए। कुरबानी की हालत यह है कि एक तबक़े को ऐसा बनना पड़ेगा कि इस काम की जितनी हालतें और सतहें हैं वह हर एक में हों। एक कुरबानी से तो कुरबानी का चबूतरा तैयार होगा। तीन चिल्ले इसने दे दिए और उसने दे दिए अब इसका मौक़ा नहीं।

एक कुरबानी की क्या हालत है, खुदा ने ज़मीन व आसमान का निज़ाम तै किया और वही इसका निज़ाम चलाने वाले हैं। नीचे के जितने निज़ाम है वह ख़ुदा के निज़ाम के असली निज़ाम का साया हैं खुदा के असली निज़ाम से इन नीचे वालों में ताअत आती है। अगर कोई तबक़ा इस पर आ जाए कि उम्मत की इस्लाह हो जाए तो वह इस जगह पहुंच जाए कुरबानी की सीढ़ी पर चढ़ते—चढ़ते कि अल्लाह के हां इसकी सुनवाई हो जाए। अपनी इस्लाह के वास्ते दो बातें हैं कुरबानी के एतबार से भी पहुंचो और उसूलों के एतबार से भी पहुंचो।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इनके साथी की वह कुरबानी जो इन की सलाह को कामिल क़रार दे रही है। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इनके साथियों की वे कुरबानी जो इनकी सलाह का कामिल क़रार दे रही है। इसलिए उम्मत को वजूद हुआ है। अब तुम उठोगे तो कुरबानी में कमाल इनकी लाइन से हासिल होंगे एक तो कुरबानी में तसलसुल हो और एक उसूल क़ायम हों जिनसे सुलाह हो जाए। कुरबानी बग़ैर उसूल के भी हो जाएगी ख़ुदा के हां जो क़ुबूल होगी वह सुलाह वाली होगी। ख़ुदा तआला के हां ऐसा मज्मआ की दुआ कुबूल होगी। सारी मश्रिक़ व मग़्रिब में फैली हुई उम्मत की सुलाह सैकड़ों से हो जाएगी। काम करने वाले तो लाखों होंगे, करते–करते वहां पहुंच जाएं कि ख़ुदा के हां इनकी सुनी जाए। सुलह हुदैबिया को बड़ी फ़त्ह क्यों कहा। वह उसूल सहाबा किराम से हुदैबिया में इस्तेमाल कराएगा, जिन पर सहाबा रज़ि० को अपने जज़्बात की कुरबानी देनी पड़ी। 1400 सहाबा ने कुरबानी दी फ़त्हे मक्का में ख़ून न बहा इसकी वजह सहाबा अबूबक्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि जितनी बड़ी फ़त्हे सुलहे हुदैबिया है इतनी बड़ी फ़त्हे इस्लाम में कहीं नहीं है। हम मरकर फ़त्हे मक्का करना चाहते थे वह मस्अला यह चल रहा था, आज तुम इनकी मानों और सारी उम्र को वे तुम्हारी मानेंगे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि सुहैल जो रसूलुल्लाह लिखने नहीं देता था, तो अब वह ऐसे हैं कि जब आप नाक साफ़ करते तो मुंह पर मलते हैं थूक को मुंह पर मलते हैं यह बड़ी फ़त्ह है क़त्ल कर देना बड़ी फ़त्ह नहीं है हर शख़्स अपने सामने यह रखे कि मैं कुरबानी उसूल के साथ देता हुआ छत पर पहुंच जाऊं। अपनी ख़ामियां तलाश करो हम अपने को काम का पाएंगे, जब तक ख़ामियां सामने रहेंगी उस वक़्त फ़साद

वाली बात पैदा न होगी अजब पैदा न होगा अपनी राय पर इसरार पैदा न होगा।

इस पूरी उम्मत पर कुरबानी देनी है अपने लिए ये तै करो कि ख़ुदा मुझे कुरबानी के कमाल पर पहुंचाए। जिस कुरबानी पर उसूल के साथ इंसान की दुआएं कुबूल होती हैं, यह काम इस एतबार पर नहीं है ज़्यादा काम करने वाले बन जाएंगे सुलाह हो जाएगी बल्कि इसलिए डाल रहे है कि कमाल को पहुंच जाएं। जिनकी दर्द भरी कुबूलियत वाली दुआएं ख़ुदा के यहां सुलह के फ़ैसले कराएंगी। फिर अल्लाह शोब्हे वालों में यह बात पैदा करेंगे कि यह सही है, यह करो सीढ़ी मकान के एक कोने में पड़ी रहती ज़रूरत हुई इस्तेमाल कर ली हर वक़्त सामने नहीं रहती तुम छिपे रहोगे, जिस सुलह को खो बैठे यह वापस आ सकती है।

हमारा यह दावत का काम है हमें यह काम करना या ज़हन बनाने का काम है। चीज़ों से निकलये, कुदरत पर जाये और ख़ुदा से कामियाबियां लेने के जो उसूल बताए हैं, इधर हमारा ख़र्च जाए, इसकी दावत है अपने आपको इन अमलों पर डालना है। जिन पर पढ़ने से हमारा यह ज़हन बन जाए, जिस ज़रिए पर दूसरों को डालना चाहते हैं। दावत भी इसकी दी जाएगी, तालीम, ज़िक्र, दुआएं की जाएंगी। और रो-रोकर मांगा जाएगा कि या-अल्लाह पहले मेरे दिल में उतारा फिर यह बात तुम्हारे दिल में आएगी, सच से, इंसाफ़ से यह होगा। आज हमारा रूख़ आदमियों की तरफ़ जाता है, ख़ुदा की तरफ़ और आमाल की तरफ़ नहीं जाता। हज़रत उस्मान रज़ि० के पास एक आदमी आया और कहा कि मांगकर दो रक्अत नमाज़ पढ़कर के आया हूं, अब तुमसे कहता हूं, अगर तुमने कर दिया तो मैं समझूंगा अल्लाह ने इरादा फ़रमा लिया। उसूल में ख़राबियां

आ सकती हैं। किसी आदमी के बारे में हम उसूल पर न समझें इसकी यह माफ़ी है कि हम आदमी से होने वाला समझ रहे हैं अगर हम ख़ुदा से समझेंगे तो वहां तक आदमी की बात मांगेगे जहां तक उसूल के ख़िलाफ़ न पढ़ जाए। ज़हन का बनाना है, ज़हन हमारे बनाने से न बनेगा। ज़हन बनाने वाले ख़ुदा है, हमारा ज़हन बन जाए कि ख़ुदा के रास्त में फिरेंगे सेहत मिलेगी, दीन की मेहनत करने से गिज़ा मिलेगी। आमाल पर निकालोगे तो कुरआन पाक हदीस में बहुत मिलेगा। दावत तो इसकी है उम्मत का ज़हेन अमल पर बन जाए। मौकूफ़ आप पर है ज़हन दावत देने वालों का बन जाए तो उम्मत का भी बन जाएगा और अगर दावत देने वालों का ज़ेहन नहीं बना तो उम्मत का भी नहीं बनेगा। ज़हन कुरबानी से हमारा बनेगा अगर कुरबानी इख़्लास के साथ 24 घंटों के उसूलों के साथ हो रही है तो फिर तुम्हारा ज़हन बनने के बाद तुम्हारी बात से इनका ज़हन बनेगा और ज़ेहन बनने से पहले तुम्हारी बात उन तक पहुंच जाएगी। पहली आयत से लेकर आख़िरी आयत तक और हदीस के पहले पेज से लेकर आख़िरी पेज तक हमारा ज़हन हर अमल का बन जाए अगर ज़हन बनेगा तो हम मुसलमानों की बुराइयों को छिपा भी लेंगे और استخفاف से भी बचेंगे सारी दुनिया से मुताल्लिक़ मस्अला नहीं है ये चंद सौ-से ताल्लुक़ रखता है। इस वास्ते आसानी है एक काम है इसमें उम्मत की शान पैदा हो तुम उम्मत के काम करने वाले बन जाओ उम्मत ऐसे तबक़े का नाम है जो सारी ज़ुबानों के सारे मुल्कों के सारी क़ौमो के लोग हैं। जो कुछ बुनियादों के कायल हैं, इन सबका ख़ुदा की तरफ़ से ज़ाब्ता है दो ज़ाब्ते भी नहीं। अरब व अजम तक दो ज़ाब्ते नहीं, चा जाएगा कि तुम सैकड़ों बना लो। उम्मत के मस्अले में यह समझ लो कि सब पर एक

फ़ैसला होगा ख़ुदा का और वह सब पर चालू होगा। जब इसाइयों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ने मुबाहला का चैलंज दिया और वह दूसरे दिन मबाहला के लिए तैयार होकर आए। और आप सल्ल० अपने ख़ानदान वालों को साथ लेकर आए और बहुत ज़्यादा गुस्से में थे नजरान के इसाईयों के सरदार ने कहा इनके चेहरे सच्चों के मालूम होते हैं, सुलह कर लो, बाद में आपने फ़रमाया कि अगर ये मेरे साथ मुबाहला कर लेते तो आज पूरी ज़मीन के जितने इसाई हैं वह सारे मुसनख़ हो जाते उम्मत ज़वाबित और हैं, और उम्मती ज़वाबित टूटते हैं। अब इस एतबार से यों सोचो कि काम करना है इस तरह उम्मत के एतबार से तुम पर कुरबानी आकर पड़ी है इस वक़्त मैं अपने सारे मस्अलों को छोड़कर लगाना कुरबानी की सैकड़ों सीढ़ियों में एक सीढ़ी यह बनती है इस उम्मत के काम के एतबार से अज़ाइम और नीयतों के एतबार से सारी दुनिया में पहुंचकर काम करना और जहां तक वुस्अत हो, वहां तक करना वुस्अत जान और तुम्हारे करने तक है, पैसा नहीं। दुनिया में काम, मुल्क में काम, इलाक़े में काम, शहर में काम, मुहल्ले में काम, यह हमारे काम का दायरा है इसकी एक सूरत अगर यह निकाल लो कि वहां लग जाएं, कुछ वहां लग जाएं, इज्तिमआ पैदा न होगा, न जज़्बात का न ज़हनों का इज्तिमआ। यह हो सकता है कि कुछ–कुछ इनमें कुछ आ जाएं लेकिन असल वे होंगे जो हर जगह काम करने वाले होंगे जिनको मैं सैकड़ों के एतबार से कह रहा हूं कुछ तबक़े ऐसे होंगे जो कहीं–कहीं होंगे वह साथ लगने वाले हैं, तुम बाहर निकले, और ज़हन बनाने का काम किया, दावत दी, अपने आपको मुहताज समझकर काम किया दावत, तालीम, ज़िक्र व नमाज़ों के ज़रिए अपना ज़हन बनाना और रोकर यह दुआ मांगना कि ऐ अल्लाह ! जिन

अमलों में तूने यह बताया वह हमारे ज़हन में बैठ जाए अब अगर बैठ जाओ कि हम अमेरिका, अफ्रिका में फिर आए, ऐसा–ऐसा काम हुआ अब हम तो चार माह लगाकर आए हैं अब तुम जाकर काम करो कुछ आदमी मुल्क में फिर रहे हैं इनको शहर में फुर्सत नहीं, कुछ शहर में काम कर रहे है इनको इससे फुर्सत नहीं, कुछ अपने माहौल में काम कर रहे हैं, हम तो अपना मस्अला सुलझा रहे हैं। ख़ुदा तुमको तौफ़ीक़ दें तुम अमेरिका की एक जमाअत और बना दो, इसी तरह आने के बाद में भी ख़ारिज हो गए। जलसे में आगे नाम लिखने खड़े हो गए। इस तरह जितने–जितने बनते रहेंगे तो वे एक चबूतरा बनता रहेगा, यानी कुरबानी एक ही सतह की है जो फैल रही है हालांकि ज़मीन पर फैल रही है कुरबानी पहुंचनी वहां थी जहां से फ़ैसले आए, मुल्क के काम में तो हो गया इन–हतात, जिनको उसूल आते थे, और दावत देनी आती थी और ज़ियाफ़तों से बचना आता था, वह सारी नक़ल व हरकत के नक़्शों से निकल गए तो काम नहज से हट गया। जो चीज़ ऊपर चलने के वास्ते है वह ऊपर नहीं जाएगी तो ख़राबी पैदा हो जाएगी। हवाई जहाज़ को ऊपर उड़ाने की बजाए ज़मीन पर चला दिया।

पहला मस्अला यह है कि तुम बाहर हो आए, बाहर का काम ऐसा नाज़ुक है कि नए आदमियों को तुम बाहर भेजते नहीं, जिनको तुमने अलग–अलग हालतों के एतबार से काम सिखाया वह आदमी बाहर गए, यह आदमी हैं जो कुरबानी के कमाल पर पहुंच सकते हैं, इनकी हालत यह होगी, पहली बार यह गए अब वापस आकर इनको मक़ाम का काम करना है। जहां–जहां तुम गए हो वहां से लोग आएंगे, एक वक़्त तलब का आया करता है और एक वक़्त कुरबानी का होता है। तलब के

बाद वह लोग खुद आएंगे, तुमसे सीखने के लिए दूसरा मस्अला बाहर के इलाक़े में जितना फिरोगे, एक रूख़ की ज़िंदगी आएगी। कोई आदमी मुल्क में तुम्हारे साथ ज़िंदगी गुज़ारता है वह तुम्हारे साथ मक़ाम का दीन का नक़्शा नहीं सीखता वह तुमसे मामलात, लेन-देन, घर का, बीवी-बच्चों का नक़्शा तुमसे नहीं सीखता। किसी इलाक़े में जमआतों के फिरने से पूरे इलाक़े में सारा दीन नहीं आएगा। तुम्हारे इलाक़े में पूरे दीन की ज़िंदगी होनी चाहिए। तांगा वाले की बात से ज़हन बना, एक बहुत बड़ा आदमी का, बेशक हमें इस इलाक़े में दीन सीखने के लिए आना चाहिए। अगर तुम्हारे इलाक़े में न हो तो वह चले जाएंगे और पूरा दीन सीखकर नहीं जाएंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दीन इस तरह सीखाया था, नक़ल व हरकत वाला दीन नक़ल व हरकत से सीखाया और एक साल ऐसा कि अरब की जमआतें आईं सुन्नतुल वफूद, आज जो दीन चार साल में नहीं आता इस ज़माने में वह दीन बीस दिन में आ जाता था। अगर किताबों से दीन ज़िंदा करो तो दस साल में ज़िंदा होगा। अगर एक मुआशरा बनाकर वहां लाकर डाल दो तो बीस-पच्चीस दिन में दीन सीख जाएगा।

तमाम मुल्कों में दीन के ज़िंदगी के लिए इनको रूजूअ करना पड़ेगा, इनकी तरफ़ जिन्होंने समझाया था कि दीन के बग़ैर कामियाब नहीं होंगे। एक काम सीखने वाला तबक़ा है वे बहुत कम मिलेगा, दीन सीखने वाला तबक़ा बहुत आ सकता है। हमारे साथ चौबीस घंटे की ज़िंदगी में रहकर दीन सीखें। बेरूनी नक़ल व हरकत से दीन का एक रूख़ आता है, निकलने के ज़माने का जो दीन है वह आता है। तफ़सीली मुआशरा बिल्कुल नहीं आता है। जो आदमी तुममें का बाहर जाकर काम करने वाला है वह यह तै करे कि मुझे मेहनत करके अपने मुल्क

में मुआशरा बनाना है। जिससे यहां के लोग आकर दीन सीखें लिहाज़ा अब मुल्क में, इलाक़े में, शहर में, मुहल्ले में, दावत देने वाले बनो। अब आप अपने ज़िम्मे इन सबको सोचो तो क्या बनता है। हर आदमी की कुरबानी का कमाल अभी तो हम यह सोचते कि यह फ़ाअल हो जाए कोई करे कोई करता है इतनी कुरबानी नहीं बनती, वह तो कुरबानी ऐसी बनती कि मुंकसीम होगी। जिस जगह कुरबानी देने में पहले कुरबानी देने वाले खुद मौजूद होंगे वह तरक्क़ी बनेगी। एक आदमी बाहर फिरकर आया है और मसाइल हालात बिगड़े हुए हैं। अब इसके ज़िम्मे मुल्क का काम आएगा। लोग तुम्हारी बात को ज़्यादा असर से कुबूल करेंगे। मक़ाम के काम को जिस तरह तुम छोड़कर गए वहां से आकर इसी हालत में लग जाना है। जमाअतें बना–बनाकर इलाक़ों में भी रवाना करनी हैं मुल्क में भी फिरना है। इलाक़े में ऐसी मेहनत बढ़ाना कि दीन का उमूमी रूख़ पैदा हो और बाहर जाने वाले दावत के लिए तैयार करना यक़ीन जानो यह कुरबानी इससे बड़ी होगी, मस्अला ज़्यादा उलझने के बावजूद काम कर रहा है। वहां जाकर हर चीज़ मुंतशीर है तो इनको पहले नहज का बक़ा, और मुल्क में काम का उठना और बाहर जाने के नअदिया यह सब इस बात को चाहता है कि यह वापस आकर इसी हालत से काम करें। यह बड़ी कुरबानी होगी, दूसरी सीढ़ी हो गई। अब तीसरी सीढ़ी क्या होगी दोबारा मुल्क में जाना, नए लोगों को भेज दो अगली बार जाएगा तो एज़ाज़ व इकराम होगा, अब यह मुजाहेदे में बाक़ी रहे, इनके रूजूअ को काम के अन्दर लगाएं, वह चीज़ और सतह बुलन्द पर आएगी, दोबारा जाने में काम ज़्यादा होगा, ज़्यादा वक़्त लगाना चाहिए, अब के जाने में कुरबानी और बढ़ानी पड़ेगी, अब के असर ज़्यादा बढ़ेगा, वापस आए हैं। फ़िक्र व दामनगीर हुआ कि बाहर से सैकड़ों

आने लगे तो मौजूदा आदमी संभाल नहीं सकते। अब मुल्क में खूब काम हो, जो बार–बार इस्तेमाल होंगे, दुनिया मस्अलों में मुल्क के इलाक़ों के शहरों के मुहल्ले के मस्अले में बार–बार इस्तेमाल होंगे। काम करने वाले बनो तो वहां के एतबार से यहां आदमी तैयार हो सकते हैं। एक तबक़ा ऐसा ज़रूर हो जाएगा। जिसकी कुरबानी ऊपर तक पहुंच जाए। ये हैं वे जिनके बारे में हदीसों में आया है कि वे अपनी वह अपनी हाजातों को सीने में लिए हुए चले गए। ये वहां का सलातीन का दर्जा रखेंगे और हिसाब–किताब को दफ़्तर खोलने से पहले कह दिया जाएगा कि जन्नत में जाओ। दावतें हैं, तालीमें हैं, यह न समझो कि जो हो रही बस यही है तालीम, तालीम से पता चल जाएगा कि सीखने का मद्दा पैदा हुआ या नहीं। एक तो यह कि जो उर्दू पढ़ता हुआ हो वह तालीम करा दे और एक यह कि तालीम कराने वाला सीखने का ज़हेन बना दे कि भाई नमाज़ जब बनेगी जब यह यह हो। फज़ाइल कुरआन का असर क्या है कि जो कुरआन पढ़ते हुए हैं वह तिलावत करने वाले बन जाएं और जो न पढ़ते हुए हों तो सीखने वाले बन जाएं। फ़ज़ाइल नमाज़, नमाज़ पर, फ़ज़ाइल कुरआन, कुरआन पर डालने लगे तो अब तुम तालीम आगे बढ़ाओगे। मिसाल के तौर पर पूरा मुहल्ला आने लगा पूरे शहर में तालीमें चल गई। तब्लीग़ भी चल गई तीन चिल्ले, तीन दिन, गश्त सब चल गए और इनके ज़हेन में आ गया। अब अल्लाह तुमको तौफ़ीक़ दें मुआशरत के फ़ज़ाइल लिखवाओ और फिर यों कहो कि यह सवाब जब है जब तुम मसाइल सीखो। ये चीज़ अभी नहीं, किताबों के सुनने वालों में इन चीज़ों को करना शुरू हो जाए जिनके वास्ते तुम किताबें संवार रहे हो। ये जिसको चाहे किताब देकर बिठा दो। इससे यह बात पैदा न होगी।

मश्क़ का अगर ख़्याल भी आये तो नमाज़ में खड़ होकर यही आए कि पहले क्या सीखना है सीखने पड़ेंगे यह मसाइल और यह किताब पढ़ने वालों की ख़ूबी समझदारी या ना-समझदारी होगी। ज़िक्र के फ़ज़ाइल सुनाए हैं। तो तस्बीहात पर डालना है, हर चीज़ इसके अह्ल से सीखी जाए तो काम चलेगा। सुनाने में दो चार बात ऐसी कह दें कि ज़हन बन गया कि हमें करनी चाहिए। तक़रीर नहीं करनी वरना लोग उकता जाएंगे।

गश्तों में भी बंधे हुए, तीन दिन में बंधे हुए मुल्क के अन्दर नक़ल व हरकत के एतबार से भी बंधे हुए हैं तो फिर वक़्त आएगा कि शोब्हों के एतबार से फ़ज़ाइल ले आओ। अल्लाह तौफ़ीक़ दे कि हम मस्जिदों को भर दें। बे-नमाज़ी ख़ाल-ख़ाल हो या न हो ज़हन बना दो और इससे कह दो कि अह्ल से सीखे। थोड़े से दिनों में दीन ज़िंदा हो जाएगा। बाहर के मुल्कों में जिनको लाओ इनकी दावत से ज़हेन बनाकर लाओ सीखने का और तालीम से नक़्शे क़ायम होंगे।

अब पुरानों पर तुमको कितना रहम आएगा और यह सोचो कि अल्लाह को कितना रहम आएगा। अगर तुम तक़्सीमकार पर आओगे तो कुरबानी तुम्हारी जुज़्वी होगी। और अगर कल्या में आओगे तो कुरबानी तुम्हारी कली होगी। सारी दुनिया की नमाज़ जिस तरह एक है, सारी दुनिया में मेहनत का नक़्शा एक कहां रहा। इसी तरह सारी दुनिया में चीज़ें उठती हैं और आगे जाकर मुन्तशिर हो जाती हैं।

यह तो कुरबानी हुई और अल्लाह के हां कुबूल कैसे हो। उसूल क्या है, हर तरह की परेशानियों के साथ इन तमाम चीज़ों में अपने आपको लगाए रखे जैसे नमाज़ों में उलट-पलट कर कभी किधर कभी किधर।

जो एक तबक़ा तुम्हारा इन सबमें आएगा, वह ज़रिया

बनेगा इन सबकी कुरबानियों के दुरूस्त होने का और कुरबानियों के ठिकाने लगाने का। यहां के लोग उठेंगे तुम्हारी आवाज़ पर और तुम आते–जाते रहे तो इनकी जान व माल सही लग जाएगी और अगर ऐसा न हुआ तो नक़्शे बड़े–बड़े हो जाएंगे और इस्लाम सारी दुनिया में नहीं होगा। काम में हैसियत क्या है, मस्अला से माल से हटाकर जान पर लाना है, वह कुरबानी दे सके मज़हब के लिए, तुम दे जाओ वह देंगे तो उसूल पर नहीं होगी और उसूल पर नहीं होगी तो (नतीजा खै़ज़ न होगी) मैं तबादले का क़ायल हों लेकिन सूफ़ी संद का क़ायल हों। मुताबादिल वफ़ूद में जो कड़ियां होंगी जो मिलेंगी, इनके वजूद के लिए इन कुरबानियों में तसलसुल होगा और इनकी कुरबानियां इब्राहीम अलैहिस्सलाम, सहाबा किराम रज़ि० और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरह बनेंगी। अगर ज़र्रा के बराबर मुशबहत होगी तो अल्लाह तआला सूरज के बराबर काम करके दिखाएंगे। जब आदमी काम करने पर आता है, जो शैतान अजब लाता है, बुराई लाता है और बना–बनाया काम बिगाड़ता है। इकरामे मुस्लिम का नम्बर हर एक का अपनी ज़ात के वास्ते नहीं है बल्कि तमाम मुसलमानों के वास्ते है। दूसरे के इकराम की मश्क़ हर हाल में निकाल सकते हैं। दूसरा बन गया इकराम वाला चाहे वह नए से नया आए अपने को हवाले करके अनपनी शख़ ख़राबी की निकालकर अपने लिए तज़ललुल की सूरत इख़्तिार कर लो। वह शाख़ इख़्तियार करनी है अपने लिए कि हम अपने को बावजूद इन सारे कामों के हक़ीर कर दे। हज़ारों काम के लिए लेकिन वह न किया तो काम ही कहा क्या उसूल जो मैं कह रहा हूं वह है कि अजब पैदा न हो, रिया, शोहरत, हसद, दूसरे की तहकीर, इस्तिफ़ाफ़ न हो, एज़ाज़ो व इक़राम में फ़र्क़ पैदा न हो, दावा न हो और अमल हो। हज़रत इमाम

आज़म जा रहे थे, किसी ने कहा कि यह सारी रात सोते नहीं हैं। इस रोज़े से अह्द किया और चालीस साल तक रात को न सोए।

हर काम की कुछ ख़सूसीयात हुआ करती हैं, जब तक वह ख़सूसीयात होती हैं, वह काम ज़ोर से चलेगा। और जब वह ख़सूसीयात ख़त्म हो जाएगी तो काम मलया मेट हो जाएगा अपना दूसरों पर लगा दो और दूसरों का कुछ न लगने दो। आप सल्ल० ने फ़रमाया मेरे दो वज़ीर हैं फ़रिश्तों में दो इंसानों में, इस वाकिआ से यह निकला कि वज़ीर ऐसे हैं कि मश्विरा कर लो काम का। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, जिब्रील तीन दिन से रोटी नहीं खाई एक खड़का हुआ क़ियामत तो नहीं आएगी।

मेरे पास दोनों तरह की नुबूवतें हैं, अब मश्विरा का मस्अला आ गया, बोलने की हिम्मत न पढ़ी, ऐसे देखे जैसे मश्विरा मांगते हों। इन्होंने हाथ नीचे कर दिया, नबियन अब्दन बनता हूं, दूसरे से नहीं लेना अपनों से भी अपना हाल न कहना अपनों से भी न कहा खानों में सवारी में जाए क़ियाम में एहतियात करनी पड़ेगी। बेहतर यह है कि हम न ले रहे हों और चाह रहे हो। अपनी ख़ूबी में ख़राबी निकालना बहुत आसान है कि तू तो इख़्लास से नहीं कर रहा। इख़्लास का मुहर हर एक की अपनी ज़ात है दूसरे के अन्दर वजूद ख़ैर निकालना यह है इकरामे मुस्लिम अपने मक़ाम के काम को बिल्कुल पैसे पर न उठाओ कोई दे तो शर्त के साथ लो वह काम में लगने वाला हो ऐसा कि पैसा देने से काम की सतह में फ़र्क़ न पड़ जाए, इसका पैसा इकराम के साथ वापस किया जाए। मुझे इस तरह लेना नहीं आता कि मैं इसकी जान को भी ख़ुदा के रास्ते में लगाऊं।

लीजिए तो वह काम में बढ़े और एहसान मानने मालियात के मस्अले आएंगे, इसमें यह आएगा हम जमाअत वालों से यह कह दें अपना पकाकर खा लो यह मस्अला आसान है, मुआशरत भी आएगी। मुआशरत में दो बातें आएंगी। जब हम अपने आपको ज़्यादा काम करते हुए पाएं तो यों बात पैदा हो कि हमारा इकराम करें, नए आने वालों को पूरा इकराम सबके ज़िम्मे ज़रूरी है इसके अन्दर बहुत कमी देख रहे हैं। बड़े लतीफ़ उसूल हैं। यह जहन बहुत मुसीबत का ज़हन है कि हम काम करें तो मुस्तहीक़ हम हैं। सारी बातों में दूसरे बड़ों को नए आने वालों को बढ़ाना है काम करने वालों के काम करने की कुबूलियत की अलामत में से है कि जो नए आ गए इनका इकराम करे। जो कुछ ख़ुदा तुम्हारे पास दे, इसके एतबार से आने वालों का पहले इकराम कर लो अब आपस का इकराम है खाने का इकराम है, पीने का इकराम आपस में कर लें। अगर ये ज़हन हमारा बन गया कि हमने काम किया है तो तमाम चीज़ों में कपड़े में खाने में इस्तिहाक़ हमारा है ज़हन में आएगा।

दरूल उलूम देवबन्द के मुफ़्ती आज़म मुफ़्ती महमुद हसन साहब गंगोही रह०

के तब्लीग़ी इज्तिमाओ में किए गए बयानों का मज्मूआ

मुरतब्ब—: मौलाना मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी

मदरसा हायातुल उलूम सोनूरवी, ज़िला अगोला

बयान न० 5

नज़ाकत वाला दौर सही मेहनत से चमक सकता है

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाहि अलैहि

14, अक्तूबर 1960 ई० जुमा के दिन में दस बजे जगह तिजारा

मेरे भाइयों और दोस्तों ! 'मल–लम यश्कुरून्नास लम–यश्कुरूल्लाह'। हदीस है इस वक़्त मामला हम लोगों का नाज़ूक है नज़ाकत का दौर है अगर मेहनत की सही हालत पैदा हो जाए तो कोई दौर नज़ाकत ऐसा नहीं है कि सही मेहनत से न चमका हो। आपकी ज़िंदगी नाज़ुक दौर से शुरू हुई। हमदर्दी वाले थे मारने वाले थे बचाने वाला न था। अल्लाह को अल्लाह कहने वाला न था। पूरी दुनिया हैवानियत की शिकार थी। मेहनत उठाई तो जिस ज़मीन में एक भी खुदा कहने वाला न था वहां एक भी खुदा न कहने वाला रहा। एक नक़्शा मेहनत था जिससे नक़्शे बदले रात–दिन जंगे थीं। वहां जज़ीरा अरब में बावजूद अलग–अलग कबीलों के लुग़ात हालत के गोया एक मां–बाप के बच्चे हों। एक आदमी सलमान फ़ारसी

रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया कहा कि फ़्लां मुल्क से चला अलग–अलग कबीले देहातों से गुज़रा लोग बाप–भाई की तरह लपके थे हर एक ठहराना चाहता था रूपये सवारी देना चाहता था जैसे सब एक मां–बाप के बच्चे हैं कहां से मस्अला चला कहां पहुंचा। यह हुज़ूर सलल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े मेहनत की बरकत थी। अल्लाह वाले और सकून व मुहब्बत वाले थे। आपके बाद फिर नक़्शा बदला क़ियामत के ज़ुबान बन्द करने के लिए बदला कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वजह से दीन ज़िंदा हुआ उम्मत से न होगा इसके जवाब के लिए क्या इरतिदाद फैला मदीना मुनव्वरा से पांच (5) मील तक का गांव मुर्तद था कहीं एतक़ादी कहीं अमली कहीं लसानी इरतिदाद था। मुसलमान मुट्ठी भर रह गए कि अपना भी तहफ़्फ़ुस मुश्किल था। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि सर्दी की रात में भींगी बकरियां जैसे जमा होती हैं मुसलमान सिमटकर मदीना में जमा हुए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो मेहनत चालू की वह मेहनत ताक़तवर मेहनत है हर हाल में नक़्शा बदल सकता है। सारी अरब को इरतिदाद में झोंककर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ मेहनत उठाई बाक़ी साथ देने वाले हैं। फरमाया जिसने आपको ख़ुदा माना वह मर गया आप सल्ल० को रसूल माना ख़ुदा अब भी है क़ुरआन और मेहनत इनके के ज़माने में थी अब भी है इसी तरह हम काम करेंगे ख़ुदा की मदद आएगी क़ियामत तक के लिए बताया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत का तरीक़ा इख़्तियार हो वह बात कहीं इसके मुताबिक़ मेहनत की एक लाख मुसलैमा दस हज़ार सजह लिए आ रही है 5, 10 लाख आदमी मदीना

आने वाले थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया जल्द ही उसामा रज़ि० को शाम भेज दो सब अगर ख़त्म हो जाएं उम्मतुल मोमिनीन की लाशों को कुत्ते घसीटते फिरें परवाह नहीं मेहनत का मैदान क़ायम किया बालिग़ों को निकाल दिया मदीना में तीन रातें ऐसी थीं कि बालिग़ मर्द न था जबकि दीन को हमले की ख़बर थी एक–दो माह में सारों ने अल्लाह को माना आपके तरीक़े पर दिल से आ गए तलवार से नहीं नदामत मिली तौबा की हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया हज़रत ख़ालिद रज़ि० से मिलकर मुसलैमा से लड़ो काम में लगो यह तौबा है इतने नाज़ुक वक़्त में जान डालकर ख़तरे में डालकर एक तो अरब के साथ मिस्र, शाम, अफ़गानिस्तान में इस्लाम आया इस सिलसिले में हिन्दुस्तान में भी इस्लाम आया, बाहर वाले यहां आए इस हरक़त से था। पानी में ज़ोर से हरकत दी दूर तक पहुंचेगी, इसी हरकत के सिलसिले में ख़्वाजा अजमेरी तशरीफ़ लाएं पहले उम्मत हरकत में आए थी फिर अफ़राद हरकत में आए इसी से इल्म दीन मुस्लिम का बक़ा है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ब–हैसियत उम्मत के हैं दूरी हुई उम्मत पनें की शान निकलकर अफ़राद पने पर आई। इल्म अफ़राद पने की मेहनत के नतीजे में बाक़ी है, इल्म दीन मदारिस की वजह से बाक़ी है अफ़राद की बरकत है उम्मत की नहीं। इन्हीं अफ़राद से ज़िक्र इल्म ख़ंकाह मदारिस क़ायम रहे अब ग़ौर करो इस वक़्त सूरत हाल क्या है ? अफ़राद लगे और उम्मत दूसरा काम करे आज अफ़राद की मेहनत से उम्मत बचे ? ग़ौर करो उम्मत लगे। सूरतेहाल यह है कि मुसलमान ने ब–हैसियत मज्मूई मौज़ूअ ज़िंदगी जाना कि कमाना खाना है और दीन के काम पर माल लगा देंगे हाकिम फ़ौज का ज़हन है कि रूपया लोगज़ारह करो मुस्लिम ब–हैसियत उम्मत के दीन के फैलाने सीखने वाले न

रहे बल्कि रोड़ा जाना। अफ़राद मदरसा ख़ानक़ाह वाले हैं। अफ़राद हर जगह हैं। इस वक़्त सूरतेहाल कौन–सी है कितनी मेहनत से उम्मत में दीन आए। इस वक़्त सूरतेहाल जानो दवारतदाद से उम्मत गुज़री तीसरे पर आ रही है। थोड़े से नक़्शे को न देखो सत्तर करोड़ मुस्लिम को सामने रखो दवारतदाद पहले अमली इरतिदाद आया तिजारत, ज़राअत मुक़दम्मे में हुकूमत लेन–देन में आप सल्ल० के अमल को छोड़कर दूसरे अमल लेना और इरतिदाद अमली है इसका लाज़मी नतीजा इरतिदाद एतक़ादी है। यक़ीन का इरतिदाद यह है कि सदक़ा–खैरात ग़रीबों परवरी इल्म–ज़िक्र, नमाज़ से यों होगा इसका यक़ीन न रहे अगर इस इरतिदाद का इलाज न करो अक़्ल से ऊपर वाली अक़ीदा की बातों में शक करता है। फिर ज़ुबान से इसाई, सीख, हिन्दु बनता है कि इस्लाम से क्या होता है ज़माने का काइल हूं। अब यूरोप में जितने मुसलमान हैं अफ्रीक़ा के मुल्क, अरबों, हिन्द में शहरों देहातों में इरतिदाद अमली मुकम्मल है, इरतिदाद एतक़ादी आधे में है, इरतिदाद लसानी का रूख़ पड़ा तो लाखों मर्तद होंगे। इस वक़्त सौ–साल में जो सर जोड़कर कोशीश की गई कि मुसलमान के लिबास खाने पीने तिजारत ज़राअत में ग़ैर के तरीक़े आ जाएं इस्लाम के ख़िलाफ़ मुआशरा जान–बुझकर चालू किया। तसुफ़ और सीरत को सामने रखा कि ख़ुदा की मदद किस वजह से आती थी। इसे मिटाओ तक़वा मसावत ज़िक्र अक्ली हलाल से मदद हुई सीरत से यह पता चलेगा हर ग़ज़वे में यह मिलेगा हमने तो सीरत न देखी अपनी ज़िंदगी न बनानी न थी। दुनिया की बातिल क़ौमें इस्लाम को अपने मुआशरत के मुक़ाबले में समझती हैं। वे औरतों में खाने–पीने में आज़ादी लाती हैं यहां पाबन्दी है वहां तुफ़रक़ा यहां मुहब्बत है सारी चीज़ों के मालिक हुकूमत बनकर चले या अफ़राद मिलकर मुआशरत

से चलें इनकी मुआशरत को आपस के मज़हबों में इख़्तिलाफ़ नहीं है इस्लामी मुआशरत से इख़्तिलाफ़ है शादी, मामलात, कानून में इख़्तिलाफ़ इस्लाम वग़ैरह इस्लाम में इख़्तिलाफ़ है दुनिया में तैश की मुआशरत बन गई इस मुआशरत में ज़िंदगी चली जाए तो सारी क़िस्म के इरतिदाद आ गए। इरतिदाद अमली आया तो एतक़ादी भी आया वहीं से लसानी भी होगा। अहदे लालच, माल, ऐश, औरत दो तो ज़ुबानेस से कहलवा दो। आज उम्मत ब–हैसियत उम्मत के दवारतदाद को पारकर चुकी है तीसरा बाक़ी है। मुल्कों में देखों सौ साल हुए कि अफ़राद दीन की मेहनत कर रहे हैं। और ब–हैसियत उम्मत की मुआशरत ले रहे हैं यूरोप, मिस्र से पढ़कर आकर अपना नक़्शा चलाते हैं अपना नक़्शा ज़िब्ह करना है उम्मत में गैरों के नक़्शे आ रहे हैं। आप सल्ल० के नक़्शे घिसाने का रूख़ नहीं है। दूसरे में जज़्ब होने का रूख़ है या दौर है या तो इसके बाद ज़ुबान का इक़रार और जमा होना ख़त्म होगा अल्लाह बचाए या मेहनत का मैदान क़ायम कर दें तो फिर कोई दौर इन्हितात ऐसा नहीं है कि इस्लाम ज़िंदा न हो तारीख़ देखो। इमाम मेहदी तक तहक़ीक़ करो फिर इस्लाम चमका ख़ास मेहनत से ऐसा हुआ। अब तब्लीग़ में इस मेहनत की तरफ़ ला रहे हैं जो आप सल्ल० ब–हैसियत उम्मत को सिखाई। ख़ैर के सारे काम ज़रूरी हैं इन शोब्हों में ज़्यादती की ज़रूरत है। मदरसा, इल्म, ज़िक्र, ख़ानक़ाह इससे ज़्यादा हो इज्तिमाई इस्लाह सबसे ज़्यादा हो और ज़्यादा इस वक़्त होगा जबकि मुस्लिम ब–हैसियत मज्मूई करने वाले हों सब मिलकर करें तो ज़्यादा हो अफ़राद करेंगे वह थोड़ी होगी उम्मत करे तो ज़्यादा होगी। यह मक़्सद नहीं कि मदरसा, इल्म, ख़ानक़ाह न रहे बल्कि इरतिदाद आ रहा है लिहाज़ा हम सब दीन की मेहनत में लग जाएं मज़दूरों की अपनी ज़िंदगी है

इसाई, मुश्रिक, दई या मुस्लिम मज़दूर है एक मुआशरत है मज़दूरी की वह मुआशरत अलग है।

एक सयासी मुआशरत है फ़ौजी मुआशरत है ज़राअती सक़ाफ़ती मुआशरत है तिजारती मुआशरत है हर एक आपस में जुड़ेंगे हाकिमों मज़दूरों का इख़्तिलात नहीं हर शोबा का अलग माहौल बन रहा है सिर्फ़ मुस्लिम का नहीं है। सारी क़िस्में मिलकर बन रहा है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सब शोब्हों में मुस्लिम को एक बनाया था। मज़दूर आपस में मिलते हैं इस्लाम का ख़्याल भी नहीं आता है दूसरा मज़दूर ख़ुदा का मुन्किर बने तो मुस्लिम मज़दूर भी मुन्किर बनेगा। मुस्लिम कर रहा है यह नहीं है बल्कि मज़दूर कर रहा है। इस्ट्राइक में सब साथ है आपस में हम अलग–अलग है हमारी हर क़िस्म दूसरो से मिलकर अलग उम्मत बनी मज़दूर ताजिर अलग–अलग उम्मत बनी एक टूट गई बहुत–सी बनीं इस्लाम ख़त्म हुआ आप सल्ल० ने क्या किया। इस वक़्त अलग–अलग तबक़ों में ज़िंदगी गुज़र रही है आप सल्ल० के ज़ामने में चार क़िस्में हैं। 1. कमाई का कोई नक़्शा नहीं है।

2. मज़दूर है चाहे कम कमाई हो। न कमाने वाले भूखे–प्यासे थे सांप, गधे, कुत्ते, बिच्छू खा जाते थे यह अकसीरीयत थीं

3. आगे कमाई में ताजीर था बड़ी तिजारत यहूदियों के हाथ में थी इससे बड़ी बाहर तिजारत थीं।

4. खेती–बाड़ी थी अब भी हिजाज़ में देखो बद्र वग़ैरह में बाग़ात मिलेंगे। मामूली खेती वग़ैरह है। इन दोनों शोब्हों में मज़दूरी है ताजिर ज़राअ मज़दूरी अब दीन की मेहनत से निकले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चारों से मेहनत कराई आप सल्ल० के सारे ख़ुलफ़ा, ताजिर, ख़लीफ़ा हैं। ख़ाली तिजारत न थी आप सल्ल० वाला काम करे तो ख़लीफ़ा है बुज़ुर्ग बेटा

बनने की वजह से खिलाफ़त नहीं देता है तो आप सल्ल० ने तिजारत की वजह से खिलाफ़त न दी थी दाई, मुजाहेदा, मुहाजिर ज़ाहिद खाइफ़ हैं अल्लाह का खलीफ़ा वैसा ही होगा लिहाज़ा आपकी खिलाफ़त ताजिरों के पास आई कि तिजारत की हालत यह थी। आपके दाएं–बाएं बाज़ू ताजिर थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० दोनों दाएं–बाएं बैठे थे फ़रमाया 'هكذا' يبعث يوم القيامة' (मैं इस तरह क़ियामत में उठाया जाऊंगा) अब देखो वह तिजारत कैसी थी आज कैसी है। एक ताजिर को क़ियामत में अपने साथ उठाएंगे आप सल्ल० ने नुबूवत के बाद तिजारत छोड़ी आप सल्ल० की मेहनत इन्होंने इतनी की है कि तिजारत में जोड़ न था दावत, इल्म, मुआशरत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इतने जुड़े कि ज़िंदगी में फ़र्क़ न रहा। ऐसी तिजारत न थी जो आपकी ज़िंदगी में तज़ाहम डाले बल्कि जुड़ जाए इरतिदाद दफ़न के वक़्त आपने सारे तबक़ों को मस्जिद में जोड़ा। एक तो बज़ार का जोड़ है बाज़ार में सब बराबर न होंगे। ये लाख वाला ये हज़ार वाला है और ये मज़दूर है बाज़ारों में चीज़ों की तर्तीब है। मस्जिद में बिला माल आगे बढ़ सकता है। इमाम के पीछे सबसे आला मज़दूर, ताजिर, आलिम, ज़ाकिर जो बैठे वे आला है। इमाम के पीछे सबसे पहले वाला होगा, औरों से पहले आएगा, लिहाज़ा जो नमाज़ में ज़्यादा वक़्त लगाए वह आला है। मस्जिद जिस मक़्सद के लिए बनाई इल्म, दावत, ज़िक्र, दुआ, नक़ल व हरकत, अल्लाह की खिदमत, इबादत के लिए मस्जिद बनाते हैं इसमें जो ज़्यादा लगा वह आला है। फ़लां क्यों न आया तीन दिन फ़ाक़ा था। न इसके घर जाकर आटा दिया मस्जिद के कामों में जोड़ा जो इस काम में ज़्यादा वक़्त लगाए वे ऊपर है बाक़ी नीचे है। दूसरा दरवाज़ा दौड़ने

का खुला हाकिम, महकूम, मज़दूर सरमायादार एक दूसरे से आगे बढ़ सकता है। लाखों वाले ने लाख ख़र्च किया मिस्किन के पास न था, अगर होता तो लगाता इसे भी इतना ही मिला। चार लाख वाले ने एक लाख दिया चार आने वाले ने सब दिया हौसला देखो पैसे पर नहीं। चार आने वाला पूरी जन्नत लाख वाले ने पाव जन्नत ली। आलिम, ज़ाकिर, ताजिर सबको मस्जिद में बुलाया मस्जिद वाले काम कराए इस पर सबको जमा किया। नमाज़, तालीम, तस्बीह, ख़िदमत, क़ब्र खोदने, शादी सब जमा हो जाओ ताकि तुम्हारा आपस का मुआशरा हो तो तुम्हारा ग़रीब मज़दूर ताजिर किसी दूसरी जगह न जाए। आदमी मज्लिस में मजबूर है अगर अपनो को न जोड़ा तो दूसरे जोड़ेंगे। हमारे उठने—बैठने के लिए मसाजिद हैं आज मालदार मज़दूर का अलग मुआशरा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने माल, लिबास, गिज़ा मकान में बढ़ौतरी न रखी मुआशरत व आमा में बढ़ौतरी रखी सबको तालीम, दावत, ज़िक्र नमाज़ की कही। जब तक अमल का म्यार था अमीर ग़रीब में झगड़ा न था। ज़ुबान क़ौमी तिजारत में लड़ाई न थी बल्कि अल्लाह करने वाले हैं अमल वाला आगे इस मुआशरे में एहतियात था। हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में एक शख़्स इराक़ से आया कि तुम्हारी मस्जिद में हलक़े जुड़ते हैं ? अलग—अगग तो नहीं जुड़ते बल्कि जौन—सा हलक़ा मिला बैठ गए बिला ताल्लुक़ के इल्म के हलक़े हैं बैठते रहोगे तो ख़ैर है गुजरात वाला गुजरात में बैठा या नहीं है सारे मस्अले ख़त्म करो आपकी आवाज़ लगेगी कोई क़ौम की तरफ़ से आवाज़ आए तो क़ौम की आवाज़ वालों पर तलवार से गले काटो। वजूह तफ़रीक़ को मस्जिद वाले रास्ते से निकला क़ौमी लसानी तफ़रीक़ न थी। समझ में न आया तो बाद में पूछा, क़ौमी तबक़ाती झगड़े दूसरों में थे

हम सब एक थे। दूसरे जिन बुनियादों पर लड़ते थे इसे जाहिलियत कहकर ख़त्म किया। हम सब एक कुरआन मजीद मुआशरे वाले हैं यह न था कि मज़दूरों का फ़ायदा इसमें है बल्कि ताजिर, मज़दूरों को फ़ायदा अल्लाह देगा। मस्जिद में नमाज़ तालीम ज़िक्र पर जमा किया था इससे सबकी मुआशरत में इज्तिमआ था। दो क़िस्से हैं काब बिन मालिक तबूक न गए तो सज़ा यह थी कि अपनी मुआशरत से निकालो और न बोले बीवी, बच्चे भाई न बोले। उस वक्त शाम के बादशाह गस्सान ने, क़बीला अंसार से रिश्ता था, ख़त लिखा कि तुम्हारे साथी ने तुमसे ना–मुनासिब बात पर बाईकट किया तुम ज़लील नहीं हो बाल की तरह न निकाले जाओ हमारे पास आओ आंख का तारा बना दें। ग़ुलाम तक बीवी तक न बोले ऐसी मुआशरत तंग वहां इसाई ने हरा–भरा बाग़ दिखाया। फ़रमाया कि इस परचे से पहले ग़म न था। माफ़ होगा इसाई न बुलाया तो सद्मा है मुआशरत में जाना था इसाई न बनना था परचा तनूर में डाला और कहा यही जवाब है। इस पर रोए कि बादशाह बुला रहे है गवर्नर बनाता बाग़ मिलता लेकिन रोते हैं कि मुसलमानों की मुआशरत में रहने के लायक़ न रहा। एक माहौल, तालीम, दावत, ज़िक्र नसीहत का माहौल था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तुम हमेशा चमकोगे यह जबकि आपस में माहौल बना रहे हैं अगर ग़ैरों के साथ उठना–बैठना खाना–पीना जुड़ेगा जो तंज़ुल आएगा। माल वाला ज़माना था वज़ाइफ़ थे ज़माने की मुआशरत देखो इसी से नेमत मिली। अपनी मुआशरत का माहौल ऐसा था कि हमारे अन्दर के आदमी को कोई खींच नहीं सकता था अमीर–ग़रीब हाकिम–महकूम का जोड़ था। ग़रीब मालदार की ख़िदमत करता था पहरा दिया बोझ उठाया रात को जागा अल्लाह के लिए

माल वाले ने पैसा लगाया ग़रीब ने माल वाले को रोटी खिलाई। इस मुआशरत का नाम इस्लाम है वह मिट गई। अब तो कुछ अमल है नमाज़ कितने पढ़ते हैं फिर तालीम और तस्बीह वाले कितने हैं। वे सौ फ़िसद तालीम, ख़िदमत और नमाज़ वाले थे इसने दुनिया में इस्लाम फैलाया, इसे पसंद करते थे। क़ौमी तबक़ाती रंग लसानी तफ़िक्रे दूसरों में थे। यहां अरब पर फ़ारसी वाला रूमी अमीर है। तीन दिन दावत दी चौथे दिन लड़ाई की सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु अमीर थे। फ़ारस वालों को दावत दी कहा कि मैं तुम्हारों में का हूं। बस इनसे मिला इनका अमीर हूं बावजूद यह कि इनकी तायदाद ज़्यादा इनकी है अगर तुम भी आओ तो दूसरों पर बिठाएंगे। जरजा ने यर्मूक में हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि अगर मुस्लिम हो जाऊं तो क्या मक़ाम मिलेगा, फ़रमाया आला होगा क्योंकि नबी और और मुआज्ज़े को देखे बग़ैर ईमान लाया। हज़रत उमर रज़ि० ने इसाई से कहा कि अगर इस्लाम लाए तो बैतुलमाल का ख़ज़ानची बनाऊं कुंजी दूंगा। उसने कलिमा पढ़ा इंतिक़ाल के बाद कलिमा पढ़ा। हमारे तबक़ात मस्जिदों की मुआशरत से निकलकर दूसरी मुआशरत में घुसे। कालिज की और मज़दूर की अलग-अलग मुआशरत है। अगर जलसा करो तो मस्जिद वाले ताजिर मज़दूर आएंगे और बाक़ी में शिर्कुल हाद फैलेग। अब सब पर काबू कैसे पाऊंगे हर जगह ज़िंदगी बिखरी हुई है। हिजाज़, मिस्र, यूरोप हर एक में तफ़िक्रा है यानी उम्मती वजूद हमारा ख़त्म हुआ है मुस्लिमपने की हालत ख़त्म है। तबक़ाती, इलाक़ाई, क़ौमी ज़िंदगी में बिखरकर लड़ने वाले बन गए अब वह वक़्त है कि वक़्त निकालकर इन जत्थों में और शोब्दों में घुसकर मस्जिद में लाकर जमा करो जहां से जाकर अलग-अलग हुए हैं वहीं लाकर जमा करके नमाज़, ज़िक्र नक़ल व हरकत में

जोड़ेंगे इस नक़ल व हरकत में क्या होगा। 1. दीन के पैदा करने वाली चीज़। 2. दीन बनने वाली चीज़ मिसाल के तौर पर खेती–बाड़ी, तिजारत, मुआशरत मुकदम्मा, शादी ये सब दीन बनेगा। इंसानी ज़िंदगी दीन बनेगी अब दावत तालीम इताअत से यह सब दीन बनेगा। वे और करोगे तो यह सब दीन बनेगा यक़ीन में इम्तियाज़ न हो तो इंसानी ज़िंदगी दीन न बनेगी, कुछ अमल ऐसे हैं अगर वह ज़िंदा हो तो ज़िंदगी दीन बनेगी। तिजारत, खेती–बाड़ी दीन कैसे बने इल्म, इख़्लास अल्लाह की मुहब्बत यक़ीन आख़िरत न हो तो इंसानी ज़िंदगी दीन न बनेगी। कुछ अमल ऐसे हैं अगर वह ज़िंदा हो तो ज़िंदगी दीन बनेगी। तिजारत को दीन बनाना है तो ख़ुदा का ध्यान हो इख़्लास हो इल्म की शक्ल ईमान की कुव्वत नीयत का इख़्लास या तिजारत, खेती–बाड़ी में आ जाए तो दीन बन जाएगी। यह चार बातें हों ख़ुदा का यक़ीन और ध्यान रज़ा, आपका तरीक़ा मुजाहेदा से ये चार बातें पैदा होंगी लिहाज़ा एक मेहनत आई कि यक़ीन तालीम के उमूम की मेहनत करो इल्म का नक़्शा सारी उम्मत पर आया। इल्म यक़ीन व ध्यान इख़्लास के दो दर्जे हैं। बुनियादी कमाली, बुनियादी सब पर फ़र्ज़ है इतना तो कुल हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि इसे हराम से रोक दे दूसरा इल्म कमाली है। बुनियादी इल्म सबके ज़िम्मे फ़र्ज़ हैं मज़दूर, ताजिर सबके ज़िम्मे इल्म फ़र्ज़ है आगे मसाइल वक़्त के साथ आएगे। दो लाख रूपये मिले मौलवी साहब से पूछा और करो। पूरे इल्म वाले हो और थोड़े इल्म वाले न हों। तिजारत का इल्म ताजिर को नहीं है तो यह तिजारत दीन कैसे बनेगी। दुनिया के इल्म से ताजिर की तिजारत दीन न बनेगी। लिहाज़ा इब्तिदाई इल्म हर एक पर फ़र्ज़ है रोज़ाना का काम सीखकर करे। एक तरफ़ पूरे इल्म वाले चाहें दूसरे इब्तिदाई वाले सब हों। नमाज़ पढ़ता है सूरत

फ़ातिहा वुज़ू वग़ैरह न सीखा पूरे इल्म वाला इमाम है इसके पूरे इल्म से इसकी नमाज़ न बनेगी। हमारे पास इब्तिदाई इल्म भी हो और हमारे पास पूरा इल्म भी हो। वक़्तन व फ़क़्तन वाला इल्म पूरा इल्म दे। चार करोड़ है लिहाज़ा हर गांव में पूरे इल्म वाले हों तुम्हें कलकत्ता में सैकड़ों आलिम चाहिए। अपने बच्चों को देकर तैयार करें ये वक़्तन व फ़क़्तन के लिए है। लेकिन रोज़ाना का इल्म मौलवी साहब के पास बैठकर सीखना होगा। पूरी ज़िंदगी का इल्म लें। यक़ीन की मेहनत इल्म की मुहब्बत हो कमाले इल्म वाले हो पूरी उम्मत इल्म वाली हो कालेज के बच्चों ज़मीनदार, काश्तकार सबको इल्म वाला बना दे दोनों मेहनतें हमारे ज़िम्मे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में सब पर मेहनत आज का इल्म बक़ा अफ़राद की मेहनत पर है। इल्म की कमी हमारी मेहनत छोड़ने की वजह से है मस्जिद में जुड़ते नहीं है गश्त करके लाकर सीखते नहीं हैं। शहर देहातों में काम चलाते, मुल्कों में जाते मस्जिद का नक़्शा था। दावत, तालीम, इबादत मुहब्बत का था। सारे मुल्कों में चलाएं। अगर सब वक़्त लगाएं तो सारी मस्जिदें आबाद हों। अभी तक एक फ़िसद भी नहीं है बाहर के मुल्कों में जाने वाले एक फ़िसद भी नहीं है। लंदन, अमेरिका, जापान मिस्र में भी काम हो रहा है। मौलवी मुहम्मद उमर की जमाअत गई तो मिस्र में सैकड़ों आदमी लगे। अगर हम में से सब लगा दें तो हर एक के हिस्से में ज़िदंगी में चार माह सलाना चिल्ला वग़ैरह दें तो सारी दुनिया सूबों ज़िलों में काम हो जाए, मस्जिद आबाद हों। जब गश्त करोगे तो ताजिर, फ़क़ीर, माल वाला, दफ़्तर वाला, बाहर मुल्क का भी आ गया, गश्त करोगे तो मस्जिदें भर जाएंगी। आप सल्ल० बाज़ार भरने न आए थे बाज़ार से खींचकर मस्जिद भरने के लिए आए सबको मेहनत करनी होगी।

अल्लाह की ख़िदमत जफ़ाकशी वग़ैरह में लगना होगा। सब मिलकर मश्क़ करें थोड़ी से मेहनत पर इस्तिक़बाल पैदा होगा, इरतिदाद का वक़्त है सब मेहनत करें, शबाहत आप सल्ल० से हो, ताजिर, खेती–बाड़ी वाले हर ज़ुबाने इलाक़े के लोग हों। मज्मूई हालत से हो फिर दुआ से दिल फिरेंगे अब देखो मसअले कितने हैं। बाहर के मुल्कों के लिए बोलो सूबों के लिए बोलो कलकत्ता के देहली वग़ैरह जाएंगे।

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० के मलफ़ूज़ात व मकातिब व मकातिब और बयानात जिनको मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रोशन शाह साहब क़ासमी ने मुरतब्बत किया।

मलफ़ूज़ात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० पहला हिस्सा

बयानात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० पहला हिस्सा

बयानात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० दूसरा हिस्सा

मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० पहला हिस्सा

मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० दूसरा हिस्सा

नोटः–इन किताबों के और हिस्सों की तर्तीब का काम भी अल–हम्दु लिल्लाह शुरू है।

बयान न० 6

आपस का जोड़ कितना ज़रूरी है और वह कैसे बाक़ी रहेगा।

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद साहब रहमतुल्लाहि अलैहि

पुरानों का मश्रिक़ी व मग़्रिबी मख़्लूत मज्मआ था

17, फ़रवरी 1965 ई० दिन बुध मग़्रिब की नमाज़ के बाद मस्जिद मलूवाली

इस्लाम तमाम तबक़ात इंसानिया के लिए रहमत का तरीक़ा है। जब वह ख़त्म होता है तो दुनिया मुसीबतों का घर बनती है वह आता है तो दुनिया अम्न का गवारा होती है। ग़ैर–मुस्लिम तक अम्न के मज़े की ज़िंदगी गुज़ारता है, खाने–पीने की कसरत, ख़ून की हिफ़ाज़त होती है। मरकर दायरा इस्लाम वाले मज़े करेंगे, ग़ैर–मुस्लिम हमेशा मुसीबत उठाएंगे, ताहम हायात इस्लाम से ग़ैर–मुस्लिम की ज़िंदगी भी बनती है। अल्लाह तआला इस्लाम को ज़िंदगा करते हैं, क़ायम करते हैं, और हालात बना देते हैं। वही हालत को बिगड़ने के लिए इस्लाम को ख़त्म करते हैं। मेहनत करना सबब बनाया इस्लाम की हायात के लिए। सबसे

पहला मस्अला मेहनत का इस शक्ल पर आता है जिस पर ख़ुदा दीन को ज़िंदा करते हैं। अगर मेहनत सही न हो तो दीन ज़िंदा न होगा। चाहे सारी दुनिया में मुसलमानों की हुकूमत हो सारे राकेट, ऐटम, मंडियां इनके पास हो दफ़्तर इनके पास हों ज़िंदगियों में इस्लाम न आएगा वही मुसीबतें आती रहेंगी जो ख़ाली हाथ होने की सूरत में आई थीं। अगर मेहनतें सही हो जाए तो एक राकेट पर भी क़ब्ज़ा न हो एक पैसा ख़र्च का न हो तो भी इस्लाम चमकेगा, दुनिया इसकी तरफ़ झुकेगी, इस्लाम की मौत व हायात को मुल्क व माल के साथ नहीं जोड़ा है। बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले तरीक़े मेहनत से जोड़ा है। इस्लाम का मुल्क व माल से चलना समझना ग़लत है। आख़िरत का यक़ीन इत्तिबा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जज़्बा वग़ैरह से चीज़ों के होने के बाद भी चलता है। हुकूमत हज़रत उमर बिन ख़िताब रज़ियल्लाहु अन्हु या हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के पास भी थी। और दूसरे मुस्लिम हाकिमों के पास भी थी। लेकिन इनके यहां चला। अल्लाह ने दो सहाबा को समझाने के लिए क़ियामत के लिए नमूना बनाया है, सारी शक्लें दो सहाबा में बता दी हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० व हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० व हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत हसन रज़ि० व हज़रत हुसैन रज़ि० का दौर भी समझने के अलग-अलग रूख़ हैं।

बनू उमैया दौर सहाबा में हाकिम थे, वह भी समझाने का एक रूख़ है। हुकूमत इब्ने अब्दुल अज़ीज़ रह० भी एक रूख़ समझाने का है कि यह रूख़ होगा तो यों होगा, जिस रूख़ से उठेंगे इसके एतबार से होगा।

सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जाने के बाद ख़ुदा ने तैइस (23) साल की मेहनत से बनने वाले इस्लाम

के नक़्शे को तोड़ दिया। इबादात व तहज्जुद नफ़्लें, अख़्लाक़, हिफ़ाज़त, ख़ून मुद्दत मुहब्बत का सारा नक़्शा तोड़ दिया। क्यों तोड़ा ? यह समझाने के वास्ते कि यह नक़्शा इस्लाम का बार–बार टूटेगा और बनेगा। इसी तरह मेहनत करते हैं जैसे अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेहनत कराई सबसे, घरों में न बैठो बाहर निकलो, इनकी तरह ख़ुदा पर भरोसा करो इनकी तरह जान व माल की परवाह न करो। कारोबार को मत देखो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद पर यक़ीन पैदा करो, नक़ल व हरकत के मैदान क़ायम करो, असल मक़्सद मेहनत हो, मुक़द्दस औरतों को तहफ़्फ़ुज़ भी सामने न हो। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया था, हम सब शहीद हो जाएं, अज़वाजे नुबूवी सल्ल० भी शहीद हो जाएं दफ़न करने वाले बाक़ी न रहें। हमें और अज़वाजे मुताहरात को कुत्ते खा जाएं तब भी ख़ुदा के रास्ते से निकले से बाज़ न आएंगे। मेहनत को आगे रखना हवाइज पर, कमाइयों पर तमाम इंसानी मसाइल पर, यह एक चीज़ मिली कि सारा नक़्शा टूटा हुआ हो तो इसके सिवा नक़्शा न आ सकेगा। जो लोग अपने–अपने खाने–पीने में लगे रहें कारोबार करें और नारा इस्लाम का लगाते रहें तो इस्लाम ज़िंदा न होगा बल्कि जान झोंक देने और माल की बाज़ी लगा देने से इस्लाम अपने पहले नक़्शे पर एक माह में वापस आएगा। न जान की मुक़द्दसतरीन हस्तियों की न अश्रा–मुबश्शरा की न बद्रियों की परवाह है मरे तो मर जाएं या इस्लाम को देखेंगे या अपनी लाशों को हम हो इस्लाम न हो न हो या न होगा।

इस्लाम एक ख़ास मेहनत से आएगा, मेहनत वालों में जोड़ का तरीक़ा हज़रत अबूबक्र रज़ि० के दौर से मिलेगा काम क्या है ? बताना चाहता हूं। जो दौरे सिद्दीक़ में हुआ था वह आज

भी हो रहा है। दूसरों को नबी तो नहीं बनाया लेकिन कुछ को मुक़्तदा बना दिया है मुसल्लमा के मुक़्तदा बनाने की तरह। यह सब कुछ कर रहे हैं नमाज़, फ़र्ज़ों में तग़य्यूर इस्लाम के अलावा दूसरी बुनियादें करना यह सब मुसलमान कर रहे है। इस्लाम न लेकर, वहां लफ़्ज़ इरतिदाद था। सूफ़ी सद दौर सिद्दीक़ से शबाहत है। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर मेहनत करके दुआएं मांगी जाती हैं। तो अल्लाह तआला दिल का रूख़ फेर देते हैं। ग़लत मेहनत करने वाले हाकिम, खेती–बाड़ी, ताजिर कल को इस्लाम मिटाने के बजाए इस्लाम पर लगने वाला होगा। रूख़ उस वक़्त फिरेगा जब मेहनत हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह हो। इस दौर में सिर्फ़ अबूबक्र रज़ि० हैं हज़रत उमर रज़ि० उठने के नहीं उठने के बाद चलाने के दौर के हैं हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० 19, 20 हैं दायां–बायां बाज़ू हैं। कुछ जगह एक दर्जा की कमी से भी असर पड़ता है। जिसने 19 मिन्ट पर क़त्ल होना हो इसकी रिहाई का हुक्म 20 मिनट पर आए तो बेकार 19 पर गाड़ी छूट गई तो 20 पर न मिलेगी। अगर उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० होते हज़रत अबूबक्र रज़ि० की जगह आज इस्लाम बिल्कुल नहीं होता। यह बात हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने क़सम खाकर कही कि एक सज्दा करने वाला न होता। अगर हज़रत अबूबक्र रज़ि० की जगह हज़रत उमर रज़ि० भी आ जाते। आज 20 नम्बर का दौर है अगर 19 नम्बर बने तो भी इस्लाम न चमकेगा। दोनों ख़लीफ़ा हैं। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इत्तिबा करने वाले लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० का इत्तिबा हज़रत उमर रज़ि० से ऊंचा है। अमीर बनते ही पहला हुक्म हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने दिया कि जैश उसामा रज़ि० को रवाना करो, सारे मुर्तद कबीले

एक लाख[1] मुसलैमा के साथ और बाकी क़बीले इरादा कर रहे थे मदीना पर हमले का, मदीना में तीन-चार हज़ार ही आदमी थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा इस मौक़े पर इस कम तायदाद को मुन्तिशर करना अक्ल का काम नहीं इनके ज़रिए दफ़ा करना चाहिए, मक़ाम का तहफ़्फ़ुज़ बाहर के फिरने से आगे है। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम फ़रमाकर गए हैं इसलिए शाम को रवाना करना है मक़ाम का चाहे कुछ हो। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हालात बदल गए, हज़रत अबूबक्र ने कहा हुज़ूर सल्ल० ने उस वक़्त हुक्म दिया था, जब आसमान से वही आती थी। ख़ुदा उन हालात को जानते थे हो सकता है कि उन हालात का सुधार इसी अमल में हो। फ़हम सिद्दीकी और है फ़हम फ़ारूक़ी और हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि मश्विरा तो करो और हज़रत अबूबक्र रज़ि० का मश्विरा में कोई साथी न था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा नसूस में कोई मश्विरा नहीं। लिहाज़ा ज़ाहिर हाल पर न उठेंगे। बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबान पर उठेंगे। हम देखकर क़दम न उठाएंगे, बल्कि सही क़दम उठाकर फिर तर्जुबा कर लेंगे। हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मानेंगे। तो ख़ुदा अपनी क़ुदरत से बना देंगे। तर्तीब आलम बदल देंगे, ये सब हम न करेंगे हुज़ूर सल्ल० की तर्ग़ीबात की तरफ़ रग़्बत, इस पर क़दम उठाने, और ख़ुदा के करने का यक़ीन हो यह काम पैसा, ओहदा वग़ैरह पर नहीं उठेगा। बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली तर्तीब पर क़दम उठने से हालात के बनने के यक़ीन पर उठेगा। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा सारा लश्कर तब्दीली अमीर का ख़्वाहां है। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० के सीने पर हाथ मारा, तुझे शर्म नहीं आती हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम जिसे अमीर बना दे उसे हज़रत अबूबक्र रज़ि० बदल दे। कोई माने या ना माने यही अमीर है। हुज़ूर सल्ल० वाला नहज न बदलेगा, मस्अले या लोगों के जज़्बात के एतबार से नहज न बनेगी। बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले नहज पर ही ख़ुदा दिलों के मोड़ की हवाएं चलांएगे। दूसरी बात भी सिर्फ़ हज़रत अबूबक्र रज़ि० में थी। तीसरी बात है कि मुख़ालिफ़ लोगों से भी तअरूज़ न किया जाए, इनका एज़ाज़ो व इकराम किया जाए। जो काम में नहीं लगे। हम से कटते हैं इनका इकराम करना होगा। यह बात हज़रत उमर रज़ि० में नहीं है। सारे हज़रत अबूबक्र रज़ि० के हाथ पर बैअत हुए यह भी हज़रत अबूबक्र रज़ि० में है कि ज़ोर से बात न करना ज़ोर वाले लहजे से बोलना हज़रत उमर रज़ि० मे था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० का दिल लुभाने वाले लहजे के रूख़ से बोलना था। ये काम बता रहा कि तुम्हें करना क्या है। चुनांचे हज़रत अली रज़ि० और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने बैअत न की मज्मे में न थे बुलाया, फ़रमाया क्यों जी हज़रत अली रज़ि०, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भाई होकर इज्तिमआ उम्मत के तोड़ने का इरादा किया, हज़रत अली रज़ि० ने तुमसे अफ़ज़ल कोई नहीं, मुझको मश्विरे में न लिया मुझे इसका रंज है। इसकी सफ़ाई कर दी गई, ख़ालिद अमवी छ' महीने तक उनसे बैअत नहीं हुए। हज़रत अबूबक्र रोज़ाना इनके घर जाकर ज़ियारत करके आते। एक दिन भी बैअत होने को न कहा नियाज़मंदी के साथ इनके पास जाते रहे। हुज़ूर सल्ल० वाले नहज पर चलना है तो चेहरे पर बल लाए बग़ैर ऐसे के साथ सुलूक करना होगा। छः महीने के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा कि तुम यह चाहते हो कि तुमसे बैअत हो जाऊं यों

न कहा कि मुझसे हो जाओ यों फ़रमाया कि जिसमे सारे मुसलमान जुड़े है, इसमें तुम भी जुड़ जाओ उन्वान अलग–अलग है मगर बात एक है उन्वान की ख़ूबी से मुख़ालिफ़ जुड़ जाता है। अन्वान की ख़राबी से मुख़ालिफ़ कट जाता है। जिससे कह रहा हो इसकी दिलजोइ का उन्वान इख़्तियार करो ख़ालिद रज़ि० ने कहा जब मुसलमानों के साथ जुड़ना है। तो इन सबके सामने ही जुडूंगा, चुनांचे अगले दिन सबके सामने मस्जिद में बैअत हुए। यह मुख़ालफ़त इस पर ख़त्म हुई कि सिर्फ़ सहाबी होने की निस्बत पर मिलते रहे बैअत होने पर राज़ी भी न किया।

इस काम को अपने उसूलों पर नहीं उठाना है बल्कि सीरत वाले उसूलों पर उठाना है, कि हमारी निस्बत गंदी है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निस्बत पाक है। हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० भी बैअत न हुए, सारे अंसार इनके हाथ पर बैअत होना चाहते थे। हज़रत उमर तक़रीर तैयार करके ले गए, हज़रत अबूबक्र ने कहा, नहीं मैं करूंगा, अंसार के सारे फज़ाइल बयान किए, अंसार हर ख़ैर में मुहाजिरीन के शरीक हैं लेकिन हुज़ूर सल्ल० का नाइब इनकी कौम में से होगा। हुज़ूर सल्ल० के क़बीले पर सब जुड़ जाएंगे, वरना हर क़बीला अपने शख़्स को खड़ा करके उससे बैअत कर देगा। हज़रत उमर रज़ि० वाली सारी तक़रीर कर दी मगर सलीक़े से, लोग हक़ कहना चाहते हैं الحق مر (हक बात कड़वी होती है) जिसको कड़वा लगे, वह इसे कुबूल ही करे। कहने वाले को हिदायत है कि इस तरह से कहो कि किसी को कड़वा न लगे। आज कड़वी गोलियों पर मिठाई चढ़ाकर खाते जाते हैं। हक़ को इख़्लास और दिलजोइ को मिठाई मिलाकर खाओ, वरना ख़ाली हक़ को मुंह पर मारकर फ़ेंक देगा। एक है

सलीक़ा लोग हक़ के ज़ोर में आकर ही फ़िरक़ा बना लेते हैं। मैं उसूल की कह रहा हूं दूसरा कहता नहीं उसूल यह है हो सकता है दोनों ही तक़्वे के उसूल हो। कहने का सलीक़ा दिल जोड़ेगा या तौड़ेगा। अंसार ने कहा, हमने जन्नत के वास्ते किया था, छोड़ दुनिया को इनके लिए। जोड़ से यह काम बनेगा। जोड़ उस वक़्त तक नहीं बनेगा, जब तक एक–एक तबक़ा यों न तै कर ले कि हमें सिर्फ़ आख़िरत में लेना है। उम्मत के इक़्तिदार, माल, इज़्ज़त लेने वाले बहुत हैं। आख़िरत में लेने का जज़्बा अंसार में भी था और हज़रत अबूबक्र रज़ि० में भी। इक़्तिदार का जज़्बा आज ऐसा घुस गया है कि अपनी चलाने के वास्ते काम करते हैं। आज मुसलमान भी इस्लाम के मिटाने पर लग गया है इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसूलों पर मेहनत की ज़रूरत है बड़ाई चाहने वालों को पहले तो बड़ाई मिलती ही नहीं इसके मुक़ाबले पर बहुत होंगे। अगर बड़ाई मिल गई तो ख़ुदा की मदद से महरूम होगा। यह मज़्मून हदीस में आया है कि जिसे ज़बरदस्ती अमीर बना दिया जाए इसकी मदद के लिए फ़रिश्ता मुक़र्रर होता है। जो ग़लत से सही की तरफ़ इसे ख़ींचता है। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने छुपकर और एलानिया किसी तरह भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चाहा न ख़ुदा से मांगा, मैं बैअत को वापस लेता हूं। सोच–समझकर किसी को बना लो। हज़रत अली रज़ि० ने कहा कि तुमको खिलाफ़त देने देंगे न किसी को लेने देंगे। तीन दिन तक हज़रत अबूबक्र रज़ि० हर नमाज़ के बाद यह एलान करते रहे। सहाबा रज़ि० कहते हैं किसी को अमीर न बनने देंगे। मश्विरे में अपनी जान चलाना, बयान ख़ुद करना, इज़्ज़त की जगह चाहना इस काम वालों का तकब्बुर है। गवर्नरी चाहना ही चाहना इनके लिए बड़ी नहीं बल्कि इस काम में अपनी बड़ाई

चाहेंगे। अपनी बड़ाई की हौस न हो, ख़ुद को पीछे हर मौक़े पर हटा दें। दूसरे इन्हें आगे लाएं। एक दफ़ा हुज़ूर सल्ल० के दौर में हज़रत अबूबक्र रज़ि० सफ़र पर गए। रावी ने मज्मा देखा तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० पसन्द आए, सारे सफ़र में इनके साथ रहा, सफ़र की वापसी पर मैंने वसीयत चाही तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया दो का भी अमीर न बनना। मुझे मालूम हुआ कि अमीरूल मोमिनीन ख़ुद बन गए। मैं फ़ौरन ऊंटनी से मदीना पहुंचा, इनके नाम ग़ालिबन राफ़ेअ ताई है जाकर कहा ऐ अबूबक्र रज़ि० ! मुझे पहचाना ? कहा हां, वसीयत याद है। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फिर माज़ूरियां गिनवाई। इतनी गिनवाई की मेरा दिल मान गया कि यह ज़बरदस्ती अमीर बनाए गए हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इस बद्दू को धुत्कारा नहीं बल्कि समझाया।

दिलों का जोड़ तग़य्यूर का सबब न तक़रीर ज़ोरदार है, न कुछ और बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले उसूल हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि अबू उबैदा रज़ि० के हाथ पर बैअत हो जाओ या उमर रज़ि० के। लोग हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत अबू उबैदा रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि० के पास गए। सबने कहा, हज़रत अबूबक्र के होते हुए मैं कैसे बन जाऊं ? जो अमीर होता है वही इमाम बनता है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबूबक्र को इमाम बना गए। मेरे अमीर बनने का मलतब ? कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े किए हुए को मुसल्ले से सफ़ में लाऊं। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि सोच–विचार का वक़्त नहीं है। इंतिशार का ख़तरा है अपनी बड़ाई, अपनी हैसियत न चाहना, बहुत बड़ी चीज़ है इस सिफ़त वालों से दुनिया जुड़ेगी। साद बिन उबादा रज़ि० मरीज़ के अलावा सारे बैअत हो गए। हज़रत साद रज़ि०

के ऊपर से लोग गुज़रने लगें किसी ने कहा अरे इसे मारोगे ? हज़रत अबूबक्र ख़ामोश रहे, हज़रत उमर रज़ि० ने भड़काने वाला जुमला कहा इनको क़त्ल कर दो। साद बिन उबादा रज़ि० आख़िरत तक बैअत न हुए। इमरान रज़ि० इन पर तशद्दुद करने को कहते। एक अंसारी ने सुना तो कहा हज़रत अबूबक्र रज़ि० से, कि साद रज़ि० अकेली ज़िंदगी गुज़ार रहा है, सारे अंसार तुम्हारे साथ हैं। अगर मस्अला छिड़ा तो क़ौम शायद इसके साथ हो जाए। जोड़ का एक उसूल यह भी निकला कि एक मुख़ालिफ़ को न छेड़ा जाए, वरना मज्मा इसके साथ हो जाएगा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बाद हज़रत उमर रज़ि० ने ज़ुबानी बात इनसे कही, हज़रत साद रज़ि० ने कहलवाया कि तुम्हारा साथी तुमसे अच्छा था। हज़रत उमर रज़ि० ने कहलवाया कि जिसको पड़ोस बुरा लगे वह पड़ोस बदल दे। चुनांचे हूरान चले गए और वहां पेशाब कर रहे थे कि जिनों ने क़त्ल कर दिया, यह है सीखने की, अमल की चीज़ें, इससे इस्लाम चलता है। दिलों में जोड़ हो तो सख़्तियों और तक्लीफ़ों में भी मज़ा आता है वरना राहत में भी मज़ा किरकिरा हो जाता है। हज़रत अबूबक्र के उसूलों से इज्तिमआ बना जो अर्से तक चलता रहा।

साथियों की बरदाश्त:—हज़रत तलहा ने एक सरदार को हज़रत अबूबक्र से ज़मीन दिलवादी, उस सरदार को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी देते थे। परचे पर सब गवाहों ने गवाही कर दी। हज़रत उमर रज़ि० के पास परचा आया तो फ़रमाया कि पहले इस्लाम ग़रीब था। दिल की तालिफ़ की वजह से हुज़ूर सल्ल० देते थे। अब क़ौमी है तुम्हें देने की ज़रूरत नहीं है और हज़रत अबूबक्र के इस परचे पर थूका और फेंक दिया। वह सरदार गुस्से में आकर कहने लगा 'तुम अमीर

या उमर रज़ि० जवाब यह दिया गया कि जिससे दिल जुड़े, फ़रमाया कि वह चाहता तो वही अमीर हो जाता। मैं क्या अमीर। इतने में हज़रत उमर रज़ि० आ गए, ज़मीन आपकी है या मुसलमानों की ? हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि सब मुसलमानों की। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कैसे दे दी ? हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि इससे मश्विरा कर लिया। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि सबसे मश्विरा कर लिया ? हालांकि साफ़ था कि सबसे मश्विरा मुम्किन नहीं अहले हल व अक़्द से ही होगा। हज़रत उमर रज़ि० से कहा कि मैं तो पहले ही कहता था कि तुम बन जाओ, तुम क़व्वी हो। इन उसूलों के अपनाने से इज्तिमआ पैदा होता है, काम की हालात इज्तिमाअ वाले उसूलों के साथ चले तो यह सारी मेहनत सारी दुनिया को पलटवाकर दिखाएगी। कलिमा वाला यक़ीन, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातों पर भरोसा, तर्जुबों, रिवाज के ख़िलाफ़ उन पर हौसले से क़दम उठाना, माल और जान की परवाह न करना, इस तरह तो काम उठेगा तो रूजूअ होना शुरू होगा। अगर इस रूजूअ में यह सिफ़त बदल गई, जोड़ के उसूल टूटने लगे तो यह काम ख़त्म हो जाएगा, ज़ाती फ़ायदे का टकराओ पैदा होगा। जब रूजूअ पैदा हो तो पहले वाली मुआशरत, खाने-पीने लिबास बाक़ी रखो। जब तक तुम बड़े बनने से महफ़ूज़ रहे जो हर अगला दिन पहले दिनों से ज़्यादा महबूबियत और मरजियत को क़ायम करेगा, नफ़्स होने वाले से अपना हिस्सा लेना चहेगा, तुम सब कुछ इस्लाम में लगाते रहो, इस्लाम चलेगा चीज़ें आएंगी। नक़्शों, लिबास, खाने की रग़बत का न होना, मामूली से ज़िंदगी, खाने की साबक़ा तक्लीफ़ वाली तर्तीब को बाक़ी रखो, सतह न बदलो। जब तुम्हें कोई न पूछता था उस वक़्त जो सतह थी वह पूछ में बदल न जाए। सिद्दीक़ का

दौर उठने का है। ना-गवारियों पर भी जोड़ है, ख़ालिद को माज़ूल किया गया, हज़रत उमर रज़ि० के ख़लीफ़ा बनने की इत्तिला ख़ालिद रज़ि० को मिली, तो ख़ालिद रज़ि० ने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन अल्लाह ने इस अबूबक्र रज़ि० को उठा लिया। जो ज़्यादा सबसे ज़्यादा महबूब था और इसे अमीर बना दिया जिसकी मुहब्बत मुझ पर लाज़िम कर दी गई। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने आपस के जोड़ को बाक़ी रखा। वायदों पर यक़ीन से काम उठाया, तहम्मुल से उठाया। फिर ख़ालिद रज़ि० को हज़रत उमर रज़ि० ने माज़ूल किया। नाक वाले ख़ानदान बनी मख़रूम के नाक के बाल जो ख़ालिद रज़ि० थे। इन ख़ालिद माज़ूली के लिए बिलाल हब्शी भेजे गए बिलाल रज़ि० ने अपने हाथ से इनका अमामा उतारकर अपने गले में डालकर हिलाकर कहा 'मालियात का हिसाब दो' शायरों को बैतुलमाल में दिया तो ख़ियानत की अपने पास से दिया तो इसराफ़ किया। बिलाल रज़ि० ने मिम्बर से उतरकर फिर ख़ालिद रज़ि० को अमामा बांधकर गले लगाया कि वह हुक्म था, यह मुहब्बत है। बहुत सो को यह माज़ूली ना-गवार गुज़री, लेकिन इन्होंने ना-गवारियों के साथ जुड़ना सीखा था जब तक यह रहा इस्लाम का उरूज रहा।

अलक़मा बिन उमामा लैसी ने रात को हज़रत उमर रज़ि० को ख़ालिद रज़ि० उमर रज़ि० के शुब्या थे वह समझे यह हज़रत ख़ालिद रज़ि० हैं। अलक़मा ने कहा अरे ख़ालिद इस आदमी ने बहुत बुरा किया, हज़रत उमर रज़ि० ने कुरैद का पूछा कि फिर क्या इरादा है अलक़मा ने कहा ना-गवार लग रही है लेकिन मानना ही है। सुबह को जब जमा हुए, हज़रत उमर रज़ि० ने कहा ऐ ख़ालिद ! रात तुम्हारी अलक़मा से क्या बात हुई थी। ख़ालिद रज़ि० ने कहा कुछ नहीं। अलक़मा बिगड़ने

लगे कि इतना बड़ा आदमी क्या इंकार करता है। ख़ालिद क़सम खाने को तैयार हो गए। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं, वह मैं था। फिर फ़रमाया मुझे अलक़मा जैसे आदमियों की ज़रूरत है। ना–गवारी हुआ करती है राय के ख़िलाफ़ हुआ करता है। लेकिन इसके बावजूद जोड़ को बाक़ी रखा जाता है यानी अमीर को राय दे दो, फिर ना–गवारी के साथ भी जुड़े रहो। ख़ालिद को अमीर बनाना या उमर रज़ि० को ना–गवार था। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि ख़ालिद रज़ि० को माज़ूल कर दो इसकी तलवार की तेज़ी से क़त्ल बहुत होगा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि अल्लाह इस तलवार को सुनता है, कैसे हटा दूं। उमर रज़ि० ने कहा इसे कम–से–कम बुलाकर डाट तो दो। ख़ालिद रज़ि० आए उमर रज़ि० ने फ़ौरन बुरा–भला सुनाया। ख़ालिद रज़ि० ख़ामोश रहे कि शायद अमीर की रज़ामंदी से कर रहा है। अबूबक्र रज़ि० के पास बद्री और बड़े सहाबा किराम से सिफ़ारीश की तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अमीर ही बरक़रार रखा। बाहर निकलकर अब वह सारा ख़ालिद रज़ि० ने उमर रज़ि० को सुनाया जो उमर रज़ि० ने ख़ालिद रज़ि० को कहा था। उमर रज़ि० हक्का–बक्का रहे सुनते रहे, यानी जिसके साथ अमीर हो इसके हर तरह की सुननी पड़ेगी, अपना पित्ता मारना पड़ेगा। इससे ही जोड़ होगा।

जो मैं बता रहा हूं, इससे नफ़्स पर मुशक़्क़त होगी। लेकिन इससे इज्तिमआ होगा। जोड़ा वाली मेहनत मुशाबा होगी नबी की मेहनत की।

काम हर दौर में हुआ मुआविया दौर, यज़ीद तक में हुआ, फ़र्क़ यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक साहब टहल रहे थे, दूसरे ने सवारी की चीज़ खोली, मज़ाक़ के तौर पर, वह झुके, मस्जिद नुबूवी में ऊंगने वाले के

तीर को छेड़ा तो चौंक गए। एक साहब मस्जिद से गए दूसरे ने जूती रान के नीचे छुपा ली, वापस आए तो वह साहब परेशान हुए। इन तीनों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुस्लिम के लिए हलाल नहीं कि मुस्लिम को ख़ौफ़ज़दा करो। मुस्लिम के ऐब का तज़्किरा ग़ीबत है जो हराम है ग़ीबत आजकल बहुत चल रही है। ग़ीबत के हिस्से भी कुछ बाहर रह गए। ग़ीबत की सज़ा दिलों का फटना है दिल फटे तो न तुम मश्विरा कर सकोगे, न जमाअतें लेकर चल सकोगे, अपनी मुवाफ़क़त करने वालों को ढूंढ़ोगे।

ख़ुदा ने दिखा दिया कि सही चलने से तुम्हारे सैकड़ो, करोड़ो पर जीत गए। बाद में चीज़ें बदलनी शुरू हुई, सबसे पहला इकराम मुस्लिम में कमी आई। हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सारी सूबाई, लसानी क़ौमी रगें काटीं। अगर हम लोगों की रियायत करके चलते रहे तो हमारा काम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला बनेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रिश्तेदार कटवाए, क़ौम से लड़वाया गया, वतन वालों को मरवा दिया गया, बद्र में क़ौम का क़ौम से मुक़ाबला है कुरैशी कुरैशी से लड़ रहे हैं। अबू उबैदा रज़ि० ने अपने बाप को बद्र में मारा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम में क़ौमी ख़ानदानी, तब्क़ाती रगें काटीं ज़ाती ताल्लुक़ात वतन, क़ौम, ख़ानदान के ख़त्म कराए रिश्ता काम करने वालों में तोड़ पैदा न कर सकता था। वतन की निस्बत इन्हें तोड़ न सकती थी। वह यह रगें काट चुके थे। मक्का इनका वतन था, मक्का वाली मुआशरत, रहन-सहन, बोल-चाल था। मक्का वालों को मक्का वालों से लड़वाया गया, अली रज़ि०, हमज़ा रज़ि०, उबैदा रज़ि० मुसलमानों में से बाहर निकले बद्र में, मुक़ाबले में मक्का वाले आए। रिश्तेदार रिश्तेदार को मार रहा था, साद

बिन आस रज़ि० को (एक साहब) ने कि शायद तुम मुझसे इसलिए नाराज़ रहते हो कि मैंने तुम्हारे बाप आस को मारा है जो मेरा मामूं था। तुम्हारे बाप आस को अली रज़ि० ने मारा है वही इनसे क़रीब थे। यहूद और नसारा की कोशीश रही है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिसे काटा, उसे यह जोड़े। हुज़ूर सल्ल० ने सबसे काटा अपने से, ख़ुदा से जोड़ा। फिर जोड़ को अपनी निस्बत से चलाया, मेरी बीवियां, मेरे सहाबा, मेरे ख़लीफ़ा हैं, इनसे जोड़ करो। अगर काम करने वाले इन अल्लाह के रसूल सल्ल० की निस्बतों में न रंगे गए तो दूसरे तबक़ात कैसे जुड़ेंगे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० से हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने कहा कि एक दिन तलवार तले आ गए थे, बाप करके छोड़ दिया अबूबक्र रज़ि० ने मैं तो बेटा करके हरगिज़ न छोड़ता। काम को इस तरह करना कि वह रगें कटें जिनके होते हुए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नहीं बनता है अगर वे रगें न कटीं तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताक़त हमारे काम में न आएगी। अपना बाप मर गया तो अली रज़ि० ने कहा कि आपका भटका हुआ चचा मर गया। अली रज़ि० ने रोना-धोना न किया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से न जुड़ा तो क्या बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मिट्टी में छिपा दे। साद बिन मआज़ रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सीने पर हैं। इनके ज़ख़्मों का ख़ून हुज़ूर सल्ल० के सीने पर गिर रहा है। सहाबा रज़ि० ने लेना चाहा तो हुज़ूर सल्ल० ने अपने ऊपर और कर लिया हुज़ूर सल्ल० की गोद में ही मरे। क़ौमें अलग-अलग लेकिन यह दावत व जिहाद का, तालीम व तर्बीब का जोड़ रहा है आइशा रज़ि० कहती हैं कि अबूबक्र रज़ि० और उमर रज़ि० हिचकियों से रो रहे थे। मैं दोनों की आवाज़,

पहचान रही थी। लेकिन ऐसा रोना दूसरे रिश्तेदारों के मरने पर इनसे साबित नहीं कि वह हुज़ूर सल्ल० के अलावा की निस्बतें काट चुके थे। आइशा रज़ि० ने बताया कि बहुत ज़्यादा ग़म की हालत में है। हुज़ूर सल्ल० रोने के बजाए दाढ़ी पकड़ लेते थे चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उस वक़्त दाढ़ी पकड़ रखी थी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जल्दी कर रहे है कि फ़रिश्ते कहीं इनको ग़ुस्ल देने के लिए आसमान पर न ले जाएं। हम इनके ग़ुस्ल से महरूम न हो जाएं। ग़ुस्ल में हुज़ूर सल्ल० शरीक थे, क़ब्र खुदवाई, फ़ावड़े की मार से मिट्टी उड़ती तो मुश्क की ख़ुशबू फैलती, हुज़ूर सल्ल० फरमा रहे थे कि मोमिन की ख़ुबशू का क्या कहना, हम पर सबसे पहले हुज़ूर सल्ल० की, फिर अहले बैअत की, फिर सहाबा की, फिर होते–होते आमाल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत क़ायम हो। समझ में आ गई बात इससे भी इज्तिमआ पैदा होगा। फ़ाड़ने वाली रगें ख़त्म हो गई, काम के एतबार से काम वालों की मुहब्बत व अज़्मत होगी, फिर ख़ुदा मिस्रियों, शामियों, अफ्रिकियों, हिन्दुओं, पाकियों में जोड़ लाएंगे। हज़रत जी मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० फ़रमाया करते थे कि कभी ज़ोर से हवा चलेगी, यह है मेहनत का तरीक़ा इसे बदला तो फिर जो क़ायम हुआ है वह ज़वाल पज़ीर हो जाएगा।

दौरे उस्मानी में इकराम मुस्लिम कमज़ोर पड़ा है। सारा मुआशरा बिगड़ा, सबसे पहली बात यहां से चली कि अमीर पर एतराज़ और ख़ुद अमीर बनना, ग़ैबी निज़ाम पर इजितमआ इफ़्तिराक़ का असर पढ़ता है दौर सिद्दीक़ में शैर व शुक्र थे, हुज़ूर सल्ल० की निस्बत के अलावा सब निस्बतें ख़त्म थीं। इस वक़्त तुर्कों के दिलों में ख़ुदा ने यह बात डाली कि मुसलमान मरते नहीं, मर जाएं तो दोबारा ज़िंदा होकर वापस आ जाते

हैं। तुर्क भाग गए और बग़ैर लड़े वह इलाक़ा मिल गया, दौरे उस्मानी तक तुर्कों को यही ज़हन बना रहा। फिर पांच सौ मुसलमान हाकिम के सामने सारे झुके हुए थे, तारीख़ की किताबों में यह लफ़्ज़ हैं। जब दौरे उस्मानी में एतराज़ चले तो ख़ुदा ने तुर्कों के दिलों में यह बात डाली कि मुसलमान को मारकर तो देखो यह ज़िंदा होता है या नहीं चुनांचे इन्होंने एक मुस्लिम को पकड़कर ज़िब्ह किया फिर छिपकर चौबीस घंटे पहरे से हिफ़ाज़त की और पहला वाला ज़हन ख़त्म हो गया। बस फिर ये तुर्क उठे और मुसलमान मुतमइन थे इस वजह से दो छावनियों में सिर्फ़ पांच–पांच सौ थे, सलमान बहली साथियों को लेकर मुक़ाबले पर आए तो आवाज़ आसमान से सुनी अब तुमको न जताया जाएगा। शहादत पर जन्नत मिलेगी। सबसे पहले अमीर के ख़िलाफ़ होते हैं फिर साथियों की ग़ीबातें, फिर पर्टियां बनती हैं। पांच सौ है शहीद हुए, दूसरी जगह से भी आवाज़ आई की शहीद हो गए ? हालांकि इन हज़ार ने मुल्क संभाल रखा था। आज हम पर रूस, अमेरीका, चीन ग़ैर–मुस्लिमों को रूअब है, हमारा किसी पर नहीं है इसकी वजह यह है कि रूअब ख़ुदा से डलवाने वाला ख़त्म हो गया।

आज मुसलमानों की हवा उखड़ी हुई है, जमेगी अगर उसूल जोड़ वाले चलें। जब जोड़ टूटा तो लाखों–लाख में घुसने वाले ज़ुबैर रज़ि० बिन अव्वाम को एक ने मार दिया। तलहा रज़ि० बिन उवैम रज़ि० को 80, 90, बड़े ज़ख़्म हुज़ूर सल्ल० की हिफ़ाज़त में ख़त्म न कर सके दिल फटे। आपस में, तो अली से लड़ने ख़ैर न समझने पर तलहा के पीछे हटने पर मरवान ने पीछे से तीर मारकर मार दिया। ऐसे आसतिन मारे गए, इज्तिमे के न रहने पर अगरचे कैसे–कैसे कमालात वाले थे। तुम इख़्तिलाफ़ात के साथ काम कर सकोगे इख़्तिलाफ़ात के साथ तो

ऐसे बड़े–बड़े मर गए और कुछ काम न कर सके।

काम तो ऐसे होगा जैसे पहले देखा है काम के चलने और ख़त्म होने का दौर देखो। सहाबा के दौर में तमाम जंगों में 50 हज़ार शहादत से न मरे। लेकिन दिल फटने पर जब आफ़तें आई तो एक लड़ाई सिफ़्फ़ीन में एक लाख मर गए। हज़रत अली रज़ि० के 40 हज़ार और हज़रत मुआविया रज़ि० के 60 हज़ार तीस साल की जंगों में मरने वालों से दुगने इस एक जंग में मर गए। आपस में लड़ने वालों को चमकाते नहीं, मरकर हक़ वाला अपना पालेंगे, यह हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी को दौर था। फिर मुल्कियत का दौर चला, मुल्की बुनियाद ख़ून मुस्लिम पर क़ायम हुई। ख़िलाफ़त में दूसरों के बनाने के लिए अपना ख़ून दिया जाता मुल्कियत में दूसरों के लिए अपना ख़ून बहाया जाता है, मुल्कियत इंहितात का दौर है। ख़ून के बहने को बंद करने के लिए मुल्की मुफ़ाद दूसरों को देकर अपना ख़ून दो। हज़रत हुसैन रज़ि० ने दिखाया कि इफ़राक़ पर हुसैन जैसी शख़्सीयत टक्कर लेकर निज़ाम न बद लो इसकी, यज़ीदी निज़ाम पज़ीद चला, मुल्कियत छा गई हुकूमत में से दीन निकल गया। फिर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ हैं इनके निकाह में ऐसी तरीख़ी औरत थी कि इसका बाप, इसका ख़ाविंद, इसके पांच छः भाई बादशाह बने, सब की लडली, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ गवर्नर हिजाज़ के थे, शान व शौकत है, मज़े हैं, ख़्वाब में हुज़ूर ने कहा ऐ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० तुझे हुकूमत मिली तो इन दो के तरीक़ों पर चलना और हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० की तरफ़ इशारा किया। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा था कि मेरी औलाद में एक आदमी होगा, जो दुनिया में इंसाफ़ भर देगा। हज़रत उमर रज़ि० इनके दादा या परदादा थे। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बादशाहत तलब न की और

तर्तीब में इनका हिस्सा बादशाहत में न था। सुलेमान जब मरने लगे तो क़ाज़ी के पूछने पर कहा आख़िरत के लिए कुछ करना है तो उमर को बनाओ। सुलेमान ने एक डिबिया में लिखकर इस डिबिया पर सबसे बैअत कराई। जिसका नाम इसमें है इसे मानोगे उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने क़ाज़ी ने क़ाज़ी से कहा कि अगर इसमें मेरा नाम है तो इसको निकाल दो। और जिस वलीद का नम्बर बादशाहत से गया था। उसने क़ाज़ी से कहा कि किसका नाम है मेरा नाम न हो तो बादशाह से मैं अपना नाम करा लूंगा। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बादशाह बने तो कहा, ऐ बीवी ! अब ज़िंदगी बदलनी है। दिल चाहे तो मुझसे तलाक़ लेकर किसी मालदार से निकाह कर ले। उसने कहा जो तुम्हारे खुदा है वह मेरा भी है। सारी बंदियों को छोड़ दिया वे सब रो पड़ीं। सारा माल बैतुलमाल में दरबार में जाकर कहा कि जाह व मंसब वाले पीछे हो जाएं, और दीन को दीन के चाहने वाले पीछे से आगे जाएं, उनसे मश्विरे लेकर चलते। ऊपर से महल बन जाए तो फिर इस्लाम चलेगा और अगर ऊपर न बदले तो फिर कितना करें, इस्लाम न चलेगा, किसी हुकूमत का बदलना भी दिल के फेरने से होगा, ऐसा आज भी हो सकता है। हम मेहनत करके ख़ुदा से मांगेगे, ख़ुदा जिस मुल्क की हुकूमत या अवाम को बदल दें, मैंने जो बताया है वे सब होने वाला है बशर्तेकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर मेहनत करें।

एक बात और समझ लो, और इस पर बात ख़त्म करूंगा, पांच बातें काम करने वालों में आ जाएं, फिर खुदा दिल बदल देंगे। ख़ुदा ने बहुत से काम ख़्वाब से लिए हैं। ख़्वाबों के ज़रिए या वैसे ही तब्दील कर दें। पब्लिक का या किसी हाकिम या सर–ग़िना का दिल पलट दें। यह ख़ुदा की तरफ़ से ही होगा,

हम तुम न करेंगे नबियों ने जैसा ज़ाती तौर से किया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा मज्मूआ बनाया, ज़ाती बनने से दुनिया न पलटेगी। अंबिया का नाइब कोई एक शख़्स न बनेगा। बल्कि मज्मूआ बनेगा। ' واعتصموا بحبل اللّٰه جميعا ' मुट्ठी–भर मज्मूआ पांच बातों पर आ जाए। तो ग़ैब से इनकी दुआओं पर तब्दील करेंगे। हम सबका जज़्बा यह हो कि इस मज्मूए में आ जाएं।

पहली सिफ़त यह है कि जिस वक़्त निकलने को कहा जाए, उसी वक़्त निकल जाओ। मूसा अलै० आग लेने गए, वहां से फ़िऔन की तरफ़ सीधा हुक्म मिलने पर चले गए। बीमार, बीवी, दस साल की कमाई की तरफ़ न लौटे। ''انفروا خفافا وثقالا'' हर हाल में निकलना आ जाए। दूसरी सिफ़त यह है कि जान की, माल की, घर की परवाह किए बग़ैर निकल जाए, इनकी परवाह की वजह से ही फ़ौरी क़दम नहीं उठता है।

पांचवीं बात यह है ' وما اسئلكم عليه من اجر ' यानी हम इस मेहनत का आख़िरत में लेना चाहते हैं ख़ुदा से लेने पर काम हो जिनमें काम कर रहे हो इनसे ले लिया तो आख़िरत में न मिलेगा। एक होता है फ़ायदा लेना या चाहना दूसरा फ़ायदा बढ़कर दे तो इसकी दिल जोई को ले लो। हमने अपने किए का सब कुछ आख़िरत में लेना है। जिस मज्मूआ में मेहनत इस पांच बातों पर आएगी। तो इस मज्मे की दुआएं कुबूल होंगी, और किस–किस के दिल पलट जाएंगे। इस कुरबानी व उसूलों की दुआएं अंबिया की तरह कुबूल होंगी। अंबिया के दुआ से ज़ाहिर के ख़िलाफ़, तसव्वुर के ख़िलाफ़ हुआ। इस्लाम ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है कि बहुत ही मिट गया। चंद आमाल इस्लाम के या नाम है। इसका ख़ुदा रूख़ फेरेंगे, दिल पलटेंगे, आगे सारे चलने वाले दीन के अज्ज़ा से मिलेगा, जिसकी मेहनत से दिल

फिरते थे। इसके बराबर कोई मुशररफ़ नहीं, सदियों तक के अज्र है। एक और भी बात है, हमें सूद से मना किया, सूद दर सूद चला देंगे। तुमसे जितने उठे, उनके बराबर तुमको मिलेगा। इनसे जितना उठेंगे इनके बराबर पहलू को और तुमको मिलेगा तुम्हारा हिसाब क़ियामत तक चल सकता है। यह सिलसिला हुज़ूर सल्ल० तक पहुंचता है सबसे ज़्यादा सहाबा किराम का होगा। और सारी उम्मत के बराबर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का होगा, बाद् में आने वालों का तुमको मिलेगा। तुम्हारा तुमसे पहलों को मिलेगा, सबसे ज़्यादा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिलेगा।

कम से कम तुम पुराने आदमी काम करने वाले यह तर्तीब क़ायम कर लो कि साल में चार महीने बाहर और मक़ाम पर आकर आधा वक़्त मस्जिद में और आधा वक़्त घर और कमाई में। मौजूद चार महीने का असर जुबान व मकानी है रमज़ान में नमाज़ और रोज़ा है, हज में हज और नमाज़ है बाक़ी महीनों में नमाज़ है हज से सिर्फ़ एक हज बनता है मक्का एक महीने के क़ियाम से 30 लाख जुहर और 30 लाख फ़जर रमज़ान में एक रोज़ा रख करके रोज़े के लिए, रात को रोज़ा मुम्किन नहीं है। दिन में एक को दो बनाने लगे तो एक भी नहीं रहेगा। चौबीस घंटे में सिर्फ़ एक रोज़ा, नमाज़ें, दीन 210 रात में 140 कुल 350 जितने नफ़्ल इतने फ़र्ज़, रमज़ान और हज नमाज़ ही ज़्यादा बनती हैं। यह सबसे बड़ी है इसलिए यह चार महीने ऊंचे हैं ये दो इबादतों का संगम हैं। खुदा इन चार महीने की तौफ़िक़ दे दें तो यह डाक्टर का कान में लगाने वाला आला है। जिससे वह सारे जिस्म, पेट, कमर, सीना को देखते हैं। 36 साल में सारे मसअलों से निकल जाएंगे, सारे ही मौसम आ जाएंगे। कभी बोलने कके मौसम में यक़ीन का इम्तिहान होगा कभी दफ़्तर का

मौसम या चार महीने लगा दे। तो पहले नम्बर का यक़ीन दूसरा नम्बर है कोई से चार महीने, सबसे कम निसाब। यहूद और नसारा हज को बिगाड़ने के लिए मक्का और मदीना में वह माहौल बना रहे हैं कि दीनदार भी दीन को छोड़कर आता है। इसका तोड़ यह है कि दुनिया भर से आने वाले हाजियों में ऐसी मेहनत करें कि हर हाजी सिर्फ़ मस्जिद के आमाल में वक़्त लगाकर वापस हो तो इसाईयत का तोड़ होगा। अगर पुराने इन चार महीनों को तै कर ले तो यह असल है, यह न हो तो फिर कोई से चार माह, फिर सारी उम्र में चार माह, हर साल चिल्ला, यह तर्तीब है काम की, यह वक़्त है कुरबानी देने का। माश्अल्लाह अपने लोगों ने वक़्त दिया, अल्लाह कुबूल फ़रमाए, अब जिसने आला दर्जे के चार महीने, रमज़ान, शिवाल, ज़ी क़दा, ज़ील हज लिखवाए तो गुज़ारे जाने वाले वक़्त की क़ज़ा नहीं मांगते, अगरचे एक रोज़ की क़ज़ा दो माह है।

यह वक़्त तब्लीग़ का है, घर का नहीं, यह जमाअतें निकली हैं, इन्हें संभालने वाले हों तो यह निकलने वाले मुस्तिक़ल करने वाले बन जाएंगे वरना नहीं। लिहाज़ा उस वक़्त इनके साथ मेहनत करना हज पर असर–अंदाज़ ज़माने के एतबार से होगा। हर जगह हज पर जाने वालों को काम पर तैयार कर लें कि वह मस्जिद वाली ज़िंदगी की वजह से मक्का मदीना जा रहे हैं। बाज़ार की वजह से नहीं मस्जिद वाला वह बन गया तो तुमने यहूद व नसारा से इसे बचा लिया। वरना कोई तस्वीर वाले कपड़े, सुलैब वाली घड़ी, रेड़ियो, टेलीविज़न लाएगा। मक्का मदीना से ग़लत ज़िंदगी लाएगा हाजी को दाई, मेहनती बनाकर भेजो। इस उम्मत की मेहनत यहूदियत और नसरानियत को मदीने में घुसने से रोकना है, वह पूरा पैसा बहाकर यूरोप वाला माहौल मक्का–मदीना में बना रहे हैं और हाजी वे ज़िंदगी लेकर

आया करेंगे, जिसे लोग अमेरिका और यूरोप से लेकर आ रहे हैं। सारी जगहों पर अपनी तहज़ीब फैला चुके लेकिन हिन्दु–पाक के अक्सर मुस्लिम इस तहज़ीब से महफूज़ हैं। एक अमरिकी मुसाफ़िर ने दूसरे से कहा हम बैतुल्लाह दस साल में ले जाएंगे, उसने कहा हंगामा खड़ा हो जाएगा, हम इसकी अज़्मत, व हैबत को ले जाएंगे, क्योंकि हमारे यहां चार हज़ार सऊदी बच्चे पढ़ रहे है, वे वापस जाकर वही करेंगे जो हम कहेंगे, वे न करेंगे जो अल्लाह और रसूल कहेंगे। बहरहाल हाजी ग़लत वक़्त गुज़ार कर वह ज़िंदगी लेकर आ रहे है। जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल को दुखाने वाली है अब जितना वक़्त दे दिया है इसकी क़द्र करो। एक बाज़ार की चीज़ें लेने नहीं जा रहे हो बल्कि अन्दर के अन्वार लेने जा रहे हो। गश्तों, तालीमों और इज्तिमओं के लिए तैयार करके भेजे जाएं, फिर सही मेहनत के वजूद पर अल्लाह बातिल वालों को फैल कर देंगे। अबरहा ने बैतुल्लाह पर हाथ डालना चाहा, इसाइयों ने जस्दे मुबारक को ले जाना चाहा, ख़ुदा ने गैबी निज़ाम से बचाया। अब इसाईयत के ज़वाल का वक़्त है कि वह मक्का–मदीना पर हाथ डाल रहे हैं। इस पर हाथ डालने से अल्लाह की रहमत जोश में आ जाती है बस हम मेहनत करके सबब पैदा कर दें। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल में जगह मिलेगी, क्योंकि इनके जिगर में इनका दीन गिराया जा रहा है। अगले साल पर न छोड़ो वरना जज़्बा ख़त्म हो जाएगा, अभी से लगाओ, जिन्होंने हर साल तीन चिल्लों को कहा है वह अभी से इसका वक़्त तै कर लें वरना शैतान लगाने न देगा और जो वक़्त तै कर लो उससे एक दिन पहले ही चल पड़ो। खुद–ब–खुद ईद की तैयारी में गोश्त 29 रमज़ान को ही ले आते हैं, शायद कल को ईद हो जाए, ऐसी ही बग़ैर ख़त लिखाए अपने वक़्त

पर आ जाओ, वैसे भी इस वक़्त चिल्ला सारे आलम पर असर–अंदाज़ है। पहले वह खड़े हो जाएं, जो इस साल नक़द दे दें।

तज़्किरा

हज़रत मौलाना सैयद अहमद ख़ान साहब मुहाजिर मक्की नूर अल्लाह मरक़ादह

मुरतिब्ब

मुफ़्ती मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी

मदरसा हायातुल उलूम सूनोरी

नेशलन हाईवे नम्बर छः, तहसील मुरतज़ापूर ज़िला अकोला, (महराष्ट्र)

बयान न० 7

मियां-बीवी और बच्चे के जज़्बात की कुरबानी पर मुकम्मल दीन फैलता है।

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाहि अलैहि

1, मार्च 1965 ई० पीर का दिन, दस बजे जगह मैमन सिंह

(मैमन सिंह में रेलगाड़ी को पकड़ने नितरकोना से रेल में स्टेशन तक आए। दूसरी गाड़ी के लिए चार घंटे ठहरना पड़ा, इसलिए शहर की जामा मस्जिद में आए हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० ने बयान फ़रमाया) पुराने साथी जो सफ़र कर रहे थे उन्हें ख़िताब फ़रमाय।

نحمده و نصلی علی رسوله الکریم

भाइयों, और दोस्तो। एक तो इंसान की ख़्वाहिश्त के नफ़्स के तरीक़े हैं यह परेशान करते हैं, एक ख़ुदा के हुक्मों पर चलने के तरीक़े हैं। ख़्वाहिश्त पर चला जाए तो जितनी ख़्वाहिशात इतनी ज़िंदगियां बनती हैं। हर आदमी में ख़्वाहिशात अपने लिए हैं, इज़्ज़त के लिए अपनी ख़्वाहिश। जाह के लिए अपने ख़्वाहिश। तफ़ूक़ भी इंसान की अपनी ख़्वाहिश है, जो

तफ़ूक़ के लिए मेहनत करता है तो इससे टकराव पैदा होता है। ख़ानादानी वतनी टकराव तो होता है फिर चलते-चलते घर में भी टकराव पैदा होता है। सास-बहू की नहीं बनती। यहां तक कि मां-बाप और औलाद की नहीं बनती। आज ख़्वाहिशात का नक़्शा है यूरोप से उठा और सारे आलम में छा गया। किसी से किसी की ज़िंदगी को नुक़्सान और मुसीबत पहुंच रही है। कोई मुहल्ला और कोई घर कोई महक्मा ऐसा नहीं जिसमें किसी को किसी से नुक़्सान न पहुंच रहा हो।

दूसरी ज़िंदगी अहकामात की ज़िंदगी है। इसी तरह चौबीस घंटे की ज़िंदगी में अहकामात छाए हुए हैं। हर-हर शख़्स की ख़्वाहिश का मुक़ाबला अहकामात से पढ़ता है। जब नफ़्स और कुरबानी की ख़्वाहिश आ जाए तो हर शख़्स को फ़ायदा पहुंचता है। इसमें तज़ल्लुल होगा। मोमिन की ज़िल्लत और काफ़िर की इ़ज़्ज़त, तवाज़े होगी तफ़ूक़ के मुक़ाबले में। ख़्वाहिशों वाली ज़िंदगी तफ़ूक़ पर ख़र्च होती है। इसको बिगड़ने के लिए बाक़ी मज्मूआ मुक़ाबिल में होता है, मज्मूआ की ताक़त एक-एक की ज़िंदगी तो तोड़ने पर लगती है। अहकामात वाली ज़िंदगी में तो आदमी ख़्वहिशों को कुरबान करेगा, जो मज्मा इसकी ज़िंदगा बनाने पर आएगा तो इसका हर फ़र्द राहत कुरबान करेगा फिर बाक़ी मज्मूआ इसे राहत देगा, मज्मूआ अगर ऐसा तैयार हो जाए, जो इस पर आ जाए कि इसका हर शख़्स ख़्वाहिशों को कुरबान करता हो, फिर मज्मूए को अल्लाह तआला हावी रखेगा। इससे इज्तिमाई ज़िंदगी बनती है इंफ़िरादी ज़िंदगी वाले इज्तिमाई ज़िंदगी वालों पर राकिटों से भी काबू नहीं पा सकते। इज्तिमाई ज़िंदगी वाले फैलेंगे, फूलेंगे, चमकेंगे, बढ़ेंगे, इसमें औरतो को भी कुरबानी देनी पड़ती है और बच्चों को भी। नमूने के लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी देखो। मियां-बीवी-बच्चा-

इनके जज़्बात कुरबान हुए, यह दाग़ बैल लगाई गई इस्लाम की। अपने जज़्बे बीवियों के जज़्बे बच्चों के जज़्बे कुरबान करने होंगे। जो हज़रत इस्लमाइल अलैहिस्सलाम का नफ़्स का तक़ाज़ा होता हो सूफ़ी–सद टूट गया। हज़रत हाजरा रज़ि० और हज़रत इब्राहीम अलै० के नफ़्स के जो तक़ाज़े हो सकते थे, सब टूटवाए गए, औलाद के मां के बारे में सब तक़ाज़े टूटे, न मकान न कुछ और। इज्तिमाई ज़िंदगी बनाने के लिए नमूना दिया गया। हर एक ने अपनी अपनी नफ़्स की ख़्वाहिशों पर छूरी चलाकर इज्तिमाई ज़िंदगी बनाई। उम्मते मुस्लिमा तो मैदान बनती है, इस मेहनत और ज़िंदगी को ज़िंदा करने के लिए।

मेहनत करने वाला तबक़ा दूसरों को कुरबानी पर लाएगा। लेकिन अगर ख़ुद कुरबानी पर न आए तो दूसरों को कैसे लाएगा। नफ़्स के मुताबिक़ जैसी इमारतें बन रही हैं ऐसी न बनें। मस्जिदे भी नफ़्स के मुताबिक़ जिस तरह बन रहीं हैं वैसे न बनें। बल्कि जैसे हुक्म में बताया गया है वैसे बनें। हुक्मों को तोड़–तोड़कर चीज़ों की फ़िज़ूल ख़र्ची के ज़ाती ऐश के नक़्शे पब्लिक ज़िंदगी को तोड़कर बनाए जा रहे हैं सबसे पहले मस्जिद में जिसने अपना जज़्बा पूरा किया वह वलीद है। शानदार मस्जिद बनाई, कहा कि अल्लाह तआला का घर बना रहा हूं, ख़ूब शानदार हो। हुक्म के मुताबिक़ अल्लाह के घर बने हैं तो एक पैसा भी ख़र्च नहीं हुआ था। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्माइल अलैहिस्सलाम और और हाजरा अलैहिस्सलाम पत्थर उठाकर लाते थे और अल्लाह का घर बना लिया था। अपने जज़्बात को तोड़ा था, हर एक अपने–अपने नफ़्स को तोड़ने वाला था तीन हाथ लगे अल्लाह के घर में। लेकिन जो अपने नफ़्स को तोड़ने वाले थे फ़रमाया ख़्वाब में ज़िब्ह कर रहा हूं बताओ। सीधे न लिटाना कि कहीं मुहब्बत का जज़्बा न

उभर आए, उलटा करके फिर ज़िब्ह करना। हज़रत हाजरा रज़ि० के पास बूढ़ी औरत की शक्ल में शैतान आया कि बाप ज़िब्ह करने के लिए ले जा रहे हैं। जब कहा कि ख़ुदा के हुक्म से ले जा रहे हैं तो पत्थर लेकर मारा और कहा कि ख़ुदा के हुक्म पर सब कुरबान है। पत्थर के नीचे सिमंट न बछाई गई बल्कि हाथों से गारा-पत्थर रखे गए जो नफ़्स को तोड़ने वाले थे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद तीन बार तामीर बदली गई ऊपर का सिर्फ़ बदला लेकिन असल में वही कच्चा गार और पत्थर चल रहे हैं। जब एक मर्तबा इनको उखाड़ने की कोशीश की गई तो अंधेरा हो गया। बजली की कड़क नमूदार हो गई, छोड़ दिया तो मंज़र साफ़, तीन मर्तबा ऐसा किया ऐसा ही हुआ। आख़िर छोड़ दिया ख़ुदा को इब्राहीम अलै०, इस्माईल अलै० और हाजरा रज़ि० के लगे हुए पत्थरों में तगय्यूर मंज़ूर नहीं। अल्लाह के घर की अज़्मत और इज़्ज़त चूने पत्थर से नहीं बनती। सारी दुनिया की क़ीमत मच्छर के पर के बरारब भी नहीं। ख़ुदा का घर बिल्कुल सीधा-साधा इसमें नफ़्स को पूरा न किया जाएगा। फिर अपने मकानों को भी सादा रखेंगे, अब नफ़्स की कुरबानी के तरीक़े ख़त्म हो गए नफ़्स के तक़ाज़ों को दबाना दुनिया से ख़त्म हो गया, इसलिए इस्लाम दुनिया में ख़त्म हो चुका है। लोग इस्लाम पर अहद ले रहे हैं इतना पैसा जमा हो जाए, इस्लाम चल जाएगा, इसलिए कि मुसलमानों को चक्कर में लेने के लिए इस्लाम की आवाज़ के बग़ैर कोई आवाज़ नहीं। इसलिए इस्लाम के नाम पर बिलडिंगें बन रही हैं। यूरोप के नक़्शों वाली जब नफ़्स पर बात आ गई। तो नफ़्स की बात पर ग़ैर-मुस्लिम ज़्यादा पुख़्ता होता है। लिहाज़ा जब नफ़्स के निज़ाम पर ज़िंदगी आएगी तो ज़िंदगी यहूदी और नसरानी चलाएंगे, नफ़्स की कुरबानी दो तो इमाम बनोगे। इसलिए

अल्लाह मुसलमानों में भी निज़ाम इनके हाथ में दे रहे हैं जो यहूद नसारा के मंशा या तरीके पर चलने वाले हो। अनस बिन मालिक रज़ि० ने कहा था यज़ीद हाकिम अगर जाता रहा तो तुम पर सूअर और कुत्तों के हाथ यानी कुफ़्फ़ार के हाथ में निज़ाम आएगा, बाक़ी सब काफ़िरों के हाथ में जाएगा। जब मुसलमान कहकर ज़िंदगी नफ़्स की चला रहे हैं अगर यही हाल रहा तो काफ़िरों के पास आएंगी इसलिए यज़ीद को ग़नीमत जानो इसको कहा जिसने इमाम हुसैन रज़ि० को शहीद कराया। मस्जिद नुबूवी में जिसने घोड़े बांधे, तीन दिन तक मस्जिद नुबूवी में आज़ान नमाज़ न हुई। मिज़ाज नबूवत को जानने वाला सहाबी कह रहा है कि अगर गाड़ी सरकी तो काफ़िरों के पास ज़ाएगी। इससे पता चलता है कि कि़यामत तक अगर अपने यहां के फ़ासिक़ों से निज़ाम हटाया तो काफ़िरों को जाएगा, तुमको न मिलेगा। जब तुम नफ़्स वाले बन गए, इक़्तिदार वाले, ग़िबातों वाले आख़िरत से बे-फ़िक्र बन गए। दुनिया के तालीब बन गए, तो फिर जो नफ़्स के तक़ाज़ो पर बहुत चलता होगा, इसके पास निज़ाम होगा। अगर तुम नफ़्स को क़ुरबान करने वाले हो जाओगे तो नफ़्स के बहुत क़ुरबानी करने वाले तुम पर बिठाए जाएंगे। अगर तुम नफ़्स को क़ुरबान करने वाले बन जाओ, अगर तुमको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली सादा ज़िदंगी पसन्द है अगर इनकी इबादत, अख़्लाक़, मुआशरत पसंद है तो इसके लाने के बारे में नफ़्स की क़ुरबानी पेश करो। अगर चलें नफ़्स पर और कहें कि इस्लाम फैल जाए तो जब वह वजूद में ही नहीं तो फैलगा क्या ? अगर तू इस्लाम इसको कहता है कि मैं ग़ालिब हो जाओं तो फिर यह तो फैला हुआ है

اذلة على المومنين اعزة على الكافرين - इस्लाम है तो इसको पैदा कर।

अब हमारी तुम्हारी निगाहें इस पर पड़ती हैं कि सारे

सूफ़ी–सद लग जाएं तो इस्लाम फैल जाएगा। यों नहीं फैलेगा इस्लाम बल्कि तुम अपने को सूफ़ी–सद कुरबान करो, तो फैल जाएगा इस्लाम। हज़रत इब्राहीम अलै० ने सूफ़ी–सद कुरबानी दी तो इस्लाम वजूद में आ गया। अगर तुम्हें नफ़्स का कुरबान करना आ गया तो इस्लाम फैल जाएगा। पहले तो बाहर निकलकर चले जाएंगे, तो इसी को कुरबानी समझ रहे हैं घर का वही नक़्शा, वही मकान का खाना इसी तरीक़े पर। बहुत से बहुत अगर ज़िंदगी बनती भी है तो एक की। बच्चों और बीवीयों की कुरबानियां जज़्बात की कुरबानियां अगर नहीं करेंगे तो 2 सल्स इस्लाम तो यों गया। अपने बच्चों को हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ मोड़ना है अच्छे–अच्छे मुबालिग़ देखो इनके बच्चे किस तरह जा रहे हैं ख़ुत्बे में बयान किए जाएं पहले ख़ुलफ़ा बयान किए जाएं। तो काम में पहले हुज़ूर को सामने रखो फिर दोस्त ऐसे बनाओ, फिर सुसराली रिश्ता, आदमी सुसराल की रियायत करके चलता है। दो ख़लीफ़े हुज़ूर सल्ल० के ख़िसर और दो आपके ख़िसर, आप सल्ल० ने इनकी ज़िंदगियों को कुरबान करके अपने जैसी बनाई फिर अपनी औलाद इन तीनों को कुरबान किया गया है। औलाद के जज़्बात तो बे–हद पूरे किए जाते हैं। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह देखो, चाह इतनी की यह मेरे जिगर का टुकड़ा है जिसने उसको तक्लीफ़ पहुंचाई तो मुझे पहुंचाई। बेटी का ब्याह सबसे ज़्यादा ग़रीब हज़रत अली रज़ि० से हुआ। बड़े–बड़े मालदार पैग़ाम देने को तैयार लेकिन हज़रत अली रज़ि० को जब कहा गया कि पैग़ाम देकर तो देखो, गए तो जाकर चुप, पूछा क्यों चुप हो, कहा कि फ़ातिमा से निकाह करने आए हो कहा हां। कुछ है। कहा नहीं, बेटी का निकाह कर दिया। जहेज़ मुख़्तसर दिया दोनों की ज़िंदगी तक्लीफ़ों में गुज़री। तीन दिन का फ़ाक़ा कहा कि हुज़ूर

फ़ाक़ा है। फ़रमाया मैं भी फ़ाक़े से हूं। गुलाम मांगा तो डांटा कि गुलाम मुसलमानों के लिए हैं, हमारा घराना तो तक्लीफ़ के लिए है। इमाम हुसैन के दूध पीने के ज़माने में फ़ाक़े और रोते देखा जो ज़ुबान चुसा–चुसा कर बरकत भरी गई। बरकत के तरीके भरे गए लेकिन नफ़्स एक–एक का कुरबान किया गया। जो जितना क़रीब था इसकी इतनी ज़्यादा कुरबानी दी गई।

खिलाफ़त के दो कोने थे एक इसका उठना, फलना–फूलना। एक खत्म होने का दोनों में अपने क़रीब–तरीन को रखा। हज़रत अली रज़ि० दादा पर मिलते हैं ऐ अली ! तू शहीद होगा। दुनिया में कुरबानी देनी है इसलिए ख़बर दी शहादत की, लेकिन हुक्म की वजह से हज़रत अली रज़ि० लड़े। हज़रत उस्मान रज़ि० को फ़रमाया कि न खिलाफ़त छोड़नी है न मुसलमानों को ख़ून बहाना है। अपने क़रीबी रिश्तेदारों को कुरबान कराया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि तरह कुरबानी पर अपनो को तैयार करो इस्लाम के फैलने की यह तर्तीब है। अपना खाना, शादी–ब्याह के चौंचले मकान नफ़्स के तक़ाज़ों को सारे मुस्लिम को गैर–मुस्लिम कर रहे हैं। तुममें देंगे तो ऐसो को देंगे जो हज से मना करें। अगर तुमसे छीनेंगे तो ऐसो को देंगे जो तुम्हारा ख़ून बहाएं। लेकिन अगर नफ़्स की कुरबानी तुमने दे दी तो तुम्हारी कुरबानी तुम्हारे बाद भी इस्लाम को चमकाएगी। उरूज के नक़्शे हुज़ूर सल्ल० के विसाल के बाद हुए। अगर जंगल क़ब्ज़े में आ जाए तो इसको सरमाया नहीं कहते। सरमाए आए कैसर व किसरा से और यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल के बाद हुआ। अब दुनिया से इस्लाम खत्म हो चुका है, इस रास्ते से इस्लाम की ज़िंदगी मांगना ऐसा है जैसे आग से पानी तलाश करना। इस्लाम का जनाज़ा निकल चुका है इस रास्ते से तो आएगा नहीं जिससे

ख़त्म हुआ है। अगर दोबारा इस्लाम की हायात चाहते हो तो नफ़्स की कुरबानी दो, जिस तरह से मुहाजिरीन और अंसार ने सबकी कुरबानी दी। सवारी नहीं तो पैदल फिरे। पत्ते चाबकर फिरे पैसा पास आया तो मेहनत के तकाज़ों पर लगा दिया। नफ़्स की शक्लें नहीं बनाईं। यहां तक कि कैसर व किसरा की शौकातें आईं, तब भी अपने लिए नहीं बनाई। मुल्क आते थे तो हचकियों से रोते थे। फ़रमाते जब मुल्क व माल आते हैं तो दिल फटते हैं अब हमारे दिल फटने का वक़्त आ गया है। मुल्क व माल जब आया तो मुलकों को फ़त्ह करने वाले और चलाने वाले एक-दूसरे को देखकर ऐसे रोते थे जैसे कोई मर जाए। फ़रमाते थे कि इससे मुहब्बत ख़त्म हो जाती है। जिनको नफ़्स के मुक़ाबले मे ज़िंदगी गुज़ारनी आ गई थी। इनके पीछे डंडा लेकर फिरते थे कि तब्दीली न आ जाए। दरवाज़ा लगाया तो एक ने घर जला दिया। हज़रत उबई बिन काब रज़ि० जैसे उस्ताद जिनकी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तारीफ़ की थी, शर्गीद पीछे चले रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने पीटना शुरू किया। अजमियों वाला तरीक़ा कहां से इख़्तियार किया जिस दिन से यह डंडा हटा उस दिन से हमारे अन्दर जूतियां चलनी शुरू हो गईं। हमारा ज़वाल शुरू हुआ। हज़रत उमर रज़ि० की ज़िंदगी का हर दिन इज़्ज़त बढ़ने का दिन था अब हर दिन ज़िल्लत बढ़ने का दिन है। हज़रत उस्मान रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० ने दीन संभाला लेकिन रूख़ फिर गया उध र की तरफ़ मुल्क-माल, जायदाद की तालीब इस्लाम नहीं इनकी कुरबानी इस्लाम है। इज्तिमाई को बनाना ज़ाती को कुरबानी करके तुम्हारी थोड़ी-थोड़ी कुरबानी पर यह काम यहां तक पहुंचा। लोग मुल्कों तक जाने लगे। पहले घरवाली एक दिन के लिए इजाज़त नहीं देती थी जुमा की शब में मस्जिद

में सोने के लिए एक घर वाली इजाज़त नहीं देती थी। बीवी कहती थी आ जाना वरना ख़ैर नहीं डंडे से बीवी ख़बर लेगी। अब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से रूख़ पर आ गई है। या तो यह कि आगे चलकर सही रूख़ पर आ जाएगी। जो रूस और अमेरीका को बदल सकता है या ख़ुदा–न–ख़ास्ता दूसरे रूख़ पर आ गई तो हमारे हाथों से दीन मिटेगा अगर नबियों वाली कुरबानी आ गई तो अल्लाह तआला रूख़ को सही तौर पर बदल देंगे। अपनी लज़्ज़त की, बीवी–बच्चों के फ़ायदे की कुरबानी, एक हमारी ज़ात से कुरबानी में क़ायम रहना और बढ़ना।

पहले इज्तिमआ काम करने वालों में होगा। अगर हर एक खाने की अच्छाई चाहे तो नफ़्स आ गया हर एक अपनी हैसियत चाहे इससे इज्तिमआ टूट जाएगा। कुरबानी क्या है तुम्हारा मस्जिद वाले अमलों के बदले नफ़्स वाली चीज़ों को छोड़कर आना। तालीम के हलक़ों में जमाअत तालीम की हुई तुम दावत में जा रहे हो तो दावत की हुई एक मुल्क के दूसरे मुल्क जाओ तो कुरबानी की शक्ल बनी फिर निकलकर कुरबानी है एक–दूसरे का एहतराम दिल–जोइ जैसे घर में निकलने में नफ़्स को कुरबान किया है इसी तरह ख़ुदा के लिए 24 घंट अपने को ऐसा कर दो। जैसा तुम कुछ भी नहीं हो जहां तुम्हें कहा जाए वहां ही जाओ, नफ़्स हैसियत चाहता है। खाने पर बाप पर मश्विरे पर उभारता है, मेरा मश्विरा मानना चाहिए, यह भी नफ़्स का उभारना है। जैसे ख़ुदा ने तुमको तौफ़ीक़ दी है तो अब यह क़दम उठाओ। अपनी हैसियत न चाहो कोई तुम्हारी राय ले इसकी भी चाहत न हो, राय कुबूल न हो तो। कहो हमारी कोई हैसीयत नहीं नफ़्स कहलाएगा दूसरों को, कि हमारी कोई हैसियत नहीं हमारी राय कोई लेता ही नहीं औरों से कहोगे तो नफ़्स उभारेगा, पर्टियां बनेगी, इज्तिमआ को तोड़ेगा,

अपने नफ़्स को कह दो दूसरों को मत कहो, मेरी हैसियत वाक़ाई नहीं है मुझसे राय ली यह इनका इकराम है। मेरी हक़ीक़त में कोई हैसियत ही नहीं, एक कुरबानी वह जो घर से निकलने के बाद दी। इसार दूसरों की ख़ातिर नफ़्स की कुरबानी अपनी शौहरत की कुरबानी देना। जो जितनी ज़्यादा कुरबानी में बढ़ेगा, इसके हिसाब में इस्लाम फैलेगा, वह इस्लाम की हायात का सबब बनेगा। इसके लिए हमें तुम्हें कहने की ज़रूरत नहीं है। अल्लाह तआला खुद देख रहा है कौन किस सतह की कुरबानी दे रहा है। इस्लाम दुनिया से मिट गया अल्लाह हमें कुरबानी की तौफ़िक़ देकर हमें सबब क़रार देकर इस्लाम को हायात देगा। दिल को बग़ैर अल्लाह तआला के कौन देख सकता है। अपनी शौक़ की कुरबानी को बढ़ाना, निकलने की मिक़्दार को बढ़ाना। एक चिल्ला देते हो तो तीन चिल्ले, तीन चिल्ले देते हो तो साल के छः महीने, फिर निकलने के बाद कुरबानी यह है कि दूसरों को लगाना। फिर घर में जाकर नफ़्स के तक़ाज़ों को कुरबान करना। क्योंकि जिस तरह मकान, खाना, शादी चाहते हैं इनकी कुरबानी घर लौटकर बीवी–बच्चों और सुसराल की चाहत तुम करोगे तो फिर बताओ ऐसे कमज़ोरों से कैसे इस्लाम चलेगा। निकलकर तो आप इस्लाम पर घर पर घरवाली और बच्चों का ज़हन नहीं बना रहे है। जब तक सबका ज़हन नहीं बनाया जाएगा। तब तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली ज़िंदगी कैसे चलेगी। मज्मूए के ज़िंदगी जब चलेगी जब घर वालों के जज़्बात भी मोड़ो, एक दम तो सारी चीज़ें नहीं आएंगी। जितना मौजूदा ज़िंदगी पर ख़र्च है इसको सोचो, सुन्नत तरीक़े पर ख़र्च करो। घर में दावत तालीम चलाई जाए। बच्चों के लिबास की कोशीश करो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो कुछ गुज़र चुका, अल्लाह

तआला को महबूब है। कुछ ने लिख है बड़े मशाइख़ ने लिखा है इस्लाह के जो तरीक़े हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में नहीं थे। बाद में जो तरीक़े चले बतौर तहफ़्फ़ुज़ के वह बिल्कुल सही हैं लेकिन इनमें नूर नहीं है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाख़ाना करने की सुन्नत में है। ख़ैर की बक़ा के लिए जो सूरतें बाद में चली हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिबास की सुन्नत में इतना नूर होगा। जो बड़े–बड़े इस्लाही आमाल में वह नूर न होगा। पाख़ाना की सुन्नत का नूर जब ऐसा है तो लिबास वाला नूर सूरत वाला नूर कैसा होगा। इसके मुक़ाबले में ज़ुल्मत है यहूद–नसारा के तरीक़े हैं। छ' नम्बर पढ़ने के लिए छः बुनियादें हैं। बाक़ी सारा दीन है इस पर पड़ता है। घरों में हम बूढ़े हैं बाहर निकलकर कुव्वत हासिल करें। और बाहर वालों को बदलने की कोशीश करें। लेकिन इसमें तब कुव्वत आएगी जब घरवालों की ज़िंदगी बदलने का इरादा करें जब नफ़्स तुम्हारा टूट जाएगा। बीवी–बच्चा ख़िसर नहीं मानता इसका मतलब यह है कि दीन के बारे में नफ़्स कुचलना होगा। एक ख़ूबसूरत हसीन व जमील वाक़ाई हसीन अपने अन्दर हुस्न को छिपाकर रखती थी। अल्लाह ने फ़रमाया तुझ पर हूरें नहीं छोड़ी जा सकीं। तुझको हूरों पर कुरबान किया जा सकता है, हमारा नफ़्स मरा हुआ है नहीं। बीवी–बच्चे नहीं मानते यह ग़लत है अस्ल में तेरा नफ़्स नहीं मानता हमारा नफ़्स मग़लूब होता तो बीवी–बच्चों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर छोड़ने को आमादा हो जाते या हम इनको बदलने की काशीश करते अल्लाह हमको तौफ़ीक़ दे।

बयान न० 8

नफ़्स की तबाहकारी

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाहि अलैहि

फ़जर की नमाज़ के बाद, दिन बुध, जगह रायविंड हज़रत जी रह० ने रायविंड के मदरसे के पढ़ाने वाले पढ़ने वाले और दावत का काम करने वाले अहबाब को जमा फ़रमाया और आह भरकर यह बयान शुरू किया।

मेरे भाइयों और दोस्तो ! इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन नफ़्स है। जब तक आदमी नफ़्स के मुक़ाबले में न पढ़ जाए। उस वक़्त तक वह चाहे जिस रास्ते से चले ख़तरे में है चाहे तालीम के रास्ते से चाहे तब्लीग़ के रास्ते से चाहे ज़िक्र के रास्ते से चले पकड़ में है। जब तक कि नफ़्स के मुक़ाबले में न पड़ जाएं नफ़्स के मुताबकत के साथ मस्जिदें मदरसा तब्लीग़ चलाने वाले दोज़ख़ में जाते हैं। तिजारत, ज़राअत, से बाल बच्चों के पालने से नफ़्स के मुक़ाबले में आकर करे तो जन्नत मे जाए। सब से बड़ा दुश्मन इंसान के दो पहलूओं के दर्मियान है। मश्विरा देता है, अपना हिस्सा डालता है। सूरत के एतबार से इंसान धोके के एतबार से आ जाता है। क्योंकि यह देखता है कि अल्लाह की चीज़ है ज़्यादा ख़तरे में वह है जो लग रहे हैं अल्लाह की चीज़ों में, क़ुरआन पढ़ाने में तालिम देने में,

मदरसा चलाने में, तब्लीग़ करने में, हम तो दीन वाले हैं, इसलिए वह रो देगा कैसे जो दीनी काम करता है यह नफ़्स पर आ जाए तो इससे ज़्यादा ख़तरे में है, तबक़ा जो ज़िना करता है क्योंकि ज़िना वाला रो सकता है तौबा कर सकता है लेकिन जो अल्लाह की चीज़ में नफ़्स लगा हुआ है वह समझता है कि मैं नेकी पर हूं। बिदअती की तौबा क़ुबूल नहीं होती, बिदअती इबादत समझकर करता है वह जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं फ़रमाया हक़ीक़त में वे इबादतें नहीं हैं। और वह समझकर कर रहे है इसलिए तौबा करेगा ही नहीं। वही तो न आएगी, तब्लीग़, तालीम, ज़िक्र करने वालों पर और उन पर पैसा ख़र्च करने वालों पर, फिर बात समझता है कि अल्लाह के वास्ते कर रहा है और कर रहा हूं ग़ैर–अल्लाह के वास्ते इसलिए तौबा नहीं करेगा। नफ़्स के लिए कर रहा है और समझ रहा है अल्लाह के लिए। अन्दर के एतबार से वह गुनाहगार है और बाहर के एतबार से इबादत गुज़ार है वह अपने पैसे ख़र्च करने पर रोएगा नहीं। मौत के बाद पकड़ होगी कि तुमने कुरआन इसलिए, हदीस इसलिए, तालिम इसलिए, तब्लीग़ इसलिए की थी। इबादत इसलिए की थी ? एक हदीस में आया है, एक साहब कहते हैं कि मैं एक घर में गया अबू हुरैरह रज़ि० हदीस बयान कर रहे थे। असबअी नाम था। जब सारा मज्मा चला गया तो मैंने अबू हुरैरह रज़ि० से कहा मुझको वह हदीस सुना दो जिसको तुमने कानों से सुना हो और पूरी तरह समझा हो जो तुम्हें पूरी तरह याद हो, कहने लगे हां, मैं ऐसी हदीस सुनाऊंगा तुझे, फिर फ़रमाया, मैंने इस घर में हुज़ूर सल्ल० से सुना है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इतना कहते ही कपकपी आ गई और बे–होश हो गए। मैंने सहारा दिया, होश आया वह हदीस सुनाऊंगा जो हुज़ूर सल्ल० से सुनी, देखी

सुनाना शुरू की इसके बाद फिर बे–होश हो गए, गिरने लगे सहारा दिया, फिर होश आया, फिर फ़रमाया कि वह हदीस सुनाऊंगा जो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाई, फिर लम्बी बे–होशी आई, मैंने सीने से लगाया, बहुत देर बाद होश आया। फ़रमाया हुज़ूर सल्ल० ने अबू हुरैरह ! सबसे पहले जो तीन आदमी दोज़ख़ में डाले जाएंगे। तालीम कुरआन पढ़ने वाला, जिहाद करने वाला शहीद, माल ख़र्च करने वाला ये तीन सबसे पहले खुदा के सामने बुलाए जाएंगे। अल्लाह के इल्म लेकर सोने वाले को नहीं लिया। बल्कि अल्लाह का इल्म लेकर सारा दिन रोज़े रखने नमाज़े पढ़ने वाले को लिया। ख़ुदा बुलाकर पूछेगा, कितना अमल किया, अर्ज़ करेगा, सारी रात नमाज़ पढ़ी, सारा दिन कुरआन पढ़ा दिन को रोज़ा रखे, कुरआन पढ़ा, तहज्जुद में कुरआन पढ़ा और सब आपको राज़ी करने के वास्ते किया। अल्लाह फ़रमाएंगे तूने इसलिए पढ़ा था कि लोग कहेंगे आबिद है यह नफ़्स का हिस्सा हो गया। अब सारी इबादत इस पर आ गई कि लोग अच्छा कहें, तुझे लोगों ने अच्छा कह दिया, अब हमसे क्या लेता है, फ़रमाएंगे कि ले जाओ क़ारी साहब हाफ़िज़ साहब को दोज़ख़ में फ़रिश्ते पैरों से पकड़ेंगे और जहन्नम में डाल देंगे।

हमने जान दी थी, क्या किया ? अर्ज़ करेगा कि मैंने यों मेहनत की और जान दे दी, आपके वास्ते अल्लाह फ़रमाएंगे झूठ बोलता है, सारे फ़रिश्ते बोलेंगे झूठ बोलता है। तूने इसलिए किया था कि लोग बहादुर कहें, यह नफ़्स है, अल्लाह के सिवा किसी और वजह से करना यह नफ़्स है। माल बढ़ जाए लोग अच्छा कहेंगे अल्लाह की रज़ा के अलावा जो है वह नफ़्स है। फ़रिश्तों से कहेंगे कि इसको ले जाओ दोज़ख़ में, पैर से पकड़कर घिसटकर ले जाएंगे दोज़ख़ में।

अब माल वाले को पकड़ा जाएगा, पूछेंगे, माल दिया था, क्या किया ? अर्ज़ करेगा कि राह में आपकी रज़ा के वास्ते माल ख़र्च किया। अल्लाह फ़रमाएंगे झूठ बोलता है सारे फ़रिश्ते शोर करेंगे झूठ बोलता है तो लोगों से सख़ी कहलाने को ख़र्च करता था। फ़रिश्ते इसको भी घिसटकर दोज़ख़ में डालेंगे। हुज़ूर सल्ल० ने मेरे घुटने पकड़े और फ़रमाया ये तीन आदमी होंगे जो सबसे पहले दोज़ख़ में डाले जाएंगे। मुनाफ़िक़ बाद में डाले जाएंगे, और ये सबसे पहले दोज़ख़ में डाले जाएंगे। हज़रत मुआविया को जाकर यह हदीस सुनाई तो हज़रत मुआविया रज़ि० इतना रोए कि लोग समझे कहीं इंतिक़ाल न हो जाए रोते–रोते यह आदमी क्या ख़बर लाया ऐसी, फ़रमाया जब करने वालों का यह हुआ तो न करने वालों को क्या होगा। बे–दीनों को दीनदार बनाने के लिए यहीं तीन रास्ते हैं। तालीम से, इबादत से, तब्लीग़ से, माल ख़र्च करने की मदद से लोग दीन पर चलेंगे। जिनसे दीन फैलेगा तालीम तब्लीग़ माल से दीन फैलाना, लेकिन इन तीन की नीयंत में ख़राबी आ गई। क्योंकि दीन के काम करने वालों पर धब्बा आ गया। जब इस तालीम तब्लीग़ माल पर नफ़्स आ गया, तो लोग दीन की तालीम पर बच्चों को न भेजेंगे, इनके नफ़्स की वजह से। मस्जिद में तालीम के हलक़े लगे, नीयत में आ गई शोहरत, तो इससे तो लोग दीन पर नहीं पढ़ेंगे अब बाहर का आदमी तालीम पर क्यों आए। तालिम के हलक़े करने वालों में शौरहत, हिरस, और नफ़्स आ गया तो बाहर की सूरत से दीन नहीं आएगा। तालीम से दीन नहीं आता, दीन तो इख़्लास से आता है। अब इख़्लास जब तालीम देने वालों, जिहाद करने वालों तब्लीग़ करने वालों और माल ख़र्च करने वालों में न था, जैसे मुर्दा जानवर से नस्ल नहीं चलती इसी तरह मुर्दो नमाज़ों, मुर्दा तालीम, मुर्दा

तब्लीग़ से, मुर्दा माल के ख़र्च करने से इस्लाम नहीं चमकेगा। बल्कि बाज़े माल का ख़र्च इस्लाम को डूबो देगा।

मदरसा की शर्तों में हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानूवती बानी दरूल उलूम देवबन्द ने रखा था कि हुकूमत वालों से पैसा नहीं लिया जाएगा। इख़्लास से जो पैसा आए। इससे मदरसा चलेगा। जो सो रहे हैं वह कान खोल लो। सोओ तो मैं जिसे रात नींद नहीं आई, मुझे रात नींद न आई। हम पर ग़फ़लत तारी है नफ़्स के मुक़ाबले पर जब कोई आए, जब कभी अपने को ख़तरे में समझेगा। हज़रत अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि० पहले नम्बर हैं, यह हमेशा अपने इंसान होने पर रोया करते थे, चिड़िया को देखकर हज़रत अबूबक्र ने कहा तो बड़े मज़े में है, खाए–पीए काश में चिड़िया होता, इंसान न होता, ऐ काश मैं किसी मोमिन के बग़ल का बाल होता, काश मैं अपने घरवालों का जानवर होता, वह खिलाकर मोटा करते फिर मेहमानों के लिए काटते और खिलाते, और फिर मेहमान पाख़ाना करके जंगल में डालते, काश कि मैं वह जानवर होता। यह अबूबक्र रज़ि० वह हैं जिनको हुज़ूर सल्ल० ने सैकड़ों मर्तबा जन्नत की ख़ुशबू दी थी। तंहाई में अपनी ज़ुबान को ऐसा मरोड़ते (कि उमर रज़ि० ने देख लिया) जैसे ज़ुबान को आज तोड़कर फेंक देंगे। हमारे सामने कोई मंशा नहीं है, हाल के मस्अले हैं, इस वक़्त रोटी मिज जाए, इस वक़्त मेरी चल जाए, इस चलने पर मैं दोज़ख़ में जाऊंगा या जन्नत में, यह हमारे सामने नहीं है, इस वक़्त मेरी इज़्ज़त हो जाए, तो फिर चाहे जो हो हमारे सामने अंजाम नहीं है। अक़ीदे में लाकर आख़िरत लगाई गई, इसलिए कि सोचे कि इस अमल को आख़िर में क्या होगा। तीन दिन के फ़ाक़ों में मस्जिद में आकर अबूबक्र रज़ि० बैठे, उमर रज़ि० आए इस वास्ते, हुज़ूर सल्ल० भी तश्रीफ़ लाए तो फ़रमाया,

मैंने भी तीन दिन से कुछ नहीं खाया, इसलिए निकलकर आया दो मर्तबा यह वाकिआ हुआ एक मर्तबा अबू अय्यूब अंसारी दूसरी मर्तबा अबू खैसम सहाबी के हां गए। ये दोनों अंसान रोज़ाना हुज़ूर सल्ल० के लिए खाना पका आते थे। जब हुज़ूर सल्ल० नहीं आते थे तब वह खाते, आज अबूबक्र रज़ि० और उमर रज़ि० की ख़ातिर हुज़ूर सल्ल० चले गए वह दौड़कर आए और खजूरें तोड़कर लाए, बकरी का बच्चा ज़िब्ह किया, बीवी पीसने में लगी आटा, सालन पका लिया। अब हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, एक दस्तख़्वान पर पांच चीज़ें, गोश्त, रोटी, खजूर की दो क़िस्में थी तो दो नोश फरमाई, फ़रमाया कल क़ियामत में इसी का सवाल किया जाएगा। हजरत उमर रज़ि० ने पूछा हुज़ूर सल्ल० तीन दिन के फ़ाक़े के बाद मिला, फिर भी सवाल होगा फ़रमाया हां सवाल होगा। इसलिए आख़िरत के दिन को अक़ीदे में शामिल किया गया, हर वक़्त जिस तरह अल्लाह सामने रखते हैं इसी तरह अल्लाह के सामने पेश होने को सामने रखना, हज़रत अबूबक्र इंसान होने पर बहुत रोए, तकरीबन यही हालात उमर रज़ि० के हैं। अंदर के एक तासीर की वह आह है, इंतिक़ाल हुआ, हज़रत उमर रज़ि० वह हैं जिनके दाख़िला इस्लाम पर मुसलमानों ने इज़्ज़त हासिल की थी। और इनके इंतिक़ाल के बाद इज़्ज़त गिरनी शुरू हुई। आजतक वह इज़्ज़त वैसी न बन सकी, नेमतों की बारिश होती थीं, इनके हाथों मुल्कों में इस्लामी ज़िंदगी क़ायम हुई। शाम में कुस्तुन्तुनिया, यमन सौ फ़ीसद इन मुल्कों में मस्जिद का बनना, कुफ्र का ख़त्म होना, मस्जिदों में तालीम, ज़िक्र के हल्के। जब इंतिक़ाल का वक़्त आया, ऐसी ज़िंदगी गुज़ारी हज़रत उमर रज़ि० ने। आज बिलाद अरबिया जो कहला रहे हैं इन सारे मुल्कों में हुज़ूर सल्ल० की मस्जिद का नक़्शा हज़रत उमर रज़ि० ने

चलाया। तक़्वे की ज़िंदगी, अदल-इंसाफ़, खिलाना-पिलाना क़ुरआन कि पहले नम्बर की ज़िंदगी, हज़रत उमर रज़ि० के ज़रिए चली। जब ख़ुद को ख़र्च की ज़रूरत हुई, तो बैतुलमाल से क़र्ज़ा नहीं लिया। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० से कहा कि मुझे ज़रूरत है बैतुलमाल से नहीं लेने का, अगर अदाएगी से पहले मर गया तो गर्दन में क़ियामत को लटका रहेगा। फ़रमाया तेरे जैसे बख़ील से लूंगा जो मेरी नस्लों से भी वसूल कर ले। पेट पर उंगली, जो मदरसे और मस्जिदों को चलाते हैं ये पैसा इनका नहीं होता, अगर अपना समझकर ख़र्च करेंगे, तो एक-एक पाई दोज़ख़ में ली जाएगी। ये पैसा सीधा अल्लाह का है, तब्लीग़ में किसी ने दिया तो अपनी ज़ात पर अगर ख़र्च किया तो क़ियामत में पूछ होगी। पैसा लेने में अगर उसूल तोड़े तो पकड़ और अगर ख़र्च करने में उसूल तोड़े तो पकड़ होगी। ज़ाती माल पर भी यह है लेकिन इसका जवाब इतना मुश्किल नहीं जितना इसका मुश्किल है जो अल्लाह के लिए मिलता है। मुश्क आया, इसको तोलने-नापने की ज़रूरत हुई, ताकि तक़्सीम कर सकें। फ़रमाया, यों जी चाहता है कोई इस मुश्क को नाप देता। बीवी, जो हसन रज़ि० और हुसैन रज़ि० की बहन थी, जिससे निकाह निजात की ख़ातिर किया था, नवासी हुज़ूर सल्ल० की, इसलिए बहुत मुहब्बत थी, कहने लगी कि ऐ अमीरूल मोमिनीन, मैं नाप दूंगी। फ़रमाया हां तू नापेगी तो उंगली में लग जाएगा, फिर खुजाते हुए बालों को लगा लेगी तो इसका जवाब ख़ुदा को क्या दूंगा, तुझसे नहीं नपवाऊंगा। मुहल्ले की और औरत को बुलवाकर नपवाया। इतनी एहतियात थी अल्लाह के माल के इस्तेमाल में, इतनी एहतियात टूटा जूता..........जबकि रोज़ाना लाखों अशरफ़ियां तक़्सीम हो रहीं थीं, घरवाले अलग पीछे पड़ते, असहाबे शौरा पीछे पड़ते कि तुम तंग ज़िंदगी गुज़ारते

हो, सबने बदल ली तुम भी बदल लो। हज़रत हफ़सा रज़ि० से कहा उठकर चली जा तू मुझे हुज़ूर सल्ल० के रास्ते से बचलाने आई है। इनके नाम बता जिन्होंने मुझे ज़िंदगी बदलने को कहा है, उस्मान रज़ि०, तलहा, रजि०, ज़ुबैर रज़ि०, साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० थे। इन्होनें कह दिया था कि हज़रत उमर रज़ि० जब तक मान न जाएं, हमारा नाम न बताना। तो फ़रमाया जा–जाकर कह दे कि मेरे सामने एक सड़क है इस पर मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चलते देखा, अगर मैंने बदल लिया तो कहीं और पहुचूंगा। दुनिया सामने रखकर चलने वाला कभी चल नहीं सकता, मुझे इज़्ज़त मिल जाए तो यह बेवाकूफ़, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर कैसे चल सकता है। आख़िरत के तसव्वुर वाला चल सकता है, इस्लाम इनके हिसाब में फैलेगा। हज़रत उस्मान रज़ि० फ़रमाते हैं सख़्त गर्मी हो रही थी, जलता रेत उड़ रहा था, हम बाग़ में बैठे थे देखा कोई परदेस धूप में आ रहा है जब क़रीब आया तो देखा कि वह हज़रत उमर रज़ि० थे। हम बाहर निकल न सके? इनसे कहा कि अन्दर आ जाइए, फ़रमाया सदक़े का ऊंट खो गया, इसकी तलाश में फिर रहा हूं, अल्लाह को क्या जवाब दूंगा। उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं ग़ुलामों को भेज देता हूं। आप आ जाइए, फ़रमाया कि अल्लाह को ग़ुलाम जवाब न देंगे, मुझे जवाब देना है। हज़रत उमर रज़ि० के दिल में जो बात आती है उस पर वही नाज़िल हुआ करती थी, पर्दा की आयत.........हुज़ूर सल्ल० की बीवियां जब इस्तिंजा जाने लगीं, तो उमर रज़ि० ने जाकर आवाज़ लगाई कि हुज़ूर सल्ल० की बीवियां हैं, वह सौदा है जो लम्बी है। अब हुज़ूर सल्ल० से आकर बीवियों ने कहा तो हुज़ूर सल्ल० के दिल पर चोट आई तो वही नाज़िल हो गई जो उमर रज़ि० के दिल में आई ऐसी

ज़िंदगी थी। इंतिक़ाल के वक़्त मेरे सर को ज़मीन पर डाल दे, इब्ने उमर रज़ि० ने पिंडुली पर रख लिया तो झिल्लाकर कहा ज़मीन पर डाल दे, आसूंओं से ज़मीन को तर कर दिया, ख़ून से भी ज़मीन रंगीं हो रही थी। रोकर फ़रमाते थे ऐ काश कि मुझे मेरी मां न जनती, मैं इंसान न होता, अगर ख़ुदा ने मेरी मग़्फ़िरत न की तो मेरा क्या हाल होगा, अगर पूरी दुनिया का फ़िदया लेकर मुझे तहस-नहस कर दें, मुझे ख़त्म कर दें। मैं जन्नत का मुतालबा नहीं करता, मुझे बस ख़त्म कर दें, रो रहे थे। हज़रत अली रज़ि० ने तसल्ली दी तो फ़रमाया कि ख़ुदा को भी बोल दोगे, कहा हां मैं कहूंगा, हसन, हुसैन उठो और गवाही दो कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था कि उमर रज़ि० जन्नत में जाएगा। इब्ने अब्बास से कहा कि मैं अल्लाह से कहूंगा और यों फ़रमाया कि मेरे पास अल्लाह के लिए कुछ है नहीं जो ले जाऊं। बस यह कह दूंगा कि हुज़ूर सल्ल० के भाई से पूछ लो, बड़ी एहतियात से दुनिया से, रोते पिटते चले गए।

मस्अला तो यह है कि चार ज़रिए हैं, दावत, तालीम, ज़िक्र, नमाज़ अगर यह इख़्लास पर आ जाएं, इसके करने वालों में इख़्लास हो तो इनसे इस्लाम चलेगा। यह जब होगा जबकि ये चारों अल्लाह के रास्ते बन जाएं। अल्लाह का रास्ता तो तिजारत और घर की ज़िंदगी भी बनेगी। लेकिन एक हैं बनने वाले एक हैं बनाने वाले तिजारत, मकान, बीवी बच्चे, दवा-दारू मिलकर चलाना अल्लाह का रास्ता बनेगा। एक तो है बनना अल्लाह का रास्ता यह तो पूरी ज़िंदगी है, अल्लाह से लेने का रास्ता बनना है। अल्लाह को राज़ी करने की नेमतें लेने का, मदद लेने का, कामियाबी लेने का रास्ता तो इंसान की चौबीस घंटे की ज़िंदगी है लेकिन यह बनेगी किससे ? ईमान से, तालीम, ज़िक्र, नमाज़ से, इसलिए इसको सबसे पहले अल्लाह

का रास्ता कहा जाता है। यह इल्म से ही तो होगा, तरीके के बाद में होंगे जहल से अल्लाह का रास्ता नहीं बनेगा इल्म नहीं तो अल्लाह का रास्ता, घर की ज़िंदगी नहीं बनेगी तब्लीग़ में इन चार कामों के लिए निकालते हैं, दावत, तालीम, ज़िक्र, नमाज़ के लिए चलो। इनको महलों, शहर व माहौल मिलकर दुनिया में फैलाने के लिए चलो। पहले अल्लाह का रास्ता यह है अगर यह नहीं अल्लाह का रास्ता बनता तो फिर कोई भी अल्लाह का रास्त न बनेगा। तब्लीग़ के उसूल आ गए, समझे की सारी ज़िंदगी हुज़ूर सल्ल० वाली आ गई; जिस तरह चाहा पैसा ले लिया दे दिया, मदरसा चलाने लगे, जैसे चाहे ज़िंदगी चला ली अेर बेवाकूफ़ तुझे कुछ इल्म आ गया तो कैसे समझ ले कि सारी ज़िंदगी आ गई मुआशरत यह अल्लाह का रास्ता बनेगी, अगर अल्लाह का रास्ता नहीं है। तो वह नफ़्स का रास्ता है, जो इल्म, नमाज़, तब्लीग़, पैसा का ख़र्च अल्लाह का रास्ता नहीं है तो वह नफ़्स रास्ता है। (हज़रत जी खड़े हो गए) सबसे पहले नफ़्स व शैतान मिलकर इन अमलों पर डाका डालते हैं। दावत, तालीम, ज़िक्र, नमाज़, मक्तूबों में पढ़ाना, यह जो पूरी ज़िंदगी को अल्लाह का रास्ते बनाने वाली चीज़ें हैं, नफ़्स की कोशीश है कि इनको अल्लाह का रास्ता बनने न दो। तब्लीग़ में लगकर जब कुछ चलने लगे तो नफ़्स की कोशीश यह है कि यह तालीम न बैठे, नफ़्स कहेगा कि हम तो निज़ाम वाले हैं, इन अमलों से हटाके ले जाएगा। तालीम के ज़रिए अल्लाह का रास्ता बन जाता है। तो नफ़्स इसी से हटाएगा, इन तालीम, तब्लीग़ वालों को पहले नफ़्स हटाएगा। अब सलाह मशिवरा करने लगे, मिज़ाज बना, तालीम और करने लगे, हम मशिवरा कर लें। यों तो तालीम से हटे, हम जगह का इंतिज़ाम कर लें या ज़िक्र कर लें, या इंतिज़ाम नफ़्स का रास्ता

भी बनेगा अगर तालीम अल्लाह का रास्ता बन गई तो यह इंतिज़ाम भी बनेगा लोगों को खिलाना–पिलाना भी बन जाएगा दावत तालीम पर और नमाज़ें अगर अल्लाह का रास्त बन गई तो इंतिज़ाम भी रास्ता बनेगा। इंतिज़ाम वाले तालीम में नहीं बैठते, ज़िक्र में नहीं बैठते लकड़ी लेने को भागा जा रहा है। जब वह अमल ही छोड़ दे जिससे यह अल्लाह का रास्ता बनता तो यह इंतिज़ाम तो होटल वाले, सियासत वाले सब करते हैं। (एक पुराने बग़ैर इजाज़त के चल दिए तो हज़रत जी बहुत नाराज़ हुए फ़रमाया) पूछकर जा और बहुत ही गुस्से में फ़रमाया कि बग़ैर इजाज़त जाना मुनाफ़िक़ की निशानी है।

अल्लाह का रास्ता तो अल्लाह को राज़ी करने का नाम है। अब जिस तालीम में नफ़्स के ख़िलाफ़ बातें आएंगी, जब वह न रहा तो अब नफ़्स का रास्ता बनाकर रहेगा। कोई ताक़त इसको अल्लाह का रास्ता नहीं बनाएगी। काम में लग जाएं तो मफ़हूम बदल दे। अगर नफ़्स ने मफहूम बदल दिया, रिया का नुक़्सान सामने आता जब तालीम में न रहा और हर वक़्त चक्कर में है सारा बिगाड़ फ़क़त इंतिज़ाम वालों से आता है। जो दावत, तालीम, ज़िक्र नमाज़ों में नहीं आते, वह चाय पकाने में नफ़्स का काम करेंगे नफ़्स के साथ अब कुरआन पढ़कर भी तब्लीग़ करके भी और माल ख़र्च करके भी बीवी की सोहबत तक और बच्चों को प्यार करना अल्लाह का रास्ता बनता है, और यह नफ़्स से भी होता है।

बयान न० 9

जितना इस्लाम वाला नहज और इसके अमल के तरीक़े वजूद में आएंगे दूसरे तरीक़े ख़ुद–ब–ख़ुद आसान होंगे

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि

मेरे भाइयों और दोस्तो ! आज दुनिया मेहनत का मैदान बनी हुई है। सैकड़ों तरीक़े ज़िंदगी गुज़ारने के मौजूद हैं हर तरीक़ा में इस तरीक़े के इख़्तियार करने वालों को कामयाबियां नज़र आती हैं। और गोया वे कामियाबियों को अपने–अपने तरीक़े में मुंहसीर हैं और दूसरों के तरीक़ों को अपने तरीक़े में जज़्ब कर लेने और या दूसरे तरीक़ों को ख़त्म कर देने पर तुले हुए हैं। इस सब तरीक़ों की असास इन क़ायनाती नक़्शों पर है जो इनके अपने तर्जुबे और अपने मुशाहेदे में हैं। इस्लाम भी एक तरीक़ा है ज़िंदगी गुज़ारने का जिसका ताल्लुक़ हर इंसान के हर शुब्हे के अमल से है और हालत और सूरत में इसके अमल असरअंदाज़ और फ़ायदेमंद हैं। जितना इस्लाम वाला

नहज और इसके अमल के तरीक़े वजूद में आएंगे दूसरे तरीक़े ख़ुद–ब–ख़ुद आसान होंगे। और इन तरीक़ो वाले इस्लाम को अपना लें और इस्लाम में दाख़िल होते चले जाएंगे और किसी भी तरीक़े वाले और नक़्शों वाले आम इंसानों को इससे रोक नहीं सकेंगे, इस्लाम के असास कायनात के नक़्शों पर नहीं बल्कि इनके मुक़ाबले में अल्लाह तआला की ताक़त और कुदरत, तसव्वुर के, तस्लीम कर लेने और दिल में बिठा लेने पर है। कायनत वाले नक़्शों में इन नक़्शों के एतबार से पाबन्द न बनना बल्कि अल्लाह तआला के तरीक़ों के एतबार से पाबन्द बनकर कायनत के नक़्शों को चलाना और इस्तेमाल करना कायनात के उन ज़ाहिर नक़्शों से यक़ीन हटा लेने और अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात का यकीन जमा लेने पर मुंहासिर है। इस आली एहसास यानी ईमान की ताक़त वजूद में आने के लिए सबसे ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती है। अल्लाह तआला ने इस ईमान की असास के क़ायम होने के लिए मेहनत का मैदान अंबिया किराम के हाथों फ़रमाया और जितनी क़िस्म की कायनात असास क़ायम हुई थीं और इंसानों को क़ियामत तक के लिए जिस असासे कायनात पर मेहनत के मैदान क़ायम करन थे। इन सबके मुक़ाबले में उन पर का यक़ीन निकालने और अल्लाह तआला की कुव्वत का यक़ीन पैदा करने के लिए अलग–अलग ज़मानों में अलग–अलग अंबिया किराम भेजकर शक्लों के मुक़ाबले में अल्लाह तआला की ज़ात आली से सब कुछ हो जाने का यक़ीन और शक्लों से कुछ न हो जाने की आवाज़ें लगवाई गईं और शक्लों के मुक़ाबले में अल्लाह तआला से इस्तिफ़ादा के लिए आमाल दिए गए। जिनमें कायनात में मुशाहेदा करने वालों को फ़ायदा नज़र नहीं आते थे। मगर अंबिया किराम सारे फ़ायदे अपने साथी को ही आमाले ख़ुदावंदी में बताते थे। अब

जितना इन आवाज़ों की मिक्दार और उन आमाल का इंहिमाक बढ़ता चला गया मानने वालों में इस यक़ीन की हक़ीक़त दिल में बैठ गई, आमाल में तरक़्क़ी और कुबूलियत पैदा हुई और अल्लाह तआला ने कायनात के नक़्शों में इस यक़ीन के न मानने वालों को हलाक और बर्बाद करके और मानने वालों को बग़ैर उन कायनात के नक़्शों के आबाद सर–सब्ज़ करके उन कायनात के नक्शों की हैसियत क़ियामत तक के लिए ख़त्म कर दी और अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात से सब कुछ हो जाने का यक़ीन आमाले इलाहिया क ज़रिए इस्तिफ़ादा की एहमियत क़ियामत तक के लिए आने वाले इंसानों के लिए क़ायम कर दी। सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ही इंसान की शुरूआत में पहला एज़ाज़ो–इकराम करके और सब कुछ देकर सिर्फ़ एक बात के ख़िलाफ़ होने पर सब कुछ छीनकर और दुनिया की परेशानी में डालकर यह बतलाया कि नेमतों और अपनी इंसानी तर्कीबों से कुछ नहीं होता, बल्कि मुंअम हक़ीक़ी के मानने ही से नेमतें बाक़ी रहती हैं। और इंसान फलता–फुलता है और ना–मानने से नेमतें छीनती हैं और परेशीन और बलाओं को शिकार होना पड़ता है। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को अक्सीरीयत के नक़्शों में खड़ा करके अक्सीरीयत के नक़्शों के मुक़ाबले में सिर्फ़ एक अल्लाह तआला से होने की आवज़ा लगवाई और ना–मानने की सूरत में इनको इनकी कायनात से हासिल शुदा नक़्शों को डूबोकर इस असास और इससे मुतअलक़ा अमलों की हैसियत को ख़त्म कर दिया। और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से इंसानी नस्ल और शक्ल कायनात को दोबारा क़ायम करके ईमान की कुव्वत और आमाले इलाहिया की अहमियत को क़ियामत तक के लिए क़ायम कर दिया। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को क़ौमी नारों, क़ौमी कुव्वतों के मुक़ाबले में इसी

आवाज़ पर अकेले को उठाकर क़ौम की कुव्वत की शक्लों से न होने और अल्लाह तआला से क़ौम के लिए क़ौम की कुव्वत वाली शक्लों में सब कुछ हो जाने का एलान कराकर न मानने की सूरत में पूरी क़ौम को गैबी ताक़त ज़ाहिर करके इससे हलाक–बर्बाद करके इस एसास की हैसियत–अमल को क़ियामत तक के लिए ख़त्म कर दिया और हज़रत हूद अलैहिस्सलाम और इनके चंद साथियों को बचाकर ईमान और ईमान वाले अमल की अहमियत पैदा की हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की संअतों के नक़्शों में इनसे सर–सब्ज़ और कामियाब न होने और अल्लाह तआला से कामियाब होने की आवाज़ लगवाकर और अल्लाह तआला से इस्तिफ़ादा वाले अमल दिगर न मानने की सूरत में संअत के नक़्शों में हलाक करके संअत की हैसियत को ख़त्म किया और चंद मुट्ठीभर ईमान व अमल वालों को बचाकर संअत के मुक़ाबले में ईमान–आमाल की अहमियत क़ायम की।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हुकूमत के नक़्शों के मुक़ाबले में हुकूमत के नक़्शों से न होने और अल्लाह तआला से सब कुछ हो जाने और हर तरह हो जाने की आवाज़ लगवाई। हुकूमत नम्बर दो यह कि नक़्शे को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पैदाइश रोकने पर लगाकर नक़्शे हुकूमत के मुक़ाबले में पैदा करके दिखलाया और फिर पैदा करके बावजूद नक़्शे हुकूमत के इनके मारने पर मुतवज्जोह होने के पाल कर दिखा दिया और फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़रिए इस जगह से जहां एक घर के पलने का नक़्शा भी नहीं था सारी दुनिया में इनकी कुरबानियों और दुआओं पर उम्मते मुस्लिमा को वजूद देकर और सारी दुनिया से हज का सिलसिला अपने घर की तरफ़ क़ायम करके क़ियामत तक के लिए यह बुनियाद क़ायम कर दी कि अगर अल्लाह तआला न चाहें तो पूरी हुकूमत के

सारे नक़्शों के मुताहारिक हो जाने के बावजूद एक घराने को भी गुज़ंदा न पहुंचे और इतने थोड़े से मस्अले में हुकूमत का पूरा नक़्शा फ़ैल हो जाएं और अगर वह किसी बात को चाह लें तो बग़ैर किसी ज़ाहिर अस्बाब और वसाइल के पूरी दुनिया में हज़ारों बरस के लिए बड़ी से बड़ी चीज़ को चलाकर दिखला दें।

हज़रत यूसुफ़ अलै० के ज़रिए वज़ारत के नक़्शे में वज़ीर के घर के सारे अस्बाब वसाइल के इस्तेमाल के बावजूद वज़ारत की ख़ता को ज़ाहिर करके हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बग़ैर ज़ाहिरी अस्बाब व वसाइल के वज़ारत देकर मुल्क कहत के खौफ़नाक मंज़र में बेहतरीन नज़्म करके वज़ारत के नक़्शे से न होने और अल्लाह तआला की माशियत से सब कुछ हो जाने को मज़बूत कर दिया।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ज़ुफ़ा–इर्ज़ क़ौम में ख़ड़ा करके हर तरह अस्बाब व वसाइल से महरूम करके फ़िऔन की हुकूमत को सारे अस्बाब व वसाइल देकर ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़रिए उठाई और बहुत तरीक़ों से अफ़हाम व तफ़हीम के बाद न मानने की सूरत में हुकूमत के तमाम चाहने वालों के अस्बाब व वसाइल ही में ग़र्क़ और निस्तेनाबूद करके और ज़ुफ़ा–इर्ज़ को बुलन्दियां सर–सब्ज़ियां हर तरह अर्ज़ी व फ़लकी, सफ़ली और अलवी अता फ़रमाकर ईमान व आमाल की राह से बग़ैर अस्बाब व वसाइल के कामियाब हो जाने की बुनियाद को मौकिद किया। और कारून को माल के धंसाकर माल के नक़्शे से कामियाब न होने और ईमान की कुव्वत से माल के मुक़ाबले में कामियाब होने को साबित किया। हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के ज़रिए तिजारत के नक़्शे में न मानने वालों को हलाक करके तिजारत के नक़्शों से न होने की

बुनियाद को क़ायम किया। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को वादी गैर ज़ी ज़रअ में परवारिश फ़रमाकर और कौम सबा को ज़बरदस्त बाग़ात और खेतों और नहरों के नक़्शों में हलाक करके इस बुनियाद इंसानी की हैसियत ख़त्म कर दी।

मुआशरे की ख़राबी पर हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के ज़रिए यही आवाज़ उठाकर न मानने की सूरत में पूरे नक़्शों को मअ नक़्शा वालों के हलाक–बर्बाद करके इंसानी तामीर के नक़्शों की हैसियत ख़त्म कर दी गई। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को तरह–तरह की इजादात के ज़माने में भेजकर इनके ज़रिए बग़ैर इजादात के इनसे ज़्यादा करके दिखला दिया। मिसाल के तौर पर अंधों को बीना कर देना, मुर्दों को ज़िंदा कर देना। मिट्टी का परिंदा बनाकर उड़ा देना वग़ैरह और ज़िंदा आसमानों में उठाकर सारी इजादों की बुनियादों की हैसियत ख़त्म कर दी।

ग़रज़ यह है कि सोर अंबिया अलैहिस्सलाम कलिमा तय्यिबा की आवाज़ को लेकर उठे। ग़ैर अल्लाह से होने का सबने इंकार किया और अल्लाह तआला से सब कुछ हर तरह से उनकी कुदरत से हो जाने को सब ही ने बतलाया, और कुदरत से फ़ायदा हासिल करने के लिए सब ही ने अमली तरीक़े बतलाए नक़्शे जिनके हाथों में थे इनको भी बताया समझाया जिनके हाथों में नहीं थे इनको भी समझाने की कोशीश की। अब जिन्होंने नक़्शों के मुक़ाबले में कुदरत अल्लाह का यक़ीन किया और इनके दिए हुए आमाल से वाबस्तगी हासिल की वह फले–फूले चमके चाहे वे नक़्शे कायनात के हामिल थे। या ग़ैर–हामिल और जिन्होंने इस यक़ीन–आमाल की तरदीद की जो अल्लाह तआला ने अता फ़रमाए थे। अल्लाह तआला ने इनको हलाक–बर्बाद किया चाहे वे नक़्शे ज़िंदगी रखने वाले थे

या न रखने वाले सबके आख़िर में सबके सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने इसी कलिमे वाली बुनियाद पर उठाया। जिस पर अलग–अलग अंबिया किराम अलग–अलग ज़मानों में अलग–अलग शक्लों में उठाए गए थे और आप सल्ल० को सारी दुनिया में फैला हुई सारी शक्लों के मुक़ाबले में उठाया गया, और कियामत तक के लिए उठाया गया। आप सल्ल० अकसीरीयत से न होने के यक़ीन को भी लाए, क़ौमों से न होने को भी, हुकूमत, वज़ारत, तिजारत, खेती–बाड़ी और इजादात वग़ैरह जैसे जितने कामियाब होने के कायनात के हासिल शुदा नक़्शों पर इंसानियत अपनी कामियाबियां वाली मेहनत उठाती हैं। आप सल्ल० उन सबसे कामियाब न होने का यक़ीन और उनकी मुक़ाबले में अल्लाह तआला की कुदरत से हर कामियाब हो जाने का यक़ीन लाए। और तंबक़ा और हर शक्ल आख़्तियार करने वालों के लिए इसी बुनियाद पर अमल के तरीक़े भी लाए। आप सल्ल० ने अकसीरीयत का यक़ीन दिल से निकालकर अल्लाह तआाल से फ़ायदा हासिल करने के लिए अकसीरीयत और अक़्लीयत को अमल के तरीक़े बताए। क़ौमों क्रा यक़ीन निकालकर ताक़तवार और कमज़ोर को अमल के तरीक़े बताए। हुकूमत के नक़्शों का यक़ीन निकालकर अल्लाह तआला का यक़ीन पैदा करके हर एक को अपने–अपने नक़्शों में अल्लाह तआला से फ़ायदा हासिल करने के लिए हर नक़्शे के एतबार से आमाल अता फ़रमाए। ग़रज़ किसी भी नक़्शे वाले बग़ैर नक़्शे वाले को आप सल्ल० ने ऐसा नहीं छोड़ा की जिसको नक़्शों से यक़ीन हटाने की तरफ़ न पुकारा हो। अल्लाह तआला की ज़ात आली से फ़ायदा हासिल करने अमल न बतालाए हो। अब यह यक़ीन सारे शोब्हों वालों के दर्मियान और शक्लों से मरूहम इंसानों में पैदा हो और हर शक्ल वाला

और महरूमी की हालत में इन आमाल को इख़्तियार करके दारेन की तरक़्क़ी और कामियाबी हासिल करके इत्मिनान, सरूर ओर सकून हासिल कर ले और जो इस असास यक़ीन और आमाल की शक्लों से महरूम हों, उन पर फ़ौकियत और बुलन्दी के मंज़र क़ायम हों। इसके लिए सारे ही शोब्हों और शक्लों को इख़्तियार करने वालों को भी मेहनत व मुजाहेदा की दावत दी गई। और जो कायनात की शक्लों से ज़िंदगी बनाने से महरूम हैं इन्हें भी मेहनत करने पर उठाया गया। आप सल्ल० ने सारे ही तबक़ात के इंसानों को इस आवाज़ लगाने वाला बनाया। अगर इस दुनिया के अम्वाल न हों, तो सिर्फ़ जान झोंक देने और तक्लीफ़ें बरदाश्त करने की दावत दी। और अगर माल भी रखता हू तो उस आवाज़ के फैलाने पर माल लगाने की भी जान लगाने के साथ दावत दी जिन्होंने माना। इन्हें इन नक़्शों में से निकालकर अलग–अलग तबक़ात, अलग–अलग हालात वालों, और अलग–अलग संअत वालों और अलग–अलग मालियात वालों को कलमा पढ़ने के एतबार से जमा करके इस आवाज़ को फैलाने की नक़ल–हरकत पर डाला और अल्लाह तआला से फ़ायदा हासिल करने वाले आमाल बतलाकर इसे सीखने–सिखाने की आम फ़िज़ाएं क़ायम कीं। इन आमाल को अपनी ज़िंदगी में पैवस्त होने के लिए मेहनत के मंज़र क़ायम किए। जितने भी कायनात के निज़ाम से क़ायम शुदा ज़िंदगी बनाने के नक़्शे क़ायम थे और इन नक़्शों से वा–बस्ता जितने भी इंसान मौजूद थे। इनमें पहुंचकर अंबिया किराम अलै० की इस मिलकर आवाज़ को पहुंचाया गया। और अंबिया वाले आमाल अल्लाह तआला से इस्तिफ़ादा के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े से इनके सामने रखे गए। ख़ुद को इन आमाल से आ–रास्ता किया गया, और इस बुनियाद के यक़ीन को अपने दिल में

पैवस्त किया गया। दूसरों को कामियाबी की बुनियादें समझाई गई, और इन बुनियादों के रास्ते से दोनों जहां में तरक़्क़ी हासिल करने और अज़ाब और मुसीबतों से बचने की तरफ़ मुतवज्जोह किया, अपने-अपने मक़ाम पर मस्जिदों के ज़रिए नमाज़ में जमा करके ईमान की मज्लिसें भी क़ायम कीं। इल्म के हलक़े भी जोड़े, ज़िक्र और दावत की फ़िज़ाएं क़ायम कीं, हर अमल के तरीक़े सीखने-सिखाने का नज़्म भी किया, और एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारने के लिए। अल्लाह तआला को ख़ुश करने और राज़ी करने वाले अख़्लाक़ की मश्क़ की जाए। इबादतों की भी यक़ीन की कुव्वत के साथ, कामियाबियों के यक़ीन के साथ, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े के साथ ज़ाहीर और बातिन की इत्तिबा करते हुए आदत डाली और दुआओं के ज़रिए अल्लाह तआला से कामियाबी हासिल करने के लिए कायनात के नक़्शों के मुक़ाबले में वह यक़ीन हासिल किया कि कामियाबियां अल्लाह तआला ने अता फ़रमाई थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इंसानों के मस्अलों के, इज्तिमाई, इंफ़िरादी, वक़्तिया और अब्दिया के हल के लिए जितनी भी दुआएं अता फ़रमाइ थीं। सबको यक़ीन की मश्क़ के साथ सीखकर और सिखाकर इख़्तियार करने वाले बनें। और अपनी-अपनी शक्लों और शोब्हों को चलाने वाले के लिए उस आमाल की भी मश्क़ की और मालूमात हासिल की। जिनकी पांबदी के साथ शोब्हों को चलाने में दुआएं कुबूल होंगी। अल्लाह तआला की मदद से अपने-अपने शोब्हों और शक्लों में वह तरक़्क़ी हासिल होगी। जो शक्लों के बढ़ाने की मेहनत में रात दिन लगा रहने वालों को बहुत ख़राबी यक़ीन व अमल हासिल नहीं अगर्चे शक्लें कायनात के नक़्शों की बड़ी से बड़ी इनको हासिल हैं।

जब अपने नक़्शे ज़िंदगी में से हर शख़्स ने वक़्त निकाला

मस्जिदों की तालीम व तर्बीयत में भी अपनी-अपनी जानों से लगने का म्यार क़ायम किया। बेरूनी नक़ल-हरकत में भी हर शख़्स ने अपनी-अपनी जान और माल से हिस्सा लिया तो कलिमा वाला यक़ीन एक हक़ीक़त बनकर दिलों में समा गया। और ज़िंदगी के सारे शोब्हे उन आमाल से आरास्ता हुए जिन पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन शोब्हों वालों और दूसरों की कामियाबी का इन्हिसार बतलाया था और इनकी ख़िलाफ़वर्ज़ी में ज़िंदगी के बिगाड़ने की धमकी दी थी। दुनिया के नक़्शों के अन्दर लगने वालों का नक़्शों के अन्दर लगने का वक़्त अगरचें कम हो गया और आमद में कमी हुई बोजा बेरूनी नक़ल-हरकत के और मस्जिद के अन्दर की अपनी और दूसरों की तालीम-तर्बीयत के और एक दूसरे की ज़रूरत की ख़ैर-ख़बर लेने के और दुनिया के नक़्शों से महरूम इंसानों की अगरचें तक्लीफ़ों के बरदाश्त की मिक़्दार बढ़ी इन्हीं आमाल की शक्लों की वजह से मगर क़ुरआनी लफ़्ज़ और ईमान व आमाल सालेह ज़ुबान के बोल नहीं रहे बल्कि दिल के यक़ीन की एक हक़ीक़त बन गए। जिसके सामने कोई भी शक्ल ठहर नहीं सकती थी। और आमाल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िंदगी में ऐसे पैवस्त हो गए कि ज़िंदगी के ख़तरनाक से ख़तरनाक मंज़रों या ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत मंज़रों उन आमाल से रोक नहीं सकते थे। जब उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में तालीम-तर्बीयत के, दावत, नक़ल-हरकत के नक़्शों में लगने की तायदाद बढ़ती चली जाएगी। और आपके वाले आमाल दावत-तर्बीयत ज़िंदगी में निकलते चले गए, यक़ीन का म्यार भी कलिमे से हटता चला गया और ज़िंदगी के आमाल भी कलिमे वाले तरीक़े से हटते चले गए। यहां तक कि ईमान-यक़ीन एक बोल रह गया और आमाल बहेस व मुबाहेसा

और झगड़े की बुनियादें बन गए, और वे सोर मस्अले उन पर आ पड़े। जो पिछली क़ौमों के कलिमे के लफ़्ज़ के इक़रार के बाद यक़ीन–अमल की ज़ियाह पर आए थे। जिनसे छुटकारा उस वक़्त तक नसीब नहीं हुआ। जब तक दूसरे नबी ने आकर कलिमे की हक़ीक़त के इनमें ज़िंदा होने और अल्लाह वाले आमाल के इनमें ज़िंदा होने के लिए मेहनत नहीं की। जैसे बनी इसराइल पर हज़रत मूसा अलै० ने, ईमान के लिए भी इनमें मेहनत की और ईमान वाली नमाज़ें, इनमें ज़िंदा हो जाने के लिए भी मेहनत की जब ईमान और इसके वाले आमाल इनमें ज़िंदा हुए। अल्लाह तआला ने इनके बुलंद करने के लिए नक़्शों के मुक़ाबले में फिर अपने क़ुदरत कामिला को ज़ाहिर फ़रमाया।

अब इस उम्मत में ईमान की हक़ीक़त के ज़िंदा होने और आमाल का म्यार क़ायम करने की मेहनत के लिए अंबिया किराम माबूस नहीं किए जाएंगे। बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा मेहनत उम्मत के ज़िम्मे आइद होगा। हर शख़्स को अपना यक़ीन ठीक करने और अपने–अपने अमल दुरूस्त करने और दूसरों के यक़ीनों को बदलने और इनमें आमाल का म्यार क़ायम करने के लिए आपके वाले, तालीम–ताल्लुम और तर्बीयत–दावत और नक़ल–हरकत के आमाल के वजूद में लाने के लिए जान भी झोकनी पड़ेगी और माल भी ख़र्च करना पड़ेगा। और इसके चालू होने के लिए हर तरह की तक्लीफ़ें भी बरदाश्त करनी पड़ेंगी। अगर अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से उम्मत के तबक़ात में इस मुबारक, ऊंची मेहनत के लिए जान झोंकने, समझने–समझाने, सिखने–सीखाने अमल करने–कराने का रूख़ उमूमी सूरत इख़्तियार कर जाएगा तो फिर कलिमा तय्यिबा की वह हक़ीक़त इनमें ज़िंदा होगी जिनको सारे अंबिया किराम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और आमाल

का म्यार ज़िंदगी में क़ायम होगा। जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर उठे और जिसने सारे अंबिया किराम के आमाल के तरीक़ों से बे-नियाज़ कर दिया और वे सारी मदद की शक्लें जो कभी दुनिया में ज़हूर पज़िर हुई हैं, ज़ाहिर होंगी और वह खोया हुआ उम्मत का इम्तियाज़ हासिल होगा। जिस पर पिछलो तक ने रश्क ज़ाहिर किया है वरना मुल्क माल के नक़्शों से न कभी ईमान-आमाल ज़िंदा हुआ न कभी होगा।

तब्लीग़ का मक़्सद, अपनी तर्तीब ज़िंदगी के बिगड़ने से जो यक़ीन व अमल में बिगाड़ पैदा हुआ है, इस ज़िंदगी की तर्तीब बदलने के लिए अपनी कोशीश के मुताबिक़ हाथ-पैर मारना और कोशीश करना है ताकि मरने के बाद इन मुजरिमों में हमारा शुमार न हो जो कायनात के नक़्शों में बिल्कुल जज़्ब होकर कलिमे की हक़ीक़त और आमाल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म बिगाड़ और तख़रीब-ज़िया का बाइस बने, बोजा इस तरफ़ तवज्जोह न करने और अपने और अपना वक़्त लगाकर इसको न सीखने और दूसरों को समझा-बुझाकर न सिखाने की सूरत इसके अपने दिमाग़-अक़्ल व तर्जुबे से घड़कर नहीं बल्कि जिस तरह शुरूआत में इस्लाम में जब इसके क़ाय्ल कहीं मौजूद नहीं थे। उसकी हक़ीक़त ज़िंदा करने के लिए, कमर, हिम्मत बांधकार अपने मशग़लों से वक़्त निकाला गया था। और जिन-जिन सूरतों में वक़्त निकाला गया था वह आज भी इन सारे मशग़लों से निकाला जाए। जिनसे यक़ीन की बुनियादें नक़्शों से हटकर अल्लाह तआला के साथ क़ायम हों, और आमाल के तरीक़े ख़्वाहिशों से हटकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ व-बस्ता हूं। तब्लीग़ का मक़्सद अपने-अपने नक़्शों को छोड़ देना नहीं बल्कि अपने यक़ीन व अमल को सही करने के लिए दूसरों में इसका रूख़ क़ायम होने के लिए इन आमाल की

तर्तीब अपनी ज़िंदगी में क़ायम कर लेना है जिनके अश्ग़ाल से यक़ीन बदलते हैं, नीयतें बदलती हैं, आमाल के तरीक़े बदलते हैं, मुआशरा बदलता है अच्छे अख़्लाक़ और नेक आमाल वजूद में आते हैं।

सबसे पहले ईमान की दावत देना है, यानी जिन-जिन नक़्शों में हम मश्ग़ूल है। उनसे न होने का और अल्लाह तआला के क़ब्जे-कुदरत में उन नक़्शों के होने का यक़ीन, चाहे वे इन नक़्शों के मुताबिक़ उनसे कामियाब करके दिखला दे, और चाहे उन नक़्शों को ख़त्म कर दे या उन नक़्शों में ज़िंदगी को बिगाड़कर या ना-काम करके दिखला दें। या उन नक़्शों के बग़ैर भी कामियाब कर दें या छोटे से नक़्शे से बड़ी कामियाबी देकर दिखला दे। या बड़े-बड़े नक़्शों से छोटी-छोटी कामियाबियां फ़रमा दें। ग़रज़ नक़्शे सारे के सारे उनके पाबंद हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो तरीक़े ज़िंदगी गुज़ारने के लाए हैं अगर हम उनको सीखेंगे और उनके मुताबिक़ अपनी पूरी ज़िंदगी गुज़ारेंगे तो अल्लाह तआला बग़ैर उन नक़्शों के या छोटे-छोटे नक़्शों में बड़ी-बड़ी कामियाबियां अपनी कुदरत से अता फ़रमाएंगे। पूरी कायनात की वे क़ीमत नहीं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की है पूरी कायनात के नक़्शे वह हैसियत नहीं रखते जो आप सल्ल० की ज़ाते गिरामी में से सादिर होने वाले आमाल में से एक-एक अमल हैसियत रखता है। आप सल्ल० के वाले एक अमल में जो कामियाबियां हैं वह सारी दुनिया के नक़्शों में नहीं। अब जितना इस दावत को देंगे सुनेंगे, सोचेंगे, इसकी तरावीह के लिए कोशीश करेंगे। उसके शक्लों में नक़्शों से जुदाई से करेंगे तक्लीफ़ें बरदाश्त करेंगे। ये हक़ीक़त वालों में पैवस्त होगी, अपने से मुताअलक़ा नक़्शों की अहमियत-हैसियत कम होकर उनसे मुताअलक़ा आमाल की

अहमियत व अज़्मत पैदा होकर सारे आमाल का इख़्तियार करना जान से भी आसान होगा। माल से भी आसान होगा।

2. इस बुनियाद पर ज़िंदगी के नक़्शों को लाने के लिए, उनसे मुताअल्लिक़ा आमाल से पाबन्द बनने के लिए नमाज़ पर मेहनत करनी है जो आमाल में सब से पहला और सबसे अहम अमल है, जो हक़ीक़त की ज़िंदगी के नक़्शों से निकलकर अपने इस्तेमाल में अल्लाह तआला के अह्कामात की तामील की मश्क़ है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े की इत्तिबा के साथ और इसमें इस यक़ीन की भी मश्क़ है कि जितना मेरा नमाज़ में इस्तेमाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े के साथ होगा, ज़ाहिर–बातिन इतना ही अल्लाह की बरगाह में मेरी दुआ मक़्बूल होंगी और अल्लाह तआला मेरे वाले नक़्शों में कुदरत कामिला से वे कामियाबियां ज़ाहिर फ़रमाएंगे जो मेरे तस्वीर में नहीं आ सकतीं। अब जितना अपनी नमाज़ में मुशाबहत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पैदा होगी और यक़ीन कामियाबियों का नमाज़ के ज़रिए अल्लाह तआला की ज़ात–सिफ़ात के साथ क़ायम होगा। ज़िंदगी के तमाम शोब्हों में उनके वाले आमाल के साथ पाबन्द होकर इस्तेमाल होना आ जाएगा। उस नमाज़ की दावत देनी है ताकि इसकी मश्क़ की रग़बत अपने में और दूसरों में पैदा होकर नमाज़ों की मश्क़ का रूख़ अपने में और दूसरों में पड़े।

3. ईमान की कुव्वत और नमाज़ों की मश्क़ के लिए तालीम की दावत देनी है। सबसे पहले इन फ़ज़ाइल की तालीम का आदी बनना है जिससे ईमान सीखने और नमाज़ की मश्क़ पड़ने की रग़बत और शौक़ अपने और दूसरों में पैदा होकर दावत–ईमान, अल्लाह तआला के ज़िक्र का एहतिमाम और मस्नून दुआएं और क़ुरआन पाक की तिलावत की ख़ुद भी पाबन्दी करनी है और

दूसरों को भी दावत देनी है। इस यक़ीन के साथ कि जितना इन आमाल का इश्तग़ाल बढ़ेगा इतना ही दिलों की क़सावत दूर होकर अल्लाह के आमाल के इश्तग़ाल की सआदत नसीब होगी और ख़ुद उस आमाल की बरकत से भी मुसीबत दूर होंगी। अल्लाह तआला की रहमत के दरवाज़े सभी के लिए खुलेंगे।

4. आपस की मुआशरत वाले आमाल जिनकी दुरूस्तगी के बग़ैर अल्लाह की रहमत मुतवज्जह नहीं होती और दारेन की तरक़्क़ी और नेमतों के दरवाज़े नहीं खुलते। अपनी ज़ातों से उनकी इस तरह मश्क़ की जाए कि हर मुसलमान का मुस्लिम होने के एतबार से इकराम किया जाए। इसकी बे-उंवानियां और ख़राबियों पर मामला करने के बजाए मुस्लिम होने पर जो मामला करना हम पर आइद है। इसको इख़्तियार किया जाए, इस यक़ीन के साथ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े आपस की मुआशरत में जितने ज़िंदा होंगे। ज़िंदगी में उभार अल्लाह की तरफ़ से पैदा होगा। अगरचें नक़्शों के एतबार से पस्त हों। और ख़ुदा-न-ख़ास्ता वे तरीक़े इख़्तियार न किए तो पस्ती में मुब्तला होना पड़ेगा। अगरचें चीज़ों के नक़्शे बुलन्द से बुलन्दतर हासिल कर लिए जाएं। दूसरों में इसकी दावत कुव्वत से दी जाए ताकि अपने में मश्क़ की कुव्वत पैदा और दूसरों में इस मश्क़ का सिलसिला जान व माल से क़ायम हो।

5. इन बुनियादी आमाल की मश्क़ और दावत के लिए ज़िंदगी के रिवाजी नक़्शों में से इनकी दुरूस्तगी की नीयत करके वक़्त फ़ारिग़ किया जाए। इन्हीं आमाल की दूसरों को दावत दी जाए इन्हीं को अपने में आने की मश्क़ की जाए, रोज़ाना कुछ वक़्त मस्जिद में ख़र्च किया जाए। इल्म के हलक़ों में बैठा जाए, सीखा जाए, अच्छी-अच्छी संवार-संवार के नमाज़ें

पढ़ी जाएं। अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाए, और दुआ की कसरत की जाए। इस यक़ीन के साथ अल्लाह तआला की रहमतें उन आमाल से मुतवज्जोह होंगी। हफ़्ते में दो मर्तबा एक गश्त अपने मुहल्ले में और दूसरा गश्त दूसरे मुहल्ले में इन्हीं आमाल के ज़िंदा होने की नीयत से करके और लोगों को जमा करके ईमान–यक़ीन की दावत दी जाएं। और उन आमाल को मस्जिदों में करने पर उभारा जाए ताकि दूसरे इसको इख़्तियार करें और मश्क़ में कुव्वत यक़ीन बढ़े। हफ़्तें में एक रात गुज़ारने के लिए सब जमा किए जाएं और इस दावत और इस ईमान की मश्क़ को और आमाल की मश्क़ को दुनिया में फैलाने के लिए वक़्त फ़ारिग़ करके बाहर निकलने पर आमादा किया जाए हर महीने में तीन दिन के लिए हर साल में एक चिल्ले के लिए, सारी उम्र में तीन चिल्ले के लिए अपना ख़र्च लेकर निकलने पर आमादा किया जाए। दूसरो इलाक़ों में जमआतें बना–बनाकर फिरने के ज़रिए तमाम दुनिया की मस्जिदों इस दावत को ज़िंदा होने और उन आमाल की मश्क़ पर पड़ने के लिए मेहनत का मैदान क़ायम करने की कोशीश की जाए। और जो जो जितने वक़्त के लिए फ़ारिग़ हो जाएं। इन्हें अपने ख़र्च के साथ इस दावत ईमान अमल की मश्क़ के लिए रोज़ाना किया जाए, और जब अपने इलाक़े में मश्क़ अच्छी तर्ज़ पर हो जाए, तो दूसरे मुल्कों में अपने ही ख़र्च के साथ अपनी ही मश्क़ बढ़ाने के लिए इस दावत की तरक़्क़ी के लिए रवाना किया जाए।

हर इलाक़े में मुसलमानों को इस तर्तीब पर उठाने पर पूरी–पूरी मेहनतें की जाए, जितने इस तर्तीब में लग जाएं। इनके साथ इनमें कोशीश बढ़ाते चले जाएं, जो अभी तक इस मेहनत और तर्तीब में नहीं लगे। यहां तक कि अल्लाह तआला

अपने लुत्फ़—फ़ज़्ल से आम मुसलमानों को इस दावत ईमान—अमल की मश्क़ पर खड़ा कर दें। इन्हीं से इनके बिगड़े हुए आमाल की दुरूस्तगी होगी इससे इनकी ज़िंदगी के नक़्शे ईमान की और आमाल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आ—रास्ता होंगे। इससे इनकी पस्ती—ज़िल्लत, उरूज—बुलन्दी से बदलेगी। इससे इनमें से हर एक अपने—अपने नक़्शों में सर—सब्ज़ शादाब होगा।

ये जितनी भी मेहतन की जाए इसमें दुनिया की ग़रज़ शामिल न की जाए न इक़्तिदार और इज़्ज़त सामने हो न मुल्क—माल की हवस हो, न ऐश—इशरत की हवस और तलब हो, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए यह सारी दौड़—धूप और मेहनत की जाएं म्यार अंबिया है। अल्लाह की रज़ा का जज़्बा यही है, उन आमाल क इंहिमाक और इश्तग़ाल पर और इस राह की कुरबानियों पर ख़ुश होकर अल्लाह तआला ईनाम खोल देते हैं। और नक़्शों के पस्त होने के बावजूद या बग़ैर नक़्शों के बड़े—बड़े नक़्शों वालों के मुक़ाबले में अपनी कुदरत कामिला से बुलन्द करके दिखला देते हैं। जितना मुसलमानों में ईमान—अमल की दावत जान—माल के ख़र्च की मिक़्दार अपना फ़रिज़ा समझकर बढ़ेगी और इसके लिए नक़ल—हरकत के मैदान इनमें अमली नक़्शे क़ायम होंगे और तालीम—ताल्लुम इनका शुआर बनेगा। और दूसरों की ज़िंदगी में अपनी जान—माल लगाकर बिगड़ी ज़िंदगियां बन आएंगी, और अख़्लाक़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आरास्ता होगी ख़ुद—ब—ख़ुद इनको देखकर और इनके मस्अले का हल इनकी अपनी ज़िंदगियों के तरीक़े में अध्यन करके क़ौमों की क़ौमे, मुल्क के मुल्क इस्लाम में दाख़िल होंगे।

और थोड़ी सी इनमें मेहनतें करके इनकी ज़िंदगी के ग़लत

तरीक़े बदलकर सही तरीक़े पर इनकी ज़िंदगियों को ले आना मुस्लिम मुआशरे को आसान होगा।

अल्लाह तआला सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल व करम से हम मुसलमानों के दिलों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े की तरफ़ फ़ेर दे। आमीन

बयान न० 10

दावत व तब्लीग़ का मुख़्तसर ख़ाका

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब

मेरे भाइयों और दोस्तो !

मक़्सद यह है कि मेहनत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा ज़िंदा हो और ज़िंदगी के शोब्हों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े चालू हों। जिसकी सूरत यक़ीनों का ज़िंदा करना और इबादत का सही नहज पर क़ायम करना और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ की मश्क़ करना और उन सारी चीज़ों के वजूद में आने के लिए इल्म–ज़िक्र की आम फ़ज़ाइल क़ायम करना है। जिसका तरीक़ा यह है कि वे आमाल जिनमें ज़ाहिरी तौर पर इंसानों को इस दुनिया की कामियाबियां मिलती हुई दिखाई नहीं देतीं और अल्लाह ने अल्लाह के रसूल ने उनमें कामियाबी बतलाई हैं। मिसाल के तौर इबादात व अख़्लाक़ और इनको इनकी हक़ीक़त पर लाने के लिए मेहनत करना इस यक़ीन की मश्क़ के साथ कि अगर हमारी यह इबादात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली प्राबंदी के साथ में ज़िंदा हो जाएंगी, तो अल्लाह तआला अपनी कुदरत से हमें कामियाब फ़रमाएंगे। और ख़ुदा के बन्दों के साथ अगर हमें इनके तरीक़े पर पाबन्द बनकर चलना आ जाएगा तो अल्लाह की मदद मुतवज्जोह होंगी। अब इन

इबादात–अख़्लाक़ के इनकी हक़ीक़त पर आने के लिए वायदे, वाइद का इल्म हासिल करके इसके ऊपर इस यक़ीन इबादात और अख़्लाक़ इख़्तियार किए जाएंगे। जितना ज़िंदगी के सारे शोब्हों में यक़ीन की झलक पैदा होगी और फिर इन इबादातों और अख़्लाक़ के जो तरीक़े बतलाएं गए हैं इनके सीखने–सिखाने की शक्लें इख़्तियार करके इनकी ज़ाहिरी शक्ल को बेहतर बनाया जाएगा। और अल्लाह तआला के ज़िक्र के ज़रिए इन इबादतों में खुशूअ की मश्क की जाएगी, और इन इबादतों को अल्लाह तआला को राज़ी करने के जज़्बे से किया जाएगा, तो इन इबादतों वाले वायदे वजूद में आएंगे। कलाम का खुलासा यह है कि पांच चीज़ों पर जब आमाल आ जाएंगे तो दीन का नक़्शा वजूद में आ जाएगा।

1. यक़ीन की ख़सूसीयात, 2. इल्म की शक्ल, 3. खुदा का ध्यान, 4. अल्लाह की रज़ा का जज़्बा, 5. नफ़्स का मुजाहेदा। पहले दर्जे में ये इबादात मतलूब हैं दूसरे दर्जे में अख़्लाक़ और तीसरे दर्जे में मुआशरा है।

अब इबादात को इन पांच पर लाने के लिए सबसे पहले मेहनत की जाएगी और इन पांच को इबादात में ज़िंदा किया जाएगा, इबादात इन पांच बातों पर ज़िंदा होंगी। बाक़ी शोब्हों में ये पांचों चीज़ें चल जाएंगी और जब ज़िंदगी के शोब्हे इन पांच बातों पर चलने लगेंगे। तो इबादात की तरह बाक़ी शोब्हे भी खुदा की मदद नाज़िल होने का ज़रिया बनेगी। सब तब्लीग़ का तरीक़ाकार अपनी इबादतों को इन पांच बातों के साथ इबादतों की मश्क़ की तरफ़ खिंचना है। इसके लिए मक़ाम पर मेहनतें करनी हैं। और इसी की मेहनत के लिए इलाक़ों में फिरना है और मुल्कों में जाना है। तरीक़ेकार में कुछ आदमी इकट्ठे होकर मुहल्लों में हफ़्ते दो हफ़्ते गश्त करके लोगों को

इकट्ठा करके इस मक़्सद की तरफ़ मुतवज्जोह करते हैं। और मश्क़ के लिए बाहर निकलने का मुतालबा करते हैं। जिसमें हर शख़्स से सारी उम्र में तो चार महीने मांगे हैं और हर साल में चालीस दिन, हर महीने में तीन दिन अपनी-अपनी वुसअत के मुताबिक़ ख़र्चा लेकर निकलने पर आमादा करते हैं। जो लोग तैयार हो जाते हैं। इनको जमाअतें बनाकर रवाना कर देते हैं। और जिन जगहों पर इस काम के जानने वाले हैं इन निगरानी इस मश्क़ के तरीक़े सीखने के लिए रवाना कर देते हैं। जो लोग सीख जाते हैं। उनको दूसरे इलाक़ों और मुल्कों में इस मक़्सद और तरीक़ेकार फैलाने के लिए इनके अपने ख़र्चों के साथ रवाना कर दिया जाता है। बाहर निकलने के ज़माने में अपने चौबीस घंटों को, अलावा सोने, खाने वग़ैरह की ज़रूरतों के वक़्त, चार चीज़ों में वक़्त को मश्ग़ूल रखने की कोशीश की जाती है। कुछ वक़्त इस काम की दावत में ख़र्च किया जाता है। जिसके लिए ख़सूसी अफ़राद से बात-चीत करने के लिए दो-तीन अफ़राद भेज दिए जाते हैं। जो सलीक़े से इन्हें इस बात को समझाएं और अपने साथ मेहनत में शरीक होने पर आमादा करें। कुछ वक़्त पूरी जमाअत पूरे मुहल्ले या बाज़ार में ग़श्त करे मस्जिदों में जमा करके आम मज्मे को इस बात को समझाने की कोशीश करते हैं। और जो जितने वक़्त के लिए तैयार हो जाए अल्लाह तआला की तौफ़िक़ से इन्हें फिर दूसरी जगह इसी मश्क़ के लिए रवाना कर दिया जाता है। इससे फ़ारिग़ होकर तालीम के हलक़े क़ायम किए जाते हैं, जिनमें दीन के जज़्बात पैदा करने वाली किताबों की तालीम होती है, यानी एक आदमी सुनाता है सब ग़ौर से बैठकर सुनते हैं, और कुछ वक़्त नमाज़ की चीज़ों के सीखने-सिखाने में ख़र्च करते हैं। इसके अलावा नमाज़ों की ख़ुशअू व ख़ुज़ूअ की मश्क़ के साथ

कसरत करने को कहते हैं। और बाक़ी वक़्त में कुरआन पाक की तिलावत में और तस्बीहात, ज़िक्र में मशगूल रखने की ताकीद की जाती है। इसके अलावा मुआशरत में अपने तबियत के ख़िलाफ़ एक-दूसरे की ख़िदमत गुजारी, क़द्र-मंज़िलत, एज़ाज़ो व इकराम की मश्क़ की तरफ़ मुतवज्जोह किया जाता है। खाना-पकाना, बोझ उठाना, ज़रूरतों की फ़राहमी नौबत-ब-नौबत जमाअत के अफ़राद करते हैं। और आपस की हमदर्दी, गम गुसारी का माद्दा पैदा करने की मश्क़ की तरफ़ मुतवज्जोह किया जाता है।

निकलने के ज़माने में सिवाए इन बुनियादी मश्क़ की बातों और कामों के और किसी और काम और बात की तरफ़ मुतवज्जह न हो ताकि पूरी तवज्जोह के साथ यह मश्क़ करने से यह तै हुआ रास्ता ज़िंदा हो। जब जमाअतों से मक़ाम पर वापस हो जाएं, तो इन सारे अमलों को अपने मक़ाम पर करने की कोशीश अगरचें थोड़ी मिक़्दार में हो जिनकी मश्क़ के लिए निकले थे। जिसका कम से कम ज़ाब्ता यह है कि हफ़्ते में दो गश्त कर लिया करें, रोज़ाना घंटाभर तालीम करें, किसी एक रात में जमा होकर इस मेहनत में वजूद में आने के लिए मेहनत कर लिया करें, और नफ़्लें और तस्बीहों का कोई न कोई म्यार क़ायम कर लें, इसकी पाबंदी करते रहें, आख़िरी बात यह है कि मक़ामी और बेरूनी जितनी क़िस्म भी मेहनतें की जाएं, दावत की, तालीम की, इबादात की, अख़्लाक़ की, इसमें अपनी जान-माल लगाना मक़्सद हो। सिर्फ़ इसलिए कि अल्लाह तआला राज़ी हों और उम्मत में अल्लाह तआला के राज़ी करने के लिए मेहनत का, जान-माल के खर्च का रिवाज पड़े। क्योंकि इख़्लास के बग़ैर किसी अमल का समरा कोशीश होता है। हब्बी जाह, शोहरत, रिया, लालच वग़ैरह, ख़बीस व महलीक सिफ़ात से की

पूरी कोशीशी की जाए। यहां तक कि अगर किसी के खाने की भी दावत कुबूल की जाए तो दावत का लालच कुबूल की वजह न हो काम के लिए मुफ़ीद होना, इसके कुबूल करने में मुतमअ नज़र हो, ये उम्मत के हर आदमी के लिए अपने जान–माल की ख़र्च की एक ख़ास तरीक़ा मश्क़ है। इसलिए ऐसी सूरतों से एहतराम किया जाएगा। जो इस मश्क़ में जान–माल के ख़र्च की बाइस हों या नाम–नामूद और शौहरत–जाह की तरफ़ मश्क़ करने वालों को खिचने वाली। मिसाल के तौर पर अपने–अपने ख़र्च पर उठाया जाएगा। दूसरों के ख़र्च पर नहीं और अख़्बार, इश्तेहार हर क़िस्म के रिवाजी योजनाओं से एतराज़ किया जाएगा और बहस, मुबाहसा और इख़्तिलाफ़ी से और वक़्त की मुतनज़ा सूरतों से एतराज़ किया जाए। जहां तक हो सके, सादगी, तवाज़ो और अंकसारी, नफ़्स की ख़्वाहिश की कुरबानी के साथ इस मश्क़ को किया जाए और फैलाया जाए। यही इस काम का मिज़ाज है। जिसकी वजह से इस काम के करने वाले अल्लाह के करम से बढ़ रहे हैं। क्योंकि इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके मुबारक सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमाइन वाली मेहनत को रखा गया है। अब जितना इनकी शहादत में 'क़दम बढ़ेंगे। और जितनी इसमें कमी आएगी असरात कम होते जाएंगे।

एक मेहनत का नक़्शा है अगर वह नक़्शा वजूद में आ जाए तो क़ौमें इस्लाम में दाख़िल हो जाएंगी, अगर वह नक़्शा क़ाबू में न आए तो फिर मुसलमान दूसरे मज़हब में दाख़िल होता है। अगर इस नक़्शे के बग़ैर हम दुनिया के मुल्कों में दावत दें तो वह इस्लाम में आकर भी इस्लाम से निकल जाएंगे। जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़, रोज़ा, हज दिया, इसी तरह मेहनत का तरीक़ा भी दिया।

नबियों की दावत मुसलमान को मिली, ये मुसलमान यह समझ रहा है कि लोग कमाएं, खाएं, अपना मौजूदा नक्शा चलाएं, दावत के नक़्शे के साथ ग़ैर-मुस्लिम इस्लाम में आता है दावत का कामिल नक़्शा यह है दावत देना और इसके मुताबिक़ ज़िंदगी बनाना। दावत की नक़ल-हरकत शख़्सी न थी बल्कि मज्मूई थी, और लोग मज़हब जो कुबूल किया करते हैं। शख़्सों से नहीं किया करते हैं बल्कि मज्मे से किया करते हैं, मज़हब मज्मूए को ऐसा बनाने वाला है। अमली ज़िंदगी, ग़ैर मुस्लिमों के यहां भी रियाज़त व मुजाहेदे वाले मिलते हैं। अगर हमारे यहां मुतासीर होकर आएं और अपने मज्मे से बात करें तो वे कहेंगे कि अगर इन मुसलमानों के यहां लोग ऐसे होते हैं तो हमारे यहां भी है। वे भी अपने लोगों की तारीख़ निकालेंगे चाहे वे वाकई में हो या न हो। दावत जो चलेगी, वे एक आदमी के देने से न चलेगी। इज्तिमाई ज़िंदगी लाएंगे। इसमें खाना, पीना, इबादतें, नज़रयात, तखीलात, हाकिमों और ग़रीबों के साथ को देखेंगे। अपनी मदद ख़ुद करने को देखेंगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जो दावत है एक तो इसमें नक़ल-हरकत है और नक़ल-हरकत इज्तिमाई है। अपना पैसा ख़र्च कर रहा है और आपस में ख़ैर-ख़्वाही मक़्सद है। मुल्क और इक़्तिदार मक़्सद नहीं सिर्फ़ यह जज़्बा कि ख़ुदा इनसे राज़ी हो जाए। तुम्हारे मुल्क माल के लिए नहीं आए बल्कि इसलिए आए हैं कि जब तुम उन अमल पर आओगे तो ख़ुदा तुमको चमकाएंगे। फिर वह तुम्हारी इज्तिमाई ज़िंदगी, मसावत, मुआशरत, मुहब्बत की ज़िंदगी देखेंगे। तो वे मुसलमान होंगे, एक वक़्ती तौर पर जमाअत को देखकर मुसलमान हो गया लेकिन वह मक़ामी आदमियों के साथ लग गया। जो मुसमलमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में होते थे वह मदीना मुनव्वरा आते थे। तो

मदीना के लोग उनको दीन सीखाते, खाना खिलाते थे, तोहफ़े देते थे। जब वे वापस गए तो उनको क़बीलों ने देखा कि मदीना मुनव्वरा से जो लोग दीन सीखकर आए, उनको देखा कि वे खुशहाल होकर आए, आपस में हमदर्दी सीखकर आए। तो इनको देखकर तमाम क़बीला मुसलमान हो जाता था। अब बात यह है कि दावत दी जाती है और लोग मुसलमान हो जाते हैं जब इसके अपने यहां दूसरों की ज़िंदगी नहीं देखते तो वह मज़बूत नहीं रहते तो अब अगर हम इस्लाम की दावत दुनिया में उठाएंगे तो मुसलमान को दाई बनाना है। खाना–खिलाना है तो ग़ैर–मुस्लिम हमारे ज़िंदगी को देखकर मुसलमान होंगे। हम ग़ैर–मुस्लिम को दावत देंगे तो हम पर इसके फ़रिज़े आकर पड़ेंगे। इनको भी दीन का सिखाना, खाना, खिलाना, ज़कात अदा करना, ग़रीबों पर ख़र्च करना, हम पर आएगा। अगर हमारी ऐसी फ़िज़ा न होगी तो अगर एक फ़ीसद मुसलमान भी हो गया। ज़िंदगी देखकर अपने मज़हब में वापस लौट जाएगा।

आज मुसलमान, मज़दूर, मज़दूरी के एतबार से बातें करता है आपस में बग़ैर मुस्लिम और ग़ैर–मुस्लिम की तफ़रीक़ के। यूनीयनें हैं किसानों की, मज़दूरों की, ताजिरों की यूनीयनें, अब कामों के करने के तरीक़े ग़ैर–मुस्लिम किए गए। ऐसी सूरत में एक कम्योनिस्ट कोई तहरीक उठाएं, तो वे यूनीयन वाले आएंगे। इनके कहने पर और सब इनकी तरफ़ हो जाएंगे इसी तरह सरमाएदार को गोली लगे तो जो इसकी मदद को आएगा। तो ये मालूम हो जाएगा कि अमेरीका के कितने साथी हैं और कम्योनिस्ट कितने हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में ऐसा नक़्शा बनाया गया था कि दावत, तालीम, इबादत सबका मिज़ाज बन गया था अब तो दावत दी और इसको निज़ामुद्दीन और रायविंड जाकर सीख आओ कि देते हैं। जब

उम्मत का मिज़ाज ऐसा बन जाए तो हर जगह के लोग सिखाने वाले बन जाएंगे। दावत आज के मफ़हूम में ख़ाली दूसरों को काइल कर देना है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला जो नक़्शा है कि दावत का ऐसा हो जाए कि अगर वे मुर्तद हो जाए तो इसको समझाए—बुझाए अगर न समझे तो। इसको क़त्ल कर दे, लेकिन जब क़त्ल करे तो कोई हाथ न उठा सके। जब तक कुफ़्र की चालें चलेंगी इस वक़्त से उस वक़्त तक चालें चलाएंगे, और जब चालें न चलेंगी तो तशद्दुद पर आएंगे। हम दाई तैयार कर रहे हैं, पैसे से कब तक दावत चलाएंगे, कब तक पैसे से तालीम, चलाएंगे बग़ैर ट्रैनिंग के अपने ही को मारेंगे।

पहले से क्योंकि काम निज़ामुद्दीन से हो रहा है इसलिए इनसे मश्विरा करने के लिए इनको बुलाते हैं। और इस काम को जिन्होंने शुरू में किया है कुछ यहां हैं और कुछ वहां हैं और कुछ मक्का में है। अब वे काम करने वाले आपस में मुज़ाकरा करते हैं इस काम के उसूलों पर जमाने के लिए, क्योंकि वे काम करने वाले हैं इसलिए इनको मश्विरा के लिए बुलाते हैं। ख़र्चे की हालत यह है कि जान—माल दोनों का ख़र्च कुरआन व हदीस में बताया है। आपस ही में ख़र्च कर लिया जाता है। जो काम में शरीक होते हैं, काम की अहमियत जिनके ज़हन में आती जाती है, वह इसमें शामिल हो जाता है। उलेमा भी हैं अवाम भी हैं और उलेमा के दूसरे दीनी काम का भी ज़िम्मे हैं इसलिए इसमें कम शिर्कत कर पाते हैं। आप जो आदमी भेजना चाहेंगे, हम इनको सिखाने में समझाने में आपकी मदद करेंगे। शरीअत में जो हुक्म है हम इसको मानते हैं। ये जज़यात कलयात पर मुताफ़रा हैं। पहले कलयात समझ लेते हैं। जिससे जज़यात समझ में आ जाएं। इन कलयात पर मेहनत

करना है, हम जज़्यात नहीं छेड़ते हमारी जमाअत में हर तरह के आदमी है, वे सब एक तरह की मश्क़ करते हैं। मक़सद ये है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के तरीक़े ज़िंदगी के हर शोब्हे में पैदा हों और आम लोगों में अल्लाह तआला की मर्ज़ी के मुताबिक़ मुआशरे की इस्लाह वजूद में आए। और इसकी सूरत उस वक़्त तक मुम्किन नहीं कि मुआशरे की जो असास हैं वे वजूद में न आ जाएं। यानी कामियाबियों को ख़ुदा के हाथ में होने का यक़ीन और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े से अल्लाह तआला से कामियाबियां लेने के इंहिसार का यक़ीन और इसके सीखने-सिखाने की आम फ़िज़ाएं जब तक क़ायम न होंगी मुआशरा क़ायम न होगा। इन तरीक़ों की वजह से जो मुसीबतें आ रही हैं वे ख़त्म हो, और इन तरीक़ों के वजूद पर जो दारेन की नेमतें वायदा की गई हैं। वे दारेन में हासिल हों, हमारा काम है पब्लिक के माल-जान को इस्लाम के फ़ैलाने में लगाना। इस्लाम तरीक़ों का नाम है और जब ख़सूसीयत पैदा हो। जब चीज़ फ़ैला करती है। और जब पब्लिक में इस्लाम की ख़सूसीयत पैदा होंगी तो लोगों को बदलना ख़ुद इस्लाम की दावत है। जब ग़ैरों में इस्लाम की दावत दी जाती है। लेकिन जब वे तरीक़ों में कोई फ़र्क़ नहीं देखते तो इस्लाम नहीं फ़ैलता। जब पब्लिक इस्लाम के फ़ैलाने वाली बनाई जाएगी। तो ये अपनी ज़िंदगी के तरीक़े भी बदलेगी। इस्लामी ज़िंदगी की हक़ानियत बताने को भी सीखेगी। और अपनी ज़िंदगी के तरीक़ों को भी बदलेगी इसके मुताबिक़ इससे इस्लाम फ़ैलेगा। हमारी नज़र है कि यूरोप और ऐशिया की क़ौमें इस्लाम में आएं। लेकिन इस काम को न कोई हुकूमत कर सकती है न कोई सरमायादार कर सकता है। पब्लिक को पब्लिक ही के पैसे से निकलना, पब्लिक का ज़हन हो कि पैसा

लगाना है। अब पब्लिक के तौर पर काम को उठाएंगे, तो इस काम का ज़हन बनेगा, इस पब्लिक में सरमाया दार, ग़रीब ताजिर, खेती–बाड़ी वाले सभी आते हैं।

दावत व तब्लीग़ से मुताल्लिक़ मुफ़्ती मुहम्मद रोशन शाह साहब क़ासमी

मदरसा हायातुल उलूम सोनूरी, ज़िला अगोला, महाराष्ट्र की मुरतिब्ब की हुई अहम किताबें।

1. मलफ़ूज़ात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० पहला हिस्सा
2. मलफ़ूज़ात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० दूसरा हिस्सा
3. मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० पहला हिस्सा
4. मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० दूसरा हिस्सा
5. बयानात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० पहला हिस्सा
6. बयानात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० दूसरा हिस्सा
7. बयानात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० तीसरा हिस्सा
8. बयानात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० चौथा हिस्सा
9. बयानात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० पांचवां हिस्सा
10. मकातिब हज़रत मौलाना सईद अहमद खान साहब मक्की पहला हिस्सा

11. मकातिब हज़रत मौलाना सईद अहमद खान साहब मक्की दूसरा हिस्सा
12. मकातिब हज़रत मौलाना सईद अहमद खान साहब मक्की तीसरा हिस्सा
13. मकातिब हज़रत मौलाना सईद अहमद खान साहब मक्की चौथा हिस्सा
14. बयानात हज़रत मौलाना सईद अहमद खान साहब मक्की पहला हिस्सा
15. बयानात हज़रत मौलाना सईद अहमद खान साहब मक्की दूसरा हिस्सा
16. मलफ़ूज़ात हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब रह० पहला हिस्सा
17. मलफ़ूज़ात हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब रह० दूसरा हिस्सा
18. मकातिब हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब रह० पहला हिस्सा
19. मकातिब हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब रह० दूसरा हिस्सा
20. बयानात हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब रह० पहला हिस्सा
21. बयानात हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब रह० दूसरा हिस्सा

22. दरूल उलूम देवबन्द के मुफ़्ती आज़म मुफ़्ती महमूदुल हसन गंगौही रह० तब्लीग़ी इज्तिमात में किए गए बयानात का मज्मूआ

23. दरूल उलूम देवबन्द के मौलाना क़ारी मुहम्मद तैयब साहब रह० इज्तिमात में किए गए बयानात का मज्मूआ पहला हिस्सा

24. हज़रत मौलाना अबुल हसन अली मियां नदवी के तब्लीग़ी इज्तिमात में किए गए बयानात का मज्मूआ

25. हज़रत मौलाना मंज़ूर साहब नौमानी रह० के तब्लीग़ी इज्तिमात में किए गए बयानात का मज्मूआ

26. मकातिब हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० (मौलाना अली मियां ने जो तर्तीब दी इसके अलावा)

मजमूआ बयानात

मुकम्मल (6 भाग)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब कांधलवी रह०

(भाग –3)

यासीन बुक डिपो
2127, गेदगरान, दिल्ली–6

विषय सूची

क्या ? कहां ?

तर्तीब देने पर बात

मेरा क़लम और अल्लाह तआला के एहसानों के शुक्र से आजिज़ है कि इस रब करीम ने मुझ नाकारा को बुर्जुगों के मलफ़ूज़ात, बयानात, वग़ैरह जमा करने की तौफ़ीक़ दी इसी सिलसिले का बयानात हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० तीसरा हिस्सा आप हज़रात की ख़िदमत में पेश है अल्लाह तआला का शुक्र है कि तौक़अ से ज़्यादा इस सिलसिले को आम और ख़ास सबने पसन्द किया मुल्क बेरून मुल्क इसके ऐडिशन पर ऐशीशन ख़त्म होते रहे एक तवील इंतिज़ार के बाद तीसरा हिस्सा आगे आ रहा है मैं दुआ हो कि अल्लाह पाक इसे शर्फ़ कुबूल फ़रमाए।

हस्बे साबिक़ की जमा–तर्तीब में उस्ताद मुहतरम में हज़रत मौलाना अब्दुस्सलाम साहब पौनवी मद्द ज़िल्लाह, ने मेरी भरपूर रहनूमाई फ़रमाई मसूदा को शुरू से आख़िर तक देखा और अपने मुफ़ीद मश्विरों से नवाज़े और इसी तरह जनाब मुहम्मद याकूब साहब आदिल आबादी ने भी मेरा तावून किया, अल्लाह पाक मेरे तमाम साथियों को बहुत ज़्यादा जज़ाए–ख़ैर अता फ़रमाए और ज़्यादा दीनी ख़िदमत की तौफ़ीक़ दे और इसको मेरे लिए वसीला, निजात और कफ़्फ़ारा बना दे।

फ़क्त व सलाम

मुफ़्ती मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी

दारूल उलूम सोनूरी

15, मार्च, 2005 ई०

एक ज़रूरी वज़ाहत

जनाब हज़रात इससे पहले दावत तब्लीग़ के सिलसिले में अकाबिर के मलफ़ूज़ात, मकतूबात और बयानात वग़ैरह की सूरत में मेरी चंद किताबें मंज़र–आम पर आईं और इन्शाल्लाह आगे भी आती रहेंगी, लेकिन इसके साथ इस बात की वज़ाहत करना ज़रूरी समझता हूं कि यह दावत वाला मुबारक काम सिर्फ़ किताबों के पढ़ने से समझने में नहीं आएगा। हां इतनी बात ज़रूर है कि इन किताबों में जो कुछ लिखा गया है वे सब इन काम के बड़ों की बातें हैं इसलिए ये किताबें काम के समझने में किसी दर्जे में मददगार तो बन सकती है लेकिन काम की हक़ीक़त, काम के फ़ायदे, इस काम के ज़रिए पूरे आलम से बे–दीनी का दूर होना, अल्लाह पाक से ताल्लुक़, सुन्नतों का शौक, आमतौर से इंसानियंत का और ख़ासतौर से उम्मते मुस्लिमा का दर्द और फ़िक्र दिल में आना, ईमान व आमाल का तरक्की में होना या तो दावत के काम में बड़ा हिस्सा लेने से होगा। इसलिए कि इस काम के बड़ों ने जो बाहर की नक़ल–हरकत के साथ मक़ामी काम की तर्तीब बताई है इसमें ख़ूब जमकर हिस्सा लिया जाए। सिर्फ़ किताबों के पढ़ने पर इक्तिफ़ाना किया जाए, अल्लाह पाक हम सबको इख़्लास के साथ अपनी इस्लाह की नीयत से ज़िदंगी की आख़िरी सांस तक दीन की ख़िदमत के लिए कुबूल फ़रमाए। आमीन

काम के उसूल की बातें उन किताबों में भी मिलेंगी। अगर उसूल ये है कि बंगले वाली मस्जिद, देहली की शौरा की जमाअत हाज़िर हालात के एतबार से जिस उसूल की तशरीह कुरआन व हदीस की रोशनी में करे वह उसूल ठहरेगा, लिहाज़ा हमें बंगले वाली मस्जिद के शूरा की जमाअत से रोशनी हासिल

करनी चाहिए, वहां से जो हिदायत मिल रही हो वह मुक़द्दम होगी।

मक्तूब गिरामी

आरिफ़ बा–अल्लाह हज़रत मौलाना क़ारी साहब सिद्दीक़ अहमद साहब बांदवी रहमतुल्लाहि अलैहि
बानी जामेअ अरबिया, हथोरा बांधा (यू.पी)

जनाब मुफ़्ती मुहम्मद रोशन साहब

हालात का इल्म हुआ, अपनी तसनीफ़ की हुई तीन किताबें (1) मलफ़ूज़ात पहला हिस्सा (2) बयानात पहला हिस्सा (3) मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० मौसूल हुई।

बहुत पसंद आई यह सिलसिला आप जारी रखें बहुत से लोगों को फ़ायदा पहुंचेगा।

अल्लाह पाक तमाम मुवाफ़े दूर फ़रमाएं, मेरे लिए दुआ करते रहे।

अहकर सिद्दिक़ अहमद

मक्तूब–गिरामी

हज़रत अक़्दस मौलाना मुफ़्ती शब्बीर अहमद साहब

हदीस व सदर मुफ़्ती मदरसा शाही मुरादाबाद

ख़लीफ़ा आरिफ़ बा–अल्लाह हज़रत अक़्दस मौलाना क़ारी सिद्दीक़ अहमद बांदवी रह०

सुब्हाना व तआला

हज़रत मौलाना मुहम्मद रोशन साहब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि वबा रकातुहू

अल–हम्दु लिल्लाह हम तुम्हारी दिली दुआओं से ब–ख़ैर आफ़ियत हैं, खुदा करे तुम भी बा–आफ़ियत हो, तुम्हारी कोशीश करदा तीन किताबें, (1) मलफ़ूज़ात, (पहला हिस्सा), (2) बयानात (पहला हिस्सा) और (3) मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० (पहला हिस्सा) मौसूल हुई।

ये आपकी बहुत बड़ी ख़ुश–किस्मती है कि दुनिया के शहरे–अफ़ाक बुज़ुर्गे के रूहानी हालात और अक़्वाल व अराअ पर काम करने की तौफ़ीक़ हुई, यह खुश–नसीबी हर किसी को नसीब नहीं होती, मुझे तुम्हारी इस ख़ुशकिस्मती पर कितनी ख़ुशी हो रही है इसकी इंतिहा नहीं है, यह तुम्हारे काम की इब्तिदा है। इन्शाअल्लाह आइंदा अलग–अलग हौसले, और तसनीफ़ी काम करने के लिए राह फ़राहम होने वाली है।

खाक़सार की फ़लाह दारेन के लिए दुआ फ़रमाएं बंदा तुम्हारे लिए हर वक़्त ख़ैरियत–ख़्वाह है, वस्सलाम

उमूमी बयान न० 1

मस्जिद वाले आमाल ही को ज़िंदगी का असल मक्सद और काम बना लें

फ़जर के बाद, 28 मार्च 1962, ई०

बाद खुत्बा इर्शाद फ़रमाया कि
मेरे भाइयों और दोस्तो !

अल्लाह ने इंसानों में ख़्वाहीशें रखी हैं और इनकी मुहब्बत भी रखी है गोया इंसान अपनी ख़्वाहिश पर मुहब्बत से मेहनत करता है, लिहाज़ा जितनी ख़्वाहिश पर मेहनत बढ़ाएगा। उसकी मुहब्बत इनती ही बढ़ेगी, ख़्वाहिश के एतबार से जितना इंसान का इस्तेमाल होगा। वह नुक़्सान न उठाएगा कि ख़्वाहिश तोड़ी जाएगी, ख्वाहिश औलाद, साज–सामान, मकान, नक़द सवारी, कुंबेदारी, वतन, रिश्तेदारी की होती है या यह है कि ख़्वाहीशों का इंसान के जिस्म से ताल्लुक है, ये उन तमाम चीज़ों को चाहता है जिनसे ख़ुद पैदा हुआ है, ये पैदा हुआ ग़िज़ा से ग़िज़ा बनी आसमान, ज़मीन, बादल, बारिश, बैल, गाय, किसान मां–बाप वग़ैरह से, अब ये जितनी मेहनत इस जिस्म पर करेगा। उनकी मेहनत बढ़ती जाएगी। यहां तक कि जितनी भी ख़्वाहिशें हैं या जिस्म है उन पर जितनी मेहतन होगी। फिर ख़ुद को इस तरह इस्तेमाल करेगा, जिससे इस जिस्म में ज़्यादती हो या न हो अल्लाह का तजवीज़ किया हुआ तरीक़ा इसके हाथ से

निकल जाएगा बल्कि हर वक़्त इस जिस्म की अच्छाई की फ़िक्र करेगा। औसाफ़ हुस्ना न रहेंगे, जिसकी वजह से ख़ुदा नाराज़ होकर काम कर देंगे। अगरचें इन जिस्म पर मेहनत करते वक़्त कामियाब नज़र आएगा, लेकिन बाद में नाकाम कर देंगे। मिसाल के तौर पर इसकी मेहनत से ज़मीन बरारब हो गई फिर इसमें हल चला फिर बीच उगा फिर पौधे बने, वह ख़ुश हो रहा है। छः महीने से एक दम टड्डी, बारिश, या भूचाल से जब वह खेती ख़त्म हो जाएगी तो रोता रहेगा और फिर हर जगह अपनी कमज़ोरी का एलान करता रहेगा। यह ख़्वाहिशों का कुत्ता है, इसका रूह से ताल्लुक़ नहीं है, नमाज़ भी उन चीज़ों की दुरूस्तगी के वास्ते पढ़ता है उस मेहनत के तरीक़े का पस–मंज़र बहुत ही हौलनाक है।

इस दुनिया में भी मुसीबतें मिलेंगी लेकिन उनसे ज़्यादा सख़्त मुसीबतें मौत के बाद से शुरू होंगी इन दुनिया की मुसीबत या तो ख़ुद हट जाती है या वह मुसीबत वाला ही ख़त्म हो जाता है, असल मुसीबत आख़िरत की है कि ना आग ख़त्म हो ना भूख ख़त्म हो न प्यास, दुनिया की मुसीबत हर एतबार से हल्की है, दुनिया की मुसीबतों की तक्लीफ़ें असल जिस्म को होती हैं रूह को नहीं होती, भूख या ज़र्ब का ताल्लुक़ जिस्म से होगा अलबत्ता इसकी तक्लीफ़ का असर रूह पर जा रहा है। इस दुनिया की राहत और तक्लीफ़ों का असल ताल्लुक़ जिस्म के साथ है, असर रूह पर पड़ता है, बर्ज़ख़ में रूह से ही असल ताल्लुक़ है और इस जिस्म का इस रूह पर असर पड़ता है। जिस्म क़ब्र में रूह दूसरी जगह, जन्नत में तमाम राहतें जिस्म व रूह के साथ, जहन्नम में तमाम तक्लीफ़ें जिस्म और रूह के साथ मुताल्लिक़ हैं, दोज़ख़ की मुसीबत क़ब्र की मुसीबत से भी ज़्यादा होती है, लिहाज़ा जो मुसलमान अपनी ख़्वाहिशों पर मेहनत को ज़िंदगी का तरीक़ा बनाएगा कि

पांच मिनट के खाने में बे-सब्री होगी। इन्हें हमेशा की भूख दी जाएगी इनकी सज़ा यही है कि ख़्वाहिशों का तक़ाज़ा बढ़ जाएगा, लेकिन पूरी न होगी, दूसरा रास्ता कामियाबी का है कि अपनी ख़्वाहिशों को दबाओ जिसे कुरआन में 'واصبروا' कहा गया है, अपने ख़्वाहिशों पर मेहनत कम करो, औरत, बच्चे, मकान, ज़राअत वग़ैरह पर मेहनत कम करो और अल्लाह ने जो आमाल मेहनत के लिए तै किए हैं। उन पर अमल करो, लिहाज़ा जितना अपनी ख़्वाहिशों को छोड़कर आमाल पर मेहनत बढ़ाएगा। उतना ही ख़ुदा से ताल्लुक़ बढ़ेगा, जब ख़ुदा से ताल्लुक़ हो गया फिर उसके एतबार से इस्तेमाल होगा, हर-हर अमल इसके एतबार से होता है। जिससे ताल्लुक़ है जिससे जिस्म की ज़्यादती होगी उसे ही इख़्तियार करेगा, बारात में जाएगा, वज़ीर के साथ खाना खाएगा। अगरचे हराम ही का मुर्तकब क्यों न होने पड़े। अगर उन आमाल पर अच्छी मेहनत करे, जो ख़ुदा ने दिए हैं तो ख़ुदा से ताल्लुक़ होगा जिसका नाम दीन है। लिहाज़ा आमाल इंसानी दीन हैं, अगर ख़ुदा के रास्ते पर हों या दुनिया में अगर ख़्वाहीशों के तरीक़ों पर हो, कमाई में इंसान ख़ुदा के एतबार से इस्तेमाल हो तो कामियाब है। और यह दीन है कमाई ही में अगर कमाई के एतबार से इस्तेमाल हो तो ना-काम है और यह बे-दीनी है। ऐसे ही हर अमल में दोनों पहलू हैं, पाख़ाना-पेशाब, खाना-पीना और दोस्त-दुश्मन वग़ैरह, वग़ैरह ख़ुदा के एतबार से बे-दीनी है, ख़ुदा के एतबार से इस्तेमाल दीन है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सारे मुसलमानों को ताल्लुक़ बदलने के लिए कुछ आमाल दे गए हैं। ख़्वाहिशों की मुहब्बत पहले ही से मौजूद है इस मुहब्बत से निकलकर मेहनत के ज़रिए अल्लाह और इसके रसूल की मुहब्बत लेनी है। मेहनत के ज़रिए से ताल्लुक़ होता है, ताल्लुक़ पैदा करने के लिए ज़राए दिए हैं कि इन आमाल पर मेहनत करो, ईमान, नमाज़,

तिलावत, ज़िक्र ख़िदमत दूसरों को उन चीज़ों में लाएं और ख़ुद में भी पैदा करें जिनके बाद उन आमाल के भेजने वाले और अम्र लाने वाले से ताल्लुक़ पैदा हो जाएगा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुदा के एतबार से इस्तेमाल हुए अपने एतबार से नहीं उनके एतबार से इस्तेमाल ख़ुदा के एतबार से ही इस्तेमाल है। ماينطق عن الهوىٰ الخ अल्लाह ने जिन बातों से मना किया है उनसे बचते हैं जितनी वही आई उतनी ही बतलाते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर अमल शादी, ग़मी, खाने-पीने सोन वग़ैरह में ख़ुदा के एतबार इस्तेमाल हुए, अपनी ज़ात के एतबार से इस्तेमाल नहीं। अब दोनों से ताल्लुक़ आमाल पर मेहनत से होगा, उस मेहनत का मर्कज़ मस्जिद है। आजकल अगर्चे नहीं है नमाज़ के इख़्तिताम पर जल्दी निकल जाने वालों की मिसाल उन भेड़ों की सी है। जो सारी रात बाड़े में रही हों सुबह-सवेरे ही वे सब बाहर निकलने की कोशीश करेंगी, और बाहर निकले ही खाने में मश्ग़ूल हो जाएंगी। ऐसे ही मुसलमान भेड़ों की तरह हो गया है वे भी मस्जिद से इस तरह निकलता है, सिगरेट, पान, चाय में मश्ग़ूल हो जाएगा। सहाबा रज़ि० के ज़माने में यह बात नहीं थी, नमाज़ के बाद लोग रहते थे मस्जिद में, दो नमाज़ों के दर्मियान सिर्फ़ बैठना भी सवाब है, सवाब को तो हम चिड़िया का बच्चा समझते हैं, मिले या न मिले, सो दस रूपये तो ज़रूर मिलें, ऐसे ही मेम्बर हज़ार ख़र्च और भाइयों से लड़ाई के बाद बना। ऊपर वाले जो चाहेंगे वही उनसे कराएंगे। मेम्बरी के बग़ैर वे बड़े उससे कोई काम न करवा सकते थे। उसे एज़ाज़ी डिग्री की तरह सवाब को समझ लिया है, सवाब का सबसे आख़िरी दर्जा दुनिया-माफ़िहा से बेहतर है, जन्नत का एक टुकड़ा है दुनिया-माफ़िहा नहीं बल्कि सातों ज़मीन और आसमान से ज़्यादा है और आमाल मस्जिद में करने से इनका सवाब अलग मिलेगा,

उस वक़्त करेगा जब मस्जिद में बैठेगा, पहले क़दम यानी सिर्फ़ बैठने पर सातों ज़मीन और आसमान से ज़्यादा सवाब मिलेगा, लिहाज़ा, उन आमाल दावत, नमाज़, अम्र–नहिन, ज़िक्र–दुआ–ताज़ियत, ख़िदमत उन बैठने के ईनामों से ज़्यादा होंगे। लिहाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन मस्जिदों को बनाएंगे कि इनमें आमाल को करो और उनको तमाम आलम में फैलाओ, लोग, बाज़ार, मुल्क, माल–दौलत, खेती–बाड़ी के लिहाज़ से मेहनत करते हैं। तुम मस्जिद के एतबार से मेहनत करो जिसके बाद तुम्हारा ताल्लुक़ खुदा से पैदा हो जाएगा और जिससे दीन हक़ीक़ी मिल जाएगा। अगर मेहतन ज़्यादा करके खुदा और रसूल से इश्क पैदा कर लिया तो उसको जन्नत में भेज दिया जाएगा। जहां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, المرء مع من احب.....الحديث

इस हदीस के नाज़िल होने की शान यह है कि एक सहाबी रज़ि० ने कहा रात को मुझे बहुत फ़िक्र हुई मेरी हालत यह है। मुझे आपसे बहुत मुहब्बत है सोते हुए अगर आपका ख़्याल आ जाए। तो उठकर मकान के क़रीब आकर दीदार न कर लूं या सौदा तोलते हुए ख़्याल आ जाए, तो जब तक ख़ुद आकर ज़ियारत न कर लूं चैन नहीं आता और नींद नहीं आती और सौदा नहीं तूलता, आप सल्ल० तो ऊंचे दर्जे में होंगे, आप सल्ल० के बग़ैर जन्नत में कैसे गुज़र होगी। इस पर आप सल्ल० ने फ़रमाया المرء مع من احب तमाम सहाबा रज़ि० को इस्लाम में दाख़िल होने के बाद इस बात से सबसे ज़्यादा ख़ुशी हुई थी, हमें ख़ुशी नहीं होती, हमें ख़ुश नहीं होती है। दूध, घी के मिल जाने से, आमाल पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ होने को चाहे कितना ही सुन लें मगर भेंस की तरह टस से मस नहीं होंगे। और अगर यह कह दें कि पांच–सौ या आठ–सौ वाला घोड़ा मिल जाएगा, औलाद मिल जाएगी, या मिस्र के घर बैठी हुई बीवी तुम्हारे घर आ

जाएगी तो फ़ौरन चला जाएगा। ख़ुदा के नाम पर नहीं यानी ख़ुदा से ताल्लुक़ नहीं है, ग़ैर–ख़ुदा से है ख़्वाहीशों से है उनके एतबार से इस्तेमाल बे–दीनी है, ख़ुदा से ताल्लुक़ दीन है जिस पर सबसे बड़ी जन्नत मिलेगी, इश्क़–मुहब्बत की जन्नत अमल की जन्नत से ज़्यादा बड़ी है और अच्छी है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुहब्बत पर जो दुआ दी है वह किसी पर नहीं दी, तलहा बिन बुरआ ने आकर कहा हुज़ूर सल्ल० आपसे मुझे बहुत मुहब्बत है जो देंगे पूरा करूं, फ़रमाया कि अपनी मां का गला काटकर ला इम्तिहान था फ़ौरन उठाकर मां की तरफ़ चला, हुज़ूर सल्ल० ने वापस बुलाकर कहा कि मैं रिश्ते काटने के वास्ते नहीं आया, तेरी मुहब्बत का इम्तिहान है तेरी मां नहीं मरवानी इससे ताल्लुक़ ज़ाती मरवाना है मां से मलूका ख़ुदा ने कहा है न कि अपने ज़ाती ताल्लुक़ की वजह से लिहाज़ा, अब सब हम अपनी ज़ाती ताल्लुक़ की वजह से मिलते हैं वरना जहां अल्लाह ने छोड़ने को कहा वहां छोड़ते क्यों नहीं अगर बीवी–बच्चे, खेती–बाड़ी मां–बाप, से मिलने को एक मर्तबा कहा तो कुरआन ने हज़ारों जगह छोड़ने को कहा, जंगे बद्र में बाप ने बेटे को रिश्तेदार ने दूसरे रिश्तेदार को क़त्ल करके दिखाया इस वाकिअ के बाद हज़रत तलहा रज़ि० बीमार हो गए। हुज़ूर सल्ल० इन्हें पूछने आए ताल्लुक़ वालों की पूछ हुआ करती है। जब हुज़ूर सल्ल० पहुंचे तो हज़रत तलहा बेहोश थे। थोड़ी देर बैठने के बाद फ़रमाया कि यह चल देने वाला है इसके मरने की इत्तिला मुझे करना यह कहकर आप सल्ल० तशरीफ़ ले गए, तशरीफ़ ले जाते ही इन्हें होश आ गया कहने लगे। हुज़ूर सल्ल० मुझे पूछने नहीं आए कहा गया आए थे। जब मर जाऊं ख़ुद ही दफ़न कर देना। हुज़ूर सल्ल० को इत्तिला न करना कि मेरे मुहल्ले में यहूदी रहते हैं अगर हुज़ूर सल्ल० मेरी वजह से रात यहां तशरीफ़ लाए तो मुम्किन है कि इन्हें किसी यहूदी से

तक्लीफ़ पहुंचे, मेरे नाम पर हबीब को एक ज़र्रा की तक्लीफ़ बरदाश्त नहीं है, चुनांचे इंतिक़ाल हुआ, रिश्तेदारों ने नहले–धुलाकर कफ़न पहनाकर दफ़्न कर दिया, इस ज़माने में मरने वालों के रिश्तेदारों का बम्बई, कलकत्ता से आने का इंतिज़ार करते हैं और यहां हुज़ूर सल्ल० जैसा का भी इंतिज़ार नहीं मरने में दफ़्ने में यों वक़्त नहीं लगता था। अरे वहां तो हुक्म है कि मय्यत को जल्दी लेकर चलो अगर अच्छा आदमी है तो इस देर करके इसकी नेमतों से क्यों महरूम कर रहे हो और अगर बुरा आदमी है फिर उसे अपने कंधों पर क्यों उठा रखा है जल्दी इस वजह से कारवाई की इसका अज़ाब घर ही में न शुरू हो जाए। तारीख़ इसकी शहीद है अब्दुल्ला बिन ज़ैद ज़ियाद जिसके हुकम पर हज़रत हुसैन रज़ि० शहीद हुए क़त्ल हुआ सर रखा था एक अज़्दा आया नाक में घुसकर मुंह से निकल आया। दो मर्तबा ऐसा ही किया सुलेमान बिन अब्दुल मालिक, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से पहले वाले बादशाह की मय्यत को जब क़ब्र में रखा जाने लगा मय्यत हिली लड़के ने कहा मेरा बाप ज़िंदा हो गया। उमर ने कहा जल्दी करो दफ़्न में ख़ुदा की पकड़ न आ लिया है। जिस ज़ात की नमाज़ निजात की गारंटी है

ان صلوتك سكن لهم

इस गारंटी की वजह से भी देर न होती थी सुबह को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला मिली। सबब मालूम हुआ क़ब्र पर गए दुआ में यह भी कहा, ऐ अल्लाह ! तू इससे ऐसे मिल कि तू इसे देखकर हंस रहा हो या यह आपको देखकर हंस रहा हो, यह मुहब्बत का ईनाम है। जिसमें इंसान को महबूब के अलावा और कुछ नहीं भाता मुहब्बत अगर आ गई तो सारे अमल आ जाएंगे। इस मुहब्बत के वास्ते आमाल पर मेहनत मांगी जाती है कि तमाम इजसाम से वक़्त निकालो ताकि इनकी मेहनत निकल जाए जिसकी मुहब्बत को निकालना

है इससे दूर हो जाओ, जितना इसमें लगोगे मुहब्बत ज़्यादा बढ़ेगी। चुनांचे नमाज़ में उसी वक़्त जान पड़ती है जब बाहर का ख़्याल न आए या इसी वक़्त हो सकता है जब कि इससे पहले मस्जिद में बैठकर और आमाल को किया गया हो, तालीम, ज़िक्र, नमाज नफ़्ल, दुआ वग़ैरह की जाएं अगर तुम हदीस को देखकर सुबह–शाम की दुआएं एक–एक सिर्फ़ चन्द रक्अतों से इंसान को ताल्लुक़ नहीं बदलता बल्कि उन तमाम आमाल को अदा करना नमाज़ में असर डालता है, रोज़ाना की मेहनत है, जो नमाज़ के उन्वान पर दी गई, फिर रोज़ा दिया गया कि तुम रोज़ाना वाली मेहनत पूरी पाबन्दी से नहीं कर रहे हो। तक़ाज़े भी पूरे कर रहा हो और उन आमाल को भी कर रहा हो। किसी हसीन से मुलाक़ात हो जाए। उसके लिए खाना पीना, सोना, पेशाब, पाख़ाना छोड़ दोगे, दिन में सोहबत अकल व शरब के तक़ाज़ों को दबाकर उन मस्जिद के आमाल को करो, और रात को सोना छोड़कर फिर ताल्लुक़ ज़्यादा पैदा होगा। जब तक महबूब को चूमे न चाटे उसकी गलियों को चक्कर न लगाए पूरी मुहब्बत नहीं आती, अल्लाह तआला उन तमाम सिफ़ात से मुबरा हैं, उन तमाम आमाल को करते हुए चलो, आशिक़ो सा लिबास पहनकर बग़ैर इत्र के गिर्द–अलूदा होकर दाख़िल हो फिर मुलतज़िम से चिमटो, हजरे अस्वद के बोसे लो और बाक़ी तमाम मस्जिद के आमाल वहां पर भी करो जिससे मुहब्बत कामिला मिलेगी, बात तो समझ में आ गई लेकिन करे कौन, घंटी कौन बांधे, सौ फ़ीसद मुसलमानों के ज़िम्मे दीन है दीन के बुनियादी आमाल मस्जिद वाले हैं। जिसमें असल काम बनाना पढ़ेगा और बाक़ी आमाल ज़िंदगी, तिजारत, खेती–बाड़ी औलाद की परवरिश दूसरे दर्जे के काम हैं, दीन पर चलने वाले सबसे ज़्यादा वही इंसान होंगे, जो मस्जिद के आमाल को ज़िंदगी का असल मक़सद और असल काम बना लें। सारे साल

मेहनत करें रमज़ान में इस मेहनत को बढ़ा दें फिर हज में हाजियों में मेहनत की जाए हमारे मस्जिदें वीरान हैं और मौक़े जिनमें ग़ैरों ने ज़िया के लिए बनाए हैं आबाद हैं, किसी को याद आया तो नमाज़ पढ़ ली और जिन गांवों में ये मौक़े होटल, सिनीमा, पार्क न हो तो चौपाल हैं। चंद रक्अतों से ताल्लुक़ नहीं बदलता है। रक्अतों के साथ–साथ तो उन आमाल का होना ज़रूरी है और आजकल भी काम का ख़ास मौक़ा है जिन इलाक़ों के लोग तमाम आदाब की रियायत करते हुए भेजेंगे। वे दीन ज़्यादा समझेंगे वरना या तो दीन की मेहनत नहीं है या कम है या ग़लत तरह से है और अगर इलाक़े से लोग दीन वाले बनाकर भेजें। तो अल्लाह तआला के फ़ैसले मवाफ़क़्त में हो जाएंगे। इनके ग़ैरों को हलाक कर दिया जाएगा। वहां कौन ख़ुदा को कुछ कह सकता है, बाज़ार के अन्दर की भी दिलचस्पी भी देखी जाएगी और मस्जिद के अन्दर की भी, जहां रहते हैं वहां की बातचीत भी और रातों को भी, अगर अच्छे नम्बर मिल गए तो इलाक़े वालों की परेशानियां दूर कर दी जाएंगी, वरना बढ़ा दी जाएंगी। लिहाज़ा यह वक़्त घरों में रहने का नहीं है हाजियों का ज़हन चीज़ों से हटाओ आमाल का बनाओ, फिर अशरा ज़िल हिज्जा, रातें रमज़ान की अफ़्ज़ल हैं और अशरे के दिन अफ़्ज़ल हैं लिहाज़ा अशरे में पूरी मेहनत करनी चाहिए मेहनत के बाद दुआ मांगनी है कि हाजियों का हज कुबूल हो, सही तौर पर हज मक़्बूल के नतीजे ज़ाहिर हों फ़ज़ाइल हज में है एक साहब ने ख़्वाब में देखा कि दो फ़रिश्तों ने आपस में कहा सिर्फ़ चार आदिमयों का हज कुबूल हुआ, उठकर बहुत फ़िक्र हुई कि सबका क्या बनेगा। दोबारा आवाज़ सुनी की इन चार की वजह से बाक़ी जितने हाजी हैं, सबका हज कुबूल फ़रमा लिया है। किसी के रोज़े से भी काम चल जाता है, आमाल मस्जिद को ज़िंदा करो उन आमाल की देखभाल

न करने की वजह से हम मस्जिदे हराम और मस्जिद नुबूवी में बे–अदब बन गए हैं वहां भी नमाज़ से फ़रागत पर बाहर भाग आते हैं अगर देख–भाल की आदत पढ़ गई फिर वहां भी उन आमाल में लगेंगे, उस वक़्त लगाना उन आमाल की तराविज के लिए सारे आलम में दीन के ज़िंदा करने के लिए है, मक्का–मदीना के बाज़ार आज मुसलमान के इम्तिहान बन गए हैं।

उमूमी बयान न० 2

इंसान अपनी इंसानियत को मद्देनज़र रखकर चलेगा तो कामियाब होगा

जुमेरात असर के बाद, 5, अप्रैल 1962 ई०

बाद खुत्बा मस्नूना इर्शाद फ़रमाया

मेरे दोस्तों और बुजुर्गो !

एक मुग़ालते ने पूरी दुनिया को परेशानियों में डाल रखा है और वह यह है कि इंसान की ज़िंदगी का बनने का सबब दीनी मेहनत नहीं बल्कि वह चीज़ें हैं जो आसमान–ज़मीन के दर्मियान हैं, मेहनत से दो का रब्ता क़ायम होता है, मुल्क और मुल्क वाले, माल और माल वाले में, ज़मीन और ज़मीनदारों में दिखाई देता है कि इंसान का राब्ता जिसमें इंसान लग रहा है वह असल है, मुल्क असल है, मुल्क चलाने वाले नहीं, माल असल है मालदार नहीं, ज़मीन असल है, ज़मीनदार नहीं लिहाज़ा इंसान का अपनी कामियाबी ना–कामी का अस्बाब इसमें नहीं है। बक्लि दूसरी चीज़ों में है · यह दूसरों के सहारे है इस मुग़ालते से इंसान ख़ुद अपने ज़िंदगी के तरीक़े में आज़ाद हो गया है इस वजह से कि अपना इस्तेमाल कामियाबी का ज़रिया नहीं समझता है और पाबंदी इसकी दूसरी चीज़ों के लिहाज़ से है ड्राइवर की पाबन्दी कार के लिहाज़ से, ज़मीनदार की पाबन्दी खेती होने के लिहाज़ से, मुल्क वाले की पाबन्दी मुल्क बढ़ाने वाले के लिहाज़ से, लेकिन अगर वे इंसान के लिहाज़ से इस्तेमाल हो रहा है दूसरो के लिहाज़ से नहीं तो जिस शक्ल में हो वह

कामियाब होगा। अगर ज़िंदगी का तरीक़ा कामियाबी वाला हो वरना ना–काम होगा, इंसान से रात–दिन आमाल सादिर हो रहे हैं। दुकानदार दुकान में, मुल्क वाला, मुल्क में, मुलाज़िम मुलाज़मत में इस्तेमाल हो रहा है हैं अब यह इस्तेमाल चीज़ के लिहाज़ से हो रहा है तो ना–काम हो जाएगा और कामियाबी अपने एतबार से इस्तेमाल होने में है, गवर्नर, मालदार, वज़ीरों, अगर आपके काम के लिहाज़ से इस्तेमाल होंगे ना–काम हो जाएंगे, और अगर अपनी ज़ातों के लिहाज़ से हो तो इंसान कामियाब, इंसान मिट्टी से बना है इसमें तामीरी और तख़रीबी दोनों माद्दे हैं आधियों, बर्फ़बारी, सैलाब, कहत साली, भूचाल तामीरी माद्दे के निकालने से है वहां की बस्तियों को हलाकत वग़ैरह तख़रीबी माद्दे से है और वह चीज़ें जो इसमें हैं जिनसे इंसानों की तामीर है ग़ल्ला, गुन्दम सोना–चांदी तामीरी माद्दे के लिए मेहनत ज़रूरी है, तख़रीबी माद्दे के ज़हूर के लिए मेहनत ज़रूरी नहीं है, ख़ाली बारिश से वे चीज़ें पैदा होंगी। जो जानवर खाएंगे या आग में जलने वाली लकड़ी, तख़रीबी माद्दा या जिससे तामीर न हो के ज़हूर के लिए मेहनत की ज़रूरत नहीं है, हर इंसान ज़मीन की तरह तामीर व तख़ज़ीब के माद्दे रखता है, हया, बे–हयाई, ज़ुल्म–इंसाफ़, चोरी–डाका, जान–माल की हिफ़ाज़त गुरबा परवरी वग़ैरह सारे माद्दे हैं। और ज़मीन से ज़्यादा हैं, कायनात के तख़रीबी माद्दे इस्तेमाल होने वाले हैं और इंसान के माद्दे इस्तेमाल करने वाले हैं ज़मीन के माद्दे मफ़ऊल और इंसानी फ़ाअल, अगर इन्सान में से माद्दे तख़ज़ीब के निकालें और ज़मीन से माद्दे तामीर भी निकले तो आलम में फ़साद ही होगा यही आज हो रहा है ज़मीन के माद्दे तामीर से तामीर नहीं है जब तक इंसान से माद्दे तामीर न निकले अगर माद्दे तख़ज़ीब ज़मीन से निकले और इंसान से माद्दे तामीर तो तामीर ही होगी। आज के लोग सारे मुल्क वाले सरमायादार

इसी दलदल में गिरफ़्तार हैं कि इनसे माद्दे तख़रीब निकल रहा है। अगरचें आलम से माद्दा तामीर निकल रहा है आज ग़ल्ला जमा करते हैं ताकि मेहंगा करके बेचें। कपड़े बहुत हैं लेकिन कपड़े वाला इस नंगे को नहीं दे रहा है। इंसान को बनाने वाले ने इंसान को अपने ऊपर मेहनत करने में लगा दिया कि तख़रीब से लेकर आमाल तामीर पर लाए, तख़रीब को पहचानकर इनसे रूख़ तामीर वाले आमाल की तरफ़ करो, हाकिम–महकूम, मालदार, ग़रीब, ज़मीनदार, हर शख़्स को इसी मेहनत पर लगा दिया। अपने पर मेहनत करे, अगर ख़ुद पसंदीदा इंसान बन जाए। तो एक दिन अल्लाह तआला सारी नेमतें इनके क़दमों में डाल देंगे और अगर तख़रीब वाले माद्दे मुताबिक़ इस्तेमाल हो तो फिर एक दिन इससे सारी नेमतें छीन लेंगे, अल्लाह इंसानों की ज़िंदगी बनाने चाहते हैं हत्ता कि ग़ैर–मुस्लिम की ज़िंदगी आख़िरत में अगरचें मामला दूसरा होगा। इस दुनिया में बनाते हैं लिहाज़ा जो इंसान माद्दा तख़रीब से हटकर माद्दे तामीर पर आए। इनको अल्लाह तआला नवाज़ेंगे और जिसके काम माद्दे तख़रीब वाले हों इनसे नेमतें छीन ली जाएंगी ताकि दूसरों को तक्लीफ़ न पहुंचे, माद्दा तामीर कैसे उभरता है और माद्दा तख़रीब कैसे उभरता है। इसका क्या कानून है। इंसान जब चीज़ों पर मेहनत करे तो माद्दा तख़रीब उभरता है और माद्दा तामीर दब जाता है, इसांन माल–मुल्क के लिहाज़ से अमल करे। जिस तरह यह मतलूब चीज़ें मिल जाएं, इस तरह अमल करो, इससे माद्दा तामीर और तनाफ़ूस बल्कि माद्दा तख़रीब ज़ुल्म, हसद, झूठ, लड़ाई, लूट, खसोट, इससे कुछ की ज़िंगदी कुछ से बिगड़ जाएंगी, महकूम मौक़े पर हाकिम पर गोली मारेंगे और हाकिम महकूम को जैल में डाल देगा, मालदार ग़रीबों को ख़ून चूसेंगे। और एक दिन ये ज़मीनदार, मालदारों की कोठियों में घुसकर क़त्ल करेंगे, आज तख़रीब की हर शक़ उभरी हुई है तामीर की

हर शक दबी हुई है और अल्लाह की तौफ़ीक़ से इंसान की मेहनत इसके अपने ऊपर आ जाए। चाहे चीज़ें मिलें या न मिले, इससे माद्दा तख़रीब देकर माद्दा तामीर उभरता है इससे मुहब्बत, अल्लाह की ख़िदमत, मदद आती है, फिर एक-एक शख़्स से हज़ारों की ज़िन्दगी बनती हैं, इसी वजह अंबिया-हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मत को ख़ालिस चीज़ों पर न छोड़कर गए और आज तफ़री, हाकिमों से बात-चीत, आपस की बात-चीत सारी माल-चीज़ों की बुनियाद पर आ गई है जिससे माद्दे तख़रीब उभरता है अब सबसे पहले चीज़ यक़ीन की है कि तमाम चीज़ों से यक़ीन हटाकर इसे ले आओ। उन चीज़ों से कुछ नहीं होता है यह पहली मश्क़ है जिस चीज़ में जो कुछ नज़र आ रहा है वह हमारे और इस चीज़ के राब्ते के एतबार से है और इस जज़ू वाली राब्ते के एतबार से नहीं है, पहले राब्ते के एतबार से चीज़ों में वजूर नहीं आता बल्कि दूसरे राबते के एतबार से है, तमाम शक्लों में वजूद सीधा नहीं है, बल्कि अल्लाह के इरादे से वजूद है तामीर, माल, तफ़रीक़-नार सीधा नहीं है बल्कि अल्लाह के इरादे से है अगर इरादा बदल जाए तो फिर वह चीज़ न रहे, तुम्हारी सारी मेहनत चीज़ों वालों में सिर्फ़ पहले राब्ते से है और दूसरा राब्ता निकलवाया है, जिसे इंसान से जिस वक़्त चाहे रूह निकाल दें। वह जिस्म बेकार है ऐसे ही दवाओं से, सूरत-नार से तफ़रीक़ बहर से जब चाहे निकाल सकते हैं। मौजूदात का वजूद ज़ाती नहीं है जैसे असा मूसा अलै० की और सिफ़ात भी ज़ाती नहीं है, जैसे सकीन इस्माइल नार इब्राहीम, अब लोग समझ रहे हैं कि बांध बांधने से पानी रूक गया और उस पानी से ग़ल्ले का वजूद है ख़ुदा जब चाहे इस बांध की ज़मीन से सेलाब ले आए, बस पहली चीज़ यही है कि इन चीज़ों से यक़ीन हटा लो ख़ुदा पर जोड़ लो, अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गए हैं वह

इंसानों में सबसे ऊंचे इंसान हैं, वह खुदा को देख रहे हैं बल्कि हर चीज़ और खुदा के दर्मियान के वास्ते इनके सामने हैं। चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इसवा से अमल बनता है, इस वजह से कि वह इंसानों में से हैं मुश्रिकीन को अपनी क़िस्म इंसानियत में से देखकर एतराज हुआ, مالهذا الرسول जवाब यह है कि अगर वह किसी और क़िस्म में से होते तो तुम कैसे मान लेते कि उन्हें तुम्हारे वाले तक़ाज़े नहीं है अगर हम अपनी चीज़ों वाला राब्ता ही रखें तो एक तरफ़ा बात रहेगी और चीज़ों वाले राब्ते में दो तरफ़ा बात है। कुला से पहले राब्ते के लिहाज़ से सिर्फ़ हिफ़ाज़त है। दूसरे राब्ते के लिहाज से हिफ़ाज़त व अद्म हिफ़ाज़त है, अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सारे अमल ला इलाह इल्लल्लाह की बुनियाद पर हैं कि मकान वह नक़्शा है जिससे खुदा पालते हैं खाते हैं उस तरीक़े पर जिससे खुदा पेट भरते हैं। अब तमाम चीज़ें दो तरफ़ हैं। मालदारी से ज़िंदगी बनती भी है बिगड़ भी सकती है। ऐसे ही जायदाद, औलाद, फ़क़ीर, बादशाह, सदर वग़ैरह भी दो तरफ़ा हैं। खुदा के करने से इनकी ज़िंदगी बनेगी और बिगड़ेगी भी, अल्लाह के औलिया ने लात मारी तो अल्लाह ने इनके क़दमों में बादशाहों को डाला। मुल्क–माल के नक़्शों को ठुकरा दिया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले तरीक़े से कामियाबी हासिल करूंगा, और जितनी औलिया को हम जानते हैं। उनसे वह ज़्यादा हैं जिनको हम नहीं जानते, अब इंसान जिस खाने में हो इंसान है, अकसिरीयत, अक़्लीयत, ज़िल्लत, इज़्ज़त, हाकिमों, महक्मों वग़ैरह में इंसान–इंसान है बदलता नहीं है। इसी वजह से चौबीस घंटे में पांच वक़्त आज़ान है कि अल्लाह हर चीज़ से बड़े, खुदा के हाथ में सब कुछ है, और खुदा सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले तरीक़े पर देंगे। फिर तमाम जज़्बात को छोड़कर नमाज़ के लिए मस्जिद में

आ जाओ, जो जितना किसी मेहनत में लगातार लगा रहता है, उसकी मेहनत बढ़ती है। इसी वजह से चीज़ों से हटाकर बार–बार बुलावा रहे हैं। ताकि उन लोगों को चीज़ों से ताल्लुक़ न हो चीज़ों पर यक़ीन न हो आमाल पर यक़ीन हो कामियाबी के मिलने की मश्क़ करने के लिए मस्जिद में बुलाते हैं। जैसे नमाज़ की आख़िरी चीज़ क़ायदा है। ऐसे ही उन आमाल की आख़िरी चीज़ नमाज़ है, जिससे ज़िंदगी बदलेगीं। सबसे पहले यक़ीन चीज़ों से हटकर अल्लाह पर फिर हुज़ूर सल्ल० पर फिर अपने बदन के आमाल पर, उसकी दावत, तालीम व ज़िक्र, नमाज़, ख़िदमत, इस वजह से झाडू दो मस्जिद की ख़िदमत का हुक्म है कि आज़ान मुफ़्त दो इमामत की तरह, उन तमाम आमाल को बनाओ इससे माद्दा तामीर उभरेगा, जिससे अल्लाह तआला खेती में कामियाबी देगा, चाहे जिस खाने में भी हो।

उमूमी बयान न० 3

चीज़ों से निकलकर मस्जिद के आमाल को सिर्फ़ हिदायत लेने के वास्ते करें और ग़रज़ साथ न हो

सनीचर, फ़जर के बाद, 7, अप्रैल, 1962 ई०

मसनूना ख़ुत्बा के बाद इर्शाद फ़रमाया कि

मेरे भाइयों और दोस्तो !

मेहनत के दो ज़रिए हैं दीनी और दुन्यावी दोनों लाइन हैं, पहली मेहनत इंसान की है कि सरमाया हाथ आ जाए। जिससे ज़िंदगी के नक़्शे दुरूस्त हों मिसाल के तौर पर तिजारत, मज़दूरी, मुलाज़मत खेती–बाड़ी से पैसा हासिल करे। फिर पैसे से चीज़ें हासिल करें, फिर मकान बनेगा, खाना तैयार होगा, लिबास, बिस्तर तैयार होंगे। घरवालों के तर्तीब से ये दो मेहनतें हैं, पहली मेहनत से माल मिला, दूसरी मेहनत से चीज़ें मिलीं। जिससे ज़िंदगी के नक़्शे बनेंगे। इसी तरह दीन में पहली मेहनत है, हिदायत हासिल करने की, और फिर सेहते–आमाल के लिए मेहनत है। जिसके बाद ज़िंदगी हमेशा के लिए बन जाएगी। आज हम दुनिया की दोनो मेहनतें कर रहे हैं और दीन की पहली मेहनत छोड़ रखी है। दीन की मेहनतें दोनों को भी इकट्ठा करना है हिदायत यह है कि आंखों के सामने नक़्शों से कुछ नहीं होता है। बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले आमाल से सब कुछ होता है। माल चीज़ों का ज़रिया और

चीज़ें इंसान की परवरिश का ज़रिया तो असल मक़सद परवरिश है। इल्म, इज़्ज़त, इख़्तियारात में वुसअत, सुकून वग़ैरह, अगर चीज़ों से इंसान की परवरिश न हो, तो इंसान इन चीज़ों को बेचकर दूसरी चीज़ें हासिल करेगा, भूखा होने के वक़्त कोठी बेचकर इंसान रोटी लाएगा, परवरिश ख़ुदा के हाथ में है। न मेहनत में माल मिलता है, न माल से चीज़ें मिलती हैं। और न चीज़ों से परवरिश होती है, हम दुनिया की मेहनतों में से किस में मश्ग़ूल थे। तो अल्लाहु अक्बर कहकर बुलावा लिया, अल–हम्दु लिल्लाह कहकर बताया कि हम तो अपने किसी अमल से पल नहीं सकते। अल्लाह के पालने से पलेंगे न पालने से न पलेंगे। ﴿ایاك نعبدوایاك نستعین﴾ और पलने का ज़रिया कहा कि मानना ही है, तो हम पलने का ज़रिया माल–चीज़ें का इकट्ठा करना कहते हैं यह ग़लत है, जब कहा मानने से पालते हैं। तो मेरे इम्तिसाल صلوة والقيام في الصلوة والقعود से मेरी परवरिश होगी लेकिन उस वक़्त होगी जबकि दुनियाभर की चीज़ों से पलना निकलकर आमाल के इंम्तिसाल से पलना दिल में गड़ जाए। ﴿لا يكلف الله نفسا الا وسعها﴾ الصراط कानून से इंसान दुआ मांगता है। इंसान सिर्फ़ सूरत बना सकता है। हक़ीक़त सिर्फ़ ख़ुदा डालते हैं। المستقيم صراط الذين انعمت عليهم﴾ अंबिया का ज़हन था कि इम्तिसाल–अम्र से फ़िरऔन गरक़ होगा। हम ऊंचे होंगे, नमाज़ के बाद की दुआ से तख़्त सुलेमानी मिला, और यहया बेटा मिल सकता है, जो तख़ील चीज़ों पर है कि उनसे पलेंगे, वे आमाल पर आ जाएं कि उसने पलेंगे। अगर यह तख़ील आमाल वाला न हो तो, फिर इसे सिर्फ अच्छो के नक़ाली वाले ईनाम मिलेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मामूली से झलक भी फ़ायदे से ख़ाली न होगी, मजनून कुत्ते को अपने गले से लगाकर जज़्बे को आंखों से प्यार कर रहा

था लोगों ने एतराज़ किया मजनून अफ़ीफ़ था। ज़ानी नहीं थ। इब्ने उमर रज़ि० ने उससे पूछा कि मुसलमान होकर यह क्या क़िस्सा है तो मजनून ने कहा मैंने इसके साथ हराम नहीं किया, चुनांचे मजनून ने कहा कि इस कुत्ते की आंख में लैला की आंख की झलक है, आख़िरत में ऊंचा दर्जा मिलना। दुनिया में पलना इसी वक़्त है। जब कि नक़ाली से आगे हक़ीक़त तक पहुंच जाएं। सूरत मेरे पास है सीरत नहीं है इसी की दुआ اهدنا الصراط से करता है, यह सीधा रास्ता है। तमाम दुरूस्त हालात दिलवाएगा। चीज़ें कुछ न कर सकीं। उन्हें दर्मियान में लाएंगे, तो टेढ़ा रास्ता होगा। सीधा रास्त यह है कि जिसके हाथ में है। उसी से मांगा जाए, चार तरह के लोग हैं अंबिया, सिद्दीक़ीन, शोहदा, सालिहीन।

सिद्दीक़ीन नबी वाली वही पर नबी जैसी मेहनत करने वाले, शोहदा चाहे कैसे हों, जान देने वाले सालिहीन अपनी ज़ात से अच्छे अमल करने वाले, क़ियाम के बाद रूकूअ में सुब्हान रब्बियल अज़ीम कहकर रूकूअ करने पर और इस्तक़बाल क़िब्ला पर अल्लाह पालेंगे, रूकूअ से उठकर समीअल्लाहु लिमन हमिदा, रब्बना लकल हम्द से भी वही मश्क़ है, सज्दे में जाना और सज्दे की तस्बीह में सुब्हाना रब्बियल आला भी इसी तख़ील की मश्क़ है मेरा ख़ुदा बहुत बड़ा है, लिहाज़ा आला तरह से पालेगा, अगर चीज़ों से पलना नहीं है सिर्फ़ ख़ुदा से पलना है। ज़हन में है तो यह असल है और नक़ल यह है कि चीज़ों से पलना ज़हन में हे, असल हक़ीक़त आला होगी और नक़ली की कम और असली के सारे दुनियावी अमूर सिर्फ़ दुआ से हासिल हो जाएंगे और नक़ली के दुनियावी अमूर भी पूरे न होंगे, नमाज़ एक मेहनत है मुजाहेदा करके दुआ मांगने से हिदायत मिलेगी, अब नमाज़ मुजाहेदा कैसे

बने। आज की मर-वजह नमाज़ मुजाहेदा नहीं है। नमाज़ सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा की वजह से ख़्वाहीश छोड़कर हुक्म पूरा करना है। मिसाल के तौर पर किसी को कहा जाए कि नमाज़ पढ़ो, पचास रूपये देंगे, तालीम कराने से झोए मुक़द्दमें से बारात हो जाएगी, ज़िक्र से लड़का मिल जाएगा, डेढ़ सौ बार कलमा तैयबा हौज़ में खड़े होकर कहने से मतलूबा औरत मिल जाएगी या ज़िक्र, तालीम, नमाज़, कलिमा तैयबा, चूंकि अपने मसाइल के हल के लिए हैं इस वजह से मुजाहेदा नहीं है, ख़्वाहिश को तोड़ना मुजाहेदा है अब मस्जिद का छोटा-सा नक़्शा है तमाम ग़रज़ से दूर होकर सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए मस्जिद के मस्जिद ईमान की मज्लिसें, जन्नत, दोज़ख़, अंबिया वाले आमाल से ज़िदंगी बनने। आमाल की जज़ा-सज़ा इससे मक़्सद सिर्फ़ अल्लाह राज़ी हो। अल्लाह के राज़ी होने पर ही असल कामियाबी है। उन आमाल से मक़्सद कोई और चीज़ न हो। अब उन आमाल की ख़्वाहीश तोड़कर कर रहा है तो यह मुजाहेदा हुआ, डप्टी साहब की ख़िदमत में जो मस्जिद में तालीम में आते हैं इख़्लास न होगा कि इस ख़िदमत में यह मुकद्दमे में काम करवा दिया करेंगे। उन आमाल के बाद हिदायत तलब करे। दुआ से अब हिदायत का एक दर्जा मिल गया, अब उन आमाल पर यक़ीन लाना है कि उन्हीं से मैं पलूंगा दूसरी अश्या-चीज़ों से नहीं सबसे पहले मस्जिद के आमाल को शुरू करो साथ-साथ दुआ भी मांगते रहो। उनके शुरू करने से ज़िदंगी की तर्तीब बदल जाएगी। हुक़्क़ा की मज्लिसें सैर-तफ़रीह यार-दोस्तों की महफ़िलें ख़त्म होगी, कमाई से सीधे मस्जिद में आना होगा आदी ज़िंदगी और नफ़्स के मौक़े हटकर मस्जिद के आमाल में सिर्फ़ में सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा की वजह से मश्गूल हो, मस्जिद में आने से पहले यह ख़्याल आएगा कि यार-दोस्त वहां मज़े कर रहे हैं और मैं यहां, फिर उन यार-दोस्तों के ताने सुनने

पड़ेंगे। अब मुजाहेदा पहले से ज़्यादा होगा, मुजाहेदा कामिल नहीं हुआ, सूद लेना–देना हराम है। उसका एक लुक्मा पेट में चले जाने से चालीस दिन की नमाज़ें कुबूल नहीं होगी यह सुनकर दुकान पर गया और सूद लेना–देना बन्द कर दिया, एक तो दुकान के नक़्शे में कमी आएगी। जिससे घर में शोर आएगा, शानदार गिज़ाएं न मिलेंगी। उस पर रिश्तेदारों, बीवी, दोस्तों के ताने अलग, अब भी जमा रहा, तालीम–अमल में मश्ग़ूल रहकर यह ज़हन बना रहा है कि सिर्फ़ मस्जिद के आमाल ही से पलूंगा बाहर की ज़िंदगी से हराम निकाल दिया। कमाई की कोई शक्ल फ़र्ज़ नहीं है, कमाई फ़र्ज़ है, पहले तो बड़ी दुकान थी। आज लकड़ियां काटकर बेच रहा है ताकि हराम से बच जाएं, और मस्जिद के आमाल पर मिलने लग जाएं, अब अपने कमाई से हराम निकालना शुरू कर देगा तो अब मुजाहेदा होगा, कि जब कमाई में आमदनी कम हुई तो घर के नक़्शों में कमी करनी पड़ेगी। जिससे बीवी–बच्चे सब मुंह चिढ़ाएंगे, दोस्त रिश्तेदार, ولا تلقوا بايديكم الى التهلكة पढ़ेंगे राइज नक़्शे के छोड़ने का नाम तहलका रख दिया चाहे इस नक़्शे के करने से हराम का इरतिकाब हो रहा हो, और छोड़ने से इम्तिसाल अम्र हो रहा हो। बस ख़ाली दुकान में दीन की वजह से कमी डाल देने का नाम तहलका रख दिया है, हालांकि उस नाज़िल हुई आयत की शान यह है कि कुस्तुन्तुन्या के मौक़े पर एक शख़्स अकेले सारे लश्कर पर हमला कर दिया। उस पर नौ मुस्लिमों ने ये आयत पढ़ी। उस पर अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० ने कहा तुम क्या मतलब बता रहे हो, हम अंसार के मुताल्लिक़ यह आयत है। हमने हिजरत के दस साल ख़ूब माल–जान लगाई। जिससे इस्लाम चमकने लग गया, आमाल फैलने लग गए, और अपनी खेती–बाड़ी की तरफ़ बिल्कुल तवज्जोह ने दे सके, अंसार ने पंचायत करके हुज़ूर सल्ल० से छः महीने

की इजाज़त लेनी चाही कि उस अर्से में बेरूनी नक़ल–हरकत न करेंगे और मस्जिद के मकामी काम व आमाल सारे करेंगे। और खेती–बाड़ी की देखभाल करेंगे। इधर यह बात हो रही थी, उधर अल्लाह ने यह आयत उतारी وانفقوافی سبیل اللہ जान माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो ولاتلقوا بایدیکم الی التہلکۃ

وانماکانت التہلکۃ فی الاقامۃ فی الاھل و المال والولدوترک

चाहे तुम घर–कमाई को बिल्कुल सुन्नत में मुवाफ़िक़ बनाओ। तो लोग कुरआन के लफ़्ज़ को उससे हटाएंगे। चाहे उस सुन्नत में सरासर कामियाबी क्यों न हो। बेगम को हज़ार लाकर दिए, बेगम ने उसे ज़ेवर, लिबास और खाने–पीने में ख़र्च कर दिया, दूसरी सूरत यह है कि तुम मामूली हाजत, लिबास, खाना–पीना वग़ैरह के पैसे दे दो। तो सारे कहेंगे कि बीवी--बच्चों का भी हक़ है। ان لزوجک علیک حقا इस हदीस के नाज़िल होने की शान यह है कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० ने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० को ख़ुबसूरत बीवी लाकर दी और आप हूरों के चक्कर में सारे दिन रोज़ा, सारी रात नमाज़ में मशग़ूल रहते हैं। उसमें हर रात एक कुरआन पढ़ते थे। बाप से बीवी से आकर बेटे का हाल पूछा। उन्होंने कहा वह दिन में सायम रात में क़ायम बर्तन को खोलकर ही न देखा कि इसमें क्या है। बेटे पर नाराज़ होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गए, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आकर बात की फ़रमाया महीने में एक कुरआन और तीन रोज़े, कहा ज़्यादा ताक़त है। आख़िर बात उस ठहरी हर रोज़ एक मंज़िल कुरआन शरीफ़ की और एक दिन रोज़ा एक दिन इफ़्तार, ऐसे शख़्स के मुताल्लिक़ यह हदीस शरीफ़ आई है और अब हक़ यह बना कि साल भर रोज़े न रखें, सारी रात बीवी के पास रहें, एक मिनट को जुदा न हो। तो बस रिवाज बन गया हक़ ये नहीं हक़ वे हैं जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

और सहाबा रज़ि० करके गए, मुआशरा हज़ारों का बन गया है। तो इस सतह की ज़िंदगी चलाने में हक़ समझ लिया गया है। चाहें इसमें सूद–रिश्वत जैसी हज़ार चीज़ें आ जाएं। यानी पहले तो फ़र्ज़ों को ही छोड़े। लेकिन अब तो हराम इरतिकाब हराम शक्ल हाज़िर के चलाने के लिए करने लग गए। फ़ासिक़ की तारीफ़ से अल्लाह का अर्श थर्राह जाता है, हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नक़्शों को तोड़कर कमाया तो दीन ही को मिटाया। अब इस सारे मुजाहेदे के साथ मस्जिद के आमाल को पूरी तरह ज़िंदा करे तौफ़िक़ की दुआ मांगे, नबियों के ज़माने में नक़्शों का टूटना नक़्शों के बग़ैर उम्मत का उभरना सिर्फ़ इन्हीं मस्जिद के आमाल, ईमान की दावत, ज़िक्र, नमाज़, तालीम, अख़्लाक़ की वजह से है फ़िऔन इन्हीं आमाल की वजह से हलाक हुआ, ऐसे ही क़ौम फ़िऔन की हलाकत का यही सबब था, हजरत मूसा अलै० सिर्फ़ इन्हीं आमाल की वजह से कामियाब हुए यह आमाल मस्जिद ही अंबिया के मुआजज़ात–ख़ुराक़ के अस्बाब हक़ीक़ी हैं और आज भी उन आमाल की वजह से कामियाब हुए, जो उन पर हुआ है। जिस मस्जिद वाले इन आमाल को इनकी हक़ीक़त के साथ मुजाहेदा वाली लाइन से ज़िंदा करेंगे। तो मस्जिद फसादों, सेलाब, बम–बारी हलाकत और हर मुसीबत से महफ़ूज़ रहेगी, ये मस्जिद के आमाल को ज़िंदा करना छोटा मुजाहेदा है। उन आमाल को करना कमाइयों का बदलना घरेलू नक़्शों में कमी लाना, हिदायत मांगना, किसी मुसीबत के आने पर ज़हन दो रक्अत नमाज़ हस्ने–हसीन की तरफ़ ज़हन मुतवज्जोह होगा, हिदायत न होने की वजह से हम मुसीबत के वक़्त हुक्कम–लीडारी की तरफ़ ही दौड़ते हैं उनक तरफ़ जाना सूरत है और दुआ मांगना नमाज़ के बाद असल हक़ीक़त है। उनकी तरफ़ जाने में भी शरअ की हद की पाबन्दी लाज़मी है, कमाई के नक्शों में घर के नक़्शों में मस्जिद को

ज़हूर करेगा। तो फिर उन आमाल पर अल्लाह देने के दरवाज़े खोल देंगे। बड़े से बड़े मस्अले आ जाएं तो भी उसे चैन इत्मिनान होगा, रूस, अमरीका, जर्मनी, फ्रांस सब इकट्ठे हो जाएं। तो यह मुजाहेदे वाला इंसान बिल्कुल इत्मिनान से रहेगा। अब तो सिर्फ़ एक मुल्क की एक धमकी से पेशाब निकल जाता है, ये इस छोए मुजाहेदे पर मिलेगा, आज तो सब बेवाकूफ़ कहेंगे। लेकिन कल मुसीबत आने पर सालिहीन का फ़र्क़ पैदा ज़ाहिर होगा। जब तक हम उस मुजाहेदे की गाड़ी को चलाते रहेंगे। इस्लामी ज़िंदगी बढ़ती जाएगी, और जहां इस्लामी ज़िंदगी में कमी आएगी, अब बड़ा मुजाहेदा यह है कि इस छोटे मुजाहेदे को सारे आलम में ज़िंदा करने के लिए कोशीश करना। अंबिया उन्हीं आमाल का ज़हन बनाने के वास्ते दाई बनते थे, इस क़दम के लिए जिसमें माबूस हुए, बनी इसराईल में से हर एक अपनी ज़ात पर मेहनत कर रहा है और हज़रत मूसा अलै० सारे मज्मे पर। अंबिया का काम ये है कि मज्मे को आदी मुल्की माली नक़्शों से ख़ींचकर आमाल पर डालना नबियों वाली दावत की मेहनत है और अंबिया एक मकाम पर रहकर मेहनत करते थे। अपने शहर या क़ौम या अपने मुल्क में चूंकि मेहनत का दायरा कम था। इस वजह से अमला भी कम था, इसी वजह से खुद अंबिया ने मेहनत की है। हज़रत मूसा अलै० की खुसूसीयत यह है कि उन्होंने अपने मेहनत में एक शख़्स को बढ़वाया है। तो उसे तख़्त सुलेमानी से ज़्यादा हैसियत दी। हज़रत सुलेमान अलै० ने तख़्त सुलेमानी मांगा, ऐसी हुकूमत किसी को न मिली। सारी दुनिया पर उन्होंने एक सतर में दुआ मांगी। बग़ैर एहसान जतलाए कि दूसरों में जवाब दिया है कि सारी दुनिया की हैसियत एक मच्छर के पर के बराबर है और हज़रत मूसा अलै० को अल्लाह ने दावत दी और इसी दावत के साथ हज़रत मूसा अलै० को फ़िऔन के पास जानें का हुक्म दिया। अब उन्होंने

दुआ मांगी कि इनके भाई हारून को भी दावत वाला हुक्म मिल जाए यहां बड़ी चीज़ों की दुआ बड़ी है, चार सतरों की अल्लाह ने जवाब में पहले एहसानात गिनवाएं, सारे एहसानात गिनवा डाले। सब यह कहा कि तुम्हारी बात पूरी है। एहसानात गिनवाने के बाद हारून को हुक्म मिला है فرعون اذهب کے بعد اذهبا الی सिर्फ़ एक फ़र्द बढ़ने के लिए पंद्रह सतरें हैं। यानी हिदायत के लिए मेहनत करना, सारे तख़्त सुलेमानी से ज़्यादा क़ीमती है। हज़रत सुलेमान अलै० की बढ़ाई सिर्फ़ इस वजह से कि वह नबी दाई हैं तख़्त सुलेमानी की वजह से नहीं है, दावत का ताअद यह बड़ी चीज़ है अगर मूसा अलै० अगर हारून अलै० से साथ चलने को कहते तो वह साथ चल पड़ते। लेकिन दावत की ताक़त सिर्फ़ मूसा अलै० के साथ होती, अगर हुकूमत एक को भेजती है, तो सिर्फ़ इसी को ख़र्च देती है। दूसरे को अगर हुकूमत भेजेगी, तब इसे भी ख़र्च देगी। अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ियामत तक के लिए हर इंसान के नबी हैं हर क़ौम पर, हर इंसान पर। आपका इंतिक़ाल 63 साल बाद हो गया। अब इसे क़ियामत तक चलाने के लिए उम्मत को दे दिया गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सदर-मज्लिस, और उम्मते-मज्लिस है। जो बात मूसा अलै० ने हारून अलै० के लिए अपनी दुआ से मांगी थी। वे हमें बग़ैर तलब और दुआ के मिल गई है। अब बड़ी मेहनत यह है कि लोगों का ज़हन यह बनाओ कि वे चीज़ों से निकलकर मस्जिद के आमाल को सिर्फ़ हिदायत लेने के वास्ते करें और ग़रज़ साथ न हों। जिससे इनका ज़हन आमाल से ही पलने और चीज़ों से न पलने का बनेगा, और इस बड़ी मेहनत के साथ यह दुआ हो ऐ अल्लाह ! हिदायत न हम ख़ुद को दे सकते हैं न किसी और को, तू हिदायत दे दे। जैसे दवा दिखाने में शिफ़ा-शब्आ नहीं

है। ख़ुदा के करने से शिफ़ा–शब्आ होता है। ऐसे ही इस मेहनत में बा–नफ़्सा हिदायत नहीं है। ख़ुदा इसमें उमूमन डाल देते हैं, उन आमाल मस्जिद–हिदायत वाला दूसरों की दुनिया के मामले में ख़ुशामदना करेगा। बल्कि वह सारे इसकी खुशआमदें करेंगे कि इसे अपने तमाम मस्अले का हल अपनी मस्जिद के आमाल नज़र आए। आज चीज़ों से इस वजह से मिल रहा है कि उनसे मिलने का यक़ीन है ऐसे ही आमाल से मिलने का यक़ीन आ जाए, तो उनसे ही ज़रूर मिलेगा। आज आमाल हैं, हिदायत नहीं है, खुब ईमान की बातें करता है तक़रीरें करता है और दिल में यह है कि फ़्ला शख़्स मुतासिर हो जाएगा, तो वह मेरी ख़बरगीरी करेगा। इसे हिदायत नहीं मिली है, ज़लालत पर मरेगा, आज इसी वजह से हम कुफ्र से मुतासिर हैं और डरते हैं। हर मुल्क–शख़्स कहता है कि रूस, अमेरीका साथ हो, दीन तो माल ही से मिलेगा, आमाल से यक़ीन हट गया है। कुरआन में सबसे पहले सूरः फ़ातिहा है और नमाज़ में भी इसमें हिदायत की दुआ है अगर यह पहले कुबूल हो गई, तो बाद में आने वाली तमाम दुआएं और अंबिया वाले मुआजज़े हासिल हो जाएंगे। वरना नहीं। हम में तो हिदायत का तसव्वुर ही नहीं आता है। इस दुआ के मांगने के वक़्त, अगर दूसरों को समझते रहे खुद आमाल पर न आए तो नक़ाली रहेगी, छोटे मुजाहेदे से शख़्सी ज़िदंगी बनती है कि इसमें मुजाहेदा कम है बड़े मुजाहेदे में कुरबानी ज़्यादा है और इससे इज्तिमाई ज़िंदगी बनेगी। इस बड़े मुजाहेदे को इस तरह किया जाए कि हम ख़ुद को भी इस हिदायत का तालिब बनाएं। बड़े हज़रत रह० झाड़–फूंक किया करते थे और बड़े असरात वाले थे और हज़रत रह० तावीज़ भी शार्गिद से लिखवाते थे। इसी की वजह से पंद्रह–बीस टांगे देहली से आते मिठाई–फल चीज़ें और पैसे लेकर जब कुरआन और हदीसों के तावीज़ों में यह असर है तो ख़ुद कुरआन पर

अमल करने से कितना मिलेगा, अब हज़रत ने तब्लीग़ शुरू कर दी। और देहली वाले अहिस्ता–अहिस्ता कम हो गए। अब महीने में एक देहली वाला नहीं आया, माल देने को धुत्कारा कि माल नहीं चाहिए। तब्लीग़ में चलो, तब्लीग़ में क्यों लगते नहीं, फिर आते क्यों हो। इससे माल चंदा मदरसे में आना बंद हो गया और हज़रत ऐसे ही चले गए, शेख़ रशीद अहमद हज़रत शेख़ ने इस कुवां के पास बैठकर रजिस्टर देखा तो जितनी आमदनी उतना ख़र्च, बराबर, उन बुज़ुर्गों ने कहा उन उसूलों पर चलते रहना, मौलाना एहतिशामुल हसन साहब ने फ़रमाया कि फ़िक्र मत करो, कुरैश कुछ पैसें लगाएंगे, यह बुत सामने खड़ा हो गया, कुरैशी साहब बाहर चले गए थे। मुल्क साहब सिर्फ़ इनकी वजह से इनके साथ आत थे। और हर जुमेरात को कुरैशी साहब उम्दा खाने की देंगे लेकर आते थे। परचा भिजवा दिया, जान पहले लगाओ, अब नही तो अब माल, देग नहीं भेजना, मुझसे कहा, कि बड़े हज़रत बुर्जुग थे। उनके उसूल–तशद्दुद चल गया, तुम बुर्जुग नहीं, इनकी नक़ल न करो, मैंने कहा कि जिस बात को हज़रत चलाकर गए इसे अगर कहते रहे है तो वह चलती रहेगी अगर छोड़ दिया तो फिर इसको दोबारा ज़िंदा करना मुश्किल होगा। हां बात यह है कि हज़रत इस बात को पहाड़ की चोटी से खड़े होकर कहते थे और मैं पहाड़ के नीचे से ही कहूंगा, और अब अगर मैं अगर एक ख़त भेज दूं। तो कुरैशी साहब और मालिक साहब अपने सारे लम्बे चौड़े कारोबार को छोड़कर मस्जिद में बैठ जाएंगे। मुझे बिल्कुल यक़ीन है, हमें आता नहीं है। ख़ास तौर पर गश्त उमूमी गश्त, तालीम, ज़िक्र में हमारी अपनी मश्क़ है। दावत इस तरह दो कि शक्लों से मुतासिर न हो कि यह लग जाएगा, तो दीन में तरक्क़ी हो जाएगी, बल्कि मेहनत करने से जो हिदायत मिलेगी, इससे इस्लाम फैलेगा, अब जो मज्में के इस ज़हन को बनाने की मेहनत करेंगे।

तो कुरबानी होगी, लोगों से कहो कि हम भी बीमार तुम भी बीमार हो चलो, निकलें तन्दुरुस्त, हो जाएं। जिस शख़्स को इस काम से हिदायत न मिलें। वे मालदार के पीछे कुत्ते की तरह फिरेगा। और अगर हिदायत मिल गई तो मालदार कुत्ते की तरह इसके पीछे फ़िरेंगे। इस तब्लीग़ से दोनों तहर के लोग बनेंगे। अल्लाह की रज़ा के साथ इस बड़ी–छोटी मेहनत के बाद दुआ की कुबूलियत का मक़ाम हासिल होगा। ऐ अल्लाह ! मेरे पास सिर्फ़ नक़ाली है। तो इसकी जगह हिदायत हक़ीक़ी दे दे। कुरआन हमारे दिल में आ जाए इसी तरह कि जब कुरआन की बात सुनें। तो फ़ौरन कह दें कि मेरे दिल की बात कह दी। ये लफ़्ज़ ज़ुबान पर तो जल्द आएंगे। लेकिन दिल में 24 घंटे की मेहनत से आएंगे। खाने–पीने सोने में वक़्त कम करो। उन आमाले अरबा, या ख़म्सा में मज़े लेकर बैठो। कहते हैं कि एक शख़्स तबक़ों के तबाक़ सोने–चांदी के फ़क़ीरों में तक़्सीम कर रहा हो और दूसरा किसी को एक बात मस्अला फ़ज़ीलत का सुना दे तो दूसरा पहले से ज़्यादा क़ीमती है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मौज़ूअ मालदार नहीं है। बल्कि दावत है उन आमाल की अज़्मत दिल में लेकर बैठो, कि वज़ारत उज़्मा और तालीम कराने में तुम्हें इख़्तियार दिया जाए तो तालीम ही को तर्जीह दो। ज़िक्र से माल हटा न दे। एक सहाबी बूढ़े हो गए। तो तालीम में मशग़ूल हो गए एक दिन तालीम के दौरान में दो शख़्सों को आपस में हंसते देखा तो ना–राज़ हो गए। फ़रमाया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात की क़द्र नहीं है। अब से तुम्हें नहीं सुनाऊंगा सबक़ बन्द किया करेंगे आप ? अल्लाह के रास्ते में जाऊंगा उसी बढ़ापे में निकल गए और शहीद हो गए। उन आमाल में रग़बत–ख़ुशी जज़्बे से बैठो प्यास की वजह से तालीम से न उठो, ग़श्त बेहसी न करो। बल्कि जज़्बे से करो इसमें जाने को

ख़ुदा के महबूब होने की अलामत समझो, औरतों, बच्चों, मर्दों, कोठियों, दुकानों पर निगाह न पड़े, ज़मीन देखो तो क़ब्र याद करो। जहां यह अमल तो काम देगा यह मकानात नहीं, जब किसी से बात करो तो यह समझो यह बात क़ब्र में रोशनी बनेगी और साज–सामान मिट्टी बन जाएगा। ख़ूब जमाअतें निकालों अगर 24 घंटे तुमने सुबह वक़्त गुज़ारा तो फिर दुआ कुबूल होगी। अंबिया की तरह जैसे अंबिया की दुआ पर अल्लाह तआला ने ख़र्क़ आदत फ़रमाया है तो फिर तुम्हारी दुआ से ख़िलाफ़–ज़ाहिर इस्लाम चमकेगा। जिनका इस्लाम में आना मुश्किल नज़र आ रहा है। उन्हें भी अल्लाह हिदायत देंगे। हिदायत की दुआ मुस्तिकल मांगते रहो। अपने लिए हिदायत की दुआ मांगो कि उन आमाल से सारे हालात दुरुस्त होंगे। इसका यक़ीन पैदा करो, पीछे से ज़रा डोर हिली बीवी–बच्चे की बीमारी, मुक़द्दमें की तारीख़ पर फ़ौरन वहां से भाग गए यह नक़ली हुई, असली वालों ने जहां यह महसूस किया कि शायद हम पीछे हट जाएं। तो ख़ुद को घड़ों में आधा–आधा दबा दिया था। अपने लिए तमाम मुसलमानों के लिए हिदायत को मांगो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आलम के लिए रहमत बनाकर भेजे गए हैं। तुम उनके नाइब लिहाज़ा इस हिदायत–कामियाबी को तमाम इंसानों के लिए मांगो और इस सारी मेहनत में मक़्सद सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा हो अगर कोई भी ग़रज़ हो तो मुजाहेदा न रहेगा।

उमूमी बयान न० 4

तवक्कुल यह है कि अल्लाह जो कहे उसे करके फिर उस पर भरोसा करें।

दिन बुध, फ़जर के बाद, 11, अप्रैल, 1962 ई०

ख़ुत्बा मस्नूंना के बाद इर्शाद फ़रमाया

दोस्तों और बुज़ुर्गो !

आदमी की निगाह अक़्ल समझ मेहनत हर चीज़ छोटी है। और अल्लाह बहुत बड़े अक़्लों को बनाने वाले और ला–महमूद देखने और जानने वाले, अल्लाह हर एतबार से ला–महदूद, इंसान हर एतबार से महदूद, अब इंसान अपने इल्म और अक़्ल पर ज़िंदगी उठाए। तो उसकी ला–महदूद ज़िंदगी का इंतिज़ाम नहीं होता कि मौत के बाद भी हायात–सानिया है और वहां अपनी मेहनत से कुछ नहीं कर सकते। दुनिया की मेहनत पर इनका इंहिसार है, 50, 60 साल को सिर्फ़ बनाने के लिए अपनी अक़्ल–बसीरत से लगा दिया। तो मरने के बाद वाली ला–महदूद वाली ज़िंदगी बिगड़ जाएगी। जहन्नम में आग, बिच्छू, सांप होंगे, ज़जीरों में बांधा हुआ होगा। भूखा–प्यासा अल्लाह तआला इस दुनिया में भी ज़िंदगी कामियाब न होने देंगे। तंबीह के लिए क़दम–क़दम पर मुश्किलें लाते रहेंगे। कभी मुल्क में आफ़त, कभी भूचाल कभी सेलाब, कभी घरेलू ज़िंदगी ख़राब की जो तुम समझ रहे हो ग़लत है। अगर ख़ुदा के समझाने पर भी न समझा, सेलाब, भूचाल, आफ़त से कुछ दिन तो काम को छोड़ दिया है, फिर उन्हें करने लग गया और इन सेलाब वग़ैरह को

इत्तिफ़ाक़ी चीज़ समझा और यह ख़्याल न किया कि कोई समझ रहा है तो दुनिया भी ख़राब और आख़िरत भी, हदीस में है कि मोमीन जब बीमार हो तो अपने गुनाहों से तौबा करता है, और अपनी ज़िंदगी के शोब्हों में खिलाफ़–शुरू को तलाश करता है, और बीमार ग़ैर–मोमिन इस ऊंट की तरह है, जिसे बांधा था। फिर खोल दिया। इसे पता नहीं यह बांधना–खोलना क्यों, ज़ाहिर पर यक़ीन करने वाले तर्जुबे, इल्म–अमल के ख़िलाफ़ होना इस बात की दलील है कि जहां से तुम्हें होता नज़र आ रहा है वहां से नहीं हो रहा है। जैसे हिन्दु–पाक में ख़ुब बांध बन रहे हैं। ताकि खेतियां ज़्यादा हो, दो–चार साल में दस–बीस बांध ज़रूर टूटते हैं। जिससे सारी खेतियां तबाह, बस्तियां तबह यह बताने के लिए है कि करने वाला कोई और है। कमा रहा है दिन–रात लेकिन ख़र्चा ज़्यादा आमदनी कम, दवा करने से बीमारी बढ़ रही है। यानी कमाने व दवा इसे जो नज़र आ रहा है वह ग़लत जो समझ के ख़िलाफ़ करके लगा रहा इसे समझो अगर न समझा तो क़ब्र, हश्र, जहन्नम में मुसीबतें मिलेंगी कि अगर अल्लाह तौफ़ीक़ दे कि इंसान समझ ले कि मुझ में कुछ नहीं कि मेरा, बोलना, समझ, देखना अक़्ल–इल्म कुछ नहीं है, सब कुछ अल्लाह के हाथ में है, जैसे वह कह रहे हैं वैसे कर ले तो फिर ज़िंदगी अल्लाह बना दे। इसी दुनिया में इसी की खेती घर–बार बीवी–बच्चों की हिफ़ाज़त करेंगे, क़ब्र की मीठी नींद, हश्र का एज़ाज़, जन्नत के मर्तबे मरने के बाद मिलेंगे, सारे मदारिस पर है कि पलने–सेहत, ग़िना, नेमत, माल–इज़्ज़त, बुलन्दी हिफ़ाज़त, परेशनियों से निकलने के लिए मेहनत ख़ुदा के इल्म पर है या अपने एतबार से जितनी मेहनत ख़ुदा के एतबार से है इतना कामियाब, और जितनी अपने एतबार से इतना नाकाम, कामियाबी–नाकामी का म्यार मुल्क–माल के नक़्शों में नहीं है बल्कि तुम्हारी मेहनत के एतबार से है कि अगर

ख़ुदा के एतबार से हो तो कामियाब वरना, ना-काम, फ़िऔन ने बहुत कुछ बनाया। अपने एतबार से इसे नतीजे में हलाक कर दिया। दुनिया में फ़ौज, पुलीस ख़ास मेम्बर, चेलों-चपाटों को ग़रक़ कर दिया। मूसा अलै० की मेहनत ख़ुदा के एतबार से थी। फ़िऔन कहता, أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ मूसा अलैहिस्सलाम कहते हैं अगर तुम ईमान ले आए, हो तो अल्लाह पर तवक्कुल करो और आजकल हम कह देते हैं कि अल्लाह पर तवक्कुल है। अरे तवक्कुल यह नहीं है कि ज़ुबान से कह दें, तवक्कुल यह है कि अल्लाह जो कहे उसे करके फिर इस पर भरोसा करें। मूसा अलै० की क़ौम ने हमारी-तुम्हारी तरह कह दिया। मेहनतें इनकी और थीं, और ज़ुबान से तवक्कुल कह दिया, ज़िंदगी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ गुज़ारी। जब आफ़त आई तो पीरों के पास पहुंच गए, हमारा तो अल्लाह ही पर भरोसा है। यह ग़लत है, तवक्कुल से आसमान से खाने उतरते हैं। अंबिया के ज़माने में जो कुछ हुआ है वह ख़ुदा के तवक्कुल से हुआ है। चीज़ सिमटने को तवक्कुल समझते हैं। यह नहीं है, चीज़ में ख़ुदा के हुक्म को पूरा करो। सूद, रिश्वत, झूठ छोड़ने से कमाई में कमी आई। अब ख़ुदा पर भरोसा करो कि हुक्म इनका माना है। लिहाज़ा वही कोई सूरत निकालेंगे। जितना हुक्म ज़िक्र का, या तालीम में बैठने या तब्लीग़ में निकलने का है। इसे पूरा कर दो और कमाई को उन तमाम चीज़ों की वजह से छोड़ो जितने का हुक्म है। अपने निगाह वाला उसके हाथ से गया। ज़िक्र, नमाज़, तब्लीग़ तालीम को छोड़कर जो काम सकता था। वे हाथ से गया। ऐसे ही कुछ ग़श्त तस्बीह के सदक़े में चला गया, वापस जाकर जितनी आफ़त आई। सह लिया, धोखा ख़्यानत वग़ैरह न की चाहे कितना नफ़ा आया। मैंने हुक्म माना कायनात पर ख़ुदा का तवक्कुल है और अमल न हो तो ऐसे तवक्कुल को ख़ुदा नहीं मानता, जैसे कि आज

कल कहते हैं कि हिन्द में हम अकसीरीयत वालों के नुरगा में हैं। हमारा तवक्कुल तो ख़ुदा पर है, यह तवक्कुल नहीं है। बल्कि ज़िंदगी के तमाम अहकाम पूरे करके ख़ुदा पर तवक्कुल करो। तवक्कुल करते ही मिल जाना ज़रूरी नहीं है, पहले कुछ जाएगा, उन तमाम काम को जो अपने इल्म के एतबार से कर रहा। इसके जाने में यह समझे कि यह ख़राब जा रहा है हुक्म पूरा करके तवक्कुल कर रहा हो। सूद लेने से 5 हज़ार हर महीने आते हैं, अब छोड़ने से 5 हज़ार भी नहीं आते। लेकिन सूद नहीं लिया, तवक्कुल यह है कि अपनी मेहनत व समझ के एतबार से खाने ख़र्च करने के तरीक़े छोड़े और कमाने और ख़र्च करने के ख़ुदा वाले तरीक़े इख़्तियार करना है, लोग समझते हैं कि अपने तौर पर मेहनत करें और ख़ुदा पर तवक्कुल करें मूसा अलै० की क़ौम ने कहा ﴿على الله توكلنا﴾ और दुआ मांगी, उस दुआ का जवाब अल्लाह ने क़ुबून व मना का न दिया। बल्कि यह कहा ﴿واوحينا الى موسى ان تبوا﴾ नमाज़ पढ़ने के ठिकाने बनाओ, अपने एतबार से इस्तेमाल न हों, बल्कि ख़ुदा के एतबार से हों। इसके बाद तवक्कुल पर मिलेगा, सलात यही है कि अपने एतबार से इस्तेमाल न हो, बल्कि ख़ुदा के एतबार से हो, भूख लगने पर ख़ुदा के एतबार से कि नमाज़ पढ़कर दुआ करके बीमारी से शिफ़ा–भूख की दौरी मांग ली। अपनी निस्बत अपने इस्तेमाल के मवाक़ए से निकाला और चीज़ों पर से यक़ीन हटा लिया और अपने आमाल पर यक़ीन कर लिया। ख़ुदा के ज़रिए इस्तेमाल होने पर कामियाबी का यक़ीन और अपने एतबारे से ना–काम होने का यक़ीन हो जाए। जिनमें यह यक़ीन पैदा हो। उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाओ, तमाम मसाइल में अपने तरीक़े छोड़कर ख़ुदा से मांगना, बनी इसराइल का मूसा से क़ब्ल यह तरीक़ा था कि फ़िऔन वग़ैरह की ख़ुशआमद करते। मूसा अलै० ने कहा कि तमाम परेशानियों के बावजूद

सिर्फ़ ख़ुदा की ख़ुशआमद करो, यह घाटी सब्र वाली है। तक्लीफ़ें उठाकर अहकाम वाले तरीक़े पर आता है। उन घाटियों में से दर्मियानी घाटी यह है कि तो फ़िऔनी एलान हुआ तो कहा وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى اٰذَيْتُمُوْنَا यानी यह नहीं कि अब फ़िऔन की ख़ुशआमद करने लग जाएं। बल्कि तमाम मुसीबतें बरदाश्त करके सिर्फ़ उसी ख़ुदा से कहा। जिसकी यह ज़मीन है। قَالُوْا اُوْذِيْنَا فِى اللّٰهِ مِنْ قَبْلِ وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا इस जुमले से मालूम होता है कि ज़ाहिर में कुछ दिखाई नहीं दे रहा है, फिर फ़िऔनी दनदनाते फिर रहे हैं। और बनी इसराईल इनके सामने ऐसे जैसे चूहा–बिल्ली के सामने। लेकिन कह रहे हैं कि वक़्त क़रीब है, पहले दुआ बहुत छोटी थी। और यह दुआ बहुत बड़ी है। सख़्त दुश्मन के ख़त्म करने जवाब उस वक़्त मिला। जब ख़ुदा के एतबार से इस्तेमाल होने पर इस्तिक़ामत हुई और सैकड़ों साल वाले तरीक़े अपने छोड़े, फ़िऔन की उम्र 6–7 सौ साल हुई है, जब इस क़ौम ने तमाम तक्लीफ़ों को बरदाश्त करके अपनी समझ के मुताबिक़ इस्तेमाल नहीं हुए, बल्कि ख़ुदा के एतबार से हुए। तो अल्लाह ने क़ुदरत दिखाई कि इधर समुंद्र उधर सुती हुई तलवारें आगे ग़रक़ पीछे क़त्ल का डर, अब क़ौम घबरा गई, कहा पकड़े गए, मूसा अलै० ने झल्लाकर कहा كَلَّا (कला) वही कामियाबी का रास्ता दिखाएगा। हालात चाहे कितने तंग से तंग हो जाएं, ख़ुदा पर ही यक़ीन रहे अल्लाह ने कहा समुंद्र पर असा मारो, अब इसमें सिवाए इसके कि अल्लाह के लिए इस्तेमाल हुए, अक़्ल की बात नहीं अक़्ल तो यह है कि बढ़कर असा फ़िऔनियों पर मारो, या असा को सांप बनाकर फ़िऔनियों के पीछे लगा दो। अल्लाह ने दिखाया कि हम हमारी तरफ़ से दरवाज़े खोलते हैं। जब बे–चौन–चराबात मान लो, अगर अक़्ल को दख़ल दिया तो फिर नहीं। यहां

दिखाना यह है कि जब तुम खुदा के लिए बग़ैर अक्ल के इस्तेमाल होगे, फिर खुदा तुम्हारे लिए इस्तेमाल होगा। हुक्म मिलते ही हज़रत मूसा अलै० ने लकड़ी ज़ोर से मारी, अब यह मारना उस वक़्त अल्लाह के लिहाज़ से इस्तेमाल है, उन पर जान लगाओ, उससे खुदा से ताल्लुक़ होगा। मां के पेट में मेरे कैसे अच्छे आज़ा बनाए। अब तालीम के हलक़े हैं, जो दावत में होगा वह मुजम्मल होगा, यहां तफ़्सील है। दावत में जन्नत, जहन्नम, सिफ़ात होंगे, ज़ात–सिफ़ात, फ़रिश्ते, ग़ैबी निज़ाम, अच्छे बुरे अमल के नतीजों के तज़्किरे होंगे और इसके साथ ज़िक्र–नमाज़ अल्लाह की ख़िदमत चले। इन पांचों पर मेहनत करने से इंसान का ताल्लुक़ ख़ुदा से बनता है। और अपनी–अपनी चीज़ों को छोड़–छोड़कर करोगे, इतना ख़ुदा से ताल्लुक़ ज़्यादा बढ़ेगा। हममें हैं ख़्वहिशें हर चीज़ की, उन ख़्वाहिश वाली चीज़ों पर ज़्यादा मेहनत करोगे। उनसे मुहब्बत ज़्यादा बढ़ेगी। उनसे निकलना हटना और मस्जिद वाले आमाल पर मेहनत करना ताल्लुक़ बदलने के लिए है। जब ख़ुदा से ताल्लुक़ होगा तो हर अमल में ख़ुद ही पूछेगा कि इसमें ख़ुदा का हुक्म क्या है ? अब तो लोग बताते हैं और हमारे ज़हेन में नहीं रहा कि ताल्लुक़ नहीं है उन आमाल ख़मसा पर जिस पर हुज़ूर सल्ल० सारी उम्मत को डाल गए, जितनी हमने पहले ज़माने में इन पर मेहनत की थी ख़ुदा का ताल्लुक़ आ गया था। अपना ताल्लुक़ ख़त्म हो गया तो सहाबा फ़ाक़े से ख़ुश होते कि अल्लाह ने भेजा है, अपने जिस्म पर क्या हो रहा है। इसे नहीं देखते। मुआज़ बिन जबल रज़ि० ताऊन (प्लेग) की फांसी को प्यार करते, हालांकि उससे बहुत ज़्यादा सख़्त तक्लीफ़ थी। पहले वह छोटी–सी थी, लोगों ने कहा घबराओ मत छोटी है। फ़रमाया अल्लाह इसमें बरकत डालेंगे, यानी इसे बड़ा करके मार डालेंगे। यह सब कुछ इस वजह से था कि ख़ुदा से ताल्लुक़ था, जितनी मेहनत इन

आमाल ख़मसा पर करेगा इतना ताल्लुक़ बदलेगा। हर अमल में इनका लिहाज़ होगा। इसके बाद आगे भूचाल, सेलाब में चमकाकर दिखाएंगे अपनी कुदरत से, हमारा कुदरत से इस्तिफ़ादा ज़रूरी है। इसलिए मेहनत ज़रूरी है, मस्जिद बनाकर आमाल दे दिए और आमाल की मेहनत दे दी। कम से कम दर्जा यह है कि एक मर्तबा साल में चार महीने चलो। महीने में तीन दिन अलग। दिन सारा का सारा बाहर बर्बाद मत करो। बेरूनी और मक़ामी मेहनत है। ख़ुदा से जब ताल्लुक़ पैदा हो जाएगा। गाड़ी चल जाएगी जैसे अंबिया की चली।

उमूमी बयान न० 5

तमाम मस्अलों का हल नुबूवत के आमालों में है

दिन जुमेरात, असर के बाद, 12, अप्रैल 1962

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

इब्तिदा इंसानियत से दो रास्ते में मेहनतों के चले आ रहा हैं और इंतिहा इंसानियत तक चलते रहेंगे। कभी कोई ग़ालिब, कभी कोई ग़ालिब, एक यह है कि तमाम मस्अलों को आमाल के रास्ते से हल करना, माल, रोटी, कपड़ा, मुल्क इत्मिनान सुकून अपने आमाल से हासिल करना, दूसरा रास्ता है तमाम मस्अलों का हल माल के रास्ते से हो, मुल्क, औहदे, गिज़ाएं, सेहत–सुकून माल के रास्ते से हासिल करना। पहला यह है कि अच्छे आमाल बनाएं, ख़ुदा ज़मीन मुल्क व कुव्वत ग़लबा देंगे। यह बात नहीं कि इस रास्ते से मस्अलों का हल नहीं है जैसे, तिजारत, खेती–बाड़ी, दुकान–मुलाज़मत से मस्अले हल कराए, ऐसे ही सालेह आमाल से मस्अले हल करवाए। एक यह है कि अपनी मेहनत को चीज़ों के एतबार से ख़र्च करना और इसी से हल चीज़ों के रास्ते से हो, दूसरा यह है कि या माया आमाल पर लगे, अपने और ख़ुदा के दर्मियान के आमाल दुरूस्त करें। फिर दुआ करें, और कहीं कि हमारे पास कुछ नहीं है आपने उन आमाल पर जो वायदा किया है। उन्हें आप पूरा करें। हिफ़ाज़त करें, सेहत दें, पेट भरें, सेराब करें, ख़्वाह इनमें आप

चीज़ें इस्तेमाल करें या न करें, इसलिए कि आप हर चीज़ पर क़ादिर हैं, हम तो अख़्लाक़ व आमाल दुरूस्त कर चुके तमाम लाइनों को दुरूस्त करना पड़ेगा। दूसरी में एक लाइन पर किफ़ायत हो सकती है, तिजारत के ज़रिए मुफ़ाद हासिल कर सके, हम ऐसे ही मुलाज़मत में दूसरें शोब्हों के मुफ़ाद हासिल कर सकते हैं और पहली लाइन में हर–हर अमल में शोब्हे वाला दुरूस्त करना होगा। एक लाइन से मुफ़ाद हासिल नहीं हो सकता है आज हम सिर्फ़ नमाज़ और ज़िक्र के मस्अलों का हल चाहते हैं। इस लाइन से नमाज़ से हल उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक अख़्लाक़, मामलात और दूसरी इबादतें दुरूस्त न हों। घरेलू ज़िंदगा का तरीक़ा भी ग़लत है और सिर्फ़ नमाज़ पढ़ता है और फिर दुआ करता है नमाज़ पढ़ने से जैसे आपने अंबिया के साथ किया वैसा मेरे साथ भी करना बेशक नमाज़ से होता है लेकिन उस वक़्त जब कि बाक़ी तमाम शोब्हें भी दुरूस्त हों, सिर्फ़ नमाज़ ही एक अमल नहीं है। जैसे नमाज़ में आंख, पांव, नाक, कान, पांव, ज़ुबान के आमाल हैं। ऐसे ही बाक़ी ज़िंदगी में भी उन आज़ा के आमाल हैं, नमाज़ दरवाज़ा खुलवाने का रास्ता है आामल से कामियाबी मिलेगी। तभी 'ला इला इल्लल्लाह' तमाम का मिला–जुला रिश्ता है। हर नबी के ज़माने में जो कुछ हुआ है, वह इस 'ला इलाह इल्लल्लाह' की वजह से हुआ है। जब कि इस पर मेहनत की गई और जो मेहनत नबी करता है उस ज़माने में इस नबी का नाम लग जाता है, इब्राहीम अलै० के ज़माने में इब्राहीम ख़लील–अल्लाह मूसा अलै० के ज़माने में मूसा कलीम–अल्लाह हज़रत ईसा अलै० के ज़माने में ईसा रूह–अल्लाह और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मुहम्मद–रसुलुल्लाह लगा, यानी इस कलिमे से फ़ायदा, उस वक़्त मिलेगा। जब कि उस मज़कूर नबी के तरीक़े पर अमल हो या मतलब नहीं है कि नबी का नाम लगने

से वह भी करने में खुदा का शरीक हो गया है जैसे यहूदी उज़ैर और ईसाइ ईसा के बारे में कहते हैं बल्कि यह था. अपने अख़्लाक़ आमाल, रहन–सहन इबादतें इस नबी के तरीक़े पर हों फिर 'ला इलाह इल्लल्लाह' वाली बुनियाद से कामियाबी मिलेगी। इस बुनियाद का मतलब यह है कि जहां तक इंसान को इंसान होने के एतबार से दिखाई देता है यह कलिमा इसका इंकार है तो इन चांद–सूरज से यह होगा यह कलिमा इसका इंकार है। इससे कुछ नहीं होता, आसमान, ज़मीन, हवा, पानी, खेती–बाड़ी में तहक़ीक़ कर लो। यह कलिमा इसका इंकार है कि यह इसका ज़ाती नहीं है। अगरचें इसमें है अल्लाह चाहेंगे इससे यही होगा वरना न होगा, हर नबी के ज़माने में मिसाल क़ायम की गई। आग से वह से नहीं होता जो रोज़ देखते हैं बल्कि इससे वह होगा जो खुदा चाहते हैं। तहक़ीक़, तर्जुबे, इंसानी फ़हम का इंकार है जिसका ला इलाह से इंकार है इसका इल्लल्लाह से अल्लाह के लिए इकरार है। जितनी शक्लें सूरतें इंसान के सामने हैं इनका इंकार ला इलाह इल्लल्लाह से है। 20 साल की मेहनत में दुकान से पलना नज़र आता है। इसके मुक़ाबले का यक़ीन ला इलाह इल्लल्लाह है इससे नहीं पलता बल्कि खुदा के पलने से पलता है। हर चीज़ के मुक़ाबले का यक़ीन है और मुक़ाबले के बाद वही किया था। फिर फ़ायदा क्या हुआ जैसे अंग्रेज़ के जाने के बाद भी वही गिरानी ज़ुल्म तलख़ीयां बाक़ी है। तो इसके जाने का क्या फ़ायदा, फ़ायदा तो यह है कि मुक़ाबले के बाद दूसरी चीज़ आए ज़मीन से कुछ नहीं, ताजिर भी ज़मीन में पहली तरह लगा हुआ है। असल मुक़ाबला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आएगा। ला इलाह इल्लल्लाह ज़ुबान का दावा है। माल से मकान से, दुकान से नहीं होता। क्या दलील है ? ख़ाली खुली बिला दलील माना जाता है। अब दलील यह है कि हमारे आमाल हुज़ूर सल्ल०

जैसे हों तो फिर कामियाबियां इनमें से निकलकर दिखाऊंगा। अगर अमल पर मसअला आ जाए। तो तमाम मुल्कों के मस्अले हल हो जाएंगे कि आमाल के ज़राए सब इंसानों में मिले–जुले हैं। माल के ज़राए तिजारत, खेती–बाड़ी वग़ैरह। एक जैसे नहीं हैं इससे कामियाबियां नहीं मिलती हैं। नक़्शे बढ़ने से अमल की ख़राबी, अमल की ख़राबी से नक़्शे और बढ़े, आज चीज़ें और शोब्हे और बढ़ते जा रहे हैं इनकी वजह तरक़्क़ी नहीं है। बल्कि इंसान की हार है कि पहले नक़्शे से कामियाबी न मिले, मस्अले हल न हुए फिर ग़ौर से फ़िक्र करके और शोब्हे क़ायम किए। उनसे मसअले हल न हुए। तो उस पर और शोब्हा क़ायम कर दिया। ब–हैसियत मज्मा चीज़ों की कसरत है और कामियाबी की क़िल्लत है बस असल बुनियाद है कि आमाल से कामियाबी मिलती है और आमाल के ज़राए दिल व आज़ा सबके पास हैं। इसमें तफ़रीक़ नहीं है। मिल वाले, सरमायादार और महकूम और ग़रीब–तरीन सबके पास ज़राए आमाल बराबर और मिले–जुले है। अगर कोई आज़ू न हो तो उसका ज़रिया यह है कि इस अज़ू के न होने पर सब्र करना, वज़ीर की कामियाबी, ख़ती–बाड़ी से, ग़रीब की कामियाबी माल के नक़्शे से नहीं है। जब नक़्शे का इंकार है दो पैसा दो लाख, दो करोड़, दो अरब का भी इंकार होगा। जब झोंपड़े का इंकार है। तो सदर की कोठी का भी इंकार जिन्स का इंकार है जज़ा का नहीं, बस कामियाबी सिर्फ़ आमाल में है इसी से तमाम झगड़े ख़त्म, ग़रीब मालदार, बनने की कोशीश न करेगा। महकूम हाकिम बनने की कोशीश नहीं करेगा। एक ज़ुबान वाला और कोई ज़ुबान लेने की कोशीश नहीं करेगा। बल्कि सब अपने अमल दुरूस्त करेंगे, कि कामियाबी सिर्फ़ आमाल में है। चीज़ों के नक़्शे में कामियाबी नहीं है। यही अंबिया का सही रास्ता है। जिसे हम हर नमाज़ में कहीं बार मांगते हैं। انعمت عليهم सिर्फ़ सालेह आमाल वाले हैं।

ज़ाल-मग़ज़ूब सिर्फ़ वह हैं जिन्होंने माल, मुल्क, खेतों पर मेहनत करके बर्बादी ली। अब हम हर नमाज़ में दुआ कर रहें। अच्छी तरह यानी माल के रास्ते पर चलने मत दुनिया आमाल पर चलने दो। अब यह बाहर आकर तुम मेहनत सिर्फ माल की बुनियाद पर उठा रहे हो। या तो तुम्हारी दुआ मरदूद या तुम्हारे नक़्शे माल वाला तोड़ जाएगा, बहुत-सी मुसीबतें सिर्फ़ इसी वजह से हैं कि दुआओं में जो मांगते हैं इनके खिलाफ़ करने पर ग़ज़ब वालों के रास्ते पर न चलने की दुआ मांगर रहा है। अब भूचाल इस वास्ते आया कि हमने दुआ मांगी है। मग़ज़ूब के तरीक़े पर न चलने की अल्लाह ने उसे कुबूल कर लिया और जब हम इनके तरीक़े पर चलने लगे तो इसके रोकने के लिए भूचाल आए। अब के साथ मेहनत भी रखी गई है और साथ-साथ आमाल भी हैं तमाम चीज़ों का यक़ीन आमाल पर लाना इसके लिए सबसे पहले आयत दी ﴿الحمدلله رب العالمين﴾ कि इताअत करने वालों, आसियों, चींटी, सांप सबको निज़ाम वहीं से हो रहा है, अपनी कुदरत से जो कुछ दिया करते हैं और जब यह जान लिया कि कुदरत से होता है मुल्क व माल के नक़्शे से नहीं तो फिर ﴿ايا نعبدوایاك نستعين﴾ कहा मानेंगे हर अमल में मामले, इक़्तिसादियात-मुआशरत खाने-पकाने में हर लाइन में चीज़ देखकर न चलेंगे। बल्कि अमल देखकर चलेंगे चाहे मकान रहे या न रहे कपड़े रहे या न रहें, आपसे मांगते रहेंगे आप देते रहेंगे, मुलाज़मत में आमाल को दुरुस्त करना होगा। मुलाज़मत छूट जाए चाहे तिजारत ठप हो जाए, सिर्फ़ रूख़ मोड़ना है। कि इन चीज़ों से न होने बल्कि कुदरत से होने का यक़ीन करके चलना है। लिहाज़ा कुरदत के बताए हुए आमाल लेने हैं। जिस पर कुदरत से कामियाब करेंगे। कि दुनिया-आसमान के नक़्शे कुदरत के तहत हैं। जो यह कहते हैं

कि करते तो ख़ुदा हैं लेकिन कोई ज़रिया तो हो यानी इन कुदरत अश्काल में महदूद है। अरे ये शक्ल भी इसी वक़्त बनेगी, जब कि वह चाहेंगे। अब आमाल वाला रास्ता यह है कि सिर्फ़ ख़ुदा का एतबार करो किसी भी लाइन का ख़्याल न करो शैतान का काम क्या है कि इंसान जिस लाइन में है इसे उस लाइन का तरीक़ा बताता है कि फ़लां अमल से तिजारत बढ़ेगी। फ़लां अमल से घटेगी। ان الشيطان يعدكم الفقر जुल्म–झूठ से लाइन बढ़ जाएगी। नफ़्स माद्दा सफ़ली है जो सिर्फ़ लाइनों को देखता है। कुदरत इंसान में अलवी निगाह है, शैतान भी सफ़ली है कि जैसे मैंने हुक्म तोड़ा है ऐसे ही इन खुलफ़ाए–अल्लाह को लाइनों में फ़ंसाकर इनसे अहकाम तूड़वाने हैं अब तमाम लाइनों में चलने के लिए आमाल से पहले यक़ीन का रूख़ जमाना होगा होगा चाहे जिस लाइन में चलें। इस लाइन में ख़ुदा के करने से होगा, लिहाज़ा में ख़ुदा के लिहाज़ से करूंगा। तमाम लाइन झलके हैं और अमल मग़रूर गोदे की तरह है अंडे में या बच्चा होंगा या वह ख़ुद गंदा हो जाएगा। अगर वह बच्चा बन गया तो बढ़ेगा और इसमें रखे हुए मुनाफ़े मिलेंगे, और अगर गंदा हो जाए तो भी टूटेगा। लेकिन भली सूरत में कामियाब वरना ना–काम, ऐसे ही तमाम लाइने छिलके की तरह हैं और आमाल मगरूर की तरह हैं। छिलके को हर सूरत में टूटना है। आमाल अच्छे तो कामियाब वरना ना–काम। जब सारे अंडे गंदे हो जाएंगे। कोई भी अंडा अच्छे अमल वाला न रहेगा। आसमान ज़मीन का नक़्शा भी तोड़ देंगे। अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेहनत दे गए हैं। आमाल के कुवां की लाइन में रहना भी लाइन ही का असर डालता है। इस वजह से लाइन से निकलना रखा है। अपनी तमाम लाइनों तिजारत, ज़राअत और घरेलू ज़िंदगी से नमाज़ रोज़े, और हज के लिए निकल और यह चारों मेहनतें हैं। सिर्फ़ नमाज़ से रोज़े रखने से

सिर्फ़ हज–ज़कात देने से मेहनत नहीं बनती है इनमें से हर एक मेहनत बनेगी। जब कि इनको इन चार पर लाया जाए, ईमान तरीक़ा ध्यान और नीयत के साथ नमाज़ उन तमाम पाबंदियों के साथ हो। जो हुज़ूर सल्ल० ने बताई हो इसके लिए तालीम के हलक़े हों, नमाज़ में ख़ुदा के अलावा किसी और का ध्यान न आए, इसके लिए ज़िक्र की ज़रूरत है, ईमार हासिल करने के लिए मुस्तिक़ल मेहनत है। ऐसे ही अमल का मक़्सद सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा हो, इसके लिए मुस्तिक़ल मेहनत है। इन चारों मेहनतों के बाद हममें नमाज़ का मिज़ाज मिलेगा। अगर हम ये चारों मेहनतें न करें तो फिर नमाज़ से इसका मिज़ाज न पैदा होगा, और नमाज़ का मिज़ाज यह है कि अल्लाह के हुक्म के आगे जान के तक़ाज़े को दबा लें। चीज़ों के एतबार से जान का कोई अमल न हो। बल्कि सिर्फ़ आमाल के लिहाज़ से जान का इस्तेमाल हो। बीवी पर जो चाहे हो रहा हो, कारोबार में जो चाहे हो रहा हो, पेट में हाथ में दर्द हो हर हाल में इसे करना है औरों का मिज़ाज उस वक़्त मिलेगा जबकि इस नमाज़ से पहले उन चार चीज़ों को हासिल करे। नमाज़ के हर जुज़ में एक ख़ास मिज़ाज है। मिसाल के तौर पर तहरीमा के वक़्त हाथ उठाए इसका मतलब यह है कि अल्लाह का इक़रार है लफ़्ज़ अल्लाहु अक्बर से और हाथ उठाने से ग़ैर–अल्लाह का इंकार है। ऐसे ही पहले सज्दे में जाना गोया पहले ख़ाक में सोने का इक़रार है। पहले सज्दे से उठना गोया दीन से बंधना। दोबारा सज्दे में जाना क़ब्र में जाना है, दूसरे सज्दे से उठना क़ियामत के दिन उठना है और हर–हर अमल का एक ख़ास मिज़ाज है। और यह उस वक़्त मिलेंगे कि इस नमाज़ से पहले चारों मेहनतें हों, हम तो पांच मिनट में आकर इस नमाज़ को अदा कर लेते हैं। भागे आए और भागे–भागे गए क्योंकि हमें तो कामियाबी चीज़ों में नज़र आती है। आज इसी बुनियाद के

आम हो जाने की वजह से सारी इंसानियत बर्बादी के किनारे पर पड़ी है। अगर अमल दुरूस्त न हुए तो ना–मालूम कितनी मुसीबतें आएंगी। नमाज़ की तरह पर इबादतें, तरीक़ा–ईमान ध्यान नीयत के लिहाज़ से दुरूस्त हो तो रोज़े से जान के तक़ाज़े दबाने, ज़कात से दूसरों पर माल लगाने, हज से माल–जान आलमी तरीक़ों से दूसरों पर लगाने, नमाज़ से जान–माल पर ख़ास तौर से इस्तेमाल करने के लिए मिज़ाज मिलेंगे, चारो अनासीर अरबा है, जैसे दुनिया में अनासीर अरबा है।

उमूमी बयान न० 6

हिदायत यह है कि जो कुछ कुरआन में है वही दिल का विजदान हो

दिन जुमा, फ़जर की नमाज़ के बाद, 13, अप्रैल, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद ईर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

दुनिया में दो तरह की मेहनतें हैं पहली मेहनत आमले-इस्लाह वाली है दूसरी मेहनत यह है कि मेहनत से माल हासिल किया जाए। फिर इस माल पर दोबारा मेहनत करके चीज़ें हासिल कर लें। फिर घर वाले वग़ैरह सब मिलकर इन चीज़ों से ज़िदंगी दुरूस्त करते चले जाएं। दूसरी मेहनत इस सरमाया से नक़्शा बनाना, पहली मेहनत से हिदायत मिलेगी। वहां सरमाया माल है यहां हिदायत है आगे का निज़ाम इसी से चलेगा। पहली मेहनत आमाल की इस्लाह की मेहनत, दोनों मेहनतों के बाद कामियाबी मिलेगी। अब अगर पहली मेहनत ख़त्म हो जाए। जिससे हिदायत मिलती है, तो हिदायत मिलनी ख़त्म हो जाएगी। फिर दूसरी मेहनत ख़ुद ख़त्म, कि तमाम आमाल को दुरूस्त किया जाए, जैसे आटे के न होने की सूरत में आटे वाली मेहनत कैसे होगी। कपड़े न होने में सिलाई-धुलाई की मेहनत भी ख़त्म। आमाल की मेहनत भी ख़त्म हो जाती है। जब हिदायत दुनिया में न रहे आज यही बात है कि पहली मेहनत ख़त्म कर दी है। जिससे दूसरी मेहनत भी ख़त्म होती जा रही है, आज हम सिर्फ़ माल वाले

रहे गए है, इस्लाम सिर्फ़ अंबिया की कुरबानी पर आया है। इब्राहीम अलै० ने इस्माइल अलै० व हाजरा को जंगल–बियाबान में डाला इस यक़ीन पर कि ख़ुदा पालते हैं बग़ैर पानी व आदमी ज़ाहिरी अस्बाब के, और यही दुआ मांगी। ऐ अल्लाह ! हमारे रब यानी तर्तीब करने वाले यानी ज़िंदगी चलाने वाले मैं अपने बीवी–बच्चों को इस मैदान में इस वास्ते डाल रहा हूं। माल हासिल करने के लिए नहीं अगर यह मक्सद होता तो फिर मैं माल के नक़्शों वाले इलाक़े में डालता बल्कि इस वास्ते कि नमाज़ क़ायम करें। नमाज़ तमाम आमाल का मज्मूआ है। एक वक़्त तमाम आज़ा काम कर रहे होते हैं, मैं मुल्क–माल के नक़्शों से निकलकर यहां डाल रहे हैं। और जब ये दोनों मेरे मक़्सद को पूरा कर देंगे, तो फिर लोगों के दिल इनकी तरफ़ फेर दे, ख़ूब रिज़्क़ दे, इनकी दुआ पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अशरा–मुबशरा ख़ुलफ़ाए–राशीदीन मुहाजिरीन, अंसार दुनिया में आए। इन सबने कुरबानी पेश की, नक़ल–हरकत में पत्ते चाबे, 24 घंटों में एक खजूर खाई ज़ख़्मी पैरों से पैदल चल रहे हैं, पैरों पर कपड़े बांध रहे हैं। ख़ूब प्यास लगी कि ऊंट की ओझड़ी को निचोड़कर इसका पानी पिया और इसी सर और जिगर पर रखा किल्लत मा खाने की किल्लत में या काम क्या, सख़्त सर्दी में भरपूर हैं ओढ़ने के सामान न होने की वजह से रात एक घड़े में गुज़ारते हैं। लम्बा सफ़र है और दस के पास एक ऊंट है इसी तरह दावत दी तो लोगों ने अपनी दुनिया नक़्शों मकानों को छोड़कर इनके साथ इख़्तियार किया। जैसे इब्राहीम ने इस्माइल, हाजरा को वहां डाला, जहां पलने का नक़्शा नहीं थे। मुल्क व माल वाले इस्लाम में बाद में आए, मुल्क व माल पर इस्लाम नहीं फैला जिस बुनियाद पर मुसलमानों को वजूद है। अगर उसे छोड़कर वह किसी और बुनियाद पर मेहनत करेंगे तो ख़त्म। मुल्क या माल की बुनियाद पर अंबिया

ने मेहनत नहीं की है, उस वक़्त दोनों बुनियादें थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आमाल की मेहनत पर उठाई है, जैसे दूसरे रास्ते में माल से रोटी पानी, ज़मीन से निकलना, कपड़े, सेहत, हिफ़ाज़त मिलती है। यहां आमाल से भी तमाम काम होते हैं। आमाल वालों को माल व मुल्क व क़िला ज़रूरत नहीं है। इनकी हिफ़ाज़त आग और बतने हौत में भी हो जाएगी। अमल से मिलने वाली कामियाबी बड़ी और दोनों जहां में होगी। माल से मिलने वाली कामियाबी छोटी और सिर्फ़ मौत तक के लिए, आज माल से पलने वाले मौत के बाद ख़ून के आंसू रोएंगे, जब नामे—आमाल बाएं हाथ में मिलेगा। तो इस ज़ोर से घरबाएगा कि उंगलियां, हथेलियां, कोहनियां, मुंह से चबाकर ख़त्म कर देगा। फिर आंख से आसूं निकलेगे कि इनके आंसूओं में कश्तियां चल सकती हैं। फिर ख़ून इतनी ही मिक़्दार में फिर पीप भी इतनी ही मिक़्दार में निकलेगी, कि इनमें ख़ून की तरह कश्तियां बह सकें। माल की लाइन लम्बी नहीं है। बहुत—से—बहुत मरने तक हो सकती है। मौत से पहले भी ख़त्म हो जाती है, बहुत से माल वाले मुल्क वाले इन चीज़ों से मौत से पहले ही महरूम हो जाते हैं। अल्लाह तौफ़ीक़ दे कि अमल में कामियाबी लें तो दुनिया में ऊंची कामियाब और आख़िरत में भी। आमाल के ज़रिए मुसीबतों से ख़ुलासी हिफ़ाज़त हासिल करें, आमाल चौबीस घंटे वाले दुरूस्त हों। जान व माल दोनों के, इसमें सख़्त मेहनत करनी होगी। जैसे घोखे, सूद, ख़्यानात, ज़िना का चस्का हो। इससे निकलने में मेहनत करनी पड़ेगी। ऐसे ही तमाम औसाफ़ हसना हया, हलाल, ख़ुशूअ सलात, ज़िक्र की जान भी मेहनत से हासिल होगी, 24 घंटे के हर काम में दोनों तरीक़े हैं, अमल के माइने यह नहीं हैं कि हम तमाम काम छोड़ दें। अमल के माइने यह हैं कि उन्हें हम ख़ुदा के तरीक़े पर करेंगे, न माल की बुनियाद पर ज़राअत, तिजारत, मज़दूरी से

मक़सद अल्लाह की रज़ा हो न कि माल हासिल हो जाए। अगर माल का हसूल मक़सद होगा तो इनमें झूठ, सूद सब चलेगा। अगर ख़ुदा वाली बुनियाद पर ये काम होंगे कि ख़ुदा ख़ुद कामियाब करेंगे। तो फिर तमाम कामों में सिर्फ़ उन वाले ही अमल लाने होंगे और ऐसे ही माल ख़र्च करने की तर्तीब भी इनसे लेनी होगी। माल वाली बुनियाद में माल का ख़र्च दूसरी तर्तीब पर होगा कि सारा माल ही इनकी जान पर लगा और पहली सूरत में अपने पर कम और दूसरों पर ज़्यादा, जहां माल वाले रास्ते में हज़ार ख़र्च होंगे। वहां दस ख़र्च करने वाले होंगे। अमल वालों के आगे माल वाले साइंस वाले मशीनों वाले हुकूमत वाले चांद पर जाने वाले सबको झुका देंगे। ये आमाल सारे ठीक होंगे, हर जगह के, माल पैसे कपड़े नहीं लेने होंगे। सिर्फ़ अमल ठीक करने होंगे, और इससे पहले सरमाया हिदायत का होना ज़रूरी है। हिदायत यह है कि जो कुछ आंखे चीज़ों में देखती हैं। वे सब आमाल में नज़र आए, कुरआन में एक तरफ़ हिदायत की दुआ है

ख़ुद कुरआन हिदायत है यानी यह कुरआन तुम्हारे दिल में आ जाए। कुरआन हिदायत लेकिन हमें न मिले तो कुरआन से क्या फ़ायदा हासिल कर रहा। सारे कुरआन में माल पर ज़िंदगी बिगाड़ कर दिखाई हैं और आमाल पर बनाकर दिखाई हैं, क़ारून के आमाल ख़राब थे माल समेत धंस गया। फ़िऔन के पास माल व हुकूमत नहरें हैं, इसमें ख़ुद ही जहाज़ भी बना दिया था, कि इसके पुर्ज़े एक पहाड़ के नीचे से मिले हैं। इस ज़माने में सब अक़्लमंद थे कि हर चीज़ बनाकर उसे दुनिया में आम कर दें ताकि लोगों से इनके पैसे वसूल कर लें, और कार के इस्तेमाल से इंसान से मेहनत व मुशक़्क़त का माद्दा निकल जाएगा, और इस ज़माने में ऐसी चीज़ों को आम नहीं करते थे कि आम क़तसादी हालत का क्या हुआ। कितने क़ौमी व सलाहियतें

ख़त्म हो जाएंगी, मिसाल के तौर पर जिस ज़माने में मोटर, रेल नहीं थीं। वह ज़माना पस्त था एक्क़सादी हालत अच्छी थी। एक शख़्स के यहां घोड़ा है वह घोड़ा लखनऊ से देहली 24 घंटों में पहुंच रहा है। घोड़े से घोड़ा पैदा होते हैं, ऊंट वालों के यहां ऊंट बढ़ रहे हैं, गधे वालों के यहां गधे, अपना अपनी ज़रूरत से ज़्यादा दूसरों के पास पहुंचा रहे हैं। अब जितना माल पेट्रोल पर लग जाता है और साल भर में मरम्मत में ख़र्च होता है। वह सारा माल ग़रीबों पर ख़र्च हो जाता, अब पहली मोटर अगर ख़राब है तो 25 हज़ार कहां से लाएंगे, नई मोटर के लिए, फ़िऔन ने हवाई जहाज़ बनाया था, अब फ़िऔन के आमाल ख़राब थे इस वजह से उसकी हुकूमत ख़राब कर दी, नम्बर दो की इस्किम फ़ैल कर दी। इसकी इस्किम यह थी कि इब्राहीम पैदा न हों, पैदा हो गए तो मर जाएं, पल गए तो अब जल जाएं, लेकिन सारी इस्किम फ़ैल हो रही है, कहीं सन्अत वालों की सन्अत में किसी की तिजारत में, किसी की अक्सीरियत में, किसी के बाग़ात में ज़िंदगी तबाह कर दी है, अगर दिल पर मोहर न लगी हो तो कुरआन का हर सफ़ा कहेगा कि अमल में ज़िंदगी बनती है। माल से नहीं दूसरी तरफ़ देखो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पहले कुऐं में, फिर वहां से ग़ुलामी फिर जेल में और फिर हुकूमत के तख़्त पर इब्राहीम की स्कीम चल पड़ी, मुहम्मद सल्ल० पैदा हो, हज पर लोग आएं, इनके ज़माने की स्कीम फ़ैल हो गई कि एक इब्राहीम को सारे मिलकर मार दें, बनी इसराइल के अमल अच्छे बने मन व सलवा उतार दिया, जैसे कि नेक अमल पर ईसा अलै० को फ़ायदा दिया। ऊपर नीचे से मूसलाधार पानी है अक्सीरियत को डूबो कर सिर्फ़ क़ौम नूह 80 अफ़राद को नेक अमल पर बचा लेते हैं, अब कुरआन ठीक है, चाहे इसे ग़लत कहते हो, हम से सिर्फ़ वह यह मुतालबा करता है कि नम हिदायत हासिल कर लो, जो कुछ

चीज़ों में नज़र आ रहा है वे सब कुछ आमाल में नज़र आ जाएगा, बग़ैर कमाए मिल सकता है। कुरआन में कहीं जगह कहा है कि मिल सकता है बल्कि कमाई से मिलता नहीं, इनके देने से मिलता है। जो मुक़द्दर में लिखा जा चुका है वह ज़रूर मिलेगा, अब हिदायत नहीं है। इस वजह से सब के दिल व दिमाग़ पर छा गया है कि मेहनत से माल, माल से चीज़ें, चीज़ों से पलना यही ज़लालत है। हिदायत यह है कि अल्लाह के हाथ में है माल, चीज़ें, कामियाबियां, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले अमल पर चलेंगे, अल्लाह माल भी देंगे। चीज़ें भी कामियाबी भी, जैसे यह है कि आग जलाती है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले अमल से आग नहीं जलाएगी। जैब में पैसा हो तो इत्मिनान, बे-फ़िक्री होगी जहां चाहेंगे खाना खा लेंगे। अब जैब में हो या न हो दिल में यह हो कि नमाज़ पास है जब चाहे मांग लेंगे। अल्लाह ने दुनिया में हर एक को पाला है लेकिन हर एक को हमेशा के लिए नहीं मिलता है। किसी को आख़िर में जहन्नम में जला देंगे। अगर माल वाले तरीक़े से पलेगा, तो तेरी मुहब्बत लोगों के दिल से निकाल देंगे इब्राहीम व नमरूद दो, अबू जहल व मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पाला है नमरूद, अबू जहल, फ़िऔन का पलना ख़त्म हो गया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व इब्राहीम का पलना चलता रहेगा। माल के रास्ते से पलना है तो पल लो लेकिन कुछ दिनों के बाद पलना नहीं है। माल के रास्ते में पलने का वक़्त मुक़र्रर है जिसके बाद मुसीबत का शिकार है, जैसे बीवी में मज़ा है, लेकिन जहां दो-तीन बच्चे हुए, रह्म में बीमारी हुई तो ब्यान से पहले सुना था यह कहेगा। वक़्त पूरा हो जाने के बाद कहेगा कि ऐ काश न होता। जैसे बहुत से कहते हैं कि तक़्सीम न होती कि तक़्सीम से मस्अले न यहां हल हुए न पाकिस्तान में, एक मेहनत है हिदायत मिलने की

जब हिदायत मिल जाएगी तो हिदायत की मिसाब शेशनी की है। जैसे रोशनी में इंसान की चीज़ का पता लग जाता है हौज़, कपड़ा, सांप, बिच्छू, क़ातिल, सेढ़ी ,चाकू, अंधेरे में कातिल को दोस्त समझेगा, कपड़े को शेर, बिच्छू को शर्बत की बोतल, जब हिदायत मिलती है तो आमाल सालेह व तालह का फ़र्क़ फ़ौरन महसूस हो जाएगा। इसी दुनिया में दिखाई देगा कि फ़लां क़िला महल, वज़ारत के बावजूद मुसीबत में है कि फ़लां अपने झोपड़े में अम्न से है साफ़ नज़र आएगा कि फ़लां के सच बोलने से यह हो गया। ग़ुलामी की मुसीबत दुआ से ख़त्म होगी, हिदायत के बाद उन आमाल में दिखाई देगा। तो जैसे आज चीज़ों में देखकर उनमें लग रहा है ऐसे ही हिदायत से देखकर आमाल को दुरूस्त करेगा। पस हिदायत यह है कि जो कुछ कुरआन में है वही दिल व वजुदान हो, अमल पर नेमतें मिलती हैं। चीज़ों से नहीं, यहीं दिल का वजुदान हो, कुरआन कहता है कमाई से नहीं मिलता माल से नहीं पलता अगर इसके अलावा दिल का वजुदान है। तो ज़लालात के बाद सालेह आमाल की ज़रूरत महसूस नहीं होती है। पहला सिलसिला हिदायत लेने का है तो फिर दूसरा सिलसिला आमाल की इस्लाह है। आज पहला सिलसिला नहीं है इसी वजह से हज़ारों कुरआन के तर्जुमे में तसानीफ़ व तक़रीरें हैं लेकिन 25 साल सुनने के बाद भी सूद नहीं छोड़ा। वजह यह है कि हिदायत नहीं है सिर्फ़ कुरआन सुनने से अमल नहीं होता पहले मुक़ाबला होगा। माल कमाने की मेहनत में और वक़्त निकालकर इसे कम करो कि आंख देख रही है इसकी तरदीद करो और जो नहीं दिख रहा है इसे साबित करो। आंख देखती है कमाई से मिलता है। इसकी तरदीद करो दावत से एक माहौल बनेगा। जिसमें फ़रिश्तों, ज़ात–सिफ़ात और आमाल के नतीजे के तज़्किरे होंगे। बजाए चीज़ों के ज़िक्र के सीखने, सिखाने का माहौल होगा। फिर तालीम,

ज़िक्र, नमाज़ एक दूसरे का इकराम करना होगा। इन चीज़ों के फैलाने की मेहनत करो, मेहनत करके दुआ मांगो। ऐ अल्लाह ! हिदायत दे उन आमाल मुतफ़र्क़ा में से सिर्फ़ एक काफ़ी न होगा। बल्कि तमाम आमाल करने के बाद हिदायत मिलेगी। दावत जज़्बे उभारेगी, तालीम से अच्छे आमाल के नतीजे मालूम होंगे, दावत में आंख देखे का इंकार, सिर्फ़ कुरआन व हदीस का इस्बात होगा, तालीम आमाल के नतीजे सामने लाएगी। फिर ज़िक्र पर मेहनत होगी, आदमी जो शक्ल देखता है इसका ध्यान दिल में आता है कोई औरत, पराठे देखने से दिल में ध्यान में आएगा इसका ज़ुबान पर ज़िक्र होगा और दिल में इसकी शक्ल भी और जब इसका ध्यान भी तो इसके मुताबिक़ अमल करेगा। अगर एक मर्तबा पराठे खिला दिए तो दूसरी मर्तबा फिर जाने का ख़्याल होगा। अगर एक–दो मर्तबा खिला दिए तो हर मर्तबा कहेगा यहां से चलते जाओ। इससे मिल लेंगे, यानी पराठे खाएंगे। जंगल में शेर देखा इससे असर लेकर कोई बे–होश होगा, कोई भागेगा। देहली का वज़ीर देखा तो इससे फ़ौरन मालूम होगा कि देहली में हर काम कर सकता है इसके आगे–पीछे फिरेगा। अब इंसान का वजूद ही नहीं है। फ़ौरन जिसको देखा वैसा ही करने वाला बन गया इसके लिए ज़िक्र खुदा है कि अल्लाह का ध्यान इतना दिल में हो कि दूसरा आ ही न सके। वज़ीर साहब हैं दिल में इसका ख़्याल ही आएगा। जन्नत, हूरों, ग़ुलमान का ध्यान इनके ज़िक्र से नहीं आता है, सोचकर कहे तो आएगा। अब अल्लाह के ध्यान की मश्क की जाएगी, अल्लाह का ध्यान दिल में आएगा। तो वह तमाम चीज़ें तुम्हारे क़दमों में होंगी। जिनका दिल में न हो, वज़ीर या शेर नज़र आए। तो इसका ध्यान दिल में न आए और हुज़ूर सल्ल० वाले इल्म के मुताबिक़ करते चले जाएं, बस दिल में ख़ुदा का ध्यान होगा। अब आप इस वज़ीर से न डरेंगे, इस शेर से न डरेंगे, दावत, तालीम, ज़िक्र के बाद

अब नमाज़ पढ़ें। ईमान, ध्यान व तरीक़ा के बाद इस नमाज़ पर दरवाज़े मिलने के खुलेंगे और आख़िरी चीज़ यह है कि जान को इसी तर्तीब से ख़र्च करना। जो तर्तीब हुज़ूर सल्ल० लाए हैं। शुरू में इन आमाल पर चलने से दावत, तालीम, ज़िक्र, नमाज़ ख़िदमत की शक्ल बनेगी, असल उस वक़्त मिलेगी। जबकि यह चीज़ें दिल में उतर जाएं। पहली सूरत में पहलू के साथ शबाहत होगी। इस पर ख़ुदा को जितना देना होगा दे देंगे। लेकिन असल आ जाए तो वही आपके साथ होगा जो पहलों के साथ हुआ है। शबाहत वाली सूरत में रोटी से दुआ नहीं मिलेगी। जैसे कि पहलों को मिल रही थी इसमें ग़ैर की शबाहत है, कली नहीं जैसे इक़्तिदाद है। तक्बीर में इमाम पर मुसाबक़त से तक्बीर न होगी इस पर इत्तिफ़ाक़ है। अब हम मुक़्तदी हैं हुज़ूर सल्ल० इमाम में ज़ाहिर इक़्तिदाद सिर्फ़ अमल कर लेना है और हक़ीक़त व बातिन यह है कि इस अमल के वक़्त जो हुज़ूर सल्ल० के दिल में कैफ़ियत थी वही तुम्हारे दिल में हो। इस पर तुम्हें वही मिलेगा जो इनको मिला था। पहले मुक़ाबला यह हुआ कि कमाई के मुक़ाबले में हिदायत हासिल करें कि ख़ुदा के देने से मिलता है। कमाई से नहीं आमाल हसना पर और माल देंगे। उन्हें आमाल की वजह से अंबिया के ज़माने में ख़र्क़ आदत हुआ, लेकिन उस वक़्त हुआ, जबकि इनका यक़ीन था कि इन्हीं अमल पर सब कुछ होगा। इलैक्शन में जिसके आप वर्कर (सेवक) बनेंगे, इसकी तरफ़ दावत देने पर वह इस वर्कर (सेवक) का सारा ख़र्चा उठाता है। तो जब हम ख़ुदा की तरफ़ बुलाएंगे, वह हमारा ख़र्च न उठाएंगे, वर्कर के ज़िम्मे सिर्फ़ दावत देना है। उस शख़्स की तरफ़ चाहे लोग वोट दें या न दें और अगर दें तो यह शख़्स कामियाब हो या न हो, कामियाब हो तो इसकी चले या न चले, चले तो मेरा काम करे या न करे और काम करते हुए उन तमाम

एहतमालात के बावजूद, वर्कर के ज़हन में यह होगा कि यह मेरा काम करेगा। ऐसे ही दावत देंगे अल्लाह की तरफ़ ख़ुदा तमाम हालात को दुरूस्त करेंगे। दावत देते हुए पूरा यक़ीन इससे मिलने पर हो, दावत के अमल को करना यक़ीन को ग़ैर से इसकी तरफ़ मोड़ना है। अगर कमाना बिल्कुल शरीअत के मुवाफ़िक़ हो तो इससे करोड़ दर्जा अच्छा है ख़ुदा की तरफ़ बुलाना ख़ुदा ने दावत दी तमाम अंबिया, सहाबा ने दावत दी दावत बहुत ऊंची चीज़ है। इसकी क़ीमत ख़ुदा के यहां बहुत है। सारी दुनिया की बादशाहत ख़ुदा के रास्ते में खर्च कर दें इससे ज़्यादा क़ीमती है। एक इंसान को सिर्फ़ एक मिनट दावत दे दें, फिर तालीम पर मश्क़ करो कि देने से मिलता है कमाने से नहीं और कमाई पर जितना देते हैं। इससे ज़्यादा तालीम पर दे देंगे, ज़िक्र करने पर भी अल्लाह देंगे, नमाज़ के बाद मांगने पर भी देंगे, ख़िदमत खलक़ से भी देंगे, हर चीज़ देंगे। जितना वक़्त कमाई, घरूले ज़िन्दगी नक़्शों से इस तरफ़ आता चला जाएगा। दुआ की कुबूलियत बढ़ती जाएगी। अभी उन आमाल से हिदायत नहीं मिली है। हिदायत मिलने का ढांचा बना है। हिदायत मिलने की दुआ करें हिदायत जब मिल जाएगी। तो हर ज़रूरत के वक़्त सीधे मस्जिद में जाकर दो रक्अत के बाद दुआ मांगने पर दिल को इत्मिनान हो जाएगा कि अल्लाह कर देंगे और अभी तो यह है कि तालीम व दावत ज़िक्र व बाकिया आमाल को हम छोड़ देते हैं, अपने दुन्यावी उमूर की वजह से, यह नकाली हुई, इस पर जितना मिलना है मिल जाएगा। उन आमाल पर खुद चलना भी है इसे फैलाना भी है। इस सारी मेहनत के बाद हिदायत मिलने की ख़ुदा से दुआ मांगे एक तरफ़ यक़ीन हो फिर दुआ करें, मेहनत करते रहें मांगते रहें। मस्अलें आएंगे, दावत, तालीम करते रहेंगे कि उन आमाल के ज़रिए ही वह हल होंगे कि ऐ अल्लाह मैं तेरा काम

करता हूं। लिहाज़ा इन मसअलों को हल कर किसी और तरफ़ नहीं जाना है इसी मेहनत के बाद जब हिदायत मिलेगी, तो देखेंगे कि नमाज़ पढ़कर दुआ मांगी लेकिन बात पूरी न हुई, हालांकि वह दावत, तालीम, ज़िक्र कर रहा है तो समझ में आया कि दो पैसे लेने पर सात–सौ पचास (750) नमाज़ें जाती हैं। अब पैसे वापस करके दुआ मांगी फिर भी कुबूल न हुई, तो मालूम हुआ कि ग़ीबत करता है। तमाम से माफ़ी मांगकर, आकर इस काम को करेगा। फिर न होने पर सूद कमाई में मिलेगा, नमाज़ से न होने के अमल खुद तलाश करके उन्हें दूर करेगा। उन आमाल ख़म्सा से सब कुछ होता है। लेकिन यह आमाल बाक़ी तमाम आमाल से जुड़े हुए हैं। जैसे पाख़ाना करके उस जगह को न धोया कि किसे नज़र आता है तो सारी नमाज़ कुबलू न होगी या लेकिन इस्तिंजा कर लिया लेकि कश्फ़ हो गया नमाज़ में तो फिर न होगी। ऐसे ही तमाम आमाल को दुरूस्त करना होगा। नमाज़ से हम दरिन्दों जैसे इंसानों सांपों जैसे इंसानों से बचेंगे आज हिदायत नहीं है। लिहाज़ा आमाल ख़राब हो गए सो आमाल से मुसीबत आ रही हैं, ज़लालत होने की वजह से इन मुसीबतों को दूसरों पर लगाएंगे, वह मिम्बर बन गया। लिहाज़ा मुसीबतों में आ गए। मंडी पर इनका क़ब्ज़ा हो गया अरे यह मुसीबतें तुम्हारे आमाल की ख़राबी की वजह से हैं तुम आमाल दुरूस्त कर दो तो नेमतें इस तरह आकर घेरेंगी, जैसे ख़राब आमाल पर मुसीबतों ने आ घेरा था, उन आमाल ख़मसा के बाद ख़ुदा से दुआ करो हिदायत की यानी उन आमाल से होने का ज़हन दे दे चीज़ों से न होने को दिल में पैदा फ़रमा, हम आज आपसे कमाई घरेलू ज़िंदगी बदलने को नहीं ज़िंदगी की तर्तीब को बदलने को कहते हैं। जिससे हिदायत मिलेगी और फिर आप ख़ुद कमाई घरेलू ज़िंदगी को बदलेंगे। यही आमाल हैं जिनके आने से इस क़ौम व मुल्क वाले बनते हैं

और इनके निकलने से इन क़ौम व मुल्क वाले मर जाते हैं। जब इन आमाल से होने का दिल में यक़ीन आ जाएगा। तो फ़िर जिस अमल के मुताल्लिक़ सुनोगे कि इससे नमाज़ कुबूल न होगी तो फ़िर उस अमल को ख़ुद ही छोड़ दोगे। नमाज़ को नमाज़ बनने के लिए दावत से, ईमान से, ध्यान से इल्म से तरीक़े ख़िदमत से अख़्लाक़ का लेना ज़रूरी है। फिर नमाज़ के बाद दुआ कुबूल न होने पर कमाई घरेलू ज़िंदगी में से बुरे अमल निकालने पड़ेंगे। जैसे हर रोज़ हर माह कमाते हैं मौत तक उन आमाल ख़म्सा को करना है मरते दम तक का निज़ाम बनाना होगा। इतना वक़्त शहर से बाहर उन आमाल के फैलाने के लिए और मुक़ाम पर रहते हुए आधा वक़्त मस्जिद में आधा मस्जिद से बाहर सहाबा का औसत था और सहाबा साल में चार माह लगाते थे। अब उम्र में कम से कम चार माह एक मर्तबा दे दो। बाहर निकलकर उन आमाल ख़म्सा की आदत डालो फिर अपने लिए और तमाम मुसलमानों के लिए हिदायत मांगो। हिदायत जब मिल गई तो बाक़ी आमाल ख़ुद–ब–ख़ुद ज़िंदा हो जाएंगे। अगर सहाबा जैसे दरवाज़े खुलवाना चाहते हो तो उन जैसे तर्तीब पैदा कर लो। अब अगर ऐसा न कर सको तो एक मर्तबा चार महीने दे दो, साल में चार महीने की जगह चालीस दिन सही मक़ामी काम में आधा वक़्त न सही तो चौथाई दे दो, अब हज का वक़्त आ रहा है अश्रा ज़िल हिज्जा के दिन अफ़ज़ल हैं। इन दिनों में निकलने से हाजियों में मेहनत होगी। इससे इनके हज सही होंगे और मेहनत करने वालों की दुआओं से वहां के हाजियों का हज सही रंग वाला होगा या सारी दुनिया इस मेहनत की मुहताज है इसी से आलमी हालात दुरुस्त होंगे।

उमूमी बयान न० 7

अगर पूरे इस्लाम वाले बने तो पूरा नफ़ा मिलेगा

फ़जर के बाद, जुमेरात, 19, अप्रैल, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तों !

किसी रास्ते में कामियाबी हासिल करने के लिए एक तो हिस्सा डालने की ज़रूरत है एक पूरा नफ़ा हासिल करे, अगर हिस्सा डाला तो हिस्से के एतबार से नफ़ा और पूरे का मालिक है तो पूरी जान लगाकर पूरा नफ़ा हासिल करेगा। इख़्तिताम साल का इंतिज़ार होगा। रोज़ाना का नफ़ा अपने इस्तेमाल में ला सकते हैं। हिस्से की हालत में वक़्त पर ही नफ़ा मिलेगा चाहे घर में फ़ाक़े पड़ जाएं। दोनों सूरतों में हिस्सा डालने से सिर्फ़ माल डालता है कि दूसरे जान लगाकर नफ़ा हासिल करें। पूरे के मालिक होने पर पूरी जान व माल लगानी पड़ेगी दोनों सूरतों कायदें व ज़वाबित अलग–अलग हुए। इसी तरह इस्लाम का यही क़िस्सा है एक है हिस्सा डालना और एक है पूरे इस्लाम वाला बनना, अगर हिस्सेदार बना जाए तो हिस्सों की तक़्सीम क़ियामत को है वहां हिस्से की जन्नत मिल जाएगी। अगर पूरे इस्लाम वाले बने तो आख़िरत व दुनिया में पूरे नफ़े मिलेंगे। आज हममें इस्लाम में सिर्फ़ हिस्सा डालने का रिवाज है। और जितने का हिस्सा नहीं डाला इसकी वजह से मुसीबतें आईं। बहुत सी हदीसों में जोड़ बिठाने को कहा है। ظهر الفساد فی البر و البحر यह तमाम बद–अमालियों की वजह

से इस दुनिया में मुसीबतें आती हैं। अगर पूरी मुसीबतें ब–क़द्र हिस्सा हैं तो क़ब्र से मज़े शुरू। अगर मुसीबतें हिस्से से कम हैं तो अज़ाबे क़ब्र होगा, अगर इस अज़ाब से भी सज़ा पूरी न हुई तो क़ियामत में मुसीबतों में गिरफ़्तार होगा, फिर जन्नत में, अगर क़ियामत की मुसीबतों से भी बद–अमालियां ज़्यादा हों तो फिर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। इसके बाद जन्नत में अगर हम दुनिया व आख़िरत में इस्लाम के तमाम मुनाफ़े हासिल करना चाहते हैं तो 24 घंटे में इस्लाम पर चलना होगा। जिससे दुनिया में भी नाफ़ेअ इल्म ग़लबा, इज़्ज़त, चैन व सुकून, अमन वग़ैरह मिलेगा। अगर पूरे इस्लाम पर न चले तो हिस्सा मतरूक के ब–क़द्र अज़ाब व मुसीबतें, इस्लाम पर मिलता क्यों नहीं ? के इसे तक्लीफ़ उठाने पड़ती है। लेकिन इस्लाम पर चलने से जो तक्लीफ़ आती है वह बहुत कम है इस तक्लीफ़ के एतबार से जो तुर्क इस्लाम पर मिलेगी, अब मुसलमानों पर बला व मुसीबतें सिर्फ़ इसी वजह से हैं कि ज़हन पूरा इस्लाम वाला बनकर चमकने का नहीं है। अब ज़हन यह है कि इस्लाम आख़िरत के लिए और कमाना–खाना इस दुनिया में और मिज़ाज इंसानी है تحبون العاجلة وتذرون الاخرة गै़र–मुस्लिम आगे हो गया इस्लाम से कि गै़र इस्लाम का ताल्लुक़ मौजूदा वक़्त से है और इस्लाम का आइंदा मौत के बाद से है। अगर तुम सौदा करो तो नफ़ा हज़ार मन सैर होगा, लेकिन बोलते वक़्त सिर्फ़ मन बोलेंगे सैर नहीं। ऐसे ही क़ुरआन व हदीस मे बहुत सी जगह इस्लाम के फ़ायदे में सिर्फ़ आख़िरत को बयान किया कि दुन्यावी फ़ायदे आख़िरत के फ़ायदों के आगे मनों के आगे माशों की भी हैसियत नहीं रखते कामियाबी दुनिया की इस्लाम पर मौक़ूफ़ होना निकलकर सिर्फ़ आख़िरत की निजात सामने रह गई, तो हमारा मौज़ूअ गै़र–अल्लाह की ज़िंदगी हो गया कि यहूदो व नसारा व मुश्रीकीन का तरीक़ा इख़्तियार करेगा न

करेगा तो हुज़ूर वाला तरीक़ा इख़्तियार न करेगा। इसमें कामियाबी नहीं है जो इस्लाम सहाबा के पास था वह मुसलमानों के पास नहीं है हम ज़िंदगी का बनना सियासत, मिम्बरी, खेती–बाड़ी, तिजारत से बनेगी समझते हैं। इस्लामी ज़िंदगी यह है कि सारे अहकाम मानने पर बद्र में फ़रिश्तों से इम्दाद मिली। एक हुक्म तोड़ने पर सारी फ़त्ह शिकस्त में बदली। अहकाम पर कामियाबी का मिदार है लिहाज़ा यह ज़हन बनाना ज़रूरी है कि कमाने से परवरिश हिफ़ाज़त मकान, दुकान, लिबास, खाना नहीं मिलेगा। बल्कि हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े से हर मतलूब चीज़ मिलेगी। जब तक यह ज़हन न बने इस्लाम नहीं आएगा। इस ज़हन के न होने की वजह से मुसीबतें आएंगी कि सूद लिया कि ज़हन नरग़े में आ गया, मुक़द्दमा खड़ा किया, वकील के कहने पर झूठा गवाह पेश किया। कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन व फ़ासिक़ की तारीफ़ें कीं। कलिमा शिर्क आपके हाथ में मस्अला है इस्तेमाल किया, अल्लाह के हाथ में हर चीज़ है इससे मुसीबतों का चक्कर और बढ़ेगा। ज़मीन हाथ से निकल गई फिर मांगना शुरू किया। या ख़्यानत की इससे मुसीबत और बढ़ी जैल–खाने में पहुंच गया। वहां वह तक्लीफ़ ज़ुदा है और यहां इसकी बीवी–बच्चे मुसीबत में गिरफ़्तार आज हमारी ज़िंदगी का हर क़दम इस्लाम को तोड़ता है जिससे मुसीबतों में इज़ाफ़ा होता रहता है। बे–शक जब तक हमारी रफ़्तार ज़िंदगी यही रही तो अल्लाह को भी परवाह नहीं, क़ब्र का अज़ाब, शदाइद क़ियामत व जहन्नम का अज़ाब होगा। हमारा तरज़ ज़िंदगी ख़राब हो चुका है। जिस चीज़ को मस्अलों का हल समझते हैं हक़ीक़त में वह इस्लाम के ख़िलाफ़ होने की वजह से यह मस्अलों को और उलझा रहा है कि हर अमल इस्लाम के ख़िलाफ़ हो गया है। ज़माने की तमाम मेहनतें हमारी ज़िंदगी के बिगड़ने का सबब बन रही हैं। लिहाज़ा जितना हम इन मेहनतों में इस्तेमाल बढ़ाएंगे,

मुसीबतें हर रोज़ बढ़ती जाएंगी। इसका इलाज यह है कि हम इस्लाम सीखने का इरादा कर लें इसमें तक्लीफ़ें नज़र आएंगी। लेकिन यह ऐसी हैं इलाज में तक्लीफ़ों आप्रेशन, कड़वी दवा, इंजैक्शन वग़ैरह की उठानी पड़ती है। ताकि असल तक्लीफ़ें ख़त्म हो जाए, यह तक्लीफ़ें तक्लीफ़ को ख़त्म कर देंगी। ऐसे ही इस्लाम पर चलने में तक्लीफ़ें तमाम तक्लीफ़ों को ख़त्म करेंगी। अब इस्लाम से बचना कि तक्लीफ़ होती है वह ऐसा ही है कि इलाज की तक्लीफ़ से ख़ुद को बचाए। फिर तो मुसीबत व तक्लीफ़ रोज़ ही बढ़ती जाएगी। इस्लामी ज़िंदगी सिर्फ़ सर से पैर तक के तरीक़े इस्तेमाल का नाम है कि जिस जगह भी तुम्हारा इस्तेमाल हो। हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर हो, रकूब, जलूस, खाना, कस्बे माल, पेशाब या पाख़ाना, ख़र्चा कमाई वग़ैरह। हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े से किसी अमल में हट जाना ग़ैर इस्लामी ज़िंदगी है। अगर हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर सोया और जागा तो या सोना और जागना इस्लामी ज़िंगदी हुआ। 24 घंटे में चार मर्तबा पाख़ाना पेशाब के लिए किए, और दो घंटे लगे तो यह ग़ैर–इस्लामी ज़िंदगी है। अगर हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर न हुआ और इस्लामी ज़िंदगी होगी। अगर इनके तरीक़े पर हो, ऐसे ही शादी के पांच दिन इस्लामी ज़िंदगी है अगर इनके तरीक़े पर हों वरना नहीं इस्लामी ज़िंदगी हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर करना है और हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर उसी वक़्त आएगा। जब यह यक़ीन हो कि जान व माल व दौलत, मुल्क व तिजारत, खेती–बाड़ी से कुछ नहीं होता है। बल्कि हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर चलने से ख़ुदा मेरे तमाम काम कर देंगे, जिन नक़्शों से ज़ीनत परवरिश पलना दिखाई दे रहा है। या इन नक़्शों में दिखाई न दे बल्कि हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ों में दिखाई दे फिर हर मस्अले के हल में नबी का तरीक़ा इख़्तियार करता ही जाएगा, और इस सिलसिले में कारोबार

और घर की तक्लीफ़ें इस उम्मीद पर उभरता रहेगा। जब मेरी ज़िंगदी इस्लाम हो जाएगी, तो अल्लाह मेरी ज़िंदगी इस तरह बनाएंगे, जैसी हज़रत अय्यूब अलै० के सख़्त मर्ज़ में, हज़रत यूसुफ़ अलै० की जेलखाने में हज़रत इस्माइल अलै० की वादी गै़र ज़ी ज़रह में, हज़रत इब्राहीम अलै० की आग में, हज़रत नूह अलै० अक़्लियत में बनी इसराइल की ज़ुल्म व सीतम सहने में, सहाबा रज़ि० की भूख व प्यास में बनाई है। हज़रत अय्यूब के तमाम बच्चे मकानात कपड़े, ज़मीन जानवर छीन गए, जिस्म में कीड़े पड़ गए। एक चश्मे में ग़ौता लगाने से बीमारी दूर हो गई, सारे मरे हुए ज़िंदा करवाए, खेतियां, बाग़ात, सर-सब्ज़ कर दिए। इस पर आसमान से सोना, बरसाकर घरों को भी माल से भरकर ज़िंदगी बना दी। हज़रत यूसुफ़ अलै० जेल की तक्लीफ़ें उठा रहे हैं फिर बादशाहत का तख़्त मिला, भाइयों न आकर माफ़ी मांगी, मां-बाप पास आ गए। हज़रत मूसा अलै० के ज़माने में फ़िऔन की हुकूमतों को मअ इस अमला के समुंद्रों में गर्क़ कर दिया और नमाज़ व तवक्कुल व ईमान पर बनी इसराइल को चमका दिया। सारा मुआशरा जग संसार गोया मर गया है। हमको तो इस्लामी ज़िंदगी लेनी है। सारी दुनिया से मुंह मोड़ लें और इस्लामी ज़िंदगी लें तो अपने इसलाफ़ की तरह चमकेंगे। जैसे कि औलिया व सहाबा रज़ि० चमके, करामात इनकी ज़ात पर नहीं बल्कि इनकी इस्लामी ज़िंदगी की वजह से है। कि किसी और तरीक़े से चमकते तो फिर इनकी ज़ात का कमाल होता इस्लाम से उमर रज़ि० बने हैं अबूबक्र रज़ि० बने हैं। अबूबक्र रज़ि० और उमर रज़ि० से इस्लाम नहीं चमका, इसकी ज़ात में इस्लाम की अलावा बात ही न थी वरना बुज़ुर्ग व वली न होते। इनमें पूरी इस्लामी ज़िंदगी थी, इस वजह से चमके और हम इस ज़िंदगी की न होने की वजह से मिट रहे हैं। हम भी चमक सकते हैं और वे भी मिट सकते थे। अबूबक्र रज़ि० ने

इंतिक़ाल के वक़्त कहा कि ऐ उमर रज़ि० मैं तुझे ख़लीफ़ा बनाकर जा रहा हूं, क़ुरआन व हदीस सामने रखो। अगर इनमें से न मिले तो मेरी ज़िंदगी लेना कि मेरा कोई अमल हुज़ूर सल्ल० के ख़िलाफ़ न होगा। अबूबक्र रज़ि० अपनी तदबीर व सियासत व तरकीबों की वजह से अबूबक्र न बने। ऐसे ही उमर रज़ि० फ़त्ह मक्का के मैदान पर अबू सुफ़ियान के सामने तमाम मुस्लिम लश्कर गुज़ारा कि वह मरअूब होकर लड़ाई का इरादा छोड़ दे। इनके सामने से जब हुज़ूर सल्ल० वाला दस्ता सबसे बड़ा दस्ता आया तो इसकी कमान उमर रज़ि० कर रहे थे। अबू सुफ़ियान के पूछने पर अब्बास रज़ि० ने बताया कि कमान करने वाला इब्ने ख़त्ताब है कहने लगा कि बनू अदी का लौंडा, अच्छा इसकी अब यह हैसियत हो गई कि कमान करे कि बनू अदी सबसे घटिया क़ौम है। सबसे ऊंचे बनू हाशिम व बनू उमैया वग़ैरह, अब्बास रज़ि० ने कहा इस्लाम ने इसे इज़्ज़त बख़्शी है। उमर को इस्लाम ने उमर रज़ि० बनाया, इस्लाम के लिए उन्होंने बहुत सख़्त तक्लीफ़ें उठाई, न होने के ज़माने में तो तक्लीफ़ें उठाते हैं ही। ख़िलाफ़त के बाद इनके हाथों रोज़ाना हज़ारों, करोड़ों अशरफ़ियां ख़र्च हुईं, लेकिन अपना झोपड़ा न बदला कि हुज़ूर सल्ल० वाला भी ऐसा ही था, कपड़े व जूती न बदली, ग़ुरबत व इमारत में एक लिबास व फ़ाअल है। ऊंट के क़द से ऊंचे सोने चांदी के ढेर के बावजूद ग़ुरबत वाली ज़िंदगी है कि हुज़ूर सल्ल० वाली इस्लामी ज़िंदगी को माल से ख़राब न करेंगे हर एक ने कुछ फ़र्क़ कर लिया था। सहूलत पैदा कर ली थी। लेकिन उमर, अली, अबूद्दर्दा, सलमान, अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हुज़ूर सल्ल० वाले नक़्शे पर जमकर दिखाया, अली रज़ि० इराक़ में चार साल रहे, चार साल तक इराक़ की पैदावार का एक दाना इनके पेट में न गया। मदीना के खजूर, सत्तू खाते–पीते और इतनी एहतियात करते कि बर्तन

में सत्तू इसका मुंह कपड़े से बांधकर वह बर्तन किसी और में रखते कि इराक़ की मिट्टी कहीं सत्तू में न मिल जाए और हुज़ूर सल्ल० वाली ज़िदंगी न बदल जाए। फालूदा हाथ में लेकर कहा तेरा रंग दिलकश तेरा मज़ा बहुत अच्छा। लेकिन तुझे न खाऊंगा कि हुज़ूर सल्ल० ने नहीं खाया है तुझे। अबूबक्र, उस्मान रज़ि० भी ऐसे ही हैं, उमर रज़ि० ने गि़ज़ा और लिबास, खाना व मकान में फ़र्क़ न डाला। 45 पैवन्द वाला कुरता, फ़ौजों के जरनल सब सरदार उमर के पीछे–पीछे जा रहे हैं। मदीना में लोगों ने आपस में कहा कि इस उमर रज़ि० का ज़ाहिद देखो कि हर शख़्स तब्दीली कर ली इसमें फ़र्क़ नहीं आया। इस पर बड़ी मुशक़्क़त पड़ती है कि इनका सफ़ेद रंग तक्लीफ़ों की वजह से काला पड़ गया था। कोई इनसे कहे कि ज़िंदगी में नर्मी कर लें कि अल्लाह तआला ने बहुत दे दिया। तंख़्वाह बढ़ा लें, ग़ैर मुल्की वफ़ूद मुस्लिम वफ़ोदाना के खाने को खा सकते हैं और न इसके बिस्तर पर सो सकते हैं। सबने उस्मान रज़ि० को आगे करना चाहा, तो उस्मान रज़ि० ने इंकार कर दिया कहीं, अली रज़ि० ने इंकार करके हफ़्सा रज़ि० व आइशा रज़ि० की तरफ़ बात कर दी कि वह कर सकती हैं कि उमर रज़ि० के पास सहाबा गए कि एक बात करनी है। जब तक उमर रज़ि० मान न जाएं, हमारा नाम न बताना वरना पिटाई हो जाएगी। हफ़्सा रज़ि० ने कहा मानेंगे नहीं, आइशा रज़ि० ने कहा मान जाएंगे, लोग निकले इतने में उमर रज़ि० सलाम करने आ गए। आइशा रज़ि० ने बात करनी शुरू की, आइशा रज़ि० ख़िताबत व बलाग़त व समझ फ़िक़्ह दीन में कोई जवाब नहीं रखती थीं। आइशा रज़ि० ने शुरू से सारे दौर गिनवाए इनकी तारीफ़ और इनके नक़्शों की तारीफ़ की कि तुम्हारा बरकत से अरब के जज़ीरे में क़ोई घर फ़कीर नहीं कोई घर फ़ाक़े में नहीं। लिहाज़ा आप भी अपने घर में कुछ ले आइये, उमर रज़ि० ने कहा,

बताओ कि किसने भेजा आपको। आइशा रज़ि० ने कहा, पहले हां कर लो। उमर रज़ि० ने कहा नाम बता दो तो ऐसी पिटाई करूंगा कि लोगों के होश ठिकाने आ जाएं, एक शख़्स जल्द मंज़िल को पहुंचा, दूसरा जल्द मंज़िल को पहुंचा, तीसरा अभी अगर इस तरह चला तो मंज़िल तक पहुंचेगा वरना नहीं। तक्लीफ़ों को उठाया जिससे अगर दायीं तरफ़ अबूबक्र हैं तो बायीं तरफ़ उमर रज़ि० होंगे। बहुत से मरने वाले लिड़र हिन्दुस्तानी, यूरोपी कह गए कि अगर उमर रज़ि० होते तो इस्लाम में आ जाते। कि उमर रज़ि० के पास इस्लामी ज़िंदगी थी, इस्लाम को उमर रज़ि० ने चमकाया है। हम इसका अक्स समझते हैं, उमर रज़ि० ने कुरबानी दी, इस्लाम ने उन्हें चमकाया। हम भी कुरबानी करे इस्लाम हमें भी चमकाएगा उमर रज़ि० ने सारा मदीना जमा किया, मदीना उस वक़्त जमा होता है। जब किसी मुल्क पर चढ़ाई करनी हो या ख़ुम्स का माल तक़्सीम करना हो। इस दफ़ा कहा कि मैं बताऊं मैं कौन हूं, मैं इब्ने ख़त्ताब हूं। बचपन में ख़ाला के ऊंट चराया करता था। मामूली से दामों पर, शाम को जब वापस आता तो ख़ाला डांटती कि जब तू ऊंट नहीं चरा सकता तो बड़ा होकर क्या करेगा। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० आए सारे मदीना जमा किया सिर्फ़ इस वजह से उमर रज़ि० ने कहा मेरा नफ़्स आज बिगड़ गया था कि अमीरूल मोमीनीन ख़लीफ़ा रसुलुल्लाह, अपने नफ़्स का जवाब सबके सामने दिया। उमर रज़ि० ऐसे इस्लाम की ज़िंदगी से बने और यह ज़िंदगी ज़लील को अज़ीज़, बे–इख़्तियार को ब–इख़्तिार, चोरों को अफ़ीफ़, ज़ालिम को आदिल बनाने के लिए है। इससे दुनिया व आख़िरत बनती है और यह ज़िंदगी उसी वक़्त आएगी, जब राइज नक़्शों को लात मारो और अल्लाह के तालिब बनकर मेहनत करो। किसी चीज़ सेहत, हुकूमत, मिम्बरी, मकान, जायदाद, पैसा, खाने, परवरिश, बीवी–बच्चे की मुझसे

ज़रूरत नहीं है, सिर्फ़ इस्लामी ज़िंदगी चाहिए, जिसके बाद मैं चमकूंगा। मज़दूर से लेकर सदर तक के तमाम नक़्शे, ज़िल्लत, गुरबत, इफ़लास, ख़राबी ज़िंदगी के नक़्शे हैं वज़ीरे आज़म का नक़्शा सदर की तरह सरमायादारों के नक़्शों के साथ ज़िंदगी बिगाड़ने ज़िल्लत का नक़्शा है। इन नक़्शों से नहीं बल्कि हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ों की मशक़ से ज़िंदगी बनेगी। हुज़ूर सल्ल० क़ीमती हैं, आपका एक क़दम, एक आंख, एक ज़ुबान की वे क़ीमत है जो आसमान ज़मीन की नहीं है। इस्लामी ज़िंदगी का हुक्म अल्लाह से चला अमल हुज़ूर सल्ल० से निकला पूरी दुनिया की बादशाहत से ज़्यादा क़ीमती हुज़ूर सल्ल० का एक तरीक़ा लेना है। इस्लामी ज़िंदगी के अगर अरब हा अरब अज्ज़ा हों तो भी एक जुज़ उस मच्छर के पर से ज़्यादा क़ीमती होगी और अगर दिल में ख़्वाहिशें भरी हुई हों तो फिर इस्लामी ज़िंदगी आने का सवाल ही नहीं है। जब यह ज़िंदगी ही नहीं है तो फिर तुम सिर्फ़ चीज़ों, क़ब्रों व औक़ाफ़ को हासिल करोगे। अगर हमको सारा मुल्क दे दिया जाए तो इस्लाम की शिकस्त है। तमाम ओहदों, दुकानों, मकानों, खेती–बाड़ी से हमें निकाल दिया जाए तो इस्लाम की फ़त्ह है। मुल्क छीन जाना इस्लाम की मौत नहीं है। हम से हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ों का निकल जाना इस्लाम की मौत है और हममें इनका आ जाना इस्लाम की हायात है यह तरीक़ा बहुत ऊंचा है कि हर अज़ू का हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर आ जाना हुज़ूर सल्ल० की तरह ऊंचा है। जैसे आप ज़मीन आसमान के हिसाब में नहीं है कि आसमान ज़मीन बनाया तो इंसान भी बना दिए, इंसान बनाए तो ईमान वाले बना दिए। ईमान वाले बनाए तो अंबिया किराम भी मबऊस फ़रमा दिए आर जब अंबिया मबऊस फ़रमाए तो हुज़ूर सल्ल० को इनका सरदार भी बना दिया। असल आसमान ज़मीन नहीं है बल्कि सिलसिला वजूद यह है कि चूंकि हुज़ूर सल्ल० को

बनाना था इससे अंबिया को बनाया, अंबिया को बनाना था इसलिए इंसान को बनाया, इंसान बनाए थे तो ज़मीन व आमसान के नक़्शे बनाए अब यह सारा नज़र आने वाला आसमान व ज़मीन का नक़्शा आख़िरी दर्जा में नहीं और हुज़ूर सल्ल० के हिसाब में ही है अब आसमान ज़मीन से बनने वालो नक़्शों की क्या क़ीमत हो सकती है। जब कि सारे आसमान व ज़मीन की कोई क़ीमत नहीं है। यह बात मरने के बाद बिल्कुल वाज़ेह हो सकती है। जन्नत की तमाम चीज़ें हुज़ूर सल्ल० के दीन के एतबार से क़ीमती हैं कि क़ीमती तरीक़े पर क़ीमती इनाम मिलेंगे। जन्नत की एक हाथ ज़मीन की क़ीमत दुनिया—माफ़िहा नहीं बन सकती। जन्नत के एक जोड़े या एक फल की क़ीमत पूरी दुनिया की मालियत नहीं है। यह दुनिया हुज़ूर सल्ल० वाली ज़िंदगी की क़ीमत नहीं है। यहां की हुकूमत जायदाद, दीन, ज़मीन इस्लामी ज़िंदगी की क़ीमत नहीं है। क़ीमत तो सिर्फ़ जन्नत है इस्लाम ज़िंदगी किसी चीज़ पर मौक़ूफ़ नहीं है बल्कि आपकी मश्क़ पर मौक़ूफ़ है इससे हर अमल तरीक़े पर आ जाएगा, जैसे तैरना सिर्फ़ मश्क़ से आता है। बग़ैर पैसा ख़र्च किए अगर तैरने की मश्क़ न करे, लेकिन अमेरीका से करोड़ों को सामान तियारे अस्लाह मंगवा लो और कहो कि तैरना आ जाएगा नहीं लेकिन यह बिल्कुल बेवाक़ूफ़ी है ऐसे ही चीज़ों से इस्लाम नहीं आता है। उम्दा मस्जिद को हम इस्लाम की शान कहते हैं तो यह इस्लाम के ही ख़िलाफ़ है क़ुतुब मीनार, जामा मस्जिद, लाल क़िला, ताज महल इस्लाम की शान नहीं हैं तुम्हारे ज़ोक़—बद की इत्तिला है कि तुमने इस्लाम को उन पत्थरों में समझ लिया। उमर रज़ि० ने आने वाला माल अरब के हर घर में पहुंचा दिया है माल का ख़र्च। वे तो कहते हैं कि ख़ुदा जब किसी के माल को बर्बाद करते हैं मिट्टी गारे में लगा देते हैं। हुज़ूर सल्ल० के

ज़माने में छोटा-सा कुब्बा पक्का बन गया। हुज़ूर सल्ल० वहां से गुज़रे, तो पूछने पर मालिक मकान का नाम मालूम हुआ। वे मालिक आए तो सलाम किया, जवाब नहीं दोबारा सलाम किया जवाब नदारत समझकर अलग होकर बैठ गए। हुज़ूर सल्ल० के जाने के बाद वह नाराज़गी मालूम हुई, सारा मकान जड़ समेत गिरा दिया। आकर हुज़ूर सल्ल० को भी इत्तिला न दी, हुज़ूर सल्ल० का वहां से गुज़र हुआ मालूम करने पर अर्ज़ किया गया कि उसी दिन गिरा दिया गया था। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने यह नहीं फ़रमाया कि बहुत बुरा किया माल का नुक़्सान हुआ बल्कि यह तामीर अपने साहब पर वबाल है। माल, भूखे, नंगे, यतीम बेवा, मुहताज, बीमारों पर लगाने के लिए हैं इस्लाम की शान आजकल की हक़ीक़त के ख़िलाफ़ इस्लाम है। पक्की मस्जिद मिम्बरी में जाकर झूठ बोलेगा यह इस्लाम की शान नहीं है। हमने चीज़ों का नाम इस्लाम रखा है, इस्लाम चीज़ों का नाम नहीं है। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० से पहले बादशाह इनके साले ने एक शानदार मस्जिद उमवी दमिश्क़ में बनाई जिसे देखकर ईसाइ पोप बेहोश हो गया। पोप के सामने उस ज़माने में बादशाह भी झुके थे। बेहोशी की वजह पूछी तो कहा कि सौ साल में उन अरब बद्दुओं ने इतनी तरक़्क़ी कर ली। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने ख़लीफ़ा बनते ही सबसे पहले यह हुक्म जारी किया। इस मस्जिद को गिराकर सारा माल निलाम करके हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े पर ख़र्च हुआ। आख़िर में रिश्तेदारों ने काग़ज़ात से साबित किया कि बादशाह ने अपनी ज़ाती रक़म से बनवाई थी। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ख़लीफ़ा थे। मस्जिद बनाने वाले बादशाह थे हमारा मिज़ाज भी शाहाना हो गया गिला माना नहीं। जैसी मस्जिद हुज़ूर सल्ल० ने बनाई थी अगर वैसी मस्जिद बनाई जाए तो सारे गांव वाले मिलकर बना सकते हैं। लेकिन इसकी मिट्टी गारे के लिए पैसा

जमा किए जाएंगे। गांव के बीमारों, फ़क़ीरों नादारों की मुताल्लिक़ फ़िक्र नहीं मदरसा की शानदार इमारत इस्लाम की शान नहीं है इस्लाम की ख़राबी है। हुज़ूर सल्ल० का क़ौल है कि हमारा ज़ौक़ इस्लामी ज़िंदगी से बदल चुका है। आज हम मुल्क व माल वाले के पीछे हाथ जोड़ रहे हैं इस्लामी ज़िंदगी तो हमारे सामने तमाम बादशाहों और सरमायादारों को झुकवा सकती है अब इसे मेहनत करके हासिल कर लो। हर अमल में हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर माल व जान ख़र्च करो मेहनत इस्लामी ज़िन्दगी वाली उस वक़्त मिलेगी जब हिदायत मिल जाए कि इस्लामी ज़िंदगी क़ीमती है। इससे परवरिश व सेहत व कुव्वत मिलेगी। बुलंदी, तरक़्क़ी आल–औलाद मिलेगी, चीज़ों और माल से कुछ नहीं हो सकता। माल का इस्लाम से चमकाना ही ज़लालत है वह इस्लाम ही क्या जो माल पर चमके। इस्लाम एसा नाकिस नहीं कि माल न होने पर न चमके इस्लाम बिल्कुल कामिल है। पैसा न होने पर तरीक़ा ज़िंदगी ही इस्लाम है क़र्ज़ा लेकर हुज़ूर सल्ल० ने हिजरत का सफ़र किया तुम्हारे पास अगर पैसा न हों तो हुज़ूर सल्ल० की तरह क़र्ज़ ले लो, किसी से लेना या न निकलना हुज़ूर सल्ल० वाला तरीक़ा नहीं है। अबूबक्र से ऊंटनी भी सदक़े में न ली बल्कि क़ीमत से ली क़र्ज़ पर ख़रीदी मांगो मत निकलने से रूको मत। तुम इस्लामी ज़िंदगी ले लोगे तो आलम झुकेगा, कायनात झुकेगी। हिदायत है चीज़ों व माल से न होने का वजूद उन और हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर ख़ुदा करेंगे का वजूद उन हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ पर ईमान व तवक्कुल नमाज़ दुआ से सब कुछ हो जाएगा। चीज़ों से माल पर ज़िंदगी बनने का ज़हन ज़लालत है। आमाल से बनने का ज़हन हिदायत है। तब्लीग़ को माल पर मुख़्तसर समझना जुल्म है इस ज़लालत के साथ इस्लाम नहीं है। अल्लाह पालने वाला है अल–हम्दु–लिल्लाह पैसा कमाई से नहीं मिलता

पैसे से चीज़ें मिलती नहीं, चीज़ों से कामियाबी नहीं मिली। जब कि पैसा चीज़ें कामियाबियां खुदा खुद देते हैं। क़िला से हिफ़ाज़त नहीं बन्दूक़, पुलीस, फ़ौज से हिफ़ाज़त नहीं है सिर्फ़ खुदा के तरीक़े पर चलने से ख़ुदा हिफ़ाज़त करेंगे। हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर ख़ुदा अबूबक्र, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह हमें भी पालेंगे। उन तमाम बातों पर यक़ीन हासिल करना हिदायत है, नमाज़ में पहले बदन की तहारत वुज़ू है, उस पानी से बदन पाक होता है, उन चीज़ों के इस्तेमाल से दिल पाक नहीं होता है। हर चीज़ ज़लालत वाली से दिल को पाक करो कि चीज़ों से नहीं पलते इस पर मेहनत करेंगे तो हिदायत मिलेगी। जैसे नमाज़ में पहले वुज़ू है। ऐसे ही इस्लामी ज़िंदगी में सबसे पहले दिल की सफ़ाई है कि अल्लाह करने वाले हैं। चीज़ों पर वह नहीं करते हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल पर करते हैं उनके आमाल पर मेरे सामने सारी दुनिया को झुका देंगे वरना मुझे दुनिया के सामने झुका देंगे। अगर हिदायत मिल जाए तो आमाल की दुरुस्तगी जल्दी–जल्दी होती जाएगी, जैसे मेहनत से माल हासिल करने में बहुत देर लगती है। छः महीने बाद खेती से माल मिलता है। लेकिन माल से चीज़ें कपड़े, बर्तन, जल्दी मिल जाते हैं, एक घंटे में मेहनत से हिदायत मिलती है। फिर जल्दी–जल्दी आमाल अच्छे हो जाते हैं कि चीज़ों से कुछ नहीं होता सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा से होता है। और वह उसी वक़्त राज़ी होंगे, जब हुज़ूर सल्ल० वाले अमल होंगे। जब हुज़ूर सल्ल० वाले अमल हों और ख़ुदा–न–ख़ास्ता रात–दीन चीज़ों के चक्कर में लगे रहे तो उस मेहनत से हिदायत मिलनी ऐसी है जैसे आग से ठंडक लेनी। इब्राहीम बिन अदहम अपनी बादशाहत में अल्लाह लेना चाहते थे रात को छत पर खटका सुना, कहा कौन है, कहा मैं हों, कहा क्या कर रहे हो। आपके महल की छत पर ऊंट ढूंढ रहा हूं। अरे बेवाक़ूफ़ यहां ऊंट कैसे आएगा। इससे

ज़्यादा हिमाकत उसकी है जो इन चीज़ों में अल्लाह को हासिल करे। ऊंट छत पर चढ़ सकता है लेकिन अल्लाह उन चीज़ों में नहीं मिलता है इस पर इब्राहीम दुनिया को छोड़कर निकल गए और मस्जिद के आमाल में ख़ूब मश्गूल रहे और ज़बुल मिसल बन गए थे सुलाह व तक़्वा में, आदत यह थी कि ज़ाहिरी सबब में मश्गूल रहते, लोगों को मालूम हो जाता तो आगे चल पड़ते, एक दफ़ा एक बाग़ में बारह साल काम करते बारह साल बाद मालिक ने आकर अनार मांगे सारे खट्टे निकले तो पूछने पर कहा कि इतने में अर्से में यह भी पता न चला कि कौन–सा मीठा, कौन–सा खट्टा है कहने लगे कि मुझे बाग़ की रखवाली पर मुलाज़िम रखा है न कि अनार खाने पर, इस पर उस मालिक ने ज़ोर से थप्पड़ मारा कि ऐसे बात कहते हो जिसे इब्राहीम के सिवा कोई नहीं कह सकता, कुछ अर्से बाद लोगों से मालूम हुआ कि यही इब्राहीम हैं तो आकर माफ़ी मांगी। क़दम चूमे, एक मर्तबा बैठे हुए दरिया के किनारे कपड़े सी रहे थे कि बादशाह के साथियों ने आकर कहा कि हुकूमत संभाल लो आपके बग़ैर मज़ा नहीं आता हुकूमत करने में, कहने लगे मुझे तो तुम्हारे बग़ैर बहुत मज़े हैं। ज़्याद इसरार पर सूई समुंद्र में फेंककर कहा अगर हुकूमत है तो इस सूई को समुंद्र से निकाल दो। उन्होंने कहा ऐसी लाखों ला सकते हैं। लेकिन इस सूई को नहीं ला सकते कहने लगे मैं ला सकमा हूं। ऐ मछली मेरी सूई दो, एक मछली अपने मुंह में सूई लेकर आई इसके पीछे और भी मछली थी आपने ले ली। ऐसे ही खादिम बनी, अबू रदकाना की सूई बड़े समुंद्र में गिर गई। ऐ मछली मेरी सूई मुझे ला दो, लिहाज़ा मछली फ़ौरन सूई ले आई। अब हिदायत लेने के लिए मुंजाहेदा है। हिदायत कपड़ा दुकान पैसा से नहीं मिलती हिदायत के लिए आमाल रखे गए हैं, और मुजाहेदा यह है कि उन आमाल के लिए हर हाल में निकल जाए चाहे कुछ पास

हो या न हो कि हम अल्लाह के रास्ते में निकलेंगे अल्लाह बना देंगे। इसी की आवाज़ दावत में लगाओ और इस दावत से हुज़ूर सल्ल० की तरह पल जाने पर यक़ीन हो, तालीम व दीन सीखने पर मशग़ूल हो कि इससे अल्लाह पालेंगे उस फैलाने के लिए उठ माल—जान लेकर उठ। अपने मसाइल में तालीम व ज़िक्र व नमाज़ के बाद सिर्फ़ ख़ुदा से कहते रहो इनके रास्ते में चलते रहो हिदायत मांगते रहो कि उन आमाल ख़म्सा से ज़िंदगी बनेगी कि यह हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े हैं। इस तरह मेहनत करते रहो कि किसी तरह एक दिन दिल की गिरह खुल जाएगी। तो यह सारे नक़्शे मुरदार हैं उनके अंदाज़ से कुछ नहीं हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े ज़िंदा हैं। अंदर से बहुत कुछ है बाहर से कुछ नज़र नहीं आता फिर तुम उन आमाल को छोड़ोगे जो इनके तरीक़े के ख़िलाफ़ हो इस्लामी ज़िंदगी आ जाएगी और रो—रोकर मेहनत करो। दारेन में चमकने के लिए हिदायत लेना बहुत ज़रूरी है इसके हसूल के लिए अगर कारोबार या घर बिगड़ा तो सिर्फ़ तुम्हारी चीज़ बिगड़ी हुज़ूर सल्ल० की कौन—सी चीज़ इससे बिगड़ गई। तुम्हारे सारे आमाल ग़ैर इस्लामी हैं सारी चीज़ों में ग़ैर—इस्लाम है। अगर तुम सिर्फ़ नाम के मुस्लिम हो लिहाज़ा अपने आमाल व चीज़ों के लुटने पर मैं रोने को नहीं कहूंगा बल्कि शुक्र करने को कहूंगा कि ग़ैर—मुस्लिम टूटा हिदायत के लिए मेहनत करो। दावत नमाज़, दुआ, ज़िक्र, ख़िदमत के बाद दुआ करो कि ऐ अल्लाह सूरत तो कर ली लेकिन हिदायत तू ही देगा सिर्फ़ हिदायत के तालिब बने रहो किसी और चीज़ के नहीं, तख़्त सुलैमानी हिदायत के आगे एक पर के बराबर नहीं है। हिदायत लेने के बाद तुम खुद आमाले सालेह की तफ़्सील मालूम करते रहोगे। आज तो तब्लीग़ में सिर्फ़ हिदायत लेने को कहते हैं। जब हिदायत मिल गई तब तफ़्सील व मसाइल तब्लीग़ में आएंगे, मालियात ज़िंदगी चीज़ें,

अपनी मेहनतों से ज़िंदगी बनने का गौबर भरा हुआ है, इस हिदायत के लिए हैं चार महीने। चार महीने के बाद हिदायत मिली है या नहीं अगर आते ही कहा मुंशी जी मुझे जल्दी रुख़्सत करो बीवी–बच्चे तंगी में होंगे मैं तो मिलने आया था। सो तीन चिल्ले ले लिया इसे हिदायत भी न मिली। इसने आमाल में किसी अमल में कमी की होगी और वह है जो वापस आकर इस बात की फ़िक्र में है कि घर वापस जाकर क्या करूंगा कि हासिल किया हुआ माया कहीं ज़ाया न हो जाए। इसे महफ़ूज़ रखने की मक़ामी काम में तदबीरें मालूम करेगा। घर जाकर जहां इस माया में कमी आई फ़ौरन बाहर निकालकर इस कमी को दूर कर देगा इससे अपने ज़िंदगी दुरूस्त कर देने में इम्तिहान होगा। जिससे इसे अपनी तमाम आराम व असाइश व राहत में कमी करनी पड़ेगी, लेकिन यह कहते जाओ मुझे कोरमों खानों आराम व राहत से ज़्यादा महबूब इस्लाम वाली ज़िंदगी है।

उमूमी बयान न० 8

माद्दी लाइन वालों को ख़ालिक़ से इस्तिफ़ादा वाली लाइन का इल्म नहीं है

असर के बाद, जुमेरात, 19, अप्रैल, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

इंसान की मेहनत जहां लगती है वह उस पर खुलती है और जहां से हटती है वह नहीं खुलती है। जो खेती–बाड़ी पर मेहनत करे तो खेती–बाड़ी खुलती जाएगी, लेकिन तिजारत नहीं खुलेगी, तिजारत पर मेहनत से खेती–बाड़ी नहीं खुलेगी। इंसान पर इंकिशाफ़ इसकी मेहनत से होता है। जिस तरह दुनिया में ज़िंदगी कामियाब बनाने की बहुत से शक्लें हैं और इस पर सिर्फ़ वही शक्ल खुलती है। जिस पर मेहनत करता है, डाक्टर सिर्फ़ एक लाइन को ले रहा है मसाइल ज़िंदगी में से। फिर डाक्टरों की भी खसूसीयत हैं। आंत वाले डाक्टर से दांत का इलाज नहीं हो सकेगा। इसे तो सिर्फ़ आंत की तफ़सील मालूम हैं। जो डाक्टर दांत पर मेहनत करेगा उसे सिर्फ दांत का इंकिशाफ़ होगा आंत का नहीं। सारी लाइन पर मेहनत करने से सिर्फ इसका इल्म तफ़सील से होता है। तमाम माद्दी लाइन में क़द्र मुश्तरक यह है कि मख़लूक़ से मुताल्लिक़ हैं जैसे इन माद्दी लाइनों में एक को दूसरी लाइन का इल्म नहीं है इसी तरह से उन तमाम मखलूक़ी माद्दी लाइन वालों को ख़ालिक़ से इस्तिफ़ादा वाली लाइन ही में इंसान खुद पर मेहनत करके खुद को पहचानता है। ईमान के लिहाज़ से खुदा को आमाल के लिहाज़ से हुज़ूर सल्ल० को सामने रखो माद्दी लाइनों से ज़िंदगी नहीं बनती है।

कामियाबियों को मुनब्बेए व सरचश्मा ख़ुदा हैं। लिहाज़ा ख़ुदा से इस्तिफ़ादा के लिए में हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा लूं तो फिर ईमान व आमाल की जगह अपना जिस्म ही बनेगा हमारा जिस्म हुज़ूर सल्ल० की नक़ाली के लिए बनाय गया है। हुज़ूर सल्ल० ने कामियाबी आला दर्जे की हासिल की है और अंबिया भी दुनिया व आख़िरत में इस कामियाबी को न पहुंच सके और हमें इसकी इत्तिबा का हुक्म है اتبعوا هذا النبی الامی अब हुज़ूर सल्ल० वाले रास्ते पर चलकर हम भी ज़रूर कामियाब होंगे, हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े चीज़ों वाले नहीं हैं। सिर्फ़ अपने आज़ा के आमाल पर है इस लिहाज़ से आसान है कि असासे फ़्लां मौजूद है। चार इंसान के पास, चार हज़ार लगाना मुश्किल है। ब–निस्बत अपनी जान महज़ लगाने से हक़ीक़त में खेती–बाड़ी, तिजारत, मुलाज़मत, मज़दूरी सब शक्ल है दीन में मुक़ाबले में कि इन तमाम लाइनों में हज़ारों चीज़ों के बाद कामियाबी की शक्ल बन सकेगी। लेकिन दीन का मुतालबा सिर्फ़ आपके आज़ा से पूरा हो जाएगा। आपके अलावा किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं है। हुज़ूर सल्ल० यतीम व ग़रीब बनकर आए बाप नहीं है। बाप अगर होते तो अपने एकलौते बेटे की वजह से वह इसकी ज़िंदगी बनाने के लिए ख़ूब मेहनत करते दादा इतनी मेहनत न कर सकता है कि खुद इसके बेटे हैं और पोते हैं। इसी वजह से तमाम दाइयों ने ले जाने से इंकार कर दिया कि यहां दादा क्या देगा। हलीमा ने सोचा ख़ाली गोद बद–शकूनी है इससे बचने के लिए मुहम्मद को ले ही लो कि दादा सोना देगा तो दस तो देगा, लेते ही बरकतों का ज़हूर हुआ। पहले हुज़ूर सल्ल० के रज़ाअी भाई सौबान दूध की किल्लत की वजह से दिन–रात रोता रहता था। अब हुज़ूर सल्ल० के आते ही इतना दूध आ गया कि हुज़ूर सल्ल० के पीने के बाद भी इसने ख़ूब पिया। पहले हलीमा की गधी सबसे पीछे रह जाती थी और आगे वालों को आवाज़ देती रह जाती लेकिन जब

हुज़ूर सल्ल० को गोद में लेकर गधी पर बैठी तो वही गधी सबसे आगे चली गई सब हैरान होकर कहते हलीमा ठहरो वह कहती यह तो रूकती ही नहीं तुम ही आगे आ जाओ। गौर करने की बात है कि हुज़ूर सल्ल० को किसी की गोद में आ जाने से गैर–मस्लिम को इतनी बरकत और असरात मिली हैं और जानवर पर भी असर पड़ता है। अगर हम मुसलमान हुज़ूर सल्ल० वाले अमल लेंगे तो ना–मालूम कितनी बरकत मिलेगी, आमाल आपके अंदर बाहर आए हैं। हुज़ूर सल्ल० के दिल वाला यक़ीन कितना ऊंचा होगा, यह वक़्त की बातें हैं जबकि नबी न थे नबी बनाने के इरादे थे। नबी बनने के बाद तो बरकत कितनी बढ़ गई होंगी। अंदर से आने वाले आमाल में कितनी बरकत होगी। अल्लाह से फ़ायदा लेने के लिए आमाल जैसे हुज़ूर सल्ल० वाले बना लो। ला इला इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह इसी का नाम है कि जिनती लाइनें दुनिया में कामियाबी के लिए मरूज हैं इनको छोड़कर ख़ुदा से सीधा फ़ायदा हासिल करने के लिए हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल 24 घंटे के ले लो। ख़ुदा को पहचानो। उनको भी उसकी वक़्त पहचानोगे। जब हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े पर मेहनत करोगे हर लाइन में मेहनत करने के बाद इस लाइन का तफ़्सीली इल्म होता है मेहनत से पहले नहीं मेरी बात सुनने से बग़ैर मेहनत के नहीं खुलता है तभी तो एजा़र रह जाते हैं। अगर अपनी मेहनत करें तो एजा़र भी बाक़ी न रहें। चुनांचे जब कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर सल्ल० से मुतालबा किया कि पहले अल्लाह फ़रिश्ते, एहया मौता दिखाओ तो इस्लाम ले आएंगे। हुज़ूर सल्ल० ने साफ़ कह दिया मैं इस वास्ते नहीं भेजा गया हूं सिर्फ़ कलिमे के वास्ते भेजा गया हूं इस पर मेहनत कर लो जब चाहेंगे दिखा देंगे तेरह साल तक यही बात होती रही ख़िलाफ़ देखते रहे कहा जा रहा है लेकिन धुंवादार पिटाई हो रही है। हम देहली दो लाख हैं और पंद्रह साल में वे सब कुछ बोलते रहे, जो हमसे बुलवाया गया कि न कहा तो मारे जाएंगे लेकिन मक्का ने

सौ से कम ने तेरा साल तक सिर्फ़ एक कलिमा हक़ कहा चाहे कितनी तक्लीफ़ें दी गई, रेत पर लिटाना सीने पर पत्थर रखना आग पर लिटाना यहां तक कि वतन छोड़कर हब्शा और मदीना मुनव्वरा चले गए। अब पंद्रह साल बाद अल्लाह ने दिखाया और जितनी चीज़ों का मुताबले अहले मक्का ने किया था वह सब दिखाया, लकड़ी तलवार बन गई, हमारे मारे बग़ैर फ़रिश्तों ने मारा, हमारे बांधे बग़ैर फ़रिश्तों ने बांधा पंद्रह साल तक अपनी आंख से कुछ नहीं देखा मिराज का वाक़िआ आनन-फ़ानन हुआ लिहाफ़ की गर्मी न ख़त्म हुई कुंडी वापसी में हिल रही थी और काम इतना लम्बा-चौड़ा, सफ़र शाम, इमाम अंबिया, आसमान की सेर वग़ैरह, वग़ैरह। उठ किराम हानी से कहा कि आज अल्लाह ने क्या कुदरत दिखाई थोड़ी देर में यह-यह हुआ। हुज़ूर सल्ल० इसके बाद बाहर अहले मक्का को सुनाने के लिए बाहर जाने लगे तो आम हानी से हुज़ूर सल्ल० का पल्ला ज़ोर से पकड़कर कहा कि मत जाएं कि अहले मक्का इस अनहोनी बात पर बे-हद मज़ाक़ उड़ाएंगे। हुज़ूर सल्ल० को किसी क़िस्म का फ़िक्र न था मक्का छोड़कर सरदारों की महफ़ील में पहुंच गए, उन्हें मुख़ातिब करके सारे हालत सुनाए जिस पर वह बेहद हंसे कि गिर-गिर पड़ते एक-दूसरे को थप्पड़ मारते कुछ कच्चे इस वाक़िआ पर मुर्तद हो गए। कुछ सिद्दीक़ के पास गए और कहा इस सारी कहानी के बाद भी उन्हें सच्चा मानोगे, जवाब मिला कि अगर हुज़ूर सल्ल० ने कहा है तो हक़ है इसमें ताज्जुब की क्या बात है मैं तो इसका काइल हूं कि उधर से जिब्रील पलक झपकने में हर वक़्त आते रहते हैं इनकी कुदरत से, तो इसी कुदरत से उधर भी जा सकते हैं। हुज़ूर सल्ल० पर इतना एतमाद था इस पंद्रह साल में कुछ न देखा इल्ला माशअल्लाह। एक औरत के इस्लाम लाते ही इसकी बीनाई चली गई। उसने कहा ऐ अल्लाह ! हर चीज़ तेरे इख़्तियार में तूने ही बीनाई ली है पस वापस कर दे वरना यह कुफ़्फ़ार मुझ पर रसूल पर इस्लाम पर

बातें करेंगे। चुनांचे बीनाई वापस मिल गई जुज़्वी वाक़िआत मिल जाएंगे हुज़ूर सल्ल० की बात के एतमाद पर सब कुछ हो रहा है। हुज़ूर सल्ल० के अलावा का तसव्वुर न कर सकते थे लेकिन फ़त्ह मक्के पर ज़ुबैर व अली को एक औरत से ख़त लाने भेजा, पूरी तलाश के बाद भी न मिला कहा कि यह तो हो नहीं सकता कि तेरे पास ख़त न हो निकाल दे वरना नंगा करके आगे-पीछे उंगलियां डाली जाएंगी। इसने लाचार होकर अपने सर की मेढ़ी खोली इसमें से ख़त निकाला। हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर चलेंगे तो कामियाबी हमें ही मिलेंगी, जिस दिन चाहेंगे मौजूदा नक़्शों को बदल देंगे। तो हमारे आमाल ख़ुदा के पसन्दीदा हुज़ूर सल्ल० वाले हैं। मौजूदा तमाम तर्तीबें बदली जाएंगी, करते-करते बाद में मकाशफ़ात हुए, कुफ़्फ़ार मक्का के तमाम मुतालबात पूरे हुए, ताबईन की दुआ पर मुर्दे ज़िंदा हुए हैं, आसमान से खाने उतरते हैं पानी पर से गुज़रे। अफ़्रीक़ा के टीले पर आवाज़ लगाई छावनी बनाने के लिए एक जगह तै किए इलाक़े वालों ने कहा कि छावनी दस साल न बन सकेगी या इसमें इतने-इतने जानवर हैं कि उन्हें इतने दिन में पकड़ा जा सकेगा। सहाबा ने कहा कि चौथे दिन यहां छावनी पड़ेगी, एक टीले पर अमीर ने खड़े होकर कहा कि हम हुज़ूर सल्ल० के खिद्दाम दीन के लिए आए हैं तुम यहां से तीन दिन के अन्दर निकल जाओ। इसके बाद जो मिलेगा मार देंगे क़ौम के लाखों इंसानों ने अपनी आंखों से देखा कि हर जानवर हज़ारों की तायदाद में जा रहे हैं। तीन दिन के बजाए 24 घंटे में जंगल ख़ाली हो गया। इसे देखकर लाखों आदमी इस्लाम ले आए। जब तुम ग़ैब पर यक़ीन करते जाओगे इस्तिक़ामत के साथ पुख़्तगी, यक़नी के बाद अल्लाह करेंगे, आज हम दो रक्अत पढ़कर एक तस्बीह पढ़कर फ़रिश्तों रहमतों के मुंतिज़र रहते हैं इस तरह से नहीं बल्कि सारे आमाल को हुज़ूर सल्ल० वाली लाइन यक़ीन व ईमान के साथ, मोटर जब बार-बार रूके तो उस हर बार खोलकर

ठीक करते जाएंगे। इसी तरह जब तक ज़िंदगी बन न जाए अपने आमाल को देखते रहो। कि मुआशरा, नमाज़, तिजारत, घर के हर अमल को देखते रहोगे। ज़हन हर वक़्त अमल ही की तरफ़ जाए या तो बाद की बात है आज हमारे ज़िंदगी के सारे आमाल ख़राब हैं पहले ईमान व यक़ीन कामिल हासिल किया जाए। कुदरत के तहत तमाम नक़्शे हैं कुदरत इनसे आज़ाद है। तमाम नक़्शे मशियत एज़ादी में जुड़े हैं। ऐटम, मुल्क, फ़ौज हाथियार, जहाज़ खेती हर नक़्शे का यही हाल है मशियत ऐज़ादी किसी नक़्शे की पाबन्द नहीं है इसके सब पाबन्द हैं इसकी मशियत के इरादे पर हम बग़ैर चीज़ों के कामियाब होंगे। हुकूमत वाले फ़िऔन की तरह माल वाले कारून की तरह कुव्वत वाले आद की तरह हलाक होंगे। जबकि तमाम आमाल वैसे बनाओ जिससे कुदरत मुवाफ़क्त में आ जाए। जब किसी से निकलने को कहा जाए तो पैसा उज़ रख देता है। यानी यह लाइन पैसा पर मौकूफ़ है इससे यह लाइन नहीं चल सकती है। जिस हालत में हो अमल पर खड़े हो जाओ। कुदरत पर यक़ीन करके, अमल की शक्ल सही हो। अपने वुसअत के मुताबिक़ ख़ुदा पर यक़ीन करके, अगर माल पर यक़ीन हुआ तो सूरत अमल है। हक़ीक़त नहीं हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल की ताक़त सिर्फ़ कुदरत ख़ुदा है। बाक़ी तमाम लाइनों की ताक़त मख़लूक़ माद्दा है अगर हुज़ूर सल्ल० वाली लाइन पैसे पर चले तो पैसा असल हुआ न कि हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल। आज पैसे के यक़ीन के साथ दीन है तभी तो दीन से होता हुआ नज़र नहीं आता। इस दीन से तो कुछ हो भी नहीं सकता इसी दीन से कुछ हो सकता है और होगा। जिसकी बुनियाद पर सिर्फ़ यक़ीन कुदरत ख़ुदा पर हो सिलाह पर विरासत–अरज़ का वायदा है न कि नक़्शे बनाने पर, तक़्वे पर रिज़्क़ सिर्फ़ कुदरत की वजह से है न कि माल के नक़्शों पर इसके लिए मौजूद ज़िंदगी की तर्तीब को बदलो, इस मेहनत में न पैसे का ज़वाल चाहिए न पैसे व वजूद। अगर पैसा या माल है तो इसका

ज़वाल मतलूब नहीं अगर नहीं है तो इसका वजूद भी मतलूब न हो, हो न हो इसका यक़ीन हटना ज़रूरी है। मकान अपनी तर्तीब व तदबीर, दुकान तिजारत से यक़ीन हटकर हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल पर आ जाए यह ज़रूरी है। इसकी मश्क़ भी ज़रूरी है हमारा यक़ीन पैसों चीज़ों पर है कि पैसा होगा तब जाऊंगा, अगर पैसा न हो तो भी चलो, फ़ाक़ा आएगा तो हुज़ूर सल्ल० और सहाबा रज़ि० ने भी फ़ाक़ा किया था और अगर पैसा है तो इससे होने का यक़ीन निकालो तो दावत इबादात ज़िक्र का इनके फैलाने की मेहनतें सब इस पर हों कि आमाल पर ख़ुदा बहुत कुछ करेंगे। और वह मुबारक दिन लाएंगे। जिस दिन हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल की क़ीमत का पता लग जाएगा। जैसे हुज़ूर सल्ल० सारी कायनात से ज़्यादा क़ीमती हैं इसी वजह से आमाल के बदले में जन्नत मुस्तिकल तौर पर बनाई है। हुज़ूर सल्ल० के जिस उमर पर यह दुनिया क़ीमत बनाकर दी जाए तो वह अमल कुबूल नहीं हुआ, अगर दुनिया अमल पर सिर्फ़ ऐसे हो। खाने में चटनी की हैसियत तो यह अमल कुबूल हुआ इसी वजह से हज़रत उमर रज़ि० माल व मुल्क के बढ़ने पर इतना रोते कि जान का खतरा हो जाता। हुज़ूर सल्ल० के जामेअ ख़ैर था इनके पास यह मुल्क व माल नहीं था लिहाज़ा इसमें ख़ैर है ही नहीं, ख़ुदा ने कितना बड़ा बनाया मुझे कि मुझे यह मुल्क व माल देते जा रहे हैं लिहाज़ा इस मेहनत में आगे बढ़, लेकिन मुल्क व माल सामने न हो इनकी रज़ा अपने सामने रखो।

उमूमी बयान न० 9

अश्काल से ज़िंदगी का बनना या बिगड़ना अल्लाह तआला के इरादे पर मुन्हसिर है

फ़जर के बाद, जुमा, 20, अप्रैल 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद

मेरे भाइयों और दोस्तो !

इंसान की मेहनत से इसको हिदायत या ज़लालत मिलती है हिदायत व ज़लालत से फिर इंसान के अश्काल आमाल बनते हैं जिसकी कामियाबी, ना–कामियाबी मिलती जाएगी। अगर मेहनत ज़लालत वाली हो तो नाकामी बढ़ती जाएगी और मेहनत से हिदायत मिलती हो तो कामियाबी मिलती जाएगी कामियाबी ना–कामियाबी का इन्हिसार हर शख़्स की मेहनत पर है ज़ाहिर में इंसान को अपनी मेहनत से मिलता दिखाई देता है। ऐसे ही मेहनत से दिल में हिदायत की रोशनी है या ज़लालत का अंधेरा, हिदायत मिलती हो तो आमाल अच्छे हैं। ज़लालत से आमाल रोज़ बरोज़ बिगड़ते जाते हैं। कुरआन हदीस में जो बात बताई गई हैं। हमें वह इस तरह नज़र आए। ज़मीन की आवाज़ कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ हो ज़लालत है और दिल की ज़ुल्मत है अगर हिदायत हो तो अपने हर–हर अमल से कामियाब बनेंगा। अगर ज़लालत है तो अपने–अपने हर अमल से मुसीबतों में गिरफ़्तार होता जाएगा। कुरआन व हदीस में क्या है इससे हमें दिलों का हाल मालूम हो जाएगा कि हिदायत है या ज़लालत है, कुरआन व हदीस में बताया गया

है तमाम अश्काल, फ़लकी, सफ़ली, अलवी, पहाड़ी, बहरी, बरी, रैगिस्तानी वग़ैरह से कुछ नहीं मिलता, ख़ुद यह अश्काल ख़ुदा के बनाने से बनते हैं। अश्काल से ज़िंदगा का बनना, बिगड़ना उनके इरादे पर मुन्हसिर है। तमाम अश्काल सरमायादारी, ग़ुरबत, फ़क़्र, माल व दौलत, तिजारत, खेती–बाड़ी मुलाज़मत वग़ैरह से कुछ नहीं होता है। पहले रहम मादिर में सिर्फ़ जिस्म था, रूह कहीं अलग थी। दोनों को मिलाया फिर दोनों को जुदा करते हैं। अलग–अलग रखकर क़ियामत को दोबारा जमा करेंगे। ऐसे ही जब तक वह चाहें शई की ख़ासियत जमा रखें। जब चाहें शई की ख़ासियत अलग–अलग कर दें। क़िला जब चाहें हिफ़ाज़त निकाल लें, बाहर से तग़रीक़, नारे तहरीक़ निकाल लें। खाने में से भूख मिटाना निकाल लें, खाने के बाद पीने में से प्यास बुझाना निकाल लें पीने के बाद तमाम मस्अलों का ताल्लुक़ ज़वाहिर से नहीं है। पैदाइश का ताल्लुक़ एक शक्ल से है जब चाहे इसके बग़ैर पैदा कर दे, या शक्ल में पैदा न करे, ऐसे ही शक्ल माल मिलने की हो। लेकिन न मिले, अश्काल देने के बाद इनमें जो चाहे वही होगा। परवरिश या बिगाड़, ख़ालिके अश्काल के ज़ाती तसर्रुफ़ से हर इंसान की परवरिश होती है। तमाम अश्काले ज़ाहिरा से तुम्हारी तर्बीयत नहीं होती है। वही तुम्हें बनाते हैं सेराब करते हैं, भूखा करते, बीमार करते। तंदुरुस्त करते, मारते ज़िंदा करते हैं। हर चीज़ का इंतिज़ाम अगरचे रास्ते से हो रहा है लेकिन हक़ीक़त ख़ुदा कर रहा है। अल–हम्दु लिल्लाहि रब्बील आलामीन, जहां–जहां पलना दिखाई दे रहा है। ख़ुदा से हो रहा है, सेहत दवा से नहीं, दुरुस्तगी हालात, मकानात को कारखानों से नहीं, ख़ुदा के हाथ में है। पानी में सूरज नहीं है, दिखाई देता है, ऐसे ही अश्काल में पलना दिखाई देता है। लेकिन नहीं, पानी कितना ही हाथ मारो सूरज हाथ नहीं आएगा। ऐसे ही अश्काल में जितना घुसें पलना नहीं मिलेगा। अब हमें यह दिखाई दे रहा है कि अश्काल से हो रहा है यह ज़लालत

है और अगर दिल में अश्काल से न होता ख़ुदा से होता दिखाई दे रहा है, कुरआन में बहुत सारे वाकि़आत हैं कि ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अश्काल से मसुअलें निकलें। फ़िऔन के पास हुकूमत का नक़्शा है, लेकिन मूसा अलै० को न मार सका। बल्कि अपनी गोद में रखकर पाला है कि पालने वाले का इरादा, पालने व इज़्ज़त देने से और नबी बनाने का इरादा था, फ़िऔन की पूरी हुकूमत ख़ुद ख़त्म हो गई। नमरूद की हुकूमत में इब्राहीम अलैहिस्सलाम का पैदा होना न चाहा लेकिन पैदा हुए। मारना चाहा, लेकिन न मरे, मुल्क से बाहर किया, लेकिन न उजड़े, आल इस्हाक़ से अंबिया चलाए, और आल इस्माइल से सैय्यदुल अंबियां और हज का सिलसिला चलाया। कारून में यह बात दिखाई की माल से नहीं होता, अगरचें इनके अपने माल से मूसा अलै० पर तोहमत ज़िना की कोशीश की थी। लेकिन वह क़ियामत तक के लिए ज़लील हो गया कि माल की शक्ल से नहीं होता। क़ौम सबा को बाग़ात में हलाक़ किया कि बाग़ात से कामियाबी नहीं है। क़ौम आद को इसकी कव्वी ताक़त में हलाक़ किया। नूह अलै० की अक्सीरियत में कारून को माल में, नमरूद व फ़िऔन को माल–मुल्क के नक़्शे में, हमें यह दिखाया कि शक्लों से नहीं होता है वज़ीर साहब की सिफ़ारिश से यह काम हो जाएगा। मेहनत से माल मिल रहा है मिम्बरी से मैं कामियाब हो जाऊंगा। खाने से पेट मेरा भर जाएगा, अगर वाकाई दिल में भी हो तो ख़ुदा की क़सम ज़लालत है। यूसुफ़ को मुश्किल से हटाया, ख़्वाब दिखाया, चांद, सूरज सितारे, मुझे सज्दा कर रहे हैं। बाप ने बयान किया मां सौतेली ने सुनकर अपने बेटों से कहा इनको हसद हुआ चूंकि यह इस छोटे को चाहते हैं। इस वजह से वह अपनी दुआ से इसे नबी बनवा रहे हैं, हमे बड़े हैं हमें बनवाते, हालांकि इनके नबी होने की वजह से इन्हें मुहब्बत थी। अब इसके बाद ज़िल्लत बनाई, कुवां में फ़ेकना, काफ़िले का ग़ुलाम बनना, मिस्र में बिकना फिर तोहमत ज़िना, फिर जेल यह तमाम अश्काल छोटे बनने की हैं।

आख़िरी शक्ल यह थी कि तोहमत न लगती और ज़ुलेखा के महबूब बनकर मुल्क पर छा जाते। लेकिन इसे भी तोड़ा, आख़िर जेल में एक शख़्स को दावत दी। इसके ईमान पर इससे कहा कि बादशाह के यहां मेरा ज़िक्र करना। इस रुजूअ वाली शक्ल पर जेल और बढ़ा दी अब शक्ल बिल्कुल ख़त्म हो गई इज़्ज़त की। बादशाह ने ख़्वाब देखा सुबह को दरबारियों की बातचीत पर वही शख़्स बादशाह से इजाज़त लेकर यूसुफ़ अलै० से ताबीर पूछी बादशाह को पसन्द आ गई, जिस पर बादशाह ने जेल से बुलवाया। इंकार कर दिया कि पहले औरतों से पूछों इन्होंने हाथ क्यों काटे। यूसुफ़ अलै० शक्ल से मुतासिर न होते थे, जब में मज्में हुसन से मुतासिर न हुआ तो अकेली ज़ुलैख़ा से कैसे मुतासिर हो जाता। लिहाज़ा ज़ुलैख़ा ने हाथ डाला न किं मैंने बादशाह ने औरतों को जमा करके, इनसे पूछा जिस पर ज़ुलैख़ा ने अपनी ग़लती का इक़रार किया इससे पहले भी यह हुआ था कि जब कमरे से बाहर भागे और वज़ीर मिल गया तो यूसुफ़ अलै० ने ऐब ज़ुलैख़ा का छुपाया, ज़ुलैख़ा बाद में आई इसने आते ही कहा वज़ीर तुम्हारी क्या राय है। उस शख़्स के बारे में जो तुम्हारी बीवी पर बुरी नीयत से हाथ डाले क्या कोई दलील नहीं। यूसुफ़ अलै० तुम्हारा गवाह बच्चा दूध पीने वाला, बच्चे ने कहा कि अगर आगे से क़मीज़ फटी है तो औरत सच्ची और अगर पीछे से फटी तो औरत झूठी يـــا يــوسف اعرض ان هذا ۖ انك كنت من الخاطئين इन्हें जेल में डालना इन्हें मुजरिम ज़ाहिर करने के लिए था और यूसुफ़ अलै० इसमें कई साल रहे कोई लश्कर या फ़ौज तैयार न की सिर्फ़ एक रात में तख़्त वज़ारत पर अल्लाह ने बिठा दिया यों शक्ल से नहीं मिला फिर भाई आए मां–बाप भी आए और सबने सज्दा किया यह ख़्वाब की तामीर हुई। यह बढ़ाई शक्ल से नहीं मिली शक्लें टूटतीं रहीं। फिर एक दिन बन गई। ऐसे ही अय्यूब के साथ हुआ हर

रोज़ शक्ल बिगड़ती जाती, बाग़ात ख़त्म, जानवर ख़त्म, बच्चे ख़त्म, सामान जायदाद ख़त्म। गांव वालों ने बीमारी के बाद गांव से निकाल दिया। फिर अल्लाह ने अपनी कुदरत से सारी बीमारी दूर कर दी, सारे बच्चे वापस किए, सामान जायदाद बाग़ात जायदाद, जानवर वग़ैरह वापस हुए। ऐसे ही इब्राहीम की विलादत से पहले कोशीश की कि सोहबत न हो ना-काम, पैदा न होना, जला डालें ना-काम, नमरूद की हुकूमत ना-काम होती रही। इब्राहीम ने सदाकत के लिए नारा तौहीद लगाया और ईद के दिन सारे बुत तोड़कर कुलहाड़ा बड़े सर पर रख दिया। अब ख़िलाफ़ में हुकूमत अक्सीरियत और पब्लीक है। सबने पूछा कि क़ातिल कौन है, जवाब दिया कि तुम्हारा क़ानून है। जिसके पास हाथियार हो वही क़ातिल है, अब बड़ा बुत हामिल कुलहाड़ा है। इससे पूछ लो, सबने कहा, इब्राहीम तो भी जानता है कि यह बोलता नहीं अब अकेले इब्राहीम सबको डांट रहे हैं। इब्राहीम अगर अक्सीरियत हुकूमत से मुतासीर होते तो यह बुत कैसे तोड़ते। आग जमा हुई तमाम इंसानों में खलबली मच गई। जिससे ज़्यादा मुहब्बत हैं उसे तक्लीफ़ें ज़्यादा अब हुक्म हो तो इनकी मदद करें। इब्राहीम शक्लों को तोड़ते चले जा रहे हैं। मुल्कुल जिबाल ने आकर कहा कि हुक्म हो तो पहाड़ से इस क़ौम को ख़त्म कर दूं। فلا امااليك शक्ल की तरफ़ माइल न हुए, दूसरे फ़रिश्ते ने कहा हुक्म हो तो सारे आग को समुंद्र की बारीश के पानी से बुझा दूं।

बढ़ते हुए आग में गिराए गए। اما اليك فلا حسبنا الله ونعم الوكيل

शक्ल को ही बदल दिया शक्ल ख़ुद नहीं करती

ख़ुद करते हैं। ज़लालत वाली शक्ल बचाओ। पहले कोई 'बरदा' का हुक्म मिला, जिससे बहुत ठंडक हो गई। इब्राहीम ने कहा सर्दी ने मार दिया। फिर 'सलामा' कहा यहां से नमरूद की हुकूमत के मनाज़ीर ख़त्म अब नमरूद की बेटी रज़ा ने देखा कि इब्राहीम तो बड़े आराम व राहत से हैं जलने के बजाए। बेटी ने कहा मैं भी आ

जाऊं कहा यही कलिमा कहते हुए आ जाओ। वह भी आ गई न जली, सबने इकट्ठे होकर मशिवरा दिया। अगर ऐसी हालत रही तो सारे लोग ईमान लाकर आग में कूदते जाएंगे। और सारे इस्लाम में दाखि़ल हो जाएंगे। लिहाज़ा इन्हें आग से निकालकर मुल्क से बाहर भिजवादो। चुनांचे शाही फ़रमान जारी हुआ। ऐ इब्राहीम इस मुल्क से चले जाओ, चले गए। यहां तक कि यह था कि शक्लों से नहीं होता अब यह है कि बग़ैर शक्लों से क्या होता है। चलते—चलते ज़ालिम बादशाह के यहां से गुज़र हुआ। आदत यह थी कि हर हसीन औरत पर ज़बरदस्ती करता। सायरा को भी पकड़ लिया। तीन मर्तबा आगे बढ़ना का इरादा किया। लेकिन मर्तबा मुसीबत में आ जाता कहते है जब बीवी किसी दूसरे के पास जाए चाहे कुछ भी न हो, दिल में आता ही है दिल साफ़ नहीं रहता लेकिन जब सायरा को सिपाही ले गए तो हज़रत इब्राहीम और उस बादशाह के दर्मियान की सब चीज़ों में से जो आड़ बने अल्लाह तआला ने निकाल दिया, वहां दो बीवियां एक बच्चो और खाने—पीने का इंतिज़ाम भी अच्छा। अब शक्ल तोड़ना का हुक्म मिला बीवी को जंगल में डाल आओ। हम पालेंगे, डाल आए बग़ैर शक्ल के ज़मीन फाड़कर पानी निकाला और सिर्फ़ पानी से दोनों को पाला। इब्राहीम ने ऊंट से उतरकर इन्हें थोड़ा—सा पानी और खजूरें दीं, किस पर छोड़कर जा रहे हो। अल्लाह पर किसके हुक्म से अल्लाह के, जाओ वह हमें ज़ाया नहीं करेगा। फिर दुआ मांगी। यहां कोई शक्ल किसी क़िस्म की नहीं है। सिर्फ़ इस वास्ते डालता हूं कि नमाज़ इबादत को चल फिरकर क़ायम करें, खेती—बाड़ी या और किसी क़िस्म शक्ल बढ़ाने के लिए नहीं डाला। शक्लों के लिए तो मुल्क शाम ही काफ़ी था। आप अपनी कुदरत से पालें। इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया मैं तिजारत, खेती—बाड़ी लेकर नहीं आया, मैं उम्मत के पास दीन की मेहनत लेकर आया हूं। यानी शक्लों को छोड़कर आमाल के फैलने का ज़रिया बने। अपनी कुदरत से पालें

भी, दूसरी जगह इर्शाद है कि जब यह उम्मत खेतों और तिजारतों में लगकर दीन की मेहनत से हट जाते तो ऐसी ज़िल्लत मुसल्लत करेंगे, जिसको अल्लाह उस वक़्त तक वापस न लेंगे जब तक अपने काम मेहनत दीन पर वापस न आ जाए। मकान, पानी, दुकान, वग़ैरह कोई शक्ल नहीं है। लेकिन इब्राहीम इतनी लम्बी चौड़ी दुआ मांग रहा हैं, तमाम मस्अले कुरबान किए, बीवी–बच्चे के लिए तीमारदारी, मकान, खाना, पीना, और बच्चे की तर्बीयत और तालीम बच्चे की शादी, हाजरा का जनाज़ा यानी किसी भी मस्अले में अपना हाथ न डाल सके। अब हुक्म मिला इब्राहीम जा घर बनाकर आवाज़ लगा दे बाप बेटा बना रहे हैं। जब इमारत क़द–आदम बन बई तो पत्थर ऊपर होता जाता जब छत का वक़्त आया और ऊपर गया बनाते–बनाते दुआ भी मांगते जा रहे हैं। मेहनत कुबूल फ़रमा ऐसी उम्मत तैयार कर जो मस्अला हुआ ऐसे नबी भेज तहारत और किताब व हिक्मत सिखाए। फिर सारी दुनिया को आवाज़ लगा दी कि आ जाओ एक मर्तबा यहां पर क़ियामत तक के नक़्शे बनवा रहे हैं। नुबूवत भी बहुत बड़ी है कि क़ियामत तक के नबी होंगे। उम्मत भी बहुत बड़ी है, बस अब ज़ाती मस्अले कुरबान करके शक्लों के मुक़ाबलों में दुआ मांग ली। इब्राहीम तू ख़ुश हो जा, तेरी हर बात पूरी होगी। नमरूद के पास हज़ारों शक्लें हैं। लेकिन एक बच्चे को पैदा होने से रोक न सका। हत्ता कि मां–बाप इब्राहीम भी सोहबत के न होने में कोशां थे। वालिद इब्राहीम भी वज़ीर थे, इन्हें भी फ़िक्र थी और वालिदा इब्राहीम भी फ़िक्रमंद कहीं बच्चा न पैदा हो जाए वरना हमारी वज़ारत व आराम सब ख़त्म हो जाएगा। चुनांचे तमाम मर्द औरत, मकानत से बाहर निकलकर मैदान में आ गए। मर्द एक तरफ़, औरतें एक तरफ़, नमरूद खुद अपने हाथ में झंडा लिए हुए कुदरत के मुक़ाबले में आ गया। रात को बारह–एक बजे नमरूद को नींद आ गई। बादशाह सो गया और झंडा वज़ीर के हाथ में दे गया। वज़ीर ने इसको

सुला दिया, औरतों की निगाहबानी पर वालिदा इब्राहीम थी। वह हिफ़ाज़त के सारे इंतिज़ाम मुकम्मल करके वज़ीर के पास मिलने आई कि औरतों की हिफ़ाज़त मुकम्मल तौर से हो रही है तुम मर्दों की हिफ़ाज़त के इंतिज़ाम मुकम्मल तौर पर कर लो। कहीं कमी न हो, ऐसा न हो कि कहीं सोहबत हो जाए और बच्चा पैदा हो जाए। जिससे हमारी वज़ारत का ज़वाल होगा सोहबत न होनी चाहिए और आपस में सोहबत शुरू कर दी कहते भी जाएं और करते भी जाएं। सुबह को सबकी पिटाई हुई। कि किस–किस ने सोहबत की लेकिन मालूम न हुआ कि अपना जुर्म था जैसे छुपाया जा रहा था हुकूमती ज़ोर से पैदा हुए। बूढ़े न जले नमरूद हलाक हुआ। पूरे कुरआन का हर सफ़ा व आयत कहेगी कि ख़ुदा ही करेगा यह दिल में बैठ जाए हम भी शक्ल से होने के इस वक़्त कायल हैं। जबकि वह ज़िंदा हुआ। अगर मर्द हो तो फ़िक्र नहीं होती। शेर का नाम सुनकर सब लोग इधर–उधर भागने लगे और जब इसका मुर्दा होना मालूम हुआ तो फ़ौरन सब जगहों से निकलकर शेर की तरफ़ जाएंगे कि जाकर देखो कि इसका जबड़ा कैसा है, उसके दांत कैसे हैं, ज़हन में है कि मुर्दा शेर कुछ नहीं कर सकता ज़िंदा कर सकता है। ऐसे ही मख़्लूक़ एक वजूद है जिससे होता नहीं है। सिर्फ़ ख़ुदा के चाहने से होता है इसे दिल में पहचानना है। जिसके बाद हिदायत मिलेगी और बाक़ी सारे कुरआन में हैं कि ख़ुदा से फ़ायदा लेने के लिए शक्लों की ज़रूरत नहीं है बल्कि आमाल की और हुकूमत, दौलत, चीज़, मकानात से नहीं पसंद दी गई आमाल की वजह से कामियाबी दी थी इब्राहीम की इस्कीम की कामियाबी आमाल की शक्ल से है जैसे सहाबा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल से कामियाब हुए हैं, कामियाबी ना–कामियाबी का ताल्लुक़ आमाल से है हिदायत इस रोशनी का नाम है जिससे अपने तमाम मस्अलों का हल आमाल में नज़र आए और तमाम लाइनों की तमाम शक्लें मुर्दा नज़र आए। ज़िंदा हक़ीक़त में मुर्दा में

हैं जैसे मुर्दा नहीं कर सकता, वैसे ही ज़िंदा भी नहीं कर सकता, दोनों मख़लूक़ हैं अब हिदायत के लिए मेहनत है जो रोज़ करनी पड़ेगी। हिदायत के हसूल के बाद नेक आमाल पर मेहनत होगी और दो दौलतें हैं और मेहनत हैं पहली दौलत सरमाया, दुनिया में पहली मेहनत से माल हासिल किया जाता है। दूसरी मेहनत है इस माल से चीज़ें बनाना हर चीज़ के मुतालबे को पैसे मिलने के वक़्त तक रोका जा रहा है। फिर घर में मेहनत है चीज़ों से शक्लें बनाने की अपने पलने का नम्बर आया है माल से पेट नहीं भरता माल हासिल करने की नीयत से भी नहीं भरता माल से आने वाली चीज़ गोश्त से पेट नहीं भरता, पहली मेहनत कमाई है। दूसरी मैहनत घरेलू ज़िंदगी ऐसे ही पहली मेहनत हसूल हिदायत के लिए जैसे हर चीज़ पैसे से मिलेगी। ऐसे ही यहां पर अमल हिदायत से मिलेगा वरना नहीं अगर यक़ीन है कि सब से निजात है और झूठ से हलाकत तब तो सोच लेगा वरना माल बढ़ाने के लिए झूठ व तमाम मुन्किरात करेंगे। ये ज़लालत है शक्लों वाले रास्ते में जैसे पहले माल मेहनत से हासिल किया जाता है। अंबिया वाले अमल के आने में सबसे पहले हिदायत का हसूल है अगर दिल ज़लाज़त से भरा हुआ है तो एक अमल ठीक नहीं होगा चाहे नमाज़ पढ़ ले। अल्लाहु अक्बर कहे अगर वज़ीर की बड़ाई सामने सुब्हाना रब्बियल आला कहे ग़ैर–ख़ुदा की पाकी व खुबसूरती सामने हो तो यह सिर्फ़ सूरत है हक़ीक़त नहीं जब कि ज़लालत के साथ अमल हो। सारे आज़ा ख़राब होगे, वुज़ू होगा लेकिन गुनाह माफ़ न होंगे, वुज़ू में 70 मुस्तहबात है, इनकी रियायत सिर्फ़ हिदायत वाला ही करेगा। इन तमाम अमल का तमाम आज़ा का ज़ाहिर–बातिन से ताल्लुक़ है इसका ख़्याल सिर्फ़ वे करेगा जिसको आमाल में कामियाबी का यक़ीन है। आमाल सारे होंगे लेकिन हक़ीक़त नहीं है। सिर्फ़ सूरत है तभी तो मस्जिद में बैठकर सियासत, माल, शिर्क, मुल्क की बातें हों। ज़िक्र न होगा, आदमियों के तज़्किरे से बलाएं आती

हैं खुदा के ज़िक्र से जाती हैं जब मस्जिद से बाहर का यह हाल है तो मस्जिद के अन्दर और सख़्त है। मस्जिदे के आमाल हश्र, नश्र, जन्नत, दोज़ख़, पुल-सिरात वग़ैरह के तज़्किरे की जगह है अब मस्जिद में दुनिया की बातें हैं ऐसे ही हमारे अरकान सलात होंगे। लेकिन हर रूकन बिगड़ा हुआ होगा, जब तक हिदायत न मिल जाए। उन्हें दुरूस्त न करेगा कि शक्लों से कुछ नहीं होता मुल्क माल से कामियाबी नहीं मिलती वज़ारत, बाग़ात, अक्सीरीयत से नहीं होता आमाल से होता है इसके लिए यह है कि मुहब्बतों से निकलो। मिसाल के तौर पर रंडी की मुहब्बत निकालनी है, बीवी की मुहब्बत नहीं है, उसे रंडी के पास जाने से रोका जाए। बीवी सजाकर सामने लाई जाएगी, बीवी का सिर्फ़ तज़्किरा होगा रंडी का बिल्कुल ज़िक्र न होगा। जहां कहीं रंडी का ख़्याल आएगा, फ़ौरन उसे समझाया जाएगा कि रंडी से वायदा करना हराम है। इसको पूरा करना भी हराम है, अगर वह टहलने के लिए निकलेगा तो तुम साथ निकलोगे कि इससे मिल न जाए अब दिल में ज़लालत कैसे आई जिस पर इंसान मुहब्बत करता है। उसकी मुहब्बत आती है इसी वजह से मस्जिद बनाकर बार-बार बुला रहे हैं। कि जब लगातार चीज़ों में इश्तिग़ाल होगा इनकी ज़लालत दिल में होगी। कभी दफ़्तर, कभी खाने से, कभी फ़ौज से, कभी दुकान से, बुला रहे हैं अगर हिदायत है जिस पर थोड़ा-सा वक़्फ़ा से ज़लालत का ग़ुबार पड़ गया तो नमाज़ में आने से हट जाएगा, अगर दिल में ज़लालत ही हो तो वह इस नमाज़ से नहीं जाएगी। इस नमाज़ से सिर्फ़ ग़ुबार हटती है। अब यह बात है कि कमाने के तमाम नक़्शों से निकलो। जिसके दिल में यक़ीन पक्का है कि हमारे बाल-बच्चे और हमारी कमाई से पल रहे हैं यह गंदगी है इन नक़्शों से निकलो और हर वक़्त, ईमान व दावत, नमाज़, दुआ, ज़िक्र ख़िदमत में लगे रहो तमाम आमाल अच्छे कर लो खुदा सारे हालात अच्छे कर देंगे। दुकानों, मकानों में जाकर यही बात उनसे कहो, फिर

तंहाई में ग़ौर करो कि दिल में क्या है। अगर यही दुकान वालों का यक़ीन है तो रोकर दुआ हिदायत की मांगो, ज़ुबान से यही कहे, कान यहीं सुनें, बन्दों से यही कहा जाए। दुआ में भी यही मांगा जाए यह सारी नक़ल है असल इस दिन होगी जबकि दिल में उतर जाए। अच्छे की नक़ल व बहरूप भी अच्छी है ईमान व हिदायत इख़्लास सिर्फ़ दिल में होता है। सिर्फ़ ज़ुबान से नहीं, ज़ुबान से बोलने के माइने धोखा है इस दुनिया में दिल और ज़ुबान में तवाफ़िक़ है। किसी रक़ीब को देखकर करेगा, आपसे बहुत ख़ुशी हुई, चाहे दिल में कितना ही चल रहा हो। इसी का नाम निफ़ाक़ है कि इस अफ़सर के सामने इस तारीफ़ की आपका दौर बेहतरीन दौर है। बाहर निकलकर इसी की बुराई होगी। ऐसे ही सिर्फ़ ज़ुबान के हिदायत कह देने से हिदायत नहीं मिलती। जो इख़्लास वाले होंगे।? ज़ुबान से भी कहेंगे कि कहीं ग़रज़ तो सामने नहीं है। अब हुज़ूर सल्ल० जो आमाल देकर गए हैं दावत अंबिया के वाक़िआत, अल्लाह की सिफ़ात का बयान इसे रोज़ाना सुनो कहो मस्जिद के बाहर तो शक्लों में यह है कि शक्ल देखते हैं। इसी की सिफ़ात सुनते हैं। ज़ुबान से कहते हैं लेकिन ग़ैर में सुनकर बात चलेगी। आंखों से सिर्फ़ लफ़्ज़ नज़र आएंगे। सुनकर बात चलती रहेगी और बोलते-बोलते जिस दिन हिदायत आएगी तो तुम देख भी लोगे कि अमल से ज़िंदगी बनती है। मज्सिद में सिर्फ़ मस्जिद की बात करो। बाज़ार की बात मत करो। अमरीका, रूस देखकर आया हूं। इसकी फ़ौरन तरदीद करो कि इन नक़्शों से नहीं मिलेगा। सिर्फ़ ख़ुदा के देने से मिलेगा, अगर मिलेगा तो लेने के लिए देंगे। जो देखकर बोला जाता है उसे काटा जाएगा उसका इज्माल ला इलाह इल्लल्लाह है। यह बात हर जगह चलेगी। अदालत में कहो तुम्हारे हाथ में है न हमारे हाथ में है बल्कि ख़ुदा के हाथ में है जिसे चाहे ज़लील या अज़ीज़ कर दे। अरे पागल सिर्फ़ ख़ुदा करता है, हर जगह यह बात चली मस्जिद वाली। वज़ीरे आज़म आ रहा

है। अगर यह चाहे कि हिन्दुस्तान को तबह कर दे तो नहीं कर सकता, इसे अभी मौत आ जाए या जनून तो फिर क्या करेगा। जो ज़ाहिर से होने को कहे तो काट करेंगे चाहे वज़ीर, सदर–हाकिम, आलिम या शेख़ या कोई भी शख़्स इंसान हो या इस औरत के साथ तालीम होगी कि आमाल की जज़ा सज़ा मालूम करो। जो तुम्हें देखकर चीज़ों के बारे में बताया जा रहा है, तो इल्म के ज़रिए मुक़ाबला मुकम्मल होगा, कि नमाज़ से होगा माल से नहीं झूठ से मुसीबत आएगी, सच से कामियाबी, ज़िक्र की मेहनत भी है, हर जगह ज़िक्र के साथ जाओ जिससे नक़्शे वाले तुमसे मशहूर होंगे अगर ग़फ़लत से गए तो तुम उनसे मशहूर होंगे। जहां किसी बड़े अफ़्सर से मुलाक़ात हुई, इसके हालात व मेहमानी देखकर मुतासीर हो गए। इस वजह से ज़िक्र में कमी आ जाती थी ज़िक्र का मतलब यह है। यह नक़्शा कितना अच्छा कितना भयानक हो तुम इससे मुतासीर न हो। दिल में ग़ैरों से होने का ख़्याल है दिल में ला इलाह इल्लल्लाह का विर्द है। रूस्तम ने सहाबा रज़ि० के दो तीन अफ़राद को मरऊब करने के लिए अपने साथियों से पूछा कि ये लोग शाही मरऊब से होंगे या फ़ौजी से। शाही नक़्शे से क़ीमती कालीन बिछाई गई, गद्दे उम्दा–उम्दा तख़्त, चारों तरफ़ दरबारी अपने सारे क़ीमती चीज़ों के साथ रूस्तम अपने तख़्त पर, उधर रूबई रज़ि० को ख़बर हुई किसी से या ख़ुदा से तो इन्होंने अपना देहाती पन बढ़ाया। शिकस्ता जूती, फटा साफ़ा, मेले कपड़े, गधे पर सवार एक जगह कहा गया कि यहां से आगे हाथियार ले जाना मना है। कहा मुझे तुमने बुलाया है, हमें तुमसे कोई ग़रज़ नहीं, जाऊंगा तो पूरे हाथियार के साथ जाऊंगा। फिर रूस्तम से इजाज़त ख़ुद–ब–ख़ुद मिल गई फिर कहा गया कि अब गधा यहां छोड़ दो, मुझे तो तुमने बुलाया है। मैं तो ऐसे ही जाऊंगा हमें तुम्हारी ग़रज़ व ज़रूरत नहीं है। रूस्तम से कहा गया उसने कहा आने दो आगे बढ़ते गए, अपने गधे पर बढ़ते गए, एक जगह पहुंचकर

अपने गधे को तकिए से बांध दिया और आगे बढ़कर क़ालीन हटाकर ज़मीन पर बैठ गए। सब हैरान है कि इनके यहां हमारे क़ालीन से क़ीमती अल्लाह की ज़मीन है क्या चाहते हो तुम इस्लाम ले आओ, न लाएंगे, जज़िया दो, न देंगे। तो तलवार फ़ैसला करेगी। हमें पंद्रह दिन की और मोहलत दो नहीं सिर्फ़ तीन दिन की मोहलत है। जिसके मुताल्लिक़ हमें हुज़ूर सल्ल० ने सिखाया है। उससे ज़्यादा नहीं और वह भी कल से शुरू हो चुके। जबकि से मुग़ीरह रज़ि० से मिल चुके, वापस हुए दूसरे दिन मुग़ीरह रज़ि० आए, इन्होंने भी उतरकर अपने नेज़े से रूबई रज़ि० की तरह सारे क़ालीन फाड़े और इससे आगे बढ़कर जस्त लगाकर बिल्कुल रूस्तम के क़रीब जा बैठे। इस पर हर तरफ़ से शोर उठा कि यह क्या कर दिया हमारे यहां तो सब एक जैसे भाई–भाई बनकर रहते हैं। तुम्हारे यहां कुछ इंसान आक़ा, कुछ इसांन गुलाम कुछ इंसान जानवर मेरे यहां बैठ जाने से न तो मेरी इज़्ज़त बढ़ी न मेरी निगाह में तुम्हारे रूस्तम की ज़िल्लत हुई दावत वाली बात कही और चल दिए सबने शोर मचा दिया, हक़, कानून, मज़हब इनका ही है हमारी क्यो हुकूमत व हुक्काम हैं। सब फ़ारस के हुक्काम हुकूमत के ख़िलाफ़ हो गए यह थी ज़िक्र की ताक़त जो शक्ल सामने उसी वक़्त खुदा की ताक़त सामने आई। इसी शक्ल की बेबसी सामने हो, यह सिर्फ़ ज़िक्र से मिलेगा। ईमान व ज़िक्र के साथ नमाज़ पढ़ो ख़िदमत खलक़ करो उन आमाल से हिदायत मिलेगी जहां से ज़लालत बढ़ती है वहां से हटो, दाई, नमाज़ी आलिम, मुतअल्लिम, ज़ाकिर बनो। इन्हें सीखने सिखाने के लिए फिरो और दुआ के ज़रिए अल्लाह से हिदायत मांगो फिर रोशनी हिदायत वाली मिल जाएगी। जितना तुम हिदायत्त से खुद को ख़ाली समझकर तड़प–तड़पकर दुआ मांगो जैसे बीमार बच्चे के लिए या मुकद्दमा के लिए मांगते हो। इस मेहनत से छुट्टी नहीं है मकामी भी है बेरूनी भी है इसके साथ कमाई व घरेलू ज़िंदगी में मुन्किरात को छोड़ना पड़ेगा, इसकी रोशनी

तालीम से मिलेगी। इस यक़ीन के साथ कि अगर मेरे नक़्शों में कमी आएगी लेकिन ख़ुदा दयानत, सच, सूद छोड़ने पर मुझे कामियाब करेंगे। फिर दुनिया व आख़िरत में कामियाब हो जाओगे। पहले चार महीने लगातार मेहनत दिल में कुछ हिदायत ले आओ। फिर वापस आकर ऐसी तर्तीब बनाओ कि कमाई के साथ मेहनत भी जारी रह सके। सहाबा रज़ि० के ज़माने में चार महीने बेरूनी नक़ल व हरकत में चार महीने में मस्जिद में चार महीने कमाई में अबूद्दर्दा रज़ि० से कहा गया कि घर जल रहा है और ख़ुदा न जलाए, दूसरा, तीसरा आया कई आए सबसे आख़िर में लोगों ने कहा हमसे ग़लती हुई आपसे मुलहक़ा मकानात जल रहे थे आप के मकान तक आग खुद ही पहुंचकर बुझ गई। वह बताने लगे कि आज मैंने वह हुज़ूर सल्ल० वाली दुआ पढ़ी है जिससे आग नहीं लगती तुम दुआ वाले बन जाओगे। दुनिया के तमाम सदर, वज़ीर, तुम्हारे क़दमों में होंगे अब हिदायत लेने के लिए, तर्तीब ज़िंदगी, बदलनी होगी। बेरूनी भी मकामी भी किसी नमाज़ के बाद तालीम किसी के बाद ज़िक्र किसी के बाद ख़िदमत वाली मेहनत होगी, तो सहाबा रज़ि० वाली हिदायत मिलेगी। यह तो मर्दाना मेहनत है, ज़नाना मेहनत यह है कि औरत का एक ख़ाविंद मर गया तो चार महीने दस दिन इद्दत में गुज़रते हैं घर के अन्दर न सिंगार कर सकती है न चूड़ी पहन सकती है। अब सेहत मंद और एक साल में एक बच्चा पैदा करके चालीस (40) निफ़ास में गुज़ारती है। इसी में साठ, सत्तर दिन के अक़वाल हैं। हैज़ महाना कम से कम तीन दिन है यानी आज कल के मर्द औरत से कमज़ोर हो गए तो आख़िरी मुद्दतें ली गईं अब इस मर्दना ज़नाना नसब के बाद खन्सा ही रह जाता है। जिसको कहीं ठिकाना नहीं मिलता है हर जगह से निकाल देते हैं।

उमूमी बयान न० 10

हुज़ूर सल्ल० उन तमाम मस्अलों के हल के लिए आए हैं जिनके हल के लिए पहले तमाम अंबिया तशरीफ़ लाते रहे।

फ़जर के बाद, सनीचर, 21, अप्रैल, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

कामियाबियों के हासिल करने और नाकामी से बचने के लिए मेहनत करने अंबिया ख़ास तरीक़े लेकर आते हैं जितने मस्अलें हैं चाहे वह हाकिम, महकूम, ग़रीब, अमीर, इज्तिमाइ, इंफ़िरादी, ख़ानदानी, मुल्की, इसमें ख़ास तरीक़े लेकर आए हैं एक आम तरीक़ा है मेहनत का हज मस्अलों के लिए, अपने तर्जुबे, महदूद अक़्ल व इल्म, अंबिया अलग–अलग तरीक़े नहीं लाए, तमाम अंबिया तमाम मस्अलों के लिए सिर्फ़ एक तरीक़ा लाए हैं और इससे हर मस्अला हल होता है। अंबिया का तरीक़ा अलग नहीं है जिन शक्लों में आए हैं, इनमें इख़्तिलाफ़ है कोई हुकूमत में, कोई तिजारत में, कोई खेती–बाड़ी में और हुज़ूर सल्ल० सबसे आख़िर में उन तमाम मस्अलों के लिए आए हैं जिनके हल के लिए पहले तमाम अंबिया इस आलम में तशरीफ़ लाते रहे थे और वह तरीक़ा है ला इलाह इल्लल्लाह चाहे ज़ालिम हुकूमत से बचने के लिए, रफ़े महकूम, मुक़ाबले अह्ले सनअत हर जगह यही कलिमा है कि जो तुम्हारे सामने है इस पर मेहनत न करो बल्कि अल्लाह के सामने रखकर करो कि इसमें अल्लाह क्या–क्या कर सकते हैं और अपने को इस चीज में अल्लाह के

लिहाज़ से इस्तेमाल करो। अल्लाह का यक़ीन उन जैसा करो और चीज़ें जैसी हैं वैसा उनका यक़ीन करो और जो तरीक़ा उनसे लेने का है उसे अख़्तियार करो। फ़िऔन ख़ुदाई का दावा कर रहा है, नमरूद अहया अमवात कर रहा है हुकूमत के मुक़ाबले में सिर्फ़ दो क़िस्से ज़िक्र किए हैं दोनों हुकूमतें समझती हैं कि हम सब कुछ कर सकते हैं। आज के फ़िऔन व नमरूद ने अपने ख़्याल में सिर्फ़ अपने मुल्क से खुदा को निकाला है पुराने फिऔन ने तो आसमान से भी निकलने का इरादा कर लिया था। हर नबी सिर्फ़ एक ही तरीक़ा मेहनत लेकर किसी शई के मुक़ाबले में आए और हुज़ूर सल्ल० उन तमाम अंबिया के मज्मूए मसाइल के मुक़ाबले पर वही एक तरीक़ा लेकर आए, हर क़बीले का अलग–अलग बुत था। हर एक से इस्तिफ़ादा के तरीक़े अलग–अलग कुफ़्फ़ार ने बने रखे थे। अब ये बुत इस तरह बने की एक नबी ने मेहनत करके खुदा से ख़िलाफ़ ज़ाहिर करवाया। इंतिक़ाल के वक़्त उनके बुत यादगार के तौर पर बने फिर आख़िर में वही बुत बने। जैसे आजकल चौराहों पर काले काले जिस्म के जले हुए बुत रखे जाते हैं, उन बुतों को करने वाला समझ लिया है, मगर करने वाला सिर्फ़ ख़ुदा है। भला जब नबी ख़ुदा बना लिया गया तो दूसरे नबी ने आकर कहा यह तो बन्दा था न वे नबी करते थे न ये पत्थर करता है दोनों ज़मानों में सिर्फ़ ख़ुदा करते हैं। बुनियाद हर नबी की एक ही होती थी लेकिन जज़ियात में इख़्लाफ़ हो जाता था। अस्क़ा इंसानियत की वजह से पहले तो आसानियां थीं इससे पहले और हुज़ूर सल्ल० के तमाम आमाल में जो 24 घंटे की पाबंदियां दी गई हैं। बाक़ी अंबिया की पाबन्दी इतनी कामिल न थी। लिहाज़ा हुज़ूर सल्ल० मुकम्मल हो गए। तमाम अंबिया ने ला इलाह इल्लल्लाह के ज़रिए यक़ीन बदलने की मेहनत की नज़र आने वाले से न होने का यक़ीन करो। यह दिल देने और इनमें लगने के क़ाबिल नहीं कि इनसे होता नहीं ज़मीन से आसमान तमाम अश्काल बचने के तहत आएंगे।

दिल से इससे होने की नफ़ी का यक़ीन करो। सन्अत व हरफ़त, खेती–बाड़ी, तिजारत, जानवर, सोना, चांदी, बर्क व भाप, तर्जुबा, अक़्ल तमाम से न होने का यक़ीन करो। इसमें बहुत बड़ी मेहनत की ज़रूरत है और सिर्फ़ अल्लाह से होने का यक़ीन जमाओ, ला अल्लाह यह है कि खुदा ज़ाहिरी अस्बाब के बग़ैर भी कर देंगे और इनके ख़िलाफ़ भी कर देंगे। बग़ैर कमाई, बग़ैर दुकान के माल दे सकते हैं इससे अपने पचास (50) साठ (60) सालों के तर्जुबों को भी निकालना होगा। ऐसे अपने ख़ानदान में जो कुछ देखा है इसका यक़ीन निकालो। अल्लाह तमाम सिफ़ात में नफ़ी का अस्बात करते जाओ, अपनी कुदरत से जो चाहे कर सकते हैं। इनकी कुदरत किसी अमल की पाबन्द नहीं है वरना कुदरत नाकिस होगी। सुब्हानल्लाह मकान के बग़ैर हिफ़ाज़त कर सकते हैं शक्ल के बग़ैर कर सकते हैं। अब अश्काल हमारे पास हो तो धोखा न खाएं, दूसरे के पास हो तो मरऊब न हों। अब तमाम बराबर हो गया, क़िला का होना न होना, खाने का होना न होना, हुकूमत का होना! या किसी और के पास होना। हर हाल में इस चीज़ से कुछ न होने सब कुछ सब तरह खुदा से होने का यक़ीन करो। अल्लाह के हाथ में मौत है। जिस तरह चाहें दे दें, हायात है जिस तरह चाहें दे दें, मौत है जिसे चाहें दे दें वग़ैरह। अल्लाह ने पहले कुदरत से पानी बनाया, वहां कुदरत से एक बुलबुला उठा, उसे फैलाकर ज़मीन बनाई, तमाम चीज़ें बनाई और कुदरत से एक दिन ख़त्म कर देंगे। आज भी इसे अपनी कुदरत से चला रहे हैं, बारिश को लोग सबब समझते हैं। वजूद मुस्तिक़ल, अल्लाह के इरादे कुदरत से है। अश्क़ाल के रास्ते से मार रहे हैं, ज़िंदा कर रहे हैं। आख़िर में खुद इज़राइल तमाम को ख़त्म करके, अब हम चार और अर्श है। हम्मालुतं अर्श को मारो आप और हम चार हैं तीनों को मार दो, आप और मैं तुम भी मर जाओ मर जाएंगे। इज़राइल सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म से मर जाएंगे। शक्ल यह है कि इज़राइल ने रूह निकाली लेकिन हक़ीक़त

अल्लाह कर रहे हैं। हकीक़त वजूद हैं अश्काल से नहीं चलता बल्कि अश्काल से ज़ाहिर होता है। आज राकेट, बम, जहाज़, बन्दूक़ से बहुत कुछ होता नज़र आ रहा है, इसे कुदरत से ख़ुदा बदल सकते हैं। जैसे दज्जाल जो कुछ करेगा वह ख़ुदा की कुदरत से करेगा, लेकिन वह खुद और लोग समझेंगे कि वह अपनी ताक़त से कर रहा है। आख़िर में मर्द मोमिन का आना इसका न आना, इसके दो टुकड़े करके उसे दोबारा ज़िंदा करना। उस अमल को अलामत दज्जाल क़रार देना। इसके बाद दज्जाल किसी को नहीं मार सकेगा। दज्जाल से जो कुछ हो रहा है वह ख़ुदा से हो रहा है। जब चाहेंगे इससे छीन लेंगे या इनके बग़ैर यह ख़ास व असरात ले आएं। यह यक़ीन वाला रास्ता बहुत आसान है। बगैर वोटिंग, बग़ैर हुकूमत, अस्लाह, मकान, ऐटम बम, माल व जायदाद, हमें सिर्फ़ ईमान के ज़रिए तमाम बुलन्दी दुरूस्तगी हालात मिल सकती है। सबके बग़ैर सबके ख़िलाफ़ सिर्फ़ ईमान से कर देंगे। तमाम तर्जुबे छोटे हो जाएंगे। लिहाज़ा मस्अला न अक्सीरियत पर मौकूफ़ है। न हुकूमत पर न ताक़त पर सिर्फ़ ईमान और हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े के क़ैद है और कोई क़ैद कामियाबी मिलने के लिए नहीं है। कि इन शक्लों से न होना दिखाई हर शक्ल में और अल्लाह में इन अश्काल के बग़ैर होना दिखाई दे। यही ला इलाह इल्लल्लाह है। दूसरा यह है कि इससे बुनियाद वाला तरीक़ा हासिल कर लो जिससे अल्लाह ख़िलाफ़ ज़ाहिर करेंगे अगर दो, चार हज़ार वाले इसके तरीक़े हो जाएंगे, हुज्जत तमाम हो जाएगी। जिसके बाद ख़ुदा ज़ाहिर करेंगे, दूसरा या इस्लाम में या हलाक होंगे किसी तरह भी। शक्लों के मुक़ाबले में शक्लों के बग़ैर वे कामियाब होंगे। जो ख़ुदा की शर्तों पर पूरा उतर जाएं, इसमें पैसा नहीं चाहिए बल्कि इनका यक़ीन हो। हमारे पास हो या किसी के पास हो चीज़ें ख़त्म हो या न हो। इन पर यक़ीन ख़त्म हो जाए वरना कामियाबी की गुंजाइश नहीं है। चीज़ें ख़ुद हो तो क़ामियाबी की

गुंजाइश होगी, अगर चीज़ों पर यक़ीन हुआ तो ख़िलाफ़ ज़ाहिर न होगा। अगर्चे जन्नत में आख़िर में चला जाएगा। सबसे आख़िर में सूरः माइदा उतरी है इसमें अहकाम सबसे ज़्यादा हैं। तमाम अहकाम देने के बाद आख़िर में क़िस्सा ईसा का बयान किया कि अल्लाह ईसा अलै० को जाम करेंगे कि तमाम ने लोगों ने ख़ुद को ख़ुदा कहलवाया था वे कहेंगे नहीं मैंने ख़ुद को बन्दा ज़ाहिर किया दुआ मांगकर आपको ख़ुद ही जाना है हालांकि मांगने वाला ख़ुदा नहीं हो सकता। ईसा अलै० कांपने लगेंगे, आज़ाबे दीन तो फ़नहम इबादक मग़्फ़िरत करें तो आप अज़ीज़ व हकीम हैं ऐसे ही हुज़ूर सल्ल० हमें सब कुछ देकर जा रहे हैं गोया इस वक़्त तक के सारे कुरआन का खुलासा है कि पहले यक़ीन की मेहनत थी फिर अहकाम। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम भी क़ियामत को ऐसे खड़े होंगे। जैसे ईसा को खड़ा करके उनसे उनकी उम्मत के मुताल्लिक़ पूछा जाएगा, इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० पर ही सारी रात रोते गुज़ार दी। इसी में यक़ीन की तब्दीली की ज़रूरत है जिसके बाद हर चीज़ अजज़ा बदल जाएगी और लोग हकीम व दलाइल वह हालात हाज़रा की कोई बात न करेंगे पहले हुकूमत नहीं बनाते थे और सहाबा रज़ि० वग़ैरह में हिक्मत से मानना असल नहीं है क्योंकि यह तो अपनी अक़्ल से मानना हुआ बन्दा बनकर मानना हुआ। यह यक़ीन का सारा मस्अला है, शक्लों के ज़ेर होने या न होने और इन शक्लों से हटने की सूरत यह है कि तुम बग़ैर शक्लों के कामियाब होकर दिखाओ। जिससे शक्लें फैली होंगी और इस्लाम चलेगा और क़ौमें व मुल्क इस्लाम की तरफ़ दौड़ेंगे और मेहनत व मुजाहेदा दीन वाला दोबारा ज़िंदा हो जाएगा। लोग दुनिया बादशाहत छोड़कर इससे अच्छी ज़िंदगी हुज़ूर सल्ल० वाली हासिल करने पहाड़ों में चले जाएंगे। तसर्रुफ़, वुसअत, अख़्तियारात के एतबार से बादशाहात जमहूरीयत से ऊंची है बादशाह ख़ुद तसरूफ़ कर सकता है। आजकल के वज़ारत के अख़्तियारात बहुत महदूद हैं गुज़रे हुए

के एतबार से बादशाह को छोड़कर इस्लाम के लिए जाते थे। हालांकि ज़ाहिर में इनकी बादशाहत मौत तक थी आज के लोग इस्लाम छोड़कर इस जमहूरीयत की तरफ़ जा रहे हैं। जो सिर्फ़ पांच साल के लिए है और मिले या न मिले। ऐसे ही तिजारतें छोड़कर जाते थे जिसमें सूफ़ी सद अपना नफ़ा होता था, आज की तिजारत के लिए हम इस्लाम को छोड़ते हैं। हालांकि नफ़ा रूपए में चार आना है। ग्याराह आना टैक्स के जाते हैं शक्लों से कुछ न होने की तरफ़ वे तमाम लोग मुड़ेंगे जो शक्ल की ऊंची सूरतों पर होंगे। जबकि एक तबक़ा नबियों वाले रास्ते से कामियाबी लेने वाले तरीक़े पर आ जाए इस तबक़े की तायदाद हज़ारों, लाख़ो ज़रूरी नहीं है। सैकड़ों से काम चल जाएगा। तब्लीग़ की मौजूदा भीड़ उस वजह से है कि यह काम व तरीक़ा हर एक करता है। कसरत से काम नहीं चलता इस अंबिया वाले रास्त में बद्र वाले 313 सहाबा 12 हज़ार हो गए और कसरत पर यक़ीन आ गया बद्र में कम कामियाब हुए, अब 12 हज़ार कैसे न होंगे। लेकिन शिकस्त खाकर जहां शक्ल पर यक़ीन गया, फ़ंस गए। प्रोफ़ेसर लग गया है लिहाज़ा अमला सारा लगेगा। सदर लगा है सब लगेंगे, फ़्ला लगा है काम ख़ूब है यह फिसलन है। जंग बद्र में रूअत तारी हो गया मुश्रिकों पर और हुनैन में मुसलमानों पर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अब्बास रज़ि० से आवाज़ लगवाई इनकी आवाज़ बारह मील तक जाती थी कि मदीना में इनका बाग़ बारह मील पर था अपने मकान की छत पर से ग़ुलाम को आवाज़ लगाते और वह आ जाते। जितनी हदीस हैं वे मौज़ूअ हो सकती है ज़ईफ़ और सही सब हैं इनका वजूद हैं मौज़ूअ का वजूद ही नहीं होता है। अब्बास रज़ि० ने आवाज़ लगाई। सहाबा ने लड़ना चाहा लेकिन ऊंट न लड़े। रूआब के आख़िरी हद है कि जानवर भी मरऊब हो गए। हालांकि मरऊब सिर्फ़ इंसान होते हैं, जानवर नहीं। अबूबक्र व उमर रज़ि० भी हुज़ूर सल्ल० से भागे न थे अबू सुफ़ियान बिन हारिस

बिन अब्दुल मुत्तिलब का ज़िक्र (चचाज़ाद भाई) शेर व शायरी में आता है अबू सुफ़ियान बिन हर्ब बिन उमैया का ज़िक्र का उमूमन हरूब में आता है इसी वजह से अबू सुफ़ियान शायर के आने पर हुज़ूर सल्ल० ने कहा मैं देखना नहीं चाहता हूं। अपनों पर एतबार ज़्यादा होता है अगरचें आज इसका अक्स है उम्मे सलमा ने उनकी सिफ़ारिश शुरू की कि सुसराल में से है भाई है अपने है आपने फ़रमाया कि क्या अपने हैं। फ़्ला दिन मज़ाक़ उड़ाया वग़ैरह वग़ैरह। इस पर उन्होंने कहलवाया कि इजाज़त न हो तो मैं अपने बच्चे समीत कहीं जंगल में जाकर मर जाऊंगा। यह इस्लाम में फ़त्ह मक्का से पहले ही इसी सफ़र में इस्लाम लाए हैं। जंगे हवाज़ीन में साथ थे और हुज़ूर सल्ल० के साथ बिल्कुल जमे हुए थे। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया शायद हमज़ा रज़ि० का नाइब इनको बना दे और इनसे बहुत ख़ुश हुए लोग सवारियों से कूद कूदकर आवाज़ की तरफ़ बढ़े, 100 हो गए उन 100 से अल्लाह ने रूआब निकालकर मुश्रिकों पर डाल दिया बाक़ी मुसलमानों में रूआब उस वक़्त है किसी ने मुश्रिकों से पूछा कि रूआब की क्या कैफ़ियत थी। जवाब में बताया कि अगर बर्तन में पत्थर मारे जाएं तो वह हिलता है ऐसे ही हमारा दिल हिल रहा था। अब सब मुश्रिक भागे मक्का जाकर दम लिया। ऐसा मालूम होता था कि हर पत्थर व पेड़ भागकर पकड़ना चाहता है। आज लोग सिर्फ़ दिमाग़ ज़हन से इस्लाम चलाना चाहते हैं। इस्लाम तो दिल की चीज़ है। ईमान दिल में आज और हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा भी तो ख़ुदा बग़ैर शक्लों के मुक़ाबले में चमकांएगें। दीन के दिमाग़ की अय्याशी बन गई है। सारा मस्अला दिमाग़ की सोच पर आ गया है अगरचें दिल में यक़ीन बिल्कुल न रहा। इसी वजह से आज मुसलमान शक्लें बना रहे हैं अक्सीरियत हुकूमत फ़ौज व ताक़त वालों से ज़ोड़ बिठाने की। हालांकि सहाबा जब भी अश्काल की तरफ़ रूजूअ किया है अल्लाह ने ख़बर ली है हुनैन की तरह उहूद में भी यही

बात हुई थी। इस वजह से पहले 70 शहीद हुए बाक़ी बहुत ज़्यादा ज़ख़्मी कि नमाज़ खड़े होकर न पढ़ सके। 70 के लिए पंद्रह—बीस क़ब्रें खोदीं, दूसरे दिन हुक्म मिला। हमराउल—असद में सिर्फ़ वही जाएगा जो कल उहूद में शरीक था अब सीधी बात है कि जब कल हम सब तन्दुरूस्त थे। और 70 मरे भी तो थे तो शिकस्त खा गए। अब सारे के सारे ज़ख़्मी हैं 70 मर चुके हैं कैसे फ़त्ह होगी नहीं चल पड़ो अल्लाह मदद करेंगे हमराउल—असद पर अबू सुफ़ियान ने कहा कि अभी हमारी फ़त्ह न हुई मुहम्मद सल्ल०, अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि० बाक़ी हैं। इनका ख़त्म होना इस्लाम का ख़त्म होना है, वरना नहीं। इनकी बीवियां बन्दी बनाकर लाते चलो मदीना वापस चलकर दोबारा हमला करें इतने में मदीने से मुश्रिक आया लेकिन हुज़ूर सल्ल० से ताल्लुक़ था अबू सुफ़ियान ने इससे मदीने का हाल इससे पूछा कहा, मत पूछो। कल उहूद में जल्दी से बच्चे आ गए थे अब तो मदीना के बड़े—बड़े बहादुर आ रहे हैं। बहुत बड़ा लश्कर आ रहा है अब इतनी हिम्मत के बावजूद उन पर मुसलमानों का रूआब आ गया। जब हुक्म तोड़ा रूआब आ गया। जब हुक्म पूरा किया तो रूआब उन पर चला गया। रूआब बहुत अजीब चीज़ है। ख़्वाजा हसन निज़ामी एक क़िस्सा सुनाते हैं बचपन में हज़रत की मज्लिस में सुनाया था कि जब ग़दर में अंग्रेज़ों और हिन्दुस्तानियों की जंग हो रही थी वालीद साहब निज़ामुद्दीन से देहली जा रहे थे रास्ते में दस अंग्रेज़ मिल गए। इनमें से अकेले छः को क़त्ल कर दिया जब बाद में यह मशहूर हो गया कि सार हिन्द पर अंग्रेज़ों का तसल्लुत हो गया तो सख़्त फ़ौजी निज़ामुद्दीन आया। निज़ामुद्दीन में सारे मुसलमान थे इसने आकर वालिद साहब का कान पकड़ा और किसी दुकान से ढाई बन की बोरी कमर पर लादकर चलने को कहा वालीद साहब कमज़ोर चलते थे और गिर जाते थे। रूआब ख़ुदा के हाथ में है यह बात हो रही थी कि दूर से गुबार दिखाई दिया। अबू सुफ़ियान और इसके साथियों ने इतना

भागना शुरू किया कि मक्का जाकर दम लिया। हालांकि हमराउल–असद से मक्का कई सौ मील दूर है हालांकि एक आदमी भेजकर इस्लामी लश्कर की तायदाद मालूम कर सकते थे लेकिन बिल्कुल मरऊब हो गए, अब मुसलमानों की फ़त्ह हो गई। इससे हमें यह मिलेगा कि जब शक्ल पर नज़र गई तो फ़िसल गए। जिस शक्ल से जो हो रहा है वह इससे नहीं है सिर्फ़ खुदा से है। हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े पर चलने से खुदा हमारे मुवाफ़िक़ करेंगे। हमारे यक़ीन के बदलने से सारे आलम का रूख़ मुड़ जाएगा। आमाल की तरफ़ सबसे ज़्यादा यक़ीन बदलने पर मेहनत करती पड़ती है इस पर देर लगती है। यक़ीन आते ही तमाम आमाल बिल्कुल सही चल पड़ेंगे। अब कुछ बुनियादी हैं। जैसे नमाज़ का यह तरीक़ा है, यक़ीन का तमाम चीज़ों से कटकर नमाज़ पढ़ो। यक़ीन करो कि अब जो दुआ करूंगा इससे तमाम इंसानों के मस्अले, इज्तिमाइ और इंफ़िरादी ये हल होंगे। दावत पर दूसरों के यक़ीन को बदलने पर खड़ा हो जाओ, अल्लाह तुम्हारी चीज़ों का यक़ीन से हिफ़ाज़त कर देंगे। सेलाब आ जाए बद–हवासी होगी, तुमने दावत ईमान की दी है कि सेलाब खुद नहीं डूबोता। इसे जिस वक़्त चाहे मोड़ सकता है। इससे तुमने नमाज़ के बाद दुआ की इससे खुदा तुम्हारी हिफ़ाज़त करेंगे सब देखते रह जाएंगे। बचपन में बहुत ज़बरदस्त सेलाब आया लाइन डूब गई, हिमायूं के मक़बरे तक आ गया था। निज़ामुद्दीन वाले सारे भाग रहे हैं, हज़रत ने फ़रमाया सेलाब से कुछ नहीं होता, रात उठकर दुआ मांगी अगले दिन पानी उतर गया। अश्काल की तसख़ीर का आसान नुस्ख़ा है तमाम मुसलमान खड़े हैं शेर से डरकर इब्ने उमर रज़ि० ने आगे बढ़कर इसका कान पकड़कर कह रहे है कि अगर अल्लाह ने तुझे मारने का हुक्म दिया है तो मार, वरना तुझे हमें सताने के लिए नहीं पैदा किया है। और इसके मुंह पर थप्पड़ मार दिया। इसके बाद इब्ने उमर रज़ि० ने यह नहीं कहा कि मैंने क्या किया है बल्कि हुज़ूर सल्ल० की हदीस सुनाई

कि जो शख़्स खुदा से तमा और उम्मीद रखे वह सबसे मुस्ग़नी हो जाता है और जो सिर्फ़ खुदा से डरे सब इससे डरते हैं बाक़ी तमाम डराने वाले मुसलमान ही थे। लेकिन इब्ने उमर रज़ि० के यक़ीन और ईमान से शक्ल शेर ज़ेर हो गई ऐसे ही सेलाब, आंधी, कहत साली, टिड्डी, तमाम शक्लों का जब उन पर असर न पड़े सिर्फ़ खुदा पर आपकी नज़र हो तो फिर शक्लों से नुक़्सान होना बन्द हो जाएगा। शक्लों की ऐसी तरदीद दावत में करो कि दिल में उतर जाए, मिसाल के तौर पर वज़ीर डिप्टी से बात करते हुए दिल में तौबा है कि यह इस्लाम पर चल पड़े तो इस्लाम ख़ूब चलेगा और ज़ुबान से कह रहे हैं कि वज़ारत व माल से कुछ नहीं होता। हालांकि खुदा इस्लाम को चलाना चाहे तो वज़ीर के बग़ैर भी चलेगा और मिटाना चाहें तो इसकी पूरी कोशीश के बाद भी मिट जाएगा। बस यह नीयत करके दावत दें कि अल्लाह इसे हिदायत दे दे हर शक्ल के मुक़ाबले में, ईमान यक़ीन की बात करो। चीन, हिन्दुस्तान पर हमला करे तुम इस तरह दावत दो कि लश्कर फ़ौज, अस्लाह कुछ नहीं कर सकते सिर्फ़ खुदा कर सकते हैं और नमाज़ के बाद दुआ करो तो सारे वज़ीरों अकाबीर सरे बाज़ार पाख़ाना निकलेगा। तुम तमाम हलाकत की शक्लों में महफूज़ रहोगे कि शक्लों का यक़ीन दिल से निकाले शक्लें इसे नुक़्सान नहीं पहुंचाती हैं। खुदा से होने का यक़ीन हो अब उन शक्लों का यक़ीन दिल से कैसे निकले एक तो यह है कि शक्लों को तर्क कर दिया जाए यह रहबानियत है यह हरगिज़ नहीं है बस शक्लों की तर्तीब तोड़नी है कि अल्लाह के रास्ते में हम शक्लों की तर्तीब के लिहाज़ से न निकलें हर हाल में निकल जाएं। अल्लाह ने मौसम व फ़सल तै कर दी हैं कि ग़ल्ला व अश्या की पैदावार का ताल्लुक निज़ाम शमसी से है कमी चीज़ फ़्ला मौसम में सस्ती रहेगी अल्लाह ने आमाल का ताल्लुक़ निज़ामे कमरी से किया है अब हर हाल में अश्काल व अश्या छोड़कर आमाल को लेने से इन अश्काल का

यक़ीन निकलेगा वरना नहीं मिसाल के तौर पर नमाज़ और इसकी मेहनत (ईमान व नबी के तरीक़े सुन्नत के हसूल की) कि नमाज़ के हर जुज़ से वे वायदा का यक़ीन हो और उस वायदे को मालूम करो वरना यक़ीन कैसे करोगे। मिसाल के तौर पर जब इमाम समिअल्लाहु लिमन हमीदा कहे और बग़ैर किसी तौक़ीफ़ के एक सैकंड के मुक़्तदी तहमीद कहे तो इसकी तहमीद मलाइका की तहमीद के साथ हो जाती है। जिसे पहले के तमाम सग़ीरा (छोटे) गुनाह माफ़ हो जाते हैं बाज़ ने कबाइर भी कहा है। अब नमाज़ पर मेहनत है कि शक्लों से यक़ीन हटे इसके लिए दावत दो कि कमाई खेती से नहीं होती है। बढ़िया नमाज़ की दुआ के बाद होता है लिहाज़ा नमाज़ वग़ैरह हासिल करो वरना अपने अश्काल में नाकाम हो जाओगे। अब तालीम कर लो लिहाज़, नमाज़ सिर्फ़ पंद्रह मिनट की न रहेगी बल्कि नमाज़ के साथ दावत यक़ीन तालीम से तरीक़े नुबूवी का इल्म ज़िक्र से ईमान हासिल करेंगे। ख़ल्क के इख़्तिलात से ग़फ़लत आती है। जलूत–खलूत दोनों हों, अब नमाज़ पढ़ो इस यक़ीन के साथ की शक्लों से नहीं होता, इस नमाज़ से होगा, इसके इल्म से होगा। इल्म की पाबन्दी के साथ ज़िक्र वाले ध्यान को लेकर इस नमाज़ से शक्लों के ख़िलाफ़ होगा। अब यह मुक़ाबला शक्लों से रोज़ ही करना पड़ेगा। नमाज़ के बाद तमाम दुकानदार, ज़ारअ भागेंगे कि भूख लगी है। लिहाज़ा अपनी तिजारत, खेती–बाड़ी में लग जाएंगे, फ़लाने से बात करनी है वह चला जाएगा। लेकिन इसे समझाओ कि उस वक़्त में बैठकर ज़िक्र करना बहुत क़ीमती है। लिहाज़ा तालीम–तस्बीह, इबादत पहले कर लो बाद में पेट का इंतिज़ाम कर लो। अगर हमने इबादत न की मुम्किन है खाने से पेट में दर्द हैज़ा हुआ अगरचें खेती–बाड़ी का ख़ास वक़्त है। लेकिन दावत–तालीम में बैठ जाने से अल्लाह ख़ूब देंगे चाहे खेती–बाड़ी में नुक़्सान क्यों न जाए। उस वक़्त के बैठ जाने से इस तरह रोज़ाना करने से ईमान मज़बूत होगा और अगर यह सूरत रही कि जब

काम–काज व अश्काल छुट्टी दे तो दावत, तालीम, ज़िक्र वगै़रह में मश्ग़ूल हो वरना नहीं इससे ईमान मज़बूत न होगा। इब्ने अब्बास रज़ि० की बीनाई जाती रही, उत्बा ने कहा हम बीनाई इलाज करके वापस ला सकते हैं। लेकिन चौबीस घंटे बिल्कुल हरकत न कर सकेंगे। आंख की वजह से नमाज़ ख़राब नहीं कर सकता और हम अश्काल की वजह से आमाल को कितना छोड़ते हैं। इब्ने अब्बास रज़ि० सिर्फ़ एक नमाज़ की बिना पर आंख को छोड़ते हैं, लोगों को जब उत्बा की इस बात की इत्तिला मिली, आइशा रज़ि०, इब्ने उमर रज़ि० हर तरफ़ से पैग़ाम आए की मुहब्बत में नमाज़ न छोड़ देना यह नहीं है कि आंख के अप्रेशन में नमाज़ क़ज़ा कर देना जायज़ है। लेकिन क़ैसर व किसरा की हलाकत के लिए अश्काल को इतना तोड़ना पड़ता है। कुछ लोगों ने दुआ से बीनाई मांगी, इब्ने अब्बास रज़ि० ने नहीं मांगी पहले एक आंख जाती रही, दूसरे से आंसू बहते रहते थे। जब दूसरी भी जाती रही तो आंखों से आंसू निकलना बंद हो गए और कि यह दूसरी आंख इस वजह से रोती थी कि इसकी बहन दूसरी आंख जन्नत के दरजात में आगे बढ़ गई। जब इसकी अपनी बीनाई जाती रही तो, इसने बराबरी के बाद ख़ुश होकर रोना छोड़ दिया। इस चीज़ से सारे आलम को पलटा है। चुनांचे जब इब्ने अब्बास को क़ब्र में रखा गया है तो सबने आवाज़ सुनी और जिस्म से कोई परिन्दा उड़ा, लोगों ने कहा यह इनका आलिम बाहर गया है। नमाज़ की दुरूस्तगी सेज़ी की मेहनत है। अश्काल के देखने से जो असर हुआ, वह दावत, तालीम, ज़िक्र से दूर होगा। फिर नमाज़ से दुआ कुबूल होगी। घटिया दर्जा यह है कि उन आमाल को सिर्फ़ ख़ुद करे। बढ़िया यह है कि सबको जमा करके उनमें यह सारे आमाल जारी करो। इससे ज़्यादा वक़्त ख़र्च होगा, अब रमज़ान आ गया रोज़े की मेहनत के साथ–साथ नमाज़ की मेहनत को ज़िंदा करना, अपने ज़िम्मे ले लो। इससे शक्लों वाली तर्तीब पर ज़ोर पड़ेगा। अब हज के साथ नमाज़ की

मेहनत को जोड़ो। घर वाले बीमार हैं घर में कुछ नहीं है। अश्काल को तोड़कर आमाल में लगकर। अश्काल का यक़ीन दिल में निकल ज़ाएगा। इस्लाम में इसका मुतालबा है अश्काल छोड़ने का नहीं, अश्काल का तरीक़ा व यक़ीन छोड़कर खुदा वाला यक़ीन हुज़ूर सल्ल० वाला तरीक़ा ले लो हर शक्ल के यक़ीन से लोगों को हटाने के लिए उन तमाम शक्लों का यक़ीन दिल से निकालना होगा। साइंस का तर्क करना मक़्सद नहीं है, साइंस का यक़ीन छोड़ना मक़्सद है। आजकल दावत की सख़्त ज़रूरत है कि अश्काल परस्ती बहुत हो गई है। बस तुम दावत लेकर अश्काल का इंकार करके नमाज़ सही हासिल करो। तालीम करो रूकूअ पूरा न होने सफ़ सीधी न होने पर क्या नुक़्सान है हर जुज़ का यक़ीन इल्म व अमल हो बाहर निकलने से तुम्हारी कमाई मबग़ूज़ न रहेगी। आज ख़िलाफ़ रिवाज आमाल के ज़िंदा करने के लिए अश्काल को तोड़ने से जल्दी ईमान व यक़ीन मिल सकता है। तुम भी अंबिया की तरह अश्काल की कुरबानी दो इससे खुदा हलाल आलम बदलेंगे ये कुरबानी ख़सूसी है। उमूमी कुरबानी ज़नाना निसाब वाली है पहले ख़ाविंद से तलाक़ ले ली अब इद्दत करनी होगी। ज़ेवर उम्दा, कपड़े कंघी पट्टी वग़ैरह से बची रहे चार माह दस दिन के बाद दूसरी ज़िंदगी गुज़ार, नई शादी कर ऐसे ही चार महीने लगाकर अश्काल से मुंह मोड़कर नई ज़िंदगी इस्लमी शुरू करो। अब साल में निफ़ास का कम से कम चिल्ला और हैज़ का हर माह कम से कम तीन दिन अगर शादियां दो-तीन कर लें तो उम्र में दो-तीन चार महीने लगा लें। यह औरतों वाला निसाब है। अगर मर्द बनना है तो इसके गुलाम तारीक़ की जात यह है कि कश्तियों को आग लगा दो। मर्द की बात यह है कि जब ज़िंदा न हो आराम नहीं। अब यह मर्दाना निसाब है। यह ज़नाना यह दोनों न रहे तो खन्सा (मुख़िन्स) जिसे हर जगह से निकाल देते हैं। आज हम हज़रत इब्राहीम अलै० के तरीक़े पर बकरे, दुंबे की कुरबानी देते हैं तो इनकी तरह बीवी बच्चे, बच्चे के निकाह, बीवी के जनाज़े वग़ैरह को भी कुरबान करो, असल उनकी कुरबानी यही है।

उमूमी बयान न० 11

एक है असली इस्लाम और दूसरा है गुंजाइश वाला इस्लाम

फ़जर के बाद, इतवार, 22, अप्रैल, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

अल्लाह तआला के लिए तक्लीफ़ें उठाने की बड़ी क़ीमत है आख़िरत में सवाब ब–क़द्र मुशक़्क़त मिलेगा तक्लीफ़ का हिस्सा उसे पहुंचकर रहना है। अगर इसके लिए न उठाएं तो मुसीबतें व बला घेर लेती हैं। उमर की तक्लीफ़ वाले हिस्से आने ज़रूर हैं आला दर्जा यह है कि सहाबा की तरह तक्लीफ़ उठाएं यह है अख़्तियारी, सबसे कम दर्जा यह है कि दीन के लिए मेहनत न करने की वजह से तक्लीफ़ आना यह है इस्तिरारी (परेशनी की हालत)। उनका भी सवाब मिलेगा बीमार, ख़राबी, इक़्तिसादियात वग़ैरह, वह आला हैं यह अदना है तक्लीफ़ ख़ुदा को पसंद है। अपनों को इसमें ज़रूर डालते हैं, जो बाईद हैं उन पर कम और अपने से क़रीब पर ज़्यादा काफ़िर पर मुसीबत उसी वक़्त आती है। जब कि अपने मुस्लिम तक्लीफ़ उठा लें, काफ़िर आख़िर में फिर फसेगा और जब मुस्लिम तक्लीफ़ उठा लें तो अल्लाह उनसे तक्लीफ़ उठाकर काफ़िरों पर डाल देंगे। अय्यूब अलै० को सेहत के बाद अपनी बीमारी अच्छी लगती थी कि ख़ुदा बार–बार मुतावज्जोह होते और जिब्रील आमीन को भेजते। इस्लामी ज़िंदगी तक्लीफ़ उठाने का नाम है। यह अख़्तियारी तक्लीफ़ है। इस वजह से इसी से घबराहट नहीं होती। दौर उमरी में असल हल व अक़्द ने ऐसे ही तक्लीफ़ें उठाईं, मकान, ख़ाना, लिबास न बनाने के

लिहाज़ से हालांकि पैसा बहुत था। जैसे दौरे नुबूवी में उन्होंने तक्लीफ़ उठाई, पैसा न होने की वजह से इस्लाम ज़िंदगी का आला तरीन मंज़र तक्लीफ़ उठाने से ही मिलेगा। अगरचें सब कुछ पास हो, उमर मिस्र, शाम, अरदन, इराक़, इरान के मालिक थे। आज अगर उन मुल्कों में दौलत, पैट्रोल वग़ैरह के रास्ते से ख़ूब है दौर उमरी में इससे ज़्यादा थीं। योमया खाने का ख़र्च लाखों था, एक बादशाह की 7 लाख सलाना आमदनी थी। उमर के ज़माने में दौलत ज़्यादा है, इख़्तियार ज़्यादा है। जिस मुल्क पर चाहे हमला कर सकते हैं। उमर व अमरा व उम्माल सारे तक्लीफ़ व तक़श्शुफ़ के आदी हैं। यानी दौर नुबूवी में तक्लीफ़ें अख़्तियारी थीं और दौरे उमर में भी, उमर की अपनी ज़िंदगी में देखो रात–दिन इनके हाथ से ख़ूब पैसा तक़्सीम हो रहा है। लेकिन ज़ाहिर व तक्लीफ़ें वही हुज़ूर सल्ल० वाली थीं ख़ूबसूरत चेहरे का रंग सफ़ेद संवला हो गया था। पैदल चलते, जंगल से ऊंट तलाश करते, मदीने की गलियों में पैदल चलना, किसी चीज़ में फ़र्क़ न आने दिया। महबूब तरीन बीवी थी और इंसान महबूब पर जान–माल लगाता है। हसन हुसैन की बहन से शादी की कि क़ियामत को सारे सिलसिले निस्बत ख़त्म हो जाएंगे। सिवाए हुज़ूर सल्ल० की निस्बत के इसलिए शादी करनी चाही तो पहले अख़्त ने इंकार कर दिया। आइशा एक जगह पैग़ाम दिलवा रही थी। इंकार पर परेशान हो गई, मुग़ीरह बिन हिशाम से आइशा ने कहा, मुग़ीरह ने वहां से जाकर उमर से कहा कि तुम निकाह नहीं करते हो कहा पैग़ाम भेज चुका हों वहां से तो नफ़ी में जवाब आ गया है। तुम बिन्त अली से निकाह कर लो, दिल में वही बात आ गई और वहां पैग़ाम भिजवा दिया। जैसे इमाम हसन, हुसैन को चाहते थे वैसे ही इनकी बहन को चाहते थे। कि यह हज़रात अहल बैअत के हक़ शिनास थे उमर मिम्बर पर थे। हुसैन ने आकर कहा हमारे अब्बा के मिम्बर से हटो, अपने अब्बा के मिम्बर पर जाओ, यही क़िस्सा हुसैन व अबूबक्र का पेश आया जवाब में दोनों ख़लीफ़ा रोने लगे कि बेशक तुम्हारे

अब्बा का मिम्बर है। अबूबक्र के वक़्त उमर ने पूछा कि तुमको किसने यह बात बताई समझाई, कहा कि किसी ने नहीं वैसे ही दिल में आ गई, कहा मेरे पास आया करो, चुनांचे हुसैन गए, लेकिन अन्दर उमर किसी गवर्नर से बातें कर रहे थे। इब्ने उमर रज़ि० को भी अन्दर आने की इजाज़त नहीं थी। वह बाहर खड़े हुए थे, चुनांचे हुसैन यह देखकर अन्दर न गए, उमर ने दूसरे वक़्त न आने का सबब पूछा, तो यही वजह बताई तो उमर ने कहा कि तुममें और इब्ने उमर में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है। तुम्हारी वजह से तो हमें इस्लाम की दौलत मिली अन्दर आ जाते। एक मौक़े पर जोड़े तक़्सीम किए, हसन, हुसैन देर से आए तो अफ़सोस करते रहे कि इनको न दे सका, लोगों ने कहा, अफ़सोस की क्या बता है आपने तक़्सीम ही किए हैं अपने घरवालों को तो नहीं दिए। फ़ौरन एकदम एक आदमी रवाना किया जहां से ये कपड़े आए थे, वहां से हसन, हुसैन के नाप कपड़े सिलवाकर लाओ, मंगवाकर दिए सारी बादशाहत और हुकूमत है लेकिन ख़ौफ़ नाके है। मुसलमानों के काम को ख़ूब अच्छी तरह करना, एक बार गश्त में खेमें के आगे एक शख़्स को रोते देखा। दरयाफ़्त किया तो मालूम हुआ परदेसी है तारूफ़ नहीं था। ग़रीब है बीवी दरवाज़े में है। चुनांचे जाकर अपनी बीवी अख़्ते हुसैन से कहा चल जन्नत का सामान है बीवी ने ज़चकी का सामान लिया खुद ने खाने-पकाने का वहां जाकर बीवी को अन्दर भेज दिया। खुद बाहर खाना तैयार करने लगा, उधर खाना तैयार हुआ, अन्दर से आवाज़ आवाज़ आई, अपने मेहमान को इत्तिला दें कि अल्लाह ने उनको लड़का दिया। ऐ अमीरूल मोमिनीन। यह सुनकर वह अजनबी क़दमों पर गिर गया कि यह अमीरूल मोमिनीन है काम को ऐसे-ऐसे कर रहे हैं जो नीचे दर्जे के थे एक मर्तबा इत्र एक मुल्क से आया, उमर ने कहा, कोई औरत होती जो मुझे तोल कर दे देती। आप की बीवी ने कहा हां, मैं हूं। कहा ग़लती से हाथ की उंगली में इत्र लग जाएगा, वहां से बदन पर चला जाएगा। और मेरे घर में ग़लत

इस्तेमाल हो जाएगा, चुनांचे मुहल्ले की दूसरी औरत से तुलवाया। उमर रज़ि० से हर जगह नफ़ा पहुंच रहा था कोई घर अरब में भूखा न था। लेकिन लड़की उनसे शादी तक़श्शफ की वजह से नहीं करना नहीं चाहती है, अली ने अपनी लड़की की शादी खुद लड़की से राए लिए बग़ैर उमर से छोटी सी उम्र में ही कर दिया, बचपन में ही रुख़्सत कर दिया। इसे बताए बग़ैर अली ने उमर के पास किसी काम से भेजा, उमर ने बीवी जैसा मज़ाक़ किया कि वह नाराज़ हो गई कि आंख निकाल दूंगी। हसन, हुसैन भी शुरू में इस ब्याह से नाराज़ थे। जब उनका उमर से ब्याह होने लगा, तो ये दोनों कहने लगे आख़िर इस लड़की की भी तो राए होनी चाहिए। गुस्से से जाने लगे तो दोनों ने पल्ला पकड़ लिया कि आपके खफ़ा होने की ताब नहीं ऐसे ही एम औरत को उमर ने फिर अली ने फिर ज़ुबैर ने पैग़ाम दिया तो इंकार हो गया, तलहा ने दिया तो क़ुबूल कर लिया। जब निकाह हो रहा था तो अली ने परदे से उस औरत से कहा कि अमीरूल मोमिनीन, हुज़ूर सल्ल० के रिश्तेदारों से इंकार कर दिया। तलहा से कर लिया। जवाब मिला जैसे ख़ुदा की मर्ज़ी, ख़ैर तलहा भी हमसे अच्छा है इनके अब ग़ौर की बात यह है लोग बादशाह, अफ़सरान को अपनी बेटी देना चाहते हैं। बाद में उसने औरतों में बताया कि उमर के साथ ज़िंदगी गुज़ारनी बहुत सख़्त होगी, अली के पास सिर्फ़ मुहब्बत ही है। ज़ुबैर के पास सिर्फ़ लाठी है। तलहा के साथ ज़िंदगी गुज़ारने का मज़ा है। निहत्ते घर में आएंगे, निहत्ते घर से निकलेंगे। उमर की तरह इनके अमरा की ज़िंदगी भी वैसी ही थी। उरूज इस्लाम से पहले जो तक्लीफ़ें उठाई, उरूज के बाद भी बाक़ी इस्लाम के लिए तक्लीफ़ें उठाई। अब के लोग कहते हैं कि उम्दा खाना न था, लिहाज़ा मामूली खाना खाया, पैसा न थे। लिहाज़ा मामूली मकान बनाया, लेकिन दौर उमरी इसका जवाब है फ़त्ह के बाद सारा माले-ग़नीमत जमा होता तो सारे अहल हल व अक़्द ऐसे ही रोते ग़मगीन होते जैसे के कोई रिश्तेदार मर गया हो। लोग

कहते हैं कि रोने का क्या मकाम है, अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल व करम से नेमतें दी हैं। अबू उबैदा का जवाब होता कि शुरू में इन इसाइयों को भी यह सारा माल व दौलत अमली दीन की वजह से दिया था। लेकिन इस माल व दौलत से उनके अमल ख़राब हो गए तो ख़ुदा ने उनसे छीनकर हमें दिया है। अब अगर हमरे आमाल भी इन किसरा व क़ैसर के आमाल की तरह ख़राब हो गए तो ख़ुदा भी हमसे छीनकर किसी और को दे देंगे। आज ज़वाल में आकर भी सोचते नहीं कि हमारी ज़िल्लत का सबब दीन का न होना है और सहाबा किराम जोकि उरूज की हालत में थे वह इस हालत में भी दूसरे पहलू को सामने रखते थे।

सारा माल मदीना पहुंचा तो उमर बे-अख़्तियार रोए, बाज़ मर्तबा जान निकल जाने का ख़तरा हो जाता। एक दिन माल आने पर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को बुलाया बे-तहाशा रो रहे थे। अब्दुर्रहमान न दिलासा देने के लिए कंधा हिलाकर कहा या उमर, होश आने पर उमर ने हाथ पकड़कर माल के ऊंटों के पास ले गए यह देखो अब्दुर्रहमान ने कहा कि तुम्हें तो शुक्रिए का मौक़ा है, उमर ने जवाब दिया कि क्या यह चीज़ें ख़ुदा के पास दौरे नुबूवी में न थी, लेकिन उन्हें दुनिया जैसी बे-क़ीमत गिरी हुई चीज़ न दी हालांकि हुज़ूर सल्ल० जामेअ कमालात लिहाज़ गिना कोई कमाल नहीं है हमें ख़ुदा दे रहा है गोया हममें नुक़्स है। हुज़ूर सल्ल० के पास माल आता तो हुज़ूर सल्ल० तक़्सीम माल मौक़े बता देते। तक़्सीम के उसूल बता देते, अब्दुर्रहमान ने कहा, घबराओ मत हुज़ूर सल्ल० के मिज़ाज दान हुज़ूर सल्ल० के रंग में रंगे हुए मौजूद हैं, उनसे मश्विरा कर लें। ऐसे ही चीज़ें देखकर रोते थे, खाने को देखकर कहा इस खाने पर तुम्हारी लड़ाइयां होगी, हत्ता के बाप-बेटे में भी, एक दफ़ा यह कहा कि तुम मत समझो कि मुझे खाना-पकाना आता नहीं ख़मीरी, चपाती रोटी पकाने की सारी तर्कीब बता दी। लेकिन मैंने हुज़ूर सल्ल० को खाते देखा नहीं, लिहाज़ा मैं भी नहीं खाता, अली ने कूफ़ा में जाकर

अगरचें बहुत–सी नेमतें तक़्सीम की हैं लेकिन उन्होंने इराक़ की कोई चीज़ न चखी। मदीना से सत्तू मंगवाते और उसे भी हिफ़ाज़त से रखते। एक शख़्स को अमीर बनाया और कहा कि जाने से पहले मिलकर जाना वह गया तो एक बर्तन लाए इसका मुंह खोला। इसमें एक बर्तन और निकाला इसका मुंह खोला तो इसमें से सत्तू निकाला में समझा ज़ेवर व जवाहारात निकाल कर देंगे और कहा कि मैंने इसकी हिफ़ाज़त सिर्फ़ इस वजह से की कि मेरे पेट में सिर्फ़ मदीना की ही चीज़ जाएगी। कहीं इराक़ व कूफ़ा का गुबार न चला जाए और अमीर में से कुछ देकर रवाना कर दिया, मुल्क व माल के इस नक़्शे में ज़ाहिद व इंसाफ़ के वाक़िआत इस वजह से हैं कि पहले से तक्लीफ़ों की आदत थी और उनकी तहज़ीब वह काम करता है जो हुज़ूर सल्ल० ने किया एक मर्तबा उमर रज़ि० ने छः आने का कुरता पहना। आस्तीन उंगलियों से आगे जा रही थी, इब्ने उमर से कैंची मंगवाकर ज़्यादा हिस्से खुद ही काट लिया ज़ाहिर है चाकू से बराबर न कटेगा। इब्ने उमर रज़ि० ने कहा अब्बा जान दीजिए मैं इसे घर से सीधा करके सिलवा लाऊं। कहां नहीं मैंने हुज़ूर सल्ल० को देखा कि उंगिलयों से आस्तीन को सिर्फ़ चाकू से काटा चाहे जैसा कटा मैं भी वैसा ही करूंगा। इसमें से धागे निकालते थे, एक तरफ़ सलातीन थे हज़ारों के लिबास आ रहे थे यानी मुल्क व नक़्शे के आने के बावजूद भी तक्लीफ़ों की आदत न छोड़ी कि इस्लाम अपने नक्शे पर है इससे मालूम हुआ कि इस्लाम को तक्लीफ़ों से मुनासबत है। इस्लाम वाले जितनी तक्लीफ़ें उठाएंगे, उतना ही इस्लाम ज़िंदा होगा। इसी वजह से حفت الجنة بالمكاره अब मकारह सिर्फ़ इब्तिदाई नक़्शों में नहीं है बल्कि उरूजी दौर में भी ख़िलाफ़ नक़्शा करना है शुरू में जो तक़्लीफ़ें न उठा सकें। वे उरूज में कैसे उठाएगा बल्कि शुरू ही से तक्लीफ़ की आदत डाल लो। जब माल आए तो फ़ौरन दूसरों में तक़्सीम कर दो, हाजत में तयम्मुम से इबादत चलती है। असल तो वुज़ू है गुंजाइश व हाजत बे–वक़्त ज़रूरत होती है। अगर

हुज़ूर सल्ल० वाली ज़िंदगी जो असल इस्लाम है तो इससे कुछ अच्छी ज़िंदगी गुज़ारें। लेकिन यह असल इस्लाम नहीं है बल्कि गुंजाइश के तौर पर है और दोनों ज़िंदगी में ऐसे ही फ़र्क़ है। जैसे मुआविया रज़ि०, अली रज़ि० में, अली रज़ि० ख़लीफ़ा, मुआविया रज़ि० बादशाह लाखों बादशाह एक ख़लीफ़ा के बराबर थे। ख़लीफ़ा वह है जो रसूल के तरीक़े असल पर अमल करता है। बादशाह गुंजाइश पर ही चलता है। मुआविया रज़ि० दौरे उमरी में ख़ूब बन–ठनकर रहते थे। उम्दा कपड़े में उमर ने टोक दिया कहने लगे आपने तंग ही कर दिया आप तो सिर्फ़ मदीना में रहते हैं और हम ग़ैर–मुस्लिमों के यहां जाते हैं, वहां रूआब कैसे डालें ? चीज़ों से रूआब डालना गुंजाइश है। हालांकि उमर रज़ि० ने बैतुलमुक़द्दस जाते वक़्त कुरता लिया, अड़तालिस (48) पैवन्द वाला, एक ऊंट, गुंजाइश वाला इस्लाम निभ तो जाएगा, लेकिन चलेगा नहीं। तरीक़ा उमर, अबूबक्र ने मुल्कों को ज़ेर किया है। मुआविया की गुंजाइश इस्लाम से नहीं इसी एतबार से हममें अगर असल इस्लाम, तरीक़े अमल वग़ैरह न हो तो इससे दुनिया की तर्तीब न बदलेगी कि हममें और ग़ैर मुस्लिम में क्या फ़र्क़ होगा कि इनसे छीनकर खुदा हमें दे दें। असल इस्लाम से मुल्क ज़ेर कर फिर गुंजाइश इस्लाम की गुंजाइश है हम असल इस्लाम पर चलें। माल व जान दूसरों पर लगा रहें हों तो फिर खुदा ग़ैर मुस्लिमों से छीनकर हमें दे देंगे कि वे सारा माल व जान अपनी ज़ात पर लगाकर मख़्लूक़ की ख़ैर–गिरी नहीं करते हैं और यह मुस्लिम अपने पर ब–क़द्र ज़रूरत लगाकर बाक़ी माल मख़लूक़ पर खर्च कर रहे हैं। अगर यह बात हो जाए तो एक दिन में तब्दीली निज़ाम का फ़ैसला हो जाए। देर हमारी तरफ़ से है एक हुक्म से फ़िऔनी नक़्शा ख़त्म हुआ सब कुछ मूसा के हाथ में आदमियों को खुद को ऐसा बनाने में देर लगती है। जिस पर निज़ाम आलम बदलते हैं खुदा को निज़ाम बदलने में देर नहीं लगती है। हम ऐश व राहत के आदी हैं। तक़श्शुफ़ व ज़ाहिद की आदत डालने में देर लगती है आदतें बदलने में देर

हमारी तरफ़ से लगती है और दुनिया के सारे निज़ाम इनके हाथ में है आज तो ख़ूब आलम में मुल्कों में इन्किलाब हो रहा है। कल वज़ीर आज जेल में कल का चपरासी आज वज़ीरे आज़म, रूस अमेरीका कुदरत से बाहर नहीं है, बल्कि कुदरत के क़ब्ज़े में हैं, जिस वक़्त जिस तरह चाहें ख़ुदा वैसा करेंगे। सारे अस्बाब बेकार हो जाएंगे, ख़ुदा की मर्ज़ी के सामने इसी कुदरत से इस्तिफ़ादा के लिए अंबिया आते हैं। कुदरत के काइल के लिए मुवाफ़क़्त में कुदरत का इस्तेमाल हो। ग़ैर काइल की मुख़ालफ़त में इस्तेमाल हो इसके लिए माल व दौलत शर्त नहीं है अक्सीरियत या अद्द ख़ास शर्त नहीं है अस्बाब वाले कुल जमा करना शर्त नहीं है। शर्त है कि क़ाइलीन कुदरत अपनी ज़िंदी के तरीक़ को ग़ैर क़ाइलीन के तरीक़े ज़िंदगी से मुमताज़ कर लें। इस इम्तियाज़ के हसूल में देर लगती है। लेकिन यह इम्तियाज़ जब पैदा होता है तो फिर ख़ुदा के निज़ामे आलम बदलने में देर नहीं लगती। और इन शर्तों को पूरा करने में तक्लीफ़ें आएंगी। इसी वजह से हमेशा ग़ुलाम को उरूज तक्लीफ़ों से मिला है और जब मिज़ाज तक्लीफ़ से हटाकर कुदरत से इस्तिफ़ादा नहीं रहेगा। इब्तिदा में सौ फ़िसदी नक़्शे इसी ज़िंदगी पर थे। जब मतलूब है वह तालिब ऐश वग़ैरह व माल नहीं थे, सबको दूसरों पर लगा रहे हैं सलमान फ़ारसी मदाइन के गवर्नर है। लेकिन मकान नहीं है मुश्रिकों के मकान में शिर्क के असरात की वजह से रहे नहीं अपना बना दिया, पेड़ों के नीचे फ़ैसले करते या मस्जिद में, पांच हज़ार इनकी तंख़्वाह थी लेकिन यह सारी रक़म दूसरों पर ख़र्च करते और बोरिया बनाकर उसे बाज़ार में बेचते क़ीमत में एक हिस्सा सदक़ा एक हिस्सा घर में एक हिस्सा नया बोरिया बनाने का इंतिज़ाम करते। एक बार मेहमानों के सामने घर से रोटी और सिरका लाकर रखा सिरके में नमक न था। मेहमान ने नमक चाहा। नमक लेने गए तो पैसा पास न था लिहाज़ा रहन रखकर नमक लाया खाकर मेहमान ने

कहा कि क़नाअत का दावा करता है अगर क़नाअत होती तो मुझे

नमक के लिए फ़लां चीज़ रहन न रखनी पड़ती, मकान न बनवाया, कहा क्या आपका मकान बनवा दें। गुस्से में मुंह सुर्ख़ हो गया, उस आदमी ने आगे बढ़कर कहा यह तो मालूम कर लो कि कैसा मकान बना कर दें। कहा, कैसा मकान बनाकर दोगे ऐसा मकान होगा कि अगर आप लेटे तो सर एक दीवार से और पैर दूसरी दीवार से हाथ तीसरी और चौथी दीवार से लगें और खड़े हो तो सर छत से लग जाए। चेहरे पर जोश आ गया और कहा कि तूने मेरे दिल की कह दी और मकान बनाया गया। मकान बनाने की वजह यह भी बताई गई के लोग अब इत्मिनान से तुम्हारे मकान में सीधे आ जाएंगे। मौत के वक़्त बड़े परेशान थे, वजह परेशानी पूछी ता कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुममें से हर शख़्स इतना सामान रखे जितना एक ऊंट सवार अपने पीछे लादता है। और मेरे पास इतना सामान है तो मैं हुज़ूर सल्ल० के सामने कैसा जाऊंगा। मौत के वक़्त बांदी से कहा मुश्क मेरे पास लाओ, इसमें से कुछ लगाया कि आज ऐसी मख़्लूक़ आने वाली है जो पहले न आई थी चुनांचे वह बांदी मुश्क देकर हुक्म के मुताबिक़ कमरे से बाहर चली गई। तो उसे अन्दर बातें करने की आवाज़ आई। अन्दर आकर देखा तो इंतिक़ाल फ़रमा चुके थे, इंतिक़ाल के बाद तर्क की क़ीमत लगाई गई तो ज़्यादा से ज़्यादा पंद्रह रूपये और कम से कम पांच रपये का क़ौल मिलता है इस पर यह हसरत है। ख़ुदा गुंजाइश वाले इस्लाम की वजह से किसरा व क़ैसर से हुकूमत लेकर मुसलमानों को नहीं दी है असल इस्लाम वह है जो हुज़ूर सल्ल०, अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि०, अली रज़ि० ने ज़िंदगी गुज़ारी उन हज़रात के यहां तीन दिन के फ़ाक़े कई मर्तबा पड़े हैं। जब पड़े हैं जब खाया तो जो खाई कपड़े मकान की तंगी उठाई उस्मान रज़ि० के यहां फ़ाक़ा कभी नहीं आया इल्लाह मशाअल्लाह लेकिन मकान सादगी वग़ैरह में इन चारों के साथ हैं ख़ुदा दुनिया के निज़ाम की तब्दीली पर क़ादिर हैं लेकिन क़ुदरत के इस्तेमाल की शर्तें हैं और वे यह हैं कि जान तक्लीफ़ें उठाकर असल इस्लाम ग़ैर

गुंजाइश वाला हासिल किया जाए। गुजाइश पर सानवी तर्तीब क़ायम होती है लेकिन सानवी अव्वल के बाद होता है सारे के सारे नम्बर अव्वल पर तो नहीं आ सकते अल्लाह अलबत्ता कुछ तो लोग इस सफ़ अव्वल पर आएं, अब के बाद बाक़ी सफ़ें ज़म कर ली जाएंगी। अगर सफ़ अव्वल वाली बात न हो तो फिर कुदरत के इस्तेमाल नहीं करते। जो सफ़ अव्वल में आ जाएंगे वह हर जगह सफ़ अव्वल में रहेंगे, उस ज़माने के जन्नितयों की सफ़ अव्वल में होंगे क़ियामत को, मुहाजीर के माइने हैं खुदा के रास्ते में हर उस चीज़ को छोड़ दिया जाए, जो इसको नाराज़ करने वाली हो। एक है दीन की हर महफ़िल में सबक़त रखता हुआ, अबूबक्र तर्तीब के वक़्त अव्वल रहे, उमर नम्बर दो पर रहे। एक बाद फ़जर के बाद, हुज़ूर सल्ल० ने पूछा आज किसने रोज़ा रखा किसी की अयादत की हो ? सदक़ा किया हो, उमर रज़ि० उन तमाम बातों के जवाब में कहते अभी तो सुबह हुई है अब जाकर सारे काम हम करेंगे। अबूबक्र हर बात के जवाब में हां करते रहे कि रास्ते में अब्दुर्रहमान की अयादत की, अपने बच्चे के हाथे से रोटी का टुकड़ा लेकर एक भूखे को दिया था। एक दिन उमर के पास अबूबक्र रज़ि० से माल ज़्यादा था इन्होंने कहा, आंज अबूबक्र से आगे बढ़ जाऊंगा, लिहाज़ा आधा माल ले आए हुज़ूर सल्ल० ने बहुत दुआएं दीं। अबूबक्र भी कुछ थोड़ा से ले आए, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया घर क्या छोड़ा, अबूबक्र ने कहा, अल्लाह और इसके रसूल सल्ल०। फ़रमाया जितना तुम्हारे जवाब में फ़र्क़ है ऐसे ही तुम्हारे दर्जों में फ़र्क़ है। खुद उमर कहते हैं जब भी उमर ने अबूबक्र से आगे बढ़ने की कोशीश की अबूबक्र आगे बढ़ गए, हुज़ूर सल्ल० के बाद सारे अबूबक्र न थे एक तो था अब इस्लाम यह तो नहीं कहता कि सारे ही सफ़ अव्वल में आ जाएं। कुछ तो आ जाएं, एक अबूबक्र न होते तो इस्लाम न रहता लोगों को उमर से होता नज़र आ रहा है, लेकिन हुआ अबूबक्र के ज़रिए से इसका एतराफ़ अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि० के दौर वालों का एतराफ़ है। अबूबक्र,

उमर में 19, 20 का फ़र्क़ ही है जैसे एक मिनट की देर से घाड़ी छूट जाएगी, अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के दाएं—बाएं थे। अबू हुरैरह रज़ि० खुदा की क़सम खाकर कहते हैं कि अगर अबूबक्र ख़लीफ़ा न बनाए जाते तो सारी दुनिया में कुफ़्र फैल जाता। लोगों ने कहा, उमर, उस्मान, अली के होते हुए भी हां, देखो हुज़ूर सल्ल० के बाद सारे अरब मुर्तद हो गए इरतिदाद अरब में ख़ास मसलेहत है कि उससे बताया कि दुनिया में चाहे कुफ़्र शिर्क का कैसा ही ज़ोर क्यों न हो, नबी की गै़र—मौजूदगी में इसके तरीक़े पर चलने से वैसी ही नुसरत आती है जैसे नबी के होते हुए, उन के तरीक़ो पर चलने से, हिरक्ल बारह लाख फ़ौज ला रहा है। मुसलैमा एक लाख, सजा 10 हज़ार, बाक़ी क़बीले भी इनके साथ मिलकर मदीना पर हमला के लिए तैयार, हुज़ूर सल्ल० ने इंतिक़ाल से पहले सारे मदीने वालों को शाम की तरफ़ रवाना करना चाहा, उसामा को अमीर बनाकर जरफ़ मक़ाम पर लश्कर भेज दिया, ख़िलाफ़त के बाद सबसे पहले इस लश्कर के जाने का हुक्म दिया। किसी की राए उस लश्कर को भेजने की नहीं थी है खुद अमीर लश्कर ने अबूबक्र से कहा कि लश्कर वाले सहाबा तैयार नहीं है। एक वफ़्द बनाकर अबूबक्र के पास आए कि मश्विरा कर लो, हालात ख़तरनाक हो चुके हैं अबूबक्र ने कहा कोई मश्विरा नहीं है यह तो होना है और हुज़ूर सल्ल० फ़रमा चुके, नमाज़ जुहर के बारे में मश्विरा नहीं है क्योंकि यह होना कहा गया कि हुज़ूर सल्ल० ने जिस वक़्त हुक्म दिया था। हालात दूसरे थे अब बदल चुके हैं अबूबक्र ने जवाब दिया कि जब हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया था कि उन पर वही आती थी हो सकता है खुदा के हुक्म देने पर हुज़ूर सल्ल० ने हमें फ़रमाया हो कि लश्कर तो भेजना ही है और खुदा तो ग़ैब को जानने वाले हैं हो सकता है आज के मौजूदा हालात की दुरूस्तगी उस लश्कर को भेजने में हो। लिहाज़ा हुक्म दे दिया कि लश्कर जाए इताअत इसमें थी अगरचे राए के ख़िलाफ़ हो। चुनांचे लश्कर रवाना हुआ और मदीना से दूर

वाले मुर्तद हो चुके थे, करीब वाले ज़कात से मुन्किर हो गए। उमर ने आकर कहा कि ज़कात के मस्‌अले पर ज़ोर मत दो लोग अभी वहशी हो रहे हैं कहने लगे उमर तू क्या इस्लामी शआर के इंकार करने पर भी सुलह कर लेगा, ऐसा नहीं होगा। हुज़ूर सल्ल० जा चुके अमान व फ़्लां इनकी तरीक़े पर चलने ही में है। लश्कर के जाने के बाद अब बाक़ी 150 को हुक्म दिया। चलो हम भी मदीने से बाहर जाएं, हालांकि उस दिन गैर-मुस्लिमों के इरादे की ख़बर आ चुकी थी, इस वजह से सबने इंकार कर दिया। अबूबक्र ने इरादा कर लिया था कि अकेले घोड़े पर सवार होकर चल पड़े। यह देखते ही तमाम पीछे घोड़ों पर आ गए, 3 दिन मदीना पर ऐसे गुज़रे कि एक बालिग़ आदमी मदीने में न था। अब जैश उसामा चल रहे थे रास्ते बदल-बदलकर आगे से हिरक़्ल बारह लाख की फ़ौज ला रहा था कि नबी का इंतिक़ाल हो गया। जिसकी वजह से इम्दाद हो रही थी, हिरक़्ल को पता लगा कि मुसलमानों के हज़ारों लश्कर जा रहे हैं और ऐसे ही अबूबक्र अपने लश्कर के साथ थे हर नमाज़ के वक़्त बस्ती पर हमला करते 3 दिन में पंद्रह जगह हमले किए, लोग समझे कि पंद्रह लश्कर हैं या दाख़िल व ख़ारजी लश्कर हैं तो ख़ुद मदीना में कितने आदमी होंगे, मुसलैमा भी रूक गया और हिरक़्ल भी बस यह फ़र्क़ है उमर रज़ि० मस्लहत को सामने दिखला रहे थे और अबूबक्र रज़ि० सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल० की बात सामने रख रहे थे, अबूबक्र ने तो यह भी कह दिया था कि अगर मर्द मुसलमान सारे मारे जाएं और अज़्वाजे मुतहरात भी क़त्ल हो जाएं। उन्हें दफ़न करने वाला न रहे कुत्ते, भेड़िए उनकी लाशों को खाएं यह गवारा है लेकिन दीन की मेहनत छोड़ना गवारा नहीं है। उन हालात में निकलकर जाना कितना मुफ़ीद साबित हुआ जैश उसामा को हुज़ूर सल्ल० ने लड़ने के लिए नहीं भेजा था बल्कि वालिद उसामा ज़ैद के क़त्ल होने की जगह पर जाओ और सारे अरब को चक्कर लगाकर वापस आ जाओ, चुनांचे यह लश्कर गया। दो-चार बस्तियों वालों से लड़-लड़ाकर

वापस आ गया, अगर अबूबक्र न होते तो इस्लाम दुनिया से मिट जाता। अबू हुरैरह और आइशा रज़ि० यह बात कहतीं और दलील में यही इरतिदाद का वाक़िआ तफ़्सील से हर शख़्स को सुना दिया करतीं, बस दो चीजें हैं असल इस्लाम और गुंजाइश वाला इस्लाम असल इस्लाम में तक्लीफ़ें उठानी पड़ती हैं। मुल्क व माल के नक़्शे में भी यह तक्लीफ़ वाला मिज़ाज न जाए। असल इस्लाम चाहे कितना ही कम लोगों में हो उनकी वजह से कुदरत मुसलमानों के साथ रहेगी। ना—बीनाई न अदम माल, न ज़र तिज़ारत को उज़्र न बताया जाए तो असल इस्लाम हासिल होगा तक्लीफ़ें उठाएं। तक्लीफ़ें उठाना मिज़ाज में आ जाए तो इससे इस्लाम की जड़ दुनिया में लगेगी और इससे असली इस्लामी ज़िंदगी आएगी। फिर खुदा अपने हुक्म से सारे आलम के तमाम नक़्शों को ज़ेर करके इस्लाम को ऊंचा कर देंगे बस यही बात है कि मस्अले, गुंजाइश, रुख़्सत सामने न रहे बस कुरबानी ही में आगे बढ़े जाएं। तक्लीफ़ों को असल समझो इन्ही में जन्नत है तक्लीफ़ सिर्फ़ अल्लाह के लिए उठाओ। लोग मुल्क के लिए मुसीबतें उठाते हैं जैसे अल—ज़ज़ाइर में ईमान व तर्क़ ईमान को आलम में ज़िंदा करने के लिए कुरबानी का रिवाज नहीं है हालांकि इस पर इस्तिख़लाफ़ व तम्कीन व तब्दील का वायदा है ईमान व आमाल सालेह में सबसे पहला अमल मेहनत का वह मैदान क़ायम करना है। इसको सारे मसअले—मसाइल को नज़र—अंदाज़ करके सहाबा ने क़ायम किया।

मज्मूआ बयानात

मुकम्मल (6 भाग)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़
साहब कांधलवी रह०

(भाग -4)

यासीन बुक डिपो
2127, रोदगरान, दिल्ली-6

विषय सूची

तर्तीब देने पर बात

किस जुबान में अल्लाह का शुक्र अदा किया जाए मेरा रूवां-रूवां इसके अहसानात में डूबा हुआ है कि बिला इस्तिहाक़ व क़ाबिलियत बुर्जुगों के बयानात, मलफूज़ात और इनके आलमी जवाहर पारों को जमा करने और शाया करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और बुर्जुगों और क़दरदानों ने मुझ बे-बज़ाअत की बहुत ही हिम्मत अफ़जाई फ़रमाई और इस सिलसिले को जारी रखने का ताकीद हुक्म फ़रमाया। बयानात हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि चौथा हिस्सा भी इस सिलसिले की कड़ी है। हम ने अपनी बिसात और हिम्मत के मवाफ़िक़ तसीह व तज़ाइन का एहतिमाम किया है लेकिन कहीं पर ख़ता और ख़ामी है तो पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि मुताला फ़रमाएं और अपने क़ीमती मश्विरों से नवाज़ें इन्शाअल्लाह अगले एडिशन में और ज़्यादा संवारने की कोशीश की जाएगी।

मेरी दीगर किताबों की तरह इस किताब की तसीह व तर्तीब भी उस्ताद हज़रत मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम साहब पून्वी मद्दा ज़िल्लाहू ने रहनूमाई फ़रमाई, ग़लतियों की निशानदेही की और अपनी क़ीमती अरा से आगाह फ़रमाया, बरादरम मुहम्मद याकूब साहब आदिल आबादी ने भी मेरा बेइन्तिहा ताऊन किया। मेरे सारे मुहसिनीन व मुआविन को बे-इंतिहा जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए और इस किताब को अगली किताब की तरह मक़बूलियत अता फ़रमाए और अवाम व ख़ास के लिए नाफ़े बनाए और इस आजिज़ के लिए ज़ख़ीरा आख़िरत और वसीला निजात

फ़रमाए। फ़क़्त व सलाम

मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी
दारूल उलूम सोनूरी तहसील मुरतज़ापूर ज़िला अकोला, महारष्ट्र
18, अप्रैल, 2005 ई०

एक ज़रूरी वज़ाहत

जनाब हज़रात इस पहले दावत तब्लीग़ के सिलसिले में अकाबिर के मलफ़ूज़ात, मकतूबात और बयानात वग़ैरह की सूरत में मेरी चंद किताबें मंज़र–आम पर आईं और इन्शाल्लाह आगे भी आती रहेंगी, लेकिन इसके साथ इस बात की वज़ाहत करना ज़रूरी समझता हूं कि यह दावत वाला मुबारक काम सिर्फ़ किताबों के पढ़ने से समझने में नहीं आएगा। हां इतनी बात ज़रूर है कि इन किताबों में जो कुछ लिखा गया है वे सब इन काम के बड़ों की बातें हैं इसलिए ये किताबें काम के समझने में किसी दर्जे में मददगार तो बन सकती है लेकिन काम की हक़ीक़त, काम के फ़ायदे, इस काम के ज़रिए पूरे आलम से बे–दीनी का दूर होना, अल्लाह पाक से ताल्लुक़, सुन्नतों का शौक, आमतौर से इंसानियत का और ख़ासतौर से उम्मते मुस्लिमा का दर्द और फ़िक्र दिल में आना, ईमान व आमाल का तरक्की में होना या तो दावत के काम में बड़ा हिस्सा लेने से होगा। इसलिए कि इस काम के बड़ों ने जो बाहर की नक़ल–हरकत के साथ मक़ामी काम की तर्तीब बताई है इसमें ख़ूब जमकर हिस्सा लिया जाए। सिर्फ़ किताबों के पढ़ने पर इक्तिफ़ाना किया जाए, अल्लाह पाक हम सबको इख़्लास के साथ अपनी इस्लाह की नीयत से ज़िदंगी की आख़िरी सांस तक दीन की ख़िदमत के लिए कुबूल फ़रमाए। आमीन

काम के उसूल की बातें उन किताबों में भी मिलेंगी। अगर उसूल ये है कि बंगले वाली मस्जिद, देहली की शौरा की जमाअत हाज़िर हालात के एतबार से जिस उसूल की तशरीह कुरआन व हदीस की रोशनी में करे वह उसूल ठहरेगा, लिहाज़ा हमें बंगले वाली मस्जिद के शूरा की जमाअत से रोशनी हासिल

मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी

मक्तूब गिरामी

आरिफ़ बा–अल्लाह हज़रत मौलाना क़ारी साहब सिद्दीक़ अहमद साहब बांदवी रहमतुल्लाहि अलैहि
बानी जामेअ अरबिया, हथोरा बांधा (यू.पी)

जनाब मुफ़्ती मुहम्मद रोशन साहब

हालात का इल्म हुआ, अपनी तसनीफ़ की हुई तीन किताबें (1) मलफूज़ात पहला हिस्सा (2) बयानात पहला हिस्सा (3) मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० मौसूल हुई।

बहुत पसंद आई यह सिलसिला आप जारी रखें बहुत से लोगों को फ़ायदा पहुंचेगा।

अल्लाह पाक तमाम मुवाफ़े दूर फ़रमाएं, मेरे लिए दुआ करते रहे।

अहकर सिद्दिक़ अहमद

मक्तूब–गिरामी

हज़रत अक़्दस मौलाना मुफ़्ती शब्बीर अहमद साहब

हदीस व सदर मुफ़्ती मदरसा शाही मुरादाबाद

ख़लीफ़ा आरिफ़ बा–अल्लाह हज़रत अक़्दस मौलाना क़ारी सिद्दीक़ अहमद बांदवी रह०

सुब्हाना व तआला

हज़रत मौलाना मुहम्मद रोशन साहब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि वबा रकातुहू

अल–हम्दु लिल्लाह हम तुम्हारी दिली दुआओं से ब–ख़ैर आफ़ियत हैं, ख़ुदा करे तुम भी बा–आफ़ियत हो, तुम्हारी कोशीश करदा तीन किताबें, (1) मलफूज़ात, (पहला हिस्सा), (2) बयानात (पहला हिस्सा) और (3) मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० (पहला हिस्सा) मौसूल हुईं।

ये आपकी बहुत बड़ी ख़ुश–किस्मती है कि दुनिया के शहरे–अफ़ाक बुज़ुर्गों के रूहानी हालात और अक़वाल व अराअ पर काम करने की तौफ़ीक़ हुई, यह खुश–नसीबी हर किसी को नसीब नहीं होती, मुझे तुम्हारी इस ख़ुशकिस्मती पर कितनी ख़ुशी हो रही है इसकी इंतिहा नहीं है, यह तुम्हारे काम की इब्तिदा है। इन्शाअल्लाह आइंदा अलग–अलग हौसले, और तसनीफ़ी काम करने के लिए राह फ़राहम होने वाली है।

खाकसार की फ़लाह दारेन के लिए दुआ फ़रमाएं बंदा तुम्हारे लिए हर वक़्त ख़ैरियत–ख़्वाह है, वस्सलाम

उमूमी बयान न० 1

इंसान का कमाल सिर्फ़ मुशाहेदा पर चलने में नहीं है

फ़जर के बाद, दिन पीर, 23, अप्रैल, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद फ़रमाया कि

मेरे भाइयों और दोस्तो !

मुशाहेदे के एतबार से इंसानों को कोई मेहनत और तैयारी नहीं करनी पड़ती, देखने से जिस तरह का इस्तेमाल समझ में आएगा वैसा ही करेगा, लेना, हटना, देना, भागना, जो समझ में आया करेगा, सारे जानवर अपने मुशाहेदे के एतबार से इस्तेमाल होते हैं, कोई तैयारी नहीं करनी पड़ती मिसाल के तौर पर दाने की तरफ़, घास की तरफ़ चलेंगे उसे खाएंगे, तहक़ीक़ न करेंगे कि इसका खाना कैसा है। मिसाल के तौर पर टोकरे के नीचे दाना–पानी रखा हुआ, उसी की तरफ़ चलेगा अगरचे बाद में इसमें फंस जाएगा। ऐसे ही मछली कांटे में लगे हुए गोश्त की तरफ़ आएगी फिर फंस जाएगी, रोटी का टुकड़ा खाने पर कुत्ता क़रीब आएगा और अगर लकड़ी उठाएंगे तो भाग जाएगा। सारे जानवर मुशाहेदे के एतबार से इस्तेमाल हो रहे हैं। इसी तरह इंसान का कमाल सिर्फ़ मुशाहेदे पर चलने पर नहीं, इसी तरह चलने वाला वे काम करेगा बाद में अगरचे भागता पड़े। मिसाल के तौर पर चोरी कर लेता है उस वक़्त फ़ायदा हुआ लेकिन बाद में इसकी सज़ा मिलेगी, ऐसे ही नमाज़ पढ़ने पर दुकान से रुपये हासिल हुए लेकिन क़ियामत को पता चल जाएगा। चूहा बिल्ली से, बकरी भेड़िए से भागी, यह जानवर खाली मुशाहेदे की ज़िंदगी है, दूसरी ज़िंदगी हक़ीक़त को पहचानने की है कि जो नज़र आ रहा है अगर हक़ीक़त इसके

ख़िलाफ़ है तो उस हक़ीक़त के मुताबिक़ इस्तेमाल हो। मुल्क का ज़ोर देखकर मुल्क में लग गया गुज़री हुई तारीख़ की तहक़ीक़ न की आगे को न सोचा इज्तिमाई मसअलों को बिलाए तारीख़ रखा और क़दम उठा लिया तो यह जानवर वाली ज़िंदगी है कि ऊंचा दायरा ठुकराकर जानवरों वाले आमाल कर रहा है। कुरआन में माज़ी और मुस्तक़बिल दोनों का ज़िक्र है क़ौमे नूह, कौमे सबा, कौमे आद, कौम सालेह ने मुशाबहत पर ज़िंदगी उठाई बाद में मुसीबतों में गिरफ़्तार हुए। क़ौम नूह का मुशाहेदा यही था कि 80 शख़्सों की अक्सीरियत का क्या करेंगे क़ौम आद को अपनी ताक़त में नज़र आ रहा था, फ़िऔन व नमरूद को अपनी हुकूमत में कामियाबी नज़र आ रही थी। क़ौमे शुऐब तिजारत की मंडी पर काबिज़ थी और इनके मुखालिफ़ों मज़दूरों, ग़रीब वह क्या करेंगे, हर नबी अपनी क़ौम से कहते कि मुशाहेदा पर चलना हलाकत का बाइस है। जैसे कि पहली क़ौम के साथ हुआ है और आइंदा की नाफ़रमानी पर ऐसा ही होगा। हूद अलै० अपने क़ौम के सामने क़ौम नूह की हलाकत को ला रहे हैं सालेह अलैहिस्सलाम अपने क़ौम से मुशाहेदे पर चलने में हलाकत कह रहे हैं। जैसे क़ौम आद हलाक हो गई। गुज़री हुई क़ौमों का ज़िक्र है कि जिस बुनियाद पर पहले लोग पैदा हुए उस तरह क़ियामत तक पैदा होंगे। किसी क़ौम का ज़रिया पैदाइश न बदला है और न बदलेगा, ऐसे ही कामियाबी और नाकामी के ज़ाब्ते में फ़र्क़ नहीं आया, न आएगा। अगर पहली की क़ौमें मुशाहेदे पर ज़िंदगी उठाने से मुसीबतों को शिकार हुई हैं, ऐसे ही हम भी मुशाहेदे पर ज़िंदगी उठाने से मुसीबतों का शिकार होंगे। कुरआन हकीम में बताया गया है कि मौजूदा मुआशरा और रिवाज के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने में हलाकत है उस उम्मत को बनी इसराइल से ख़ास मुनासबत है। जहां कोई हुक्म आएगा, अल्लाह इससे आगे–पीछे बनी इसराइल का ज़िक्र कर देते हैं कि जिन बुनियाद पर वह चमके या उम्मत चमकी और जिन बुनियाद की

वजह से वह गिरी थी उनकी वजह से यह भी गिरेगी। बनी इसराइल दो मर्तबा चमके और दो मर्तबा गिरे हैं बनी इसराइल औलाद याकूब कनआन गांव में रहती थी मुल्क व माल का नक़्शा नहीं है। न ओहदे न वज़ारत न मुल्क न माल, सिर्फ़ जानवरों का दूध पीते हैं और इनका गोश्त खाते हैं अल्लाह ने ईमान व आमाल सालेह की वजह से बग़ैर किसी ज़ाहिरी अस्बाब के इख़्तियार किए हुकूमत मिस्र यह दिया बावजूद तोहमते ज़िना, अब्दियत, कुंवा, ज़हाबी बसर बुढ़ापा याकूब वग़ैरह सारे हालात गुज़रे हैं फिर बादशाह अपने ख़्वाब की ताबीर से मुतासिर होकर मुल्क हवाले कर देता है आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ कि बग़ैर पर्टी फ़ौज व इस्कर के बग़ैर ज़ाहिरी नक़्शों के मुल्म मिल गया हो। जब तक यूसुफ़ व याकूब ज़िंदा रहे ईमान व आमाल सालेह पर चलते रहे। इनके इंतिक़ाल के बाद आल–औलाद ने मुल्क व माल के नक़्शे पर चलना शुरू कर दिया, उन नक़्शों पर यक़ीन आ गया। आमाल ख़राब कर लिए, अल्लाह ने उन पर कफ़्न चोर फ़िऔन को मुसल्लत कर दिया, फ़िऔन की कफ़्नों की दुकान थी वह सुबह एक कफ़्न बेचता था। रात को वही मय्यत से निकाल लाता, बग़ैर ख़र्च के इसको आमदनी होती थी, शुरू से ही इसे ज़ुल्म की आदत पड़ी। इससे ख़ूब मालदार हो गया और अपनी मालदारी से मुल्क व हुकूमत का सरबरा बन गया। जैसे आजकल के मालदार हो जाते हैं, बनी इसराइल जब तक ग़ैब पर ज़िंदगी गुज़ारते रहे चमके रहे, जब ज़ाहिर पर आ गए ख़ुदा ने गिरा दिया। फिर मूसा अलै० व हारून अलै० ने आकर ग़ैब पर दोबारा ज़िंदगी उठाई, मेहनत की तवक्कुल, ईमान, नमाज़ करने पर आमाल की कामियाबी मिलने का यक़ीन करो। जैसे लोगों को मुल्क व माल के नक़्शों पर यक़ीन है, क़ौम का यक़ीन बदलने के लिए बहुत से दिन लगे। यहां तक कि ग़ैब के एतबार से इस्तेमाल होना आ गया, बनी इसराइल जो हर काम फ़िऔन की इजाज़त से करते थे। उनको पूछे बग़ैर कुछ न करते

थे। मूसा अलै० व हारून अलै० के कहने पर फ़िऔन के पूछे बग़ैर शहर से निकल गए। फ़िऔन जब बनी इसराइल का रवैया देखा, तो उसने एलान किया सब जमा हो जाएं और इससे पहले यह भी कह चुके थे, अल्लाह ने उनको मुशाहेदे के एतबार से नहीं बचाया कि रात–रात में कहीं दूर चले जाते। यहां तक कि रास्ता भूल गए वहीं घूमते रहे सुबह को आगे दरिया पीछे लश्कर और ज़ाहिरी हालत मुखालिफ़ हो गए उनकी ज़ुबान से انا لمدركون निकल गया जिसकी मश्क़ करके आए थे, उसके मुक़ाबिल ज़ाहिर पर एतमाद करने लग गए, मूसा ने झड़की दी كلا ان معى ربى سيهدين सब का दिल फिर गया अब लाठी मारने का हुक्म मिला। यह मुशाहेदे के बिल्कुल ख़िलाफ़ है अगर मारनी है तो किसी फ़िऔनी या फ़िऔन के ऊपर मारो जिससे शायद बाक़ी भाग जाएं यहां फ़िऔनिया की हालत के लिए लाठी मारते ही बारह सड़कें बनीं और वे पार हो गए। ग़ैब के पक्के यक़ीन को ज़ाहिर पर बदल देते हैं, चीज़ों के ख़िलाफ़ आमाल से पलना दिखा देते हैं फ़िऔनी उस दरिया में गए अपने मुशाहेदे पर कि जब बनी इसराइल निकल गए तो हम भी निकल जाएंगे। लेकिन ये मुशाहेदे वाले को डूबो दिया फिर अल्लाह ने बग़ैर कमाए इनको आसमान से रोज़ी उतारकर दी। फिर मुल्क मिस्र मिल गया ख़ूब मज़े आ गए, फिर मूसा अलै० व हारून अलै० चले गए। इनके बाद जब तक ग़ैब की बुनियादों पर चलते रहे और जब मुशाहेदे पर वापस आए तो ग़ैब की बुनियादों को ख़ुद तोड़ने लगे इसी वजह से यहया अलै० और ज़िक्रया अलै० को क़त्ल किया इससे पहले जब ग़ैब पर चलने वाले थे तो अल्लाह के हुक्म पर अपने रिश्तेदारों को क़त्ल किया। जबकि उन्होंने बछड़ों को पूजा था तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि वह लोग जिन्होंने बछड़े को नहीं पूजा है उनको क़त्ल करें जिन्होंने पूजा। पूजने वाले अक्सीरियत में थे अब बाप अपने तमाम बेटों, बेटियों, बीवियों को क़त्ल कर रहा है। किसी क़िस्म को कोई अंदाज़ा कोई नहीं करता

कि उन्हें क़त्ल करने से क़ातिल व मक़्तूल से खुश होकर कामियाब करेंगे। जब अपनी उम्मत ख़त्म होती देखी तो मूसा अलै० ने दुआ की जिस पर बाक़ी की जान माफ़ कर दी गई। फिर मुल्क व माल पर चलने लगे अंबिया वाली बुनियाद पर से हट गए यहां तक कि एक वक़्त एक औरत बादशाह पर हराम थी इस ज़माने में हज़रत यहया अलै० की इजाज़त के बग़ैर कोई न कर सकता था इसने यहया अलै० से पूछा तो उन्होंने कहा कि हराम है इससे निकाह नहीं हो सकता। उस बादशाह ने सोचा अगर इस यहया अलै० के बग़ैर कर लिया तो क़ौम हमें ही मार देगी। चुनांचे उसने रात को आदमी भेजकर यहया अलै० का क़त्ल करवा दिया, उसी रात को बादशाह और तमाम शाही अफ़राद व औरत पत्थर के हो गए। सुबह जब क़ौम ने यह मंज़र देखा तो उलटी समझ में बात आई। जब दिन फिरते हैं तो अक़्ल जाती रहती है, लिहाज़ा इन्होंने कहा ख़ुदा अपने नबी के लिए इंतिक़ाम ले, हम अपने बादशाह का बदला न लें। अरे देख चुके हो अंजाम, फिर भी ख़ुदा के ख़िलाफ़ जुराइत चलो ज़िक्रया अलै० को क़त्ल करें, ज़िक्रया अलै० ने क़ौम का यह इरादा सुनकर भाग गए। एक खोखले पेड़ से कहा कि मुझे पनाह दे इसने पनाह दे दी। शैतान ने उस वक़्त पल्लू पेड़ से बाहर कर दिया चुनांचे पेड़ काट दिया गया ज़िक्रया अलै० को लेकर पल्लू बाहर रह गया, बनी इसराइल ने ज़िक्रया अलै० को बहुत तलाश किया वह न मिले शैतान ने उनसे कहा, उस पेड़ के अन्दर उस पल्लू से देख लो। उसने नीम का पत्ता लाकर दिया कि कहा कि उस जैसी लोहे की बना लो उस पेड़ के दो टुकड़े कर दो। उस ज़माने में आरा ईजाद हुआ चुनाचें उन्होंने ऊपर से काटना शुरू कर दिया यहां तक कि हज़रत ज़िक्रया अलै० को भी काट दिया, दो टुकड़े हो गए। ख़ुदा की शान दोनों तरह की है, वहां छुरी के नीचे इसमाइल अलै० को बचा लिया था। इसके बाद बख़्ती निस्र को इन पर मुसल्लत किया, उसने क़सम खा ली। जब तक उनको

ख़ून घोड़े के सीने तक नहीं आएगा उनका ख़ून ख़ूब बहाऊंगा, ख़ूब क़त्ल हुए, लेकिन ख़ून जम जाता था। इस पर वज़ीरों और बादशाहों और फ़ौजियों ने बादशाह से दरख़्वास्त की कि उन्हें क़त्ल न किया जाए उस पर बख़्ती निस्र ने अपनी क़सम बयान की, उन्होंने कहा कि अगर सारे मारे जाएंगे तो भी पूरी नहीं हो सकती। लिहाज़ा पानी ख़ूब बहाओ जिससे ख़ून ऊपर आ जाएगा, घोड़े के सीने को लग जाएगा चुनांचे यहां एक दफ़ा उरूज है और एक दफ़ा ज़वाल है, नबी वाली मेहनत से चमके, नबी वाली मेहनत को तर्क करने से ऊपर से नीचे गिर गए। ऐसे ही क़ियामत तक इस उम्मत का भी कानून है। इस तरह हमारी गुज़री हुई तारीख़ से यह पता चलता है कि इस्लाम उस वक़्त चमका जब अस्बाब कम थे और जब चीज़ों के नक़्शे ज़्यादा हुए तो फिर गिर गया। बनू अब्बास की हुकूमत उस वक़्त मिली जब मुल्क कम थे और इनका ज़वाल उस वक़्त आया जबकि दुनिया का ज़्यादातर हिस्सा इनके क़ब्ज़े में था। तमाम अरब के मुल्क, सिंध, तुर्की, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, इनके बादशाह की खाल उतारकर भूसा भरा गया था। बनू अब्बसा ने बनू उमैया के मुक़ाबले ख़ूब दावत का काम किया, माल व जान उस नबी वाले काम पर लगा दी। बनू उमैया ग़ुलाम बाज़ी पर आ गए, एक बादशाह ने एक बांधी से सोहबत की और उस बांदी को हुक्म दिया कि मस्जिद में जाकर जनाबत (नापाकी) के साथ सबको जाकर नमाज़ पढ़ाए। नंगी तलवारों की वजह से मुसलमानों ने उस बांधी के पीछे नमाज़ पढ़ी। एक बादशाह शराब व कबाब का आदी था इस बात का इरादा किया कि बैतुल्लाह की छत पर जाकर शराब पिए। लेकिन अल्लाह उसे मक्का के बाहर ही हलाक करके दिखला दिया। बनू अब्बास, बनू उमैया पर ग़ालिब आ गए, बनू उमैया लाखों में और बनू अब्बास हज़ारों में खुदा इसके बाद बनू अब्बास पर ता तारी मुसल्लत कर दिए। एक ता तारी काफिला इस्लामी हुकूमत में आया। अरबों ने उन पर

ज़ुल्म किया वह काफ़िला अपने बादशाह के पास वापस गया। बादशाह ने अपना वफ़्द इस्लामी बादशाह के पास भेजा, इनकी बात सुनने के बजाए इस वफ़्द पर ज़ुल्म किया। इस पर ता तारी बादशाह तीन दिन तीन रात एक टांग पर पहाड़ की चोटी पर खड़ा होकर कहता रहा। ऐ मुसलमानों के ख़ुदा ! हम इंसाफ़ चाहते हैं। तीन दिन के बाद आवाज़ आई जाओ हम तुम्हारी मदद करेंगे, चुनांचे इन्होंने इस्लामी मुल्कों पर हमला शुरू कर दिया, 22 लाख़ के शहर में 17 लाख बर्बाद हुए। दरिया दजला का पानी छ महीने तक काला होकर चलता रहा, इसमें मुसलमानों की सारी किताबें डाल दी गई थीं। इस बात पर कोई यक़ीन नहीं ला सकता था कि ता तारी मार दिया गया, एक मर्तबा एक ता तारी ने मुसलमान को पकड़ा जंगल था और कोई हथियार वग़ैरह पास नहीं था। लिहाज़ा उस ता तारी ने कहा तुम यहां ही रहना, मैं घर से छुरा लेकर आता हूं, अब इस मुस्लिम की इतनी हिम्मत नहीं हुई कि उससे लड़े या कम से कम वहां से उठकर चला जाए। बल्कि वही बैठा रहा, वह ता तारी पांच छ घंटे बाद छुरा लेकर आया और उसी ने उसको जान से मार दिया इसके बाद फिर मुसलमान नुबूवत की बुनियाद पर चमके शेख़ शाहबुद्दीन को बादशाह ने बुलाया और पूछा कि मेरा कुत्ता अफ़ज़ल या तू ? मैं ईमान के साथ जन्नत में जाऊंगा तो मैं अफ़ज़ल वरना कुत्ता। बादशाह इस पर चौंका, शेख़ ने दावत देनी शुरू की, ईमान व आख़िरत वाली बातें सामने आना शुरू हुई। वह ता तारी बहुत मुतासीर हुआ, उसने कहा अभी मैं बादशाह नहीं बना, वली उहूद हूं। अगर अब इस्लाम ले आया तो बाशाहात से महरूम हो जाऊंगा, फिर आना इस्लाम ले आऊंगा। चुनांचे उस वादे के बाद उस बुज़ुर्ग का इंतिक़ाल होने लगा, तो इन्होंने अपने ख़ादिम ख़ास को बुलाकर कहा, फ़्लां शख़्स जब बादशाह बन जाए तो मेरा सलाम पहुंचाकर वायदा इस्लाम याद दिलाना यह शख़्स कमज़ोर क़ौम का था। बादशाह के दरबार में कैसे रिसाई

होती, चुनांचे एक दिन बादशाह किसी जंगल में पड़ाव डाले हुए थे तो इसने ज़ोर से आज़ान देनी शुरू कर दी इस पर शोर मचा और बादशाह के बुलाने पर लोग उसे पकड़कर ले गए, उसने बादशाह से ख़लत लेकर पीर का वायदा याद दिलाया। उसने अपने ख़ास आदमियों को बुलाया उनके सामने उस मुरीद से इस्लाम की दावत करवाई और कहा मेरा इरादा इस्लाम में दाख़िल होने का है। तुम्हारी क्या राय है वज़ीरे आज़म ने कहा मैं तो पहले ही मुसलमान हो चुका हूं, तुमसे छुपा रखा था। इस पर वे सारे इस्लाम लेकर आए और भी बहुत से लोग काम में मसरूफ़ थे। इन सबकी मेहनत से ता तारियों के तमाम क़बीले इस्लाम में आ गए और उन्होंने पहले से ज़्यादा मस्जिदें आबाद की ख़ूब हिफ़ाज़त की आख़िर में तुर्की कहलाए। और इतनी मुहब्बत थी उनके दिलों में अरबों के पास फ़ौज ज़्यादा न थी, तुर्क के पास ताक़त बहुत थी। अगर चाहते तो एक घंटे में हिजाज़ पर क़ब्ज़ा कर सकते थे। लेकिन सुलतान तुर्क न हुक्म दे दिया था कि मक्का और मदीना के किसी फ़ौजी को न मारा जाए कि वे हमारे मुक़द्दस शहरों के रहने वाले हैं। चुनांचे जब तुर्की सिपेसालार को जब बग़ावत में पकड़ा गया तो इसने अजीब निशाने बंदूक़ मारकर दिखाए, और कहा कि हम क़ब्ज़ा कर सकते थे। लेकिन न किया इसके ख़िलाफ़ तुर्कियों के दूध पीते बच्चों को तेखाने में ले जाकर क़त्ल किया है। तुर्क वालों ने ख़ुद को दबाया और हिजाज़ वाले अपने ज़ुल्म की वजह से मरे। आजकल की ज़िल्लत की वजह अहकाम इस्लामिया का पूरा न करना और नुबूवत वाले काम को छोड़ देना है। अपनी तारीख़ से भी नज़र आता है कि जहां दीनी कमी आई वहीं गिरे, जहां ग़ैब वाली ज़िंदगी मिली वहां चमके कुछ आमाल बुनियादी हैं कि जहां तुम्हारी आंख देती है वहां से हटाकर उन आमाल से सब कुछ होना देखो, दावत, तालीम पर खाना, ग़लबा, इलू, इस्तिख़लाफ़ मिलना नज़र न आएगा। ऐसे ही अल्लाह की तालीम व ताल्लुम पर रोटी का मिलना इज़्ज़त

वग़ैरह नज़र न आएगा। लेकिन कुरआन व हदीस में उन पर तमाम चीज़ों के वायदे हैं। न मांगे न कमाएं सिर्फ़ नमाज़ पर इक्तिफ़ा करें। तो हमें खाने को नहीं मिलेगा, लेकिन तमाम अंबिया व औलिया की तारीख़ इसको सच्चा करती है। मोइनुद्दीन अजमेरी को देख लो कि उनके ज़माने में ग़ैर–मुस्लिम हुकूमत थी और वे भी मुसलमानों के प्यासे, लेकिन इनकी मेहनत जब आमाल ख़मसा पर हुई तो करोड़ो उनके हाथ पर इस्लाम लाए। अजेमर से ढ़ाका तक के सफ़र में 90 लाख इस्लाम लाए, कुरआन बताता है कि मूसा अलै० की नमाज़, तवक्कुल पर फ़िऔन गर्क़ हुआ। ऐसे ही उन चार के साथ मुआशरे का जमाली रंग लिया जाए कि अख़्लाक़ से होना यक़ीन जानिए। मुआशरे का तफ़्सीली रंग तो इस्लाम लाने के बाद होगा, माल जान को सिर्फ़ अपने ऊपर लगा देना कुफ़्फ़ार का शिवा है इस्लामी ज़हन यह है कि अपने और ब–क़द्र हाजत बाक़ी तमाम हवाइज इंसानिया पर लगा दें। चाहे माल कम हो या ज़्यादा, माल व जान की वही तर्तीब हो जो उनकी है, लेकिन इस तर्तीब का मुशाहेदा साथ न देगा, मुशाहेदा ग़ैब का तो करने के बाद होगा। दिखाने के बाद इस्लाम ले आना यह तो वही है जो मक्का के मुश्रिकों ने कहा था, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी मुआजज़े का वायदा न लिया लेकिन जब इस्लाम फैल गया और सहाबा रज़ि० ग़ैब के यक़ीन पर चल पड़े। तो वह तमाम चीज़ें करके दिखलाई, जिनका करना मक्का वालो ने कहा था पहले तो कलमे पर पिटाई होती थी मार–पीट, आग में जलना, आंखें फोड़ देना उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० वलीद की पनाह में थे। सारे मक्का में फिरत अमन व आमान से, एक दिन कहा कि सारे मुसलमान तक्लीफ़ में और मैं अराम में, जन्नत में मुझसे आगे होंगे और आज हम किसी के बाहर जाने से उसकी इक्तिसादयात ख़राब होने पर कहते हैं कि अल्लाह का शुक्र है मैं गया होता तो मेरा भी ऐसा नुक़्सान होता। उसने आठ दिन में चार महीने कर

दिए और मैं बचकर आ गया चंद दिनों में, यह वलीद के पास गए और इससे कहा कि मैं तो तेरी आमान से निकालकर अल्लाह की आमान चाहता हूं। वलीद बिन मुग़ीरह ने समझाया कि अरे इन मुसलमानों की तक्लीफ़ तो देखो तुम मेरी आमान में रहकर आराम पा रहे हो क्यों जाते हो ख़ुदा की आमान में, इन्होंने इसरार किया। तो वलीद ने कहा, जैसे काबा के सामने तुमको आमान में लिया था, लिहाज़ा काबा के सामने वापस लूंगा। चुनांचे दोनों काबा के पास गए, वहां जमघटा था, वलीद ने कहा, कि मैंने उससे अपनो आमान वापस ले ली, उस्मान रज़ि० ने कहा वलीद अच्छा आदमी है। मुझे इसकी आमान में कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंची, मगर मैं अल्लाह की आमान में आना चाहता हूं। इसके बाद वहां निकलकर कुफ़्फ़ार की महफ़िल में गए, जहां लबीद बिन रबिआ बिन मालिक शायर शेर कह रहा था। ﴿اَلَا كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلَا اللهَ بَاطِلُ﴾ इस पर उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० ने वाह, वहा कही इसके बाद शायर ने कहा, ﴿وَكُلُّ نَعِيمٍ لَا مُحَالَةَ زَائِلُ﴾ इस शेर को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी पढ़ा है, वहां नईम व दीनवी मुराद है। लेकिन उस्मान रज़ि० ने लबीद को डांट दिया, नहीं जन्नत की नईम अब्दी है। क्योंकि लबीद जन्नत क़ाइल न था, इसकी तरदीद में शायर को ग़ुस्सा आ गया, बात बढ़ते-बढ़ते इस पर आई के किसी ने इन्हें थप्पड़ मारकर इनकी आंख फोड़ दी। वलीद भी खड़ा हुआ यह देख रहा था, जब वहां सब उठकर गए, तो वलीद अबू ख़ालिद ने कहा देख ली ख़ुदा की आमान। एक घंटे में एक आंख फूट गई, अब भी मेरे आमान में आ जाओ, इस पर जवाब दिया कि मेरा ख़ुदा तुमसे ज़्यादा कुदरत वाला है। यानी ज़ाहिर के ख़िलाफ़ ईमान ला रहे हैं ख़ुदा पर कि वह सब कुछ कर सकते हैं। अब मुश्रिक की आमान में आना गवारा नहीं है, मुसलमानों के साथ ही तक्लीफ़ें ही उठानी पड़ती है, इसको अपने लिए पसन्द किया कि यह अज़ीमत है 13 साल के बाद करके

दिखलाया मुश्रिकों ने फ़रिश्तों को मुतालबा किया था। लेकिन उस वक़्त न किया, मुशाहेदे को ठुकरा कर चलते रहे, आमाले ख़म्सा करते रहे। जिस दिन चाहेंगे, सारे ज़ाहिर को बदल देंगे और अल्लाह के हुक्म का मिज़ाज बन गया। अल्लाह के रास्ते में जाने की आवाज़ पर हल चलाने वाला आ गया, निकाह को जाने वाला निकाह छोड़कर आ गया, उन आमाल ख़म्सा का मिज़ाज बन गया। बद्र में सिर्फ़ तीन घोड़े थे और आठ तलवारें थीं, रास्ते में छः सात और मिल गई थीं। बाक़ी सब निहत्ते इस पर अल्लाह ने फ़रिश्तों को आसमाने से उतारा। एक लकड़ी तलवार बन गई, जो बाद में उसी उन्वान से बाज़ार में बिकी, इसी पर शेर भी कहे गए। अल्लाह ने पंद्रह साल तक अपनी कुदरत को ज़ाहिर न किया, 15 साल बाद क्या सारे मुसलमान आमाले ख़म्सा में तक्लीफ़ों के साथ बराबर लगे हुए थे। इस आमाल पर ग़ैब से सूरत पैदा होने का यक़ीन के साथ, बद्र में जाते वक़्त नंगे और भूखे थे अल्लाह के हुज़ूर में दुआ मांगी (البداية)اِطعمنا। सारी दुआ मुशाहेदा के ख़िलाफ़ है। जंगे बद्र भी ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है, फ़त्ह हो गई और अरब का क़ायदा था जब किसी को पैग़ाम भेजा जाए तो इसकी ताइद में अपना कोई सामान भेजा जाए। ख़ास तौर से ऊंटनी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रज़ि० अपने ग़ुलाम को अपनी ऊंटनी पर बिठाकर भेजा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लड़की को दफ़न कर रहे थे, ज़ैद भी वहां पहुंच गए और इनकी नुसरत व फ़त्ह की खुशख़बरी सुनाई जिसे सुनकर यहूदी कहने लगे। अब मुहम्मद सल्ल० उमर, अबूबक्र रज़ि० सब शहीद हो गए हैं कि इनका यक़ीन ज़ाहिर पर था। मुसलमानों के पास एक हथियार भी नहीं था और मक्का के कुफ़्फ़ार बिल्कुल हथियार से भरे हुए थे। लिहाज़ा मक्का वाले उन पर ग़ालिब हो गए होंगे और इस ज़ैद का सख़्त सदमें की वजह से दिमाग़ ख़राब हो गया। क़त्ल तो मुहम्मद सल्ल० और उसके साथी हुए हैं। लेकिन कह रहे कि अबू जहल, उत्बा, रबिआ

क़त्ल हुए हैं, मुसलमानों के सिवा इस पर किसी को यक़ीन नहीं आया, हत्ता कि उनके बेटे उसामा ने आकर अपने वालिद ज़ैद से पूछा, आप होश–हवास में हैं ? ज़ैद ने कहा ख़ुदा की क़सम ! मुसलमानों को फ़त्ह हो गई है। फिर मुनाफ़िक़ों को उस वक़्त तक यक़ीन नहीं आया, जब तक कि एक शख़्स मक्का में नहीं पहुंचा। इससे अबू लहब ने पूछा कि बद्र में क्या हुआ ? उसने कहा हम करते भी क्या, मुतभेड़ होने से पहले ही आसमान से घोड़े सवार उतर रहे थे। ऐसे–ऐसे अमामों के साथ ऐसे–ऐसे हथियारों के साथ, अबू राफ़ेअ रज़ि० जो अब्बास रज़ि० के ग़ुलाम थे। इस्लाम ला चुके थे वह इस बात को सुनकर उछल पड़े कि ख़ुदा की क़सम ये तो फ़रिश्ते थे। अबू लहब को यह बात बुरी लगी, उसने अबू राफ़ेअ को एक धक्का दिया इस पर हज़रत अबू राफ़ेअ को जोश आ गया कि अल्लाह की नुसरत और फ़रिश्तों का ज़िक्र सुन चुके थे। उन्होंने अबू लहब को पीटना शुरू कर दिया। हालांकि अबू लहब का मक्का में बहुत ज़ोर था, बल्कि सबसे आगे इस्लाम व मुहम्मद सल्ल० को तंग करने मे था ऐसे ज़िम्मेदार को इस ग़ुलाम ने पीटा, इतने में अब्बास रज़ि० की बीवी लाठी लेकर आ गईं। कि मालिक अब्बास मदीना में क़ैद हो गया और तू उसके ग़ुलाम को अकेला समझकर मार रहा है और अबू लहब को मारना शुरू कर दिया। अबू लहब आख़िर में चेचक में मरा है चेचक से उस ज़माने में अरब बहुत डरते थे। हम मुशाहेदे पर चलने के आदी हैं, इस्लाम में सिर्फ़ ग़ैब है इसके लिए सिर्फ़ तैयारी करने की ज़रूरत है और वह यह है कि मुशाहेदा से यक़ीन ग़ैब की तरफ़ लाया जाए। इसके लिए आमाले ख़म्सा है और इन्हीं आमाल के लिए मस्जिद है आज सिर्फ़ मस्जिद में नमाज़ है इससे मुसलमान मस्जिद से नहीं बन रहे हैं, हालांकि दुनिया में आने के लिहाज़ से नमाज़ नम्बर चार पर है। सबसे पहले दावत फिर तालीम, फिर एक दूसरे की हमदर्दी करना आया, फिर नमाज़ आई है जैसे क़ायदा चौथी चीज़ है नमाज़ में इसे ही

कर लेने से नमाज़ न कहलाएगी। ऐसे ही नमाज़ चौथे नम्बर पर है और सिर्फ़ इसे ही कर लेने से दीन व ईमान हासिल न होगा। नमाज़ें ग़ैब की बुनियाद पर इस्तेमाल होना है, अगर हम ग़ैब पर मज़बूत होकर इस्तेमाल हुए तो उस नमाज़ के हक़ीक़ी असरात को हासिल करेंगे, आज ग़ैब में कमज़ोर होकर सिर्फ़ ज़ाहिरी इस्तेमाल है। जिसकी वजह से असरात नज़र नहीं आ रहे हैं, उन आमाल ही से कामियाब होने का पूरा यक़ीन हो उन नक़्शों से नहीं। आज के मुसलमान यहां तक पहुंच गए हैं, अब तो कुछ हो नहीं सकता, मुसलमान वज़ीर भी और हर मिम्बर परलिमैन्ट मुस्लिम तलबा भी अमंगों व उम्मीदों के साथ नहीं पढ़ रहा है कि न ताअस्सुब से ख़तरा है, कोई मिम्बर व वज़ीर हक़ की आवाज़ लगाने नहीं जाता, बल्कि इनकी हां में हां मिलाकर अपने ज़ाती मस्अलों को हल कराना चाहते हैं 99 फ़िसद ऐसे ही हैं, लोगों से झूठ कहते हैं कि हम तुम्हारी नुमान्दगी करेंगे, उनके दिल में भी यही होता है। मुझसे कई मिम्बरान कहा है कि हम ज़मीनदार थे ज़मीन चली गई, हमने कहा ज़मीनदारी और खेती-बाड़ी ख़ुद कैसे करेंगे, मिम्बर या वज़ीर बन जाओ। तो मज़े हो जाएंगे, फ़स्ट क्लास का पास, सफ़र का ख़र्चा लाइसन्स की आसानी, जो बात अपनी मन पसन्द चाही कराली। सिर्फ़ अपने ज़ाती मस्अले हल करने आते हैं इसी वजह से ग़ैर-मुस्लिमों के हाल में हां मिलाते हैं। कि इसके बग़ैर चारा नहीं, हक़ बात कहने या नुमान्दगी करने कोई नहीं आता, तलबा भी कहते हैं कि तालीम के बाद क्या होगा ? मुलाज़मत मिले या न मिले, कालेज के तलबा भी कहते हैं कि तालीम के बाद क्या होगा ? मुलाज़मत मिले या न मिले, कालेज के तलबा भी कहते हैं कि मेरा पर्चा अच्छा था, लेकिन फेल कर दिया गया वह हिन्दु था इसे पास कर दिया गया अग़रचे पर्चा ख़राब था। अब तब्लीग़ से मुसलमानों का ज़हन बन गया है कि कुछ इस तरह नहीं कर सकते, ज़हनी पस्ती आ गई है। ग़ैर मुस्लिम भी कहते हैं मुस्लिम लीडरों के साथ

कि इन मुसलमानों की ज़हनी पस्ती दूर करनी ज़रूरी है। लेकिन उसे दूर करना उनमें से किसी के बस में नहीं है। ज़ाहिर तौर पर एक इस दौर की दो सूरतें हैं, ख़ुद को अक्सीरियत के नाम पर दिलासा देकर सारे उहूदें मुसलमानों के हवाले कर दें या मुसलमान अक्सीरियत में हो जाएं। इस्लाम ले आएं और दोनों इसके बस में नहीं है मुस्लिम तबके का ज़हन बन गया कि नक़्शों से नहीं बनता, बस इतना ज़हन और बन जाए कि आमाल ख़म्सा से ज़िंदगी बनेगी। तुम्हारे पास दुनिया की क़ीमती चीज़ें हैं जो अंबिया के पास थीं, जिस पर चलने से ख़ुदा ग़ैब से मदद करेंगे, इस मेहनत के करने वालों के सामने अपने ग़ैबी ताक़त से तमाम नक़्शों को ज़ेर कर देंग। उस मेहनत के करने वालों के सामने अपनी ग़ैबी ताक़त से तमाम नक़्शों को ज़ेर कर देंगे, यह नही तो जब कोई मस्अला उलझा घर का, ज़मीन का इम्तिहान का, मुक़द्दमे का तो वक़्ती तौर पर वक़्त लगा दिया और अगर मस्अला हल न हो तो इस तब्लीग़ ही को सलाम किया। सहाबा किराम को पन्द्रह साल तक सिर्फ़ तक्लीफ़ें मिली हैं। यक़ीन ग़ैब पर जमाते रहे। मुस्अब रज़ि० का हाल बचपन का, उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० को भी मालदारी के बावजूद इस्लाम के बाद इनके चचा ने ख़ाल में (चटाई में) उलटा करके नीचे से धुंवा की धुनी दी। पंद्रह साल तक लगातार तक्लीफ़ें उठाई और इसके साथ यह यक़ीन है कि ख़ुदा अपनी कुदरत से करेंगे, वक़्ती उबाल की तरह वक़्त लगाने से उन आमाल की ताक़त नहीं मिलती है बल्कि इस्तिक़ामत से उन आमाल में से हर अमल की कुव्वत ज़ाहिर होगी। इस्तिक़लाल से लगे रहें और हर मर्तबा पहले से ज़्यादा के साथ कुरबानी दें और मक़ाम पर रहकर भी उन आमाले ख़म्सा पर अमल करते रहें, ईमान की बातें करते रहें। चीज़ों से होने का इंकार और आमाल से होने का इक़रार, इसे बार-बार कहा जाएगा तब दिल में उतरेगी। ईमान के बोल हमारे तकिए कलाम बन जाएं, बातचीत के उन्वान हर जगह यही हो कि

किसी कुछ नहीं सिर्फ़ ख़ुदा से है और हम यह कहते हैं कि हुज़ूर आपके हाथ में है, नहीं डरो और कहो कि तुझे भी ख़ुदा ने पैदा किया है और मुझे भी हम दोनों इसके इख़्तियार में है वग़ैरह, वग़ैरह। ज़िक्र पर यक़ीन जम जाए फिर दुआएं दी हैं। जिसमें तमाम बुराइयों से बचने की दुआएं हैं, बस यह है कि इन दुआओं से पहले ईमान हासिल कर लिया जाए। अगर पेड़ की जड़ है तो पत्ता भी सब्ज़, वरना सारा पेड़ कमज़ोर हो जाएगा, ऐसे ही ईमान भी जड़ है। आज जड़ नहीं है, माल पर यक़ीन है। इसके साथ दुआ कैसे क़ुबूल हो, पत्ते कैसे सब्ज़ मिले, यक़ीन बदलने की मेहनत करो, आमाल का इल्म हासिल करो। ख़ुदा का ध्यान करो, नमाज़ के साथ हुस्ने अख़्लाक़ ले लो, उन आमाल पर ही मिलने का यक़ीन जमा लो और तमाम मुशाहेदात से यक़ीन हटा लो, इसी के दाई बनो, दावत भी दो मश्क़ भी करो, शुरू में कुछ दीन हालत दुरूस्त न होंगे। इम्तिहान होगा। लेकिन आख़िर में इस्तिक़ामत पर नतीजे हमारे हक़ में होगा। وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ आख़िर में इस्लाम चमकता है। इस्लाम को तोड़ने वाले को इस्लाम का जोड़ने वाला बना देते हैं, ख़ुदा ही दिल को बदल सकते हैं। बहुत से कुफ़्फ़ार ने क़सम खाई थी कि इस्लाम में आना गवारा नहीं है मर जाएंगे जैसे अम्र बिन आस, ख़ालिद बिन वलीद, ख़ुदा ने दिल फेर दिया, जिसका दिल फेर दिया ख़ुद को रोक न सकेगा इस्लाम से। चाहे वह वज़ीरे आज़म या सदर ही क्यों न हों, लेकिन शर्त यह है कि मेहनत करके दुआ करो। उन नेक आमाल को ज़िन्दा करके ईमान हासिल करो, फिर जिस तरह चाहे कर देंगे। अक्सीरियत को कम कम करके, अक़लियत बना सकते हैं, अल्लाह तआला ने ख़ुद कहा है निज़ाम बनाना हमारा काम है, तुम पर तो सिर्फ़ मेहनत करना है 16 घंटे इन चार चीज़ों में गुज़ार दें 6 घंटे नींद, दो घंटे खाना-पकाना, दावत इज्तिमाई, गश्त, बयान, दावत इंफ़िरादी, तालीम, इज्तिमाई तालीम इंफ़िरादी, नफ़्लों का एहतिमाम, नफ़्ल इज्तिमाई,

नफ़्ल इंफ़िरादी, ज़िक्र का एहतिमाम, ख़िदमत गुज़ारी भी साथ हो। इससे यक़ीन बनता है, इससे आलम बदलेगा, फिर आमाल आएंगे, बस आमाल बहुत क़ीमती हैं, एक बात उनमें से कहना दुनिया के सारे सोने से क़ीमती है। अगर ये आमले ख़म्सा ज़ाती हो तो ज़ाती मसअले हल होंगे, इज्तिमाई हो तो इज्तिमाई हल होंगे। फिर ईमान व तालीम के बाद कमाने में लगें, तमाम मुहरमात व शबाहत से बचें। घरेलू ज़िंदगी भी तर्तीब बनेगी, इन आमाल के माइने यक़ीन का पैदा करना, इनको रवाज देना, इन आमाल को कमाने से एक दिन में एक महीने की कमाई से ज़्यादा मिलेगा। आज 500 के साथ 1000 की मुसीबत आती है। आज मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम सबके हालत ख़राब हैं, जब बाहर निकलकर 16 घंटे इन कामों को किया तो वापस जाकर कम से कम उन कामों को चार घंटे कर लो। उससे से सीखा हुआ बाक़ी रहेगा। जब कसरत शुरू करता तो शुरू में दर्द होता रहता है फिर चुस्ती तसल्लसुल बाक़ी रहेगी। छोड़ देने से चुस्ती चली जाएगी, दोबारा शुरू करने से फिर दर्द होगा। ऐसे ही तब्लीग़ में सीखी हुई बातें रोज़ करते रहे, वापस जाकर मज़ेदार हुक़्क़ा, मज़ेदार सालन, जल्दी सोना वग़ैरह। कुछ तो दिन सताने में लगा दिया, ग़ैर हाज़िरी के हालात लोगों से मालूम किए तो इकराम छोड़कर ग़ीबत शुरू कर दी। मस्जिद में रहते तो उन तमाम बातों से बच जाते। गया था इस वास्ते कि पिछला ग़ुबार निकल जाए, वापस आते ही और गुबार ले लिया, इस सूरत में दोबारा अल्लाह के रास्ते में निकलना भारी मालूम होगा। अगर वापस जाकर भी उन आमाले ख़म्सा में लगे रहे तो दोबारा निकलना आसान होगा।

उमूमी बयान न० 2

अगर कुदरत अस्बाब में मुक़ीद हो तो यह नाक़िस कुदरत ख़ुदा कामिल कुदरत वाला हैं

फ़जर के बाद, दिन, सनीचर, 28, अप्रैल, 1962 ई०

ख़ुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

आदमी के बिगड़ने के लिए कुछ करना नहीं पड़ता है, बस जो कुछ दिखाई दे जिस तरह अपनी समझ में आए उसी तरह मेहनत करे बिगड़ जाएगा। बनने और कामियाब होने के लिए मेहनत की ज़रूरत है। जानवर बनने के लिए किसी क़सम की ज़रूरत नहीं कि वह अपने मुशाहेदे पर चलता है और मुशाहेदे से यक़ीन बिगड़ा, यक़ीन से आमाल ख़राब हुए। जिससे दुनिया व आख़िरत में और हश्र में मुसीबत ही मुसीबत मिलेगी और अगर मुशाहेदा और इम्तिसाल हुक्म पर मेहनत करे तो इससे आदमी बनता है और थोड़ी सी तक्लीफ़ के बाद तआत वाली ज़िंदगी से दुनिया व क़ब्र व हश्र व पुल सिरात व जन्नत में मज़े करता है। जबकि इम्तिसाल अम्रे इलाही पर कुछ मेहनत कर ले, अपने ऊपर मेहनत करने से इंसान के जोहर खिलते हैं इन जोहारों की वजह से ही ख़ुदा ने अपने तमाम फ़रिश्तों से सज्दा करवाया इंसानों को और इन जोहारों के खिलने के बाद फ़रिश्ते और जानवर इनके सामने झुक जाते हैं। तालिब इल्म के लिए सत्तर (70) हज़ार फ़रिश्ते इसके सामने झुकते हैं और यह इस पर चलता है और एक फ़रिश्ता देहली जैसे शहर को उलट सकता है और जब तलब पर यह है तो अमल पर क्या

मिलेगा। बस इसके सामने अहकाम का मानना हो कि इससे गैब से दरवाज़े खुलेंगे। नेक बन जाए बजाए मालदार व दुकानदार वग़ैरह बनने के, तो यह ख़ूब मज़े करता है और इसके तमाम जवाहर ख़िलाफ़त ख़ुदावंदी के निखर आते और इनके इनामों के दरवाज़े खुल जाते हैं और फ़रिश्ते इसके सामने पस्त होंगे जैसे आदम के सामने, आंख देखने पर न चलना बल्कि आंख देखे को कुरबान करके अहकाम पर चलाना। अगर पहली सूरत हो तो इंसान जानवरों के साथ मिल जाता है चलने वाले जानवर सब्ज़े की तरह चल देंगे, डंडे से सब भागेंगे, सारे जानवर देखे के मुताबिक़ खा-पी रहे हैं। आगे पीछे हो रहे हैं, अपनी सीरत व किरदार में, मुशाहेदा को कुरबान करके अहकाम पर चले, चाहे कितना ही नुक़्सान हो जाए माल व जान तो फिर यह इंसान क़ीमती है। ताक़तवर फ़रिश्तों से ज़्यादा ताक़तवर बनता है। अंबिया सिर्फ़ अहकाम पर क़दम उठाते हैं, मुशाहेदे पर नहीं, नुबूवत से पहले मूसा अलै० से ख़ून हो गया, तो मिस्र से मदाइन जाकर चारवाहा बन गए। आठ-दस साल बाद अपनी बीवी लेकर चले, दर्द शुरू हुआ, रोशनी देखकर आग लेने गए यहां तक कि मुशाहेदे की ज़िंदगी है इसके बाद अल्लाह ने बातें करके सीधे फ़िऔन के पास भेज दिया कि इसे जाकर समझाऊं, यहां से वह गैब व अह्काम पर चलने वाले बन गए है। हालांकि इस हुकूमत के पास जाना जिसने सख़्त मुख़ालफ़त कर रखी है और इससे ऐसी बात कहलवाना कि वह बंदा है ख़ुदा नहीं और सारे मिस्र वाले उसे पूज रहे हैं। मूसा अलै० ने मुशाहेदा को कुरबान किया, फ़िऔन के पास जा रहे हैं हक़ कहने और ऐसे ही बीवी बीमार, और बच्चा और कमाई को छोड़कर सीधे चले गए यह नबी का पहला क़दम है मुशाहेदे को तर्क करके अह्काम पर चल देना, चलकर सीधे दरबार में पहुंचे, इससे बात की कहा, तो वही है जिसने क़त्ल किया था कहा, हां, ग़लती हो गई, तमाम मिम्बर पारलिमन्ट के सामने फ़िऔन को ज़लील करते रहे। मूसा अलै०

ख़ुद भी और अपनी क़ौम को भी मुशाहेदों के ख़िलाफ़ चलाते रहे सिर्फ़ अह्काम पर आख़िर में अल्लाह ने फ़िऔन व फ़ौजियों को एक दरिया में डूबो दिया। मूसा अलै० अह्काम पर चलने वालों के लिए आसमान से खाने उतार दिए, मुल्क मिस्र हाथ में आने के बाद मूसा अलै० ने ख़ुदा ने उमालक़ा से लड़ने को कहा है उमालक़ा बहुत ऊंचे और ताक़तवर थे कि बनी इसराइल को अपने हाथ में दबाकर मार सकते थे। मूसा अलै० ने पहले क़ौम के नुमाइन्दे वहां भेज दिए और बादशाह ने अपने नुमाइन्दे बग़ल में दबा लिया कि मारो वहां से डरकर क़ौम को लड़ने से डरा दिया कि वह हमें कच्चा चबा लेंगे, अगर्चे मुशाहेदे के ख़िलाफ़ चलने की कामियाबी देख चुके थे लेकिन यहां मुशहेदे पर चलने वाले बन गए थे और कई साल तक ठोकरे खाते रहे अपनी क़ौम को ख़ूब समझाया और दो आदमियों ने भी लेकिन क़ौम मानकर न दी اذهب
انت وربك فقاتلا انا ههنا قاعدون मूसा अलै० व हारून अलै० सिर्फ़ दोनों ने जाकर क़ौम उमालक़ा पर फ़त्ह पा ली। अब मूसा अलै० के इंतिक़ाल का वक़्त आया, मलाकुल मौत को देखकर बड़े–बड़ों की घीगी बंदा जाती है मलाकुल मौत से पूछा क्यों आए हो। जान निकालने आपकी ज़ोर से उस पर थप्पड़ मारा कि आंख फूट गई, ख़ुदा के पास जाकर कहा के ऐसे के पास भेजा कि आंख फोड़ दी, फ़रमाया उससे कहो कि अगर ज़िंदा रहना है तो बाल पर हाथ रख दो, इतने बालों के ब–क़द्र साल दिए जाएंगे कहा कि इसके बाद क्या ? कहा मौत, कहा, अभी रूह निकल लो। अह्काम पर चलने की वजह से ग़ैब की ताक़तें ज़ेर हो जाएंगी, इज़राइल के सामने जिब्रील व इसराफ़िल व हम्मलातुल अर्श चूं नहीं कर सकते हैं। ज़बरदस्त फ़रिश्ते बाद में मूसा अलै० से इजाज़त लेकर रूह निकलता है इस्लाम आंखों देखी पर चलने का नाम नहीं है बल्कि मुशहेदे के ख़िलाफ़ चलना है और इसी की मश्क़ करनी है मुशहेदे के ख़िलाफ़ चलने से दीन आएगा। तो बग़ैर अस्बाब ज़ाहीरी के

दीन वाले उन इंसानों पर ग़ालिब आ जाएंगे, जो सिर्फ़ मुशाहेदे पर चलने वाले हों। ज़माने नुबूवत 23 साल में ख़िलाफ़ मुशाहेदा चलने की मश्क़ की गई है कि मक्का में कलमा पढ़ते ही मकान व दुकान ज़ब्त मां–बाप बीवी, रिश्तेदार मुखालिफ़, मारने पर उतर आ रहे हैं पीट रहा है तक्लीफ़ें बरदाश्त कर रहा है लेकिन इस सारे मुशाहेदे के ख़िलाफ़ दीन पर चल रहे हैं। तलहा रज़ि० ने कलिमा पढ़ा पीछे–पीछे मां, औरत जूते मारती जाती है और गालियां बकती है। मुसअब बिन उमैर रज़ि० इस्लाम से पहले इनके मां–बाप इन्हें अव्वल दर्जे का लिबास व जूती व खाना देते थे। अब कलिमे के बाद वहीं मां खाना बन्द करके सुबह–शाम मारती है, वहां से हब्शा की हिजरत की। फ़ाक़ों की वजह से सूखकर कांटा हो गए अराम, राहत, पैसा सब ख़त्म लेकिन फिर भी तक्लीफ़ों के साथ चल रहे हैं। उस्मान रज़ि० को कलिमा के बाद इनके चचा ने एक चटाई में लिपटकर भट्टी के धुवां में लटका दिया। बिलाल रज़ि० का कलिमा के बाद मक्का के लड़के जानवरों की तरह घसीटते फिर रहे हैं ख़ूब ख़ून निकल रहा है। उस्मान बिन मज़ऊन की आंख फूट गई, अम्मार की वालिदा को ज़ोर से ख़ंजर मारा जिससे शर्मगाह से सीने तक की जगह फट गई और मर गई, अम्मार को हौज़ में डालकर डुबाया गया। अब कलिमे की मश्क़ में आंख देखी का मुशाहेदा हुआ, कलिमा के मुख़ालफिन कहते कि हमारी कुव्वत से हुआ है कलिमा वाले कहते हां ख़ुदा के करने से हो रहा है जब चाहेंगे पलट देंगे। हिजरत की हब्शा की तरफ़, मक्का वाले उन्हें हब्शा लेने गए बादशाह ईसाइ है बादशाह ने उन्हें अम्न दे दिया है। अम्र बिन आस ने कहा आज में इनको बादशाह से मरवाऊंगा। साथियों ने कहा ऐसी बात व ज़ुल्म अपने साथियों व क़ौम वालों पर मत करो। अम्र बिन आस रज़ि० ने कहा ऐ वाली हब्शा ईसा अलै० के बारे में यह लोग ग़लत बात कहते हैं। नजाशी ने सबको बुला भेजा, मुसलमानों ने ख़ुदा पर तवक्कुल करके हज़रत जाफ़र

को आगे बढ़ा दिया। इन्होंने ईसा अलै० के मुताल्लिक़ आयतें सुना दी सारे रो रहे हैं। अम्र बिन आस ने जब यह देखा तो उसने बादशाह से कहा उन लोगों को मारो, बादशाह ने डांट दिया, 13, तेरह साल मक्का में मुशाहेदा के ख़िलाफ़ चलते रहे। फिर मदीना के पहले शुरू साल भी इस तरह हैं चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि अबू सुफ़ियान तिजारत का काफ़िला लेकर आ रहा है। उनसे चलकर हाथियार सामान ले लेंगे, न होगा बांस न बजेगी बंसूरी। अब यहां मुशाहेदे के मुताबिक़ चलकर एक काफ़िला तिजारत को 313 आसानी से लूट सकते हैं उधर अबू सुफ़ियान रास्ते बदलकर चले गए। काफ़िला मुसलमान के हाथों नहीं आया, ज़म ज़म गिफ़ारी को अबू सुफ़ियान ने मक्का भेजा कि मुसलमानों ने घेर लिया है उस पर जोश में आकर एक हज़ार लश्कर जिरा तैयार होकर निकल पड़ा, अहले बद्र के पास दो घोड़े, चंद तलवारे दस दस के लिए एक ऊंट अब हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि क्या करना है ? अबूबक्र रज़ि० और उमर रज़ि० ने कहा हम लड़ने के लिए तैयार होकर नहीं आए हैं। वैसे जो हुक्म हो, मिक़्दार रज़ि० ने कहा कि हुज़ूर सल्ल० हुक्म फ़रमा दें, बनी इसराइल की तरह मुशहेदे पर न चलेंगे मारना अगर हाथ में नहीं तो मर जाना तो हाथ में है। इस पर पूछा क्या राय है अंसार से कहा कि हमसे पूछना चाहते हैं मुशहेदे को तर्क करके अहकाम पर आ गए हैं हुक्म हो तो पहाड़ों से गिरकर मर जाएं, पानी में डूब जाएं, फ़लां जगह तक चले जाएं। जिसकी रस्सी आप काटें, जिसकी आप जोड़ें, अब यहां हुज़ूर सल्ल० ने पहले ही ख़ुशख़बरी दे दी कि यहां फ़लां मरेगा, यहां फ़लां। अब आगे बढ़े पंद्रह साल बाद पांच हज़ार फ़रिश्ते उतर रहे हैं उन पंद्रह साल में बहुत मुसीबतें उठाई, छ दिन में एक चमड़े की राख फांकी और हम दस बीस दिन के बाद चाहते हैं। ख़ुदा दिखा दे, हालांकि उन बीस दिनों में तब्लीग़ भी अपनी कमाई ज़िंदगी घरेलू हाजतें देखकर कर रहे हैं और वहां पंद्रह साल बाद

फ़रिश्ते गै़र–मुस्लिमों को मार रहे हैं और बांधकर मुसलमान को दे रहे हैं और लकड़ी सहाबी के हाथ में आते ही हुज़ूर सल्ल० के साथ से तलवार बन गई। कुदरत का मुशाहेदा 15 साल बाद हुआ है बगै़र अस्बाब के जीत गए यह फ़त्ह ऐसी थी कि इसकी इत्तिला जब मक्का वालों व मदीना पहुंची किसी को शुरू में यक़ीन नहीं आया। मक्का में ख़बर पहुंची अबू लहब ने कहा, भतीजे बताओ 313 हज़ार पर कैसे ग़ालिब हुए, कहा, चचा जान वहां तो आसमान से बड़े–बड़े फ़रिश्ते उतर आए थे उन पर कैसे काबू पाते। मदीना में ख़बर पहुंची तो मुनाफ़िक़ों और यहूदियों न माने कि नहीं सारे मुसलमान मारे गए। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी मारे गए, अगर वह ज़िंदा होते तो उन्हें अपनी ऊंटनी की ज़रूरत होती। उनके मरने के बाद यह ऊंटनी ले आए हैं, इससे ज़ैद रज़ि० का दिमाग़ फैल हो गया। हालांकि हुज़ूर सल्ल० ने ऊंटनी ज़्यादती ताकीद के लिए भेजी थी, उसामा कहते हैं कि मैंने भी घर आकर अब्बा जान से पूछा, कि क्या यह सच बात है। उन्होंने कहा ”ای واللہ“ کہا किसी को उस वक़्त तक यक़ीन न आया यहूदी मुनाफ़िक़ों में जब तक मुसलमान अपनी साथ सरदार उन कुरैश को बांधकर अपने साथ न लाए और माले ग़नीमत भी साथ था अब ख़ुदा ने दिखा दिया कि जब ख़िलाफ़े मुशाहेदे पर चलोगे तो इस तरह नुसरतें होंगी। अब ख़ुदा के दिखा देने के बाद उनका ईमान व यक़ीन और बढ़ा, हुज़ूर सल्ल० अब्दुल्लाह बिन जहश को पर्चा देकर 9, 10 के साथ रवाना किया, जहां जाना वह उस पर्चे में लिखा है फ़्लां जगह जाकर इसे खोलना। अब जा रहे हैं पता नहीं कि कहां जा रहे हैं पर्चे को खोला उसमें था कि तुम मक्का व ताइफ़ के दर्मियान जाकर पड़ जाओ, यह सबसे ख़तरनाक जगह है। सिर्फ़ अमीर के लिए हुक्म ज़रूरी है, बाक़ी लोग मुख़तार हैं ऐसे ही एक जमाअत के पास खाने को कुछ नहीं था। हुज़ूर सल्ल० ने दुआ फ़रमा दी, गए और आए और भूख ही न लगी, यहां पर भी

ख़िलाफ़े मुशाहेदे क़दम उठाया। बग़ैर तैयार व खाने के चल पड़े, फिर अल्लाह की नुसरतें हुई, ऐसी बड़ी मछली फेंकी जिसे 318 ने रोज़ खाया, आसमान से खाने उतरे, डोल के ज़रिए दूध दिया। आज मुशाहेदे पर चलने की वजह से जैसे कमाई से मिलता है ऐसे ही मुशाहेदे के ख़िलाफ़ चलने पर मिक़्दार को पेशाब के वक़्त चूहा 17 अशरफ़ियां दे गया। ﴿ومن يتق الله يجعل له مخرجا﴾ हुज़ूर सल्ल० ने जवाब में यह आयत पढ़ी थी, भूख से बच्चा परेशान बाप जंगल गया मां ने इख़्फ़ा हाल के लिए सिर्फ़ तन्दूर जला दिया कि आग देखकर लोग मुतमइन हो जाएंगे। इसके बाद इस मां ने अंदर जाकर दो रक्अत पढ़ी, बाप ने जंगल में जाकर दो रक्अत पढ़कर दुआ मांगी, मां ने बाहर निकलकर देखा कि चक्की ख़ुद ब ख़ुद चल रही है और आटा निकल रहा है। हांडी में गोश्त ख़ुद पक रहा है तंदूर में रोटियां ख़ुद ब ख़ुद लग रही हैं, बाप वापस आए मां ने यह सब दिखाया। हम कमाए बग़ैर दिखा सकते हैं लेकिन उस वक़्त ही जब मुशाहेदे के ख़िलाफ़ क़दम उठाता रहे, तब्लीग़ में भी उस वक़्त क़ुदरत से दे सकते हैं जबकि यह मुशाहेदे के ख़िलाफ़ हर हाल में निकलने वाले बन जाएं, सलमान रज़ि० व अबूद्दर्दा रज़ि० बैठे हैं पास की हांडी से तस्बीह की आवाज़ आ रही है इतने में हांडी ऊपर से उठी और ख़ूब उलट–पलट हो रही थी। अबूद्दर्दा रज़ि० ने शोर मचाया सलमान रज़ि० ने देखा क्या हो रहा है ? इतने में हांडी अपनी जगह आ गई। सलमान ने कहा मैं देख रहा था ख़ामोश रहे तो सब क़ुदरत को देखते आज लोग देख रहे हैं कि ख़ुदा ने ज़मीन व आसमान में क्या बनाया है। अंबिया ने लोगों के सामने क़ुदरत ख़ुदा दिखाई, जैल व इलज़ाम में पड़े हुए कैसे क़ुदरत से बादशाह बन जाते हैं मुस्लिम उसी वास्ते बने कि क़ुदरत को साथ ले लें। वरना हमारी और ग़ैर–मुस्लिम ज़िंदगी में क्या फ़र्क़ रहेगा ? मुस्लिम तो मुशाहेदे के ख़िलाफ़ चलने वाले थे, अबू

मुस्लिम खौलानी रज़ि० अस्वद अन्सी ने बुलाया और अपनी नबी होने की गवाही दिलवाई तो कहा यह सुनाई नहीं देता। हुज़ूर सल्ल० नबी हैं ? कहा, हां कहा, मैं नबी हूं कहा, सुनाई नहीं देता। आग में डाला, आग ने असर न किया, 24 साल मुशक्क़त व ख़िलाफ़ मुशाहेदे चलने पर आग से न जलना देखा, लोगों ने कहा उस शख़्स को यहां से जल्द रवाना कर दो वरना लोगों को मालूम हो गया तो सारे इसके नबी वाले बन जाएंगे। यहां से चले जाओ, जा रहे हैं, मस्जिद नुबूवी में आकर बैठे, कहां से कहा यमन से, क़िस्सा चूंकि मशहूर हो चुका था, इस वजह से इससे पूछा हमारे उस भाई का क्या हुआ जो आग में डाला गया। कहा, बच गया कहा, इसका नाम, कहा अबू मुस्लिम ख़ौलानी रज़ि० इस जवाब से उमर रज़ि० को अंदाज़ा हुआ कि कही यही तो नहीं, कहा तुम तो नहीं, कहा, हां, गले मिले। सिद्दीक़ रज़ि० से जाकर मिलाया जिसे ख़लील–अल्लाह की तरह आग से बचाया है मुशहेदे के ख़िलाफ़ रहे हैं। दो साल के कहत के बाद फ़स्ल तैयार है खजूरों की, अब हुक्म मिल जाने पर कम से कम 30, 40, 70 हज़ार आदमी दो महीने के लिए मदीना से चले गए अपनी तमाम फ़सलों को छोड़कर, प्यास सख़्त लगी, लोगों ने ओझड़ी को निचोड़कर पानी पिया। उस सर व जिगर पर रखा कि ठंडक का असर पहुंचे, अपने ऊंट को नहीं पहचान सकता था। अब मुशाहेदे के ख़िलाफ़ चलकर तक्लीफ़ें उठा लें, अब हुज़ूर सल्ल० ने एक प्याले में पानी भरकर उसमें उंगलियां रख दी। सबने देखा कि हुज़ूर सल्ल० की उंगलियों से चश्में निकल रहे हैं, सारे इस प्याले से सेराब हो गए जब इस तरह कुरबानी के ख़िलाफ़ मुशाहेदा चल रहे है। अब कैसे दरवाज़े खुले दौर सिद्दीक़ में यमन में अला हज़रमी रज़ि० तय्यमुम करके नमज़ पढ़कर दुआ मांगी और उस वक़्त तक हाथ नीचे न किए जब तक ज़मीन फटकर आवाज न आई पानी निकलने की। ऐसे ही दुआ पर खाना रखा जा रहा है, रखने वाला नज़र नहीं आता है उम्मे शरीक रज़ि०

प्यास में दुआ मांगर लेटीं, आसमान से डोल उतरा, चमकदार रस्सी दूध से ज़्यादा सफ़ेद, मुश्क से ज़्यादा ख़ुश्बूदार, बे–हद मीठा, उसके पीने के बाद कभी प्यास न लगी। अगरचे रोज़ा रखकर ख़ूब धूप में बैंठी, लेकिन प्यास न लगी, कुदरत के अजब मंज़र है, जब यह कुदरत किसी के मुवाफ़क़त में आ जाए तो हुकूमत क़दमों में, अक्सीरियत और अक़लियत सब झुकें। कुदरत से इस्तिफ़ादा उसी वक़्त करेंगे जब मुशाहेदे के ख़िलाफ़ अहकाम पर चलेंगे, सब कुछ हमें अस्बाब में नज़र आता है। लेकिन कुरआन व हदीस का एक–एक वर्क़ बताएगा कि सब कुछ कुदरत से हो रहा है किसी ज़ाहिरी सबब के बग़ैर एक शख़्स ने कहा, पैसे थोड़े हैं पैसे थोड़े हैं, हज कराने पर ख़ुदा क़ादिर तो है। अरे ख़ुदा तो उन पैसों के बग़ैर भी करा सकत हैं। लेकिन उनकी कुदरत से काम लेना तो तुमको आ जाएगा दुआ करो। कैस बहुत सख़्त है और ख़ुदा बहुत क़ादिर हैं, क़र्ज़ा बहुत है ख़ुदा क़ादिर है लेकिन कुदरत के साथ लेने के लिए उसूल व ज़वाबित हैं। ख़ुदा क़ादिर है कि क़ातिल व दुश्मन को ख़ादिम बना दे, ख़ून लेने वाले को ख़ून देने वाला बना दे। यह मुशाहेदे वाला रास्ता बहुत ज़लील है, वक़्ती ज़िंदगी बनी हुई है। जब अज़ाब आएगा तो दुनिया व आख़िरत में याद करेंगे, वरना मरने के बाद तमाशे देखेंगे, उस वक़्ती रास्ते पर इतनी मेहनत हो रही है आज और अब्दी रास्ते में जिसमे दुनिया, क़ब्र, हश्र, जहन्नम व जन्नत में कुदरत से इस्तिफ़ादा करेंगे। इसके लिए कुछ मेहनत नहीं है, बग़ैर मेहनत परिन्दा सामने और सोहबत के बाद बीवी फ़िर कुंवारी। जिस दुकान व ज़मीन व मुल्क से सिर्फ़ मरने तक मिले उसके लिए तो मेहनत की ज़रूरत है और जिस क़द्र हमेशा के लिए मिलेगा। उसके लिए मेहनत की ज़रूरत नहीं ? इसमें किसी भी दुन्यावी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, मुशाहेदे से नज़र हटाकर गैबी कुदरत पर यक़ीन आए, पैसा व कमाई की शक्लों, माल व मुल्क के नक़्शों से यक़ीन हटे और कुदरत पर आए, चाहे

चीज़ें तुम्हारे पास हो या न हों बराबर है लेकिन चीज़ों पर यक़ीन न होना हर हाल में ज़रूरी है। जिस पर कुदरत बग़ैर चीज़ों के काम कर देगी, अगर कुदरत अस्बाब में मुफ़ीद हो तो यह नाक़िस कुदरत है, ख़ुदा कामिल कुदरत वाले हैं पहले कुछ न था, यह आसमान, ज़मीन खड़ा कर दिया। फिर उसे गिरा देंगे पहले भैंस, पहला दाना गन्दुम, पहला इंसान अपने कुदरत से पैदा किया, आख़िर में सबको ख़त्म करके कहेंगे, कुदरत असल है उस पर हर चीज़ मौकूफ़ है। इससे हर चीज़ बनी है इसी से काम करते हैं, हर चीज़ तर्सरूफ़ करते हैं लेकिन कुदरत उसी वक़्त साथ होगी जब मुशाहेदे के ख़िलाफ़ अहकाम व कुदरत पर आ जाएं। किसी चीज़ का यक़ीन न हो, चाहे पास हो या न हो, उस यक़ीन के बनने की मश्क़ की ज़रूरत है उसी के लिए निकलना है। जिसके बाद आमाल पर चलना आसान होगा, थोड़े से अमल है दावत, ईमान, तालीम, ज़िक्र, नमाज़ व ख़िदमत इनमें लगो और दूसरों को लगाओ कि उन आमाल पर मेहनत करने से ख़ुदा उन पर देंगे और इलैक्शन, मिम्बरी, हुकूमत, ज़मीन, तिजारत वाले देखने पर बनने वाले यक़ीन को हटा दो और मुल्क व माल के नक़्शे में लोग हज़ाक बर्बाद है बे-चैन होंगे और तुम्हें बग़ैर नक़्शों के कामियाब कर देंगे। इस यक़ीन के लिए यह आमाल ख़म्सा हैं उन आमाल पर यक़ीन भी हो, कमाई से कुछ नहीं होता यह आमाल करेंगे और फैलाएंगे ख़ुदा ग़ैब से हमारी कामियाबी के रास्ते निकालेंगे। आज हमें कुदरत पर यक़ीन है लेकिन अस्बाब के रास्ते से, अल्लाह और मुहम्मद सल्ल० के रास्ते का यक़ीन हो, हुज़ूर सल्ल० ने माल इकट्ठा किया, हुकूमत न बनाई, इनका यक़ीन उन आमाले ख़म्सा पर ही था। पर आमाल तब्दील यक़ीन के लिए हैं, एक दफ़ा बात कर रहा था, हिन्दु ने सुनकर कहा बड़ी सच्ची बात है लेकिन हमारा मुल्क बैर सड़ों के हाथ में है और ये बैर सड़ का काम यह है कि बात न हो लेकिन साबित कर दो। ऐसे ही तुम भी बैर सड़ हो कि यक़ीन है नहीं

लेकिन अपने यक़ीन साबित करते हो लिहाज़ा बीच डालने के वक़्त ग़ायब, तब्लीग़ में हैं लेकिन पीछे से इत्तिला आई कि ज़मीन जा रही है जमाअत से ग़ायब, कटाई से फ़ारिग़ हुए तो इज्तिमआ की बात ले आए, अरे जो बनने का वक़्त मुशाहेदे के मुक़ाबले का था तो उस वक़्त भाग गया, अगर ऐसे ही करता रहा, सौ साल तक तो कुदरत पर यक़ीन नहीं चमकेगा, कुदरत उसी वक़्त साथ होगी जब हम मुशाहेदे के मुक़ाबले के साथ तब्लीग़ करें। उन आमाल में हर अमल पर तर्बीयत हिफ़ाज़त बुलन्दी, इज़्ज़त, बरअदा की ख़बर दी गई है इसकी हज़ारों हदीस हैं, अल्लाह व मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन आमाल से बनना दिखाते हैं, कमाई से सिर्फ़ तुम्हारी बनेगी और उन आमाल से मश्रिक व मग़्रिब के तमाम इंसानों की बनेगी। आज हम शक्लें बना रहे हैं खुदा सेलाब, बारिश, ओले, आंधी लाकर उन शक्लों को तोड़ रहे हैं कि हमने कुदरत वाले यक़ीन को तोड़ दिया अब ख़ुदा उन नक़्शों को तोड़ने में लगे हुए हैं, पांच साल में हिन्द अपने पांव पर खड़ा हो जाएगा और कारखाने बहुत हो जाएंगे। अमेरीका व रूस का छोटा भाई बन जाएगा, लेकिन पीछे से आंधी व सेलाब ने सब कुछ बर्बाद कर दिया। अरे जब नक़्शों से किसी की नहीं बन रही है तो मेहनत करके उन पर से यक़ीन को हटाओ और यह तो ख़ास मेहनत का ज़माना है, घर से एक दिन को कहकर आए थे तो यहां से तीन महीने को चल दो, पैसा न हो तो मांगो मत, उन आमाले ख़म्सा को करके मांगो ख़ुदा से चन्द दिन में यक़ीन बदल जाएगा, वरना बहुत दिनों में बदल जाएगा। जहां से दीन व ईमान की बात सुनो वहां से अल्लाह की राह में चल दूं, मूसा अलैस्सलाम जब्ले तौर से सीधे चल पड़े।

उमूमी बयान न० 3

किताबी इस्लाम और मुशाहेदे वाला इस्लाम

फ़जर के बाद, दिन इतवार, 29, अप्रैल, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

तमाम इंसान रूह के मुताबिक़ चलते हैं, अगर सही का रिवाज हो तो आम इंसान सही पर चलते हैं और अगर ग़लत रिवाज हो तो फिर ग़लत पर चलेंगे। इसलिए कि रिवाज पर चलना आसान है इसके ख़िलाफ़ चलना मुश्किल है, पानी के बहाव पर चलना आसान है बग़ैर मेहनत के चल सकेगा। अगरचे तेज़ी के साथ न चलेंगे लेकिन थोड़ी देर बाद शऊर न रहेगा, कि कहां कांटे हैं, कहां सापं, कहां बिच्छू हैं, इसलिए मर जाएगा। बहाव के ख़िलाफ़ रिवाज के ख़िलाफ़ चलने में बहादूरी की ज़रूरत है आख़िर में यह भी थककर मर जाएंगे लेकिन उसे अच्छे बुरे की तमीज़ होगी। मौज़ी जानवर व पत्थर व सांप से बचता रहेगा। रिवाज पर चलने से सारी पब्लिग़ व सोसायटी का साथ होगा लेकिन उसमें नुक़सान से बच नहीं सकता है। रिवाज के ख़िलाफ़ चलने से वह नुक़सान से बचता हुआ चलता जाएगा और आजकल का रिवाज यह है कि अपनी अज़ीज़ जानों को मौज़ूअ बनाकर माल पर लगाना, माल को बढ़ाते रहना, जज़्बे में आकर माल इस्लाम फैलने में दिया, गोया इस्लाम उन कमाने वालों के अलावा में आएगा। अब उनसे कुछ पैसे लेकर कुछ मकान, कुछ मस्जिदें, कुछ किताबें व कुरआन मस्जिद पर रख दी जाएगीं, हालांकि इस्लाम इनमें से कोई नहीं है इस्लाम ही ज़िंदगी गुज़ारने के सही व इलाही तरीक़ों का नाम है गोया यह

माल वाले अपने तमाम कामों में आज़ाद हैं। जो काम जैसे चाहे करें, बस यह रक़म हमसे ले लो, इस्लाम को ज़िंदा करो, अब लोग उससे माल को लेकर रिसाले, अख़बारों, जलसों, तक़रीरों में लगा देते हैं। इस्लाम का कहीं पता नहीं, क्या सारा साल माल में लगने वालों के ज़िंदगी के तरीक़े का नाम इस्लाम था। अब इस्लाम मुर्दा है यह माल देने वाले अपने तरीक़ों को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ कर रहे हैं, बावजूद हज़ारों किताबों, रिसालों, इस्लामी अख़बारों, तक़रीरों के रोज़ाना मुसीबतें व बलाएं मुसलमानों पर ज़्यादा हो रही हैं। कुछ दिन बाद उन किताबों व रिसालों व आख़बारों व इमारतों में आग लगी हुई दिखाई देगी, अहले इस्लाम नहीं है जो हादसों और बलाओं से बचाए। जो किताब में इस्लाम है वह इस्लाम की किताब है इस्लाम नहीं है उसे आग लग सकती है, क़ागज पानी में गल जाएगा, हालांकि दुनिया के सोर ऐटम व हुकूमत वाले जमा हो जाएं तो अहले इस्लाम के मुक़ाबले में ये सब चीज़ें ख़ुद तबह हो जाएंगी। और सिर्फ़ अख़बारी व नक़ली इस्लाम से वे लोग भी शेर हो जाते हैं, जो एक धमकी से मर सकते हैं। सहाबा रज़ि० के पास असल इस्लाम था मस्जिद की छत पक्की न थी फ़र्श कच्चा था, बारिश से बचाव का इंतिज़ाम न था। बिजली, घंटे, वुज़ू के पानी का इंतिज़ाम न था लेकिन हर वक़्त आबादी थी, कभी दावत के हलक़े, कभी ईमान की बातें, कभी इल्म व ज़िक्र की महफ़िलें, कभी एक दूसरे की ख़िदमत में लगे हुए हैं। इससे किसरा व क़ैसर ज़ेर हो रहे हैं, हिन्दुस्तान पर मुसलमान काबिस थे तमाम उहूदों पर मौजूद थे, लाल क़िला वग़ैरह तुम्हारे क़ब्ज़े में थे। उस वक़्त इस्लाम के कामिल न होने की वजह से तुम ख़ुद को मुसीबतों से न बचा सके और आज उससे कम माल व हुकूमत के नक़्शे से तुम कैसे मुसीबतों से बच सकोगे। चूंकि ज़हन में है कि इस्लाम से सहाबा रज़ि० चमके किसरा, क़ैसर मरे इस वजह से मुसीबतों से बचने के लिए माल देने हैं माल लेने वाले इमारत बनाकर उस

शख़्स को दिखा देते हैं वह बहुत खुश होता है कि इसके माल से इस्लाम चमक रहा है। पचास हज़ार रूपये की इमारत से, हालांकि एक पक्के मकान पर हुज़ूर सल्ल० का मुंह चिढ़ गया था। इस्लाम की आज तरक़्क़ी यह है, 50 हज़ार की मस्जिद बिजली व पानी व रंग पर हज़ार हज़ार और लग गए अरे यह निशानी किसरा व क़ैसर की है इस्लाम की नहीं है, चाहे मस्जिद कच्ची होती और उनमें आमाल ख़म्सा होते रहते तो यह हक़ीक़तन इस्लाम ज़िंदा है, घंटा, दरी, रंग, गुस्लखाने चाहे न हों, जो चीज़ें इस्लाम के नाम पर नहीं, इन्हीं को इस्लाम कहने लगे। हालांकि चीज़ों इस्लाम न हैं न होंगी, इस्लाम यह है कि हुज़ूर सल्ल० की तरीक़े पर माल व जान लगे। आज उमूमी मंज़र इस्लाम के मिटने का है हायात का नहीं, पहले बुनियाद समझे फिर कोशीश करें, शुरू इब्तिदा इंसानियत से आजतक दो लाइनों पर मेहनत हो रही है एक लाइन पर अंबिया और दूसरी पर तमाम इंसान मेहनत करते आए। दोनों का कुरआन में ज़िक्र है चौबीस घंटों में हम दोनों का ज़िक्र चालीस, पचास मर्तबा करते हैं। اهدنا الصراط المستقيم صراط الذين انعمت عليهم غير المغضوب عليهم ولا الضالين.

पहले बुनियाद ख़ुदा ने क़ायम की الحمدلله رب العالمين तर्बीयत करने वाले अल्लाह हैं, तमाम इज्तिमाई इंसनों के मसअले, मुल्की, क़ौमी, जलूत–ख़लूत के भूख व प्यास के उन तमाम मस्अलों के करने वाले सिर्फ़ ख़ुदा हैं, कुदरत से चीज़ें तक़्सीम होती है, कुदरत से ही अम्न, ख़ौफ़, बला, रहमत, बरकत आती है हर चीज़ उनकी तरफ़ से होती है जो चीज़ जहां से होती नज़र आ रही है वे वहां से नहीं हो रही है यह ला इला इलाह है बल्कि ख़ुदा की कुदरत से हो रहा है। यह इल्लल्लाह है अब कामियाबी नज़र आने वाली चीज़ों से लेना चाहो तो न मिलेगी। कामियाबी अपने मख़ज़ून यानी ख़ुदा से मिलेगी, यहां मरक़ज़ फ़्लां तै हो गया, मौत व हायात, ज़िंदगी का ताल्लुक़ किसी चीज़ नहीं है बल्कि कुदरत से है अल्लाह

की मरकज़ियात क़ायम की बाक़ी तमाम अश्या को ख़त्म कर दी। उन अश्या पर मेहनत करना ऐसा है जैसे बांझ औरत या बंजर ज़मीन पर मेहनत करें। तो इससे इंसानी व जिन्सी पैदावार नहीं होगी, ऐसे ही उन चीज़ों पर मेहनत करने से मस्अले हल न होंगे कि उन मस्अलों का ताल्लुक़ सिर्फ़ ख़ुदा से है एक इंसानी लाइन यह है कि राकेट, बम, ऐटम, रेल, बस, गाड़ी, अक्सीरियत से यह होगा। अंबिया वाली लाइन से यह है कि सिर्फ़ कुदरत से होता है ग़ैर से नहीं, कायनात के नक्शों से होता है यह बुनियाद अदाद अंबिया की है, अंबिया ने आकर इसकी तरदीद की सिर्फ़ अल्लाह से होगा आज मुसलमान उस बुनियाद को मान लेता है कि मुक़द्दमा है शादी की बात तै हो जाए दुआ कर दें। सब ख़ुदा के हाथ में है, दूसरी बुनियाद यह है कि जब उन ग़ैर-अल्लाह के बुतों में कुछ है नहीं तो उनमें क्यों लगें। जो चीज़ अल्लाह से आकर अपने में हटाकर अपने में लगा ले वही बुत है। बुत सिर्फ़ पत्थर की शक्ल का नाम नहीं है आज मुसलमान का हल यह है कि अगर सोने का बुत बनाकर रख दें तो सब ही कहेंगी कि नहीं इस बुत से कुछ नहीं होगा। उससे चिमटे और हाथ जोड़ने को तैयार नहीं होंगे, अगर सोने की सील सामने रखी हो तो उसके साथ हाथ जोड़ने, चिमटने इसके मुताबिक़ इस्तेमाल होने लगेगा। अगर हम बुत के क़ायल नहीं हैं तो जिस चीज़ से वह बनता है उसके क़ायल हैं हालांकि ख़ुदा ने अगर बुतों से न होने को कहा है। वहां माल, हुकूमत, वज़ीरों से न होने का भी एलान है। बा-हैसियत बुत होने की इससे कुछ नहीं हो सकता है, बा-हैसियत सोना, चांदी, लोहा, पत्थर के हो सकते हैं। सहाबा रज़ि० के यहां कोई हैसियत नहीं थी कि हर चीज़ से कुछ नहीं हो सकता है पहली चीज़ यह है कि जब अल्लाह से ही हो सकता है ग़ैर से नहीं हत्ता की अंबिया की शक्लों से भी नहीं होता। अल्लाह के सिवा दुनिया तमाम चीज़ों से कुछ नहीं मिल सकता है, यह ला इलाह इल्लल्लाह दूसरी चीज़

यह है कि जिन अंबिया ने ग़ैर से होने का इंकार किया। उन्होंने वे ग़ैर हाथ में लेने को नहीं कहा, मूसा व हारून अलै० ने कहा कि मुल्क से कुछ नहीं होता अब अपनी क़ौम को इस मुल्क के लेने की बात नहीं बताई है कि जब मुल्क से नहीं होता है तो हर हाल में नहीं होता है। अक्सीरियत, गवर्नरी, माल, हुकूमत से जब होता नहीं है तो उनके सामने झुकने और उनको साथ लेने की मेहनत भी नहीं है। सिर्फ़ उस ख़ुदा को सामने रखकर मेहनत करो जिससे होता है। اياك نعبد واياك نستعين तेरा कहना हर हाल में मानेंगे, फिर अपने मस्अलों में तुझी से मांगेगे। ये दो दुनिया तमाम अंबिया में मुश्तरक है कि अल्लाह के ग़ैर से नहीं होता है कि हत्ता की हम अंबिया की मेहनत से भी कुछ नहीं होता है और उनसे अपने मुवाफ़िक़ करवाने के लिए ये आमाल हम ख़ुदा की तरफ़ से लेकर आए हैं। उन आमाल के तक़ाबिल में आपस में इख़्तिलाफ़ है लेकिन उन बुनियादों में नहीं इसके बाद दो रास्ते दिखा दिए। हमें अंबिया रास्ते पर डाल, ग़लत मेहनत वालों के रास्ते पर न चला। उसमें कारून व फ़िऔन का मुल्क व माल आ जाएगा, वे तमाम लोग इसमें आ जाएंगे। जिन्होंने चीज़ों के लिहाज़ से मेहनत की क़ौमों का ज़िक्र किए कि उन्होंने फ़्लां चीज़ पर मेहनत सर्फ़ कर दी। अब कुरआन ने मेहनत के दोनों तरीक़े बता दिए, रोटी, ग़लबा, इज़्ज़त व परवरिश हिफ़ाज़त लेने के लिए। अब हम जितना ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से नमाज़ पढ़ें। मुसीबत आने पर मस्जिद में आकर सारी नमाज़ ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से पढ़ी और बाद भी और दुआ से अंबिया वाले सही रास्ते पर चलने को अल्लाह से कह रहा हैं और ग़लत से बचने को, अल–हम्दुल्लाह वाली दुआ का मतलब यह है कि मुझे माज़ी वग़ैरह तरीक़े नबी से बचा। अब मस्जिद से बाहर जाकर तमाम कारोबारी ज़िंदगी में हराम है तो आप की दुआ की वजह से ही इस ज़िंदगी और कारोबार में ख़ुदा की तरफ़ से मुसीबतें आएंगी कि यही चीज़ें तो ग़ैर–इस्लाम हैं जिसकी मिटने की दुआ काबा के

पास जाकर हाजी मांगते हैं। अब यह था कि बाहर जाकर झूठ न बोलता हाकिमों की बेजा खुशआमद करना, माज़ी व हराम से बचता। हर चीज़ में इस्लामी तरीक़ा है तो अब दुआ व मेहनत का तताबुक़ हो गया, अगर नुक़्सान होगा तो इसका बदल मिल जाएगा और अगर मेहनत व दुआ में तताबुक़ न हो तो ख़ुदा हमारी यही दुआ की वजह से कि हक़ की फ़त्ह हो, इस्लाम चल पड़े। ग़ैर इस्लाम मिटे कि हमारी जान, माल, चीज़ों में की डाल रहे हैं कि यहीं चीज़ें इस्लाम के ख़िलाफ़, हक़ के ख़िलाफ़ हैं। जिसके मिटने की तुम दुआ कर रहे हो आज हमारी दुआओं की वजह से हम पर मुसीबतें आ रही हैं हर तरह दीनी व दुन्यावी दोनों रूख़ है, पैसे, मुक़द्दमे, खेती–बाड़ी पर अमल में दो तरीक़े हैं ख़ुदा के तरीक़े हों तो दीन है दूसरों का तरीक़ा हो तो दुनिया है माल ख़र्च करना ब्याह–शादी वग़ैरह में ख़ुदा के यक़ीन के एतबार वाला तरीक़ा दीन है चीज़ों के एतबार से इस्तेमाल दुनिया है। नबी वाले तरीक़े 24 घंटे की ज़िंदगी के लिए हैं आज हमारी 24 घंटे की ज़िन्दगी में ग़ैर अंबिया का तरीक़ा आ गया है। मुल्क के एतबार से इस्तेमाल कारून का तरीक़ा है, हुकूमत के एतबार से इस्तेमाल फ़िरऔन व नमरूद का है मज़ारा व बसातीन के लिहाज़ से इस्तेमाल क़ौमे सबा का तरीक़ा है وعلیٰ ھذاالی الاقوام الاخر, अंबिया का तरीक़ा यह है कि उन तमाम चीज़ों में ख़ुदा के लिहाज़ से इस्तेमाल होना, जिसके बाद ख़ुदा ही कामियाब करेंगे। उसी का एलान पांच मर्तबा है। अल्लाह अक्बर चार मर्तबा जो तुम देख रहे हो, अदालत, या सदर या जनरल या कारखाने या पहाड़ या चांद या आसमान या ऐटम हो ये बहुत छोटा है अल्लाह बहुत बड़े हैं। जिस चीज़ के देखने पर उसकी बड़ाई दिल में आती है वह सब छोटा है इस नज़र आने वाली चीज़ों के अलावा ग़ायब भी उनसे छोटा है एक फ़रिश्ता एक उंगली से एक बड़े मुल्क को उठाकर तबह कर सकता है। اشھدان لا الہ

الااللہ छोटे से होता नहीं है सिर्फ़ बड़े से होता है अल्लाह के साथ किसी को बड़ाई में शरीक न करो कि यह कारखाने यह

बादशाह भी बड़ा है और खुदा भी बड़े हैं। वह हर हाल में हर चीज़े के बग़ैर कर सकते हैं। اشھدان محمد رسول اللہ अल्लाह ने इन्हें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनाकर भेजा ताकि वह शराइत व ज़वाबित मालूम हो जाएं जिसने खुदा की कुदरत तुम्हारे मुवाफ़िक़ इस्तेमाल होगी और मुख़ालिफ़ न होगी। यह बात कोई चीज़ हुकूमत, साइंस व करखाना नहीं बता सकता है जब यह तमाम बात मान ली हैं कि यह सब छोटा है और बड़ा ही कर सकता है और वह भी हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ों पर करते हैं तो अब इसे तो अब इसे छोड़कर और हुज़ूर सल्ल० की बातों को मान حی علی الصلوٰۃ जो काम हुज़ूर सल्ल० ने जिस तरह बताया है इसी तरह किया जाए, अब यह कहें कि आजकल अमेरीका व रूस व ज़ैर व गवर्नर कर रहे हैं लिहाज़ा इनकी तरह न कर लो और चूंकि उलूम जदीद खूब चल रहे हैं लिहाज़ा उन्हीं में से नमाज़ में पढ़ लो, तो नमाज़ न होगी, अपनी अक़्ल व समझ व निगाह को सामने मत रखो। जैसे हुज़ूर सल्ल० बता गए हैं सिर्फ़ वैसे ही حی علی الفلاح जब तुम्हारे माल दुरूस्त हो जाएंगे तो खुदा की बड़ाई से लेने वाले बन जाओगे, क़िला, झोपड़ी, उहूदेदारी, फ़क़ीरी, कसरत, माल, माल की क़िल्लत से फ़र्क़ नहीं पड़ता है कामियाबी का ज़ाब्ता चीज़ में नहीं है बल्कि आमाल में है जिसके आमाल दुरूस्त हों वह कामियाब चाहे फ़क़ीर हो, वरना ना—काम, उन तमाम मकानों व हुकूमतों व कोठियों को मुसीबतों का शिकार होना ज़रूरी है। खुदा रहम करे तो इस दुनिया में ही मुसीबत दे दें। और आगे छुटकारा, अगर रहम न किया। मुसीबत का बोझ मरने के बाद मिलेगा यह अंबिया की आवाज़ है। ان اللہ لا یغیر مابقوم حتی یغیر واماباانفسھم अब ये आमाल एक ख़ास तर्तीब से होंगे, जैसे नमाज़ के तमाम काम एक ख़ास तर्तीब से हैं ऐसे ही दीन में यक़ीन व अमल के बदलने की मेहनत भी है। कमाने की मेहनत व घर की मेहनत व पब्लिक की ज़िंदगी बनाने की भी मेहनत है आज हमने कमाना सिर्फ़ दीन बना लिया

है अगर कोई शख़्स कायदे की तरह अपनी दुकान में बैठा है बाक़ी क़ियाम, रूकूअ, सज्दा नहीं है तो ये नमाज़ नहीं पढ़ रहा है बल्कि नमाज़ तोड़ रहा है ऐसे ही सिर्फ़ खाना–पीना दीन नहीं है। मिसाल के तौर पर बहुत सी चीजें हराम हैं बहुत सी हलाल ऐसे ही कुछ कमाइयां हराम हैं कुछ हलाल, पहले तो हर चीज़ में तहक़ीक़ करो, अगर हराम की है तो उसे छोड़ो और जिससे कमाना हलाल है तो फिर इसका तरीक़ा बताया गया है कि इस तरीक़े पर चलने से वह हलाल होगी। बकरी हलाल है लेकिन ज़िब्ह के बजाए मशीन से या गला घोंटकर खा लिया तो हराम होगी या ज़िब्ह के वक़्त ख़ुदा के बजाए अक़ीदत में वज़ीरे आज़म का नाम ले लिया तो भी हराम होगी ऐसे ही हलाल कमाइयों में भी उस वक़्त हलाल होंगी। जब हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर हों, हराम कमाइ और सूद दोनों हराम में बराबर हैं यह कमाना दीन है जब कि हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर हो, कमाने में भी हुज़ूर सल्ल० के तमाम तरीक़े हों, कमाई में सच, बे–सूदी दीन है झूठ बोलना, सूद लेना बे–दीनी है, हमें पूरी ज़िंदगी में उन वाले तरीक़ों को लाने के लिए सख़्त मेहनत करनी है, नक़्शे सारे हैं लेकिन उनमें हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े नहीं हैं क्योंकि हमारा ज़हन अमल से कामियाब होने का ज़हन नहीं है। बल्कि चीज़ों से कामियाब होने का है इस वजह से हर अमल और हर नक़्शे में हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े नहीं है ख़ुदा के तरीक़े चीज़ों के लिहाज़ से नहीं हैं आज कहते हैं कि बग़ैर रिश्वत व सूद कारोबार मुलाज़मत कैसे चल सकती है। एरे कुदरत से चल सकती है कि हुज़ूर सल्ल० वाली बुनियाद पर चलने से ख़ुदा आग में भी हिफ़ाज़त करेंगे, ख़ून की नहरों में बचा देंगे। जब चीज़ों से यक़ीन हटकर सिर्फ़ ख़ुदा पर आ जाएगा तो हर अमल हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े पर आ जाएगा कि ख़ुदा की कुदरत उस अमल की वजह से मेरे साथ होगी, उस यक़ीन के बाद दीन आसान व आम हो जाता है। सब कुछ इनकी कुदरत से है उनकी कुदरत उसी वक़्त हमारे

मुवाफ़िक़ होगी। हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े हमारे पास हों इससे ज़िराह साद बिन मुआज़ रज़ि० की मौत से अर्श भी मिल गया, उन ही तरीक़ों की वजह से ताजिर अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के दोनों तरफ़ बैठें हैं यह रोश तुम्हें ख़िलाफ़त सदारत से नहीं रोकती है इसको इनके तरीके पर कर लो, जो एक काम करता है उसकी तर्तीब होगी। जो दो काम करता है उसकी तर्तीब होगी ऐसे ही दुकान व बीवी है तो इसकी तर्तीब है और ऐसे ही बीवी बीमार, बच्चे की आंख में दर्द, मुक़द्दमा में हाज़िरी, माल, बिल्टी करवाना और दुकान में बैठना है अब इसकी तर्तीब उन तमाम के लिहाज़ से होगी। ऐसे ही तीन कारख़ाने हैं तीन बाग़ हैं, मिम्बर भी हैं, अंजुमन के सदर भी हैं अब वे अपना वक़्त इन तमाम मश्ग़लों में इनके लिहाज़ से लगाएगा। अगर परलिमन्ट में तीन दिन न गए तो मिम्बरी से अलग, बाग़ में हफ़्ता भर न गए तो बाग़ उजड़ेगा, हुज़ूर सल्ल० हमारे मौजूदा रिवाज के अलावा कुद और ज़िंदगी देकर गए हैं। जिसके लिए नमाज़ देकर गए। आज कल मस्जिद में जितनी चीज़ें ज़्यादा होंगी, उनमें इतनी जल्दी ताला लग जाता है सबसे पहले मस्अला यह है कि यह ज़हन बने कि अमल से ज़िंदगी बनती है माल व चीज़ों से नहीं, अगर यह ज़हन है तो हर जगह अमल दुरूस्त करेंगे। वरना हर जगह बिगाड़ेंगे, मस्जिद में आने के बाद सबसे पहले ईमान व अमल दुरूस्त करो, चाहे किसी शोब्हे में हो, कोई शोब्हा तुमसे छुड़वाया नहीं जाएगा। तिजारती ज़ौक व ज़हन से निकालने के लिए तो तिजारत से निकलेंगे कि मेहनत करें उस मेहनत से यक़ीन सही हो, ऐसे ही हर शोब्हे से निकलना पड़ेगा ताकि उस यक़ीन व ज़हन, ज़ौक, निकलकर ख़ुदा का सही यक़ीन आ जाए, आज की सियायत है कि मुल्क व माल के वास्ते अमल बिगड़ें। मिसाल के तौर पर मिम्बरी की कोशीश में दूसरे मिम्बरों की ग़ीबत होगी जो हराम है लेकिन सियासत है उसे मुक़द्दमा में फांस दो, मुल्क व माल हासिल करने के लिए

जितने अमल बिगड़ते हों, बिगाड़ दो। ऐसे ही तिजारत हासिल करने का भी ज़हन है इस वजह से हर नक़्शे वाले के लिए सबसे पहले यह है कि ईमान व ज़हन दुरुस्त हो, जिसके बाद तमाम आमाल व अख़्लाक़ दुरुस्त होंगे। इस्लामी होंगे जैसे नमाज़ से पहले बदन की तहारत हासिल करते हैं ऐसे इस्लामी ज़िंदगी से पहले दिल का शिर्क से पाक होना है मस्जिद में ईमान की दावत रखी गई है और दुनिया के तमाम नक़्शों की तरदीद है सिर्फ़ अल्लाह से होता है अल्लाह ने मूसा अलै० को झोपड़े और इसमाइल अलै० को रेत में बना दिया अब रोज़ाना इस तरह करने से ईमान बनेगा, वरना मस्जिद में आकर वही चीज़ों के यक़ीन वाली बातें होंगी जो बाहर होंगी। इस ज़हन के बदलने के लिए आमाल ख़म्सा हैं और उन आमाल की वजह से पलेंगे, परवरिश से नहीं, माल, हिफ़ाज़त उन आमाल से चलेगी कि माल कमाई पर नहीं मिलता है तो ख़ुदा उन आमाल ख़म्सा पर ज़रूर देगा, मांगने से ख़ूब देगा माल सिर्फ़ ख़ुदा देता है उन आमाल पर वही देगा। आज हम तिजारत से माल और माल से तस्बीह, नमाज़, ज़िक्र में लगना होता है। माल से ज़िंदगी है इस यक़ीन को हटाओ कि कमाने से एक कोड़ी नहीं मिलती है ख़ुदा देते हैं वे उन आमाल पर भी ख़ूब दे सकते हैं इस यक़ीन के बनाने के लिए तमाम क़िस्म के इंसानों को ये आमाल ख़म्सा ख़ुद करना और इनका फैलाना दिया गया है उन आमाल को करें और फैलाएं जिसके बाद बग़ैर ज़राए के माल देंगे, चाहे ज़मीन फाड़कर आसमान गिराकर, माल के बग़ैर चीज़ें दिला दें। चीज़ों के बग़ैर हालत दुरुस्त कर दें, आग व छूरी में डालकर हिफ़ाज़त कर दे, यूसुफ़ अलै० को मुल्क सुलेमान अलै० को मुल्क व माल के बग़ैर मेहनत के दिया है। सहाबा के वाक़िआत हैं, मिक़्दार रज़ि० का क़िस्सा है पेशाब करने गए 18 अशरफ़ियां चूहे ने लाकर दीं। हुज़ूर सल्ल० ने उनके बताने पर ومن يتق الله يجعل له مخرجا इस यक़ीन को बनाना है कि अल्लाह देते हैं और वह उन आमाल पर

देंगे तमाम मुआजज़ात अंबिया उन आमाल की वजह से हैं हर नबी ईमान व आमाल लाकर कहता है कि इनको करो अल्लाह हालत पलटेंगे और यही आमाल इस उम्मत के दिए गए हैं कि इनको करो, जिस पर बग़ैर मेहनत के माल दें या बग़ैर माल के चीज़ें दें या बग़ैर चीज़ के हालत दुरूस्त हो, ये तमाम रास्ते चल पड़ेंगे ईमान सही के बाद। सबसे पहली मेहनत ईमान दुरूस्त करने के लिए करनी पड़ती है जैसे सबसे पहले वुज़ू करने की मेहनत है नमाज़ में जब यक़ीन बदल जाएंगा तो हर अमल आप हर जगह करेंगे, मिसाल के तौर पर ज़कात फ़र्ज़ कर दी, सूद हराम कर दिया कि अपनी कमाई से सिमेटना नहीं है आमाल पर चलना है एहतिकार मम्नूअ है कि चीज़ को जमा करे और मेंहगाई के वक़्त बेचे या अमल की बुनियाद के ख़िलाफ़ है कि माल से नहीं अमल से ज़िंदगी बनती है। एक शख़्स फ़ाक़े की वजह से मालदारी के वक़्त की 250 रूपये की घड़ी हमारे हाथ में बेचने आया है हमने कह दिया ज़रूरत नहीं। इसने सौ रूपये कर दिए, इसने और कम कर दिया यह अमल का म्यार नहीं है अमल का म्यार यह है कि इसकी घड़ी वापस करके पैसे व बोरी आटे की दे दो। आज हम अमल की ख़राबी की वजह से चीज़ों की ज़्यादती, माल में क़ुदरत की मुख़ालफ़त की वजह से बर्बाद हैं पहले चीज़ों की क़िल्लत, अश्या व माल के बावजूद जो क़ुदरत की मुवाफ़क़्त की वजह से ख़ुशहाल व आबाद थे उन आमाल को करो इनकी वजह से ख़ुदा अपनी क़ुदरत से ज़िंदगी बना देंगे। जिस क़ुदरत से अंबिया व सहाबा की ज़िंदगी बनाई, शक्लों में रहने से इनका यक़ीन बनता है इसलिए इन्हें छोड़ना है हमेशा के लिए नहीं है। सिर्फ़ इतना छोड़ना ज़रूरी है जिससे यक़ीन मिलेगा, आज शिकवा है कि हिन्दु नहीं ख़रीदते वल्लाहु अज़ीम, आज अगर हमारी तिजारत में हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े आ जाएं तो हर इंसान अपने रिश्तदारों को छोड़कर तुम्हारे पास आएगा कि हर शख़्स माल को खींचेगा और

इस्लामी तिजारत में माल को खींचना नहीं है, बल्कि ज़रूरतमंदों को देना है हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े से हर इंसान तुम्हारी तरफ़ खीचेंगा। बस पहले ईमान हासिल कर लो फिर आमाल का म्यार क़ायम होगा। जिस के बाद अक़लियत, अक्सीरियत, हुकूमत, सरमायादारी, तुम्हारे, क़दमों में अपनी जान–निछावर कर देगी, फ़िऔनी की हुकूमत का ज़वाल इस वजह से हुआ कि बनी इसराइल उन आमाले ख़म्सा में मश्गूल थे अंबिया की ज़ात की वजह से नहीं हुआ है बल्कि ख़ुदा ने इनके आमाल की वजह से किया उन आमाल के आगे अंबिया ने अपने तमाम तक़ाज़ों को दबाया, मूसा अलै० को हुक्म मिलते ही कुदरत पर भरोसा करके पहाड़ से दूसरी जानिब उतर गए, बीवी–बच्चों की हिफ़ाज़त ख़ुदा अपनी कुदरत से करेगा। इतने बड़े आमाल हैं हमें तो उन आमाल से अपनी रोटी मिलने का यक़ीन नहीं है आज हम तब्लीग़ में इस तरह लगे हैं कि शक्लों की मौजूद तर्तीब में आंच न आने पाए। पूरा यक़ीन उस वक़्त मिलता है जब शक्लों का लिहाज़ न हो, उस यक़ीन पर ख़ुदा दुनिया के तमाम ऐटम, हुकूमत, माल कारखाने के नक़्शों के बावजूद ख़ुदा अपनी कुदरत से उन्हें बदलकर इस्लाम को लाएंगे। जब दीन की आवाज़ लगे हर चीज़ छोड़कर चल पड़ें। पक्का नमाज़ी आज़ान होते ही चल पड़ेगा, चाहे बीवी मरने वाली हो, या मेहमान आया हो है ऐसे ही पक्का मुबालगा वह है जो हर हाल में चल पड़े अगर ये बात सिर्फ़ तीन, चार हज़ार में भी आ जाए तो काम बन जाएगा। यह आमाल ख़म्सा वही है जिन पर अंबिया के ज़माने में ख़र्क आदत हुआ है हम कर रहे हैं लेकिन उन वाली हालत के साथ नहीं। अंबिया उन आमाल को हर वक़्त करते थे। अगर हम भी उन आमाल को हर वक़्त करने वाले हों तो ख़ुदा सारे आलम के हालात या हिदायत देकर बदलेंगे या हलाकत के निज़ाम क़ायम करके और आज तो हमें उन आमाल से अपने एक घर का पलना नज़र नहीं आता है। सहाबा की सूची में नाम लिखवाने व तारीख़

में सुन्हेरे हरफ़ों से नाम लिखवाने के लिए क़दम बढाएं, घटिया क़दम यह है कि सारी उम्र में एक मर्तबा चार महीने, हर साल एक चिल्ला जैसे लाइसंस की तजदीद, फिर हर महीने तीन दिन, फिर हफ़्ते दो गश्त, बड़ा क़दम है। जो सहाबा रज़ि० ने उठाया है, साल के चार महीने लगातार या बिला तसलसुल बेरूनी काम में, आठ महीने मक़ाम पर आधा वक़्त मस्जिद में आधा वक़्त घर व तिजारत में, चूंकि काम करने वाले थे। इस वजह से मश्विरों वग़ैरह की वजह से इशा सलस लील, तक तै हो जाती थी यह तर्तीब सबसे ऊंची है और यह सबसे कम इससे दीन चमकेगा, कुदरत के मंज़र सामने आएंगे।

उमूमी बयान न० 4

तूफ़ाने नूह अलै० में कश्ती आमाल नूह अलै० से बची है तो आमाल मुहम्मदिया सल्ल० से ज़िंदगी की कश्ती बच सकती है

फ़जर के बाद, 30, अप्रैल 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

जब इंसान अपनी ज़िंदगी के मस्अले का हल माल के रास्ते से करता है तो इसके अमल का म्यार अहिस्ता–अहिस्ता ख़राब हो जाता है यहां तक कि ख़ालिस माल के एतबार से इस्तेमाल होता है सोच–विचार, देख–भाल हर काम में अमल ख़राब हो जाता है। आख़िर में माल छीन जाता है और फिर ये तक्लीफ़ें बरदाश्त करता है हुआ जहन्नम में पहुंच जाता है मरने के वक़्त मौत की एक लहर में इतनी तक्लीफ़ होती है कि जो दुनिया के तमाम जहरीले जानवरों के काटने से इंसान में चलें, क़ब्र का अज़ाब मौत की तक्लीफ़ को भूला देगा, हश्र का अज़ाब क़ब्र को, जहन्नम हश्र को भुला देगी। यह माल वाला रास्ता है मुसीबतों को, दूसरा रास्ता यह है कि अमल के रास्ते से कामियाबी हासिल करे और यह यक़ीन करे नेक आमाल पर ख़ुदा क़ामियाब करेगा। حی علی الصلاۃ ،حی علی الفلاح माल में नज़र आने वाली कामियाबी छोड़कर मस्जिद में आओ और ख़ुद को अमल के लिहाज़ से इस्तेमाल करो और अपने जिस्म को इस तरह इस्तेमाल करो, जिस तरह हम कहते हैं, कामियाबी

की सूरत यह है कि आज़ू को आमाले नेक का पाबन्द कर लो। एलान 24 घंटे में पांच मर्तबा होता है कामियाबी इस तरह होगी कि चले तो इस अमल के लिए हैं चीज़ों को छोड़े और आमाले अरबआ के बाद नमाज़ का अमल दुरूस्त होगा। अगर नमाज़ पढ़ें लेकिन मस्अलों का इल्म नहीं है और उन आमाल के फ़ज़ाइल का इल्म नहीं है। اذا وافق تامينه تامين الملائكة غفرله। अब तमाम अजज़ा पर सवाब बताए गए हैं। इस पर यक़ीन भी हो, मस्अलों जानता हो, मिसाल के तौर पर سبحان ربى की जगह पढ़ने العظيم पढ़ने से नमाज़ टूट गई(1) अक्सीरियत ऐसे मसअलों से ना–वाक़िफ़ है नमाज़ असल उस वक़्त होगी जब इसके मसअलें व फ़ज़ाइल का इल्म हो। आजकल पूरी नमाज़ के फ़ज़ाइल हैं, अज्ज़ा नमाज़ के फ़ज़ाइल नहीं चल रहे हैं, इतनी तालीम हो कि फ़ज़ाइल का हर नमाज़ के जुज़ में इस्तिज़ार हो, रोज़ाना नमाज़ के बाद तालीम होगी, ईमान की बातें, जन्नत व नार का ज़िक्र, ज़िक्र वग़ैरह के बाद नमाज़, नमाज़ बनेगी। मौजूदा नमाज़ वह है जो बचपन में सीख ली जाती है। सहाबा रज़ि० ने खुलफ़ा होने के वक़्त भी नमाज़ सीखते रहते थे कि जब इससे कामियाबी होने का यक़ीन है तो बाक़ी आमाल से भी यक़ीन होगा वरना नहीं नमाज़ पर क़ौम नूह व फ़िऔन हलाक हुए। उसी से दुश्मन दोस्त हुए, तमाम मुआजज़ात दुआ बाद सलात के हैं करामत भी नमाज़ के क़िस्से हैं। हम तो सिर्फ़ नक़ल उतारते हैं नमाज़ से पहले यह एलान हैं जिनसे नमाज़ ठीक होगी अब तालीम बताएगी कि नमाज़ के बाद की दुआ से मेरा हर काम होगा। लिहाज़ा कमाई को नमाज़ की शाख़ बनाओ, आज हम मस्जिद का चलना अपनी कमाई से समझते हैं। हुज़ूर सल्ल० के दरवाज़े भी कम थे कि कुत्ते आकर

---

1. फुक़्हा ने अजमियों के लिए सही अदाएगी की कोशीश के साथ गुंजाइश बतलाई है। (अब्दुस्सलाम)

पेशाब कर जाते, इब्राहीम अलै० बैतुल्लाह गार मिट्टी और पत्थर से बनाया है लेकिन है बहुत मज़बूत कि इसकी बुनियाद कुरबानी इसमाइल अलै० व इब्राहीम अलै० है मौजूदा ऊपर की इमारत इब्ने ज़ुबैर की बनाई हुई है, इब्ने ज़ुबैर ने हदीस सुनी थी कि बैतुल्लाह बढ़ा था, दो दरवाज़े थे। मौजूदा और महाज़ात में, काफ़िर कुरैश ताज़ा इस्लाम लाए थे, इन वजह से हुज़ूर सल्ल० ने कहा मैं बनाता नहीं हूं वरना खोदकर बना, इब्राहीम अलै० दिखा देते मुश्रिकों ने सग़र मुहम्मद सल्ल० में अपने पाक माल से बैतुल्लाह बनाया, लेकिन कम माल होने की वजह से बैतुल्लाह पुराना बन सका लिहाज़ा जितना बन गया, बना दिया आज मुस्लिम का ज़हन मस्जिद में पाक माल लगाने का नहीं है। आइशा रज़ि० से हदीस भांजे इब्ने ज़ुबैर से सुनी ख़ुलफ़ा जिहाद में मश्गूल थे इसलिए मुतावज्जोह न हो सके। इब्ने ज़ुबैर के ज़माने में बैतुल्लाह में आग लग गई थी दोबारा बनाने की नौबत आई। साठ–पैसठ सन के दर्मियान इब्ने ज़ुबैर ने इसे खोदा और बनाया, इब्राहीम तक पहुंच गए, इब्ने ज़ुबैर ने सोचा बुनियादें चार हज़ार साल पुरानी हैं इसे भी बदल दो, एक कुदाल मारा, सख़्त अंधेरा, कड़क बिजली, कुदाल निकाला हौलनाक समां ख़त्म हो गया। दोबारा कुदाल मारा फिर हौलनाक समां आख़िर में समझ लिया, ख़ुदा को मंज़ूर नहीं है कि तक़्वे पर इसकी बुनियाद है, इब्ने ज़ुबैर रज़ि० सहाबी से न टूट सका कि हुज़ूर सल्ल० का ख़ून उन्होंने पी रखा था। सात दिन तक बिना खाए रोज़ा रखते थे, दस हज़ार का लश्कर भगा देते थे, बैतुल्लाह का तवाफ़ सेलाब में अकेले ही तैरकर करते थे। उनसे भी न बना, ना–अहली असल तो यह हे क़ि मज्सिद में तक़्वा बनाना है दुनिया के एतबार से तामीर बनानी है। दाऊद अलै० ने मस्जिद अक़्सा बनाने लगे, एक जगह एक शख़्स का झोपड़ा था कि इसके गिराए तामीर मुकम्मल नहीं हो सकती थी। लिहाज़ा इन्होंने गिराकर मस्जिद की दीवार मुकम्मल कर ली, फ़रिश्ता आ गया। मैंने ज़ुल्म हराम

किया तुम मेरा घर ज़ुल्म के साथ नहीं बना सकते, दाऊद अलै० ने कहा मेरा बेटा सुलेमान बनाएगा कहा अच्छा इनकी मौत तक तामीर रूकी रही। इनके मरने के बाद उस जगह के मालिक ने ख़ूब क़ीमत लगाई और फिर पूछने लगा कि रक़म ज़्यादा क़ीमती है या ज़मीन, ज़मीन मस्जिद अक़सा की सबसे क़ीमती الا الحرم ومسجد النبوی इसने और ज़्यादा क़ीमत लगाई और बताओ की क़ीमत ज़्यादा है या ज़मीन क़ीमती है। आख़िर में सुलेमान अलै० को अंदाज़ा हुआ कि इतना पैसा मस्जिद पर लगाएं कि नहीं, इस पर ख़ुदा की तरफ़ से इशारा हुआ कि अगर तुम्हारा माल है तो मत लगाओ, हमारा तो हमारे घर पर लगा दो। चुनांचे उससे ज़मीन उसके मुंह मांगे दाम पर ले ली कि दफ़ा के बाद वह सवाल न कर सका। आजकल इमारतों का शौक़ व डज़ाइन है लेकिन मस्जिद का उसूल यह है कि ग़ार मिट्टी दुरूस्त हो। अ़सल मस्जिद नुबूवी जिससे सारी दुनिया हिली थी। इसमें सिर्फ़ गार, मिट्टी और लकड़ियां थीं और हुज़ूर सल्ल० का जज़्बा व सहाबा रज़ि० के जज़्बात रात को औरतें पहाड़ों से पत्थर लाती, दीन में हुज़ूर सल्ल० सहाबा रज़ि० अपना माल-जान लगाकर उसे बना रहे हैं ख़ूब शौक़ है। तख़फ़ीफ़ मुशक़्क़त के लिए शेर पढ़े जा रहे थे। अली रज़ि०, उस्मान रज़ि० का ख़ानदान एक था लेकिन अली रज़ि० ग़रीब, उस्मान रज़ि० अमीर, अली रज़ि० का लिबास मेला, उस्मान रज़ि० का सफ़ेद उस्मान रज़ि० बड़े एहतियात से पत्थर लाते थे कि कपड़े ख़राब न हों। अली रज़ि० ख़ूब इत्मिनान के साथ बड़े-बड़े पत्थर लाते थे कपड़े मेले हो रहे हैं। दोनों हुज़ूर सल्ल० के दामाद, अली रज़ि० ने शेर कह दिया कि जो कपड़ों को बचाकर पत्थर उठाता है और जो अपने कंधों पर पत्थर उठाता है दोनों बराबर नहीं। उस वक़्त तक कुरैश इस शेर को पढ़ते रहे, उस्मान रज़ि० ख़ामोश रहे, अम्मार बिन यासीर एक मामूली शख़्स ने इस शेर को कह दिया, उस्मान रज़ि० ने गुस्से में उन पर थप्पड़ मार दिया।

हुज़ूर सल्ल० को गुस्सा आ गया सहाबा रज़ि० ने कहा तुम गुस्सा ठंडा करो कि तुम्हारी वजह से गुस्सा आया है। लिहाज़ा तुम ही जाकर हुज़ूर सल्ल० को राज़ी करो, चुनांचे वह गए और हुज़ूर सल्ल० से मज़ाक़ की बात कही कि लोग मुझे मारना चाहते हैं और दो दो पत्थर लाद देते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया لاانما تقتلك الفئة الباغية मस्जिद नुबूवी की क़ीमत उन कुरबानियों की वजह से थी और इसके अपने आमाल ख़म्सा से इनसे मस्जिद की क़ीमत है उन आमाल के बग़ैर नमाज़ का वजूद नहीं है मसअलों का जानना ज़रूरी। हरकत में फ़र्क़ से नाकिस होती है, अब कमाई को दुरूस्त करो कि हलाल हो वरना दुआ मक़बूल नहीं, फिर ख़र्चे दुरूस्त करो, तमाम मुआजज़ात व करामात का सबब नमाज़ है। लेकिन मेहनत से नमाज़ बनती है नमाज़ से पहले अपने आमाल दुरूस्त करे फिर कमाई करे फिर घर के ख़र्चों को इससे तमाम मस्अले हल होंगे कि अल्लाह ने बैतुल्लाह को अपनी कुदरत से अबरहा को हलाक करके बचाया। इस तरह अगर तुम्हारी नमाज़ें दुरूस्त होंगी तो हर मुसीबत के वक़्त आकर दुआ इस मुसीबत को दफ़ा कर देगी। आज की मस्जिद कमज़ोर है इस तर्तीब के न होने की वजह से लिहाज़ा ग़ैर-मुस्लिम मस्जिद को भी गिरा देते हैं। अगर मस्जिद दुरूस्त है आमाल व तर्तीब के लिहाज़ से तो वे तुम्हारे बाज़ार को न गिरा सकेंगे, मस्जिद में तालिमें होंगी, बाहर की ज़िंदगी शाख़ है वहां जाकर अमल करें तो इस ज़िंदगी को न मुल्क वाले गिरा सकेंगे न माल वाले। अगर बीमारी होगी तो दूसरों की कोठियां गिरेंगी, तुम्हारी झोपड़ियां महफ़ूज़ रहेंगी, सेलाब में तुम्हारी खेतियां बचेंगी। तूफ़ान नूह में कश्ती आमाल नूह से बची है तो आमाल मुहम्मादिया सल्ल० से ज़िंदगी की कश्ती बच सकती है अब अमल का रास्ते भी माल वाले रास्त की तरह मेहनत से ही चलता है। एक तो ख़ुद ज़ात से नमाज़ को सही तौर से अदा करना और इसे आम करना, तुम्हारी मेहनत से जितना आमाल का सिलसिला क़ायम

होगा। उन तमाम आमाल का सवाब तुम्हें मिलेगा और उन आमाल का सबब मेहनत का सवाब उन आमाल से ज़्यादा होगा अंबिया की तरह दुआ कुबूल होगी। आमाल को ज़िंदा करने को अपना मौज़ूअ बना लो, बाज़ार से मस्जिद नहीं है, मस्जिद से बाज़ार है, मेहनत से माल नहीं है बल्कि आमाल से माल है अगर यह ज़हन बन जाए तो ख़ुद ब ख़ुद बुरे आमाल छूट जाएं, पहली मेहनत उन आमाल के लिए है जिनकी वजह से मस्जिद बनेगी। ऐसे ही दीन को वजूद मेहनत से होगा, क़ियाम दीन इसमें है मस्जिद के आमाल के लिए तैयार हो जाओ, दावत यह है कि ग़ैर राइज की तरफ़ ख़ींचता है। मिसाल के तौर पर हुकूमत अंग्रेज़ी की मिस्रतें बताई गईं और अपनी हुकूमत के मुनाफ़े सामने लाए गए। यहां तक कि तक़्सीम के बाद लोगों ने मुफ़्त गाड़ियों में बिना टिकट बैठना शुरू किया, जिस ज़मीन पर चाहा क़ब्ज़ा कर लिया, हुकूमत ने इन पर ख़ूब पकड़–धड़क की बोले यों तो अग्रेज़ी हुकूमत की तरह है चीज़ें पहले से बहुत महंगी हो गयीं। इसमें दावत होनी है, इलैक्शन में दावत भी है, राइज से हटना ग़ैर राइज पर आना है। अगर अल्लाह के ग़ैर के लिए हो तो मौत है अब चीज़ें हैं तो दिखाई देने की वजह से अपनी तरफ़ ख़ींचती रही हैं। हूरें न आने की वजह से नहीं ख़ींचती हैं, औरतें काली, मेली ख़ींचती हैं हर देखने के मुक़ाबले में दावत हक़ को लाओ कि इनमें कुछ नहीं है अल्लाह में है अल्लाह के लिहाज़ से चलो, चीज़ों के लिहाज़ से नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने हमारी तरफ़ से नुमाइन्दा बनकर जन्नत–नार व ख़ुदा को भी देखा है हां यह मस्अला अलग–अलग फ़ी ज़रूर है। आमाल की जज़ा–सज़ा भी देखें, अब जहां–जहां देखकर लोग चल रहे हैं वहां दावत आ जाए मस्जिद में है लेकिन इससे हर अमल से पहले लाना है दावत देखने के मुक़ाबले में है कि ग़ैब की तरह बुलाना आ जाए। इसके बग़ैर इस्लाम के माइने ही नहीं, इसके वास्ते मस्जिद है आज़ान में दावत अजमाली है, ख़ुदा की बड़ाई ख़ुदा से ही होना ग़ैर से न

होना, मुहम्मद सल्ल० की बड़ाई में कि आमाल से ही फ़लां मिलना दावत की मज्लिसें खूब आम हो जाएं। पहले मस्जिदों में फिर बैठक, मकान, दुकान, हर जगह आ जाए कि अल्लाह ही से होता है बाक़ी सब छोटे हैं, वज़ीर सामने आए इनको भी दावत दो कि मुल्क व माल से कुछ नहीं होता है, आमाल पर मिदार है लिहाज़ा तुम आमाल दुरूस्त कर लो वरना मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाओगे। मस्जिद में यह दावत वाला अमल चलकर हर जगह जाता है अमन की दुरूस्तगी में फ़लां है वरना नहीं। अगर दावत ज़िंदा हो और इस पर अल्लाह की नुसरत का यक़ीन हो इस अमल को अंबिया ने किया है दावत ज़रूरी है أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِي अल्लाह ने पहले अंबिया को दावत दी, अंबिया ने लोगों को दावत दी सिलसिला हम तक पहुंचा। अल्लाह ने मुहम्मद सल्ल० को मुहम्मद सल्ल० ने अबूबक्र रज़ि०, अबूबक्र ने दूसरों को दी, दूसरों ने हम तक पहुंचाई وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا إِلَى जन्नत के दाई—अल्लाह हैं दावत में तालीम हासिल करो ख़ुदा की सिफ़ात की तालीम के साथ जन्नती दावत होगी इसमें इतनी कुव्वत होगी। इज्तिमाइ दावत व मुआशरत अमीर मामूर की तालीम हासिल करो, नमाज़, ज़िक्र, और अख़्लाक़ इनकी तालीम चाहिए। फिर ध्यान भी अल्लाह का हो, हर मुश्किल के देखने के बाद अगर इसका ध्यान आया तो तुम उस शक्ल के ताबेअ और अगर इस पर अल्लाह के क़ब्ज़े का ध्यान आया तो तुम शक्ल पर ग़ालिब रहोगे शेर देखते ही अगर इनका फाड़ खाना ज़हन में आया तो वह तुम्हे फाड़ेगा और अगर ख़ुदा की कुदरत सामने रख ली जाए तो शेर चूहा भी न रहेगा। इस तरह शेर—नूमा इंसान के साथ भी ऐसे हो तो वह हाथ जोड़ता फिरेगा तुम्हारे सामने। कोठी से मरऊब हुए तो इस कोठी वाले के आगे तुम झुकोगे और अगर कोठी से ख़ुदा का ख़्याल आया तो कोठी वाला तुम्हारे आगे झुकेगा, ख़ुदा का ध्यान ज़िक्र से मिलेगा। ये आमाल नमाज़ से पहले हैं,

ज़िक्र से ध्यान, दावत से ईमान, तालीम से इल्म हासिल करके अब नमाज़ पढ़ो, अब अल्लाह से लेने का सिलसिला शुरू करो। अब उन आमाल को बढ़ाओ, कमाई में भी ज़िक्र होगा, जनाज़े वगैरह की वजह से दुकान का छोड़ना आसान होगा, इसी तरंह ईमान, यक़ीन, ध्यान, इल्म के बाद अल्लाह के रास्ते में निकलना आसान हो जाएगा कि इससे सारी दुनिया बदलती नज़र आएगी अल्लाह के हाथ में दुनिया है और इन्हें दावत वाला अमल पसंद है फिर तो तुमको रोकेंगे और तुम रूकोगे नहीं। तेज़ रो घोड़े को रोका जाएगा और मरियल घोड़े को मार–पीट कर चलाया जाता है हम भागने वाले को भी रोकते हैं और मरियल को भी चलाते हैं एतिदाल रखना है इस मेहनत की ख़ुदा के यहां बहुत क़ीमत है हर अमल से ज़्यादा है तालीम, ज़िक्र, नमाज़, नमाज़ से दावत में जान पढ़ेगी और इसके बाद मिन–जानिब अल्लाह शक्लों पर असर पढ़ेगा, ख़ुद ब ख़ुद क़ौमें, मुल्क इस्लाम में आएंगी, हर मुल्क में जमाअत की नक़ल व हरकत हो, दावत वाला काम हो, ताकि सारी दुनिया में एक वक़्त में हिदायत इल्म हो। तुम्हारी दावत पर ख़ुदा तुम्हारी ज़ात से दिखा दे या किसी और जगह व शख़्सों से ज़हूर हा जाए बरारब है, इलैक्शन में काम करने वालों का ख़र्च वह गधा उठाता है। जिस तरफ़ से बुलाते हैं, क्या ख़ुदा ऐसा नहीं है कि इसकी तरफ़ बुलाने में वह हमारा ख़र्च हमारा ख़र्च बरदाश्त न करेंगे, मिम्बरकार, नाश्ते खाने, आराम का इंतिज़ाम करेगा, ख़ुदा अपनी तरफ़ बुलाने में तुम्हारा नहीं तुम्हारी नसलों तक का निज़ाम करेंगे। ख़्वाजा मोइनुद्दीन रह० के ज़माने में हिन्द पर सब ग़ैर मुस्लिम छा गए थे। आज हर शोब्हे और हर महकमे में एक दो मुस्लिम मिल जाएंगे। लेकिन इनके ज़माने में किसी महकमे में एक मुस्लिम न था। मोइनुद्दीन और इनके साथी दावत देते थे, मन्दिरों में भी भेस बदलकर जाया करते थे, अजमेर से कलकत्ता के सफ़र में नव्वे (90) लाख इस्लाम लाए कि बर्सों में सफ़र हुआ होगा। आज लोग इसी

वजह से मुहब्बत करते हैं ख़्वाजा रह० से लेकिन महबूब जैसे काम नहीं करते, अगर दावत वाली बातें हों तो कौम व शख़्स फ़साद न नहीं करा सकते हैं, फ़साद उसी वजह से हो रहा है कि दावत की मेहनत नहीं है, दावत एक काम है ज़ाहिद व तवाज़े रियासत व मुजाहेदा है आमद व ख़र्च के अमल दुरूस्त कर लो। घरेलू नक़्शे व कमाई के बढ़ाने की ज़रूरत नहीं है, जितना नक़्शा है इसी में अमल दुरूस्त कर लो, अल्लाह काम कर देगा। अब तब्लीग़ में जाकर रात को बीवी का ख़्याल, रोटी, दुकान, बच्चा अपनी उन चीज़ों को ख़्याल लाते हैं ज़मीन पर क़ब्र का ख़्याल करो, घर में क़ब्र का ख़्याल चार–पाई व आराम में नहीं आ सकता है बाज़ारों में जाओ तो दावत व ध्यान की मश्क़ करो। आपस की महफ़िलों में जन्नत–नार के तज़्किरे हों, चालिस दिन इसी तरह से हो कि छोड़ी हुई चीज़ों का ख़्याल ही न आए अगर आए तो यह कि इनसे मैं बीमार पड़ा हूं। काम करके यह दुआ मांगो कि अल्लाह इस काम के लिए कुबूल फ़रमाए। जैसे भैंस ख़रीदने से पहले एक–दो दिन इसकी आज़माइश के लिए दूध लेते हैं, ऐसे ही चालीस साल बाद चार महीने ऐसे ही चखने के लिए हैं अगर हम नख़रे करते रहे कि मैं आज जा रहा हूं, कल जा रहा हूं तो ख़ुदा उसे उस काम की तौफ़ीक़ न देंगे कि वज़ारत व मिम्बरी के लिए हज़ारों के नख़रे बरदाश्त करेंगे। लेकिन इस काम में नख़रे करते हो जिससे तमाम दुनिया के वज़ीरों व सदर कौमों में होंगे बहुत बड़ा काम है। दुआ मांगो अल्लाह हमें कुबूल फ़रमाए इसके बाद तुममें ख़ुद ब ख़ुद अल्लाह के रास्ते में निकलने का जज़्बा यह होगा कि वह चीज़ें सारी फ़रोग़त करके जाने पर तैयार होगा, इसमें इस एतिदाल पर लाया जाएगा। अब तब्लीग़ का यह निकलना इस वजह से है कि अल्लाह कुबूल फ़रमाए रो–रोकर इनसे मांगा जाए।

उमूमी बयान न० 5

कायनात ख़ादिम है इंसान की और इंसान मख़दूम है

असर के बाद, दिन जुमेरात, 3, मई, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया कि

मेरे भाइयों और दोस्तो !

दुनिया में एक ग़लत-फ़ह्मी है। इसकी वजह बावजूद बहुत ज़्यादा मेहनतों के परेशनियों और मुसीबतों में इज़ाफ़ा हो रहा है। ग़लम-फ़ह्मी यह है कि चीज़ों को अस्बाब हायात व परवरिश व हिफ़ाज़त व इज़्ज़त समझते हैं और मेहनत को चीज़ों के लिए समझते हैं। मेहनत से चीज़ मिलेगी, चीज़ के मसअ्लें हल होंगे, आज सारे मुस्लिम व ग़ैर-मुस्लिम इसी मेहनत पर लगे हुए हैं कि दुनिया दारूल-अस्बाब है चीज़ होगी तब तुम जियोगे तुमको सेहत मिलेगी। हक़ीक़त यह है कि मेहनत ख़ुद सबब है, चीज़ों को वजूद में आने का चीज़ों से ज़िंदगी के मस्अले का हल होना भी इसी वजह से हो सकता है। सदर, वज़ीर, फ़ुक़्रा की मेहनत एक जैसी है अगर मेहनत जान व माल का ख़र्च सही हो तो हर शख़्स को ख़ूब मिलेगा। ख़ून-ख़राबा और किसी ज़ात की वजह से हिकारत न रहेगी और हर ऊंचे व नीचे नक़्शे सबब फ़लां बनेंगे, अगर मेहनत इंसानी ग़लत हो जाए तो फिर मुसीबतें, बलाओं का दरवाज़ा खुल जाता है, असल सबब पर इंसान की अपनी मेहनत है और अगर इंसान चीज़ों में सही मेहनत को कर रहा हो तो कामियाब और अपनी मेहनत को वलीद व कनकरी से गिरा हुआ समझे, चीज़ों व कायनात को असल वजूद क़रार देकर उनके मुताबिक़ अपनी ज़ात

का इस्तेमाल व मेहनत हो, आमाल ख़राब हो जाते हैं। इससे चीज़ों के अगर ज़बरदस्त नक़्शे तैयार हो जाएं, लेकिन जहां भागे–भागे फिरें, वह उन मुसीबतों से नहीं बच सकते हैं कि उनकी ज़ात में सब ख़सरान मौजूद है, सरमायादारी, वज़ारत, चांद, आसमान, ग़रीबी हर जगह ना–काम हो जाएगा। सबब ना–कामी इसके आमाल हैं इस वजह से लाख रूपये हैं मगर यह पैसा में ना–काम होगा। अंबिया किराम इस ग़लत–फ़हमी के इज़ाला पर मेहनत की है। अंबिया की मेहनत व रोशनी से जब यह दूर हटता है तो फिर इसे अपने वजूद में कुछ नहीं दिखाई देता सिवाए इसके कि इसकी मेहनत से दूसरी चीज़ों का बनना नज़र आए ولقد كرمنا بنی آدم इसके लिए चांद व सूरज मुस्ख़र व ख़ुद्दाम हैं, इंसान मख़दूम है जब दीन से हटता है तो खुद को ख़ादिम समझता है और कायनात को मख़दूम, मक़ामे इंसानी यह है कि कायनात ज़मीन, आसमान इसके ताबेअ है यह इनके ताबेअ नहीं है अगर जान–माल का इस्तेमाल सही हो तो कायनात इसकी मवाफ़क़्त में वरना मुख़लफ़त में, इंसान छोटी मशीन है, कायनात बड़ी मशीन है लेकिन बड़ी मशीन इस मशीन के ताबेअ है अगर छोटी दुरूस्त हो तो बड़ी भी दुरूस्त होगी चलेगी वरना नहीं। अगर छोटी मशीन पर मेहनत न हो सिर्फ़ न हो सिर्फ़ चीज़ों पर मेहनत हो तो फिर वह बड़ी मशीन असल मशीन की ख़राबी की वजह से ख़राबियां लाती है अंबिया ने कहा तुम इध र–उधर कहां देख रहे हो अपनी ज़ात में देखो انفسكم افلا تبصرون अगर तबक़ा दुनिया का ऐसा हो जिसके पास दुनियावी चीज़ हुकूमत लश्कर, माल व दौलत न हो लेकिन आमाल दुरूस्त हों, दूसरे तबक़े के पास दुनिया की हर चीज़ हो लेकिन आमाल ख़राब हो तो तबक़ा औला के आगे तबक़ा सानी झुकेगा। इसकी ख़ुशआमद करेगा, अगर दो क़िस्मे तैयार न हों तो थोड़े सामान वाले बहुत सामान वालों के पांव पकड़ते रहेंगे और दोनों तबक़े ना–कामी

उठाते रहेंगे कि दोनों में सबब ना–कामी उठाते रहेंगे कि दोनों में सबब ना–कामी है अंबिया ने अगर ला इलाह इल्लल्लाह से बताया कि तमाम मस्अलों का ताल्लुक़ इस कायनात से नहीं है बल्कि ख़ालिक़ कायनात से है अपने से वजूद कायनात है इनके बनाने से चीज़ें मिलती हैं इनकी तक़्सीम से लोगों को मिलता है इनकी तरफ़ से हालात अच्छे आते हैं। तुम्हारी मेहनत से कायनात में तग़य्यूर नहीं होता है कायनात से तुम्हारी ज़िदंगी नहीं बनती है। जैसे आसमान ज़मीन की चीज़ें बनती हैं, ग़ल्ला उगते हैं इससे ख़ून, इससे मनी, मनी से रहम मादर में, वहां से ख़ून फिर लोथड़ा, फिर गोश्त, कितने हज़ारों साल में यह शक्ल बनी है। नौ महीने तो सिर्फ़ रहम मादर में लगते हैं ख़ून कितनी ग़िज़ा से बना, ग़िज़ा कितनी मेहनत से तैयार हुई, अब इस शक्ल इंसानी में रूह न डाली जाए तो 30 साल में एक इंच आगे न बढ़ेगा। इसके जिस्म में आमाल उसी वक़्त सादिर होंगे, जबकि इसमें रूह आ जाए, रूह के लिए दूसरा निज़ाम रूहानी है यह ग़ैबी है जिस्म ज़ाहिरी निज़ाम से है अब रूह के बाद सांस, बढ़ोत्तरी, ख़रूजली–दुनिया, जिस्मानी शक्लों से यह बाहर नहीं आया है बल्कि दूसरे निज़ाम रूहानी की वजह से यह आया है अगर जिस्मानी निज़ाम से काम होता तो सिर्फ़ अमरा अच्छे खाने वालों की शक्लें बढ़तीं। लेकिन चूंकि एतिसाल बिर्रूह से जिस्म बढ़ रहा है इस वजह से हर फ़क़ीर व अमीर का जिस्म बढ़ता है। रूह जब तक है उस वक़्त तक तमाम आज़ा काम करेंगे। जिस दिन रूह निकल गई उस दिन धड़ाम से नीचे गिरेगा, अगर मसाले से जिस्म महफ़ूज़ कर लें, लेकिन नशो व नुमा इस जिस्म में न होगा। जैसे इंसान के अपने वजूद में दो निज़ाम हैं, इसी तरह किसी शक्ल पर मेहनत करने से दुकान मकान, कमाई पर मेहनत करने से माल, मकान, फ़र्नीचर, ग़िज़ा मिली। इससे सूरत सेहत व इज़्ज़त हिफ़ाज़त की बन गई है, अब इस बनी हुई शक्ल का ताल्लुक़ निज़ाम रूहानी से होगा। अगर इस ऊंची शक्ल

में रोनो, ग़म, तक्लीफ़, मर्ज़ अल्लाह की तरफ़ से होगा तो आपके साथ भी होगा, चाहे लाखों की कार, करोड़ों रूपये, हज़ारों मील, सैकड़ों नौकर, ऐसे ही जब चाहे सेहत, बीमार, अम्न, ख़ौफ़, जूं, तंगी, मुआश के हालात के लाएं। लिहाज़ा शक्ल से पलना नहीं है शक्ल असल नहीं है हालात शक्लों का नाम नहीं है बल्कि मर्ज़, ख़ौफ़, अम्न, जूं अतश का नाम है जो निज़ाम रूहानी से मुताल्लिक़ है। अगर आप एक झोपड़े में टांट के कपड़े में चने खा रहे हैं और आमाल दुरूस्त है तो भूचाल, बम–बारी, सेलाब में झोपड़ा बचेगा। हालात का ताल्लुक़ आमाल से है अगर खुदा न खस्ता अगर इज़्ज़त उरूज, सुकून, ग़ल्बा, राहत की बहुत बड़ी शक्ल बनाई लेकिन आमाल बुरे हैं उनसे इस शक्ल में रोना पड़ेगा। अंबिया व सहाबा रज़ि० की मेहनत उस पर है कि अपने आज़ा व जवारह में वे आमाल अख़्तियार करें जो कामियाबी के सबब हैं। जो लोग इस गहरी बुनियाद पर मुत्तला न थे उनको ज़ोर, वज़ारत, बादशाहत, मकान, खेती–बाड़ी, तिजारत पर था। और जो इस हक़ीक़त पर मुत्तला थे कि कामियाबी खजूर, पत्ते चबाने व कच्चे मकान में आ सकती है, ऊंचे नक़्शों में ना–कामी आ सकती है तो वह पूरे दिन उनकी आमाल चीज़ों के लिहाज़ से नहीं थे, बल्कि हुज़ूर सल्ल० के बताए हुए तरीक़े पर थे। सहाबा रज़ि० में सबसे बड़े अबूबक्र रज़ि० हैं, उमर रज़ि० उनके सामने जैसे सूरज के सामने चांद बे–नूर है। आज मुल्क व माल का ज़ोर है इस वजह से दिल उमर रज़ि० की तरफ़ खींचता है, अबूबक्र की बड़ाई को नहीं जानते हैं कि उमर रज़ि० के ज़माने में बैतुलमाल, बच्चों के वज़ीफ़े का निज़ाम बना, हालांकि उमर रज़ि० की ज़िंदगी बादल का साया है। अबूबक्र रज़ि० खुद बादल हैं, इसी वजह से उमर रज़ि० कहा करते थे कि अबूबक्र सिर्फ़ एक दिन या रात की नेकियां दे दें तो मैं उन्हें अपनी सारी उम्र की नेकियां दे सकता हूं। एक रात जब तारों वाली थीं हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा इन तारों की जितनी नेकियां भी किसी की

हो सकती है ? हुज़ूर सल्ल० ने कहा उमर रज़ि० की आइशा रज़ि० के दिल में जब अपने वालिद अबूबक्र रज़ि० का ख़्याल आया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि एक रात की नेकियां इससे ज़्यादा हैं। अबू हुरैरह रज़ि० और आइशा रज़ि० क़समें खाकर कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के बाद अबूबक्र रज़ि० न होते तो इस्लाम मिट जाता, उमर रज़ि० के होते हुए भी, वैसे अबूबक्र व उमर रज़ि० में सिर्फ़ दाएं–बाएं का फ़र्क़ था, 19, 20 का फ़र्क़ था, अगर 19 मिन्ट पर क़त्ल है, 20 मिनट पर बरात लेकर पहुंचे तो उसे फांसी हो चुकी होगी, 19 मिनट पर गाड़ी हो तो 20 मिनट में पहुंचे पर गाड़ी न मिलेगी। हुज़ूर सल्ल० के बाद सारे एतराफ़ के अरब जो मुस्लिम थे मुर्तद हो गए, इसमें हिक्मत क्या है, सारी सीरत क़ियात तक के लिए उम्मत के सारे पहलूओं को सामने लाई है कि फ़्लां बात से उभरेगी, फ़्लां बात से गिरेगी। पहले यह समझो की दीन मेहनत से चलता है, जब मेहनत ख़त्म दीन ख़त्म, जैसे निकलना उसी वक़्त पानी देता है जब तक चलाया जाए वरना पानी देना बिल्कुल बंद हो जाएगा। दीन की बुनियाद ग़ैब पर है, ग़ैब जब तक हो दीन है जब ग़ैब में कमी दीन में कमी, बद्र, उहूद में है कि बद्र में एहकाम सामने रखने पर चलने में कामियाबी मिलेगी, माल व राय व चीज़ों पर क़दम उठाने से मिन–जानिब अल्लाह ख़राबियां क़त्ल, फ़ित्ने आएंगे। ऐसे ही बद्र में यह ख़्याल था कि तादाद में कम कैसे जितेंगे ? हम जितांएगे, हुनैन में दिल में आया है कि जब 313 जीत गए तो आज बारह हज़ार कैसे न जितेंगे ? पहली टुकड़ी की हार हो गई हुज़ूर सल्ल० के पास सिर्फ़ बारह थे। आवाज़ लगवाई ऐ अंसार ! इतनी घबराहट थी कि इंसान के बजाए जानवर बद–हवास थे। घोड़े मोड़ने पर न मुड़े तो असांर उसी वक़्त घोड़ों से कूदे और सब पलटकर हुज़ूर सल्ल० के पास गए तो अब सौ से इस लश्कर को हार हो गई। जो बारह हज़ार को हरा चुका है वजह यह थी कि अब सिर्फ़ हुक्म पर आए थे पहले अपनी कसरत

की शक्ल इनके सामने थी, शक्लों में ना–काम हो जाओगे। अगर शक्लों के लिहाज़ से क़दम उठाओगे, अगर अहकाम सामने रखोगे तो बग़ैर शक्लों के क़ामियाब हो जाओगे। हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात के बाद मुसलैमा के साथ लाख, सजाअ के साथ कई हज़ार, सजाअ मुसलैमा की शादी पर दोनों लश्कर मिल गए। कुछ ने ज़कात देने से इंकार किया, किसी ने अबूबक्र रज़ि० को ज़कात देने से इंकार किया। इंतिक़ाल के वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने तमाम मदनी मुसलमानों को शाम की तरफ़ चलाना चाहा, इसमें उमर रज़ि० भी थे। हुज़ूर सल्ल० ना–साज़ी तबियत की वजह से किसी का जान को दिल न चाहा, उसामा रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० से मुहब्बत, हुज़ूर सल्ल० को उसामा से मुहब्बत थी। इसी वजह से उसामा रज़ि० का भी दिल नहीं चाहता है। आपने इशारे से रवाना होने का हुक्म दिया, इनके आने पर हुज़ूर सल्ल० के दो आंसू निकले, हाथ से जाने का इशारा किया, हाथ से दुआ मांगी। आख़िर में संभालने की तरफ़ आई, सबको ख़ुशी हुई कि तबियत दुरुस्त हो गई, औरतें अपने घरों को नहाने गयीं, अबूबक्र रज़ि० बीवी से मिलने गए, सुबह को उसामा रज़ि० ने आकर जाने की ख़ुशख़बरी दी। आख़िर में सिर्फ़ आइशा रज़ि० थीं और हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया, एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० का सर आइशा के सीने पर था, सर एक तरफ़ धलका, आइशा रज़ि० समझीं हुज़ूर सल्ल० बोसा लेना चाहते हैं इस वजह से इन्होंने अपना चेहरा भी क़रीब कर दिया। लेकिन हुज़ूर सल्ल० के मुंह से एक क़तरा आइशा के गले पर पड़ा, जिससे वह कांप गयीं उसामा रज़ि० वाले लश्करी घोड़ों पर बैठकर इनका रुख़ शाम की तरफ़ कर चुके थे। उन्होंने ख़बर मिली, अबूबक्र घर पहुंचे, आवाज़ सुनाई दी लड़की से कहा जाकर देखो क्या एलान है। लड़की ने कहा हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया आख़िर अबूबक्र ख़लीफ़ा बने, ख़लीफ़ा बनते ही अबूबक्र रज़ि० ने जैश उसामा रज़ि० को शाम भेजना चाहा। उन हालात की ना–साज़गी की

वजह से सबने जाने के ख़िलाफ़ किया, लोगों ने कहा मश्विरा करो। अबूबक्र रज़ि० ने कहा अहकाम में मश्विरा नहीं यह हुक्म उस वक़्त का जब हालात दुरूस्त थे। अबूबक्र रज़ि० ने कहा हो सकता कि उस वक़्त अल्लाह तआला ने यह बात इस हुक्म पर रखी हो कि इरतिदाद का इलाज इस जैश के भेजने में हो। आख़िर उन्होंने कहा कि अगर कुत्ते अज़वाजे–मुताहारात की लाशों को घसीटतें फिरें तब भी लश्कर को रवाना करूंगा। उमर रज़ि० ने कहा अमीर बदल दें, दाढ़ी पकड़कर कहा, इस अमीर को बदल दूं जिसे हुज़ूर सल्ल० ने बनाकर गए हों। उमर रज़ि० ने वापस जाकर लश्कर वालों से कहा तुम्हारी मां मरे, इस लश्कर के जाने के बाद अबूबक्र रज़ि० ने 150 बालिग़ मर्दों को बाहर ले जाना चाहा अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, اینقص الدین وانا حی उमर रज़ि० से कहा اجبار فی الجاهلية وخوار فی الاسلا• जैश उसामा रज़ि० का रास्ता बदलते रहना हर नमाज़ के बाद अबूबक्र रज़ि० का हमला करना, तीन रात, तीन दिन मदीने में कोई बालिग़ न था। इस पर अल्लाह की नुसरत आई, एक महीने में सारे अरब पलट गए, उमर रज़ि० ने अपने ज़माने में उम्मत को बिठाया नहीं चलाया है। हुज़ूर सल्ल० ने उम्मत तैयार की, अबूबक्र नबी की ग़ैर–मौजूदगी में उम्मत को मेहनत के मैदान में डाला। उमर रज़ि० ने मुल्क व माल के नक़्शों में उन आमाल को पकड़ रखा जो फ़क्र में थे कि ये आमाल नुबूवी क़ीमती हैं। चीज़ें शक्लें नहीं, अब हमारी और तमाम इंसानों की कामीयाबी सिर्फ़ इनमें से है कि आमाल दुरूस्त हो जाएं, और इन आमाल के लिए मस्जिद बनाई गई। आज मस्जिद बाज़ारी मुलाज़मीन कुदरत इलाही से बाद रखने मुल्क व माल पर यक़ीन रखने वालों की बैठक बन गई है। मस्जिद तो इसलिए है कि अल्लाह सबसे बड़े हैं, सब इनसे छोटे हैं सिर्फ़ इसी बड़े से होता है किसी छोटे की शिर्कत के बगै़र और उनसे कामियाबी हुज़ूर सल्ल०

वाले तरीक़े से मिलती है। हुज़ूर सल्ल० वाला तरीक़ा आमाल का है। जिनसे ही कामियाबी मिलती है। उन शक्लों व चीज़ों से कामियाबी मिलती है कुदरत से कामियाबी उन आमाल पर मिलती है शक्लों में दोनों पहलू हैं, दुरूस्त व मतलूब पहलू सिर्फ़ आरज़ी मिलेगा अगर मिलेगा दूसरा पहलू नाकामी वाला दाइमी है। खारजा की कामियाबी सिर्फ़ आमाल हैं, चीज़ें नहीं है, अब उस आवाज़ के बाद उस मस्जिद में आकर आमाले ख़म्सा के ज़रिए ईमान को मज़बूत करता है। बाज़ार में जो कुछ आंख ने देखा, इसके ख़िलाफ़ का मस्जिद में सुनेगा, अगर मस्जिद का पहलू इतना ही भारी हो जाए, जितना आज बाज़ार का पहलू ग़ालिब है तो ईमान मिलेगा इल्म इलाही हासिल करो। ध्यान ख़ुदा वाला लो, तवाज़े व मुसावत, अल्लाह की ख़िदमत की मश्क़ करो और आमाल मस्जिद से हालात ठीक होंगे, बाज़ारी मेहनत से सिर्फ़ नक़्शे बनेंगे। लेकिन हालात दुरूस्त सिर्फ़ उन आमाल मस्जिद से ही मिलेंगे।

उमूमी बयान न० 6

जब तक कमाई का दीन ज़िंदा न होगा उस वक़्त तक दीनदार बनने की मिसाल ऐसी है जैसे सोने की रकाबी में पाख़ाना

फ़जर के बाद, 6, मई, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया कि

मेरे भाइयों और दोस्तो !

माल पर मेहनत करने से घटिया क़िस्म की व आरज़ी ज़िंदगी की तर्तीब क़ायम होती है और अमल पर मेहनत करने से आला क़िस्म की ज़िंदगी की क़ामियाबी मिलती है अब इंसान जितनी मेहनत माल लेने पर करेगा। तो इसके ब–क़द्र मिल जाएगा, इसको ज़्यादा वक़्त 24 घंटे में से न मिलेगा, मिसाल के तौर पर मुलाज़िम को रोज़ाना छः घंट के पैसे मिलेंगे। बाक़ी 18 घंटे के आमाल का कुछ न मिलेगा। किसान को सिर्फ़ इतने वक़्त की खेती मिल जाएगी जो वक़्त उसने ख़ास खेती करने में लगाया और ताजिर को सिर्फ़ सुबह से शाम तक की मेहनत का मिलेगा, बाक़ी वक़्त का इसे कुछ न दिया जाएगा। अब ख़र्च को 24 घंटे हैं और कमाई सिर्फ़ चंद घंटे की, अब माल जितना आएगा ज़रूरतें बढ़ जाएंगी। 500 की कमाई और ख़र्च 1500 होगा तो फिर कंगाल, वक़्त के साथ मुसीबतें भी आएंगी, घर में काराबार में आफ़त व मुसीबत मिलेगी ज़रूरतें पूरी न होंगी अब मौत से मरते ही अज़ाब शुरू हो जाएगा। अगर इसकी आंख न खुली दोज़ख़ की तरफ़ खिड़की, दोज़ख़ का बिस्तरा,

सांप, बिच्छू, हश्र में जब नामे-आमाल बाएं हाथ में मिलेगे तो इस हाथ को कोहनी तक चबा जाएगा। इसके आंसू इतने निकलेंगे कि इसमें कश्तियां चल जाएंगी ऐसे ही फिर ख़ून, फिर पीप इसी कैफ़ियत से निकलेंगी और फिर जहन्नम की आग होगी इस सारी मुसीबत के बाद, जहन्नम की आग सत्तर मर्तबा समुंद्र में डालकर ठंडी करके इस दुनिया में लाई गई। एक ऐसा ज़हरीला सांप की ज़मीन पर सांस ले तो कभी सब्ज़ी न आएगी। दुनिया का माल सांप बना दिया जाएगा और कुछ माल तख़्तियां बनाकर आग में डालकर सुर्ख़ किया जाएगा और इससे माथे पहलू पुश्त पर दाग़ दिया जाएगा कि यही वे माल है जिसको तुमने सही तौर पर ख़र्च नहीं किया तख़्तियों की इतनी जलन होगी कि रखते ही अन्दर का हिस्सा जल जाएगा। जिन जानवरों को जमा किया लेकिन इसमें हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े इख़्तियार न किए तो सारी उम्र के तमाम जानवर इकट्ठा करके हश्र में लाए जाएंगे। इस मालिक को ज़मीन पर लिटाया जाएगा और इसके जानवर बहुत मोटे, उम्दा सींग, तेज़ खूर इसके सर या पैर की तरफ़ से इसके ऊपर से गुज़रेंगे और पचास हज़ार साल तक इसके सर से दायरा बनाकर गुज़ारते रहेंगे जैसे कोहलू का बैल, या गाड़ी की तरह सीधे चलते रहेंगे। सींगों से मारेंगे दबाई हुई ज़मीन तोक़ बनाकर गले में डाल दी जाएगी कांटने वाल सांप लम्बे, गंजा सांप बहुत ज़हरीला होगा खाने पीने को कुछ नहीं, बहुत रोने पर ऐसा गर्म पानी मिलेगा कि ऊपर का होंठ सर तक, नीचे का होंठ नाफ़ तक अतड़ियां कटकर बाहर, खाने को कांटे, इसका जिस्म लम्बा कर दिया जाएगा मौढें से पांव तक 500 साल में तै हो जाए। दाड़ उहूद की तरह ज़ुबान जब बाहर निकालेगा तो एक मीम लम्बी इस पर बिच्छू ऐसे चल रहें होंगे जैसे गधे। जिस्म इस वजह से बड़ा किया जाएगा कि छोटे जिस्म पर तरफ़ एक सांप आएगा, यानी ज़्यादा अज़ाब के लिए। ये सब कुछ इस वजह से हुआ कि माल पर यक़ीन कर

लिया और तमाम ईमानियात ख़त्म, तक़दीरों पर यक़ीन ख़त्म करके मुक़द्दर को न माना, अपनी मेहनत को माना, कुरआन व रसूल सल्ल० का यक़ीन ख़त्म ईमान बिर्रुसूल यह है कि हुज़ूर सल्ल० की इत्तिबा में कामियाबी वरना ना–कामी है अल्लाह पर ईमान यह है कि इनके देने से मिल रहा है यह दोनों यक़ीन नहीं है अब माल ने ईमान को ख़त्म कर दिया तो मरते ही अज़ाब शुरू, ज़िंदगी में चैन नहीं, माल बहुत कम मिला और जो आज मिलता है इससे भी रूपये में चौदह आने हुकूमत ले लेती है और सिर्फ़ दो आने मिलता है आमाल ख़म्सा को ज़्यादा माल की वजह से छोड़ा और माल भी सारा न मिला। माल पर मेहनत करने से माल ही जाता रहा, हुज़ूर सल्ल० ने माल की मेहनत से हटाया था और आमाल वाली मेहनत पर लगाया। जिससे माल ख़ूब हुआ, सहाबा रज़ि० कहते हैं कि मिट्टी उठाकर बेचें तो सोने की तरह नफ़ा मिले। इस ज़माने में जितना कमाया अपनी जैब में, टैकस वग़ैरह कुछ न था ख़र्च ख़ूब हो रहा है आजकल आमदनी लाखों में से बीस हज़ार, गधे हैं, ज़्यादा माल वालों से जब चलने को कहा जाता है तो कहते हैं कि मत कहो। दिवालिया निकलने को है मरते तक इज़्ज़त से रह जाएं अरे भी तो रूपये में चौदह आने भी न रहे कहीं बाक़ी दो आने भी लें। फ़ौजियों की तरह खाने–पीने को ही मिले माल पर मेहनत करने से माल भी पूरा नहीं मिल रहा है। हुज़ूर सल्ल० हम पर शफ़ीक़ बनकर आए हैं। आशिक़–माशूक़ पर इतनी शफ़क़त नहीं करता जितनी हुज़ूर सल्ल० ने हम पर और ओरों पर फ़रमाई है। हुज़ूर सल्ल० ने बताया कि माल फ़ानी व हाथ का मैल कुचैल है, अमल पर मेहनत करके ज़िंदगी बनाओ, इसी से बहुत उम्दा ज़िंदगी मिलेगी, माल पर मेहनत करने से अल्लाह के देने पर मिलेगा। मेहनत एक सबब है मुअती हक़ीक़ी कहता है कि अमल पर मेहनत करने से ख़ूब दूंगा, दुनिया व आख़िरत में रूपये पर रूपया ही मिलेगा और उसे हर अमल पर मिलेगा तो 24 घंटे के हर अमल

पर मिलेगा। रोटी खाने, इलाज, सोने, पेशाब, पाख़ाना करने में आमद ही आमद होगी और ख़र्च न होगा। सौ मेहमान है तो हज़ारों का मिलेगा हुकूमतों व अवाम की शर्तों से बच जाओगे अब आज हम यह समझते हैं कि मेहनत से माल मिलता है माल से चीज़ें, आमाल तोड़कर माल की शक्लें बढ़ रही हैं माल आने पर भी आमाल तोड़ेंगे, कमाने में आमाल को सामने न रखा। माल ख़र्च करने में भी आमाल को तोड़ दिया जायदाद, गाड़ी, मोटर, गाय, बैल, भैंस सामान, मकान, ख़रीद लिया। 24 घंटे की ज़िंदगी मुसीबतों का सबब है और हम यह समझ रहे हैं कि कमाई को बढ़ाकर हम उस मुसीबत में से निकल जाएंगे अरे माल पर मेहनत बढ़ाने से रूपये में से चौदह आने गए अब और बढ़ाने से दो आने और न चले जाएं। अरे हम समझदार, शहरी, ताजिर, अब मेहनत से भी कम मिलता है। (कुत्ते ही) सहाबा किराम को तो नमक व काफ़ूर में फ़र्क़ मालूम न था। सालन में काफ़ूर भी डाल दिया सालन कड़वा हो गया, सहाबा के ज़माने में गुन्दम न थी, खजूर, ज़्यादा से ज़्यादा, जो कि रोटी हाशिम पर हुज़ूर सल्ल० के परदादा ख़ूब खिलाते थे एक शेर ने ताअन से कहा अरे खजूर व जों खिलाया। गुन्दम तो न खिलाई, इस पर सौ ऊंट शाम भेजकर गुन्दम, घी मंगवाया, खिलाया लोगों ने तारीफ़ की। सहाबा किराम ने एक मर्तबा पतली चुपानी देखी सफ़ेद, सहाबा किराम रज़ि० उसे रूमाल समझकर हाथ पोंछने लगे। फिर बताया गया तो ताज्जुब करने लगे सुना था कि गुन्दम व घी खाने से आदमी बहुत मोटा हो जाता है सहाबा किराम रज़ि० ने लुक़्मा मुंह में रखते ही अपने मोथड़ों को देखना शुरू कर दिया। अबू हुरैरह भी उन लुक़्में वालों में थे और हम तो हर वक़्त गुन्दम खाते हैं और चीज़ें हाथ से जा रही हैं, सहाबा किराम गिनती भी न जानते थे। हुज़ूर सल्ल० ने पैशनगोइ के तौर पर फ़रमाया हीरा फ़त्ह हो रहा है ख़ालिद रज़ि० उधर से जा रहे हैं इधर शहज़ादी शिकार में गई हुई है एक सहाबी ने कहा

हुज़ूर सल्ल० मुझे यह दे दें। हुज़ूर सल्ल० ने दे दी, चुनांचे इस इलाक़े में मुसलमान ख़ालिद रज़ि० के साथ गए। फ़त्ह हुई और शहज़ादी शिकार से वापस आई तो यह सहाबी उसके ऊंट की गरदन में लटक गए कि यह औरत हुज़ूर सल्ल० मुझे दे गए हैं। ख़ालिद रज़ि० ने गवाह की वजह से वह दावत इन्हें दे दी इस औरत के ताल्लुक़ वालों ने कहा हम लाखों देकर तुम्हें इससे छुड़वा लेते हैं इसने कहा नहीं पहले मैं बात कर लूं। उस सहाबी से कहा में बूढ़ी हो गई तुम मुझसे पैसे ले लो, मुझे छोड़ दो। सहाबा रज़ि० ने कहा में दस सौ से कम हरगिज़ न लूंगा, उसने कहा क्या ये ज़्यादा है नहीं इससे कम न लूंगा इसने लाखों के बजाए एक हज़ार देकर जान छुड़ा ली बाद में किसी ने कहा बहुत सस्ते छोड़ दिया कहने लगे। मुझे इससे ज़्यादा गिनती आती ही नहीं, यानी हज़ार अदद था जैसे हमारे लिए पदम का दर्जा है एक सहाबी को अख़रोट मिला जो निहावन्द के इलाक़े की तमाम मुस्लिम फ़ौजों की जरनल थे नौमान बिन मक़रन रज़ि० ने कहा, अल्लाह ने क्या उम्दा पत्थर तैयार किया गोल, गोल, तोड़ने पर कहा कि पत्थर कि सुबहानल्लाह पत्थर में खाने की चीज़ रखी और जब लड़ाई शुरू करना हो तो, मुग़ीरह रज़ि० आकर कहते कि हमला शुरू करवादो। दो–तीन मर्तबा के बाद कहा कि मैं उस वक़्त को जानता हूं जब आसमान से नुसरत नाज़िल होती है। दुनिया की चीज़ें नहीं जानते हैं लेकिन हालत आलम कब बदलते हैं तमाम बातिल कैसे ख़त्म हो ? किसरा व क़ैसर जैसे अज़ीम मुल्क कैसे फ़त्ह हों इसके रास्ते जानते हैं हमारे इल्म इनके इल्म के सामने कुत्ते के इल्म की हैसियत नहीं रखता है जो जानते थे इससे मुल्क, माल, हाकमियत इ़ज़्ज़त ख़ूब ली और हमारा इल्म इनमें से हमें कुछ नहीं देता हुज़ूर सल्ल० इन्हें दुनिया की चीज़ें सीखाकर गए थे बल्कि आमाल देकर गए थे यह तो है माल का रास्ता, दूसरा है अंबिया का रास्ता आमाल के ज़रिए लेना इससे दुनिया व आख़िरत में मिलेगा साल

भर की कमाई से जितना मिलता है तो आमाल दुरूस्त कर लेने से एक हफ़्ते में इससे ज़्यादा मिलेगा चाहे कमाई की शक्ल इससे कम मिलने की हो। हमारा दिल दिमाग़ से माल से मिलना ख़त्म हो जाए, आमाल से मिलना समा जाए, खेती से नहीं मिलता, खेती में हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े अमल से मिलेगा और हर जगह के हर अमल पर ज़रूर मिलेगा। सिर्फ़ कमाने पर नहीं मिलेगा खाने को आमाले सालेह बना दो तो इस खाने पर भी मिलेगा अमल सालेह का मतलब यह है कि 24 घंटे हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ा पर इस्तेमाल हों। पैशाब या पाख़ाना पर मिलेगा, अब अमल के ज़रिए लेने के लिए सबसे पहले यक़ीन बदलना पड़ेगा। आज हम समझते हैं हमारी मेहनत से माल, माल से तब्लीग़ व हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल, जब सूद वग़ैरह की हुरमत बताई जाए तो जवाब में कह दिया जाता है कि तुम कमाना क्या जानो ? कमाना हम जानते है अरे यह आलम मस्अला अपने घर से तो बता नहीं रहा है ख़ुदा और रसूल सल्ल० बता रहे हैं बात उन तक पहुंच गई अरे ख़ुदा, रसूल सल्ल०, उमर, अब्दुर्रहमान, उस्माम व सहाबा रज़ि० तिजारत न जानते थे। बस से यक़ीन मोटरों की कमाई से माल नहीं मिलता है ख़ुदा के आमाल से मिलता है और हम कहते हैं कि पहले कमाने दो, गुन्दम काट लेने दो, फिर तब्लीग़ में जाएंगे। यानी पहले माल लेने का काम करना है अब फ़ुर्सत में जाएंगे इससे ईमान कामिल न मिलेगा बस यही समझना है कि हमारी मेहनत से नहीं मिलता है आमाले सालेह से मिलता है सब हराम से नमाज़, हज, आमाल, क़ुबूल नहीं होते कस्बे हराम के बाद नमाज़ में ख़ुशूअ कैसे मिल सकता है। जब तक कमाई का दीन ज़िंदा न होगा, उस वक़्त तक दीनदार बनने की मिसाल ऐसी है जैसे सोने की रकाबी में पाख़ाना, इधर से शुक्र, ऊपर से तमाम दुनिया भर के मेवे दूर से अच्छे लगेंगे अन्दर से पाख़ाना भरा हुआ है। जड़ से उठाओ, फिर तरीक़े ज़िंदगी के बदलेंगे कमाई से माल नहीं है माल व चीज़ें परवरिश सिर्फ़ आमाल

से होगी सबसे पहले अमल यक़ीन बदलने की मेहनत करो। अल्लाह खुद देंगें। तमाम मसअले हल करेंगे हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़ा चलने से हमारी ज़िंदगी ईमान पर उठेगी इसकी शाख़ कमाना होगा आज हम कमाई को असल समझते हैं नमाज़, तालीम, दावत, ग़श्त, तब्लीग़, सब शाख़ हैं कमाने से दीन चलेगा अरे नहीं ईमान असल है कमाना इसकी शाख़ है। दावत, तालीम, ज़िक्र, इबादत व ख़र्च व नफ़र अल्लाह ख़ूब देंगे हर चीज़ व हर तक़ाज़े को पूरा करेंगे मस्जिद उन आमाल के लिए है जिनकी वजह से नूह अलै० से ईसा अलै० तक खुदा ने हालात आलम बदले हैं जितना मेहनत का मैदान बन जाएगा उन आमाल का, उतना ही निज़ाम बदल जाएगा। नूह के ज़माने में अक्सीरियत अक़लियत को मारती थी, ख़ुदा ने अकसीरियत को डूबो दिया अकलीयित को चमका दिया, नूह दावत लेकर खड़े हुए जितने अहकाम आए उसे अम्मत को सीखाते रहे, ज़िक्र इबादत इसके साथ था आख़िरत में दुआ करवाकर अक़लीयत को ख़ुदा से चमका दिया। सालेह अलै० के ज़माने में सरमायादार मज़दूरों को लूट रहे थे मज़दूर इन्हें चार आमाल की वजह से ग़ालिब हुए, हुकूमत फ़िऔनिया का ज़वाल, हुकूमत नमरूद का फैल होना, कारून का धंसना, आसमान से खाना उतरना, पत्थर से ऊंटनी का निकलना, दावत, अख़्लाक़, इबादात, ज़िक्र व तालीम है उन आमाल के वजूद में आने से ख़ुदा निज़ाम आलम बदल देंगे। तुम्हें कुछ नज़र न आएगा लेकिन ख़ुद बदल देंगे ये आमाल अरबा ख़ूब आम हो जाएं तो आलम का निज़ाम तामीर की तरफ़ आ जाएगा। वरना तख़रीब की तरफ़, उन आमाल के ज़िंदा हो जाने व जड़ बन जाने और कमाई के उनसे न रोकने पर निज़ाम आलम बदले हैं कमाई न करें तो उन आमाल पर भी ख़ुदा देते हैं मकान, ज़मीन, इज़्ज़त, हिफ़ाज़त ही आमाल की वजह से दुनिया व आख़िरत की मुसीबतों का ख़त्मा होगा। पहला यक़ीन उन आमाल पर हो, जैसे नमाज़ में पहले क़ियाम है ऐसे ही उन आमाल से उम्मत का क़ियाम दो वजूद

हैसियत है, क़ियाम हो फिर रुकूअ है ऐसे ही पहले यह ईमान है कमाना दूसरे दर्जे में है कमाना भी इस यक़ीन से हो कि इससे नहीं ख़ुदा के देने से मिलेगा, मस्जिद के अहकाम का पूरा करना, ज़िक्र, अल्लाह की रज़ा लेकर जाओ यह कमाई रुकूअ है। मुआशरती जगहों पर माल जान लगाना सज्दा है घर पर लगाना क़ायदे की तरह है उन आमाल अरबा से उम्मत का क़ियाम होगा फिर रुकूअ है कमाई से ईमान, ताअत, ध्यान, अल्लाह की रज़ा के साथ अल्लाह ने जहां-जहां माल जान खलके-ख़ुदा की ज़िंदगी बनाने के लिए लगाना बताया है यह सज्दा है और यह आमाल ख़िलाफ़त वाले हैं هواقرب مايكون فى السجده से ख़ास जोड़ हो गया ख़ुदा देते हैं। दूसरों से लेते नहीं तो भी दे और मत ले ख़लीफ़ा बन जाएगा घर पर लगाना क़ायदे की तरह है उन आमाल अरबा से उम्मत का क़ियाम, फिर कमाने में आमाल का लिहाज़, रुकूअ, फिर दूसरों पर लगाना सज्दा, ख़ुद पर लगाना क़ायदे आमाल अरबा पर तीन दरवाज़े खुलेंगे। बग़ैर मेहनत माल, बग़ैर माल, चीज़ें बग़ैर चीज़ें हालात का दुरूस्त होना इसी तरह कमाई अगर यक़ीन तरीक़ा नुबूवी व ज़िक्र अख़्लाक़ के साथ हो तो तीनों दरवाज़े खुलेंगे। दुकान पर इस तरह कमाया लोग फल व खाना पैसा दे गए। लोग झुककर सलाम करते हैं और पीठ पीछे तारीफ़ करेगा, तीसरे न० सज्दे के क्या कहने घरवाली को ले गए अन्दर भेजा तो मालूम हुआ कि माल बहुत पतला है तो पैसे दे दिए। ख़िदमत वाले अख़्लाक़ से तुम ख़ुदा और रसूल सल्ल० व अवाम के माशूक़ बनोगे जबकि तमाम मुल्क व माल वाले इनसे चूस रहे हैं, ख़ुदा तुम्हारे ज़रिए इनको रोज़ी देंगे। लिहाज़ा तुम्हें ख़ूब देंगे अगर इस तर्तीब से ज़िंदगी गुज़ारी तो उस वक़्त माल न रहेगा। जिस फ़िज़ूल घर पर लगाओगे न लम्बे-चौड़े मकान, न उम्दा-उम्दा कपड़े न कारें, न सामान, दीन, फ़ैला दो, ख़ुदा उनके मकान हमें देगा। अब सलाम फेरकर ख़ुदा से मांगो दुआ, क़ियाम, रुकूअ, सज्दा, व कायदा वाले

आमाल ज़िंदा कर दो तो तुम पर कोई उंगली न उठा सकेगा कि फ़लां अमल में कमी है किसी आयत व हदीस की वईद न आएगी। अदामर व नवाही व जिहाद के तर्क़ की वईद से निकल गए तालीम पर मेहनत से तालीम छोड़ने की वईदों से निकल गए। यह मदरसों से यह वईद ख़त्म नहीं होती इस वजह से मदीना में सबसे ज़्यादा ज़िक्र, शक्लें, तालीम व ताल्लुम में अशअरी क़बीला एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० से आकर कहा कि ताज्जुब की बात सुनी क्या ? अबू मूसा अशअरी कुछ आदमियों को लेकर एक मकान में बैठकर उन्हें कुरआन सुनाते हैं इनसे सुनते भी होंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जब यह हलक़ा जमा हो तो मुझे ले जाना चुनांचे वह सहाबी हुज़ूर सल्ल० को ले गए, हुज़ूर सल्ल० खुश हुए اوتیت مزمارا من مزامیر ال داود शहर के एक मुहल्ले की पब्लिक़ की तालीम का इंतिज़ाम कर रहा है इनके मुहल्ले से मुलहिक़ गांव में तालीम न थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया ख़ुत्बा में, क्या हाल है उन लोगों का कि वे अपने मुहल्ले के लोगों को सीखाते हैं क़रीब के गांव वालों को नहीं सीखाते। बाज़ार आ जाएं वरना में घरों को आग लगा दूंगा ऐसे ही न जानने वाले सीखें वरना इनके घरों को आग लगा दूगा। हालांकि मुहल्लों की मस्जिद में बच्चों को नहीं बड़ों को तालीम दे रहे हैं आज उलेमा, अवाम पर मुसीबत इन्ही वईदों की वजह से आ रहीं हैं अगर यह ज़ाहिरी तक्लीफ़ पहुंचाने वाले गै़र–मुस्लिम न होते हुज़ूर सल्ल० भी होते तो वह आज तमाम देहात में आग लगा देते और ऐसे ही मदरसे वाले हुज़ूर सल्ल० की इस वाइद से न बच सकते। ऐसे ही तुर्क़ जमाअत पर भी मुसीबत आ रही है उस तर्तीब के बाद दुआ मांगो, ज़रूर कुबूल होगी। अहले दुआ में से हो जाओगे दुआ अमल का इनाम है हर मस्अले का हल दुआ से हो जाएगा। नमाज़ में भी आख़िर में दुआ है सलाम के बाद, नमाज़ हमारी ज़िंदगी का फ़रोग़ है, क़ियाम उम्मत मस्जिद वाले आमाल में है, कमाई सही तरीक़े वाली आ जाए।

अख़्लाक़ खुदा–वंदिया आ जाएं। क़ायदे की तरह घरेलू ज़िंदगी पर सही तौर पर ख़र्च करोगे, अब दुआ सलाम के बाद तुम तो दिल के ग़नी बन जाओगे, दिल की बे–सब्री फ़क़्र है चाहे हज़ारों रूपये व मकानात हों। दिल का सब्र इत्मिनान ग़िना है कि अल्लाह मेरे हैं लिहाज़ा उनके ग़ैर महदूद ख़ज़ाने मेरे हैं इसके बाद तुम्हें अमल पर ख़ूब मिलेगा और हर अमल पर मिलेगा, सारा साल दावत में लग गया और तालीम व ज़िक्र मं तो भी ख़ूब मिलेगा हर अमल पर खुदा देंगे। अब यह मिलना हज़ार मन है तो सिर्फ़ कमाई के ज़रिए लेना छटांक है, उन आमाल अरबा से अंबिया वाले ईनाम बड़े–बड़े मिलेंगे। क़ौमें पलट देंगे आज के दुश्मन व जान लेने वाले कल को दोस्त व जान देने वाले बन जाएंगे। तब्लीग़ में दो वजह से जा रहा हूं, पहला हमारा यक़ीन कमाई से मिलना का ख़त्म हो, उन आमाल से मिलने का हो कि उन आमाल पर खुदा हमें पालेंगे ये आमाल ही कमाई की सबसे बड़ी शक्ल हैं नफ़्स कमाना छोटी शक्ल है हर जगह ख़ूसूसी, उमूमी, दुकानो, व मकानों व खेतों पर जाकर ईमान की बात कहो कि अल्लाह हमें यह दे दे इन्हें भी दे दे कमाई सिर्फ़ तिजारत, खेती–बाड़ी, मुलाज़मत में मशग़ूल होना नहीं है बल्कि ये आमाल कमाई की बड़ी शक्ल है ومن يكسب خطيئة कुरआन ने आमाल को कसब कहा है अब 24 घंटे अल्लाह के रास्ते में जाकर सिर्फ़ मस्जिद में गुज़ारे या मस्जिद के हिसाब में, सफ़र में भी मस्जिद वाले आमाल इख़्तियार करो, ख़िदमत ईमान व तालीम, ज़िक्र व इबादत की बातें हों। यही आमाल मस्जिद में हों और यही सफ़रों में हों अब इसांनों की ज़रूरतों के लिए ज़रूरत के ब–क़द्र वक़्त लगाना है। जैसे मस्जिद वाला मुअतकिफ़ लगाता है क़रीब के पाख़ाने को छोड़कर दूर गया, पाख़ाना को क़रीब के रास्ते से नहीं गुज़ारा बल्कि लम्बे रास्ते से गया। रास्ते में रूककर किसी की मिज़ाज पुर्सी करने लग गया तो एतिक़ाफ़ टूट गया, मस्जिद में एतिक़ाफ़ से दाख़िल हो कि मक़्सद असल आमाल अरबा

है इनके अलावा जवाइज बशर या खाना–पीना मस्जिद के माहौल वारिद गिर्द में कर लो। अगर इर्द–गिर्द न हो कोई चीज़ तो मस्जिद में इन जवाइज को करो। अब हर जगह एतिकाफ़ वाले उसूल हों बस भी हुक्म मस्जिद है उन आमाल अरबा की आदत डालनी है, आदत थोड़ा करने से नहीं पड़ती है जैसे पान या हुक्क़ा एक मर्तबा करने स आदत नहीं पड़ेगी, बल्कि ऐसे ही चक्कर आएंगे ऐसे ही उन आमाल अरबा में शुरू में दिल घबराएगा, लेकिन सब्र करके ख़ूब करो कि इसमें इस्लाह नफ़्स है फिर दुआ करो ख़ूब ख़ुदा से कि उन आमाल की हक़ीक़त दे दे।

उमूमी बयान न० 7

मुसीबतों की वजह से दीन पर न चलना और ख़्वाहीशों को सामने रखना है

नमाज़ फ़जर के बाद, 9, मई, 1962 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

इंसान को मेहनत के लिए ख़ुदा ने भेजा है, इंसान मेहनत ज़रूर करता है इसके ज़हन में भी है कि जब तक मेहनत न हो! मस्अले हल न होंगे, मुसीबतों का ख़ात्मा न होगा, मेहनत के दो रास्ते हैं। एक नादान इंसानों का रास्ता है, लेकिन नतीजे वे ख़ून के आंसू रोते हैं। और वह यह है कि पूरा किया जाए जिससे यह बात हासिल हो इसमें लग जाओ। औरत की ख़्वाहिश हुई, औरत दिखाई दी तो इसके हसूल में लग गए इससे इंसान क़ीमती नहीं बनता। यह मुशाहेदे के चक्कर में पड़ा रहता है ख़्वाहिशों का दिवाना बना रहता है। अल्लाह कभी मुसीबतें लाते हैं और मौत से अज़ाब शुरू होता है। सिर्फ़ 40, 50 साल मज़ा लिया लेकिन हज़ारों साल बर्ज़ख़, 50,000 साल क़ियामत को और हज़ारों साल दोज़ख़ में सामने होगा। कुफ़्र न किया हो तो, आख़िरकार आख़िरी दर्जे वाली जन्नत मिल जाएगी, दूसरी मेहनत यह है कि जिस ख़ुदा ने आसमान व ज़मीन को बनाया, इंसान और इसकी ख़्वाहिशों को बनाया। इस ख़ुदा के कवानीन कामियाबी व ना–कामी के मालूम करें किसी तरह से ख़ुदा इज़्ज़त, दौलत, नौकर–चाकर, हिफ़ाज़त, हसीन औरतें देंगे इस तरीक़े पर यक़ीन जमाया जाए और इस पर अमल भी हो। इसका नाम मुजाहेदा है इसमें ख़्वाहिशों का तोड़ है। ख़्वाहिशों में चलने में दो बातें हैं अंदर

की ख़्वाहिश और मुशहेदा, इसमें कोई कमाल नहीं है, औरतों को देख रहा है कि लोग इन्हें बग़लों में लिए फ़िर रहे हैं लेकिन उन औरतों की वजह रक़ाबतें, रातों को इस औरत पर रोता है इसकी औरत का अग़वा, औरत किनके पास जाती है उन बातों को इल्म नहीं है ज़ाहिर में दुकानदार मज़े में मालूम होते हैं लेकिन अन्दर में रात को इन्कम टैक्स की वजह से नींद नहीं आती है। यही हाल वज़ीरों का है मुशाहेदे में ऐश मुशाहेदा है। लेकिन अन्दरूनी हालत इस्तिराब किसी पर मुंकशिफ़ नहीं होती। हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े में मफ़ाद औरतों के बारे में छपे हुए हैं इसमें ज़ाहिर में मज़ा दिखाई नहीं देना, लेकिन हम रक़ाबतों से बचेंगे। औरत किसी की तरफ़ माइल न होगी, जब देखेंगे ही नहीं दूसरों को इस वजह से ख़्वाहिश वाला रास्ता अपने अंदर हज़ार मुसीबतें लिए हुए है सिर्फ़ ज़ाहिरी ऐश इनका देखकर इनकी नक़ल को दिल चाहता है। हुज़ूर सल्ल० के तमाम तरीक़े का हासिल कामियाबी है इनका ज़ाहिर मुजाहेदा ख़्वाहीशों का तोड़ है, बड़े, वज़ीफ़ों के बाद एक शख़्स को हज़रत खिज्र अलै० मिले इसने कहा मुझे अल्लाह तआला से क़ामियाब करा दें। ख़िज्र अलै० ने कहा नहीं ? तुम कोई शख़्स दिखा दो इस जैसा बनाए जाओगे, उसने एक साल की मोहलत मांगी, सारी दुनिया का चक्कर लगाया और हर शख़्स के ज़ाहिर व बातिनी हालात मालूम किए आख़िर में कोई न कोई बात निकल आती। आख़िरकार एक शख़्स नज़र में जच गया। ख़ूब मोटा, ताज़ा, ख़ूबसूरत सी बीवी, उम्दा से बच्चे, महल, दुकानदार, ग़ुलाम, ज़हन ने कहा इस मर्द से भी ज़रा हालात मालूम कर लें इस आदमी के पास गया और इससे कहा कि मुझे ख़िज्र अलै० मिले हैं वह मुझे इस आदमी जैसा बना देंगे, जिसका नाम मैं दे दूंगा, मैं तुम्हारा नाम लेना चाहता हूं उसने कहा नहीं हरगिज़ मुझ जैसा मत होना और यह कहानी सुनाई कि मैं बहुत मालदार था, ख़ूबसूरत बीवी, हम दोनों में ख़ूब मुहब्बत थी और बे–मिसाल थी इतने में वह सख़्त बीमार हो गई। नब्ज़ें छूटने वालीं

हो गयीं। इसने मुझसे रोककर कहा कि मेरे बाद और बीवी कर लोगे मैंने कहा नहीं मैं न करूंगा ज़्यादा ताक़ीदी के लिए शर्मगाह को जड़ से काट दिया। अब इसके बाद खुदा के करने से वह तन्दुरूस्त हो गई है अब वह सोहबत के तक़ाज़े पर वह मुझे कहती है और मैं नौकरों को बुलवाकर अपने सामने सोहबत करवाता हूं सब बच्चे उन नौकरों के हैं, खुदा की क़सम ऐश वालों की ज़िंदगी तक्लीफ़ में है लेकिन तक्लीफ़ छुपी हुई है अब यह रास्त बहुत ज़्यादा ना—कामी का है दुनिया व आख़िरत में, दुनिया की ना—कामी सिर्फ़ इसके सामने है वाक़ाई छिपा हुआ ख़िलाफ़ वाक़ाई मुशाहिद है। इस रास्ते पर चलने वाले मुसीबतों और बलाओं का शिकार होंगे हर मुल्क में हुकूमत अवाम के साथ क्या कर रही है बाहर जाकर सब अपनी हुकूमत की तारीफ़ें करते हैं सब अपनी हुकूमतों का डोंग रचा रहे हैं। हर मुल्क के कुरैदने से इसकी मुसीबतों का इल्म होता है, मुसीबतों की वजह से दीन पर न चलना और ख़्वाहीशों को सामने रखना है दूसरा रास्ता इल्म का है कि अल्लाह की ज़वाबित व क़ायदे मालूम किए जाएंगे फिर मेहनत करके इस पर यक़ीन हो और अमल हो। जिसके बाद कामियाबी की हक़ीक़त देंगे, सूरतें अगरचें क़ामियाब न होंगी लेकिन अन्दर से देखने के बाद तुम्हारी ज़िंदगी क़ामियाब होगी। जब तुम्हारे अन्दुरूनी हालात का इल्म होगा तो वज़ीर वज़ारत को छोड़कर सदर सदारत को छोड़कर सरमायादार सरामयादारी को छोड़कर तुम्हारे शार्गिद बनेंगे कि न इन्कम टैक्स का चक्कर न मुसीबतों का चक्कर, बीवी—बच्चे फ़रमांबरदार इल्म सिर्फ़ वह है जो खुदा और हुज़ूर सल्ल० से चला है। नहू सिर्फ़ इस इल्म का नाम नहीं है तमाम उलूम आलिया सिर्फ़ अजमी होने की वजह से आठ—दस साल ले लेते हैं, वरना अरबी के लिए सिर्फ़ एक साल काफ़ी है। इसी तरह ज़रिया होने की वजह से यह उलूम भी उलूम कहलाते हैं आख़िर में कुरआन व हदीस से एक दम गुज़र जाता है इसे सोचने की फुर्सत नहीं मिलती है और फिर उलेमा भी रिवाज पर चलकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं, फ़ारिग़ होने

के अंग्रेज़ी, हिन्दी, भूगोल पढ़कर स्कूल में लग गए, या किसी मस्जिद के इमाम अपने इमाम अपने इल्म से चमके नहीं कि इस पर यक़ीन नहीं था कि इससे क़ामियाबी मिलेगी। सिर्फ़ बैठकर खाने के आदी हैं। एक मकान हो, मदरसा हो, मुत्तबख़ हो, ज़माना तालीम में ही मिज़ाज इस क़िस्म का बन जाता है मेवात के तमाम मकातिब में तलबा गल्ला मांगने भी जाते हैं, यानी भिखारी बनने, मांगने की मश्क़ करते हैं दूसरे मदरसों में दस साल रहकर यह ज़हन में आ गया कि सफ़र में जाकर मांगकर लाते हैं लिहाज़ा अब फ़िज़ाए हाज़रा के उलूम हासिल करो। कहीं और जाओ वरना मांगकर खाना पड़ेगा, कुरआन व हदीस की वजह से सलतनतें झुकती हैं, अरे जब इन्हें दुनिया की एक छोटी सी चीज़ नहीं मिलती है जन्नत जैसी क़ीमती चीज़ की उम्मीद पर उम्मीद लगाए हुए हैं ? यह वही इल्म है जिसकी वजह से फ़रिश्ते उतरते, मुर्दे ज़िंदा होते, समुंद्रों मे घोड़ों के ज़रिए गुज़र गए। किसरा व क़ैसर ज़ेर हुए बद्दु अख़्लाक़ वाले बन गए, आम उम्मती ने तीन मेहनतें छोड़ दीं न इल्म हासिल किया, न यक़ीन, न अमल की मेहनत में लगे। उलेमा के मुख़तसर से तबक़े ने सिर्फ़ इल्म हासिल किया यक़ीन व अमल पर मेहनत नहीं की। सिर्फ़ कुरआन व हदीस पढ़ लिया, अल्लाह की बात सुनाने में इक़्तिदार दुनिया नमूद व माल व इशराफ़ आ गया यहां तक कि यह इल्म वाले दूसरे जिहालत वालों के आगे हाथ फैलाकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं इसकी जूती की ख़ाक बनते हैं जो इनकी ख़ाक बनने के लिए था। सिर्फ़ इस वजह से कि यक़ीन व अमल नहीं रहा, मुशाहेदात पर से यक़ीन हटाओ सिर्फ़ कुरआन व हदीस पर लाओ। तक़वे पर इस तरह मिलता है बग़ैर कमाए, सिर्फ़ चीज़ों से कुछ नहीं होता है तमाम चीज़ों वाले मुसीबत में हैं, पीरों के आगे अपने हालात खोल देते हैं कि पीर इनसे लेते नहीं, सफ़रा के सामने नहीं खोलते कि वे इनसे फ़ायदा माल लेना चाहते हैं। इल्म से अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह चमक सकते हैं। एक बार उमर रज़ि० ने सारे मदीने

को जमा किया, किसरा व कैसर के नक़्शे इनके हाथ में थे सारी दुनिया पर इनकी धाक, तमाम मदीना वालों को जमा करके कहा कि मैं उमर बिन ख़िताब रज़ि० हूं चन्द पैसों पर अपनी ख़ाला के ऊंट चराया करता था, शाम को जब मैं वापस आता तो ख़ाला मुझे मारती कि मुझे ऊंट चराना नहीं आता तू क्या कर लेगा ? अब जाओ वापस जा सकते हो। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने आकर कहा कि यह क्या बात है ? कहा मेरे दिल में मौजूदा हालात से तकब्बुर आ गया था, इस वजह से सबके सामने मैंने खुद को ज़लील किया, उमर रज़ि० की काबलियत से इस्लाम नहीं चला है। इस्लाम पर सौ फ़ीसद अमल की वजह से उमर रज़ि० बने हैं। फ़त्ह मक्का के मौक़े पर छोटे दस्ते जा चुके थे, हुज़ूर सल्ल० के दस्ते के रहनूमा हज़रत उमर रज़ि० हैं अबू सुफ़ियान और अब्बास रज़ि० दोनों खड़े होकर इस्लामी लश्कर देख रहे थे ताकि अबू सुफ़ियान मरऊब होकर सुलह कर ले। जब हुज़ूर सल्ल० का दस्ता गुज़रा तो अबू सुफ़ियान ने देखा कि एक शख़्स की एक आवाज़ पर सारा लश्कर रूकता है, मुड़ता है उसने अब्बास रज़ि० से पूछा कि यह आदमी कौन है ? कहा उमर बिन ख़िताब है अबू सुफ़ियान ने कहा अरे बनू अदी का लौंडा, अब्बास रज़ि० ने कहा इसे इस्लाम ने इज़्ज़त दी है उमर रज़ि० अम्र बिन आस रज़ि० ने लिखा है हमने मिस्र में आपके लिए मकान बना लिया है फ़रमाया कि नहीं मैं हिजाज़ में हूं मुझे मिस्र में मकान की क्या ज़रूरत है इसे बाज़ार बना दो। मुफ़ाद अम्मा में लगा दो। इसी तरह मरते दम तक अपने लिबास, खाना, व मुआशरत को हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े से न बदला, इल्म पर नाकिस मेहनत यह है कि मेहतन करके सिर्फ़ फ़िक़्ह, तारीख़, कुरआन व हदीस पढ़ने वाले बन जाओ और ज़िंदगी बनाओ कुरआन व हदीस से जाहिल इंसानों की तरह और मुशाहेदा व ख़्वाहिश की ज़िंदगी गुज़ारो। कसुसुल अंबिया का इल्म हो फिर भी जैसे चाहो कमाया, जैसे चाहा ख़र्च किया। ऐसा इल्म व बाल बनेगा कि इस इल्म को क्यों ज़लील

किया। इल्म वाला हुकूमत व सरमायादारी के आगे हाथ जोड़े तो यह इल्म की तौहीन व तज़लील है। खुदा हमें ज़लील करेगा, इल्म वालों ने तो मक्का में पेट का फ़ाक़ा बरदाश्त करके कुफ़्र व माद्दा वालों की मन्नत व खुशआमद नहीं की। अब तुम्हारा यक़ीन इस वाला हो, हम इस इल्म पर यक़ीन करके अमल करेंगे तो खुदा ग़ैब से क़ामियाब करेंगे, الحمدلله رب العالين इंसान सिर्फ़ खुदा के पालने से पलता है, सदर, वज़ीर, सरमायादारों की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। मेरे पास ایاك نعبدو اوایاك نستعین है, मैं जंगल में बैठकर इस आयत से पल सकता हूं तमाम माद्दा वालों के पास धोखा है तमाम मकान, दुकान जल जाएं, मैं इस आयत की वजह से सही अमल की वजह से पलूंगा अब तुम्हारी इज़्ज़त होगी कि तुम इनका पैसा नहीं लोंगे, वज़ीर आए खुशआमद करे तुमने नसीहत की इससे इल्म की इज़्ज़त भी हो गई और तुम्हारी भी तुमने इल्म की इज़्ज़त की इल्म ने तुम्हें अज़ीज़ करवाया, अगर तुम उसे ज़लील कर दोगे तो यह तुम्हें ज़लील करा देगा। एक इल्म वाला अगर जाहिल के हाथ में अपनी ज़िंदगी समझता है तो यह जाहिल के सामने गया, अगर इल्म को ज़लील कर दिया तो तुम ज़लील होंगे। इल्म के मुताबिक़ अमल करने से इल्म की इज़्ज़त होगी और तुम्हारी भी कुरआन व हदीस में तमाम बातें अमल की बताई हैं हर अमल का बदला समरा दिखाया है और चीज़ों से न होने को बताया है। सो आमाल के साथ क़ौम नूह अकसीरियत में, फ़िऔन, नमरूद, हुकूमत में और कारून में माल में हामान वज़ारत में रूसवा हुए हैं इस इल्म पर अमल से अंबिया की तरफ़ झुकोगे सारे कुरआन का पढ़ना नमाज़ में ज़रूरी नहीं क्या, सिर्फ़ फ़ातिहा को चालीस–पचास मर्तबा रोज़ाना को कहा है तो इसमें हमारी बुनियादें हैं कि तमाम मस्अलों का हल इनके हाथ में है और इनसे क़ामियाबी लेने का तरीक़ा इबादत का है फिर दुआ है

اهدنا الصراط المستقيم صراط الذين انعمت عليهم

غیر المغضوب علیہم ولا الضالین की तफ़्सीर में माद्दा वाले आएंगे मनअम अलिहम वह हैं ख़्वाहिशों के मुक़ाबल में अहकाम पर चले हो। इब्राहीम अलै० ने ख़्वाहिशों को ख़ूब कमाल के साथ तोड़ा, मुशाहेदे पर क़दम न उठाया इनकी इत्तिबा हर नबी पर कर दी कि इनका रंग पसन्द है। हुज़ूर सल्ल० ने इब्राहीम अलै० का रंग ख़ुद लेकर उम्मत में मुतअद्दी कर दिया, खुद भी बनो और दूसरों को भी बनाओ, खुद को बनाना रंग इब्राहीम है दूसरों को बनाना रंग मुहम्मदी है इस वजह से मुहम्मद सल्ल० सैयद व सरदार हैं अगरचें इब्राहीम भी मातहत है लेकिन इनकी इत्तिबा का हुक्म है अब बकरा–ईद की छुट्टियां हैं तुम्हारे दिलों में दोस्तों, बीवी–बच्चे माल, बाप, रिश्तेदारों से मिलने का शौक़ पैदा होगा। अरे अब तो इल्म कुरआन हदीस की मश्क़ कर रहे हो तो मुजाहेदा व रियाज़त करके ख़ुद में आमाल की इस्तिदाद पैदा कर ले। हर आयत की आते ही अमल कर सके, आज उलेमा को अदइया कम याद है। लेकिन सिर्फ़ वनहूकी गरदनें ख़ूब याद हैं सिर्फ़ वह अदइया याद करते हैं जो फ़र्ज़ों में हैं याद करने का ज़ौक़ है याद कर लो, उनके याद करने से आस्मान से फ़रिश्ते उतरते हैं सिर्फ़ वनहूकी वजह से नहीं उतरते हैं, एक सहाबी ने एक कलिमा कहा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, من المتکلم

ये किसने कलाम किया, हुज़ूर सल्ल० ने कछ बातचीत के बाद फ़रमाया 13 फ़रिश्ते लेने आ गए थे, वाक़ाई क़ीमती इंसान बनना चाहते हो हुज़ूर सल्ल० के बाद बनना चाहते हो तो जैसे सिर्फ़ वनूह पर मेहनत कर रहा हो ऐसे ही मुजाहेदा व रियासत करके अमल का ज़ौक़ पैदा कर लो, अपने पैसे ख़र्च करो, दूसरों का माल खाने से इल्म के नक़ूश मिट जाते हैं लेकिन अमल व ईमान सिर्फ़ अपने जान व माल लगाने से ही मिलते हैं वाक़ाई इल्म वाले बन जाने से एक–एक आदमी से सूबे को सूबे बदल सकते हैं।

उमूमी बयान न० 8

इस्लाम की बुनियाद ग़ैब व अहकाम पर है मुशाहेदा व ख़्वाहिश पर नहीं

नमाज़ फ़जर के बाद, दिन, जुमेरात, 10, मई, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

अल्लाह तआला ने तमाम इंसानों को इस दुनिया में कामियाबियों को हासिल करने के लिए भेजा है और इसमें ख़्वाहिशों, जायदाद, मकान, इज़्ज़त, तफ़ूक़, ग़लबा खाने पीने औरत वग़ैरह रखी हैं जितने एतबार से इसमें ख़्वाहिश रखी है इतने ही एतबार से ख़्वाहिशात पूरा होने के लिए आला नक़्शा तैयार किया जा रहा है इस दुनिया में भेजा है कि मेहनत करो कि वह आला नक़्शा मिल जाए जो मरने के बाद हमेशा के लिए मिलेगा अगर इस सही मेहनत को किया, अगर इंसान इन सही मेहनत को करें तो दुनिया भी इनके क़दमों में डाल देंगे। सही मेहनत यह है कि ख़्वाहिशों को दबाएं और उन तरीक़ों को ज़िंदा करें पैदा करें जो मुग़यात में ले जाते हैं, ख़्वाहिश को सिर्फ़ खुदा की बताई हुए हद तक पूरा करें। इससे आगे न बढ़ने दें, मकान, कमाना, खाना, पीना, औरत व बच्चे की ख़्वाहिश में इसकी तलब के मुताबिक़ न करें बल्कि सिर्फ़ अल्लाह की हद तक रखें तो अल्लाह तआला दुनिया व आख़िरत में नवाज़ देंगे। अन्दर ख़्वाहिश है और बाहर है मुशाहेदात, इंसान की मेहनत के ये दो मुहर हैं, अंदर से ख़्वाहिश उभारती है मुशाहेदा इस पूरा करता है, कोठी देखी, ख़्वाहिश उभरी तरीक़ा इख़्तियार किया, जिससे कोठी हासिल कर ली। जब इंसान की ज़िंदगी उन

दो मुहरों पर उठे तो इसकी ख़्वाहिशों को म्यार बढ़ता जाता है मुशाहेदे में जगड़ता चला जाता है और ख़ुदा के अहकाम सिर्फ़ ज़ुबान के बोल रहते हैं, अंबिया इसी वजह से आते कि इंसानों व ख़्वाहिश व मुशाहेदे से मोड़ें। तमाम इंसानों को ज़िंदगी की सहूलत उसी वक़्त मिलेगी जब कि इन दोनों को दबाया जाए वह हर इंसान की ख़्वाहिश इस दुनिया पर ग़ालिब होने की है, एक की ख़्वाहिश दबी हुई है। एक ने ज़राए के रास्ते से वज़ारात उज़्मा हासिल कर ली, माल होने की वजह से ख़्वाहिश पूरा करता है, कोठी बनाता है और बनाता जाता है। ख़्वाहिश तो सातों आसमान ज़मीन से बड़े नक़्शों को हामिल है। अब सब इस दुनिया के हसूल पर कोशीश करें तो इससे आपस में जंग व झगड़ा होगा, एक–दूसरे का ख़ून करके अपने नक़्शों को बढ़ाएगा अंबिया का रास्ता यह है कि ख़्वाहिश के पूरे होने की जगह दुनिया नहीं है बल्कि जन्नत है वहां ख़्वाहिश का हर जज़ु आला दर्जा में पूरा होगा। दुनिया ब–क़द्र हाजत, ख़्वाहिश पूरी की जाती है मिसाल कालज में आने वाले तलबा में अलग–अलग ऊंचे–नीचे नक़्शों गवर्नरी, सदारत, वज़ारत, डिप्टी वग़ैरह पनाह की कोशीश कर रहे हैं। लेकिन यह सारे नक़्शे बाहर हैं सिर्फ़ इनकी हाजत के लिहाज़ से इंतिज़ाम किया जाता है एक कमरे में कई तलबा, एक हमाम में कई तलबा, एक मैदान में कई कमरों वाले, बस यहां मेहनत करके क़ाबिल बन जाओ। यहां कालेज में भी हर तालिब इल्म की तमन्ना है कि इसकी ज़िंदगी बहुत अच्छी गुज़रे हालांकि यहां दूसरों के साथ रहना सीखता है, बल्कि तुम पहला दर्जा में कामियाब हो जाओ, दरख़्वास्त दो, कालेज वाले तस्दीक़ करें कि अख़्लाक़ अच्छे हैं ब–अदब व मंसफ़ है अब यह तालिब इल्म जहां जाएगा। इस तस्दीक़ की वजह से बड़ा उहदा मिलेगा कालेज के ज़माने में गवर्नरों, वज़ीरो के बच्चों के लिए भी एक नौकर रखा जाता है और जब इस अकेले के लिए एक मुस्तकील (15) कमरों वाली कोठी, फर्नीचर,

गुस्लखाने और पांच, छः नौकर होंगे। इस तरह दुनिया कालेज की तरह है यहां अपनी ख़्वाहिशों को पूरा नहीं करना है सब एक नक़्शे पर नहीं आ सकते हैं तुम तैयार कर लो। हर मुस्लिम के लिए ख़ुदा ने दुनिया कम से कम दस गुनाह बड़ी जन्नत रखी हैं हदीस में है कि जब सब जन्नती जन्नत हैं जहन्मी जहन्नम में चले जाएंगे तो जन्नितयों को जहन्नम दिखलाकर कहा जाएगा कि देखो तुम्हारे हिस्से की जहन्नम ख़ाली पड़ी है तुम इसमें जाते अगर आमाल अच्छे न होते, अब इन जन्नतीयों जहन्नत इन जहन्नमीयों को इनके हिस्से की जन्नत दिखलाई जाएगी और कहा जाएगा कि यह तुम्हारे हिस्से की जन्नत है अगर आमाल ईमान अच्छे होते तुम्हें यह मिल जाती अब यह तुम्हारे हिस्से की जन्नत जन्नतीयों को मिल जाएगी हर इंसान के लिए दोनों नक़्शे तैयार कर रखे हैं। दुनिया ऐश व मुसीबत नहीं है बल्कि इन दोनों का असर है उलेमा ने लिखा है कि इस दुनिया में तमाम हालात रंज व ग़म व राहत वग़ैरह के एहसास का ताल्लुक़ है जिस्म से है रूह पर इसका असर आलम बर्ज़ख़ में है असल हालत का ताल्लुक़ रूह से है और जिस्म पर इसका असर जाएगा, क़ब्र में जिस्म तो नहीं होता बल्कि बर्ज़ख़ में रखी हुई रूह पर मारा जाता है। बिच्छू इसे ही कांटते हैं और इसके जिस्म पर असर पहुंचेगा, चाहे वह क़ब्र में हो या इसे जानवर खा जाए या राख बनाकर उड़ा दिया जाए। आलम आख़िरत में एहसास हालात का ताल्लुक़ जिस्म व रूह से होगा दोनों को सांप कांटेगा, दोनों की फ़रिश्ते पिटाई करेंगे। दोज़ख़ के सारे हिस्से जिस्म व रूह के साथ के हैं, जन्नत में खाने, हुसन व सोहबत की लज़्ज़त जिस्म व रूह दोनों को मिलेगी, लिहाज़ा असल नक़्शा आलम आख़िरत का है इससे कम आलम बर्ज़ख़ है इस कम आलम दुनिया है, जुदाई, पिटाई, मकान की तक्लीफ़ें यहां सबसे कम है और सबसे ज़्यादा आलम आख़िरत में है अब हादसों का अंदाज़ा यहां नहीं लगा सकते है। कि यह असर है, बस ख़्वाहिश पर ज़िंदगी

मत चलाओ अहकाम पर चलो, खुदा ने तै कर रखा है हर जानदर मुस्लिम व गैर मुस्लिम की ज़िंदगी चलाएंगें खुदा के दिए हुए अहकाम में सिर्फ़ इस अकेले इंसान के हालात मलफूज़ न होंगे। बल्कि तमाम चीज़ों के हालात का मलफूज़ रखा गया है लेकिन इंसान सिर्फ़ अपनी ज़ात की ख़्वाहिश रखता है मरते वक़्त यही चाहेगा कि इसकी बीवी बच्चे मर जाएं लेकिन वह न मरे। इससे बढ़कर बीवी–बच्चों व दोस्तों की ख़्वाहिश रख लेगा, जैसे जानवर अपनी ज़ात का है ऐसे ही ख़्वाहिश का बन्दा ख़ालिस अपनी ज़ात का है। اولئك كالانعام بل هم اضل "يا كلون

كماتاكل الانعام अब दो बातों की मश्क है एक ख़्वाहिशों से ज़िंदगी निकलकर अहकाम पर आए मुशाहेदे से ज़िंदगी निकलकर मुग़इबात पर आए। अगर ऐसा न हो तो मुसीबातों को ठिकाना नहीं हैं वरना आराम व राहत का ठिकाना नहीं है दुनिया व आख़िरत में एक बात और है सीधी सुनी, इंसान को इस दुनिया में मुशाहेदा शक्ल का होता है इस शक्ल में क्या है इसका नहीं होता है। मिसाल के तौर पर 50 हज़ार आमदनी, ख़ूबसूरत बीवी–बच्चे, कार, मुलाज़िम, अब हम अपने लिए भी इसकी तमन्ना करेंगे और फ़ैसला कर देंगे कि यह बड़े मज़े में है लेकिन अन्दाज़ से कुरैदने से मालूम होगा कि यह ज़ाहिरी इज़्ज़त व आराम व गि़ना की शक्लों में ज़िल्लत व तक्लीफ़ व फ़क्र कितना है। अगला ज़माना और आलमे बर्ज़ख़ व आख़िरत ग़ायब है बल्कि हाल का मुशाहेदा भी नाकिस है अगले साल, दो साल के बाद क्या होगा यह भी ग़ायब है और ऐसे ही हाल का मुशाहेदा भी नाक़िस है। मिसाल के तौर पर औरत खुबसूरत देखकर इससे मुहब्बत चाही क्या मालूम इससे तुम्हारे जिस्म में कीड़े पड़े या इससे तप दक की बीमारी मिल जाए या इसका किसी से जोड़ हो इसको तुम्हारे पैसे दे और इसके बच्चे लाकर तुमसे उन बच्चों को खिलवाए खाना। हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ों

में ज़ाहिर में कुछ नहीं आता है लेकिन हक़ीक़त इनमें बहुत कुछ है इस्लाम की बुनियाद ग़ैब व एहकाम पर है। मुशाहेदा ख़्वाहिश पर नहीं है मुशाहेदा यह है कि इस तरह करने से औरत या मकान या मोटर मिल जाएगी। इसे कुरबान करके अहकाम को पूरा कर दो ग़ैब पर क़दम उठा लो वरना ख़्वाहिश व मुशाहेदा पर चलने से नाकामी मिलेगी हर सैकण्ड का हज़ारवां हिस्सा हाल है आगे की ज़िंदगी बेहतर या बदतर होना इस बात पर है कि वह ज़िंदगी किन बातों पर गुज़ारता है। अगर मुशहेदात को कुरबान करे, अपने तर्जुबों, तहक़ीक़ों को कुरबान करेके ग़ैब पर चले अंबिया के बताए हुए तरीक़े, दोज़ख़, जन्नत, आख़िरत, फ़रिश्ते, कुदरत, आमाल के असरात उस अमल से अमन मिलेगा, इससे इज़्ज़त मिलेगी, इससे रिज़्क़ मिलेगा, निज़ाम असली भी ग़ैब है। इनकी कुदरत भी ग़ैब है, ग़ैब असल है मुशाहेदा बहुत धोखा है। हर वज़ीर, सदर, मशाइख़ व सरमायादार, जाहिल अवाम, सबके लिए एक ही ज़ाब्ता है जैसे इन सबके पैदा होने और मरने के तरीक़े मिलेजुले हैं, हैज़ का ख़ून, नुत्फ़ा, मज़गा, अलक़ा से सब बनते हैं और इसी तरह रूह निकलने से मर जाते हैं, इंसान जो कुछ बन जाए फ़रिश्ता या गधा नहीं बन जाना चाहे ज़ैर हो या सदर कि मुकल्लफ़ न रहे। चाहे शेख़ वक़्त, अल्लाह ने इंसान के लिए ब–हैसियत इंसान होने के अहकाम दिए हैं यक़ीन मुशाहेदा से ग़ैब पर आए आमाल ख़्वाहिश से हटकर अहकाम पर आए। एक तबक़े के पास मुल्क माल व दौलत, खेती बाड़ी, तिजारत मुलाज़त के नक़्शे हासिल हैं लेकिन कामियाबी की यह दो बुनियादें नहीं हैं इनको मुसीबतें इस तरह घेरेंगी कि तारीख़ इसको लिख न सकेगी इनकी नाकामी ऐसे ही अगर कोई नक़्शा पास न हो जंगल व सहर में हो लेकिन ये दो बुनियादें पास हो तो इनकी कामियाबी को लिखने से तारीख़ आजिज़ होगी वल–असर वाली सूरत में तमाम इंसानों को खसारा में बताया है हर इंसान व हर तबक़ा इसमें दाख़िल है, सिर्फ़ ईमान व आमाल सालेह वाले

फ़ला पाएंगे। ईमान तो कुरआन के शुरू में है गैब पर यकीन ज़रूरी है अहल मक्का ने शुरू में कहा कि फ़रिश्ते दिखा दो ईमान ले आएंगे और बहुत सी चीज़ें आंख से देखनी चाही तो आपने उन सबके ज़वाब में कहा कि मैं इसके लिए नहीं भेजा गया हूं। बगै़र देखे मान लो, सब कुछ बाद में दिखा देंगे, बिना देखे मान लो फिर बाद में दिखा भी देते हैं बनी इसराइल ने जब मान लिया और ईमान व अमल को दुरूस्त कर लिया और मुशाहेदे से होने का इंकार किया और कहा कल को ख़ुदा इस मुशाहेदे को बदल सकते हैं। चुनांचे देखा कि कितनी सदियों से الیس لی ملك مصر का नारा चल रहा था, जो हम चाहेगे वही होगा मूसा अलै० ने खड़े होकर कहा नहीं तुम मख़लूक़ तुम्हारी चीज़ें मख़लूक़ हैं। अपने ईमान व आमाल को दुरूस्त कर लो, वरना तुम्हारी आंखें मौजूदा मुशाहेदा के ख़िलाफ़ देखेंगी। पहले अल्लाह अपनी कुदरत छोटे पैमाने पर ज़ाहिर करते रहे। मिसाल के तौर पर अल्लाह को कुदरत है कि रखे हुए खाने को बदल दें या पेट में जाने के बाद इसकी ख़ासियत को बदल दें। क़ौम फ़िऔन के खानों को कभी मेंढ़क बना दिया कभी ख़ून। फ़िऔन ने देखा कि शक्लें ख़ुदा के हाथ में है, ख़ुदा ने मूसा अलै० को कोहे तूर पर समझा दिया था कि तमाम चीज़ें व शक्लें न किसी के हाथ में हैं न अपने हाथ में है, सिर्फ़ ख़ुदा के हाथ में है। जब जिस तरह, जिस वक़्त चाहें उन्हें बदल सकते हैं, असा वाले क़िस्से में बताया, दुनियावी शक्लों के तालिब भी न बनो और घबराओ भी मत, उन शक्लों को बुनियाद बनाकर ज़िंदगी मत गुज़ारो। बल्कि अहकाम को बुनियाद बनाओ यही बात मूसा अलै० ने फ़िऔन को समझाइ कि अपनी शक्ल हुकूमत व सलतनत पर एतिमाद न करो, तमाम अंबिया ने कलिमा कहलवाया है कि अल्लाह के सिवा हर चीज़ शक्ल है, सिर्फ़ ख़ुदा शक्ल से पाक हैं, शक्लों से होने वाला ख़ुदा से हो रहा है उनके बग़ैर हो नहीं सकता है और अल्लाह जो चाहे

वह शक्लों के बग़ैर भी करा सकते हैं। शक्ल से जो हो रहा है वह ख़ुदा के बग़ैर नहीं हो सकता है ग़ल्ला से चाहें तो भूख बन्द हो या ग़ल्ला से ही भूख बढ़े। हुज़ूर सल्ल० ने कातिब वही मुआविया रज़ि० को बुलाने अनस रज़ि० को भेजा अनस रज़ि० ने कहा वह खाना खा रहे हैं। तीसरी मर्तबां के बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि ख़ुदा पेट न भरने इसका अब मुआविया रज़ि० कहते हैं कि मैं ख़लीफ़ा बन गया तमाम अरब मुल्क तुर्की, अफ्रीक़ा क़ब्ज़े में थे। ख़ूब दुनिया भी थी लेकिन मेरा पेट नहीं भरता है मैं खाता रहता हूं जबड़ों में दर्द हो जाता है तब छोड़ता हू अब कलिमा का मतलब यह है कि शक्ल से होने वाला इससे नहीं है सिर्फ़ ख़ुदा से है ख़ुदा अपनी कुदरत में किसी शक्ल के मुहताज नहीं हैं। मुआजज़ात से अल्लाह अपनी ज़ात को खोला है कि मैं शक्ल का पाबन्द नहीं शक्लें मेरी पाबन्द हैं। लिहाज़ा शक्लों ख़्वाहिश व शक्ल मुशाहेदे को सामने मत रखो एक ख़ुदा को सामने रखो और तमाम मुशाहेदात व ख़्वाहिश को कुरबान किया जाए। अगर ऐसे कर लिया जाए तो दुनिया में जो आज मुंकशिफ़ हो रहा है लेकिन कल को दूसरा इंकिशाफ़ तुम्हारा होगा हर एक तुम्हारे इंकिशाफ़ की तरफ़ दौड़ेगा। मिसाल के तौर पर पहले किसान का ख़्याल था कि इस ज़मीन से सिर्फ़ फल व सब्ज़ियां मिलती हैं अब मेहनत के बदलने से मालूम हुआ कि ज़मीन से पट्रोल सोना, चांदी व मादनियात भी निकलती हैं यह सारी मेहनत शक्लों की बुनियाद पर है अगर कुदरत को बुनियाद बनाकर मेहनत की जाए तो और इन्किशाफ़ हो जाएगा। बस अपने जिस्म के हिस्सों को उन आमाल इस्लामी का पाबन्द कर लो, जो हुज़ूर सल्ल० लाए। हर इंसान उन आमाल की पाबन्दी को ओढ़ लेगा जबकि इसके सामने आ जाए कि चीज़ों से कुछ नहीं होता है अब क़ौम मूसा अलै० का हाल यह है कि ज़ाहिर बहुत बिगड़ रहा है जैल व फांसी पर जा रहे हैं, औरतों की अज़मत जा रही है बच्चे शहीद हो रहे हैं। लेकिन एक दिन दूसरा इंकिशाफ़

हो गया तारीख़ ने महफूज़ किया, खुद फ़िऔन को आजतक महफूज़ किया है, समुंद्र में बारह रास्ते हैं कमज़ोर इससे रास्ते पा गए और कव्वी अपनी सारी शक्लों के बावजूद जो ग़र्क़ हो गए इसी रास्ते में अब यह हे कि दूसरों पर मेहनत करें इस वजह से की अपनी ख़्वाहिशों व मुशाहेदे को छोड़कर अहकाम गैब पर चलने वाले बन जाएं। अब तो मिलने वाले पैसे मकान फ़र्नीचर पर लग रहा है औसफ़ हस्ना, ख़िदमत, इंसाफ़ कैसे ज़िंदा हो ? माल जान को आमाल अरबा में लगाकर हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल मिल सकते हैं। इसके लिए मुशाहेदा व ख़्वाहिश को छोड़ना होगा। उमर, अबूबक्र, अंसार व मुहाजिरीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ख़ुदा की बताई हुई तर्तीब पर माल जान लगाना है। इससे यक़ीन व आमाल मिलेंगे अगर ऐसे हो गया तो चीज़ों से नज़र आने वाली कामियाबी मकड़ी के जाले की तरह उड़ जाएगी और हर इंसान तुमसे आकर पूछेगा कि बग़ैर अस्बाब व नक़्शों के तुम किस तरह इज़्ज़त व सुकून वाले बन गए इसके लिए अंबिया बुनियादी आमाले अरबा लाए हैं। दावत, तालीम, ज़िक्र, नमाज़, तुम्हारा इल्म नाक़िस है ख़ुदा का इल्म कामिल है। लिहाज़ा इनके बतलाए हुए पर चलो, दावत से ईमान मिलेगा, मस्जिद में आकर बाज़ार की आवाज़ों के ख़िलाफ़ सुनेगा, सारे नबी ज़िक्र व दुआ इबादात व नमाज़ लेकर आए। मिक्दार नमाज़ पहले हर नबी के पास एक थी हुज़ूर सल्ल० पांच फ़र्ज़ और नफ़्लें इसके अलावा लाए सारे नबी अख़्लाक़ लाए हैं कि माल–जान का अक्सर हिस्सा दूसरों पर लगे यही आमाल मस्जिद में हैं जितनी इनकी मश्क़ होगी इनके फैलाने की मेहनत होगी तो ग़ैब से हमारी मौजूदा व आख़िरत की ज़िंदगी बन जाएगी। अब ज़हेन के मोड़ने के लिए मुशाहेदात व चीज़ों के ख़िलाफ़ ये चार–पांच आमाल हैं इससे बिगड़े हालात व ज़िंदगी दुरूस्त होगी। जितना उन आमाल में लगेगा, फलेगा, फूलेगा आख़िरत में जन्नत पाएगा।

उमूमी बयान न० 9

हिदायत यह है कि माल व चीज़ों से कामियाबी नहीं मिलती है बल्कि इस्लाह आमाल पर सब कुछ मिलता है

फ़जर के बाद, दिन जुमा, 11 मई, 1962 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

इस दुनिया में कामियाबियों को हासिल करने के लिए मेहनत की दो लाइनें हैं सफ़ली व वक़्ती, मेहनत करके पहले माल हासिल किया जाए फिर माल पर मेहनत करके ज़िंदगी का नक़्शा बनाया जाए। फ़र्नीचर, मकान, दुकान, जमीन, जायदाद ख़रीदी जाए, जब तक मेहनत करते रहेंगे माल मिलता रहेगा, जब तक माल मिलता रहेगा चीज़ें मिलती रहेंगी। ज़िंदगी बनती रहेगी, लेकिन जिस दिन चाहे ख़ुदा उस दिन से इसमें बरबादी की शक्लें आ सकती हैं। मौत से तो हर एक की मुसीबत शुरू हो जाएगी, दूसरा रास्ता अलवी अब्दी है इससे दोनों जहां में चमकता और फूलता है। बेहतरीन पाकीज़ा शक्लें इसकी कामियाबी की बनती हैं पहले मेहनत करके हिदायत हासिल करे। हिदायत की रोशनी में हर इंसान अमल को दुरुस्त कर लेगा घरेलू ज़िंदगी के, माल के, जान के, सोने के, खून के, सबके माल के हसूल की मेहनत है। यहां सबसे पहले हिदायत के हसूल की मेहनत है हिदायत यह है कि माल व चीज़ों से कामियाबी नहीं मिलती है बल्कि इस्लाह आमाल से सब कुछ इज़्ज़त फ़्लां वग़ैरह मिलेगी जैसे माल बग़ैर मेहनत के नहीं मिलता है ऐसे ही

हिदायत बग़ैर मेहनत के नहीं मिलती है। कुरआन में है لـلـمـتـقـيـن सारे कुरआन में है कि माल वाले माल में धंसे, कव्वी कुव्वत वाले मुल्क वाले हर एक अपने नक़्शों में नाकाम हुआ, आमाल के दुरूस्त हो जाने पर कामियाबियां आई हैं कामियाबी का मिदार कुरआन में कहीं भी चीज़ें नहीं है बल्कि सिर्फ़ आमाल मिदार हैं सालेह आमाल पर बग़ैर हुमूमत, माल व क़िला व मुलाज़मत, व चीज़ों के कामियाबी मिल जाएगी अब दिल का यक़ीन भी यही हो कि हमारी हाजत का हल चीज़ों से नहीं है बल्कि आमाल से है। जब इंसान को हिदायत मिलेगी तब वे हर हिस्से के अमल को दुरूस्त कर लेगा। हर हिस्से के आमाल कुरआन व हदीस से मालूम कर लेगा और तमाम हिस्सों पर कंट्रोल कर लेगा। एक मेहनत है हिदायत लेने की जैसे माल लेने की दूसरी मेहनत है आमाल के दुरूस्त करने की, जैसे के माल हासिल करने से ज़िंदगी नहीं बनती। बल्कि बाहर से जाकर चीज़ें लाएं तब हालात व तक़ाज़े पूरे होंगे, अब 24 घंटे के आमाल को दुरूस्त करना नम्बर दो पर है जैसे माल बग़ैर मेहनत के नहीं मिलता है। ऐसे ही हिदायत बग़ैर मेहनत की नहीं मिलती है' والذين جاهدوا فينا इस हिदायत के बाद हर इसांन अमल पर शौक़ से चलेगा, मेहनत से हिदायत नहीं मिलती है बल्कि मेहनत के बाद की दुआ से मिलेगी जैसे नूर व ज़ुलमत और रूह खुदा की तरफ़ से आती है ज़ुलमत वह केफ़ियत है जिसमें चीज़ों की हक़ीक़त मालूम नहीं होती। मिसाल के तौर पर ज़ुलमत में दुश्मन को दोस्त समझा, अंधेरे में शोर पर जल्दी में लकड़ी के बजाए सांप को पकड़ लिया या तरयाक़ के जगह ज़हर खाए, नूर की मदद से मालूम हो जाएगा कि यह सांप है या ज़हर है यह दोस्त है या लकड़ी है ऐसे ही हिदायत भी नूर की केफ़ियत है। दिल की रोशनी में आमाल के असरात नज़र आएंगे खुद ब खुद सदक़ की कामियाी सख़ावत से सदक़ा व ख़ैरात से कामियाबी होगी। मज़लूम की मदद करने से, सदका ख़ैरात न करने से मुसीबत आएगी, यह

सब कुछ नुक़सान व बिगाड़ महसूस होगा। हिदायत के बाद आमाल दुरूस्त हो जाएंगे तो ये मुत्तक़ी हो जाएंगे। ليس البر ان تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب ولكن البر من امن بالله واليوم الاخر तक़्वा के लिए सबसे पहले ईमानों का दुरूस्त होना है अल्लाह मख़लूक़ का मुहताज नहीं है मख़लूक़ अल्लाह के बग़ैर कुछ नहीं कर सकती। अल्लाह सिर्फ़ अपने इरादे से मार सकता है, सिर्फ़ चाह लेने से बग़ैर किसी शक्ल व सूरत के हो जाएगा। अल्लाह के अलावा और कोई भी ख़ुदा के बग़ैर नहीं कर सकता है, ज़ातों में सबसे ऊंचे अंबिया, अंबिया में सबसे ऊंचे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, मुहम्मद सल्ल० के आमाल में सबसे ऊंचा अमल हिदायत है यही मौज़ूअ नुबूवत है, कुरआन में है انك لا تهدى من احببت तुम पर चश्मा व समुंद्र हो हिदायत के लेकिन तक़्सीम सिर्फ़ हमारा काम है जब अंबिया व सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने मौज़ूअ में ख़ुदा के ताबेअ हैं तो यह ग़ल्ला ख़ुद कैसे उग सकता है, ज़मीन ख़ुद कैसे दे सकती है। अंबिया जब अपने मौज़ूअ को ख़ुद नहीं कर सकते हैं तो कायनात की मामूली चीज़ें कैसे अपने मौज़ूअ को अदा कर सकती हैं। अल्लाह के बग़ैर वास्ते के इरादे से इब्राहीम को हिदायत दी अंबिया को भी हिदायत दी एक ज़ात ऐसी है जो बग़ैर किसी के सब कुछ कर सकती है और कोई ऐसा नहीं है, ख़ुदा के यहां का मामला यह है कि जो बात इनके लिए कही जाए। इसकी नफ़ी दूसरे भी करें, अगर इसमें कोई भी मिला तो पस ख़ुदा शिर्क की वजह से रद्द कर देंगे अगर यों कहें वज़ीर भी करते हैं। हुकूमत भी यह शिर्क मिजाज़ी है दिल में यह हो कि हिफ़ाज़त सिर्फ़ ख़ुदा से है क़िला, मकानों से नहीं। अल्लाह मुरब्बी है अब चीज़ों व सामान, हमारी मेहनत मुरब्बी नहीं है لا مربى الا الله، ولا معطى الا الله ، गैर को अगर मिला दें तो ख़ुदा मानेंगे। अब अल्लाह वाला ईमान यह है कि वजूद सिर्फ़ ख़ुदा से है ग़ैर से बिल्कुल नहीं واليوم الاخر वक़्त हाज़िर

और इसके मस्‌अलों को यक़ीन न रहे। जब वक़्त यक़ीनी नहीं है तो इसके मस्‌अले कैसे यक़ीनी दाहिम हों, आख़िरत के दिन का यक़ीन व अहमियत दिल में आए। यहां की चीज़ों में तगय्यूर व तब्दीलियां हैं लेकिन क़ियामत का फ़ैसला अटल होगा वक़्त हाज़िर है इस ग़ायब पर यक़ीन आ जाए। जिसे ख़ुदा ने ख़ूब खोला है अल्लाह के निज़ाम ज़ाहिरी का यक़ीन न हो बल्कि ख़ुदा के मख़फ़ी निज़ाम पर यक़ीन करें। जिसको फ़रिश्ते अंजाम देते हैं हिफ़ाज़त के ज़ाहिर अस्बाब फ़ौज व पुलीस हैं चाहे वह अपनी हों लेकिन असल मुहाफ़िज़ दो फ़रिश्ते हैं, फ़ौज पुलिस नहीं। जिस सुबह को हज़रत अली रज़ि० शहीद किए गए उस रात को हज़रत अली को नींद न आ रही थी दिल में आ गया था कि सुबह को शहीद हो जाऊंगा जान-निसारों ने शुब्हा करके हाथियार बांध लिए, अली रज़ि० ने कहा किससे हिफ़ाज़त करोगे ? सिर्फ़ ज़मीन वालों से ही असल आसमान वाले हैं जो काम इस दुनिया में होना है इसका पहले आसमानों पर फ़ैसला होता है कि फ़ैसले के बाद इसे कोई रोक नहीं सकता है तश्रीयी अह्काम ख़ुदा ने हमें दिए हैं तकवीनी अहकाम ख़ुदा ने फ़रिश्तों को दिए हैं आमाल तश्रीयी असल है इनको करने से तकवीनी अहकाम बनाने के होते हैं अहकाम तश्रीयी छोड़ने से अहकाम तकवीनी बिगड़ने के होते हैं, बाक़ी तफ़्सील क़ुरआन व हदीस में है चीज़ के इज्माल व तफ़्सील पर यक़ीन हो, बाक़ी किताबों के नफ़्स किताब पर यक़ीन काफ़ी है लेकिन किताब क़ुरआन में हर आयत पर यक़ीन करना पड़ेगा कि इसमें तहरीफ़ नहीं है यानी इल्म अल्लाह का यक़ीन हुआ अपने मुशाहेदे, तर्जुबे वाले इल्म का यक़ीन न हो, ताजिर का, किसान का, साइंस वाले का अपने तर्जुबे व मुशाहेदे का यक़ीन न करें। क़ुरआन व हदीस से मुताबक़त रखते तो माल लो, वरना नहीं। राकेट से तो सारा मुल्क तबह होगा नहीं किसी से कुछ नहीं होता है सिर्फ़ ख़ुदा से होता है अगर आज रूस व

अमरीका एक दूसरे पर सारे राकेट छोड़ने का एलान कर दें तो राकेटों पर यक़ीन करने वाले सारी रात पागलों की तरह भागेंगे। तुम ख़ुदा पर यक़ीन करके आराम से सोएगे। मुम्किन है राकेट अमरीका व रूस से बाहर ही न निकले, अगर निकले तो ख़ुदा पर यक़ीन करने वालों को नुक़्सान न पहुंचाए करने वाला सिर्फ़ में हूं। राकेट व जहाज़ से अगर चाहों तो बमबारी होगी वरना नहीं इंसान वाले इल्म से हटकर ख़ुदा वाले इल्म पर यक़ीन आ जाए तो उन चीज़ों से नुक़्सान नहीं पहुंचेगा। चीज़ों से सिर्फ़ उसे ही नुक़्सान मिलता है जो उनसे होने का यक़ीन करे, ख़ुदा ने दिखाया है कि चीज़ें चलेंगी लेकिन उन चीज़ों पर यक़ीन करने वाले चाहे कितनी दूर हों उन पर और जिनका यक़ीन चीज़ों पर नहीं है इल्म ख़ुदा पर है इन्हें वे चीज़ें नुक़्सान न देंगी चाहे वे इनके सर पर चल रही हों। अमल करके दुआ मांगो तो हर चीज़ तुम्हारे मुवाफ़िक़ हो जाएगी। والنبيين अंबिया पर यक़ीन के माइने है कि अंबिया ही कामियाब हैं इनके मुक़ाबले वाले ना—काम हैं ज़लील हैं दुनिया में शख़्सियात का यक़ीन किया जाता है ऐसा आदमी था चलते—चलते यहां तक पहुंच गया आजकल आख़बारों और रिसालों में शख़्सियात के तज़्किरे मिलते हैं के घौसी था वज़ीर बन गया मशक़ से पानी भरता था सदर हो गया ईमान के माइने है कि शख़्सियत सिर्फ़ अंबिया की है' اتبعوا ملة ابراهيم حنيفا अंबिया के मुक़ाबले की शख़्सित नहीं है। माल व खेती—बाड़ी, हुकूमत से शख़्सियत नहीं है, कारून, फ़िऔन व हामान ज़लील हैं। शख़्सियत मूसा अलै० की है मूसा अलै० अज़ीज़ हैं जो अंबिया के रंग में रंगा जाए इसकी शख़्सियत है फ़िऔन मूसा पर लानत करें। लेकिन अपने ज़माने के फ़िऔन व क़ारून पर भी लानत करने की ज़रूरत है बस जितना अंबिया वाले रंग में है इतनी शख़्सियत है हर चार कोड़ी वाला शख़्सियत नहीं है शख़्सियत सिर्फ़ अंबिया की है एक रूकूअ में उन

तमाम अंबिया को जमा करके कहा है। हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी तमाम अंबिया की ज़िंदगी सामने रखकर गुज़ारी है हमको हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी देखनी है हर नबी के पास अदा है हुज़ूर सल्ल० का फ़रमान है यूसुफ़ ने सब्र को दिखाया फ़ौरन क़ासिद के साथ बादशाह के पास न गए। हुज़ूर सल्ल० तमाम अंबिया की तमाम अदाओं के हामिल हैं लिहाज़ा आप सबसे बड़े हैं सूरत यह है कि आप सल्ल० ताबेअ हैं लेकिन तमाम अदाओं से मुतसफ़ होने की वजह से तमाम से आगे हैं आपकी ज़िंदगी तमाम अंबिया को सामने रखकर गुज़री है हमें हुक्म है واتبعوا هذا النبی الامی मूसा अलै०, ईसा अलै०, इब्राहीम अलै० रंग हमें मिलेगा। लेकिन सीधे मुहम्मद सल्ल० यह है ईमान, शख़्सियात सिर्फ़ ख़ुदा के अंबिया की हैं। لقد كان لكم فی رسول الله اسوة حسنة हुज़ूर सल्ल० के अस्वाए हस्ना पर चलने से वे तमाम कुछ हमारे साथ होगा, जो कुछ तमाम अंबिया व हुज़ूर सल्ल० के साथ हुआ हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी तमाम मुआजज़ात को लिए हुए है इसी वजह से कोई दुआ वाजिब नहीं है तैशुदा तौर पर सिर्फ़ हिदायत की दुआ फ़र्ज़ है या वाजिब اهدنا الصراط المستقيم अंबिया, सिद्दीक़ीन, शुहादा व सालिहीन के रास्ते की दुआ मंगनी फ़र्ज़ है यह दुआ यों 40, 50 मर्तबा है इसमें शख़्सियात अंबिया का एतराफ़ है अपने ज़माने की शख़्सियात मुल्क व माल वाले को ज़लील व हक़ीर समझें, जैसे क़ारून, फ़िऔन व हामान, नमरूद ज़लील हैं ऐसे ही इनके इत्तिबा करने वाले क़ियामत तक ज़लील हैं सिर्फ़ अंबिया की शख़्सियत है या जो इनके रंग में रंगा जाएगा, उहूदों माल व दौलत से नहीं यज़ीद को लान–तान करने वाले पर ख़ूब ताइद करेंगे यज़ीद वाली था, हज्जाज गवर्नर था इसे भी अच्छी तरह याद नहीं किया जाता है दौरे उमर रज़ि० से ज़्यादा है मुल्क, फ़ौज, लिबास व खाने के लिहाज़ से उमर रज़ि० के कच्चे मकान, बोरे, ज़ैतूनों के तेल पर

गुज़र करते हैं लेकिन यज़ीद का हर नक़्शा ऊंचा था तो उमर रज़ि० की शख़्सियत मुल्क से नहीं है बल्कि हुज़ूर सल्ल० के रंग में रंगने की वजह से है। अंबिया को सामने रखकर मेहनत करो कि तुम्हारी शख़्सियत बन जाए इन जैसा मकान, शादी, वग़ैरह हो। अपने ज़माने की शख़्सियत की नक़ल से डर है कि वही हमारे साथ न हो। जो इनके साथ मरने के बाद होगा। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ व सुलेमान के दादा इकट्ठे हैं सुलेमान की बहन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की बीवी है, उमर ने हिजाज़ की गवर्नरी में हुज़ूर सल्ल० को ख़्वाब में देखा कि उमर अगर तुम हाकिम बन जाओ मेरी उम्मत के। तो इन दोनों उमर व अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का तरीक़ा इख़्तियार करना इनका तरीक़ा मुझे पसन्द है चुनांचे ख़लीफ़ा बनते ही इन्होंने तर्तीब ज़िंदगी बदली है शानदार मकान बैतुलमाल में देकर मामूली मकान पर ज़िंदगी गुज़ार दी। ख़िलाफ़त राशिदा हसन रज़ि० पर ख़त्म नहीं हुए बल्कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ पर ख़त्म हुई है। हुज़ूर सल्ल० की हदीस बताती है कि उस ज़माने में यही अफ़ज़ल व अशरफ़ हैं। सुलेमान भी मुल्क व माल में बराबर हैं लेकिन इसकी शख़्सियत नहीं है सुलेमान को जब क़ब्र में डालने लगे तो हाथ हिला, बेटे ने कहा बाहर निकालो शायद ज़िंदा हो गया है। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा नहीं जल्दी डालो अज़ाब ने पहले ही पकड़ लिया है। जल्दी करो, शख़्सियत बादशाहत में नहीं है बल्कि अंबिया की इत्तिबा में है। واقاموالصلوٰة मालियात की तर्तीब ख़र्च दुरूस्त हो जाए, दुनिया के रिवाज की तरह तुम्हारा ख़र्च न हो। बल्कि हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े पर हो और बद नियतों को सही तौर पर अदा करने वाले बन जाओ। अगर तीन की तरह लाइने दुरूस्त हो जाएं। तो तक़वा मिलेगा अपने दावे इस्लाम व ईमान में सच्चे हैं अब तीन लाइनों के दरवाज़े खुलेंगे। एक यह कि कमाई के अलावा भी माल मिलेगा। अब मिसाल के तौर पर मुलाज़मत के छः घंटे की मुद्दत मुअयना पर तंख़्वाह मिलती

है इससे ज़्यादा नहीं लोग इनमें नहीं देते हैं लेकिन अगर तक़्वा हासिल कर लिया ईमानियात, व मालियात, बद नियात के साथ तो कमाई पर भी देंगे बग़ैर कमाई भी देंगे चाहे मुतआरिफ़ तरीक़े पर भी दें या ग़ैर मुतआरिफ़ तरीक़े पर, मुतआरिफ़ तरीक़ा यह है कि लोगों के दिल में देने का डाल दें। ग़ैर मुतआरिफ़ यह है कि ज़मीन फाड़कर निकाल दें तुम्हारे तकिए के नीचे रख दें। मिक़्दाद को इस्तिंजा के वक़्त चूहा चंद अशरफ़ियां दे गया, हुज़ूर सल्ल० ने आयत ايت ومن يتق الله वाली आयी पढ़ी, बैठे–बैठे ज़हन में आया कि इस जगह माल रहा है खोदकर निकाल लो। किसरा के एक मकान में एक सहाबी ने दीवार पर एक औरत की तस्वीर देखी। जिसे पुराने ज़माने में बनाया गया था लोग समझते थे कि यह ज़ीनत व नक़्श के लिए है इनकी नज़र पड़ी तो देखा कि वह उंगली से इशारा कर रही है वह सबके जाने के बाद अकेले रह गए तो ज़हन में आया कि यह इशारा किसी ख़ज़ाने की तरफ़ है चुनांचे अकेले ने कुदाल से खोदा बहुत बड़ा बड़ा ख़ज़ाना मिला। उमर रज़ि० को सारी तफ़्सील लिखी उमर रज़ि० ने जवाब दिया कि माल तुम्हारा है लेकिन तुम अमीर होकर सारे मुसलमानों के हो। अबूद्दर्दा रज़ि० के तकिए के नीचे पैसे रखे हुए थे दूसरा रास्ता यह होगा जितना पैसा है इतनी चादर फैलाओ, बग़ैर पैसे के ख़ुदा नेमतें देंगे। ख़ुदा मुतआरिफ़ तौर पर देंगे कि लोग तुम्हे तुहफ़े लाकर दें, ख़ुदा उनके दिल में डालते हैं, बुर्ज़ुगों की सिर्फ़ तक़्वे की वजह से लोग हदिया तोहफ़े देते हैं अगर सब तक़्वे वाले बन जाएं तो सब एक दूसरे को देने वाले बन जाएं, चाहे ग़ैर मुतआरिफ़ तौर पर दें। औलिया व सहाबा के वाक़िआत मिल जाते हैं 'हयातुस्सहाबा' के आख़िर में यह वाक़िआत सहाबा के इकट्ठे हैं सहाबा में करामात मज्मूई तौर पर बहुत थीं। लेकिन इनका तज़्किरा न था, औलिया के पास इंफ़िरादी करामत हैं दस हज़ार सवार क़ादसिया की लड़ाई में समुंद्र पर से गुज़र गए, ख़बीब रज़ि० को मक्का में क़ैद के

ज़माने में अंगूर जन्नत से मिलता था सारे इलाके में अंगूर न था न लाकर देने वालो है न ख़ुद ला सकते हैं قالت عوص عندالله अबू उमामा बाहेली रज़ि० ने क़बीला वालों को दावत दी लोग न माने कहा खाने को दे दो, क़ौम ने देने से इंकार कर दिया। भूख प्यास की शिद्दत में मरने के लिए लेट गए आंख लग गई, ख़्वाब में देखा कि एक प्याला है जिसमें दूध से ज़्यादा सफ़ेद, शहेद से ज़्यादा मिठास है ख़ूब पेटभर इतने में क़ौम में मश्विरा हुआ कि चलो अपने मज़हब का नहीं है लेकिन मेहमानदारी करनी चाहिए। इन्होंने कहा मेरा पेट तो भर गया इस पर क़ौम सारी इस्लाम ले आई उम्मे शरीक़ रज़ि० का क़िस्सा है कि हिजरत करके आ रही थीं, सख़्त प्यास लगी, मौत के ख़्याल से लेट गयीं। आसमान से चमकदार रस्सी में डोल आया है सीने पर इससे पानी पिया फिर कभी उम्रभर प्यास न लगी। अगरचे रोज़े रखकर सख़्त धूप में बैठ जाती थीं, और यह भी है कि अल्लाह चीज़ को बढ़ा दें इस्तेमाल ख़ूब हो लेकिन ख़त्म न हो इसका नाम बरकत है मेरे दर्द का इलाज यह है कि बग़ैर चीज़ों के हालात दुरूस्त हों, दुआ पर मर्ज़ चला जाए, तीन लाइन दुरूस्त करने पर तीन लाइने खुलती हैं। अब इन तीनों लाइनों पर मेहनत वही करेगा जिसके पास हिदायत हो, अब हिदायत लेने की मेहनत पहले है बाद में सालेह आमाल की मेहनत है इसलिए पहले माल कमाना नहीं है पहले हिदायत हासिल करना है हमने यह कर रखा है कि माल मिलेगा तब खाएंगे तब आमाल को अदा करेंगे अगर हिदायत हासिल करके आमाल मे न लगे बल्कि पहले ही कमाई में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ लगकर रिज़्क़ हराम कर लिया तो नमाज़ कैसे कुबूल हो। हिदायत के लिए अंबिया के मिले-जुले आमाल हैं सबसे पहले दावत है कि उन आमाले अरबा के तनाअत करने से ख़ुदा ग़ैब व कुदरत से देंगे। हालात भी दुरूस्त करेंगे, दूसरी तरफ़ रो-रोकर ख़ुदा से मांगों की हिदायत की सूरत हमने हासिल कर ली है हिदायत तो

दे दे, उसे आमाले ख़म्सा मिल जाएं। जिस पर दरवाज़े खुलते हैं नफ़्स से मुजाहेदा नहीं है बल्कि ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करना मुजाहेदा है। मिसाल के तौर पर 5 लाख मर्तबा खड़े होकर रात को हौज़ में दिस्मबर की सर्दी में पढ़ें औरत मिलने के लिए मुजाहेदा नहीं है कि मक़्सद औरत का हसूल है। औरत मिले न मिले अगर मिले तो कल को जाएगी या दिल तुमसे फेर ले, तुमसे तलाक़ दिलवाले, अगर 5 लाख मर्तबा सिर्फ़ ख़ुदा के लिए इस वज़ीफ़ा को पढ़ा। तो मरने के बाद लाखों औरतें मिलेंगी, दुनिया की आम औरतों भी तुमसे मुहब्बत करेंगी मुत्तलीक़ ज़िक्र इबादत नहीं है बल्कि अपनी ग़रज़ से अलग होकर सिर्फ़ अल्लाह के लिए ज़िक्र हो। आज तो इम्तिहान वाले तलबा व मुक़द्दमा वाले लोग मस्जिद में ख़ूब आते हैं तब्लीग़ में भी चल पड़ते हैं लेकिन यह मुजाहेदा नहीं है, मुजाहेदा यह है कि सिर्फ़ अल्लाह के लिए किया जाए। आधा घंटा ज़िक्र मुजाहेदा है 5 घंटे का ज़िक्र मुक़द्दमा या इम्तिहान में कामियाबी मिलने के लिए मुजाहेदा नहीं है अब नीयत ख़ालिस करके उन आमाले ख़म्सा में लगो, नमाज़ से शुरू कर दो, इसके तमाम उलूम व जज़ीयात हासिल कर लो। मुआशरा, अज़्कार व अदिया, हलाल, हराम को इल्म के साथ जोड़ दो। ये आमाल सौ फ़ीसद मुसलमानों को हिदायत लेने के लिए दिए गए हैं हर अमल को इसकी क़ीमत पहचानकर। इससे कामियाबी मिलने के यक़ीन के साथ करें, नमाज़, इल्म, ध्यान व इख़्लास व यक़ीन के साथ आ जाए तो अब दुआओं की कुबूलियत का दरवाज़ा खुला। कहो, ऐ ख़ुदा ! मुझे हिदायत दे दे, मैंने हिदायत की सूरत इख़्तियार की जैसे हम यह कहते हैं घबराओ मत, जैब में पांच सौ हैं जो चाहोगे वही खिलाएंगे ऐसे ही यह कहें कि मेरे पास नमाज़ है इसकी दुआ से हर मस्अला हल होगा यह हिदायत है। दिल में हिदायत आ जाए तब दुआ का दरवाज़ा खुलेगा आमाल ज़लालत के साथ भी होते हैं लेकिन हिदायत वाले आमाल से ख़ुदा देते हैं तमाम अंबिया के साथ जो कुछ भी

ख़िलाफ़े मुशाहेदा हुआ, वह नमाज़ व दुआ की वजह से हुआ कि न हमारे हाथ में कुछ है न हमारे मुक़ाबले वालों के हाथ में कुछ है जो कुछ ख़ुदा चाहेंगे वही हो जाएगा। अब दो दर्जे हैं छोटा यह है कि सिर्फ़ अपने मक़ाम पर मेहनत की जाए इससे तुम्हारी ज़ात या महदूद गांव को हिदायत मिल जाएगी। इसके दूसरों में फैलने की मेहनत करके दुआ से दूसरों में भी हिदायत फैलेगी, अगर सारी दुनिया में मेहनत करके दुआएं मांगी तो सारी दुनिया में तुम्हारी दुआ से हालात बदलेंगे। हिदायत वाले चमकने शुरू हो जाएंगे, अमल सिर्फ़ एक है आगे इनके करने में फ़र्क़ पड़ेगा जितना मैदान मेहनत होगा इतने ही दुआ से हिदायत आएगी अंबिया ने सबसे पहले उन आमाल अरबा पर लगाया था। जब लोग उन आामाल पर चले तमाम चीज़ों से बराबर होकर तो हिदायत मिल गई और दुआ से काम होने लग गया तो बाक़ी तमाम नुस्ख़े, तर्जुबे, में साबित हुआ, तो दूसरे भी ऐसे ही होंगे तुम्हारा यक़ीन ऐनुल यक़ीन बन जाएगा। जब तुम देखोगे कि बग़ैर अस्बाब के सिर्फ़ उन आमाल से चमक गए और दूसरे कसरत अस्बाब में उन आमाल के न होने के वजह से मिट गए चौदह साल बाद ख़ुदा ने बद्र में सब कुछ ख़ुदा से होना दिखाया था चुनांचे बद्री हर जगह यह कहता था कि दो लाख़ फ़ौज से नहीं होता ख़ुदा के हाथ में सब कुछ है अबू हुरैरह रज़ि० यर्मूक में उठ–उठकर दुश्मन को देख रहे थे ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० ने कहा तुम मुस्लिम मालूम होते हो, हम तो बद्र में देख चुके कि नुसरत ख़ुदा से सब कुछ होता है इब्राहीम अलै० का क़िस्सा अहया मौता का चार जानवर पकड़े टुकड़े किए कहा अहया मौता दिखाओ अल्लाह ने कहा ईमान नहीं लाए इब्राहीम ने कहा ईमान ले आया। लेकिन इसकी तफ़्सील का इल्म चाहता हूं कहा, चार जानवर पकड़, टुकड़े करके आपस में मिलाकर चार पहाड़ों पर डाल दो। चुनांचे ऐसा ही किया सिर्फ़ इनके सर अपने पास रख लिए, आवाज़ दी, हर हिस्सा ख़ुद ब ख़ुद दौड़कर अपने हिस्से से मिला और जब जिस्म मुकम्मल हो गया तो सर लेने

इब्राहीम के पास आया। इब्राहीम ने दूसरे जानवर का सर देना चाहा तो पीछे हट गया इसका सर दिया तो लग गया और अड़ गया ऐसे ही सहाबा रज़ि० को यक़ीन तो आमाल पर पहले से ही था लेकिन जंग बद्र में उन तमाम बातों को अपनी आंखों से देख लिया। ये आमाल अरबा व खम्सा पर इंसान से मतलूब हैं कि इन में अपनी जान झोंके, माल लगा दे, इनको करके खुदा से दुआ मांगे कि यह सूरत है तो हक़ीक़त हिदायत अता फ़रमा, मगर दिल का यक़ीन उन आमाल के बारे में ऐसा हो जैसे आज यक़ीन है माल लेने का। हिदायत लेने की मेहनत में रिवाजी तरीक़ा ज़िंदगी को छोड़ना पड़ेगा। सहाबा किराम वाली तर्तीब लें, सलस साल में बेरूनी नक़ल व हरकत सहाबा सख़्त गर्मी में गए। शिद्दत प्यास में करश को निचोड़कर पिया, जिगर पर रखा सख़्त सर्दी में गए गढ़े खोदकर इसमें घुंसे ताकि सर्दी से बचें, अपने लिए और दूसरों के लिए हिदायत की दुआ की थी लोगों का यक़ीन था कि उन आमाल से हमारे सारे काम दुरूस्त होंगे। अबूद्दर्दा रज़ि० से कहा गया, मकान जल रहा है कहा नहीं जला और खुदा न जलाएगा, दूसरे, तीसरे ने आकर कहा, यही जवाब दिया था चौथे ने कहा इसके आस–पास के मकान जल गए, लेकिन आग जब तुम्हारे मकान पर पहुंची तो बुझ गई। इसका सबब मालूम किया तो कहा मैंने हुज़ूर सल्ल० की वह दुआ पढ़ ली है जिससे शाम तक आग व हर बला से हिफ़ाज़त होती है मुशाहेदे ने यक़ीन को दुरूस्त कर दिया मक़ामी क़ियाम में चार महीने मस्जिद में चार महीने घर व कमाई में, अगर सारी दुनिया में हिदायत फैलाना चाहते हैं तो यह सहाबा रज़ि० वाली तर्तीब है तुम्हारी मेहनत पर इस एक मुल्क के दरवाज़े नहीं खुलेंगे बल्कि सारे आलम के खुलेंगे और इससे कम दर्जा औरतों का निसाब है ज़िंदगी मोड़ने पर तलाक़ से और मौत की इद्दत चार महीने दस दिन लज़्ज़ात व असाइश व आराम से रूकती है अच्छी सेहत हो तो हर साल बच्चा देने पर चालीस दिन निफ़ास में गुज़रते हैं। हर महीने हैज़ में कम से कम तीन दिन लगते हैं, यह निफ़ास व हैज़ की कम मुद्दत है, सहाबा रज़ि० वाला निसाब मर्दाना है, यह औरतों का है

उमूमी बयान न० 10

अल्लाह तआला ने तमाम इंसानों को मुजाहेदे की दौलत अता फ़रमाई है

देहली कालिज में मग़्रिब की नमाज़ के बाद, दिन जुमा, 12, मई, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

अल्लाह तआला ने दुनिया भर के तमाम इंसानों को एक दौलत अता फ़रमाई है जिससे छुपी हुई चीज़ें दौलतें मुंकशीफ़ होती हैं वे दौलत मुजाहेदे की है। मुजाहेदा अगर सही तो इंकिशाफ़ सही और फलेगा, फूलेगा और मुजाहेदा अगर ग़लत हो तो इंकिशाफ़ भी ग़लत होगा। इससे दुनिया व आख़िरत में मुसीबतों का शिकार होगा हर इंसान मेहनत करता है सदर, वज़ीरों, फुक़रा अलग–अलग लाइनों पर मेहनत करते हैं जो जिस चीज़ पर जिस एतबार से मेहनत करता है उस पर इंकिशाफ़ उसी एतबार से होगा ग़ल्ले के एतबार से मेहनत करने से ग़ल्लाकार में से इंकिशाफ़ होगा। सोने के एतबार से मेहनत करने से ज़मीन में सोने का इंकिशाफ़ होगा, पेट्रोल के एतबार से पेट्रोल में इंकिशाफ़ होगा। दूसरे एतबार का इंकिशाफ़ न होगा एक लाइन पर मेहनत करने से सिर्फ़ उस लाइन का इंकिशाफ़ होगा, डाक्टर को डाक्टरी का इंकिशाफ़ होगा संअत वाले को डाक्टरी का इंकिशाफ़ न होगा बल्कि संअत का होगा दूसरी लाइनों से जाहिल मतलिक़ रहता है यह मिसालें घटिया क़िस्म की मेहनत की हैं यह सफ़ली मुजाहेदात हैं हक़ीक़त व वाक़िअ़

ताल्लुक़ नहीं इस मेहनत को कायनात पर लगना है कि आसमान, ज़मीन, बर्फ़, सोने चांदी में क्या है और अगर इंसान अल्लाह के लिहाज़ से मेहनत करे तो उस पर इंकिशाफ़ ख़ुदा के लिहाज़ से होगा और ऐसी सिफ़ात का होगा ग़ैर पर मेहनत करने से ख़ुदा का इंकिशाफ़ न होगा बल्कि ग़ैर का होगा और यह जहल है अगर ख़ुदा के लिहाज से मेहनत न की। ज़मीन का वास्ता हुक्म इलाही से ऐसा है जैसे जिस्म का रूह से कि रूह निकल जाए तो जिस्म से कोई फ़ायदा नहीं मिलता है ऐसे ही अल्लाह के हुक्म से हट जाने से ज़मीन व कायनात की किसी चीज़ से फ़ायदा नहीं मिलेगा अगर मेहनत सिर्फ़ कायनात पर है और मर जाए तो वे मुसीबतों के थेपड़ों में आ जाता है हक़ीक़त यह है कि दुनिया की तमाम शक्लें, साइंस, अजाइब क़ौम ख़ुदा के ताबेअ हैं, ख़ुदा ने इंसान को उस मुजाहेदे के लिए भेजा है जिससे ख़ुदा से इस्तिफ़ादा के तरीक़ों का इंकिशाफ़ हो। यह हक़ीक़त है कि इंसान दूसरे मुजाहेदों पर रहे असल मुजाहेदे पर न आए तो इस पर इंकिशाफ़ ग़लत होते हैं। जिससे कामियाबी के लिए उठने वाला हर नाकामी की तरफ़ ले जाएगा उस मुल्क में मुजाहेदा किया गया। 60, 70 साल के मुल्क अंग्रेज़ों से निकलकर हिन्दुओं के हाथ में आ जाए तमाम भाई होंगे, ख़ौफ़ महेंगा होगा, चीज़ें सस्ती, हिन्दु, मुस्लिम भाई–भाई अब मुल्क मिल गया है लेकिन हालात पहले से ज़्यादा बत्तर हैं अगरचे शक्लें पहले से ज़्यादा हैं इस वजह से मुजाहेदा मुल्क के एतबार से न था कि ख़ुदा के एतबार से इससे इंकिशाफ़ यह हुआ कि उहूदों पर क़ब्ज़ा मिलने से हालात दुरूस्त न होंगे यह न हुआ कि आमाल दुरूस्त होंगे तब हालात दुरूस्त होंगे। इस वजह से उहूदे मिले लेकिन हालात बिगड़े यह इस वजह से है कि इंसान ग़ौर–फ़िक्र करे कि चीज़ों की कसरत के बावजूद भी हालात दुरूस्त न हुए, लिहाज़ा अब दूसरा मुजाहेदा लेना चाहिए, ग़लत मुजाहेदा करने से वे शक्लें मिल जाती हैं जिनकी तलब होती है लेकिन परेशानियां

साथ नहीं छोड़ती हैं चाहे उसे वज़ारत, खेती–बाड़ी, तिजारत मिल जाए। यह इस वजह से है कि वे सोच–विचार करे कि क़ौन–सी मेहनत इसे कामियाब कर सकेगी, अंबिया इंसानों की मेहनत सही रूख पर लाने के लिए आए हैं। इंसान की मेहनत अगर उन दो बुनियादों पर हों तो तमाम हालात में नाकाम हो जाते हैं यह कि ख़्वाहिश मुशाहेदे पर मेहनत हो इन दोनों पर मेहनत से इंसान जोहर ज़ाया होता है जिस जोहर की वजह कसे वह जानवरों से मुमताज़ होता है बावजूद कि इसके और जानवरो के तक़ाज़े एक से हैं और दोनों जान रखते हैं इंसान अगर सही मेहनत कर ले तब जानवरों से मुम्ताज़ होगा। अगर मैदान मेहनत वही है जो जानवरो का है तो इंसान जानवरों से आगे न चलेगा। फिर इसकी कोई पूछ नहीं कोई इज़्ज़त नहीं, इंसान की मेहनत ख़ुदा की मारफ़त पर आ जाए कि ख़ुदा से कैसे इंसितफ़ादा कर सकता हूं और ख़ुदा किन–किन तरीक़ों से फ़ायदा पहुंचा सकते हैं मेरे तमाम तक़ाज़े पूरा करने पर किस किस तरह से क़ादिर हैं और मैं इंसानियत के किन तरीक़ों पर इस्तेमाल हूं कि ख़ुदा मुझे कामियाब कर दें ? यह थोड़ा से मुजाहेदा है इस पर चलने से हम चाहे बर्क़ व भाप, सोने, चांदी, आसमान चांद पर मेहनत न कर सकें तो कोइ हरज नहीं है बस यह पहचान लें कि ख़ुदा किस–किस तरह फ़ायदा मुझे पहुंचा सकते हैं और मैं ख़ुदा से किन उसूलों से फ़ायदा हासिल कर सकता हूं यह मुजाहेदा तमाम मुजाहेदे से बे–नियाज़ करने वाला है इन इंकिशाफ़ के अलावा बाक़ी इंकिशाफ वालों को इन इंसानों के क़दमों में ला डालेंगे जो इस इंकिशाफ़ वाले मुजाहेदे को कर रहे हों। यह कलिमा तय्यिबा जैसे सियासत, वज़ारत, खेती–बाड़ी, हुकूमत, साइंस सिर्फ़ ज़ुबान कलिमा नहीं बल्कि मेहनत वाले हैं ऐसे ही कलिमा तय्यिबा मेहनत का कलिमा है सिर्फ़ ज़ुबानी नहीं हैं इसमें मेहनत यह है कि अपने अन्दर के उन जवाहर को पहचाने जिससे महबूब ख़ुदा व ख़ल्क़ होगा और उन औसाफ़ को

पहचाने जिनसे यह बहुत नीचे गिरेगा और यह भी पहचान ले कि ख़ुदा ज़िंदगी बिगाड़ने पर कितनी ताक़त रखते हैं और मेरे ख़ुद को पहचाने, ख़ुदा को पहचाने, दोनो एतबार से और इंसान में वह माद्दा है जिससे जानवरों में इसका शुमार है यह वाला सबसे घटिया है। يأكلون كما تأكل الانعام والنار مثوى لهم इस माद्दे पर चलने वाला हर इंसान चाहे कितनी ही निस्बतों वाला हो वह ख़ुदा के यहां कुत्ते और सूअर से आगे नहीं। खाने के लिए मेहनत करना वज़रात के हसूल के लिए मेहनत करना, ये तमाम जानवर करते हैं, सूअर, कुत्ते, बन्दर भी गधे भी अपना रिज़्क़ तलाश करते फिरते हैं। ये कमाना है कुछ जानवर कमाना कर रख लेते हैं चींटी, सरमयादारं राज़ कमाएं मज़दूर जानवर हैं, खाना, बीवी, बच्चों को खिलाना, मुर्ग़ा अपनी मुर्ग़ी को भी दाने पर आवाज़ देकर बुलाता है। मकान बनाना, जानवर, ज़मीन, दौज़ मकान बनाते हैं परिन्दे पेड़ों पर बालाखाने बनाते हैं बीवी से सोहबत करना, बच्चों की परवरिश व तफ़रीह लिबास को साफ़ करना, चिड़िया भी अपने कपड़ों को साफ़ करती है चिड़िया नहाकर परों को साफ़ करती है। तफ़ूक़ भी जानवरों में है घर में अगर नया मुर्ग़ा आ जाए तो दोनो मुर्ग़े आपस में लड़ेंगे, मुशाहेदे पर चलना भी जानवरों में से है। आइंदा व पस-मंज़र को नहीं सोचते हैं दिखाई देने वाली हालत पर ज़िंदगी गुज़ार देते हैं इस पर मछली कांटे में फंस जाती है जानवर दोनों में आकर जाल में फंस जाते हैं यह निस्बतें तमाम इंसानों में जमा हैं सिर्फ़ उन निस्बतों पर ज़िंदगी गुज़ारने से इंसान सिर्फ़ जानवर ही रहता है गुज़री हुई तारीख़ को सामने रखे सिर्फ़ अपनी ज़ातियात में लगा रहे तो इंसान में हैवानियत बढ़ती जाती है पहला दर्जा हैवानियत का इंसान में यह है कि दूसरों को नज़र अंदाज़ करके ख़ुद को बनाए, बड़ा दर्जा यह है कि दूसरों की बिगाड़ कर अपनी बनाए, दूसरा जोहर सबसे आला यह है इंसान में इसी वजह से दुनिया व हर मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत है वह है ख़िलाफ़

ख़ुदा वन्दिया वाला, ख़लीफ़ा बनने पर दुश्मम दोस्त बन जाएंगे। हरीफ़, हलीफ़, इस निस्बत को हर इंसान मानता है कि यह ऊंची व बड़ी है अल्लाह ने अपनी नियाबत की इस्तिदाद रखी है अल्लाह तमाम हैवानी तक़ाज़ों से पाक हैं शक्ल व सूरत और कमाई से पाक हैं ख़ुदा दूसरे के तमाम तक़ाज़ों को पूरा करते हैं दूसरों का मकान, जायदाद, नैमत, माफ़ी, सतर–अय्यूब देते हैं। दूसरों के हालात दुरूस्त करते हैं खाना खिलाना अपना मकान बनाना दूसरों का मकान बनाना ख़ुदा ने इस इंसान को इस वजह से बनाया है कि तमाम इंसानों में मेरे नुमान्दे बन जाओ। इनके तमाम ज़ाहिर व बातिनी तक़ाज़ों को पूरा करो। इंसान जब इस तमाम की मेहनत करता है तो उसे ज़ाती तक़ाज़े दबाने पड़ते हैं ऐसे इंसान के सामने क़ातिल व दुश्मन के दिल बिछ जाते हैं सब उसे चाहने लगते हैं। अब जानवर वाले आमाल से निकलकर अल्लाह वाले आमाल पर आओ, अल्लाह वाले आमाल की अज़मत तमाम मज़हब व मुलहदीन के नज़दीक़ मुस्लिम है अब मुजाहेदा यह करना है कि हैवानियत से निकलकर ख़िलाफ़त पर कैसे आए। अब इसके लिए फ़रिश्तों वाले आमाल हैं इनके आमाल हैं ईमान की मज्लिसों में शिर्कत करना, तालीम व इल्म के हलक़ों में आना, इबादत व नमाज़ में साथ होना, साथ आमीन कहते हैं इमाम की तस्मीह के बाद फ़रिश्ते तस्मीह कहते हैं, ज़िक्र की महफ़िलों में शिर्कत, इन आमाल की इस्तिदाद इंसान में है। हैवानियत से ख़िलाफ़त की तरफ़ इंतिक़ाल उसी वक़्त होगा जब फ़रिश्तों वाले आमाल पर ख़ूब चलने वाला हो, इससे जोहर व कमालात ज़हूर में आएंगे। फ़रिश्ते हर वक़्त उन आमाल व इबादत में लगे रहते हैं दूसरों को लगाते नहीं है, अंबिया इसी वास्ते आएं हैं कि वे दूसरे इंसानों के पास उनके मशग़िल में जाकर हैवानियत वाले आमाल से निकालकर फ़रिश्तों वाले आमाल में लगाकर ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनाएं। अंबिया एक क़ौम, एक ज़ुबान, एक इलाक़े में मक़ामी मेहनत करते थे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम का मैदान मेहनत बहुत बड़ा है अंबिया की मेहनत को दुनिया चप्पा-चप्पा में ज़िंदा करने के लिए मेहनत करना हर इंसान चाहे किसी ज़माने में हो अपने हैवानी आमाल से निकले और दाई बनकर फ़रिश्तों वालों आमाल में मश्गूल हो। और हर एक को उन्हें अमल में लगाकर ख़ुदा के ख़लीफ़ा बने और बनाए अगर इंसाफ़ सिर्फ़ आमाले हैवानिया में लगे तो ख़ुदा के यहां इसकी कोई क़ीमत नहीं है चाहे वह सरमायादार हो या बादशाह या वज़ीर, यह चीज़ें हमारे यहां क़ीमती हैं लेकिन ख़ुदा के यहां एक ज़र्रे की हक़ीक़त नहीं रखती हैं आजकल माल के रास्ते से ज़िंदगी बनाने का रिवाज है अंबिया उसे ही ज़ेर करने के लिए हैं उनके तरीक़े मौजूदा के नक़्शे को तोड़ने के लिए आए हैं शुरू से ही दो रास्ते हैं माल के एतबार से कामियाब बनना, आमाल के लिहाज़ से कामियाबी लेना, ईमान व यक़ीन व आमाल सालेह हमारा ज़ाती सरमाया है उनका नूर तुम्हारे हर हिस्से में होगा। इससे मिलने वाली इज़्ज़त असली है, अंबिया ज़ात इंसान को क़ीमती बनाने आए हैं, बेरूनी चीज़ों को नहीं दुनिया के तमाम नक़्शें क़ीमती नहीं है ख़ुदा ने उन्हें बनाया ही बे-क़ीमत है और इन बे-क़ीमत से मेहनत करने से आज इंसान भी बे-क़ीमत बन गया है, दुनिया की तमाम शक्लें चाहे कितनी सूरते बदलकर आएं सब मिट्टी हैं, मिट्टी से निकलकर आई हैं, मिट्टी में चली जाएंगी। हैवानियत से निकलकर ख़िलाफ़त पर आना फ़रिश्तो वाले आमाल के ज़रिया से है। ख़िलाफ़त का दस्तूर 24 घंटे का है जैसे हुज़ूर सल्ल० ने हमें सिखाया है वह सारी ख़िलाफ़ की ज़िंदगी है इसके लिए ज़बरदस्त मेहनत की ज़रूरत है सबसे पहली मेहनत दुनियावी लाइन में यह है कि माल हासिल किया जाए फिर मकान, लिबास, खाना, शादी-ब्याह का इंतिज़ाम होगा। फिर माल पर मेहनत करने से चीज़ें मिलेंगी उनसे अपने तक़ाज़े पूरे होंगे इस तरह अंबिया वाली लाइन में पहली मेहनत हसूल हिदायत के लिए है हिदायत मिलने के बाद उसकी रोशनी में आमाल के दुरूस्त

करने की मेहनत करेंगे। अगर पहले हिदायत को हासिल करने वाली न हो तो आमाल दुरूस्त न होंगे और तबह व बर्बाद होंगे। अब असल मुक़ाबला माल मिलने वाली मेहनत व हिदायत मिलने वाली मेहनत में है हिदायत यह है कि मेरी मेहनत से कुछ नहीं होता है यहां तक कि सही मेहनत करने से भी ख़ुदा के देने से मेहनत मिलती है जो कुछ चीज़ों में दिखाई देता है वही आमाल में नज़र आए पांच-सौ रूपये हैं जब भूख लगेगी खा लेंगे पैसे से सेहत, हिफ़ाज़त, इज़्ज़त, का मिलना बंद हो जाए और आमाल से मिलने का ज़हन बन जाए, कुरआन में बताया है कि क़ौमें माज़िया की ज़िंदगी उन शक्लों में बिगड़ी है इसकी दुआ है 40, 50 मर्तबा रोज़ाना غير المغضوب عليهم ولا الضالين अंबिया के क़िस्सों में बताया है कि चीज़ों के बग़ैर उनकी ज़िंदगी कैसे बनी जंगल बियाबां से स्कीम चला डाली कुरआन हिदायत की किताब है हमें हिदायत कब मिलेगी ? जब दिल का यक़ीन उस कुरआन के मुताबिक़ हो, कुरआन कहता है माल व चीज़ों से परवरिश नहीं है दिल यह कहता कि माल व चीजों से परवरिश है तो दिल में ज़लालत है हिदायत नहीं। मेहनत मुजाहेदा करो हिदायत लेने के लिए, आमाल पर नेमत मिलना का ज़हन बन जाए कि इज़्ज़त, दौलत, अलू मिलेगा माल व चीज़ें मुर्दा मालूम हों जैसे सांप ज़िंदा है सब घबरा जाएंगे। मरा हुआ सब मुतमइन हो जाएंगे जैसे मय्यत के माइने है शक्ल उससे नहीं होता ऐसे ही मख़्लूक़ के माइने के है शक्ल व सूरत इससे वही होगा जो ख़ुदा चाहेंगे, ख़ुदा उनके बग़ैर जो चाहें कर दें, अंबिया भी ख़ुदा के पाबंद हैं। हुज़ूर सल्ल० के हाथों अबू तालिब को हिदायत न मिली वहशी रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० के इरादे के ख़िलाफ़ हिदायत मिल गई। हुज़ूर सल्ल० हिदायत की शक्ल हैं लेकिन हिदायत इनके हाथ में नहीं है क़िला हिफ़ाज़त की शक्ल है हिफ़ाज़त इसके साथ नहीं है हिफ़ाज़त व क़िला के ख़ालिक़ अल्लाह के हाथ में है चींटी से जिब्रील अलै० व

ज़र्रा से अर्श व कुर्सी तक तमाम ग़ायब व मुशहिद चीज़ें सबकी सबसे कुछ नहीं होता है सिर्फ़ ख़ालिक़ अश्काल से होगा जो शक्ल से पाक है, सिर्फ़ वही करन वाला है हिदायत इसका काम है कि मुशाहेदा वाली चीज़ों से मिलने व ज़िंदगी बनने का ज़हन न रहे बल्कि आमाल से होने का ज़हन बन जाए उन आमाल ख़म्सा पर हिफ़ाज़त, बुलन्दी, मकान, ज़मीन, परवरिश ख़ुदा अपनी क़ुदरत से देंगे कि वह अच्छे आमाल पर राज़ी होकर ज़िंदगी बना देते हैं माल के रास्ते से कामियाबी का मिलना यह ज़लालत है, तमाम अंबिया व मूसा अलै० ने शुरू में आकर तौरात नहीं दी कि पढ़ लो फिर अमल करना हुज़ूर सल्ल० ने व हर नबी ने यही किया है कि फ़िऔनी निज़ाम ग़लत है औरतों की अज़मत व बच्चों की जानें व कारोबार महफ़ूज़ नहीं है। मूसा ने कहा एक क़ौम भरोसा कर लो, उन्होंने ज़ुबान से भरोसा करके दुआ भी मांगी जवाब में आया कि सिर्फ़ ज़ुबान बात काफ़ी नहीं है अमल करो, नमाज़ को दुरूस्त कर लो, ईमान व ध्यान इल्म व नीयत के एतबार से दुरूस्त हो तो नमाज़ पर ख़ुदा हर मस्अले को हल करेंगे आज तो कहते हैं कि ख़ाली नमाज़ से क्या होता है ? अरे ख़ाली नमाज़ से हर नबी के ज़माने में हुआ है तुम बतलाओ ख़ाली कमाने से क्या होता है ? ख़ाली कमाने से वह होता है जो आज हमारे साथ हो रहा है आज आमाल को कसबे माल का ज़रिया बनाया आमाल का इंहिसार माल पर कर लिया गया कि मेरी मेहनत से माल और माल से अमल चलेंगे ऐसा नहीं है तमाम हालात अबतर से बचना आमाल के ज़रिए है फ़िऔनी हुकूमत व पब्लिक से मुसीबत पहुंची है इसके पास जाकर अपने हक़ूक़ का मुतालबा नहीं करते हैं कि मेरी ज़मीन वापस दिला दो। वहां जाकर मुक़द्दमे में पांच हज़ार और ख़र्च होंगे अरे तुम नमाज़ पढ़ो, ख़ुदा से कहते रहो मुसीबतें झेलते रहो ना–मालूम कितनी औरतों की पिटाई की दुआएं, दुकाने जायदाद ज़ब्त करने की दुआएं ख़ुदा के यहां जमा थीं जिस पर ख़ुदा ने फ़िऔनी

निज़ाम को गर्क़ किया और बनी इसराइल ने कभी फ़िऔनियों की तरफ़ रूजूअ न किया सिर्फ़ नमाज़ को दुरूस्त कर लिया। चीज़ों की खलक़त ज़ाहिर में चीज़ों से है और चीज़ों की तक़सीम चीज़ों से है नमाज़ का सीधा ताल्लुक़ कुदरत से है अब बनी इसराइल ने आंख से दिख लिया कि हमारी नमाज़ व अमल शदाइद सब्र पर हुकूमत मिल गई। फ़िऔनी निज़ाम ग़र्क़ हुआ तब उन्हें तौरात पूरी दी गई नमाज़ पर अमल का ज़हन बनाया गया कि हर तक़ाज़े व हर चीज़ अमल से मिलेगी ज़हन अमल का बन जाने के बाद तौरात दी समुंद्र में से जगह दी, मन व सलवा आसमान से उतारा, माल की ताक़त आमाल की ताक़त का मुक़ाबला नहीं कर सकती जब आमाल का म्यार क़ायम हो ज़ाएगा। मुल्क व माल का म्यार न रहेगा अल्लाह के बन्दों में माल व जान लगाने वाला बन जाए, तो ख़ुदा अपनी कुदरत को इस्तेमाल करके तर्तीब बदल देंगे, चाहे हिदायत दे या अज़ाब भेज दें। मक्का के तेरह साल में सिर्फ़ 5, 6 आमाल थे, दावत, तालीम, ज़िक्र, हमदर्दी फिर नमाज़ नक़्शे ख़िलाफ़ थे, बच्चे छीन रहे थे, जायदादें जा रही थीं, बीवी मिट रही थी, यहां तक कि वतन छोड़ दिया, तब ख़ुदा ने बद्र में सामान व नक़्शों के आसमान से फ़रिश्ते उतारे लकड़ी को तलवार बनाया। उन आमाल की क़ीमत मालूम हो गई, तो हौसले और बुलन्द हो गए यहां तक कि कहत साली है पास कुछ नहीं है कटाई का वक़्त है ऐसे नाज़ुक वक़्त में हुक्म मिलने पर कमाई के मुक़ाबले में 30, 40, 70 हज़ार रोज़ाना हुए कमाई को कुरबान करके निकल गए कि ख़ुदा ख़ुद पालेंगे अगरचें इक्तिसादी हालात बहुत बद हाल हैं। सहाबा रज़ि० अर्सा में आमाल ख़म्सा पर बंद रहे थे, यक़ीन भी उन आमाल से मिलने का था जब कमाई के तकाज़ो को तोड़कर निकलने वाले बन गए तो हुज़ूर सल्ल० भी मेहनत देकर चले गए कि उन आमाल को करेंगे माल व जान का सही ख़र्च होगा तो ख़ुदा मदद करते रहेंगे। सहाबा किराम रज़ि० खलीज फ़ारस अबूर

कर गए दुआ पर ज़मीन फटकर पानी निकला, बारिश रूक गई (दुआ पर) आसमान से खाना उतरा, जानवर ज़िंदा हो गया। सब लोग खुद ब खुद माइल हो गए अफ्रिक़ा में एक जगह को छावनी बनाने के लिए मुतंखब किया गया मक़ामी लोगों ने कहा कि इसमें इतनी तायदाद में फ़लां-फ़लां जानवर हैं। जिनके निकालने के लिए सौ साल चाहिए। सहाबा किराम रज़ि० ने कहा, नहीं, दिन में छावनी डाल देंगे, क़ौम बराबर जमा थी एक सहाबी ने टीले पर खड़े होकर कहा, हम ग़ुलाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं हम अल्लाह के रास्ते में हैं हमें छावनी डालनी है तीन दिन में निकल जाओ। इसके बाद जो मिलेगा मार देंगे, तीन दिन के बजाए सिर्फ़ 24 घंटे में जंगल ख़ाली हो गया इस पर कई लाख मुसलमान हे गए जैसे क़ुदरत को खुदा अंबिया के ज़माने में रिवाज के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करते थे इस तरह अंबिया की मेहनत पर सहाबा किराम रज़ि० के साथ हुआ है। अबू मुस्लिम ख़ौलानी रज़ि० की दुआ पर खाना उतरा है, अबू मुस्लिम आग में नहीं जले नख़ी रहमतुल्लाहि अलैहि की दुआ पर मुर्दा सवारी ज़िंदा हो गई इस सबके सबब यह है कि जो कुछ चीज़ों में नज़र आ रहा है वे सब आमाल में नज़र आए। बस अपने ज़ाती तक़ाज़ों में कमी करो और दिहायत वाले आमाल को करो इबादतें, अख़लाक़ के साथ-साथ दावत पर खड़े हो जाओ। कुछ वक़्त कमाने का कुछ वक़्त अल्लाह के रास्ते में, कमाई व घरेलू ज़िंदगी में कमी आ जाए और मुजाहेदा व मेहनत में ज़्यादाती आएं, मेहनत के मैदान क़ायम किए जाएं, फिर हिदायत की दुआ मांगी जाए। जितना मैदान उन आमाले ख़म्सा का फैलना का बनेगा तो मेहनत व मुजाहेदे के पूरे होने के दिन काफ़िरों व फ़ासिक़ों को हिदायत मिल जाएगी। इसमें अपने आराम व राहत वह घरेलू नक़्शों में कमी आ जाएगी लेकिन तुम्हारी दुआओं से करोड़ों को हिदायत मिलेगी। उमर रज़ि० जैसे को हिदायत दुआ से मिली थी इस्लाम से पहले मुसलमान इनको शैतान मक्का कहते थे

और यह कि उमर के बाप का गधा तो मुसलमान हो सकता है लेकिन उमर मुसलमान नहीं हो सकता रात को बहन फ़ातिमा को इतना मारा कि समझे अब मर गई है सो गए रात को तहज्जुद में बहन का कुरआन सुना, सुबह को इस्लाम लाए जैसे इनकी कुरबानी व दुआ पर उमर जैसे को हिदायत मिली है ऐसे ही हमारी मेहनत, दुआ पर हज़ारों को हिदायत मिल सकती है अगर हमने मेहनत करके खिलाफ़त ख़ुदा वंदिया को हासिल कर लिया तो तमाम इंसान हमारे क़दमों में आकर गिरेंगे हमारी ज़ात क़ीमती बनेगी। इस पर कुबूलियत दुआ का इनाम मिलेगा मेरे मुतालबे को जान पर लगाया है तो मेरी बात पर अपनी कुदरत व ज़ात को लगा दे। अपनी ज़ात को इनकी बात पर लगाओ, वह अपनी ज़ात तुम्हारी हर बात पर लगा देंगे। इसमें ख़्वाहिश कम होगी हमने ज़ात को ख़्वाहिशों पर लगा दिया है अब दुआ का मतलब यह है कि आर्डर दे रहे हैं जब हमारा आर्डर पूरा न हो तो पीरों और मौलवियों से दुआओं के लिए कहा। अरे अगर तुम अपनी ज़ात को इनकी बात पर लगाओ तो तुम्हारी बात पर इनकी ज़ात लग जाएगी, सहाबा किराम रज़ि० की तर्तीब सलस वाली थी तो उस ज़माने में मस्जिदें आबाद थी। मस्जिद उन आमाल ख़म्सा के लिए बनी है इस माहौल को मस्जिदों में ज़िंदा करने के लिए मेहनत की ज़रूरत है सबसे ऊंचा दर्जा सहाबा किराम वाला है आजकल के लिहाज़ से हर साल में चिल्ला का मुतालबा है शैतान फ़क्र व फ़ाक़ा व मौत को सामने लाता है हज़ारों ने चार महीने दिए लेकिन वह भी तुम्हारी तरह मज़े कर रहे हैं

मज्मूआ बयानात

मुकम्मल (6 भाग)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब कांधलवी रह०

(भाग –5)

यासीन बुक डिपो
2127, रोदगरान, दिल्ली–6

विषय सूची

तर्तीब देने पर बात

अल्लाह तआला के इनामात इस आजिज़ पर बेहद व बेशुमार हैं जिनमें से एक यह है कि इसने मुझे अपने मुख़्लिस व मक़बूल बंदों के बयानात व मलफूज़ात व मकतूबात जमा करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाई और महज अपने फ़ज़ल व करम से इस सिलसिले को आम व ख़ास में मक़बूलियत अता फ़रमाई इसी सिलसिले की एक कड़ी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के बयानात है जो अपनी कुव्वत तासीर और ताक़तवर दावत ईमानी में मुन्फ़िर दो बे–मिसाल हैं और बड़े–बड़े अहल अल्लाह ने गवाही दी है कि इन बयानात में हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० की मज्लिसें व बयानात की झलक नज़र आती है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० के चार हिस्से अब तक मंज़र आम पर आ चुके हैं और यह पांचवां हिस्सा आपकी ख़िदमत में पेश है। में उस्ताद हज़रत मौलाना अब्दुस्सलाम साहब पूनवी मद्दाहू ज़िल्ला का बे–हद मम्नून हूं कि उन्होंने बयानात की तसीह फ़रमाई और मुहम्मद याकूब साहब इब्ने जनाब अब्दुल वाजिद साहब आदिल आबादी ने भी मेरा बे–इंतिहा ताउन किया। अल्लाह पाक मेरे पाक व मेरे तमाम मोसिनों व मुआवीनों को बे–इंतिहा जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए और इस किताब को अगली किताब की तरह मक़्बूलियत अता फ़मराए और आम व ख़ास के लिए नाफ़ेअ बनाए और इस अजिज़ के लिए ज़ख़ीरा आख़िरत और वसीला निजात फ़रमाए। फ़क्त व सलाम

मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी
दारूल उलूम सोनूपरी तहसील मुरतज़ापूर ज़िला अकोला महारष्ट्र
(इंडिया)

24, जून, 2005 ई०

एक ज़रूरी वज़ाहत

जनाब हज़रात इस पहले दावत तब्लीग़ के सिलसिले में अकाबिर के मलफूज़ात, मकतूबात और बयानात वग़ैरह की सूरत में मेरी चंद किताबें मंज़र–आम पर आई और इन्शाल्लाह आगे भी आती रहेंगी, लेकिन इसके साथ इस बात की वज़ाहत करना ज़रूरी समझता हूं कि यह दावत वाला मुबारक काम सिर्फ़ किताबों के पढ़ने से समझने में नहीं आएगा। हां इतनी बात ज़रूर है कि इन किताबों में जो कुछ लिखा गया है वे सब इन काम के बड़ों की बातें हैं इसलिए ये किताबें काम के समझने में किसी दर्जे में मददगार तो बन सकती है लेकिन काम की हक़ीक़त, काम के फ़ायदे, इस काम के ज़रिए पूरे आलम से बे–दीनी का दूर होना, अल्लाह पाक से ताल्लुक़, सुन्नतों का शौक, आमतौर से इंसानियत का और ख़ासतौर से उम्मते मुस्लिमा का दर्द और फ़िक्र दिल में आना, ईमान व आमाल का तरक्की में होना या तो दावत के काम में बड़ा हिस्सा लेने से होगा। इसलिए कि इस काम के बड़ों ने जो बाहर की नक़ल–हरकत के साथ मक़ामी काम की तर्तीब बताई है इसमें ख़ूब जमकर हिस्सा लिया जाए। सिर्फ़ किताबों के पढ़ने पर इक्तिफ़ाना किया जाए, अल्लाह पाक हम सबको इख़्लास के साथ अपनी इस्लाह की नीयत से ज़िंदगी की आख़िरी सांस तक दीन की ख़िदमत के लिए कुबूल फ़रमाए। आमीन

काम के उसूल की बातें उन किताबों में भी मिलेंगी। अगर उसूल ये है कि बंगले वाली मस्जिद, देहली की शौरा की जमाअत हाज़िर हालात के एतबार से जिस उसूल की तशरीह कुरआन व हदीस की रोशनी में करे वह उसूल ठहरेगा, लिहाज़ा हमें बंगले वाली मस्जिद के शूरा की जमाअत से रोशनी हासिल

मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी

मक्तूब गिरामी

आरिफ़ बा–अल्लाह हज़रत मौलाना क़ारी साहब सिद्दीक़ अहमद साहब बांदवी रहमतुल्लाहि अलैहि
बानी जामेअ अरबिया, हथोरा बांधा (यू.पी)

जनाब मुफ़्ती मुहम्मद रोशन साहब

हालात का इल्म हुआ, अपनी तसनीफ़ की हुई तीन किताबें (1) मलफ़ूज़ात पहला हिस्सा (2) बयानात पहला हिस्सा (3) मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० मौसूल हुईं।

बहुत पसंद आई यह सिलसिला आप जारी रखें बहुत से लोगों को फ़ायदा पहुंचेगा।

अल्लाह पाक तमाम मुवाफ़े दूर फ़रमाएं, मेरे लिए दुआ करते रहे।

अहकर सिद्दिक़ अहमद

मक्तूब–गिरामी

हज़रत अक्दस मौलाना मुफ़्ती शब्बीर अहमद साहब

हदीस व सदर मुफ़्ती मदरसा शाही मुरादाबाद

ख़लीफ़ा आरिफ़ बा–अल्लाह हज़रत अक्दस मौलाना क़ारी सिद्दीक़ अहमद बांदवी रह०

सुब्हाना व तआला

हज़रत मौलाना मुहम्मद रोशन साहब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि वबा रकातुहू

अल–हम्दु लिल्लाह हम तुम्हारी दिली दुआओं से ब–ख़ैर आफ़ियत हैं, ख़ुदा करे तुम भी बा–आफ़ियत हो, तुम्हारी कोशीश करदा तीन किताबें, (1) मलफूज़ात, (पहला हिस्सा), (2) बयानात (पहला हिस्सा) और (3) मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० (पहला हिस्सा) मौसूल हुई।

ये आपकी बहुत बड़ी ख़ुश–किस्मती है कि दुनिया के शहरे–अफ़ाक बुज़ुर्गें के रूहानी हालात और अक़वाल व अराअ पर काम करने की तौफ़ीक़ हुई, यह ख़ुश–नसीबी हर किसी को नसीब नहीं होती, मुझे तुम्हारी इस ख़ुशकिस्मती पर कितनी ख़ुशी हो रही है इसकी इंतिहा नहीं है, यह तुम्हारे काम की इब्तिदा है। इन्शाअल्लाह आइंदा अलग–अलग हौसले, और तसनीफ़ी काम करने के लिए राह फ़राहम होने वाली है।

ख़ाकसार की फ़लाह दारेन के लिए दुआ फ़रमाएं बंदा तुम्हारे लिए हर वक़्त ख़ैरियत–ख़्वाह है, वस्सलाम

उमूमी बयान न० 1

मेहनत एक ही लेकिन शक्लें और मैदान तीन हैं

फजर के बाद, जुमा का दिन, हरम मदनी में, 15 मई, 1962 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

मेहनत के दो रास्ते हैं एक कायनात से फ़ायदा हासिल करने की मेहनत, दूसरे कायनात के ख़ालिक़ से फ़ायदा हासिल करने की मेहनत। कायनात ने लेने वालों को भी ख़ालिक़ से मिलता है लेकिन कायनात के एतबार से फ़ायदे मिलेंगे और ख़ालिक़ से लेने वालों को ख़ालिक़ के एतबार से मिलेगा। एक मेहनत शख़्सी, मुल्की, या आलमी होगी दोनों रास्तों में आदमी जिस रूख़ से मेहनत करेगा उसी रूख़ से कायनात से या ख़ालिक़ से फ़ायदा मिलेगा। मेहनत की तीन शक्लें बनें, एक सालिहीन की मेहनत, दूसरी अंबिया की, तीसरी सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली मेहनत। मेहनत एक ही लेकिन शक्लें और मैदान तीन है एक ज़ात मैदान हो तो सालिहीन वाली मेहनत या एक इलाक़ ही मैदान हो तो अंबिया वाली मेहनत सारे आलम को मैदान बनाओ। तो सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली मेहनत है। मुजाहेदा (मेहनत) से इंसान पर मुंकाशफ़ होता है, हमने देखा कि ज़मीन पर सोना, चांदी, खेत, बाग़ हैं, मज़ीद मेहनत से पता चला कि इसमें पेट्रोल और फ़्ला–फ़्लां गैस भी है। मुशाहेदा बढ़ता रहा, मुशाहेदा ही मुहरीक मेहनत होगा, सियासत, मुल्की, तिजारती, खेती–बाड़ी, साइंस मेहनतों को इफ़तिताह मुशाहेदा से होगा। जितनी मेहनत बढ़ेगी उसका मुशाहेदा बढ़ेगा और

ब–क़द्र मुशाहेदा उस चीज़ में जज़्ब होगा, दूसरी मेहनत में बग़ैर मुशाहेदे के सिर्फ़ ग़ैब के यक़ीन की मेहनत होगी। मेहनत करेंगे तो रूख़ क़ायम होगा फिर महसूस होगा और आख़िर में जाकर सब कुछ दिखाई दे जाएगा। हमारा मुशाहेदा नाक़िस भी है और जितना मुशाहेदा है वे भी ग़लत है न ख़ुदा का, न जन्नत, दोज़ख़ का, न रिसल व फ़रिश्तों का न आमाल के असरात का मुशाहेदा है सिर्फ़ अदविया, अस्लाह, समानों का मुशाहेदा है करने वाले का नहीं है, अलबत्ता इस्तेमाल होने वाली चीज़ों का मुशाहेदा है इसी वजह से मेहनत करनी पड़ेगी। जिससे यक़ीन बदले और चीज़ों के बजाए आमाल पर पड़े, असल आमाल हैं, आमाल बिगड़े तो चीज़ों में ना–कामी होगी, आमाल दुरूस्त हुए तो बग़ैर चीज़ों के ना–कामियाबी मिलेगी। لاالہ

لاالہ الا اللہ محمد رسول اللہ अल्लाह के सिवा की हर शक्ल से नहीं होता है यहां तक कि अंबिया की शक्ल से भी नहीं होता है ख़ुदा जब चाहे सूरज में अंधेरा ले आए, सूरज अपनी रोशनी में मुख़तार नहीं। हुज़ूर सल्ल० अपनी हिदायत में मुख़तार नहीं है आप चाहें, ख़ुदा न चाहे तो अबू तालिब को हिदायत न मिली, आप न चाहे, ख़ुदा हिदायत चाह लें तो वह वहशी रज़ि० को हिदायत मिली। ऐसे ही उस्मान रज़ि० को भी हिदायत मिल गई, यह उस्मान रज़ि० मस्लिस में बैठे थे। हुज़ूर सल्ल० का दिल चाह रहा था कि उन्हें कोई क़त्ल कर दे (1) आख़िर किसी ने कुछ न किया तो हुज़ूर सल्ल० ने कलिमा पढ़कर वह उस्मान रज़ि० सहाबी बन गए। उनके जाने के बाद हुज़ूर सल्ल० ने कहा कि तुममें रजल रशीद न था तो उसे क़त्ल कर देता, सहाबा ने कहा आप फ़रमा देते तो फ़रमाया नबी को मुनासिब नहीं। यानी वह तो मुतमइन हो रहा है और मैं इशारे इसके ख़िलाफ़ करूं। इसी वजह से अबू तालिब को हिदायत न मिली। हुज़ूर सल्ल० बे–करार हुए तो अल्लाह ने उतार दिया انک لا تہدی من احببت ولکن اللہ یہدی من یشاء मलाकुल मौत, जिब्रील, मिकाइल, चींटी सब पर ख़ुदा का क़ब्ज़ा है जिससे जो चाहेंगे उससे वही होगा

फ़िऔन ने चाहा मूसा अलै० क़त्ल हो, खुदा ने चाहा कि मूसा अलै० फ़िऔन की गोद में पलें, जो मूसा अलै० न थे वह तो हज़ारों मार डाले फ़िऔनियों ने उधर जो मूसा है उसे खुदा फ़िऔन की गोद में पाल रहे हैं। हज़रत जिब्रील अलै० के हाथों सामरी मशरीक़ पलवा लिया, इधर सबसे बड़ा काफ़िर फ़िऔन से मूसा अलै० नबी को पलवाया, नसारा को यह ग़लत फ़हमी हुई कि अहयुल मौता, नज़ूल माइदा ईसा अलै० ने किया हालांकि यह सब कुछ तो अल्लाह ने किया था, नबी के फ़ाल के साथ अल्लाह की चाह लग गई इस वजह से काम काम हो गया जिस शक्ल को जिस काम के वास्ते बनाया है वह इरादा खुदा के बग़ैर न होगा। लेकिन अल्लाह जो चाहें किसी के बग़ैर भी कर दें, नबी के बग़ैर हिदायत दें, इब्राहीम अलै०, मुहम्मद सल्ल० और मूसा अलै० सीधा अपने इरादे से हिदायत दी। न किसी हुकूमत से, न किसी आदमी से, न किसी चीज़ से, इब्राहीम ने कहा ربی الذی یحی ویمیت قال انا احی وامیت और नमरूद ने उस शख़्स को हलाक कर दिया जिसकी रिहाई का हुक्म अदालत ने सालों की रगड़ाई के बाद दिया था और जिसके क़त्ल का हुक्म मिला था उसे रिहा करके गोया कि मुर्दे को ज़िंदा कर दिया, हुकूमत वालों की अक़्ल खुदा मस्ख़ कर देते हैं। सिद्दीक़ ने कहा था कि बादशाहत में कुछ नहीं है, सबने ताज्जुब से देखा तो फ़रमाया कि बादशाह होते ही उम्र आधी हो जाती थी लेकिन मेरे ख़्याल में तो आजकल तो अक़्ल भी जाती रहती है। बादशाह ने पूछा ऐ वज़ीर इस हौज़ में कितने प्याले पानी होगा ? वज़ीर ने कहा क्या ख़बर है, बादशाह ने कहा किसी तालिब इल्म से पूछो, सिपाही गए सबक़ में देर से जाने वाले तालिब इल्म को ज़बरदस्ती पकड़कर ले आए। इसने कहा यह तो मामूली बात है अगर प्याला ब–क़द्र हौज़ हो तो एक ही प्याला आएगा, इब्राहीम अलै० ने ऐसे बात कही जिसका जवाब न बन सका ज़मीन आसमान की मुशाहिद वग़ैरह मुशाहिद हर शक्ल से न होगा। अगर मेहनत करके वहां तक पहुंच गए जहां धोखा बदलता है,

हक़ाइक़ खुलते हैं, मक्का में मुशाहेदा न हुआ बल्कि यहां बद्र में ज़ाहिर हुआ कि करने वाले अल्लाह हैं, लकड़ी को तलवार बना दिया। शक्ल से जो पाक है उससे होने का यक़ीन बने, बग़ैर शक्ल के होता है अल्लाह जो चाह लेते हैं वह हो जाता है, दूसरा यह है कि अल्लाह से फ़ायदा हासिल करने के लिए कायनात रास्ता नहीं है बल्कि आमाल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ही रास्ता हैं, अंदर–बाहर हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल होंगे तो ख़ुदा कामियाब कर देंगे वरना नहीं जैसी ज़िंदगी उन्होंने गुज़ारी है उस ज़िंदगी में ख़ुदा से इस्तिफ़ादा है सारे अंबिया के रास्ते ख़त्म हो चुके। अब तो सिर्फ़ मुहम्मद सल्ल० वाले रास्ते से ही फ़ायदा ख़ुदा से मिलेगा, अब मेहनत होगी शक्लों के ग़लत यक़ीन से ख़ुदा के करने की तरफ़ और आमाल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हो जाने की तरफ़, ख़ुदा नें कलिमा, नमाज़ दिया, कलिमे वाले यक़ीन को दिल में गाड़ने के लिए नमाज़ पर मेहनत करो, जैसे सियासत, खेती–बाड़ी, तिजारत, डाक्टरी, डराइवरी, पहलवानी, तैरना इंसान की अलग–अलग शक्लें हैं। ऐसे ही नमाज़ भी इंसान की एक ख़ास शक्ल है जिसमें वह ख़ुदा के एतबार से इस्तेमाल होता है। सियासत में मुल्क क़ाबिज़ बनकर या क़ाबिज़ बनने के लिए मेहनत है इसमें इंसान का इस्तेमाल मुल्क के एतबार से है। आलाती तब व जराहत के एतबार से इस्तेमाल डाक्टरी है, लोहे के एतबार से इस्तेमाल लौहारपन है, नमाज़ ख़ुदा के लेने के एतबार से इस्तेमाल का नाम है इसी इस्तेमाल से फ़ौजों, हथियारों, राकेटों, ऐटमों, असा करके मुक़ाबले में क़ुदरत ख़ुदा के दरवाज़े खुलेंगे, ख़ुदा की माशियत व इरादा से होता है जिस दिन चाहेंगे सियासत को मिट्टी कर देंगे और हमारे आमाल की ताक़त को ज़ाहिर कर देंगे। जैसे सांप को जब चाहा लाठी बना दिया, लाठी को सांप बना दिया, बड़े पेड़ से छोटा सा दाना निकाला। छोटे से दाने से कितना बड़ा पेड़ निकाल दिया, कायनात का यक़ीन निकलना इस्तिफ़ादा क़ुदरत के लिए शर्त है। नया नबी उस वक़्त आता था

जब उम्मत गुज़रे हुए नबी को ख़ुदा मानने लगती, अगला नबी आकर कहता वह तो बन्दा था। ईसा अलै० को हम ने नबी मान लिया, ख़ुदा ने कहा अगर ईसा और इसकी मां या सारे लोगों को ख़ुदा मार दे तो कौन बचाएगा,। अंबिया के बारे में ख़ुदा दोज़ख़ रखे हैं, एक रुख़ मे नबी ख़ौफ़ज़दा बे-क़रार नज़र आ रहा है उसके क़त्ल के मश्विरे हो रहे हैं इसकी पिटाई हो रही है, वह ख़ुदा से मदद मांग रहा है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि नबी करने वाले नहीं हैं। यूसुफ़ अलै० ने जेलखाने से निकलने की तदबीर इख़्तियार की, रिहा होने वाले से कह दिया बादशाह से मेरी रिहाई की बात करना। ख़ुदा ने सब कुछ भुला दिया और यूसुफ़ ना-उम्मीद हो गए, फिर ख़ुदा ने ग़ैब से ख़्वाब से रिहा कर दिया। अल्लाह से बराहे मुहम्मद सल्ल० फ़ायदा होता है। बराहे कायनात न होगी, जिस नबी के रास्ते ने तमाम अंबिया के रास्ते को रोक दिया वे कैसे रूस अमेरीका को जूतियां न बना देगा। ज़रा समझ को इस्तेमाल करो, सारे निज़ामों में फ़रिश्ते फैले हुए हैं, सूरज हिफ़ाज़त इंसानी या दरिया, बारिश, खेती, तक़्सीम रिज़्क वग़ैरह। इब्राहीम अलै० के पास मुल्कुल जिबाल और मुल्कुल बहार आए, इब्राहीम अलै० ने दोनों से फ़ायदा लेने इंकार कर दिया कि मैं तो सिर्फ़ एक ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ करने वाला हूं किसी बनी हुए की तरफ़ नहीं। मेरे मस्अले को बनाने वाला ही हल करेगा, आख़िर ख़ुदा ने अपनी ज़ात से हुक्म देकर आग को बुझा दिया। पहाड़, दरिया या मुशहिद शक्लें है, इस पर मुसल्लत फ़रिश्ते ग़ैर मुशहिद शक्लें हैं, इब्राहीम अलै० ने दोनों क़िस्म के फ़रिश्तों से बराबरी कर ली। ख़ुदा ने आग को आग रखते हुए बाग़ की सबब पैदा कर दी थी। لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ

दोनों का यक़ीन हो, कायनात से नहीं होता है अल्लाह से होता है अल्लाह से सीधा कायनात लेना कामियाबी का धोखा है। अल्लाह से बराहे मुहम्मद सल्ल० को लेना असल कामियाबी है, इसमें सबसे पहली बात यह है कि नमाज़ को हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर लाओ,

इसके लिए पांच बातें शर्त हैं, पहली बात यक़ीन है। अमेरीका व रूस इंडियन यूनियन में जो कुछ फैला हुआ है इसका यक़ीन ख़त्म होगा वही होगा जो हम ख़ुदा से हुज़ूर सल्ल० वाली नमाज़ के बाद मांग लेंगे, अमेरीका या रूस या हिन्द या बिलाद यूरोप जो चाहेंगे, वह न हो सकेगा। नीयत ख़ास हो बावजूद यह है कि हम कहेंगे वही होगा लेकिन इसके होने के लिए नमाज़ नहीं है। बल्कि सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए नमाज़ हो। जिस काम में हूं में तो उसी को राज़ी करूंगा, यह ग़ुलाम पना है, लेने के वास्ते करना तो ग़ुलाम पना नहीं, बल्कि चापलूसी और लालच है अगर किसी अमीर की ख़िदमत अमीर को राज़ी करने के लिए की तो अमीर उस फ़क़ीर को दोस्त बनाएगा इसकी ख़ूब इज़्ज़त करेगा। अपने साथ बिठाएगा और खिलाएगा और अगर अमीर की ख़िदमत कुछ लेने के वास्ते की तो इज़्ज़त होगी न कुछ इकराम मिलेगा। ला इलाह इल्लल्लाह से सारी नीयतों की भी नफ़ी है, तीसरी शर्त यह है कि किसी और का ध्यान न हो, सिर्फ़ ख़ुदा ही का ध्यान हो, पूरी नमाज़ में शुरू से आख़िर तक अल्लाह का ही ध्यान आएगा किसी और का न आएगा। अल्लाह का ध्यान आए या जिसके ध्यान में लाने का ख़ुदा ने हुक्म दिया हो, जैसे दोज़ख़ या जन्नत का ध्यान या क़ब्र हश्र, का ध्यान, इनका ध्यानी ख़ुदा के ध्यान के मुनाफ़ी नहीं है। अल्लाह से होगा मेरी तर्कीब व तर्तीब से न होगा और मेरी नमाज़ और दुआ पर ख़ुदा करेंगे, अगर वह इससे राज़ी हो गए। चौथी शर्त यह है कि नमाज़ इल्म पर पूरी उतरे, यहां बातिनी इल्म चाहिए ख़ारजी नहीं, ख़ारजी इल्म किताब के अन्दर का है, बातिनी सीने के अन्दर का है जैसे तवाफ़ करते हुए किताब में से पढ़ते हुए जा रहे हैं। यह ख़ारजी इल्म है एक इबादत वह है जिसमें ग़ैर को बातिन छोड़ना शर्त है ख़ारजा नहीं, एक इबादत वह है, जिसमें ग़ैर को बातिन ख़रजा छोड़ना पढ़ता है। इल्म हुज़ूर सल्ल० आया फिर अंदाज़ से बाहर आया, इसी वजह से जिब्रील ने आकर आपको तीन बार ख़ूब भींचा। इससे सीधा क़ुरआन के अन्दर

उतारा गया, किताब में लिखकर कुरआन न दे दिया, इक़रा के माइने यह हों कि किताब में से देखकर पढ़ो तो हुज़ूर सल्ल० ने इस लिहाज़ से पढ़ा नहीं है इक़रा का सबसे पहला हुक्म है इस हुक्म को 13 साल मक्का में पूरा किया, फिर सुलह हुदैबिया तक के छः साल मदीना के ज़्यादा गुज़रे, 19 साल तक इस इक़रा को पूरा करते रहे। लेकिन सुलह में रसुलुल्लाह का लफ़्ज़ न पढ़ना जानते थे। क़ियामत को आवाज़ ही यह लगेगी नबी उम्मी इस मक़ामे महमूद पर आ जाएं, पूछा जाएगा, उम्मी नबी तो बहुत नबी हैं कौन से नबी उम्मी ? नबी उम्मी हाशिम अबताही, इस पर हुज़ूर सल्ल० आएंगे जिब्रील के दबाने से सारा कुरआन हुज़ूर सल्ल० के अन्दर आ गया। अब लफ़्ज़ निकलते थे वह अन्दर की माया से निकलते थे। हज़रत आइशा रज़ि० से यज़ीद बिन बाबूनस ने पूछा कि अख़्लाक़ नबी सल्ल० के कैसे थे ? कहा तूने कुरआन नहीं पढ़ा? कुरआन ही हुज़ूर सल्ल० के अख़्लाक़ हैं।

कुरआन और ख़ुद को हुज़ूर सल्ल० ने बराबर कर लिया था अरे तमाम इबादतों को हम किताबें देखते हुए कर सकते हैं लेकिन नमाज़ में किसी किताब को नहीं पढ़ सकते हैं। वरना नमाज़ अहनाफ़ के यहां टूट जाएगी, दूसरों के यहां ग़ैर कुरआन पढ़ने से भी टूट जाएगी, अब इल्म मसाइल व फ़ज़ाइल का लो। इन पांचों बातों में नमाज़ लाने की मेहनत की तो इस मेहनत से ही दुआ कुबूल होने लगेगी, पहली दुआ होगी, اهدنا الصراط الخ ऐ खुदा मुझे नमाज़ के रास्ते से ही कामियाब कर दे, अंबिया की तरह मेरे मसाअल नमाज़ से हल कर दे, اهدنا के माइने हैं हमें पहुंचा दे, चूंकि नमाज़ से मसाइल का हल का रिवाज नहीं रहा है इस वजह से लोग कह देते हैं ख़ाली नमाज़ से किया होता है, वरना सारे क़बीलों व अहज़ाब चढ़ आए थे। यहूदी बाहर वालों से मिले हुए थे बद्र से भी ज़्यादा ख़ौफ़ था सर्दी ख़ूब कपड़ा नहीं, भूख ख़ूब खाना नहीं, खौफ़ अदाद ख़ूब, हाथियार नहीं, मुनाफ़िक़ इजाज़त

लेकर आते रहे, तो सौ के क़रीब हुज़ूर सल्ल० के साथ रह गए। रात को बाहर निकले और फ़रमाया कुछ होने वाला है जो ख़बर लाएगा वह मेरा साथी जन्नत में होगा, इस ज़बरदस्त ख़ुशख़बरी पर भी कोई न उठा। तो नाम लेना शुरू कर दिया, हुज़ैफ़ा रज़ि० का नाम लिया, तो हुज़ैफ़ा रज़ि० और नीचे हो गए, तबीयत आमादा ही न थी, खौफ़ था। इस वजह से हुज़ूर सल्ल० की माननी पड़ी, बद्र में बच्चों के अज़ाइम कुव्वत मुहर कि अबू जहल के मारने के थे, यहां बहादुर भी घबरा रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया उनमें घुस जा, कुछ मत करना, चले तो सारी सर्दी ख़त्म, सारा ख़ौफ़ ख़त्म जाकर देखा तो ज़बरदस्त हवा, खेमे उखाड़ने लगे, देंगे उलटने लगीं। अबू सुफ़ियान ने आवाज़ लगाई सब जमा हो जाएं, इसमें हुज़ैफ़ा रज़ि० भी जा पहुंचे, अबू सुफ़ियान ने कहा कि देखो कोई दुश्मन का आदमी तो है नहीं ? हुज़ैफ़ा रज़ि० ने दोनों तरफ़ वालों से खुद ही नाम पूछे और इस तरह से उनका नाम न पूछा गया। अल्लाह की शान, हवा दो धारी तलवार थी, सहाबा रज़ि० की तरफ़ खंकी के साथ नींद लाए और सहाबा रज़ि० के मुख़ालिफ़ों के तरफ़ जाकर सख़्त तेज़ बनकर मुसीबत ला रही है अल्लाह का हुक्म मान लेने से कुव्वत, कमज़ोर से कमज़ोर, कुव्वत से बदलता है। इस पर अबू सुफ़ियान ने कहा, मैंने तो अज़्म वापसी का कर लिया है, बनू कुरैज़ा ने साथ छोड़ दिया है, खाना ख़त्म हो रहा है मैं तो जा रहा हूं, बस जो रूआब इस अक्सीरियत का इस अक़लीयत के दिल में था अब इसके अक्स हो गया। वह हवा जो मुसलमानों को मीठी नींद सुलाए वही हवा यहां बहादुर तक के पांव उखेड़ रही है। हुज़ैफ़ा ने हुज़ूर सल्ल० के हुक्म की वजह से तीर निकालकर वापस कर दिया और दुश्मन को क़त्ल न किया, वापसी में 20 घोड़े सवार फ़रिश्ते मिले। वापसी में देखा तो हुज़ूर सल्ल० नमाज़ में थे बद्र में भी नमाज़ थी यहां भी नमाज़ है, वहां क़िताल है यहां नहीं नमाज़ हर जगह होगी, आगे क्या सूरत इख़्तियार करें उसे खुदा ही मुंकशीफ़ करेंगे, नमाज़

को पांच तरीक़ों से बनाने की मेहनत से दआ कुबूल होती है। अब सबसे पहले नूर ख़ुदा ही ख़ुदा से मांगो نور على نور والله يهدى لنوره من يشاء من لم يجعل الله له نورا فما له من نور نورهم يسعى بين ايديهم الخ इसी नूर से दुनिया में हर मुसीबत व हर हाजत में आमाल की तरफ़ चलता रहा। इसी नूर की रोशनी में क़ियामत के दिन चलेगा, जैसे कायनात की चीज़ें देखने के लिए ख़ुदा ने अब्दी रोशनी क़लब मुस्लिम को दी है। आरज़ी कायनात के लिए ख़ुदा ने आरज़ी रोशनी मुफ़्त में दे दी, बाहर गली में पानी हुकूमत ने मुफ़्त में लगा दिया लेकिन अपने घर में लेना चाहते हो तो कुछ देना होगा। ऐसे ही बाहर का नूर मुफ़्त लेकिन अन्दर का नूर मेहनत से मिलेगा, नूर मिलेगा तो किसी गवर्नर व सुलतान ज़माना की वजह से नमाज़ या किसी अमल में देर न करेगा। जल्दी शादी ख़त्म करो, मैं तालीम के हलक़े में जाऊं इस मेहनत से हम आमाल के रास्ते पर पड़ेंगे। फिर हम अपनी मख़्सूस लाइन हुकूमत, तिजारत, मज़दूरी, डाक्टरी के आमाल को हासिल कर सकेंगे। सबसे बड़ी इबादत नमाज़ है इसमें खलक़ से बलकियां निकलना है हज व सौम की जान नमाज़ ही है नमाज़ हिदायत का नूर लेने के लिए है जिससे आप आमाल पर पड़ेंगे और आप मुत्तक़ी बन जाओगे फिर सारे मस्अले दुआ से हल होंगे। इस मेहनत में जब आदमी लगे तो ख़लक़े ख़ुदा से लेने के बजाए इनको देने वाला है ख़ुदा बहुत–सो को लेना चाहते हो तो बहुत सो को देने लगो। अल्लाह से लेकर लाखों की ज़िंदगी बनाओ, तुम्हारी ज़िंदगी तो आख़िरत में जन्नत में बनेगी। यहां की इज़्ज़त–ज़िल्लत में है यहां की बड़ाई व बुलन्दी पस्ती और तवाज़ोह में है सब मुझसे अच्छे हैं मैं सबसे बुरा

हम बन जाएं तो अमेरीका, रूस हिन्द के यहूद व नसारा मुश्रीक़ों पर अज़ीज़ हो जाएंगे। अगर मुसलमान एक दूसरे पर बड़े बनने लग जाएंगे तो फ़िर्के बनेगे, जिससे उम्मत अज़ाब में आ जाएगी तेज़ गाड़ी

का मस्अला इसके हैंडल पर होता है इधर मुड़ा तो ठीक, उधर मुड़ा तो हलाकत, ऐसे ही इकराम व इख़्लास का मस्अला है। ख़ूब अच्छे से अच्छे अमल करके खुद ज़लील समझो, एक नफ़्स तेरी नीयत ही ख़राब है तो अमल कहां कुबूल हो। अमल करके इसकी हम ख़राबी निकालेंगे, तो खुदा माफ़ कर देंगे यही हाल इस उम्मत का है कि क़ियामत को सारी उम्मतें कहेंगी कोई नबी नहीं आया, पता नहीं कहां चले गए थे। और फ़रिश्तों ने ग़लत लिख दिया है खुदा कहेंगे, ऐ रसूलो ! बताओ वह कहेंगे हम तो गए थे। बातें पहुंचा दी थीं अल्लाह कहेगे गवाह कौन है ? रसूल कहेंगे उम्मत मुहम्मद यह हमारी गवाह है। ऐ उम्मते मुहम्मद यह तुम बोलो, यह उम्मत कहेगी, हां या रसूल सच्चे हैं क्या सबूत हैं तुम्हारे पास ? हमारे पास कुरआन है जिसकी हर बात सच्ची है ऐसे ही एक आदमी को बुलाकर अल्लाह पाक इसके छोटे गुनाह इसे बताएंगे वह इन सबको मानता चला जाएगा। खुदा कहेंगे अच्छा इनके बदले में यह जन्नत तो वह कहेगा इससे बड़े–बड़े भी गुनाह है अच्छा इनके बदले में भी जन्नत ले लो और एक आदमी और लाया जाएगा। वह अपने किसी गुनाह को न मानेगा तो खुदा इसकी ज़ुबान बंद करके सारे हिस्सों से बुलवाना शुरू कर देंगे जो इसके ख़िलाफ़ में बोलते जाएंगे। अगर हम अपनी ख़राबी खुद न निकालेंगे तो खुदा ऐब निकालने पर आ जाएंगे फिर हलाकत है। जन्नत मिलती है फ़ज़्ल से, अल्लाह का फ़ज़्ल अमल से मिलेगा, इंसान तो गंदा है, बंदगी की हदूद से गंदगी के फ़हम से आगे न निकले जो खुद को कलिमा नमाज़ पर डालते तो साथ के साथ सबके लिए खुद को ज़लील करे। इससे तरक़्क़ी मिलेगी। दूसरों की ख़राबियों की तावील कर ले, नफ़्स ख़ुद को मुत्तहम करे, उमर रज़ि० ने कहा इसको मार दो इसने मुस्लिम को मारा है, अबूबक्र रज़ि० ने कहा

अबूबक्र रज़ि० ने कहा, नहीं, इसने उसे मुस्लिम समझकर मारा नहीं है। बल्कि मालिक को काफ़िर समझकर मारा है। अलबत्ता इसे

काफ़िर समझने में ग़लती की है ऐसे ही इसकी बीवी ने इसको मुसलमान समझकर इससे इद्दत में शादी न की, बल्कि ग़ैर–मुस्लिम समझा और इसे बांदी माले–ग़नीमत शुमार करके इससे इद्दत में सोहबत कर ली। लिहाज़ा रहम होगा, दूसरों की ग़लती की तावील किए बग़ैर इज्तिमआ मुस्लिम नहीं हो सकता है और इज्तिमआ बग़ैर अदाद पर ग़लबा नहीं मिल सकता है, नफ़्स दूसरों से इज़्ज़त लेना चाहता है दूसरों की इज़्ज़त नहीं करना चाहता है इसी वजह से अगर किसी की ग़ीबत या तौहीन की थी। तो इसकी नमाज़ इसके पास चली गई। इसे पता न चला कितनी नमाज़ें मिली हैं वरना उन नमाज़ों से आख़िरत के साथ दुनिया में भी फ़ायदा उठा लेता। तज़ल्लुल व इकराम की मश्क़ करनी होगी। नमाज़ की मेहनत के साथ, शक्लों से निकलकर उन आमाल में ख़ुद लगे तो सालिहीन वाली मेहनत है और एक महज़ इलाक़ा या क़ौम में मेहनत है तो अंबिया वाली मेहनत है। सारे आलम में मेहनत है तो हुज़ूर सल्ल० वाली मेहनत है मूसा व हारून अलै० ने मेहनत की तो हर बनी इसराइल मेहनत करेगा। अगर कोई मुतवज्जोह करने वाला न रहेगो, तो मेहनत से फिसल जाएंगे, जैसे मूसा अलै० गए तो बछड़े में उलझ गए। किसी शहर में लोग सालिहीन उस वक़्त बनेगे, जबकि वहां नबियों वाली मेहनत, इसके लिए नबी ख़ुद फ़ाक़े कर लेंगे, दूसरों को खिला देंगे, साने का वक़्त बदल लेंगे, नबियों वाली मेहनत को ज़िंदा हुज़ूर सल्ल० वाली मेहनत करेगी, मेहनत करने वाले हर क़ौम हर ज़ुबान में तैयार किए जाएं। ज़ात पर मेहनत हर जगह है नबियों के यहां सिर्फ़ ख़ास इलाक़े में इस मेहनत को चलाना है। हुज़ूर सल्ल० की मेहनत में इन पहली दोनों मेहनतों के अलावा मज़ीद है आम फ़िज़ा बने कि अल्लाह से लेकर अल्लाह के बन्दों को देना है किसी की दावत कुबूल करें तो इसका दिल ख़ुश करने को, इसका दिल न खाने से ख़ुश हो तो मत खाओ। वहां मुक़्तदियों के रंग थे। जहां जा रहे हो वहां इमामों की दौड़ धूप है, अरे हुज़ूर सल्ल० की सवारी ऊंट

का मज़ाक़ मत उड़ाओ कि इससे मक्का से मदीना 25 दिन में पहुंचे थे। मज़ाक़ से बचो, कहीं ख़ुदा पकड़ न ले, हम ना–लायक़ों की वजह से ग़ालिब हो गए हैं इनकी ज़िंदगी की नक़ल से ख़ुदा हमें बचाए, इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० ने ख़ास मुंक़बत इनके लिए रखी है जिन लोगों को न पहुंचे। अगरचे वह सब कुछ करें, किसी ने आकर उमर रज़ि० से कहा कि जंग में फ़लां और ऐसे बहुत से मारे गए जिनको कोई नहीं जानता है उमर रज़ि० ने कहा कि उन्हें अल्लाह पाक तो ख़ूब जानते हैं तुम सारे काम अच्छे तौर से कर लो और लोग तुम्हें न जानते तो सलामती से रहोगे। अगर तुमने लोगों को अपने से तारूफ़ करा दिया तो उसमें हलाकत का ख़तरा ज़्यादा है। अमीर की मानते रहोगे, हराम में नहीं माननी है अपनी राए के ख़िलाफ़ अमीर की मानो। अमीर राय मांगे तो दे दो, अमीर के ख़िलाफ़ अमीर से बात कहनी हो तो सब से छुपकर कहो सबके सामने कहोगे तो इसका और तुम्हारा नफ़्स उभरेगा इज्तिमआ ख़त्म हो जाएगा। इज्तिमआ के साथ अदना अमल इस आला से अच्छा है जो इफ़तिराक़ के साथ हो, जहां इफ़तिराक़ होगा वहां ग़ीबत चलेगी, ग़ीबत सारी नेकियों को खा जाएगी। दूसरे की मान लो, अपने राय के पीछे न पड़ो, अगर तुम्हारी न मानी गई और कोई बात नुक़सान वाली आ जाए तो अरे तेरी मानते हैं तब भी उसे ख़ुदा ने ही करना था। यह चंद चीज़ें हैं जिनको ज़िंदा करने के लिए फिरना है हमने अपनी फिरने को सही कर लिया नमाज़ हर लिहाज़ से बन गई इख़्लास नीयत, ध्यान, यक़ीन के साथ मेहनत में लगे हों। किसी की मालदारी फ़क़ीरी का फ़ैसला न कर रहा हूं। उस वक़्त तुम्हारा हरमीन के हिसाब में है अगर तुम नफ़्स की पीछे न चले, माद्दे के इमामों को गधे कुत्ते की तरह ख़ाली महसूस किया। ख़ुद को आमाल मुहम्मद सल्ल० की वजह से मालदार जानो, फिर तुम्हारी दुआएं रंग लाएंगी। मदीना के चप्पे–चप्पे पर ख़ुदा की ज़ाहिर क़ुदरत हुई है अब मांगना यह है कि यहां से चल रहे हैं तो सारे सफ़र यहां की

निस्बत का लिहाज़ करने की तौफ़ीक़ मिले। शहर वाले, क़ौमों वाले, तन्यब, लिसानीयत से निकल गए थे। साद बिन मुआज़ रज़ि० को कंधे में ख़ंदक़ में तीर लगा, जिससे जान लेने वाला जख़्म हुआ, दुआ मांगी ऐ ख़ुदा ! क़ुरैश से लड़ाई बाक़ी है तो मुझे ज़िंदा रख इसके लिए और अगर इनसे लड़ाई बाक़ी नहीं है तो बनू क़ुरैज़ा के आख़िरी फ़ैसले तक ज़िंदा रख, एक दम ख़ून रूक गया। मस्जिद नुबूवी के सहन में इनके लिए हुज़ूर सल्ल० ने खेमा लगवा दिया। बनू क़ुरैज़ा का हुज़ूर सल्ल० ने मुहासरा किया, बनू क़ुरैज़ा ने कहा हमे वह फ़ैसला मंज़ूर है जो साद बिन मुआज़ रज़ि० करें। साद रज़ि० की क़ौम के बनू क़ुरैज़ा से बहुत अच्छे ताल्लुक़ात थे। फ़ैसला गाह की तरफ़ चलने लगे तो सारी क़ौम वाले आकर उन्हें नर्मी की तर्ग़ीब देने लगे कि अपने ही हैं जब फ़ैसला गाह के क़रीब पहुंचे तो कहा अब साद रज़ि० लाइमेन की मलामत की परवाह न करेगा। इस पर सबने समझ लिया कि साद रज़ि० कोई मुख़ालिफ़ फ़ैसला करेंगे, सारे यार दोस्त बनू क़ुरैज़ा वाले एक तरफ़, दूसरी तरफ़ हुज़ूर सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि०, क़ुरैज़ा की तरफ़ हाथ और मुंह करके कहा जो मैं कहूंगा वह मंज़ूर ? उन्होंने कहा, हां, फिर हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ हाथ किया, जो मेरा फ़ैसला होगा वह मंज़ूर ? फ़रमाया, हां, मेरा फ़ैसला है कि इनका हर बालिग़ मर्द क़त्ल हो, इनका हर बच्चा व औरत सहाबा रज़ि० में तक़सीम करके इस क़ौम का ही ख़त्म कर दिया जाए। अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ यानी अपने हलीफ़ के ख़िलाफ़ ही फ़ैसला कर दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया यही फ़ैसला ख़ुदा ने किया था। वापस आए, रात को ख़ून निकला तो साथ वाले तक गर्म ख़ून पहुंचा। उसने आकर हुज़ूर सल्ल० को बताया, हुज़ूर सल्ल० ने सीने से लगा लिया और ज़ख़्म का ख़ून हुज़ूर सल्ल० पर गिरने लगा। अबूबक्र व उमर रज़ि० सअी करते रहे। हुज़ूर सल्ल० ने न दिया, हुज़ूर सल्ल० के सीने पर ही इनका इंतिक़ाल हुआ, जिस पर उमर व अबूबक्र रज़ि० आवाज़ से रोए,

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दोनों की आवाज़ें सुनी, अलबत्ता हुज़ूर सल्ल० ने दाढ़ी पकड़कर गहरे रंज का अज़्हार किया। सुबह को हुज़ूर सल्ल० ने जाकर खुद क़ब्र खुदवाई, हर फावड़े की चोट पर क़ब्र से ख़ुशबू उठती, फ़रमाते कि मर्द मोमिन की क़ब्र की ख़ुशबू कितनी अच्छी है आप सल्ल० जल्दी भी कर रहे थे कि कहीं फ़रिश्ते उन्हें हंज़ला रज़ि० की तरह नहलाकर नहलाने के अज्र से महरूम न कर दें यह एज़ाज़ मिला।

इस तरह से आपस में मुहब्बत आएगी, जो अपनों के ख़िलाफ़ क़दम उठाएगा वही एज़ाज़ पाएगा। असल मुहब्बत अल्लाह तआला और हुज़ूर सल्ल० से हो, इनसे जिसका ताल्लुक़ हो इससे भी मुहब्बत करो, अहले बैत रज़ि०, सहाबा रज़ि० उम्मत खुद ना–क़ाबिल इस्लाम इकराम मसरूफ़ ख़ादिम समझो, ऐश में तुमने फ़क़र मुहम्मदी सल्ल० को याद रखा और सही मेहनत की तो हो सकता है कि यहां से फ्रांस व अफ़गानिस्तान जाना वहां को ही बदल दे।

---

1. बा–ज़ाहिर का तबसे नाम सहू हुआ, तफ़्सीली वाक़िआ इस तरह है, अब्दुल्लाह बिन अबी सर्राह यह पहले वही के लिखने वाले थे। मुर्तद होकर काफ़िर से जा मिले, उस्मान गनी रज़ि० के रिज़ाइ भाई फ़त्ह मक्का के दिन जान बचाने के ख़ातिर छिप गए (क्योंकि यह इनमें से थे जिनको माफ़ी नहीं दी गई थी) हज़रत उस्मान रज़ि० को लेकर ख़िदमत अक़्दस में हाज़िर हुए हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त लोगों से बैअत ले रहे थे अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह अब्दुल्लाह हाज़िर है इससे भी बैअल ले लि जिए, आप सल्ल० ने कुछ देर सकुत फ़रमाया। बिला आख़िर हज़रत उस्मान ने कई बार आपसे दरख़्वास्त की तो आप ने इब्ने अबी सर्राह से बैअत ले ली और इस्लाम कुबूल फ़रमाया। इस तरह जान बख़्शी हुई बाद में सहाबा रज़ि० से (हुज़ूर सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुममे कोई समझदार न था कि जब मैंने अब्दुल्लाह की बैअत से हाथ रोक लिया था उठकर उसे क़त्ल कर डालता, किसी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह उस वक़्त कोई इशारा क्यों न फ़रमाया। आपने फ़रमाया नबी के लिए इशारे बाज़ी ज़ैबा नहीं (बाद में यह अपने सच्चाई पर क़ायम रहे)

उमूमी बयान न० 2

अल्लाह की राह में जाने वालों के लिए हिदायत

सनीचर नश्ते के बाद, हरम मदनी सल्ल०, 16 मई, 1962 ई०

शुरू से न लिखा जा सका

दूसरा रास्ता अंबिया वाला आमाल का है कि उन आमाल से ऐश व राहत महबूबियत तसख़री ख़लक़ जो चाहते हो उन्हें हासिल करो। मुहम्मद सल्ल० वाले तो हमें कामियाबी की हक़ीक़त दिलाना चाहते हैं मुहम्मद सल्ल० हर हर एतबार से इज़्ज़त, इत्मिनान, ग़नी के हक़ाइक़ लाए हैं। यूं न हो कि बज़ाहिर अच्छे अमन में मालूम हो, लेकिन बड़ी–बड़ी हुकूमतों वालों के पास इत्मिनान, अमन व कामियाबी वाला नज़र आए। हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में एक भी ना–काम नज़र न आएगा, आज मस्जिद में ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं एक भी कामियाब नहीं है, कामियाबी ख़ुदा के हाथ में है और वह चीज़ों पर हरगिज़ कामियाबी न देंगे बल्कि आमाल पर देंगे, ख़ुदा के यहां हवाई जहाज़ और गधे बराबर है। अल्लाह के ज़ाब्ते गधे वाले और जहाज़ वाले दोनों पर चलेंगे, ईसा अलै० व मुहम्मद सल्ल० तो गधे पर सवार होकर इज़्ज़त वाले आज वाले लाखों के जहाज़ में ज़लील। अमेरीका व रूस के वज़ीरों के लिए हज़ारों जगह लानत के वोट पास होते हैं और आज किसी की हिम्मत नहीं है कि ईसा अलै० और हुज़ूर सल्ल० के बारे में एक लफ़्ज़ भी कह सके बुराई का। गाली देने के बाद गोली मार देने

का नम्बर आ जाता है, यह इज़्ज़त का धोखा है, इज़्ज़त अंबिया अलैहिस्सलाम की है जो चीज़ों के एतबार से बहुत पस्त थे ख़ुदा ने क़ामियाबी की शर्तें लगा दीं हैं जो बादशाह, कमांडर, चीफ़, करोड़पती व फ़क़ीर सबके लिए बराबर हैं। जैसे सबको पहले मर्द की पेशाब गाह, फिर औरत की पेशाब गाह में से निकला और सब और सब ही ज़मीन के नीचे जाकर कीड़े व बदबूओं में होंगे। ऐसे ही ख़लक़ व मौत के दर्मियान के ज़ाब्ते भी बराबर हैं वह है यक़ीन व अमल, सुलतानों, सदर, जायदादों वाले, गधे वाले सब बराबर हैं, ख़ुदा के यहां शक्ल का एतबार नहीं है, बल्कि शक्ले के अंदर के आदमी का एतबार है शिर्क है या ईमान, इसमें ज़ुल्म है या इंसाफ़, पाक दामनी है या ज़ीना, ग़ज़ब व हिर्स है या क़नाअत व ज़ाहिद, चीज़ों से कामियाबी का रास्ता सूरज की रोशनी से मिलता है अगर आग सारी बुझ जाए, बिजली व लैम्प फ़ैल हो जाए, सूरज की रोशनी ग़ज़ब हो जाए तो फिर एक चीज़ भी उस अंधेरे में नज़र न आएगी, रोशनी आती है तो चीज़ें और इनका नफ़ा और नुक़्सान नज़र आता है और न चीज़ें देख सकेंगे और इनके नफ़े नुक़्सान, रात का अंधेरा है, बीवी कोरमा पकाकर ले आई ख़बर न हुई। ख़ाविंद आकर करवटें बदल–बदलकर बीवी के इंतिज़ार में गुज़ार दी, अंधेरे में ज़हर व तरयाक़, दोस्त व दुश्मन, सीढ़ी, गड़ा नज़र नहीं आता है ऐसे ही अंधेरा और रोशनी इंसान के अन्दर भी है जिससे वह आमाल नज़र आते हैं, ज़मीन व आसमान की मशीन से चीज़ें निकलती हैं और इंसान की मशीन आमाल बनाने वाली असल है। सारी कायनात इसके ताबेअ है, नबी ने आकर अमल की क़ीमत ही बतलाई है, फ़्लां बुरे अमल से भूचाल आएंगे। फ़्ला अमल से रहमत उतरेंगी, फ़्लां अमल से कुफ़्फ़ार तुम पर ग़ालिब आएंगे, फ़्लां अमल से हिफ़ाज़त होगी, इंसान की मशीन से आमाल निकले हैं। (मियां जी महराब ख़ान साहब ने फ़रमाया कि अरबों को तर्जुमा करके सुनाओ)।

उमूमी बयान न० 3

हमारे हां हर एक खुद को ज़्यादा तर्जुबेकार समझने लगे तो फिर इसी मर्ज़ से हम घर गए जिसका इलाज लेकर उठे थे

इतवार, फ़जर के बाद, 17, मई, 1962 ई०

अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात के ला महदूद व ख़ज़ानों से फ़ायदा हासिल करने के लिए अहकामात दिए हैं वह बहुत हैं हर–हर मशग़ले में, घरेलू ज़िंदगी, सुलह व जंग हुकूमत चलाने के अहकाम अता फ़रमाए हैं और मुस्तक़ील अहकाम भी हैं इबादात व अख़्लाक़ के, ग़रज़ अहकाम बहुत सारे हैं, हर हुक्म के साथ इत्तिबा रसूल का हुक्म लगा दिया है। कुरआन के जिस हुक्म पर चलना चाहो तो उसको नबी के तरीक़े पर पूरा करो। اتبعوا النبی الامی

فاتبعونی یحببکم اللہ हुक्म खुदा ने सीधा अपनी ज़ात से भेजा इस हुक्म का तरीक़ा खुदा ने हुज़ूर सल्ल० से ज़ाहिर कराया। हुज़ूर सल्ल० ने हर हुक्म को ऐसे अच्छे पैमाने पर अदा किया है कि सैकड़ों साल अल्लाह वाले हुक्म को नबी के तरीक़े पर करता है तो भी आख़िरी हद तक नहीं पहुंच सकता है अगर अल्लाह वाले हुक्म को अपने तरीक़े से पूरा करे तो उसे कुछ भी न मिलेगा हुक्म को हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर लाने में हाथ पांव ज़्यादा मारने और जान पर ज़्यादा झेलनी पड़ती है। कुरआन अहकाम से, हदीसें उन अहकाम के तरीक़े से भरी हुई हैं, मुफ़रदात फिर इनकी

तर्कीब, कुरआन में तो अहकाम मुफ़रदात है। हदीस में इसकी सारी तर्तीब है, कुरआन में सिर्फ़ वुज़ू का हुक्म है अब वुज़ू से पहले क्या पढ़े और बाद में क्या पढ़े कौन सा हिस्सा कहां तक धोये ? वग़ैरह, वग़ैरह, अल्लाह ने जो हुक्म दिया है वह इजमाली हुक्म होगा इस हुक्म की तामील का तरीक़ा व तर्तीब हुज़ूर सल्ल० तफ़सील से बताएंगे इस तरह वुज़ू करके मुंह क़िब्ले की तरफ़ करो। इसी तरह रफ़ा देन के साथ ज़िक्र हो, रुकूअ, सज्दा, क़ायदा, क़ियाम हर हालत का ज़िक्र अलग–अलग हो, पहली रक्अत में फ़लां सूरत, तो दूसरी में फ़लां सूरत वग़ैरह, ख़ुदा के हुक्म हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े के बग़ैर पूरा ही नहीं हो सकता है अहकाम को पूरा करना हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर ही अपना काम बनाया जाए। चीज़ों को इनके हसूल को नफ़्सानी ख़्वाहिशों को अपना काम न बनाओ, हमारा काम तन्दुरुस्त होना नहीं है बल्कि तंन्दुरुस्त होने के लिए दवा हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े को इख़्तियार करना हमारे ज़िम्मे है जो ख़्वाहिशें और नफ़्सानी तक़ाज़ों के पूरा करने को काम बना देगा वह अहकामात के रास्ते में फ़ेल हो जाएगा। अल्लाह का हुक्म पूरा ही उस वक़्त हो सकता है जबकि वह हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर हो, एक बार हुक्म पूरा कर दिया, दोबारा फिर हुक्म आएगा कि अब बार से ज़्यादा अच्छा करके पढ़ो। नमाज़ के लिए तालीम से फ़ज़ाइल और हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े मालूम करो, जिससे अपनी नमाज़ की कोताही मालूम होगी। इस रास्ते में आमदी फ़िक्र ही उस वक़्त करता है जबकि इसका मक़्सद सिर्फ़ तामील अहकाम हो, किसी हुक्म की हदें हम तै न करेंगे। बल्कि हुज़ूर सल्ल० तै फ़रमा गए हैं अल्लाह ने खाने और पीने का हुक्म दिया हमने अपनी तबीयत से खा–पी लिया तो यह इम्तिसाल अमर नहीं है बलिक हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर खाने–पीने को लाना मतलूब है, निकाह का हुक्म है। अगर निकाह हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर होगा तब माना जाएगा कि यह हुक्म पूरा हो गया। इसी वजह से शुरू

इस्लाम में तामील अहकाम में नुक़्सानात बरदाश्त करवाएगा। शैतान हर जगह हुक्म खुदा के इम्तिसाल में बहुत बड़ा नुक़्सान दिखाएगा, अगर नुक़्सान हमारे सामने नहीं ला रहा है तो इस वजह से यह हुक्म हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर हो ही नहीं रहा है और हुक्म मकबूल इन्दल्लाह ही नहीं है अगर नमाज़ में वक़्त ऐसा लगाए जिससे बाहर के कामों पर ज़ोर पड़े तो शैतान फिर रोकेगा। जो हुकम को हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर पूरे न करेगा उसे तो ख़ुदा ख़ुद ही रद्द कर देगा। अबूबक्र रज़ि ने कहा मैं उससे भी क़ताल करूंगा जो हस्बे साबिक़ जानवर के साथ रस्सी न दे सिर्फ़ जानवर ही दे, यानी रस्सी बराबर फ़र्क़ पर भी क़ताल का तैयार थे। शैतान हुक्म को पूरा करने में नुक़्सान उस वक़्त दिखाएगा, जबकि वह कुबूलियत के रूख़ पर हो और अगर कुबूलियत का रूख़ न हो तो फिर वह उन अहकाम से हटाने के लिए पीछे न पड़ेगा। आदम अलै० से भी शैतान ने यही कहा था कि हुक्म मानकर दाना न खाया तो पहाड़ ऐश व राहत और मौजूदा नक़्शे ज़िंदगी हाथ से जाता रहेगा। मक्की व मदनी ज़िंदगी में हुक्म ख़ुदा के लिए नुक़्सान बरदाश्त कर लेने का मिज़ाज बन जाए, हुक्म ख़ुदा की तामील को अपना असली मक़्सद बनाकर इसके लिए हर तक्लीफ़ व हर मुसीबत को बरदाश्त कर लेने का हौसला करें, ख़ुदा तो हमें ख़रीद चुके हैं इस वजह से पहले दाख़िला इस्लाम से बैअत से हुआ करता है इस्माल को ख़ुद पर बीच देना था। माल जान अगर चला जाए तो क्या फ़र्क़ ख़ुदा ने ख़रीदा ही इसलिए था कि जब चाहेंगे उसे कुरबान कराएंगे। हमने भैंसे ख़रीदी है हम जब़ तक कहीं इससे दूध निकालो जब कहीं इसे ज़िब्ह कर दो, चूं मत करो, हुक्म की तामील में नुक़्सान जितना बरदाश्त कर लेंगे, उतना ही कामियाबी वाला दर्जा मिलेगा। ऊंचा, सबसे ऊपर का दर्जा है कि आप सल्ल० की जन्नत में हैं यह ख़ुशख़बरी हुज़ूर सल्ल० ने मुहब्बत वालों को दी है المرء مع احب यहां कमाल मुहब्बत मुराद है इसका शान नज़ूल यह है कि सहाबी

रज़ि० ने आकर कहा रात से फ़िक्रमंद हूं। आपसे मुहब्बत बहुत है अगर रात को आपका किसी वक़्त ख़्याल आ जाता है तो जब तक आकर आपकी आवाज़ न सुन लूं या आप सल्ल० के तसव्वुर से आपका मकान न देख लूं, या दिल में ख़्याल आ आते ही आप सल्ल० का। आप सल्ल० के मकान की ज़ियारत न कर लूं उस वक़्त तक मैं किसी और काम में नहीं लग सकता हूं, रात मैंने सोचा कि आप सल्ल० सबसी बड़ी जन्नत में होंगे और हम उससे छोटी में होंगे। लेकिन अपनी जन्नत व नेमतों में आपके बग़ैर गुज़ारेगी कैसे ? हम तो दुनिया की मशाइल व नेमतों तक में भी हुज़ूर सल्ल० को याद नहीं करते हैं इसके जवाब में फ़रमाया المرء مع من احب यानी वहां जब चाहोगे ज़ियारत कर लोगे। सहाबा किराम रज़ि० को जितनी ख़ुशी इस्लाम लाने की हुई इसके के बाद सबसे ज़्यादा ख़ुशी इस जुमले से हुई, हर सहाबी इस गुज़रे हुए सहाबी के तरह हुज़ूर सल्ल० से मुहब्बत करता था इस ज़माने में नुक़्सानों को आदी बनाया गया और मुहब्बत वालों को सबसे ऊंचा कहा गया। देखो अल्लाह और रसूल सल्ल० की मुहब्बत ख़ुदा से ज़्यादा मांगो। एक सहाबी ने चेहरे की ज़र्दी देखो, फ़ाक़ा हुज़ूर सल्ल० का महसूस किया, फ़ौरन जाकर कोई कमाई का काम किया पैसे खजूरें लाकर दीं और हुज़ूर सल्ल० ने पूछा तो सारी बात सुना दी फ़रमाया तू मुझसे मुहब्बत करता है ? अर्ज़ किया मुसीबतों के लिए तैयार हो जाए क्योंकि जब मुहब्बत पैदा हो जाएगी तो मुहब्बत में यह ताक़त है कि जो कुछ महबूब के अन्दर होता है उसे महब्ब की तरफ़ खींच लेती है। हज़रत जी रह० ने कहा था कि महबूब सफ़ेद हो तो इश्क़ काला महब्ब का रंग भी गोरा कर देता है अब हुज़ूर सल्ल० तो दाइमुल अहज़ान भूख और प्यास की तक्लीफ़ें उठाने वाले थे जिसमानी राहत व आराम से ख़ाली और तक्लीफ़ों से भरी ज़िंदगी है, यह और बात है कि आपको भूख और नमाज़ ही में मज़ा आ जाता था एक बार फ़रमाया बावजूद पैर के दर्द के इतनी नमाज़

पढ़ी पैरों से ऊपर वरम आ गया था। बीसयों मर्तबा तीन दिन के फ़ाक़े आए किसी ने कहा कि तुम वह पकाकर खिलाओ, जो सबसे अच्छा खाना हुज़ूर सल्ल० ने खाया हो तुम्हारे घर। उन्होंने कहा, बेटे तुम जाओ तुम मज़ीद खाने खाते हो, हुज़ूर सल्ल० का खाना क्या खाओगे वह साहब न माने तो वह उन्हें, जों पर से फूंक मारकर जो उड़ा उसे उड़ा दिया फिर इसकी रोटी पकाई, ज़ैतून का तेल लगाकर ऊपर काली मिर्च छिड़क दी। इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० ने अपने मुहब्बत करने वाले को मुसीबतों पर तैयार किया क्योंकि हुज़ूर सल्ल० की सारी ज़िंदगी तक्लीफ़ों से भरी हुई है और इश्क़ यह सब मुहब्ब में खींचकर लाएगा। आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में चिराग़ तक न जलता था, अगर तेल आता तो उसे पीने में इस्तेमाल कर लेते दुनिया से मुहब्बत करने से दुनिया के मज़े आएंगे। हुज़ूर सल्ल० से मुहब्बत करने वाले से हुज़ूर सल्ल० की तरह से दुनिया भागेगी, तो आमदी ऊंचे मक़ाम पर तक्लीफ़ों से गुज़र कर ही जा सकता है, अहकाम वाली उमूमी ज़िंदगी में तक्लीफ़ें ज़रूर होंगी। इसी वजह से मक्की व मदनी ज़िंदगी में खुब नुक़्सान बरदाश्त करवाए गए इसके बाद शैतान कुछ भी न कर सकेगा सहाबा रज़ि० तो इस चीज़ को ही खत्म कर दिया करते थे जिसकी वजह से हुक्म में ज़रा फ़र्क़ आ जाता था अब दो क़िस्से है एक दौर नुबूवी का दूसरा उस्मान दौर का। एक में यह है कि अंगूर के ख़ोशे पर परिन्दे के बैठने का अंदाज़ दिलकश था इसी में मह्‌व हो गए दूसरे क़िस्से में यह है कि परिन्दा अन्दर घुस आया लेकिन बाहर निकलने के लिए रास्ता नहीं पाता था उसे देखने में लगे तो रक्अत भूल गई कि कौन सी है, ज़ाहिर है कि सहाबा बाग़ में नफ़्ल ही पढ़ सकते थे बस नफ़्ल नमाज़ के खुशूअ व खुज़ूअ के के लिहाज़ भरके लिए ज़ाइल हो जाने पर पचास हज़ार का वह बाग़ सदक़ा कर दिया। जितना बड़ा हुक्म होगा उसकी तफ़्सील उतनी ही ज़्यादा होगी, तिलावत, ज़िक्र, दरूद, इस्तिग़फ़ार के अलग—अलग

पढ़ने का हुक्म है तो हर एक के लिए अलग-अलग अदाब होंगे उन सबको नमाज़ में जुड़ने का हुक्म दिया गया। तो उन सबके उसूल और आदाब के अलावा मज़ीद आदाब दिए गए, इसके अलावा आपस में जुड़कर चलने का हुक्म दिया गया, हर घर का बड़ा या तो ख़ाविंद है या बड़ा भाई, या बड़ी बहन, दस घर इकट्ठे हो तो उनमें भी अमीर मामूर का सिलसिला चलेगा तालीम लेने में बहुत सी बातें हैं। हुज़ूर सल्ल० का फ़रमान है انا لكم بمنزلة الوالد اعلمكم अब हुज़ूर सल्ल० की बात जिन-जिन वास्तों से पहुंचेगी उस सबको बात की तरह समझ, बाप को मत घूर, खाना बाप के साथ खा रहा है तो बर्तन के गोश्त को मत खा। मुम्किन है बाप ने उस बोटी को खाने का इरादा कर लिया हो, जब वह फ़ारिग़ हो जाए तब बाक़ी हिस्से को खा लेना। बग़ैर मुन्डेर की छत पर सवार न हो वरना बाप तेरे लिए फ़िक्रंद रहेगा। यह आदाब हैं बाप के अब जिनसे हम सीखेंगे उनके साथ बाप जैसा मामला करना होगा और जो सीखें उनके साथ बेटों की तरह शफ़क़त वाला मामला करेंगे, इल्म लेने-देने के बहुत से उसूल हैं, न गद्दे फैलाओ, न तकिया लगाओ। दावत के मुस्तक़ील उसूल हैं अब अगर किसी अमल में दावत तालीम, इमारत, मामूरियत, ज़िक्र, नमाज़, मालियत के ख़र्च वग़ैरह सबको जोड़ दिया गया तो फिर यह सबके आदाब औसाफ़, मुसाफ़ा हो जाएंगे। जैसे हम मस्जिद में पैसा लगाकर भी मस्जिद की इज़्ज़त करते हैं क्योंकि उस मस्जिद के ज़रिए नमाज़ के हुक्म तामील हुई है अब मुस्लिम की इज़्ज़त मस्जिद से ज़्यादा क्यों न हो जब कि इसके ज़रिए में बहुत से अहकाम पूरा करता हूं। इब्ने उमर रज़ि० ने बैतुल्लाह की तरफ़ इशारा किया कि मैं जानता हूं कि तू इज़्ज़त वाला घर है लेकिन कलिमा पढ़ने वाला मोमिन तुझसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला है तेरी सिर्फ़ ज़ात की हुर्मत है यहां मुस्लिम की ज़ात और माल दोनों की हुर्मत है, तब्लीग़ में तो बहुत सारे आमाल जमा है और उनके उसूल व आदाब बे-शुमार हैं, इनको सीखने का

शौक उस वक़्त होगा जबकि अहकाम ख़ुदा के पूरा करने का जोश हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है कि चलने से पहले घर में चार रक्अत पढ़ लो तो यह चार रक्अत उसकी तरफ़ से नाइब होगी वह सारे काम जो उसके घर रहने से हो जाते हैं वे उन चार रक्अतों से हो जाएंगे। इन सफ़र के उसूल है मिसाल के तौर पर यह कि जहां ठहरें जुड़कर ठहरें, एक बार सहाबा रज़ि० बिखरकर ठहरे तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया यह तफ़रूक़ तुम्हारा शैतान की तरफ़ से है हम तो मुसलमान को दूर करेंगे कि गर्मी हो रही है चाहे बीवी और बच्चे को उससे ज़्यादा क़रीब जगह में बिठा लें। तब्बी ताल्लुक़ात ग़ालिब हैं, हुज़ूर सल्ल० की निस्बत वाले ताल्लुक़ात नहीं हुज़ूर सल्ल० से मुहब्बत है तो हुज़ूर सल्ल० के ख़ानदान, हुज़ूर सल्ल० की उम्मत से मुहब्बत हो, मस्जिद नुबूवी से हम इतनी मुहब्बत करते हैं। चाहे वह यूरोप के उस सामान से तैयार शुदा है जिसको हुज़ूर सल्ल० ने कूड़ा कबाड़ बतारक अपनी मस्जिद में घुसने न दिया, मस्जिद नुबूवी के पत्थर उहूद से मर्द और औरत दोनों ने ड़ोए थे। अब यह मस्जिद पक्की बन गई, उन कालीनों से भर गई है जिसको हुज़ूर सल्ल० पसंद न फ़रमाते थे लेकिन मस्जिद नुबूवी के अंदर के कालीनों साज़ो–सामान को मस्जिद की वजह से महबूब व मुहतरम क़रार दें गए। लेकिन हुज़ूर सल्ल० ना–पसन्दीदगी की वजह से ऐसे कालीन व साज़ो–सामान को अपने घर के लिए इस्तेमाल न कर सकेंगे अगर उस मस्जिद के साज़ो–सामान को नफ़रत से देखा तो मुहब्बत के बाब में गिर गए और अगर उस मस्जिद जैसे साज़ो–सामान को अपने घर में ले जाना चाहा तो इताअत में रह गए मजनूं असली इब्ने उमर रज़ि० व हसन रज़ि०, हुसैन रज़ि० का आदमी है, अल बदाया व निहाया की नवी जल्द के आख़िरी पेज पर इसका तज़्किरा है इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, अरे यह क्या सुनने में आ रहा है ? कहा मुहब्बत इख़्तियार में नहीं है अलबत्ता शरीअत के किसी हुक्म को नहीं तोड़ा है। दीनदार

आदमी थे, एक और मजनूं कुत्ते की आंखों को बूसा देने लगा उससे उस आंख में लेला की आंख का रंग का मंज़र महसूस हो रहा है जितना लेला के क़रीब और कुत्ते की आंखों में है उससे ज़्यादा कुर्ब हुज़ूर सल्ल० और उनके हर उम्मती में है दोनों का कलिमा व नमाज़ एक है, बस ज़ाती ताल्लुक़ात ख़त्म करो। हुज़ूर सल्ल० ने हमें अपने वतन व क़ौम वालों से लड़वाया, भाइयों ने भाइयों को क़त्ल किया, अपने रिश्तेदारों को ख़ुद ही मारा। यहूद व नसारा को मदीना से मदीने वालों से निकाला गया, लेकिन इससे हुज़ूर सल्ल० वाली निस्बत ताल्लुक़ बाक़ी रह गई थी, सबसे पहला बिगाड़ मुसलमान के साथ के मामला के हालात का बिगड़ जाना है जिसके नतीजे में सारे दीन के अहकाम में बिगाड़ आया। ज़िंदगी हुज़ूर सल्ल० वाली हमसे जाती रही तो मुसीबतें आ गई। लोग समझते हैं कि ख़ूब नमाज़ व ज़िक्र होगा तब तब्लीग़ होगी, लेकिन असल बात यह है कि मुसलमान का हद से ज़्यादा इकराम किया जाए, नफ़रत से मुसलमान को देखा, उसकी ग़ीबत की तो तुम्हारे सारे आमाल उस मुस्लिम को मिल गए माल की तक़्सीम व मुल्क हासिल करने से दिल न जुड़ेंगे माल देकर तो हैं भी दी तो उससे दिल न जुड़ेगा। हुज़ूर सल्ल० वाले उसूल ज़िंदगी से दिल जुड़ते हैं, वह उसूल पैदा न होंगे तो सारा माल लगाकर जोड़ हासिल न कर सकेंगे, तुम देख लो सफ़ीर आपस में मुलाक़ात करते हैं वफ़ूद आते जाते हैं इसके लिए करोड़ों ख़र्च कर दिए गए लेकिन फिर दो मुल्क आपस में जुड़कर नहीं देते हैं لو انفقت مافی الارض جمیعاالخ अल्लाह ने दिलों को जोड़ दिया जब तुमने अल्लाह वाले उसूलों को इख़्तियार कर लिया, तुम पांच हज़ार के ख़र्च से शानदार दावत खिला दो, पीठ पीछे ग़ीबत इसकी कर दो, उसके मुंह पर उसे गाली दे दो, इसका दो रूपया वाला रूमाल रख लो तो कभी भी इसका दिल तुमसे जुड़ न सकेगा। और अगर पांच रूपये की दावत सीधी-साधी कर दो, इसका ख़ुब इस्तक़बाल दिल से करो,

मेरी वजह से आपको अपने काम छोड़ने पड़े, टूटे हुए बर्तन में बोरिया पर बिठाकर तुमने खा लिया, मुहब्बत इससे करते रहे इसकी पीठ पीछे तारीफ़ करते रहे तो इससे दिल जुड़ जाएंगे। हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़ो से दिल जुड़ेंगे सब मिलेंगे तो बातिल पर मुसलमान ग़ालिब आ जाएंगे, मुल्क व माल की लाइनों की किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। मुसलमान के साथ ज़िंदगी हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर गुज़ारने की ज़रूरत है अगर सारे आमाल हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े पर हो, लेकिन हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर मामला न हो तो आख़िरत में जितना मिल जाए दुनिया बनकर न रहेगी। दौर उस्मानी में बहुत से सहाबा किराम रज़ि० नमाज़, ज़िक्र, तिलावत, में ज़ाती आमाल में कामिल थे, इनमें साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० मुस्तजाबुल दावात भी थे तीर बहदफ़ इनकी दुआ थी। यह आमिल थे इनके हालात मालूम करने के लिए इस वफ़्द इनके इलाक़े में गया किसी ने कोई शिकायत न की सिर्फ़ एक ने कहा माल की तक़्सीम और नमाज़ में हम उसे अच्छा नहीं समझते हैं हालांकि यह इलज़ामात ग़लत थे। साद रज़ि० ने बद–दुआ की एक ख़ुदा उमर लम्बी कर मुख़ालिफ़ की, फ़क्र दे दे फ़ित्ने डाल दे, बीमारी में भी डाल दे चुनांचे ऐसा ही हुआ, मुख़ालिफ़ बूढ़े हो गए, दांत गिर गए बाज़ारों में फिरते–फिरते औरतों को छेड़ा करते थे ऐसे ही इनकी बद–दुआ से सब डरते थे, आज की मस्जिद नुबूवी में अशरा मुबाशरा के मकानात आ गए हैं साद रज़ि० के मकान से साद रज़ि० की लड़की की हवा से पिंडुली खुल गई। उमर रज़ि० ने एक कोड़ा मार दिया, साद रज़ि० को बुरा लगा, बद–दुआ को हाथ उठाए, उमर रज़ि० ने फ़ौरन कोड़ा उन्हें देकर कहा तुम बदला ले लो, बद–दुआ मत करो। ऐसे ही एक आदमी मज्मे के सामने मौजूद हुकूमत की ताइद में अली रज़ि०, ज़ुबैर रज़ि०, तलहा रज़ि० को बुरा–भला कह रहा था। साद रज़ि० ने कई बार मना किया, न माना जाओ वरना बद–दुआ करूंगा। उसने कहा कर दो बद–दुआ

तुम्हारी दुआ नबी जैसी है क्या ? बस गुस्से में जाकर वुज़ू करके नमाज़ के बाद दुआ मांगी अगर ये सब तेरे यहां हक़ पर है तो इसको इबरत वाली सज़ा दे। बस मदीने के गलियों में से एक ऊंट आया, सारे मज्मे को चीरता हुआ उसको सर से पकड़ लिया और ज़मीन पर धोबी के कपड़े की तरह पटक–पटककर टुकड़े कर दिए। ऐसे मुस्तजाबुल दावात इंसानों की मौजूदगी में जमल व सिफ़्फ़ीन लाख भर से ज़्यादा सहाबा किराम व ताबईन शहीद हो गए। बस मुसलमान के चोर के हाथ कांटने पर रोया जाता था आज उसी उम्मत के आल तरीन इंसानों के क़त्ल पर कोई रोने वाला न था। ज़ुबैर बिन अव्वाम, तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे शहीद हो रहे है सिर्फ़ जानने वालों ने ही ग़म किया। अली रज़ि० ने कहा काश बीस साल पहले ही मर जाता और तलहा की लाश न देखता। हसन ने कहा मैं पहले ही कहता था कि मदीना से पहले बाहर न निकलो, ज़ुबैर के क़त्ल करने वाले को अली रज़ि० ने देखना न चाहा। अगरचें ज़ुबैर रज़ि० मद मुक़ाबिल थे। इनका क़ातिल अपना साथी था क्योंकि हुज़ूर सल्ल० का क़ौल ज़ुबैर का क़ातिल जहन्नम में जाएगा, सबसे बड़ी बीमारी जो हमारे तहज्जुद व मुजाहेदे से भी नहीं निकली है वह मुसलमान के साथ हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर ज़िंदगी न गुज़ारना है ज़िक्र, इल्म, दावत नमाज़ की इस्लाह की फ़िक्र कर लेंगे। इसी तरीक़े के न रहने की वजह से मुसलमान दौर उस्मानी से उस वक़्त तक जुड़ न सका, इसी तरीक़े के न रहने की वजह से उस्मान रज़ि० क़त्ल हुए। उस्मान रज़ि० खुब समझते रहे कि मैं किसी तरह क़त्ल का मुस्तहीक़ नहीं हूं। न मैंने ज़िना किया कलिमा कुफ़्र नहीं बका, दीवार पर चढ़कर कहा मेरा साथी वह जो तलवार फेंककर जा बैठे और मेरी वजह से किसी मुस्लिम पर तलवार न उठाए। इमाम हसन रज़ि० ने क़त्ल उस्मान रज़ि० के बाद ख़्वाब में देखा कि हुज़ूर सल्ल० अर्श का पाया पकड़कर खड़े हैं। अबूबक्र का हाथ हुज़ूर सल्ल० के

कंधे पर है, उमर रज़ि० का हाथ अबूबक्र के कंधे पर उस्मान रज़ि० अपना कटा हुआ सर लेकर आए, ऐ ख़ुदा मुझे उम्मत ने क्यों क़त्ल किया है ? मैंने क्या कुसूर किया है ? इस पर अर्श से दो पर नाले ख़ून के बह पढ़े, ताबीर करने वालों ने यह बताया है कि यह दो पर नाले जंग जमल और जंग सिफ़्फ़ीन हैं और अगर क़त्ल उस्मान के बाद उम्मत का यह ख़ून न बहता हो शायद उम्मत को पत्थरों से मारकर ख़त्म कर दिया जाता। पहले हम आपस में लड़ लेते थे लेकिन दूसरों के मुक़ाबले में एक थे बहुत ग़ौर से सुनो मैं क्या कह रहा हूं, जब सिफ़्फ़ीन में असहाब अली रज़ि० में से 40 हज़ार, असहाब मुआविया रज़ि में 60 हज़ार मर गए तो शाहे रूम ने कहा उस वक़्त हमला करके सारा बदला उतार लू, वज़ीरों ने मना किया कि तुमने हमला किया तो दोनों इकट्ठे हो जाएंगे और उन्होंने दो कुत्ते भूखे रखकर उनको गोश्त दिया। जिस पर दोनों आपस में लड़ने लगे, इतने में शेर छोड़ दिया गया वह दोनों आपस की लड़ाई छोड़कर इस शेर के ख़िलाफ़ एक हो गए लेकिन बादशाह न माना उसने एक फ़रीक़ को अपने साथ करने के लिए मुआविया रज़ि० को अपने साथ होने का ख़त लिखा। मुआविया रज़ि० को जब यह ख़त मिला तो उन्होंने निहायत ग़ुस्से में जवाब दिया कि अगर तू अली रज़ि० पर हमला करेगा। तो उनकी तरफ़ से सबसे जवाबी हमला करने वाला मैं हूंगा, हम आपस में लड़ रहे हैं इसका मतलब यह नहीं है कि तुम्हारे ख़िलाफ़ मैदान में एक नहीं हो जाएं। लेकिन इस हमारे ज़माने में यह हाल है कि आपस में मुसलमान के दिल फट गए और दूसरों से जुड़े हुए हैं, सारी मुसीबतें आपस के जोड़ के न रहने से उस वक़्त भी आ गए जब तालीम, ज़िक्र, मेहनत, मुस्लिम सौ फ़ीसद थी दौरे सहाबा रज़ि० में नमाज़ चाहे अर्श तक पहुंचे, फिर भी दरवाज़ा नुसरत न खुलेगा अगर मुसलमान के साथ बे–उन्वानी जा रही है इस बे–उन्वानी से हज व सौम नमाज़ द जिहाद व मर्दूद हो जाता है इस बे–उन्वानी

से सारे बिगाड़ चलें हैं इसे सीखना मुस्तक़ील काम बनाओ। हम उन बोलों, अमलों के आदी हैं जिनसे लोग टूट जाएं, इसके के लिए हमें सबसे ज़्यादा मेहनत करनी होगी लेकिन तै करो कि मुस्लिम में लाख ऐब हों लेकिन मैं इससे जुड़कर रहूंगा। अगर और उसूल में कमी है लेकिन आपस का जोड़ नहीं है तो नुसरत ख़ुदा आलम इस्लाम के लिए न उतरेगी, हज़रत मुआविया रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० की लड़ाइयों में सारे आमाले आला पैमाना पर थे, सिर्फ़ आपस का जोड़ न होने की वजह से सारी मुसीबतें आईं। हज़रत अली रज़ि० के सारे साथी आला पैमाने के थे लड़ाई ख़त्म हुई तो हज़रत मुआविया रज़ि० के साथी नमाज़ हज़रत अली रज़ि० के साथ आकर पढ़ते और हज़रत अली रज़ि० के साथी खाना हज़रत मुआविया रज़ि० के हां जाकर खाते। हज़रत के साथी इख़्लास से भरे हुए थे हज़रत अम्मार को सब मालूम था कि क्या क्या होगा। हज़रत अली रज़ि० से कहा ऐ अली रज़ि० तू हारेगा तेरे साथी तेरा साथ छोड़ देंगे, तुझे ही क़त्ल कर देंगे लेकिन हक़ तेरे साथ ही है इसी वजह से तेरा साथ दूंगा अगरचें मुआविया का साथ देकर मुल्क व माल मिल जाएगा लेकिन इनका साथ न दूंगा। हज़रत अली रज़ि० को मालूम था कि इब्ने मुलजीम मेरा क़ातिल है। इब्ने मुलजीम हज़रत अली रज़ि० जां–निसारों में से था हकीमीन के क़िस्से में हज़रत अली से अलग हो गया था। इब्ने मुलजीम सामने आया तो हज़रत अली रज़ि० ने कहा अरे तू देर क्यों कर रहा है मेरे क़त्ल में इसके बदले में आपको क्यों क़त्ल करूं ? हज़रत मुआविया के यहां शान–शौकत, हज़रत अली रज़ि० के यहां हुज़ूर सल्ल० वाली सादगी। हज़रत अली रज़ि० के साथ कबार सहाबा नम्बर 1 और हज़रत मुआविया रज़ि० के साथ नम्बर 2 के लेकिन सहाबा हज़रत अली रज़ि० मुज्तमा न थे, सहाबा रज़ि०, मुआविया रज़ि० को ख़त लिखा तो हज़रत मुआविया रज़ि० ने सबको जमा किया और कहा तुम सबकी क्या राय है ? सबने कहा

आप जो मुनासिब समझें, क़ासीद इस मंज़र को देखकर और हज़रत मुआविया की तरफ़ से जवाब लेकर हज़रत अली रज़ि० के यहां पहुंचा। हज़रत अली रज़ि० ने सबको जमा करके पूछा कि तुम सबकी इसमें क्या राय है ? अब यहां सब अलग-अलग हो गए, हर एक का इसरार अपनी राय के मनवाने पर होने लगा, शोर चर मच गया, बा-मुश्किल भी हज़रत अली रज़ि० अब सबको अपनी तरफ़ मुतवज्जोह नहीं कर सके तो हज़रत अली रज़ि० ने कहा عجب ابن آكلة الاكباد हमज़ा का जिगर खाने वाली का बेटा मैदान ले गया, नमाज़, ज़िक्र, दुआ, तिलावत से आगे है आपस के जोड़ का नम्बर, जोड़ उस वक़्त होगा जब अपने आपको सबसे कम समझेगा। अगर ख़ुद को सब कुछ समझे तो जोड़ होकर न देगा। अस्हाबे कह्फ़ की तरह का अपने को कुत्ता समझे ख़ुद को घटिया रखना मुस्तक़ील अमल बना ले, सारे वजूह इफ़तिराक़ में असली बात ख़ुद को कुछ करके या कुछ न करके कुछ समझना है। प्यारा उस वक़्त बनेगा जब करके ख़ुद को कुछ न समझे। नमाज़ पढ़कर आख़िर में समझना में गंदा हूं, लेना कुछ नहीं चाहता हूं, बस गुनाह माफ़ कर दे एक बादशाह के यहां यह बात चली थी कि उलेमा अफ़ज़ल है या सूफ़िया वज़ीर कहता सूफ़िया बादशाह कहता उलेमा यानी वह उलेमा जो सूफ़ियत से ख़ाली और वह सूफ़िया जो इल्म से ख़ाली थे। वज़ीर ने कहा तर्जुबा कर लो कि उलेमा और सूफ़िया को बुलाओ और यह कह दो कि जो अफ़ज़ल हो वह सबसे पहले दाख़िल हो, उलेमा आए जो मंझे हुए थे तो हर एक आलिम कहने लगा मैं चुना और चुने। लिहाज़ा पहले में दाख़िल होंगे और फ़ैसला न हो सकेगा कौन अफ़ज़ल है जो पहले दाख़िल हो, इतने में सूफ़िया आए इस सब में से भी कोई दाख़िल न हो सका। क्योंकि हर एक दूसरे को अफ़लज गरदाने दूसरे के मुनाक़ब बयान करे। इससे बादशाह मुतासिर हो गया वह छुपकर देख रहा था आलिम का लफ़्ज़ कामिलुल इल्म के लिए ख़ास नहीं है बल्कि आलिम वह

भी है जो थोड़ी सा जानता हो, वह इसका आलिम है। हुज़ूर सल्ल० के हां इल्म लेने देने का वही तरीक़ा था जो हमारी तब्लीग़ में है लेकिन हमारी तक़रीरे सुनकर जो बातें मालूम हो जाती हैं लिख लेते हो, उन्हें सुनते सुनाते हो। इनके बारे में सवाल होगा, लेकिन हमारे हां हर एक खुद को ज़्यादा तर्जुबेकार समझने लगेगा। तो फिर हम इसी मर्ज़ से घर गए जिसका इलाज लेकर उठ थे और हुकूमतें लड़ती रहेंगी, मुसलमान का ख़ून गिरता रहेगा अगर तुम पहला काम में साथियों पर पड़ा होना चाहते हो तो आगे जाकर मुल्क व माल के नक़्शों में बड़ा होना चाहोगे। मुल्क व माल के हम तालिब नहीं है यह नारा ही नारा होगा यह यह सोचे की मुझे मुसलमान के सामने ज़लील होना नहीं आता है मुझ में अल्लाह की तलब है बस मैं तो पूरसीश और राय तलब करने के क़ाबिल नहीं हूं दूसरे सब कुछ हैं। मैं कुछ नहीं इससे दिल आपस में जुड़ जाएंगे अगर दिल में यही है कि मैं कुछ नहीं हूं और ज़ुबान पर यही है तो ईमान, वरना यह निफ़ाक़ है, ईमान वाली बात को असर करेगी सिर्फ़ ज़ुबान और निफ़ाक़ वाली बात असर न करेगी। सबसे सख़्त तरीन बीमारी जिससे हज़रत साद रज़ि० के होते हुए सहाबा रज़ि० के दौर में बात न बन सकी वह है खुद को दूसरे से अच्छा समझना, हज़रत साद रज़ि० भी मुज्तजाबुल दावात थे। हज़रत साद रज़ि० के बच्चे को ख़ून भी बह गया जिसकी इबादत पर अशरा मुबाशरा रश्क करते थे, किसी की दुआ ख़ून खराबा मुसलमानों का रोक न सकी। ख़ून ख़राबा उस वक़्त तक न रहेगा। जब तक जोड़ पैदा न हो और जोड़ उस वक़्त तक पैदा न होगा, जब तक अपनी मनवाने अपने को कुछ समझने की बात ख़त्म न हो जाए, अमीर दूसरा है तो कुछ मामला सहल है अमीर राय ले तो दे दो। मामून के ज़िम्मे नहीं है कि वह पुराना बनकर अमीर को पकड़–पकड़कर समझाए। इसी तरह सझाना ही ख़िलाफ़ उसूल है किसी नए सहाबी ने पुराने सहाबी से कहा कि यह काम क्यों नहीं

करते हो। तो पुराने ने बग़ैर नाराज़ कहा कि मैं पुराना हूं तुमसे ज़्यादा वाकिफ़ हूं, अमीर के ज़िम्मे है कि वह मामूर में से पुरानों को टटोलता रहे इसने जलूत व खलूत में पूछता रहे। इस तरह से अमीर बनेगा अगर अमीर किसी से न पूछे तो अमीर बिगड़ेगा, लेकिन ऐसे अमीर की तुम मानते रहो तो तुम बन जाओगे, बाहर जाने वाली जमाअतें पांच–छः अफ़राद से ज़्यादा की नहीं हैं। अमीर से अलग हुए कि अमीर और उसको अमीर बनाने वाला अच्छा नहीं है अरे ख़ुद को ही बड़ा कह लो। शुरू–शुरू में हुज़ूर सल्ल० ने बग़ैर अमीर की जमाअत भेजी, उस जगह जाकर तीन राए हो गई, हर एक ने अपनी राय पर अमल किया। हुज़ूर सल्ल० के यहां वापस आए तो हुज़ूर सल्ल० इस इफ़तिराक़ से नाराज़ हुए कि इसी वजह से पहली उम्मतों को अज़ाब हुआ है मैंने इज्तिमा के साथ भेजा था तुम इफ़तिराक़ के साथ आए हो। मैं अब तुम पर ऐसा अमीर बनाऊंगा (यहां से इमारत शुरू हुई) जो भूख प्यास पर सब्र करने वाला होगा। यानी जों पर सब्र करने वाला ही इमारत के क़ाबिल है तुमने किसी की राय पर फ़ैसला कर दिया दूसरे को चैन देंगे इसे बरदाश्त कर लो। हज़रत उमर रज़ि० ने छः में शूरा क़ायम किया, हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को मश्विरा में ले लेना मगर उसे अमीर न बनाना, अगर चार एक तरफ़ दो एक तरफ़ तो चार की बात चले बाक़ी दो मान लें। वरना उन्हें दारूल शूरआ में ही क़त्ल कर दो, अर दोनों तरफ़ तीन–तीन हो तो इस तरफ़ की बात जिस तरफ़ इब्ने औफ़ रज़ि० हों, बाक़ी तीन मान लें, वरना उन्हें वहीं क़त्ल कर दो। हज़रत इब्ने औफ़ रज़ि० ने कहा भाई छः को आपस में जोड़ना मुश्किल है छः की बजाए तीन हो जाएं, आख़िर इब्ने औफ़ रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि० क़रार पाए और हज़रत इब्ने औफ़ ने तीन दिन की मोहलत मांगी। क्योंकि हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत इब्ने औफ़ रज़ि०, के हज़रत अली रज़ि० की निस्बत से ज़्यादा क़रीब थे यानी रिश्तेदारी की

वजह से किसी को आगे न रखो और जल्दी न करो। हज़रत इब्ने औफ़ ने मदीने के सौ फ़ीसद आदमियों की राय मालूम कर ली, हज़रत अम्मार बिन यासीर रज़ि० और एक के अलावा सब हज़रत उस्मान रज़ि० के हामी थे आख़िरी रात में हज़रत इब्ने औफ़ ने कहा, ऐ फ़्लां, हज़रत अली व हज़रत उस्मान रज़ि० को बुलाकर ला। मैं तीन दिन से सोया नहीं, हज़रत अली रज़ि० आए तो इब्ने औफ़ ने कहा, ऐ अली मैं तुमसे बैअत होता हूं कि तुम ख़ुदा, रसूल सल्ल० और शेख़ीन की मानोगे। हज़रत अली रज़ि० ने कहा शेख़ीन का इत्तिबा मुश्किल है। फिर हज़रत उस्मान रज़ि० से कहा तुम इन्हीं शर्तों के साथ बैअत होता हूं, उन्होंने कहा मंज़ूर है इसके बाद हज़रत इब्ने औफ़ मस्जिद में गए मिम्बर पर बैठकर हज़रत अली रज़ि० को बुलाया। सबके सामने इन्हीं शर्तों के साथ बैअत हुए, हज़रत अली रज़ि० ने वही जवाब दिया, फिर हज़रत उस्मान रज़ि० को बुलाया उन्होंने कहा मैं ख़ुदा, रसूल सल्ल० की इताअत और शेख़ीन का इत्तिबा करूंगा फिर इनको ख़लीफ़ा बना दिया यानी पहले ज़ाहिर कर दिया कि रिश्तेदार होने की वजह से अमीर नहीं बनाया है अगर इस तरह से लोग कहें कि इसने रिश्तेदारी की वजह से मान ली है तो भी हज़रत उस्मान रज़ि० जैसे का भी इसी वजह से क़त्ल हुआ है पुरानों के बग़ैर काम नहीं चलेगा। पुरानों का जोड़ है भी मश्किल या तो पुरानों के सही तरह चलने से दीन आलम में आएगा या दीन के इनके इफ़तिराक़ की वजह से न ज़िंदा होने का सिया झंडा इनके हाथ में होगा। मामूर हैं तो मज़े हैं कि शुक्र है इस अमीर ने मेरी राय ही नहीं ली है इस अमीर की सिर्फ़ हलाल में मानो हराम में नहीं चाहा अमीर मुरतकिब हराम हो। फिर भी इसकी मानो हुज़ूर सल्ल० ने फ़ासिक़ व फ़ाजिर के पीछे पढ़ने का हुक्म दिया है, अमीर कैसा ही हो इसके साथ आख़िर तक दो, चाहे वापस आकर यह कह दो कि मुझे आंइदा इसके साथ न भेजना जो अबू अय्यूब रज़ि०, वग़ैरह हुज़ूर सल्ल०, हज़रत

अबूबक्र, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि० व हज़रत अली रज़ि० की इमारतों में चले थे वह सिर्फ़ इज्तिमाआ की वजह से यज़ीद के मामूर बनकर चले हैं। हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० एक साल मरवान बिन अब्दुल मालिक के अमीर होने की वजह से न गए। तो अफ़सोस करते रहे कि क्यों मैंने साल खोया, फिर हमेशा आख़िर यज़ीद बिन मुआविया रज़ि० के मातहत होकर चलते रहे, मग़फूरलहम वाली हदीस की जमाअत का अमीर यज़ीद ही था इस वजह से इसको ज़्यादा भूरा-भला मत कहो। अरे इसने तो सियासत में हज़रत हुसैन रज़ि० को मारा था कि हज़रत हुसैन रहे तो मुल्क बिखर जाएगा। तुम सियासतन हुज़ूर सल्ल० हर हुक्म को क़त्ल करते जा रहे हो, हज़रत हुसैन रज़ि० ने हुक्म खुदा पर ही जान दी थी, हम उस वक़्त तक काम करने वाले नहीं बने हैं जब तक सबके साथ जुड़कर चलना न आए और ख़ुद को किसी क़ाबिल न समझे और अपने किसी अमल पर कुछ जाने के अहल न समझने की बात आ जाए। अब दुआ मांगो।

उमूमी बयान न० 4

हिदायत बराए खारजीन

इतवार, नाश्ते के बाद, 17, मई 1962 ई०

मदरसा उलूम शरीआ में मुल्कों में जाने वाली जमाअतों में सवाल व जवाब व हालात के से बात चीत।

जिस मुल्क में काम करो नक़्शों के यक़ीन के बजाए कुदरत यक़ीन के साथ काम करो और हर काम में लगने वाले के सामने ख़ालिस दीन की वजह से करने का जज़्बा पैदा करो, हमारा काम किसी मुल्क में उस वक़्त रूक सकता है जबकि ज़ुबान पर तब्लीग़ हो और दिल में मुल्क व इक़तिदार हो। हमारे हिन्दु पाक में जहां नबी शायद ही कोई हुआ हो जब वहां इस काम से नुसरत ग़ैबी के वाक़िआत ज़ाहिर हो सकते हैं तो जिन मुल्कों में कुदरत ख़ुदा बार बार ज़ाहिर हो चुकी है। वहां इस काम की अहया से दोबारा कुदरत ज़ाहिर न होगी ? अल्लाह की शान, अंबिया अलैहिस्सलाम व सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की ज़मीन में ही कुदरत ख़ुदा के इंकार का ज़हन बनता चला जा रहा है वह रूकावटें लाएं और तुम्हारे लिए कुदरत ख़ुदा ज़ाहिर होती चली जाए। तो इस ज़हेन का तोड़ मुहय्या हो गया। मिस्र में अस्वान की जानिब से काम शुरू करें, इसके बाद मश्रिक़ी अफ़्रीक़ा के हालात सुनाए गए। फ़रमाया क़ौमों का एक दूसरों पर बहुत असर पड़ता है अफ़्रीक़ा सिया फ़ाम ख़ूब असर लेंगे मश्रिक़ी अफ़्रीक़ा के सिया फ़ामों को ज़मीन बनाकर ऐसे आदमी तैयार करो जो इनसे काम लें, कालों को लेकर सफ़ेद फ़ामों में काम करे। किसी एक को मत छोड़ो, कमपाला से बरास्ता गौरोमूर जाएं, ज़नबहार भी ज़रूर जाना है।

फिर नाइजीरिया के हालात : मौलवी अब्दुल जमील साहब ने सुनाए और अब्दुल वहाब और शब्बीर अहमद साहब ने भी नाइजीरिय के शुमाली इलाके गाऊस दोनों में और दोनों के दर्मियान के इलाके में हो।

लिबिया के हालात : ग़रीबों में काम करने को अपनी असली ताक़त समझी जाए। दूसरों को भी मुतवज्जोह करके ग़रीबों में लाया जाए, वरना अल बिज़ा से होते हुए बन ग़ाज़ी में जाएं।

तियोनस के हालात : लिबिया से मुतसल शहर गा बुश से ही काम करते हुए दारूलखलाफ़ा में जाएं, जहां ख़सूसी उलेमा, मशाइख़ हों वहां के माहौल में काम करके फिर वहां जाना चाहिए।

अल जज़ाइर के हालात : तियोनस से दाख़िल होते हुए अल जज़ाइरुल असमा में जाएं और अगर असमा ही बहरी जहाज़ से उतरना हो तो पहले वहां के ही मुहल्लों में काम करके आस—पास जाएं या यह कि पहले अलग—अलग शहरों में फिरकर जहां ज़्यादा फ़िज़ा पाएं। वहां काम जमकर शुरू कर दें।

मुराकिश के हालात : तख़बा बंदरगाहगा में काम करके लोगों को तंख़ाह, फिर रबात में मुहम्मद क़ादरी, अहमदवी से मिलकर प्रौग्राम बना दिया जाए, तख़बा को काम को खसूसी मर्कज़ बना दिया जाए। क्योंकि स्पेन से दो घंटे का समुंद्र है, मुहम्मद क़ादरी अगर फ्रांस जमाअत के पास जा सके तो ज़्यादा बेहतर है क्योंकि फ्रांस में काम की शुरूआत है। जो लोग एक मुल्क के काम से अच्छे मानूस हो चुके हों इनको ज़रूरत व मुनासिब समझें तो दूसरे मुल्क की जमाअत के साथ काम करने को भेज दिया जाए।

उमूमी बयान न० 5

आज की सारी अबतरी मुसलमानों के आमाल की वजह से है

फ़्जर के बाद, दिन पीर, हरम मदनी में 18, मई, 1962 ई०

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया कि
मेरे भाइयों और दोस्तो !

अल्लाह तआला ने सारी क़िस्म की आख़िरत व दुन्यावी कामियाबियों का हसूल इंसान की अपनी जान के तरीक़ों में रख दिया। दिखाई दुनिया की चीज़ों में कामियाबी, लेकिन इस्तेमाल जिस्म के तरीक़ों से ही कामियाबी और इन्ही तरीक़ों से ना–कामी है शक्ल चाहे फ़क्र की हो या ग़नी की हुकूमत का नक़्शा हो या सरमायादारी का अकेला हो या लाखों के साथ हो अगर इंसान सारी शक्लों से निकलकर जंगल पर पढ़कर जिस्म को कामियाबी वाले तरीक़े पर इस्तेमाल कर ले तो फिर बग़ैर किसी शक्ल व सूरत के जंगल ही में कामियाबी दे देते हैं और अगर मुल्क व माल के नक़्शों में भी यह तरीका इख़्तियार कर ले तो ना–कामी आएगी अंबिया, सहाबा औलिया से यह बात ज़ाहिर कर दी है। नक़्शों से ख़ाली अंबिया आकर कामियाबी वाले तरीक़ों को चलाने वाले ख़ास यक़ीन की तरफ़ बुलाया, अंबिया अलैहिस्सलाम जब भी आए मुल्क व माल के नक्शों से ख़ाली होते थे। बल्कि जो इनको साथ देता मुल्क व माल उसे छोड़ना पड़ता था, हिरक़्ल सौ फ़ीसद यक़ीन रखता था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रसूल हैं। उसे इसका सबूत मज़हबी किताबों से और अबू सुफ़ियान रज़ि० के जवाबों

से मिल गया था। हिरक़्ल के सवाल और अबू सुफ़ियान रज़ि० के जवाब मशहूर हैं, लेकिन मुल्क के हाथ निकल जाने के ख़तरे ने उसे मुसलमान होने न दिया जो कोई नबी की मानता उसका मुल्क व माल जाता रहता था फिर कामियाबी दूसरे रास्ते से आती थी, मुल्क व हुकूमतें, जायदादें इनकी तरफ़ आती थीं। कामियाबियां दिलाने वाले तरीक़ों से दुनिया की नेमतों को ख़ुदा उनके सामने झुकाते और पूरी फ़िक्र करते कि उन नेमतों के मिल जाने के बाद कामियाबियों वाले न बदल जाएंगे। अगर तरीक़े बदल जाते तो जिनके दूसरों को हलाक व ग़र्क़ कर दिया गया था। अब इन्हीं को दूसरे से हलाक करवा दिया जाता है, वही बनी इसराइल जिनके लिए फ़िऔन लश्कर के साथ ग़र्क़ कर दिया गया था उन्हीं के बारे में बुख़्त निसर ने क़सम खाई थी कि मैं इनका ख़ून इतना बहाऊंगा कि मेरे घोड़े के सीने तक इनका ख़ून आ लगे। ख़ुब क़त्ल बनी इसराइल का हुआ, लेकिन ख़ून जहां गिरता हैं जम जाता। अक्सीरियत क़त्ल हो गई लेकिन क़सम पूरी न हुई क़त्ल करने वाली फ़ौज से बुख़्त निसर से कहा रहम करो। उन औलाद अंबिया के क़त्ल को खत्म करो, उसने कहा मैं क्या करूं मैं भी चाहता हूं क़त्ल बस कर दो। लेकिन क़सम मेरी पूरी नहीं हुई, उसे उलेमा ने मश्विरा दिया कि तुम इस जगह ख़ुब पानी बहाव जिससे ख़ून के टुकड़े ऊपर आ जाएंगे और घोड़े के सीने को लग जाएंगे और तुम्हारी क़सम पूरी हो जाएगी। चुनांचे उसने ऐसा ही किया और फिर कुछ यहूदी बचे।

जिनको एक बार तरीक़ों से कामियाबी मिल जाती है उनका नाम मुल्क व माल की सूची से काट दिया जाता है अगर वह इसके बाद तरीक़ों को मुल्क व माल की वजह से तोड़ने लगेंगे तो फिर इन ख़ून खराबे का अज़ाब मुसल्लत हो जाता है। यहूदी वे हैं जो कामियाबों के तरीक़े से ऊपर आए, मुल्क व माल से नहीं आए। हज़रत याकूब अलै० कनाअन की बस्ती में रहते थे, जंगल व गांव

में रहना जानवरों का ही गोश्त व दूध मिलता था, न हुकूमत हाथ में न हुकूमत में किसी क़िस्म का असर नुबूवत वाली आज़माइश बाप बेटे दोनों पर गुज़रें, ज़ाहिर हाल में हज़रत यूसुफ़ अलै० का ख़त्म होना यक़ीन है, ज़ाहिर के खिलाफ़ है हज़रत याकूब अलै० खुदा पर यक़ीन करते कि खुदा वापस कर देंगे। दूसरा बेटा चोरी के इलज़ाम में रह गया, तीसरा बेटा शर्म के मारे, दूसरे के साथ रह गया, पहले तो एक गया था। अब दो मज़ीद चले गए, वापसी बा–ज़ाहिर मुश्किल है लेकिन عسى الله ان ياتينى بهم جميعا. इनका अल्लाह पर भरोसा है जिसके लिए ज़ाहिर को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं औलाद ने कहा तो मर मरा गया, बस उसे छोड़ो, तुम उसी में मर जाओगे कहा انى اعلم مالا تعلمون मुसीबतों को वह उस तरीक़े पर ग़बुर कर रहे हैं जिस तरीके से कामियाबी मिलती है

يا بنى اذهبوا فتحسسوا من يوسف واخيه ولا تيئسوا من روح الله

अब रोकर दुआ मांगी। उस वक़्त की दुआ ऐसी थी कि खुदा ने पैग़ाम भेजा कि अगर यूसुफ़ मिट्टी भी हो जाते तो आज की दुआ पर उन्हें ज़िंदा कर देते, खुश हो जाओ वह मिलने वाला है, ऐन उसी वक़्त छिपे हुए से पर्दा हटा रहे हैं, जिन भाइयों के हाथों सारे सितम हुए, सारी मुसीबतों से दो चार हुए। अब वही भाई इनके सामने ऐसे हैं जब चाहें जेल में डाल दें, यहां तक कि भाई को जब इन्होंने रोका तो भाइयों ने हालांकि हज़रत यूसुफ़ अलै० ने बुत को तोड़ा था। इसका नाम भाइयों ने चोर रख दिया, लेकिन हज़रत यूसुफ़ अलै० ने खुद को छिपाया और इनके लिए ऐसे ही इस्तेमाल हुए जैसे उन भाइयों ने कुछ भी नहीं किया। जिसके बल बुते पर भाइयों की ज़िंदगी बन रही है वह इसी की ही नहीं मान रहे हैं। यहां मुसीबतों में तरीक़ा क़ायम रखा, जेल तक इख़्तियार कर लिया, जेल में जाकर दावत का काम शुरू है। हमारा बहरी जहाज़ सुबह की जगह शाम को गोदी पर लगे तो हमें कितना

ना—गवार गुज़रता है, इधर हज़रत यूसुफ़ अलै० ने दस बारह साल जेल में गुज़ारकर भी फ़ौरन निकल जाने को इख़्तियार न किया। कहा, उन औरतों से पूछो कि उन्होंने हाथ क्यों कांटे इसमें जवाब था कि जब मज्मूआ मुझसे मुतासिर हो गया और अपनी तासीर को वे मज्मूआ छुपा न सका और मैं मुतासिर मज्मूआ से न हुआ तो इस मज्मूआ का एक फ़र्द तंहाई में कितनी ज़्यादा तासीर लेगा। औरतों से सवाल से पहले ही ज़ुलैख़ा ने मान लिया انا راودته عن نفسی बाप बेटे की ज़िदंगी में कामियाबि वाले तरीक़े नज़र आ रहे हैं। जिस औरत की वजह से बारह साल की जेल मिली थी उसी औरत के साथ बीवी वाली शफ़क़त इस्तेमाल करते हैं। तक्लीफ़ों दुआ में डाल देने वाले भाइयों से मामला सिर्फ़ भाई होने के लिहाज़ से करते हैं। भाइयों ने कहा सवाल किया तुम्हें मालूम है कि तुमने यूसुफ़ अलै० के और इसके भाई के साथ क्या किया ? आज की लहजे से वे समझ गए और कहा तुम ही यूसुफ़, बस पैरों तले की ज़मीन निकल गई इन्होंने फ़ौरन मान लिया तुम ही बड़े हम छोटे हम एक घर में तुम्हारा ऊंचापन न देख सकते थे, लेकिन अब खुदा ने सारे मुल्क में इज़्ज़त दे दी है यह इज़्ज़त व मुल्क कामियाबी दो नबियों के कामियाबि वाले तरीक़े से मिली। जिस मुल्क की तक्लीफ़ें बरदाश्त की जाती है इस मुल्क में मुसीबतें के ज़्यादा होने से दिल ख़ुश होता है हज़रत यूसुफ़ अलै० ताबीर ही उलटी देते और अगर ताबीर दुरूस्त दे दी। तो मुल्क वालों को उनके हाल पर छोड़ देते, लेकिन यों कह दिया कि मैं ख़िदमत करने को तैयार हूं तुम सबकी, ऐसे ही हुज़ूर सल्ल० मक्का वालों से सारी तक्लीफ़ें उठाकर मक्का में फ़ातिहाना दाख़िल हुए। बैतुल्लाह के पास खड़े होकर कहा तुम्हारे साथ क्या करूं ? इन कुफ़्फ़ार मक्का में से एक ने खड़े होकर कहा तुम करीमों की औलाद हो करीम इब्ने करीम इब्ने करीम होकर करम करोगे और हज़रत यूसुफ़ अलै० को हुज़ूर सल्ल० ने करीम इब्ने करीम कहा है। हज़रत यूसुफ़ अलै० वाला

जवाब हुज़ूर सल्ल० ने दिया لا تثريب عليكم اليوم हज़रत उस्मान रज़ि० फ़जर की नमाज़ में सूरः यूसुफ़ पढ़ा करते थे क्योंकि इन्होंने हज़रत यूसुफ़ अलै० की तरह पहले अपने रिश्तेदारों से फिर मुसलमानों से तक्लीफ़ें पाईं। हज़रत अबूबक्र व हज़रत उमर रज़ि० के साथ यह मामला नहीं हुआ बहुत ही मज़ाक करने वाले नुएमान से भी हुज़ूर सल्ल० ने निबाह करके दिखाया है हम तो ज़रा-सी बे-उन्वानी से दूसरों से ख़फ़ा हो जाते हैं। एक बार एक शख़्स बाहर से आया, सवारी मस्जिद से बाहर बांधकर अंदर मस्जिद में हुज़ूर सल्ल० के पास गया किसी ने कहा अरे नुएमान गोश्त खिला दे। नुएमान उस बाहर के मेहमान की ऊंटनी ही काट दी वह मेहमान बाहर आकर ऊंटनी को देखा वह चीख़ पड़ा। हुज़ूर सल्ल० घबराकर बाहर आए आकर पूछा क्या हुआ ? उसने कहा, नुऐमान ने ऊंटनी काट दी और नुऐमान उस गली में भागे है। बस हुज़ूर सल्ल० उनके पीछे भागे, भागते-भागते आख़िर हुज़ूर सल्ल० ने एक जगह नुऐमान को पा लिया, अब नुऐमान ने इस तरह मुंह बनाकर कहना शुरू किया। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपके साथियों ने ही गोश्त को मुझसे तलब किया है मैंने काट दिया, तो मुझे ही पकड़वाने लगे। इस पर हुज़ूर सल्ल० मुस्करा दिए और माफ़ कर दिया, इन ही क़िस्सा में है कि दौर उस्मानी में एक नाबीना एक दम मज्लिस से उठा, नुऐमान ने कहा, क्या बात है ? उसने कहा पेशाब की हाजत है चुनांचे उन्हें ले जाकर बाज़ार के रूख़ पर बिठा दिया। उन्होंने पेशाब शुरू किया तो बाज़ार में गुज़रने वाले लोगों ने बताया कि ऐ ना-बीना तुम कहां बैठे हो, गुस्से में आकर उसने क़सम खाई कि ज़ोर से डंडा नुऐमान की सर पर मारूंगा। चुनांचे एक बार हज़रत उस्मान रज़ि० नमाज़ पढ़ रहे थे नुऐमान ने आवाज़ बदलकर कहा कि ऐ फ़लां क़सम पूरी करेगा ना-बीना ने कहा, हां, कहा, चल चुनांचे उसे ले जाकर, हज़रत उस्मान के क़रीब खड़ा कर दिया और कहा मार ले। इसने ज़ोर से मारा तो हज़रत उस्मान

के सर से ख़ून निकल आया, नुऐमान को पकड़ें, छोड़ दो बद्री है। यानी अपनों से तक्लीफ़ पाएं हज़रत उस्मान रज़ि० لا تثريب عليكم का मज़हर था, बरदाश्त करके माफ़ कर गए थे। तरीक़े, जो क़ौम तरीक़ों से चलती है वह कभी मुल्क व माल से नही चमकती है सिर्फ़ 12 बनी इसराइल और हज़रत याकूब अलै० व अहलिया याकूब अलै० थे तो मुल्क मिस्र पर छा गए। नबियों के तरीक़े से फिर हज़ारों हो गए, सार छावनियों पर क़ब्ज़ा, तिजारत व खेती–बाड़ी की मंडियों के मालिक, हर जगह के ना के उनमें लेकिन तरीक़े निकल गए। ख़ुदा ने फ़िऔन को ऊपर लाकर मुसीबतों का दौर खोल दिया। चलते–चलते अल्लाह ने मूसा अलै० व हज़रत हारून अलै० से उसी रास्ते की तजदीद की। इन दोनों पहले दोनों की तरह मेहनत की जिससे सारी क़ौम में ईमान, सब्र व भरोसा आ गया, मेहनत करने वालों में यह सिफ़ात ज़्यादा आ गई तो ख़ुदा ने बग़ैर किसी ज़ाहिर सबब के ग़लबा दे दिया। फिर जब तरीक़े ख़त्म कर दिए, यहां तक कि अंबिया को क़त्ल कर दिया, बादशाह ने अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ शादी करने के लिए नमाज़ पढ़ते हुए सज्दे की हालत में हज़रत यहया अलै० को सिपाहियों से क़त्ल करवा दिया। इस पर ख़ुदा ने बादशाह इसकी नई बीवी, और सारे महल वालों को पत्थर बना दिया, अगली सुबह क़ौम ने यह हाल देखा तो उलटे ही चल पड़े कि अपने नबी के क़त्ल पर ख़ुदा नाराज़ की हमारे बादशाह को पत्थर का बना दिया तो हम अपने बादशाह के लिए क्यों नाराज़ न हों ? और वह हज़रत ज़िक्रया अलै० को क़त्ल करने चले। हज़रत ज़िक्रया अलै० दौड़े, ख़ुदा ने उन्हें पेड़ में छिपा दिया, शैतान ने उनके कुर्ते का पल्लू बाहर कर दिया। जिससे लोगों को पता लग गया के अन्दर हज़रत ज़िक्रया अलै० हैं, चुनाचे शैतान ने नीम का पत्ता दिखाकर कहा कि इस जैसे लोहे का आरा बना लो। चुनांचें उन्होंने आरा से हज़रत ज़िक्रया अलै० जैसे नबी के दो टुकड़े कर दिए, इसके बाद अल्लाह तआला

ने उन पर बख़्ती निसर को मुसल्लत कर दिया थी बनी इसराइल का क़िस्सा कुरआन शरीफ़ में इस वजह से बार बार आता है। क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है कि मेरी उम्मत बनी इसराइल की नहज पर चलेगी। इनके बहत्तर (72) फ़िक्रे हुए इसके तहत्तर (73) होंगे इसमें से अगर कोई किसी सूराख़ में दाख़िल हुआ होगा तो उनमें से भी कोई ऐसा ज़रूर करेगा। इनमें से किसी ने मां से ज़िना किया होगा तो उनमें से भी कोई ऐसा ज़रूर करेगा। ख़ुदा ने यहूद को ऐसा मरदूर किया कि वह जानते थे कि यह हज़रत मुहम्मद सल्ल० नबी हैं यह हमें निकाल देंगे, लेकिन फिर भी न माने। अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० मुसलमान हुए तो हुज़ूर सल्ल० से कहा आप मेरे बारे में उन यहूदियों की राय मालूम कर लें कि यह यहूदी कैसे हैं। अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० ने पर्दे के पीछे छिपा दिया, यहूद को बुलाकर पूछा अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० कैसा है ? सबने कहा ऐसा है और ऐसा है, जो कहेगा मानेंगे, बड़ा आलिम है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया अगर वह मुसलमान हो जाए ? जवाब दिया कि वह मुसलमान हो ही नहीं सकता और अगर हो जाए तो हम भी हो जाएंगे। इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम पर्दे से बाहर आकर कलिमा शहादत पढ़ने लगे तो अब सब इनकी इसी मज्लिस में तंफ़ीस करने लगे कि यह ऐसा, इनके बाप भी ऐसे ही थे। ऐसे बे–शर्म दबे हया, ग़ज़वा ख़ंदक़ में एक दूसरे से यहूदियों ने कहा था कि साथ मत छोड़ो, वरना हलाक हो जाओगे तो कहने लगे चाहे हम मर जाएं लेकिन उनका साथ हरगिज़ न देंगे। उस उम्मत के साथ भी यह होगा कि बनी इसराइल नुबूवी तरीक़े से उभरे थे फिर गिरे थे फिर उभरे फिर गिरे और हमेशा फिर उभरे फिर गिरे और हमेशा को गिरे। उम्मते मुहम्मदी के साथ क़ियामत तक यही होगा कि जब मुल्क व माल के पीछे चलेंगे तो कसरत में मरेंगे। हुकूमतों के बावजूद क़त्ल होंगे, मुसीबतों में घिरेंगे। यहूद व नसारा मुल्क व माल से ऊपर आ

सकते हैं। जब तक अल्लाह से हमारा अन्दर का कनैकशन बाक़ी है उस वक़्त तक मुल्क व माल में लगने से मुसीबतें ही आएंगी। सिर्फ़ नबी के तरीक़े पर ही इज़्ज़त मिलेगी, हां अगर हम मुसलमान न रहें या ज़ुबान से ख़ुद को मुसलमान कहें अंदर से ख़ुदा कनैकशन तोड़ें तो मुल्क व माल से चमक सकते हैं। हालात पुलीस, फ़ौज, डाक्टर से मुरतिब्ब नहीं होते हैं। हालात आमाल और इबादात से बनते हैं, सारे नबियों ने या क़ौम अब्दुल्लाह या फ़ातकुल्लाह अपने क़ौम से कहा है, अल्लाह के सिवा कोई ज़ात नहीं है जिसमें मशग़ूल हुआ जाए या हाजतें इससे पूरी कराई जाएं। तुम इबादत करके दुआएं मांगो और उसे राज़ी करो तो हालात बन जाएंगे, हुज़ूर सल्ल० हमें बता गए सूरज की रोशनी या चांद की रोशनी चली जाए हाजत पूरी नहीं हुई हो तो नमाज़ पढ़कर इनसे दुआ करना, इबादत दुरूस्त कर लेना फिर मांगना अगर दुआ कुबूल होने लगे तो एक दम हराम कमाई छोड़ देना वरना दुआ हाथ से जाती रहेगी कि तुम दुआ से सब कुछ होता देख चुके हो तो फिर अब यह बाक़ी अहकाम को ल्यों नहीं मानते हो। दुआओं के सहारे तक़्वे पर पहुंचो फिर मज़े करो। कारोबार में तब्दीली की तो नुक़्सान अगा गया मुअशरत को बदला तो दोस्तों में नक्कू बन गए। बस दुआ से उस सबकी ख़बर कर लो, फिर दुआओं के सहारे ख़ुद को नुबूवत के तरीक़ों पर डालो। यक़ीन बनाओ, सोने से क़ीमत न बनेगी, पाख़ाना फिरने की एक सुन्नत कई हुकूमतों से ज़्यादा क़ीमती है। वे उलेमा जो मशइख़ भी हैं उन्होंने कहा है कि मुसलमानों में इस्लाम के तहफ़्फ़ुज़ के पेश नज़र हुज़ूर सल्ल० की जो ख़ैर की शक्लें चली हैं इनसे ज़्यादा नूर हुज़ूर सल्ल० के पाख़ाने की एक सुन्नत में है हमें ज़िंदगी के हर-हर शुब्हे को बदलना है और हम अभी से हाजी, नमाज़ी, मुब्ल्गि साहब हैं। हमें क़ालीन की जगह बोरिए, क़ोरमे की जगह सिरका, उम्दा लिबास की जगह घटिया लिबास पसंद नहीं है। जब तक पंसद न बदलेगी उस वक़्त तक

सुन्नतों के ज़िंदा होने का सवाल ही नहीं है दो सालन एक दस्तरख़्वान पर सुन्नत नहीं है। हज़रत उमर रज़ि० के नज़दीक़ गोश्त अलग सालन है अकेले सिरके से रोटी खाएं तो सुन्नत पूरी होगी, अगर बहुत से खानों के साथ सिरका रखकर खा लें तो यह सुन्नत न होगा। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने अपने बाप की दावत की, हज़रत उमर रज़ि० हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के घर गए, लुक़्मा मुंह में डालकर निकल लिया कि इसमें गोश्त और घी दो सालन हैं। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा सुन तो लें कि रोज़ाना आठ दिरहम का गोश्त आता था आज हल्की क़िस्म का गोश्त 4 दिरहम का ख़रीदकर 4 दिरहम का घी ले आया। ख़र्च नहीं बढ़ा कहा मैं तो दो सालन नहीं खाता। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा आइंदा एक ही सालन बनाऊंगा, कहा जब बनाओ तब खाऊंगा अब नहीं खाता। अभी तक हम में न मुनासबत है न ज़ौक़ है, न खाने को सादा करने का इरादा है बल्कि जहां इस तब्लीग़ में दावत खाने की हो जाती है इस दावत के खाने से हम अपनी सादगी और कम कर देते हैं। हम यों समझते हैं कि हमारी मर वजह ज़िंदगी के अलावा कही और दीन चलेगा, तब्लीग़ में निकलकर जो सादगी इख़्तियार कर लेते हैं वह तो दीन है घर में हर जगह सादगी लाना दीन नहीं है अगर हमारा रूख़ ही सुन्नतों की तरफ़ नहीं है तो जिनमें मेहनत कर रहे हैं। इनमें सुन्नतों का रूख़ कैसे पड़ेगा, अगर हम खुद इन सुन्नतों का ताम्मुल न पाएंगे और इस सुन्नत से हटकर चलने को अच्छा न समझें सुन्नत का ताम्मुल न होने पर रोंए तो फिर सुन्नत वाला अज्र मिल जाएगा। अगर ऊंटों, गधों और सारे ताम्मुल नहीं है तो इन्हीं चीज़ों को अच्छा समझो और अपनी मौजूदा खानों और कारों को तो घटिया समझो। बताओ वह थान बढ़िया है जो करोड़ों का है या वह चार आने का कपड़ा जो तेल में सना हुआ, हुज़ूर सल्ल० के सर पर बंधा हुआ है, करोड़े के नए जूते से चार आने का जूता हुज़ूर सल्ल० वाला अफ़ज़ल है यह

इज़्ज़त तो उसे हुज़ूर सल्ल० से लगने से मिल गई है। तो वह तरीक़ा जो हुज़ूर सल्ल० के अन्दर से बाहर आता था इसकी क़ीमत तो कितनी ज्यादा होगी। सादगी, क़नाअत, सब्र व तहम्मुल ईमान वाले तरीक़े बहुत क़ीमती है, इसी का कलिमा में इक़रार है हमें अल्लाह के हां कामियाबी, ना–कामी चीज़ों के एतबार से न मिलेगी। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एतबार से मिलेगी। महबूब पर रखकर मामला होगा कि तुम्हारे हिस्से महबूब के हिस्से के तरीक़ों पर आए या नहीं ? कुफ़्फ़ार तो كالانعام بل هم اضل हैं जैसे जानवरों के आमाल से निज़ाम पर असर नहीं पढ़ता है ऐसे ही कुफ़्फ़ार के आमाल से निज़ाम पर असर नहीं पढ़ता। वह तो ख़ारिज निज़ाम आलम हैं। जैसे जानवर ज़लज़ला सेलाब, आग से ख़ुद को नहीं बचा सकते हैं यही हाल कुफ़्फ़ार का है। लेकिन मुसलमान की दुआ से ये मुसीबतें रूक सकती हैं, आज की सारी अबतरी मुसलमानों के हिसाब में है समुंद्रों की तग़यानी, ज़मीन के झटके कुफ़्फ़ार की वजह से नहीं है बल्कि मुसलमानों के मआज़ी की वजह से है कुफ़्फ़ार को आज़ाबे अलीम आख़िरत वाला मिलेगा। फ़रिश्ते फ़जर से असर तक के सारे आमाल और दूसरे फ़रिश्ते असर से फ़जर तक के सारे आमाल व इरादे लिखते हैं। उलेमा ने कहा कि फ़रिश्तों को कैसे मालूम हो जाता है कि उस वक़्त फ़्लां नेकी या फ़्लां बदी का इरादा क़िया है। जैसे हम देखे बग़ैर ख़ुशबू से पहचान लेते हैं कि यहां फ़्लां फल है या फ़्लां फूल, इसी तरह अमल में बदबू और ख़ुश्बू है दूसरा क़ौल यह है कि अल्लाह बता देते हैं कि फ़्लां अमल का इरादा क्या है बदी का इरादा नहीं लिखा जाता है बदी करने पर एक बदी। नेकी का इरादा पर एक नेकी, नेकी का अमल दस गुनाह लिखा जाता है। हमारे अमल को लिखने वाले एक वक़्त में चार सौ हो सकते हैं लेकिन ऐसा कोई वक़्त नहीं है जिसमें आमाल पर निगाह रखने वाला न हो, आमाल फ़रिश्ते आसमान पर ले जाते हैं इन्हीं के मुताबिक़ अहकाम अहवाल के ख़ुदा से मिल

जाते हैं। इसमें कोठी या झोंपड़े से खो ऊंचे या कारखाने सें फ़र्क़ नहीं पढ़ता है बस हुज़ूर सल्ल० के एतबार से सारा मामला होगा ख़ूब इबादत करके मांगो। ऐ ख़ुदा अंबिया वाले सीधे रास्ते पर चला, 24 घंटे की ज़िंदगी में हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल हो कामियाबी का म्यार चीज़ें नहीं बल्कि आमाल हैं। नबियों के तरीक़े से उभरने वाले फिर मुल्क व माल में फंस जाने वाले यहूदी व नसारा में से न बना। तब्लीग़ में निकालकर रो-रोकर दुआ मांगी, अब या तो दुआ कुबूल होगी जिससे घर में आफ़त आएगी मकान गिर पड़ा नीयत बदलने नहीं लेकिन दुआ है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० और मूसा अलै० जैसे मकान व लिबास हो और अगर दुआ हो जाए तो फिर दुनिया के साज़ो-सामान क जमा करने की ही फ़िक्र बच्चों के कपड़े नबी के नवासों जैसे नहीं बनाता है बल्कि औलाद नसारा यहूद जैसे बनाता है खाने यहूद जैसे हुज़ूर सल्ल० जैसे नहीं। दुआ मरदूद तो आख़िरत बिगड़ी दुआ कुबूल तो दुनिया मरदूद ख़ुद को बदलने की नीयत कर कि सारे माहौल को दुरूस्त करने की मेहनत करने नीयत कर कोठी से झोपड़े को आना ही उम्दा खाने से सीधे साधे खाने को जाना है। दीन और तरीक़ा मुहम्मद सल्ल० तो सरासर तक्लीफ़ व मुजाहेदा है इसी वजह से सहाबी ने कहा कि हमने सारी कामिबयाबी मुशक़्क़त में पाई हैं बस तक्लीफ़ों से जी लगाने की मश्क़ करो, उससे घरबाना छोड़ दो। अरे हम तो एक वक़्त के फ़ाक़े से घबरा गए ? हुज़ूर सल्ल० ने तीन दिन के फ़ाक़े उठाए, भूख व अंधेरे की तक्लीफ़ें शमा वाला क्या जाने। अक्बर ने कभी अंधेरा नहीं देखा था उसने दीन इस्लाम को हटाकर दीन इलाही बहुत से अदयान का मज्मूआ चलाना चाहा था। जैसे लोग कहते हैं कि हर मज़हब का अच्छा अमल ले लो, हालांकि हर मज़हब की अच्छाई इस्लाम में है उसने दीन इलाही रखा था। आज हुकूमत इलाही आ गई, अक्बर ने यह कहा था कि भाई बकरी से ज़्यादा कुव्वत शेर व भेड़िए के गोश्त में है इसे खाओ।

अक्बर की तस्वीर को हर सुबह सज्दा करो, मुर्दा को जला दिया सीधा खड़ा दफ़न कर दिया क़िब्ले की तरफ़ पैर करके दफ़न करो। मरते वक़्त एक दम अंधेरा हो गया, उसने अंधेरा कभी नहीं देखा था, घबरा गया उलेमा को बुलाया, बीरबल से बात करनी पसन्द की। एक आलिम से कहा मैं क़ब्र के अंधेरे से में कैसे गुज़ार कर लूंगा तो उसने कहा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम ने 23 साल रहकर इस दुनिया में इतनी रोशनी फैला दी है। तो क़ब्र में हज़ारों साल से हैं न मालूम कितनी रोशनी फैला दी। उससे इसे इत्मिनान हो गया, इस क़िस्से से साबित करते हैं कि उसने इरतिदाद से तौबा करके सही अक़ीदे पर दुनिया को छोड़ा जिसने भूख अंधरे की तक्लीफ़ न उठाई हो वह क्या जाने, हुज़ूर सल्ल० की भूख अंधेरे की तक्लीफ़ कैसी थी, रोज़ा इस वास्ते रखा गया ताकि मालदार अन्दाज़ा कर ले कि फ़क़ीर भूख से कैसी तक्लीफ़ पाता है इस्लाम ख़्वाहिशों का मज़हब नहीं है बस उस इस्लाम को नया बनाओ, अरे तुम नई जंग चलाओ कि तुम् औरतों से बाग़ों में मशग़ूल रहते हुए लड़वाया या औरतों के साथ नाचते हुए तैरना सीख लो। जैसे जंग तैरना मुजाहेदे वाला है ऐसे ही इस्लाम भी तैश वाला नहीं है मुजाहेदे वाला मज़हब है इस्लाम में कतर बैवन्त न करे खुद को राहत दिखाने की ग़ुलामी से मुजाहेदे की आज़ादी की तरफ़ चल लेकर चल। सवारी खाने की सादगी मिला, खाना वक़्त पर या उन के हां ही है जो हर वक़्त खाएं और जो तीन दिन भूखा रहेगा। उसके खाने का वक्त मुक़र्रर न होगा, जब मिलेगा उसी वक़्त खाएगा मुहम्मद सल्ल० के तरीक़े पर चलने से तक्लीफ़ों को मुंह लगाना होगा। हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत और तक्लीफ़ें लाज़िम व मलज़ूम हैं, पूरी मुहब्बत पूरी तक्लीफ़ों से मिलेगी। तुम अहदना की दुआ में सारे नबियों के तरीक़े पर चलना मांगते हो तो उनके तरीक़े तक्लीफ़ों वाला है। लिहाज़ा जिस इल्म व यक़ीन व नीयत व ज़िक्र, नमाज़ से तुम दीन पर चलोगे उन हसूल

के लिए तक्लीफ़ें उठाओ, ख़ाली धूप में खड़ा होना न खाना महमूद मतलूब नहीं है। अलबत्ता आमाल की मेहनत में धूप में खड़ा होना पड़ा, किसी वक़्त खाना न मिला तो यह हतमी तक्लीफ़ महमूद मतलूब है जो काम दिया गया है उसके लिए घबराहट तक्लीफ़ से छोड़ दो, किसी की तक्लीफ़ की वजह से उस काम के लिए क़दम उठाना छोड़ो। यों न कहो कि मैं गर्मी की वजह से वहां नहीं जाता हूं बल्कि चले जाओ और ख़ुदा से गर्मी की बरदाश्त मांगो। काम के तक़ाज़ों पर चलते जाओ चाहे राहत आए या मुसीबत जो हुज़ूर सल्ल० की सुन्नतों को सामने रखकर चलेगा वह उम्दा खानों और लिबास के इस्तेमाल को अच्छा न समझेगा। अपनी कमज़ोरी की वजह से सुन्नतों पर न चल सकना उज्र बना लिया है, लेकिन सुन्नतों पर चलने का अज्र मिल जाएगा। ऊंट को और हुज़ूर सल्ल० ने मुशक़्क़त वाले खाने को ही अच्छा समझा तक्लीफ़ों पर आने की मेहनत करो, दुआएं ख़ुदा से इस्तिदाद की करो। अगर हम उन सुन्नतों को चाहते रहे इनकी हायात को मांगते रहे तो हम अगर उन सुन्नतों पर न आ सके तो आइंदा ऐसे आएंगे, जो उन सुन्नतों पर चलने वाले होंगे। यहां से रूख़्सत होने वाले यहां के सलाम को यहां की गलियों में भरने को बढ़ाते जाएं, जाने की तैयारी में चीज़ों के लिए सारा वक़्त न लगा दो। चीज़ें हर जगह मिलती हैं इज्तिमाई अमल में सब लगे रहें, एक दो आदमी हर जमाअत के ज़रूरी उमूर की तक्मील में लगे रहें। हमार हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर आना हमारे बस में नहीं इस वजह से मेहनत करके दुआएं ख़ूब करो। अरबों में इस्लातन जफ़ाकशी है इनके ऊपर तैश बढ़ाया जा रहा है इनके लिए भी दुआएं करो। हमारे मदीना के लोगों से जो ताल्लुक़ात हैं उनसे हम खजूरें ख़रीदेंगे, सामान जमा करेंगे, ज़ाती ज़रूरतों के वास्ते उस ताल्लुक़ात को काम में लाते हैं बल्कि उन ताल्लुक़ात को काम में लो तब्लीग़ी इज्तिमआ में इनको शरीक कर लो तो बहुत से क़दम उठ सकते हैं और बहुत से ग़लत फ़हमियां दूर हो

सकती हैं अब तश्कील किसी काम की कर लो क्योंकि 14 जमाअतें रुख़्सती मुसाफ़ा कर चुकी हैं। आठ दस मज़ीद हैं जो रास्ते के मुल्कों में काम करती हुई वापस होंगी, हमारे बाद अब यह रोज़ाना की फज्र वाली तक़रीर सिर्फ़ मदीना वालों के लिए हो गई और मदीना वाले बहुत कम आते हैं। इसलिए तश्कील न करो अरे नहीं अक्सर लोग जमआतों में नहीं जा रहे हैं जो कम वक़्त लगा रहे हैं उनको वक़्त व माल बढ़ाने की तर्ग़ीब दो, बहरहाल तश्कील हर बयान के बाद किसी न किसी तरह होनी चाहिए।

उमूमी बयान न० 6

अभी साइन्स–दां चांद पर पहुंचे नहीं हैं शायद कई बरसों के बाद इस चांद पर सिर्फ़ पहुंच ही सकें

फ़जर के बाद, दिन, जुमेरात, 21, मई, 1964 ई०

ख़ुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

पूछा आ गए सब ? किसी ने कहा आ रहे हैं, फ़रमाया जो तब्लीग़ में आए हैं उनके जमा होने की यह सिफ़त है ?) अमल तो बहुत सारे हैं, इंसान की चौबिस घंटे की ज़िंदगी जिन हालात में गुज़रती है उन तमाम हालात में पूरे जिस्म के लिए आमाल तै हैं। हालात चाहे फ़क्र के हो या ग़िना के, सेहत के हो या बीमारी के सारे मसअलों के हल करने के लिए हज़रत मुहम्मद सल्ल० वाले आमाल हैं जैसे हुज़ूर सल्ल० के जिस्म का एक एक हिस्सा सारे आलम से क़ीमती है ऐसे ही उस ज़मीन व आसमान से जितनी चीज़ें, जहाज़, रेल, राकेट, वग़ैरह तैयार हो रही हैं उस सबसे ज़्यादा क़ीमती है। हुज़ूर सल्ल० के हिस्से के आमाल में हर एक अमल, एक अमल पर सातों ज़मीन व आसमान से ज़्यादा मिलेगा, उन आमाल मुहम्मदी की ख़ुदा के हां बहुत ही क़ीमत है, गुज़रे हुए आमाल अंबिया अलैहिस्सलाम की क़ीमत बहुत बढ़ गई है जो उन आमाल को हुज़ूर सल्ल० ने कर लिया। पहले अंबिया की सतह की मेहनत थी अब आख़िर नबी सल्ल० की सतह की मेहनत है। चीज़ों की मेहनत चीज़ों को देखने और सुनने से चलेगी और आमाल के मुनाफ़े पर यक़ीन

ले आने से ज़िंदगी में वह आमाल आ जाएंगे यह ख़ास आमाल ख़ास यक़ीन क़लब से ही चलते हैं। बे–क़ीमत पुराना माल व चीज़ें से बे–क़ीमत और कव्वी आमाल नहीं चल सकते हैं। दुनिया भर की तमाम चीज़ें आमाले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने क़ीमत ही नहीं रखती हैं तो यह आमाल उन चीज़ों से कैसे चलेंगे। दिल का यक़ीन को हिस्सों के आमाल से ज़्यादा क़ीमती है कि क़लब सबसे क़ीमती हिस्सा है इसी वजह से मरते वक़्त जबकि अमल होना बंद हो जाएगा। कोई हिस्सा काम न करेगा तो उस वक़्त दिन की माया ईमान ही को माना गया, दिल का कुरआन यानी सूरः यासीन से इंसान के दिल को कुव्वत दी जाती है इंसान के दिल को सूरः यासीन से इनजैक्शन देना अफ़ज़ल है सारी ईमानियात इस सूरः में है। अगर दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान है अमल एक ज़र्रा भी नहीं है तो कभी न कभी जन्नत में चला जाएगा। आमाल से हमारे अन्दर नूर पैदा करना है, हुज़ूर सल्ल० के आमाल को इख़्तियार करने से तुमने नूर पाकी ख़ुशबू की दौलतें तुम्हारे अन्दर पैदा होंगी। आमाले मुहम्मद सल्ल० न कायनाती नक़्शों से चलते हैं उनसे टूटते हैं बल्कि निज़ाम आलम में तगय्यूर कर देते हैं। अभी तक साइंस–दां चांद पर पहुंच नहीं हैं, शायद कई साल बाद इस चांद में सिर्फ़ पहुंच ही सकें लेकिन ख़ुदा ने आमाल मुहम्मद सल्ल० की क़ीमत को हुज़ूर सल्ल० की उंगली से चांद के टूट जाने में ज़ाहिर किया। नबी मुआजज़ात के लिए भेजे नहीं गए, अख़्लाक़, उलूम इलाही, सदक़ात, इबादात, ईमानिया, अज़्कार इलाही, ख़िदमत ख़लक़ और इंसानी ज़िंदगी की बनने की शक्लों के लिए भेजे गए। मुआजज़ात से दिखाया गया कि यह अंबिया अलैहिस्सलाम मुल्कों व सलतनतों व अहले अमवाल की के आदमी नहीं हैं बल्कि उन ख़ास इंसानों के ज़रिए अल्लाह पाक सारे इंसानों को आमाल का रास्ता दिखाते हैं। मुआजज़ात को नुबूवत की दलील है, मौज़ूअ नुबूवत तो आमाल व ईमान का फैलाना है। जैसे मौज़ूअ वलायत इत्तिबा रसूल सल्ल० और

इस इत्तिबा पर इस्तिक़ामत है। मुआजज़ात नुबूवत की करामत वलायत के सबूत की दलील हैं। आमाल मुहम्मद सल्ल० पर इस्तिक़ामत और इन्ही आमाल पर मरने की सही वलायत है لا تموتن الا وانتم مسلمون, ऐसा न हो कि तुम बीमारी की वजह से सेहत के हासिल करने के लिए दवाखाने में हराम दवा इस्तेमाल न कर लो। हराम औरतों को हाथ न लगाने दो, कहीं हराम अमल की हालत में मौत न आ जाए। अमल मुहम्मद सल्ल० को छोड़कर जीना नहीं है बल्कि आमाल मुहम्मद सल्ल० पर मरना है। हज़रत उस्मान रज़ि० ने आमाल मुहम्मद सल्ल० पर मरना दिखाया है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमा दिया था कि तुमको खिलाफ़त का लिबास मिलेगा। लोग उसे तुमसे उतारेंगे और तुम उतारने न देना, वरना لا تدخل الجنة حتى يلج الجمل فى سم الخياط दूसरे वक़्त में फ़रमा दिया देखना, किसी मुसलमान को न मारना, न किसी को क़त्ल करने की इजाज़त दी और न किसी को ख़लीफ़ा बनने दिया। अगर खिलाफ़त दे देते तो भी इनकी जान बच जाती और अगर हज़रत अली रज़ि०, और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को मारने और मुक़ाबला करने की इजाज़त दे देते तो पंद्रह सौ बाग़ी पांच मिनट में अहले मदीने का हाथों ख़त्म हो चुके होते। जैसे हुज़ूर सल्ल० के बदन का कुरता सारे सामानों से ज़्यादा क़ीमती है ऐसे ही हुज़ूर सल्ल० के जिस्म के आमाल में से हर अमल की क़ीमत सातों ज़मीन सातों आसमान नहीं बन सकते हैं, दिल का यक़ीन आमाल से पहले और अफ़ज़ल है। ईमान का हौल बनाने से ईमान बनेगा, जिनती मेहनत क़माई, दुकान, दुनिया में ज़्यादा लगेगी, उतना ही यक़ीन ख़राब होगा। माल व चीज़ों की मेहनतों से निकलकर आमाल की मेहनत में कूद पड़े, इस मेहनत से यक़ीन व आमाल व इबादात व अख़्लाक़ व ज़िक्र व दुआ का माहौल तैयार होगा। फिर इस माहौल के तैयार हो जाने के बाद कमज़ोर से कमज़ोर आदमी भी इस माहौल से चल पड़ेगा। इसी वजह से ख़ुदा ने सबसे ज़्यादा क़ीमती मेहनत को बनाया है एक आदमी के अमल का नाम माहौल नहीं है बल्कि मज्मूआ के

आमाल का नाम माहौल है। माहौल के ख़िलाफ़ में अमल करना बहुत शाक़ हो जाने की वजह से बहुत अज्र दिलाता है और अगर ज़िक्र व अमल पर तक़रीरें करने वाले और इसी मौज़ूअ पर लिखने वाले आमाल का माहौल तैयार न करें तो यह आमाल का माहौल नहीं है अमल को इसके माहौल के बग़ैर करे तो वापस भागने वाले लश्कर में से जम जाने वाले की तरह होगा। सब उस वक़्त ईमान व इल्म व दुआ व नमाज़ सीखने सिखाने वाले बनेंगे, जबकि उन आमाल का माहौल तैयार हो, इसके बाद अख़्लाक़ तैयार हो सकेंगे। आमाल का माहौल बनाने के लिए कुछ आमाल दे दिए गए उन्हें आम करने की मेहनत करोगे तो आमाल का वह माहौल तैयार हो जाएगा। जिसमें लोग बग़ैर माल के और हुकूमत के अमल करने लगेंगे, यों ने कहेंगे, नमाज़ व इल्म में लगने, ज़िक्र करने, अख़्लाक़ के इख़्तियार करने से ज़्यादा दर्जा है, इन्हीं आमाल को आम करने की मेहनत का। उम्मतों का रूख़ फिरता था नमाज़ों का ख़ुशूअ उनमें ज़िंदा होता था उनके अख़्लाक़ दुरूस्त होते थे, सब अंबिया की मेहनत से होता था। हज़रत मूसा अलै० व हज़रत हारून अलै० की मेहनत से इनकी क़ौम में भरोसा नमाज़ एतमाद वाली अल्लाह वाले आमाल तैयार हुए जिसके बाद ख़ुदा ने बग़ैर नक़्शों के उनको ग़ालिब कर दिया। सब कुछ रखने वाले फ़िऔन को ख़त्म कर दिया या फ़िऔन के पास हवाई जहाज़ था, फिरऔन के सामान में हवाई जहाज़ के हिस्से भी थे। पहले वाले आदमी कुछ समझदार थे, इंसानी ज़िंदगी को सामने रखकर चीज़ें चलाई जाती हैं इस ज़माने के बवाक़ूफ़ ज़ाती नफ़े को सामने रखकर चीज़ें चलाते हैं क्योंकि सौ फ़ीसद सबको जहाज़ नहीं मिल सकता है हवाई जहाज़ को देखकर लोगों में इनका शौक़ उठेगा इक़तसादियात को ख़राब कर के जहाज़ ख़रीद सकेंगे। पहले लोगों ने इन चीज़ों से ख़ुद नफ़े उठाकर अलग रख दिया, पहले ज़माने की ज़िंदा सवारियों से जहां सवारी का नफ़ा मिलता था वहां इन जानवरों की नसल दर नसल चलती थी जानवरों के खिलाने की

भी सहूलत थी। इस वजह से किसी को जानवर हदिया करना आसान था लेकिन इस ज़माने में किसी को कार देना इसके ख़र्च को बढ़ा देना है बाहदशाह ने देहली में नहर बनवाई, नहर के दोनों तरफ़ बाग़ात फिर दोनों तरफ़ बाज़ार व बस्तियां इसी शहर के सबसे बड़े शाही हकीम ने सौग के कपड़े पहले लिए जश्न में इनको भी बुलाया। तो पूछा कि यह सोग वाले कपड़े कैसे ? कहा मैंने देहली वालों की सेहत ख़राब कर दी इसका इलाज यह है कि मिर्चे लगा दो। आज मिर्चे बाक़ी रहे गई जिस नहर की वजह से मिर्चे चली थीं। वह नहर ख़त्म हो गई आज की चीज़ों की फ़रावानी अवाम के सारे माल को ख़ींचती चली जा रही है फ़िऔन के पास सब कुछ है बनी इसराइल के पास कुछ नहीं है। लेकिन वह यक़ीन व अमल मूसवी मेहनत से हासिल कर चुके हैं जिस पर खुदा ने अपनी नुसरत उतारी इस ज़माने में हवाई जहाज़ बनाकर रख दिया लेकिन अब सारी दुनिया में ऐसी तेज़ सवारियां तख़रीब के ही काम आ रही हैं। ख़्वाहिशों को जल्द पूरा कर लेना मक्सूद है आमाल चीज़ों न चलेंगी बल्कि दिल के यक़ीन से इल्म व ज़िक्र की फ़िज़ाएं मेहनत से बनेगी। मेहनत की सबसे ज़्यादा क़ीमत है अपनी ज़ात से अमल करने वाले की जन्नत घटिया बनाई है जिसका एक फल सारी दुनिया से ज़्यादा क़ीमती है लेकिन मेहनत करने वालों के लिए खुदा ने ख़ास जन्नत बनाई है जैसे दुनिया की हर चीज़ आम तरह से और इंसान को ख़ास तरह बनाया, ऐसे ही इस जन्नत को ख़ास तरीक़े से बनाया। अब मेहनत के दायरे अलग-अलग होंगे, एक शहर एक ज़ुबान एक मुल्क लेकिन हुज़ूर सल्ल० के दायरे की वुसअत का अंदाज़ नहीं हो सकता है सारे नबियों से मज़ीद मेहनत की सूरतें भी हैं सारे शहरो, सारे मर्द, औरतों में मेहनत हुज़ूर सल्ल० वाली है। हुज़ूर सल्ल० के आने के बाद मेहनत मक़ामी भी थी इस मेहनत को चलाने के लिए आलमी हरकत थी जिस मेहनत से अल्लाह के हाथ की बनी हुई। ख़ास जन्नत मिलेगी, क़सम आला की जन्नत 25 लाख हूरों वाली होगी। सबके कम सत्तर

के अदद है। हज़रत उमर रज़ि० उसी मस्जिद में दौरे ख़िलाफ़त कहने लगे, जन्नत में एक जगह है जिसके पांच दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े पर पांच हज़ार हूरें हैं, उन हूरों के यह दरवाज़े छोटे-छोटे न होंगे चारों तरफ़ इमार होगी, बीच में बाग़ या बग़ीचा होगा। उस इमारत के 500 रूख़ हुए, हर दरवाज़े की पांच हज़ार हूरों में हर के हूर के पास मंस्तिक़ल बाग़ात होंगे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा यह जन्नत नबी को मिलेगी, फिर क़ब्र अतहर की तरफ़ इशारा करके कहा फिर कहा या सिद्दीक़ रज़ि० को मिलेगी। हज़रत अबूबक्र रज़ि० की क़ब्र की तरफ़ इशारा करके कहा هنيا لك يا صاحب القبر फिर कहा शहीद को मिलेगी अपनी तरफ़ इशारे करके कहा وانى لك الشهادة अगर तुझे शहादत मिलनी होती तो यहां न होता। सारे अरब में हर एक इन्हें उनकी ख़िदमत ख़लक़ की वजह से चाहने वाला था, फिर कहा अल्लाह को अगर तुझे शहादत देनी होगी तो मैदाने जिहाद से शहादत को इस मज्सिज की तरफ़ ही खींचकर ले आएंगे। सारे सहाबा उन्हें हैरत से देखते जब यह दुआ मांगते وفاة فى مدينه رسولك وشهادة فى سبيلك क्योंकि उन दायरे में किसी का क़त्ल मुम्किन नहीं था, हज पर वापसी परे रेत पर लेटे हुए आंसू बह रहे थे कि ऐ ख़ुदा मेहनत मुझ में न रही। उम्मत बढ़ गई है अब मुझसे इसका संभालना मुश्किल है मुहम्मद इब्ने मुसलैमा को पब्लिकी तौर पर माल तक़्सीम करने के लिए भेजा। उमर रज़ि० पेड़ की नीचे लेटे थे कि एक बुढ़िया ने आकर कहा उमर रज़ि० ने माल इब्ने मुसलैमा से तक़्सीम कराया है और मुहम्मद ने मुझे कुछ न दिया। उमर रज़ि० ने कहा, बुढ़िया से इब्ने मुसलैमा को बुलाकर लाओ, बुढ़िया ने कहा अरे तो यहीं बातें बना रहा है। तेरे कहने से मुहम्मद यहां कहां आएगा ? मुहम्मद इब्ने मुसलैमा आए तो उस और तो जवाब क़ियामत को दे देगा या नहीं ? और दोनों रोने लगे, फिर एक ऊंट और बहुत से नक़दी लाकर दी और कहा मुहम्मद इब्ने मुसलैमा जब

आएंगे, तो तुझे घर बैठे दे दिया करेंगे। जान लगाकर उमर रज़ि० ख़िदमत किया करते, रातों को फिरना, अजनबी मुसाफ़िर का क़िस्सा दरदाज़ा वाला। उमर रज़ि० की यह बीवी फ़ातिमा रजि० की लड़की हसन व हुसैन की बहन थीं जिनसे इस वजह से निकाह किया था कि क़ियामत को शायद हुज़ूर सल्ल० अपने इस रिश्ते की लाज रखकर शफ़ाअत कर दें। हज़रत उमर रज़ि० को देखना औरतों को बच्चों के साथ कि ख़ाली पानी की देगची चूल्हे पर अपने कंधे से गल्ले की बोरी लाते नक़्दी भी दी। अपना हाथ से पकाकर खिलाया, औरत ने कहा तूझे अमीर बनना चाहिए था, उमर रज़ि० को आख़िरत में पकडूंगी। उमर रज़ि० ने कहा क्यों ? इसलिए कि हमारा आदमी अल्लाह के रास्ते में मर जाएं वह हमारी ख़बर न ले। इस तरह जान के ख़िदमत करने वाले की रिआया बढ़ी तो हज से वापसी में रो रोकर दुआ मांगी, शहादत व वफ़ात मदीना दे। पहले सफ़ में सारे मुहाजिरीन व अंसार हैं, क़िरात सुनी लोगों ने, ची सुनी गई, अब्द अस्वद ने मुझे क़त्ल कर दिया। हज़रत इब्ने औफ़ को इमाम बना दिया, हज़रत उमर ने अपनी शहादत को अल्लाह से मांगा, नसरानी के हाथों क़त्ल हुए, मेहनत करने की तीन क़िस्में हैं, नुबूवत, शहादत, सिद्दीकियत, नुबूवत तो किसी को मिलेगी नहीं, अलबत्ता, सिद्दीकियत पहला नम्बर है , शहादत नम्बर दो पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० व मुहम्मद सल्ल० में ख़ास तताबुक था दोनों में एक ही बात आती। हज़रत उमर रज़ि० की राय कुरआन के मुताबिक़ हुआ करती थी, नम्बर एक मेहनत है कि माल व जान सारा लगा दिया हज़रत अबूबक्र के तबूक के मौक़े पर हज़रत उमर रज़ि० ने सोचा इस दफ़ा फ़राख़ी है, हज़रत अबूबक्र रज़ि० से आगे बढ़ जाऊंगा। आधे का माल की गठड़ी ख़ुशी से लाकर दिया, हुज़ूर सल्ल० ने पूछा तो जवाब दिया कि आधा माल छोड़ आया, फिर अबूबक्र रज़ि० छोटी से गठड़ी लाए और घर अल्लाह और रसूल सल्ल० को छोड़ आए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया مـــابين इस दिन

منزلتكما كمثل مابين كلمتيكما

हज़रत उमर रज़ि० ने क़सम खाई कि आज से तुझसे आगे बढ़ने की कोशीश ही न करूंगा। उसी मिम्बर पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि उमर रज़ि० ने मुझसे बयान किया कि जब भी अबूबक्र रज़ि० से आगे बढ़ने की कोशीश की लेकिन हमेशा वही आगे बढ़ जाते। एक दिन फ़जर के बाद हुज़ूर सल्ल० ने पूछा किसने रोज़ा रखा है ? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा इरादा था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा मैंने रखा है फिर फ़रमाया किसने अयादत की ? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, जाकर अयादत करेंगे हज़रत अबूबक्र ने कहा मैं इब्ने औफ़ की अयादत कर आया हूं फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया किसने सदक़ा किया ? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा अब जाकर करेंगे। हज़रत अबूबक्र ने कहा मैं आ रहा था, लकड़े के हाथे लेकर फ़क़ीर को दे आया, फ़रमाया जो इतने आमाल करे वह जन्नती है। और कमा क़ाल रसूल सल्ल० सिद्दीक़ और शहीद की 5 लाख हूरों वालीं जन्नत मिलेगी। आमाल का रूख़ माल, दुकानों, बाग़ात से क़ायम नहीं होगा बल्कि ईमाननियात, मुग़ीयात के तज़्किरे, ज़िक्र, नमाज़, दावत से क़ायम होगा। गुज़रे हुए तमाम अंबिया को मेहनत की जितनी शक्लें दी गई थीं वह सब मज़ीद के साथ हज़रत मुहम्मद सल्ल० को दी गई कि फिर फिरकर सारे आलम में मेहनत करो। जो ज़्यादा मेहनत करेगा वह अल्लाह से इतना ज़्यादा ही लेगा, मदीना में रहकर आमाल मुहम्मद सल्ल० से मुनासबत हासिल की जाती है इस मदीना में खुद मेहनत थी यहां से सारे अरब के ज़ज़ीरे के तरफ़ नक़ल व हरकत चलाई। आलम के मुल्कों में ख़तों से दावत भेजी, कुछ उन मुल्कों को रहने वाले इस्लाम में दाख़िल हुए। क़ैसर व किसरा के ब्लाकों के मुस्लिम होने की शुरूआत दौर नुबूवी में हो गया। फ़िरौज़ दैलमी वग़ैरह यमन में अबनउुलमलूक में से थे। क़ैसर का क़िस्सा सबको कमरे में बंद करके बात करने का, सिर्फ़ मुल्क के निकल जाने के ख़तरे से हिरक़्ल न माना। हुज़ूर सल्ल० के ख़त उसने चूमा। उसने सबसे बड़े पादरी की तरफ़ क़ासिद रसूलुल्लाह सल्ल० को भेजा तो

वह मुसलमान हो गया, आखिर इतवार के दिन को निकलना छोड़ दिया तो लोगों ने उसे ज़बरदस्ती क़त्ल कर दिया, दोनो ब्लाक में इस्लाम में दाखिला शुरू हो गया था। तक्मील सहाबा रज़ि० ने की अगर बेरूनी मक़ामी का हक़ अदा कर दें तो 25 लाख हूरों वाली जन्नत मिलेगी। दोनों मेहनतों का हक़ अदा होता है तबअी तक़ाज़े को मेहनत के तक़ाज़े के सामने कुरबान कर दो। माल व जान के ख़र्च करने में यही मिज़ाज बनाओ, ज़ाती ज़िंदगी, कारोबार घर-बार में सारा बिगाड़ मंज़ूर है। लेकिन इस मेहनत का तर्क मंज़ूर नहीं है, तबअी तक़ाज़े और मेहनत के तक़ाज़े में तकाबिल न हो तो आसान है। ज़ाती मसअले बिगड़ेगे कभी ठीक होंगे, हज़रत मुहम्मद सल्ल० वाले मेहनत के मसाइल हर हालत में बनाओ, हर हाल में लगने वाले बन जाओ। यक़ीन हो कि हम मेहनत करेंगे, ख़ुदा अपने कुदरत से सारे दीन को ज़िंदा करेंगे, मक़ामी मेहनत में पूरे तौर पर लगने की कोशीश भी ख़ुदा से मांगो। जैसे मदीना में सौ फ़ीसद आदमी मक़ामी मेहनत करने वाले बेरूनी नक़ल व हरकत में चलने वाले, जब भी तक़ाज़े बरूनी मेहनत का आता फ़ौरन उस पर चल देते न हमारे सामने ये मस्अले आते हैं कि मज़ीद क़ियाम जमाअत करती तो सौ की जगह हज़ार मुसलमान हो जाते। आमाल का जब रूख़ पड़ेगा तो यहूदियों और नसरानियों के दांव-पेच ख़त्म हो जाएंगे। हिन्दु व वैत का शर व फ़साद ख़त्म होगा, फिर कोई मज़हब हमारे मज़हब का मुक़ाबला नहीं कर सकेगा। आमाल का माहौल मेहनत करने वालों से बनेगा, ख़ुदा ने मेहनत दी है हर वक़्त बेरूनी नक़ल व हरकत को वजूद में ले आना है। माक़मी मेहनत का माहौल बनाना, सौ फ़ीसद मस्जिदों के अन्दर के आमाल में लगने लगेंगे। अब अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से बाहर के इलाक़ों के लिए जमाअतें बन गईं, 14 रवाना हो चुकी हैं, 6, 7 मज़ीद चली जाएंगी, असली जगह मेहनत की मदीना है मक्का में हज़रत मुहम्मद सल्ल० अबूबक्र रज़ि० इब्ने औफ़ रज़ि० इब्न अफ़्फ़ान रज़ि० ने मेहनत की। उमर रज़ि० के बारे में

दो रिवायत हैं कि चालीसवें मुसलमान में या एक सौ बीसवें मुसलमान हैं दोनों रिवायतों को जमा यह है कि एक सौ बीस ही में इस्लाम में चूंकि हिजरत हब्शा में चले गए थे इसलिए बाक़ी के लिहाज़ से चालीसवें थे। हुज़ूर सल्ल० ने मस्जिद को आते ही बनाया, सारे मस्जिद के लिए पत्थर ढोकर ला रहे हैं। हज़रत उस्मान नफ़ीस लिबास पहनने वाले एहतियात से पत्थर उठाकर लाते तो अपने कपड़ों की हिफ़ाज़त का ख़्याल रखते। हज़रत अली रज़ि० सीधे-साधे कंधे पर पत्थर उठाकर ले आते, सारी धूल-मिट्टी जिस्म पर गिरती इस पर हज़रत अली रज़ि० ने दो शेर कस दिए। हज़रत उस्मान रज़ि० ख़ामोश रहे, लेकिन जब दूसरों ने भी इन शेरों को दोहराना शुरू कर दिया, हज़रत अम्मार रज़ि० ने शेर कहे तो हज़रत उस्मान रज़ि० ने पत्थर मार दिया। इस पर हुज़ूर सल्ल० नाराज़ हो गए, लोगों ने कहा, ऐ अम्मार तू ही हुज़ूर सल्ल० को ख़ुश करेगा, चुनांचे वह गए और अर्ज़ किया आपके साथी मुझे मारना चाहते हैं। मुझ पर दो पत्थर अपने ऊपर एक पत्थर रखते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने शफ़क़त से हाथ फेरा इससे पहले मुस्कराए, फ़रमाया تقتلك الفئة الباغية

वक़्त तक़ाज़े में सबका लग जाना माहौल है। मदीना आते ही मस्जिद बनाने का तक़ाज़ा था तो मर्द औरत सब लगे ऐसे ही सब तमाम आमाल में लगते। इसी मस्जिद में माहौल बना तो इस माहौल को मस्जिदें बना बनाकर क़ायम करने के लिए फिरना था इनकी दुआओं पर ख़ुदा नबियों की तरह ज़ाहिर के ख़िलाफ़ करेगा अब बाहर जाने वालों में इज़ाफ़े की ज़रूरत है। ज़्यादा से ज़्यादा मिक़्दार सहाबा की चालीस हज़ार है, तबूक में 40, 70 हज़ार की रिवायतें और भी हैं। मुसलमान की मौजूदा तायदाद के लिहाज़ से तो अब यह फिरने वाले बहुत कम है बाहर के लिए मज़ीद तैयार करते रहें मदीना में हर अमल की क़ीमत ऊचीं उठती है। जब तक यहां रहना हो कोशीश करो कि यहां वाले इस काम को करने लग जाएं, तो फिर घर बैठे यहां की मेहनत के इनाम हासिल कर सकोगे

ये ज़बरदस्त ज़रिया आख़िरत बनेगा, हमारे सामने दो बातें थीं कि जो लोग हर वक़्त हर अमल में आगे, उन्हें जहां चाहों डाल दो, उनमे से 5, 6 जा चुके हैं। दो–तीन में बाक़ी चले जाएंगे, अब यही गश्त तालीम व दावत को मुस्तऐदी से चला रहे थे। अब इनके जाने के बाद कोशीश करो कि जितने बाहर जा सकें इन्हें बाहर भेज दो और दूसरी कोशीश करो कि यहां मदीना वालों को इस काम में लगाते जाओ। इस मेहनत का माहौल बनाओ, यहां से उठने वाली हर चीज़ आलमी बनेगी, इस मेहनत वालों की दुआएं कुबूल होंगी। जिससे सारे ब्लाकों में मेहनत की हवा चलेगी, आज बाहर वाले यहूद व नसारा इसके आला कार हैं, ये मुसलमान हो सकते हैं शैतान नहीं हो सकता है, शैतान की कोशीश यह है कि दुनिया भर के खेल, सीनेमा, पार्क यहां आ जाएं, जिससे हज़ार साला मामूली असर, इशा तक मस्जिद हराम व मस्जिद नुबूवी में रहने का ख़त्म हो जाए। पूरी दुनिया अपनी मेहनत कर रही है इसके चलाने में हुकूमतें यहां के अफ़राद को हज़ारों रूपये ख़र्च करके अपने रंग का बना रही हैं मदीना में हर तरफ़ से ग़रीब फ़क़ीर, अमीर व वज़ीर आते हैं, आज तमाम शैतानी ताक़तों और मुसलमान के जानी दुश्मन पानी की तरह पैसा बहाकर यहां ग़लत माहौल बना रहे हैं। जिसके दिन में ग़ैरत में है वे अब ग़ैरत खाए, यहां इस्लामी माहौल बनाए दूसरे मुक़ाबिल माहौल को ख़ुदा कहर से ख़त्म कर देंगे। तुम 10, 10 की जमाअतें बना लो जिस जमाअत की जब जहां की ज़रूरत पड़े, फ़ौरन उसी वक़्त इस जगह जमाअत चली जाए, आख़िरी जाहाज़ से जाना तै करो, ताइफ़ व बद्र में जमाअतें जाएं। बाहर की मेहनत को और बढ़ाओ, मिस्र, शाम, अर्दन, लिबया, सूडान में अरबी न थी, लेकिन इनमें अरबी न थी। लेकिन इनमें अरबी का वजूद वहां सहाबा रज़ि० के मज्मूआ से दीन के आने को ज़रिया है, बिला अरबिया में सूरत व लिबास व ज़ुबान अरबी है, नसरानियों की भी यह है। सबूत कुव्वत निस्बते मुहम्मदी का और यहां वक़्त भी अपनी राय से ख़र्च न करो बल्कि मेहनत में ख़र्च करो। आज नाम लिखाने से सिर्फ़ जमाअतों में मुक़र्रर हो जाने वाले मुसतशना हैं।

उमूमी बयान न० 7

पूरी दुनिया का ज़ोर इस वक़्त यह है कि मक्का और मदीना से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली ज़िंदगी ख़त्म हो

मुहाजिरीन मदीना में नाश्ते के बाद, 21, मई, 1964, ई०

जिन चीज़ों से निकलकर घर बनाया गया उन चीज़ों के वास्ते नहीं बनाया गया। बल्कि इस इबादत के लिए बनाया गया जिससे सारे इंसानी मस्अले हल होंगे, मस्अले कव्वी, इलाक़ाई, शख़्स, आलमी ख़ुदा से ही पैदा होते हैं और इन्हीं के हल करने से हल होते हैं भूख व प्यास ? मस्अला न ख़ुद पैदा होता है न उसे इंसान पैदा करता है न वह हल करता है एक ही ख़ुदा पैदा करते हैं और वही हल करते हैं अब इंसान हल मस्अलों के लिए दो रास्ते इख़्तियार करेगा। उलझे हुए मस्अलों के हल के लिए इंसानी रास्ता अपनी मेहनत को माल के जमा करने चीज़ों की फ़रावनी, उन चीज़ों से मस्अलों हल करने पर ख़र्च करता है, ख़ुदाई रास्ता अंबिया व सहाबा रज़ि० वाला इबादत को दुरूस्त करके माबूद के मर्ज़ी के मुताबिक़ बनाकर माबूद के सामने मस्अलों के पेश करना है। हाकिम महकूम के बिगड़े हुए मस्अलों का ज़माने फ़िऔन में, अकसीरियत अक़लीयत के बिगड़े हुए मस्अले का हल ज़माने नूह में है इसी तरीके से हुआ है। किसी चीज़े के बना देने पर क़ीमत नहीं मिलती है, बल्कि ख़रीदने वाले को पसन्द आ जाने पर क़ीमत मिलती है। जिसके लिए काम किया जाए जब तक उसे काम पसंद न आ जाए उस वक़्त तक क़ीमत न मिलेगी, एक तो यह है कि जैसी आती है

इबादत वैसे ही करते रहना, दूसरा यह है कि इबादत को ख़ुदा का पसंदीदा बनाना। नबी के होते हुए इबादत चलती रहती है, बाद में इबादत ख़ुदा को पसंद आने वाले तरीक़े पर न रहती, मिसाल के तौर पर नबी के मुजस्समे की इबादत शुरू हो जाती। इसराइल ने माबूद नहीं बनाया था लेकिन सिफ़ात पसंदीदगी नमाज़ व दुआ में थीं, न यक़ीन, न नमाज़ वाला ध्यान व नीयत, फिर हज़रत मूसा अलै० व हारून अलै० ने दोबारा मेहनत की नबियों वाले नहज पर नमाज़ को जाए। ख़ुदा ने उसके बाद की दुआ से हाकिम व महकूम वाला मस्अला हल करके आसमान से मन व सलवा उतार दिया। मक्का का शहर और शहरों की तरह आबाद नहीं किया गया कि इसमें भी फ़ौज, पुलीस, मुल्क व माल, चीज़ों के रास्ते से ज़िंदगी बनाई जाए, मुश्रीकों तक का यह ज़हन था कि बैतुल्लाह के पास वही करो जो ख़ुदा को पसन्द हो। कल में सीरत इब्ने हिश्शाम में यह पढ़कर हैरानी में पढ़ गया कि एक बादशाह को उसके हासिदों ने मशिवरा दिया यह कि इस घर को गिरा दे ताकि यह बादशाह हलाक हो जाए। बादशाह ने दो यहूदी आलिमों से मशिवरा किया उन्होंने कहा ऐसा मत करो, वरना तेरी हुकूमत ख़त्म हो जाएगी, एहराम बांध, तवाफ़ और सअी कर, चुनांचे इन हासिदों को बुलाकर क़त्ल कर दिया। यहूदी आलिमों की बात मान ली, उमरा किया, एहराम तवाफ़ के साथ, ख़्वाब में देखा कि बैतुल्लाह पर पर्दा डाला, फिर ख़्वाब में दिखा कि इससे अच्छा डालो, डाला फिर इससे अच्छे का हुक्म हुआ। उस वक़्त उस पर्दे की इब्तिदाई हुई बैतुल्लाह मक्का की तासीन व वज़अ सबसे मुम्ताज़ है कि यहां से वह रास्ते क़ायम हो जिसमें माबूद को राज़ी करके माबूद से मस्अला हल कर दिया जाता है। हज़रत इब्राहीम की दुआ में उम्मते मुस्लिमा है इसका मिस्दाक़ मुहम्मद सल्ल० है, मुहम्मदी दुआए इब्राहीम से आए, इब्राहीम अलै० ने दुआ मांगी थी कि मेरी औलाद में नबियों वाले रास्ते को चलाने वाले पैदा करे। इसके

लिए मक्का बना, न मुल्क व माल का नक़्शा है न जायदाद न बाग़ात, न सड़कें बल्कि यहां ऐसी इबादत तैयार की जाए। जिससे माबूद राज़ी हो जाए और फिर ख़ुदा से मस्अले हर करदा लिया जाए। जिसके लिए मक्का की बुनियाद रखी गई इसी को पूरा करने के लिए मदीना बना है, मुल्क या माल का भी इसे मर्कज़ न बनाया गया, इस वजह से यह कभी हुकूमत का मर्कज़ नहीं है। नुबूवत और इसकी मेहनत वाली ख़िलाफ़त का यह मर्कज़ नहीं है जब मुल्क उज़ूज़ के आने से क़ब्ल इख़्तीलाफ़ी ख़िलाफ़त का वक़्त आया तो अल्लाह ने मदीना की जगह कूफ़ा को मर्कज़ बना दिया, यज़ीद के मुखालीफ़ों ने पहले मदीना को यज़ीद के हामियों से साफ़ कर दिया। लेकिन नतीजे में दस हज़ार बेहतरीन अफ़राद क़त्ल हुए। चौदह सौ बच्चे ज़िना के पैदा हुए मस्जिद में घोड़े बांधे गए। जमाअत व आज़ान का सिलसिला न रहा, सईद बिन मुस्अब रज़ि० रोज़ा से पांच वक़्ता आज़ान सुनते रहे, मुल्क व माल का मर्कज़ न बैतुल्लाह बनेगा न मदीना सारे मस्अलो को इबादत के रास्ते से हल करने का मर्कज़ मक्का है और इसी को नक़ल व हरकत से मुतअद्दी बनाने का मर्कज़ मदीना है। सीरत की किताबों में हिजरत के तज़्किरे की इब्तिदा इससे करते हैं "فلما اراد الله ان يعز الاسلام"

यानी जो आमाल मस्अलों के हल वाले मक्का में इंफ़िरादी थे और इस उम्मत को ख़ुदा ने इज्तिामे पर उठाया है इस वजह उन आमाल को इज्तिमाइ रंग देने के लिए मदीना की हिजरत का हुक्म दिया गया कि इस मेहनत को मदीना से दुनिया में भेजो। मदीना मुनव्वरा की तासीन दीन के उन्वान पर थी। बहुत मामूली सी बस्ती थी हज़रत मूसा अलै० जब बनी इसराइल की मुसीबतों से निकल जाने के बाद क़ौम के सत्तर हज़ार अफ़राद को लेकर हज को आए थे तो वापसी में या आने में मदीना मुनव्वरा के पास से गुज़रे तो हर नबी हुज़ूर सल्ल० के सारे हालात अपनी उम्मत को बताया था, इसी वजह से हज़रत मूसा अलै० ने यहां की बाग़ात

वाली हालात को देखकर उन्होंने आपस में बात की यही जगह है जहां हज़रत मुहम्मद सल्ल० हिजरत करके आएंगे। हज़रत मूसा अलै० हिजरत करके आएंगे, हज़रत मूसा अलै० से पूछा तो उन्होंने तस्वीब की। उन्होंने इजाज़त मांगी कि हम यहां ठहरेंगे ताकि मुहम्मद सल्ल० की नुसरत कर सकें, चार सौ उलेमा यहूद यहां ठहर गए। हुज़ूर सल्ल० बाद में आए, इनकी नुसरत करने वाले पहले आए, नसल बाद नसल मरने से पहले ख़त लिखते चले गए कि ऐ मुहम्मद सल्ल० हम तुम पर ईमान ले आए। ऐ हमारी औलाद मुहम्मद सल्ल० का साथ देना, यहूद आते रहे बाद में खुदा ने क़ौम सबा में खज़रज व औस को इसतरारी तौर पर मदीना की हिजरत करने पर डाल दिया आजकल के ज़माना की तरह क़ौम सबा ने पानी पर बांद से कंट्रोल कर रखा था। उन्होंने देखा कि चूहे इस बांध की कटाई करने में लगे हुए हैं, इन्होंने महसूस किया कि ख़ुदा का अज़ाब आने वाला है इस बांद के टूटने की सूरत में। अब इलाक़ा छोड़ने और सामान बेचने के लिए क़ौम इजाज़त न देगी और यह सरदार थे, इन्होंने आपस में मश्विरा किया कि क़ौम के सामने ऐ मेरे भतीजे मेरी तेरी तेज़म ताज़ी हो। फिर तू थप्पड़ मार दिजियो, मैं इसका बदला तूझसे तलवार से ले लूंगा, तो क़ौम तेरी हिमायत करेगी तो मैं कहूंगा जिस जगह मेरी बे–इज़्ज़ती भतीजे से हो मैं बदला न ले सकूंगा। मैं इस जगह नहीं रह सकता और मैं चल दूंगा तुम यह कहकर चल पड़ना कि मैं तो चचा के साथ जाऊंगा, चुनांचे ऐसे ही हुआ। चचा भतीजे अपना सब कुछ बेचकर चल पड़े औस व खज़रज मदीना मुनव्वरा में उतर गए हमैर यमन में और ग़स्सान मुल्क शाम में बस गए और इनकी बाक़ी क़ौम इस बांध के टूट जाने से हलाक हो गई। कितनी कोशीश कर ली जाए इज्तिमाई कामों में बे–उन्वानियां होती ही हैं, इसी वजह से इंफ़िरादी ज़िंदगी तो वहां मक्का चली, लेकिन इज्तिमाई ज़िंदगी मदीना से चलाई कि यहां बे–उन्वानियों पर पकड़ मक्का से सख़्त नहीं। मदीना के

बनने की ग़रज़ एक ही है, दोनों शहर में हिफ़ाज़त के वास्ते ग़ैबी फ़रिश्ते लगा रखे हैं। मक्का मदीने की हदों से ही बाहर रहेगा दज्जाल, उसके ज़माने में मक्का मदीना में भूचाल आएंगे जिससे ख़राब ज़िंदगी वाले बाहर जाकर दज्जाल से मिल जाएंगें। अब तो बाहर वालों से जोड़ बिठाकर यहां रह सकते हैं, लेकिन एक ज़माने में जो बाहर से जोड़ बिठाने वाले होंगे उनकी कुदरत ही मदीना मुनव्वरा से बाहर निकाल फेंका की। सिर्फ़ अल्लाह वाले रह जाएंगें, मक्का मदीना इबादत की मेहनत के वास्ते हैं इस वजह से दोनों जगह अज्र बढ़ाया गया। मुल्ला अली क़ारी रह० ने मदीना के अज्र को मदीना के अज्र को मक्का से ज़्यादा कर दिखाया है, मक्का मदीना के हालात एक है इसे दूसरे क़िस्म के इंसानों से पाक कर दिया गया। اخرجوا اليهود والمشركين من جزيرة العرب

لايبقى دينان فى هذه الجزيرة हुज़ूर सल्ल० ने मार दिया, या निकाल दिया, फ़त्ह मक्का के बाद अरब जज़ीरा में एक मुश्रिक न था ऐसा मुस्लिम इलाक़ा की हर एक नमाज़ी। मुहम्मद सल्ल० के पीरों इसको लेकर मुल्कों में जाने वाले, बाक़ी तमाम मुल्कों की बक़ा व फ़ना, उरूज व ज़वाल का मिदार हुज़ूर सल्ल० वाला मुल्क है। हज़रत इब्राहीम ने उसे इबादत का मर्कज़ बनाया हज़रत मुहम्मद ने उस पर जान माल लगाकर, अब यहां वालों की महबूबियत व मरजीअत मिलेगी। दुनिया की नेमतें इनकी तरफ़ खीचेंगी, अगर वह अपने मौज़ूअ इबादत पर मेहनत कर लें, मौज़ूअ पर मेहनत करने वाले चाहे थोड़े हों, ग़ैर मौज़ूअ पर मेहनत करने वाले ज़बरदस्त जत्थों पर कुदरत से ग़ालिब आ जाएंगे और मुसलमान इबादत के रास्ते से कामियाबी लेने की मेहनत छोड़कर मुल्क व माल वाले रास्ते से ज़िंदगी बनाने में लगा हुआ है। मुल्क व माल ही में इसे मस्अलों का हल नज़र आ रहा है, इबादत व दुआ से मस्अलों का हल ज़हन में नहीं रहा। मुश्रिकों, मुन्किरी, यहूद व नसारा ने उसे हर तरफ़ से घेर लिया, उनका काम है मुसलमान को ईमान से

हटाना हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी में ग़लत–फ़ह्मी पैदा करना, सहाबा के तरीक़े से हटाना अब इस के असल मक़्सद को मालूम नहीं कर रहे हैं। अलबत्ता इसका समरा महसूस कर लेते हैं, इनकी पहली चीज़ यह है कि हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर चलने वाला न रहे इस वजह से वह अपने सरमाया की पूरी मिक़्दार ख़र्च करदे अपनी मुआशरत में लेते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने तो इस शहर में वह मुआशरत तैयार की भी जिससे हर–हर अमल में मुसलमान तमाम आलम की क़ौमों से मुमताज़ हो गए थे। गिज़ा, कमाई, लिबास, हुकूमत, मकान के तरीक़ों में अलग–अलग हो गए थे, यह मुआशरत चलती है इस्लामी माहौल से इस्लाम का हर अमल कुफ़्र की अमल से मुक़ाबिल है। ग़रीबी मुक़ाबिल है किसरा व क़ैसर के बंगलों व मुहल्लों व बाग़ात के झोंपड़े से मुक़ाबिल थे उनके मकानों के बोरिए मुक़ाबिल थे उनके क़ालिन के, हुज़ूर सल्ल० ने महफ़ूज़ व महतात कर दिया कि ग़ैर मुस्लिमों से इतनी दूर आबाद हो कि उनकी आग नज़र न आए, उनमें रहने वाले के हम ज़ामिन नहीं। इस वजह से सहाबा रज़ि० जहां भी जाते थे अपना माहौल इकट्ठा रहकर बनाते, मस्जिद के इर्द–गिर्द ख़ेमे और झोपड़े होते मिस्र को फ़त्ह करके नया शहर बनाया उस ज़माने में नया शहर मग़िरबी तमद्दुन के एतबार से बनता है। सहाबा रज़ि० नया शहर बनाते अपने तमद्दुन से जिसमें बोरिए, झोंपड़े, मस्जिदें हैं हर–हर क़दम पर सहाबा किराम हुज़ूर सल्ल० के हुक्म को देखकर चलाते। मुसलमान सारे आज़ा के लिए तरीक़ा लेकर उठा, आज इस्लामी कलचर नहीं है, हालांकि इस्लामी तौर–तरीक़े फ़ैसला करने, कपड़े बनाने, मकान व सवारी तैयार करने में मुसतामिल हैं। हम तो अपने हाथों से उस मुआशरत को ख़त्म कर चुके, न लिबास व सवारी वैसी, न फ़ैसले व खाने वैसे, माहौल हमारा ऐसा टूटा कि मुसलमान पन योरीश करने वाले मुन्किरीन, मुश्रिकों यहूद व नसारा सब मुसलमानों को अपने माहौल में लेते हैं। जिससे मुसलमान उनके वाले सारे काम ज़िना शराब न

महरम के साथ सुनने बोलने खेलने खाने में लग जाए, मुसलमान अपनी तारीख़ खो बैठा। इसके सामने हदीसों की तफ़्सील है न सहाबा रज़ि० की ज़िंदगी, ऊंटों की पश्तों पर खजूरें खाते हुए ना तर्बीयत याफ़्ता अफ़राद कैसे तर्बीयत याफ़्ता अक़वामे मुतामद्दना पर ग़ालिब हुए। लेकिन हमारे चालाक दुमश्न ने सारी सीरत ख़ूब महकूक कर लिया है कि किस तौर तरीक़े से मुसलमान ग़ालिब होता है सबसे बड़ा मुकाबिल नसारा हैं, यहूद, हिन्दु इनसे कम हैं। हिन्द में 900 साल ऊपर रहे, फिर इसाई फिर हिन्दु, हमारे इनके मुक़ाबले सैकड़ों मर्तबा हुए हैं, कभी हम ऊपर कभी वे ऊपर। नसरा इन सबकी तहक़ीक़ की तो नतीजा निकला कि मुसलमान अपनी मुआशरत पर था तो हम पर ग़ालिब हुआ और जब ये मुसलमान हमारी मुआशरत ज़िना व औरतों में लगा तो हम उन पर ग़ालिब हुए। ऐसे ही बहुत से फ़क़ीर घराने जूए, ज़िना से, फ़िज़ूल ख़र्ची से, बचते हुए अमीर बनते हैं और ये ही अमीर घराने जूए, ज़िना, फ़िज़ूल ख़र्ची से फ़क़ीर बन जाते हैं। बिल्कुल उसी घर पर सारी उम्मत को समझ लो, किन बुनियादों से यह उम्मत चमकी, जब इस उम्मत में हुज़ूर सल्ल० की थोड़ी से झलकी बाक़ी थी तो उस वक़्त 14 हुकूमतों ने मुसलमानों को ख़त्म कर देने के फ़ैसले के बाद इकट्ठी फ़ौज बनाई हर हुकूमत का वली अह्द भी साथ था। लाख़ों थे, चले तो पहले इस्लामी हुकूमत के बादशाह को उस वक़्त ख़बर मिली जब वह सुन्नतों में तक्बीर के लिए हाथ उठा रहा था। सुन्नत छोड़कर सारे शहर को जमा कर लिया उनमें सहाबा रज़ि० वाली सिफ़ात, मुजाहेदा, जफ़ाकशी, हिम्मत, ईमानदारी थी, किसी बड़ी हुकूमत से मदद न मांगी, किसी से पहले कोई मुहायदा न था। बादशाह ने कहा, हिम्मत करो, इससे पहले की वह हम पर हमला करें हम इनका रास्ता रोक लें, पहले हम थोड़ा से लड़कर पीछे भागें, फिर मैं लौंटू तो तुम मुनज़्ज़म तौर लोटना। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि थोड़ा से लड़कर मुसलमान भागे, नसारा भी पकड़ने

को भागे तो उनकी तर्तीब व तनज़्ज़ुम में फ़र्क़ आ गया। अब मुसलमान लौट तो 14 हज़ार शहज़ादे गिरफ़्तार, बाक़ी हलाक़, बादशाह ने गिरफ़्तार शहज़ादों से कहा तुम्हें इस हालत में क़त्ल कर देना बुज़दिली है। तुम अपने अपने मुल्कों को वापस जाओ मैं हर एक को उसके मुल्क में क़त्ल करूंगा और उसने इसकी क़सम खा ली और अपनी इस छोटी सी फ़ौज से हमला किया और सब शहज़ादे क़त्ल कर दिए। तो आख़िरी हुकूमत ने वही पुरानी चाल चली कि तैमूर लिंक से कहा कि हमारे बाद तेरी बारी है उस बादशाह को ख़त्म कर दे, उस बादशाह ने कितना समझाया कि मुझे उस आख़िरी हुकूमत से लड़ने दे फिर सब कुछ तुझे दे दूंगा या बाद में तुझसे लाडूंगा। लेकिन तैमूर लिंक न माना कि मैं तो तुझसे अभी लाडूंगा, चुनाचं लड़ाई हुई जिसमें बादशाह मारा गया और इस तरह आख़िरी हुकूमत इसाइयों की रह गई, वह थी रूम की।

कुरआन हदीस में मौजूद है कि उनका आपस में लड़ना अज़ाब है उस अज़ाब में आए तो खुदा की नुसरत ख़त्म, तो वह इस तरह से खुदा की नुसरत से महरूम करके ग़ालिब हो रहे हैं पूरी दुनिया को हिला देने वाली इस्लामी फ़ौज से ज़्यादा एक–एक इस्लामी मुल्क के पास है लेकिन मुसलमान मुल्क व माल के रास्ते से चमक नहीं सकता है बल्कि नबियों के रास्ते का है इसी रास्ते से चमकता है। सबसे ज़्यादा सूरः फ़ातिहा पढ़ी जाती है जिसमें الحمدلله رب العالمين है यानी सारी तर्बीयत और सारे हालात की दुरूस्तगी का ताल्लुक़ सिर्फ़ खुदा से है किसी भी छोटी बड़ी मुश्किल से नहीं है जहां से होता हुआ देख रहा हो, वह तो खुदा के बग़ैर कुछ कर ही नहीं सकता है। अलबत्ता ख़ुदा इनके बग़ैर सब कुछ कर देंगे, لارب الاالله यह जज़िया है لااله الا الله यह कलिमा है। शक्लों के बग़ैर अपने इरादे से सेहत दे दें, हिफ़ाज़त कर दें, सारे मस्‌अलों का हल खुदा से है। दूसरी चीज़ है مالك يوم

الدين कियामत को सब नंगे ख़ाली हाथ उठेंगे। सिर्फ़ ख़ुदाके फ़ैसले से ज़िंदगी बनेगी या बिगड़ेगी, चीज़ों से नहीं फ़ैसले से चीज़ें मिल जाएंगी, फ़ैसला आमाल के मुताबिक़ होगा। अब ख़ुदा से होता है उन ही के फ़ैसले से होता है तो रास्ता है اياك نعبدواياك نستعين यानी इबादत व इस्तिआनत के बाद सारे मस्अलें कुदरत ख़ुदा से हल होंगे ونريد ان نمن على الذين استضعفوا मुल्क व माल के रास्ते से बातिल पर छाने वाले फ़िऔनों को ख़ुदा कमज़ारों से ही ख़त्म करते हैं और करेंगे, अबू जहल को हुज़ूर सल्ल० ने इस उम्मत का फ़िऔन बताया है। हुज़ूर सल्ल० अनपढ़ हैं, पढ़ाई से मिलने वाली बातें आपके पास न थीं, सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ से दिए हुए उलूम आपके पास न थे। यह कायनात कुदरत ख़ुदा की दलील है, कुदरत ख़ुदा नहीं है, कुदरत तो ख़ुदा की सिफ़ात में से है, अल्लाह की ज़ात में से सारे अंबिया कुदरत के एतबार से तरीक़े लाए हैं जौनसा हल भी ख़ुदा चाहेंगे ले आएंगे। कमाई, घरेलू ज़िंदगी, मुआशरत का मामलात का इबादत से जोड़ बैठेगा एक हराम लुक्मे से चालीस दिन नमाज़ मुंह पर मार दी जाएगी। हर बुरे अमल से नमाज़ पर असर पड़ेगा, दो पैसे दबाए तो सात–सौ नमाज़ें देनी होंगी असल इबादत

ऐ मुहम्मद सल्ल० ! तुम तो बस मेहनत करके हम से मांगते रहो, आगे हम जो चाहेंगे कर देंगे। इस ज़माने में सारी योरीश इबादत को ख़त्म करने पर है, क्योंकि इबादतों में सारी इजादों को तोड़ है, ये चीज़ें बहरहाल दुनिया में आई और नबियों वाले रास्ते से टूटी। क़ौम सबा का बांद, फ़िऔन की इजादात, जब इबादत को बढ़ा दिया जाता है तो इजादात को बढ़ने में ख़त्म कर देते हैं। हो सकता है सारी इजादात ख़त्म हो जाएं, दुनिया का रूख़ ही दूसरा हो। ख़ुदा ने तो हाईदरोजन क़िस्म के बम बनवा दिए, जिससे ग़ैर मुस्लिम भी मान गए कि उनके चलने से सारी दुनिया ख़त्म हो जाएगी। हम तो अगर इस क़िस्म के मुहल्लिक़ बम भी न बनते तो

भी दिल से मानते कि खुदा जब चाहें ज़मीन के एक झटके से या पानी के एक रो से सबको ख़त्म कर दें, मक्का व मदीना तो इबादत मर्कज़ हैं। किसरा व क़ैसर के दो ब्लाक थे, अरब किसरा ब्लाक का मातहत शुमार होता था इस ब्लाक को ख़त लिखा तो उसने तौहीन करके फाड़ दिया कि ग़ुलामों के ग़ुलाम ने अपना नाम पहले लिख दिया। (माज़अल्लाह) यमन वाले किसरा के मा–तहत थे और हिजाज़ यमन का मा–तहत था। किसरा ने यमन वालों को ख़त लिखा कि ऐसे गुस्ताख़ को पकड़कर लाओ यानी मरकज़ी हुकूमत से हुज़ूर सल्ल० की गिरफ़्तारी का वारंट चला। अरब उस ज़माने में इतने हक़ीर थे कि सिर्फ़ दो फ़ौजी भेजे गए। आज भी अरब हिक़ारत वाले रूख़ पर चल रहे हैं, ताइफ़ में दोनों पहुंचे तो तो सारे मक्का व ताइफ़ वाले ख़ुश हो गए कि अब तो मुक़ाबला बादशाह से पड़ गया है। सारे अरब भी हुज़ूर सल्ल० के साथ होंगे तो भी मुक़ाबला न कर सकेंगे, आख़िर दोनों मस्जिद नुबूवी में पहुंचे, सलाम किया, हुज़ूर सल्ल० ने देखा कि मूंछे लम्बी और दाढ़ी नहीं है। कहा, इसका तुमको किसने हुक्म दिया कहा हमारे रब किसरा ने, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया मुझे मेरे रब ने हुक्म दिया कि मूंछे कतराओ और दाढ़ी बढ़ाओ। उन्होंने वली यमन का ख़त दिया कि किसरा की ताक़त ज़बरदस्त है इसका मुक़ाबला तुम्हारे बस में नहीं, लिहाज़ा सीधे मेरे पास आ जाओ मैं सिफ़ारशी ख़त के साथ किसरा के पास पहुंचा दूंगा कि इनकी इस पहली ग़लती को माफ़ कर दो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जाओ सुबह बताऊंगा, सुबह को दोनों आए तो मेरे रब ने तुम्हारे रब को मार दिया वे दोनों वापस हुए, वालिए यमन को सारे हालात मदीना के सुनाए बहुत मुतासिर हुआ। जिस रात को किसरा के क़त्ल की ख़बर दी? वह रात नोट कर ली, तो किसरा के बेटे का ख़त आया बाप बहुत ज़ालिम था मैंने मश्विरे से क़त्ल कर दिया है और उस अरबी को अब कुछ न कहा जाए। मदीना दुनियाभर की हुकूमतों में तग़य्यूर व

तबद्दुल कराने की जगह है लेकिन अगर रास्ता इसका अपनाया जाए, सारे इंसानों की कोशीश है कि मुसलमान को इबादत व इस्लामी मुसलमान को इस्लामी मुआशरे से निकाल दो। वरना वह ग़ालिब हो जाएंगे, अदाद ने तो हमारी किताबों को पढ़ा और सारी बुनियादें हमारे मालूम कर लीं। हुज़ूर सल्ल० ने रूहानी अमल से माद्दी नक़्शों को ज़ेर किया और हम को ऐसे इख़्तिसार में डाला कि हुज़ूर सल्ल० और साहाबा के अक्सर वाक़िआत क़िस्सों के बजाए। सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल० की क़ौली हदीसों जमा कर दी गई हालांकि यह तज़्किरा करना है कि हुज़ूर सल्ल० का कुरता कैसा था, आप के बाल कैसे थे ? आपका खाना कैसा था ? ख़ुद इबादत है। यानी उन तफ़्सीली हदीसों से जो बात मिलती थी वह न मिली दूसरी तरफ़ माद्दी मुआशरत में ऐसे तफ़्सील कर दी गई कि अपने मुल्कों से लिबास और बालों को मुज़ाहेरा करने के लिए औरतों को दूसरे मुल्क में भेजते हैं कि इन जैसा लिबास इनके तरीक़े पर पहनो। हालांकि यह ख़ुद गन्दे इनकी हर चीज़ गंदी, हर हर तरफ़ से हम पर हुजूम है, हममें से हमारी मुआशरत को निकाल दिया। इससे हम इसी तरह क़त्ल होंगे जिस तरह आद व समूद क़त्ल हुए, कुरआन व हदीस में यह सब कुछ मौजूद है कि क़ौमें एक दूसरे को खाने को पुकारेंगी वजह यह है होगी कि मुहम्मद सल्ल० वाली बातें न रहेंगी। सारे आलम का निज़ाम बनाने वाले इन सबको जानते हैं, हम जानते हैं, अब मुआशरा ख़त्म, हराम व हलाल की तमीज़ नहीं है, मर्दों औरतों का इख़्तिलात, नमाज़ से पहले औरतों से किसी क़िस्म का ज़िना था और बाद में भी ज़िना तो इबादत की तो जान निकल गई। हरमीन मुबारकीन इबादत में जान डालने के मर्कज़ हैं, मक्का असासा क़िब्ला बना, इसकी तरफ़ मुंह करके इबादत होगी, और मेहनत को निज़ाम मदीना से शुरू हुआ। हर-हर क़बीला व क़ौम व वतन का आदमी हिजरत करके यहां आए, अपनी वतनी क़ौमी ज़िंदगी, कमाई व ख़र्च की तर्तीब को छोड़कर कि हम

वह मदीना में वह ज़िंदगी ले लेंगे। जो मुहम्मद सल्ल० बताएंगे, यहां कि तर्तीब यह बनी कि यहां वाले दाई बने, अख़्लाक़ व यक़ीन व तरक़ इस्तिफ़ादा का न मुलाज़िम रखा गया न दुन्यावी लालच दिया गया, बल्कि उन पर फ़र्ज़ किया गया कि तुम नक़ल व हरकत करो। नबी वली मेहनत मुक़द्दम है कमाई पर, दुनिया में फिरो, औसतन हर सहाबा रज़ि० साल में चार महीने बाहर लगा लेता था, इससे बारह महीने कमाई न रही, चार महीने तो यह बेरूनी मेहनत में लगे। यह हरकत भी इस तरह से न थी कि जब खेती-बाड़ी व तिजारत से फ़ुर्सत तब जाना बल्कि जब ज़रूरत पड़ेगी उसी वक़्त निकलना होगा, वक़्त माल के पीछे का हो या ख़रीदने का। दुकान उठाने का या लगाने का, उसी वक़्त दो सौ आदमी मिल जाएं उस तरफ़ जाने को انفروا خفافا وثقالا सबसे ज़्यादा मेहनत कमाई को छोड़कर निकले में की गई, तबूक में लड़ाई तो हुई नहीं अलबत्ता कमाई से मुक़ाबला हुआ, कहत था, कर्ज़ पर थे, खजूरें आईं, आधी भूख ख़त्म हो जाएगी, हुक्म हुआ निकलो, सारे निकले। जिन्होने ग़ल्ला जमा किया हुआ था उसे निकलवाया, जो माल व ज़ेवर था वे भी तर्ग़ीब से ले लिया, उस वक़्त जाने में खजूरों को ज़ाया हो जाना नज़र आ रहा था। उससे ख़ुदा ख़ुश हुए, ऐसी सिफ़ात वालों के लिए निज़ामे आलम बदल देना ख़ुदा के ज़िम्मे लाज़िम है। आप यह सीखाकर तश्रीफ़ ले गए, क़ामियाबी और चमकने तक पहुंचने में जितनी तक्लीफ़ें आ सकती थीं वह ख़ुदा उठाकर चले गए, मर्कज़ उम्मत को दे गए। इस वजह से लाखों के होते हुए हज़रत अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वाली तक्लीफ़ों पर ख़ुद को जमाए हुए थे, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि खाने के आते ही में रोना चाहूं तो ख़ूब रो सकती हूं। उनके फ़ाक़े याद करके जिस शहर में हुज़ूर सल्ल० ने तक्लीफ़ें उठाईं क्या मुंह है कि हम इसमें राहत के साजो-सामान जमा करें। माल व ज़र से घबराते थे, हज़रत ज़ैनब ज़ौजह रसूल

सल्ल० के पास दस हज़ार दिरहम बोरियों में आए तो कहा यह ग़ल्ला है क्या ? नहीं माल है। हज़रत ज़ैनब ने कहा, ओ माल बोरियों में ? हज़रत उमर रज़ि० ने मुझे माल के तक़्सीम करने की तक्लीफ़ दी, कहा गया यह सारा माल तुम्हारे ही हिस्से का है ताज्जुब करने लगीं कि एक औरत को इतना माल ! और बग़ैर देखे उस वक़्त सारा माल तक़्सीम करके दुआ मांगी। ऐ ख़ुदा ! अब वे माल आने लग गया है जिससे हुज़ूर सल्ल० वाले फ़क़्र के तरीक़ न रह सकेंगे, बस आइंदा साल के माल के आने से पहले ही मौत दे दे और ऐसा ही हुआ। पूरी दुनिया का ज़ोर इस वक़्त यह है कि मक्का व मदीना से हुज़ूर सल्ल० वाली ज़िंदगी ख़त्म हो। यहूद किसरा, नसारा क़ैसर वाली ज़ौक़ पैछा हों, इससे सारे हादसे आ जाते हैं, जो सारा मज़ा किरकिरा कर देते हैं, दीनी तक्लीफ़ों में तो मज़े थे, यहां तक्लीफ़ें ख़ून–ख़राबे होंगे, अपनी औरतें भेजें। यहां के मर्दों में अपने में लिया, अक़ीदे को ख़राब करकर इसाई बनाएंगे, इरदन व बैरूत में बहुत में बहुत से मुसलमान जवान औरतों में घिर चुके हैं न जाने कब इसाई बना लिए जाएं। हमारे पास सारी तहक़ीक़ है, हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में आधी रात, आधा दिन बिल्कुल नस्फ़ुल–लील में अज़ान होती थी और भी पचासों मस्जिदें थीं। मस्जिद नुबूवी के अलावा दुआएं सीखना और मसाइल का भी 24 घंटे का ज़बरदस्त माहौल था, बनी सक़ीफ़ के सख़्त गिरोह को मस्जिद में ठहराया और नर्म गिरोह को कहीं और कभी नमाज़, कभी दुआ, कभी ज़िक्र, कहीं ईमानों की मज्लिसें हैं कहीं ज़िक्र के हलक़े हैं। ये ताइफ़ वाले बड़े सख़्त थे, इनसे लड़ाई में हुज़ूर सल्ल० सबसे ज़्यादा ज़ख़्मी हुए, सारे अरब के इस्लाम के बाद यह मजबूर हो गए सुलह पर। इनकी ख़िदमत पर सईद इब्ने आस रज़ि० मक्का की सियादत के नाक के बाल थे को मुक़र्रर किया गया। ख़ूब इनकी ना–ज़बरदारियां की गई, पहले सईद रज़ि० हर खाने में से खाते, फिर यह वफ़्द खाता, हमज़ा का कलेजा चबाने

वाली अबू सुफ़ियान रज़ि० से सुलह सुनकर इसको डांटने वाली हिन्दा भी इबादत के माहौल से मुतासिर होकर मुसलमान हुई, ऐसा ज़बरदस्त माहौल कि दुश्मन को दोस्त बना दे। चार चार सौ आदमी मुस्तक़ील फ़ाक़ों के साथ मस्जिद नुबूवी में पड़े हुए है, 24 घंटे का माहौल है इन्हीं आमाल को करते हुए नक़ल व हरकत करो। इससे जो लोग मौजूदा निज़ाम से बेज़ार हैं, हाकिम व महकूम के झगड़ों में मुब्तला हैं, वह तुम्हारे माहौल से मुतासिर होंगे। तो दो चार साल में अमरीका, बर्तानिया मुसलमान हो जाएं, मक़ामी मेहनत को मक्का व मदीना वाले उठा लें तो थोड़ी देर में सारे निज़ामे आलम बदल जाएगा क्योंकि ये दोनों बुनियादें जगहें हैं, इनका असर हर जगह पड़ेगा। मेहदी के ज़माने में में हरमीन ही मर्कज़ होंगे। हिन्दु पाक में जितना काम है इसका दसवां हिस्सा यहां चल पड़ा तो निज़ामे आलम में तहलका मच जाए, यहां सबसे ज़्यादा होना चाहिए था, यहां सबसे कम है। हफ़्ते के दो गश्त हैं शबे जुमा में दीन के लिए तक्लीफ़ उठाने के रिवाज में आ जाने की नीयत से रात मस्जिद नूर में गुज़ार लिया करो। हिन्दु पाक में बीस–तीस हज़ार घरों से बाहर मस्जिद में सोते होंगे। महीने तीन दिन वाले चिल्लों वाले हज़ारों होंगे, अल्लाह के फ़ज़्ल से काम हो रहा है हरमीन की बुनियाद पर ही काम है, यही कुदरत से इस्फ़िादा की बात करें हैं कि हुकूमतों से नहीं होता। हुज़ूर सल्ल० के दामन से वा–बस्तगी के बग़ैर के वज़ीर कुत्ते के बराबर हैं, वज़ीर या हुकूमत से पुश्त–पना ही की बातचीत नहीं की है। क्योंकि ग़ैबी ताक़त की ही हमें ज़रूरत है यहां काम हुआ फिर यहां दुआएं हों घरवाले की दुआ और आफ़ाती की दुआ। अब तक आलम इस्लाम में सिर्फ़ हुकूमत वालों को बदल सके हैं, लेकिन देहाती मुसलमान या उमूमी मुसलमान को बदल देने में बहुत ख़र्च करने पड़ेगा। मुल्क या माल की बुनियाद पर इज्तिमआ करने के लिए लाखों ख़र्च करना पड़ता है, बल्कि अवाम को अपने माहौल में लाने के

लिए अपने मुल्कों में लाने के लिए इनके पास ख़र्च नहीं, लेकिन मक्का मदीना की तरफ़ सारे मुल्कों के लोग हज़रत इब्राहीम अलै० व इस्माइल अलै० की कुरबानियों की वजह से आने के लिए बे–चैन रहते हैं। ग़रीब पेट काटकर जमा करते हैं, मक्का मदीना में जो बात चलेगी वह सारे मुल्कों की अवाम में चलेगी। अपने मुल्कों में ले जाकर इस्लाम को मिटा देने वाली मुआशरत (ज़िना शराब से मामूर) का आदी बनाते हैं तमाम ब्लाकों का मुआशरा इस्लाम के ख़िलाफ़ वाला है। अगरचे इनमें आपस में इख़्तिलाफ़ है, बैतुल्लाह को तोड़ने वाले अबराहा की तरह ख़ुद बैतुल्लाह तोड़ने वालों को ख़त्म कर देंगे। मदीने पर भी एक बादशाह ने किसी के क़त्ल हो जाने की वजह से ज़बरदस्त हमला करना चाहा, यहां के उलामा ने जाकर समझाया कि नबी आख़िर के मुहाजिरीन पर हमला करके अपने फ़ौज व हलाकत के सामान बना दे। बिल्कुल इसी तरह मक्का–मदीना में डालने का ज़बरदस्त ख़मियाज़ा भगतना पड़ेगा हाथ डालने वालों को इसकी ख़बर नहीं है। अमेरीका व इंग्लिसतान बैरूत वालो मुआशरा भी दुश्मन मक्का मदीना में भी चलाना चाहत है कुछ बाहर की तर्तीब बना लो कुछ मकामी मेहनत की।

उमूमी बयान न० 8

सूरज में तीन बातें हैं

सनीचर, हरम मदनी, 23, मई, 1964 ई०

बाद में शाम व कुवैत और अन्दरून हिजाज़ की जमआतों को रूख़्सत फ़रमाया कि

मेरे भाइयों और दोस्तो !

सारे अंबिया अलैहिस्सलाम दुआ वाले रास्ते लेकर आए, इनका काम दुआ से चले इनके मद–मुक़ाबिल माल के रास्ते पर थे। स्कीम चलने, मस्अलों को हल करने के लिए दुआ व माल दोनों रास्ते हैं, दोनों रास्तों में मेहनत करनी पड़ती है। बग़ैर मेहनत के दुआ नहीं वह मेहनत करो जिस से ख़ुदा ख़ुश हों, फिर मांगो या पहले मेहनत करके माल हासिल करो, फिर इससे काम करना सबसे बड़ी हिदायत की हाजत है। ख़ुदा औन इनके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शफ़क़त व रहमत वाले हैं سبقت رحمتی علی غضبی

हुज़ूर सल्ल० के सारे तरीक़ों में इंसानों, जानवरो, कायनात के लिए रहमत है। उनके आने से सबकी ज़िंदगी खुलती है और इनके जाने से ज़िंदगी बिगड़ती हैं, इसी वजह से इन तरीक़ों को सीखने वालों के लिए मछलियां और कीड़े दुआ करते हैं कि इनकी वजह से मुहल्लिक व ख़ौफ़नाक, जानलेवा हादसे रूकेंगे। हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ों को मीटना सबकी परेशानियां में आने का और इन तरीक़ों के ज़िंदा होना सबकी परेशनियों के ख़त्म होने का तरीक़ा है। रूह जब निकलती है तो जिस्म में हर जगह बदबू कीड़े होंगे, ऐसे ही तरक मुहम्मदी सल्ल० सबके लिए हादसे से हिफ़ाज़त वाले हैं। ये तरीक़े निकलने, न इनके तरीक़ा का मलाल है न इनके लाने की फ़िक्र है, दुनिया नक़्शों के आने से ख़ुशी है न सही तरीक़ों के

जाने की फ़िक्र है न ग़लत तरीक़ों के आ जाने का रंज है हालांकि व फ़िक्र बड़ी दौलतें हैं। इन दौलतों के साथ की दुआएं रंग लाती हैं जिस्म व क़ालिब से इस्लाम ज़िंदा होगा। इस्लाम ख़ुदा के इरादे से ज़िंदा होगा, ख़ुदा का इरादा दुआ से होगा, दुआ फ़िक्र व रंज से क़ुबूल होगी। यहूद व नसारा की दुन्यिायी तरीक़े सारी दुनिया के लिए रंज व हादसों का ज़रिया हैं, यह तरीक़े ख़त्म होंगे तभी तो ही तो दज्जाल व याजूज व माजूज और दाबा निकलेगा जो मुहल्ला जियाद मक्का से निकलकर। एक रात में सारी दुनिया का चक्कर लगाकर हर इंसान के माथे पर मुस्लिम या काफ़िर लिख देगा, मेहनत करके सोचे कि हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े घटते जा रहे हैं, दूसरों को तरीक़े बढ़ते जा रहे हैं। पहले का फ़िक्र है दूसरे का रंज है इस फ़िक्र व रंज से इस्लाम ज़िंदा होगा, वरना इस्लाम तक़रीरों, हुकूमतों सरमायों से ज़िंदा नहीं होता है, दिल में ग़म व रंज का घुन लग जाए। घरबार बीवी–बच्चों कारोबार की फ़िक्र न रहे, दीन की फ़िक्र लग जाए, ग़लत के छुपाने का रंज सही के आनें की फ़िक्र है या नहीं ? इसे ख़ुदा ही जानते है। जैसे फ़िक्र रंज दिल में मिल जाए और वह दुआएं करे, तो फिर ख़ुदा सारे ग़लत की धज्जियां बिखेर देंगे। सही को निखार ले आएंगे, पहले जिस्म बनता फिर रूह आ जाती है, फ़िक्र व रंज वालों की सूरत बनाओ तो ख़ुदा रंज व फ़िक्र दे देंगे। ان لم تبكوا فتباكوا जिसका क़रीब रिश्तेदार मरता है तो उसको तो असली रंज व ग़म होता है इससे ताज़ियत को जाने वाले का रंज व ग़म असली न होगा। आज कोई सहाबी आ जाए तो मुसलमानों की ज़िंदगी देखकर उनके दिल कलेजे को टुकड़े हो जाएं सदमे की वजह से। बहरहाल तुम ख़ुदा के रास्ते में जा रहे हो, उस वक़्त दुनिया मुसीबत के किनारे पर खड़ी है सात ज़मीन व आसमान की अल्लाह के यहां कोई क़ीमत नहीं है और हुज़ूर सल्ल० को एक एक अमल सातों ज़मीन व आसमान से ज़्यादा क़ीमती है, करम है कि इन्होंने आमाल मुहम्मद

सल्ल० तर्क पर पकड़ नहीं की। पकड़ ले तो कौन बचाए, फ़िक्र व रंज वालों की नक़ल करने वालों की दुआ कुछ रंग ले आएगी। वुज़ू असल है तो तयम्मुम शरई से नमाज़ हो जाती है, तुम्हारे 24 घंटे ख़र्च होने पर सारे आलम का मिदार है अगर यह सही तौर से गुज़र लिए तो तुम्हारी दुआओं से सारे आलम की मुसीबतें ख़त्म होंगी और ग़लत तरीक़ों को ही सिर्फ़ नहीं (बल्कि) इनके चलने वालों को भी साथ के साथ ख़त्म कर देंगे। सही को ज़िंदा कर देंगे, जितना वक़्त लेकर जा रहे हो इसमे कमी का तो सवाल नहीं नहीं बढ़ सके तो बढ़ा लेना जिन मुल्कों में जा रहे हो, वहां ख़ुदा की कुदरत कई बार ज़ाहिर हो चुकी है।

सूरज में तीन बातें हैं या सूरज की नक़ल व हरकत चीज़ों को खाने वाली रोशनी की नक़ल व हरकत है और अल्लाह के रास्ते से दिलों में आमाल दिखाने वाली रोशनी आएगी। सूरज की हरकत इस्तिक़लाल वाली है ऐसे ही अल्लाह के रास्ते की हरकत मुस्तक़ील हो, जिस मुल्क में एक जमाअत गई है इसकी वापसी से पहले ही इसमें दूसरी जमाअत पहुंच जाए और सूरज रोशनी के साथ हरकत करता है। ऐसे ही इस रास्ते की हरकत नूर वाली हो, ख़ुदा के राज़ी करने नीयत से दावत, ज़िक्र, तालीम, अल्लाह को राज़ी करना, अल्लाह वाली नूरानी निस्बत है इस दूसरी निस्बत से उन आमाल से नूर मिलेगा बावजूद यह कि यक़ीन है उन अमल पर के सारे वायदे ख़ुदा पूरे करेंगे। जन्नत व हूर व ग़ुलमान देंगे, इस्लाम को चमकाकर इस्लाम वालों को इज़्ज़त देंगे। लेकिन हमारी ग़रज़ सिर्फ़ इसे ही राज़ी करना है, यक़ीन के ज़ोर में इसे ही मक़्सूद न बना लिया जाए, नीयत के ज़ोर में यक़ीन ढीला न हो कि हम तो अल्लाह को राज़ी करने के वास्ते कर रहे हैं। पता नहीं इससे दीन ज़िंदा होगा या नहीं, बिजली में दो तार होते हैं इससे बलब में रोशनी में आती है। ऐसे ही उन आमाल से रोशनी लेने के लिए यक़ीन व नीयत व इख़्लास के दो तार ज़रूरी हैं, सूरज में

तीसरी चीज़ यह है कि जिन इलाक़ों को रोशनी देता है उनसे मुआवज़ा नहीं लेता है। हुकूमत वाले तो मीटर लगाकर बिजली देने के पैसे मांग लेते हैं, तुम भी जिस इलाक़ा नूरआवर मेहनत करो, उनसे लेने से तुम बिल्कुल बराबर हो जाओ। दिलजोइ के लिए अलग बात है, सिर्फ़ मरने के बाद अल्लाह से रज़ा लेने को सामने रखो, ध्यान, इख़्लास, यक़ीन, नूर, अंदर की बातें हैं। यह रूह की तरह है, बाहर में हमारे 24 घंटे, तालीम, ज़िक्र, नमाज़ में ही गुज़र जाएं, दावत कलिमा की बात चार चीज़ों से मानी जाएगी। ग़ैर से न होने का कहना, अल्लाह से होने का अस्बात, ग़ैर से अल्लाह के बग़ैर न होगा। हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल से ख़ुदा से मिलेगा चीज़ों से आमाल के बग़ैर न मिलेगा, इन बुनियाद में से किसी एक बुनियाद पर आने वाला बोल कलिमा वाला कहलाएगा। हमारी हर बात बस इसी दायरे में रहे, ख़ुसूसी ग़श्त, बाज़ार, मस्जिद, आपस की बातचीत में ये कलिमे रहे, ऐसा न हो कि जमाअत में निकलने के वास्ते जिस कारख़ाने की नफ़ी की है कहीं बाद में इस कारख़ाने का अस्बात कर दो। तुम कलिमे की बात करके ख़ामोश हो गए तो नफ़्स कहेगा, अरे ग़श्त में जिस मकान को देखा था वह है तो मज़े आएंगे। हदीस नफ़्स का तोड़ इसी कलिमे का ही मुराक़बा है कि दिल में सोचता रहे कि ऐ दिल अल्लाह से ही होता है, आमाल मुहम्मद सल्ल० से ही ख़ुदा करते हैं, पहले तो दावत में नफ़्स चक्कर देगा कि इस वास्ते बात कर रहा हूं कि यह माल व कारख़ाने वाले मेरे क़ाबू में आ जाएंगे। अगर तुम बच गए तो दावत के बाद इसी तरफ़ तुम्हारी सोच को ले जाएगा। जैसे अलग कोठरी में बैठना तंहाई है ऐसे ही सोने को लेटना ही तंहाई है तो उस वक़्त घर बीवी–बच्चों की सोच के बजाए, क़ब्र, हश्र, जन्नत, दोज़ख़ को सोच लो, कलिमा के एतबार से ही बोलने को अपना मिज़ाज बनाना है। अगर हमेशा कलिमा के एतबार से बोलेगा, तो दिल का यक़ीन बन जाएगा, अगर साबका आदत की वजह से एक दम से कलिमा

के ख़िलाफ़ बोल ज़ुबान पर आ जाए तो फ़ौरन इस्तिग़फ़ार कर लो। आपस की बातों में भी कलिमा के ख़िलाफ़ न बोलो, दूसरा काम तालीम का है, दावत से निमटते तो तालीम है, तालीम में जितना लग सको उतना अच्छा है। सुनना–सुनाना, सीखना–सिखाना, तीसरी चीज़ अल्लाह का ज़िक्र, तिलावत, अदनिया मस्नूना, अज़्कार मशाइख़ दिल–दिल में दुआएं मांगता है। फिर नमाज़ है, फ़र्ज़ की क़ज़ा हो या वक़्तीया फ़र्ज़ हो, सुन्नत हो या नफ़्ल, सिर्फ़ नमाज़ का अमल ऐसा है कि किसी और चीज़ में लगे हुए उसे नहीं कर सकते हो। खाते–पीते, चलते–सोते, पकाते भी रहो और नमाज़ भी पढ़ते रहो ऐसा नहीं हो सकता है, अलबत्ता तालीम, ज़िक्र, दावत सबसे अलग होकर भी होंगे और दूसरे आमाल के साथ जुड़कर भी। बशरी आमाल के साथ उन तीन आमाल में से किसी एक को जोड़ो, पेशाब–पाख़ाना को गए, कलिमा की बातें या तालीम को या ज़िक्र कर लो जोड़ लो। ख़ास हालत क़ज़ाए हाजत में ज़िक्र नहीं है, अलबत्ता इससे पहले व बाद में ज़िक्र है, यह मतलब नहीं है कि जो चाहे बात कर लो, ये तो सारी ज़िंदगी में नहीं है। ख़सूसन इस सफ़र में बिल्कुल नहीं है बल्कि कलिमे की बुनियाद पर हर बात हो, रात को सोते वक़्त जन्नत व मुग़ीबात की या तालीम की बातें करो या ज़िक्र करते सो जाओ। ऐसे ही खाने के वक़्त कलिमे की या तालीम की बातें हों या ज़िक्र हुआ, अगर खाने–सोने, क़ज़ा हाजत को, टिकट व सब्ज़ी लेते को जाने में अकेले हो तो ज़िक्र हो सकेगा कोई साथ है तो तालीम व दावत का अमल भी चल सकता है। 24 घंटे इनका पाबंद बनना सूरत का मुजाहेदा है और इख़्लास व यक़ीन मुजाहेदे की सीरत है। सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के वास्ते करना है, असल उन गुज़री हुई बातों के अहया के लिए जा रहे हो। वैसे यह है कि चार बातों से बचो, इसराफ़, सवाल, अशराफ़, बे–इजाज़त इस्तेमाल से बचो। हर आदमी में माद्दा तालिब है अगर यह माद्दा ग़ैर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जोह हो, अंदर–अंदर रहते

तो अशराफ़ है कि फ़्लां सवार दे दे। हमें कोई मकान पेश कर दे या मस्जिद का कमरा दे दे, कोई दरी ले आए और अगर अन्दर–अन्दर में ही अल्लाह मांगता रहे। ऐ ख़ुदा ! सेब खिला दे, दरी दिला दे, कमरे का इंतिज़ाम कर दे तो दुआ है, अगर ग़ैर से ताल्लुक़ ज़ुबान से है और अगर अल्लाह से ज़ुबान से कहा तो दुआ है। दुआ से जो चीज़ मिलेगी वे पाक होगी, अशराफ़ व सवाल से जो मिलेगी वह ना–पाकी होगी। हर वक़्त ख़ुदा से हिदायत को मांगते रहो, चीज़ों की तरफ़ तवज्जोह ही न हो, अगर हो तो अल्लाह ही से मांगो, तुम्हारी दुआ को दूसरों को पता चल जाए तो सूरत में दुआ, हक़ीक़त में सवाल है। जितनों को मस्अला हो वह अन्दर है, बनी इसराइल को हफ़्ते के दिन शिकार मना था तो वह उससे पहले ही कुवें में मछिलयां पानी के साथ जमा कर लेते थे। इसराफ़, सवारी, सोने, खाने–पीने में न हो, बिला इजाज़त इस्तेमाल हराम है, अगर हराम भी करते रहोगे तो दुआ कुबूल होगी। तुम्हारी मेहनत दुरूस्त हो गई उन नाकि बंदियों की पाबन्दी से तो तुम्हारी दुआ से आलम को हिदायत मिलेगी। साथियों की चीज़ की इजाज़त दे दे तो उसे इस्तेमाल न करो कि तौबा करे, मिसाल के तौर पर इसकी चीज़ को इसकी ज़रूरत के वक़्त इस्तेमाल न करो, वरना अपने चीज़ के इस्तेमाल से रोक देगा। मिसाल के तौर पर किसी ने लोटे के इस्तेमाल की इजाज़त दी, अब साथियों ने ऐन इसकी ज़रूरत के वक़्त में इसे इस्तेमाल किया, या तो कपड़े ख़राब होंगे या इस पर बोझ पड़ेगा या इसने सूराही से पानी लेने की इजाज़त दे दी। इसको गुज़र ठंडे पानी के बग़ैर होता नहीं, तुम इसमें पानी छोड़ते नहीं हो तो वह अपनी सूराही और लोटे की इजाज़त वापस ले लेगा फिर तुम उससे कहोगे, अरे बस सूराही और लोटे से ही नाराज़ हो गए ? यह हैं मुआशरती उसूल, पानी सूराही में बचे तो उससे तुम पियो वरना नहीं। इन बातों को ख़्याल रखा तो दिल जुड़ेंगे वरना छोटी–छोटी बातों से दिल टूटेंगे,

अगर किसी ने सूराही के इस क़िस्से में ग़ुस्से को दबा लिया तो किसी दूसरी बात पर तेज़ी से बोलेगा दिल माल से नहीं जुड़ते हैं। अलबत्ता आमाल मुहम्मदी से जुड़ते हैं चार चीज़ें कम करने की हैं, पेशाब या पाख़ाना में, खाने में सोने में, वक़्त कम लगाओ। खाने सोने में इतनी कमी न करो कि सेहत पर असर पड़े, खाने में बस ज़रूरत ब–क़द्र वक़्त लगाओ जैसे पाख़ाने में। छः घंटे ज़रूर सोओ लेकिन हर फ़ारिग़ वक़्त सोने में न लगे, तब्लीग़ में वक़्त खाली कोई नहीं है या चार आमाल इज्तिमाई या इंफ़िरादी तौर से होते रहेंगे। अपनी मेहनत को ठीक रखो, इसे दुआ के कुबूल होने का काम समझो, रूजूअ इंसानियत हायात दीन दुआ से होगी। इस दुआ से क़ौमों और मुल्कों को इस्लाम में दाख़िला नसीब होगा, मेहनत ज़िंदा हो, नक़्ल व हरकत ज़िंदा हो। फिर मुसलमानों में दीन ज़िंदा हो, ग़ैर मुस्लिम इस्लाम में दाख़िल हों, बातिल ताक़तें आपस में लड़कर या किसी और तरह से ख़त्म हों। जिन नाकों के इस्लाम में आने से क़ौमों के हिदायत मिले ख़ुदा इनमें हिदायत चला दे, जिनकी हलाकत से सबको हिदायत मिले इनको ख़ुदा जल्द हलाक करे। दुआ मांगो यह कभी न कहो कि दुआ कुबूल न हो, बस हर वक़्त कशादगी का इंतिज़ार है कि हदीस में इसे ही अफ़ज़ल इबादत कहा गया है। मेहनत करते रहो और इंतिज़ाम करते रहो कि कब हुक्म ख़ुदा से मुसलमान हो कौन–सी क़ौम को बदल दें। قدنرى تقلب وجهك فى السماء متى نصر الله अल्लाह जैसे करीम दुआ क्यों न कुबूल करें। दुआ का वक़्त इस्तिग़फ़ार का नहीं है बल्कि शुरू में या पहले इस्तिग़फ़ार करो इस दुआ से मांगो कि दुआ कुबूल ज़रूर होगी और दुआ के बाद यक़ीन रखो कि दुआ का असर ज़ाहिर होगा। चाहे कितने दिन लग जाएं किसी मस्अले में निज़ामुद्दीन में दुआ हुई तो बाद में यह बात चली कि दुआ से तो हुआ नहीं यह काम। किसी ने ख़्वाब में हज़रत जी को देखा कि झल्लाकर फ़रमा रहे हैं कि अरे हज़रत यूसुफ़ अलै० के लिए दुआ कितने अर्से में कुबूल हुई

थी। ऐसे ही किसी ने कहा انى يحيهـا الله بعد موتها खुदा ने कुदरत से इनको इनके गधों को ज़िंदा करके दिखाया। मेहनत खूब करो, अपने किए हुए पर इस्तिग़फ़ार कर लो फिर पूरे यक़ीन के साथ दुआ मांगो, हदीस में है दुआ मांगो وانتم موقنون بالا جابة और दुआ के बाद कभी यह कहकर न दो कि दुआ हमारी कुबूल न हुई। जहां भी जाओ पहले कोशीश करो कि वहां वाले तुम्हारे साथ शरीक हों और हिन्दु पाक की दावत दो, लेकिन सिर्फ़ उनको लेकर आओ जो तुम्हारे साथ वक़्त लगाकर काम को समझ ले, वरना उनका लाना भारी पड़ेगा। सिर्फ़ इस की वजह से इसे हिन्दु पाक लाओ, बाज़ दफ़ा किसी के दिल में होता है कि चलो हिन्दु पाक की सेर करें, लेकिन वहां किसी से वाक़फ़ियत नहीं है, तो तक्लीफ़ें होंगी, अब तुमने दावत दी तो उसे वाकिफ़ मिल गए वह चल पड़ा, हिन्दु पाक आकर वह तफ़रीह वाली तर्तीब पर चलेगा तुम उसे तब्लीग़ वाली तर्तीब पर चलाने की कोशीश करोगे। नमाज़ हज को सीखने का ज़हन है लेकिन सबसे बड़े अमल दीन की मेहनत के सीखने का ज़हन नहीं है, हालांकि उसे सीखने को सबसे ज़्यादा ज़रूरत है तुम भी उसे ही सीखने की कोशीश करो। हुज़ूर सल्ल० वाला म्यार मेहनत किसी के पास नहीं है, तहम्मुल हममें कहां है एक बदवी ने आकर हुज़ूर सल्ल० की चादर खींची गले पर निशान पड़ गए मैं अल्लाह का बंदा हूं अल्लाह के माल में से दे ऐसे ही एक दफ़ा हुज़ूर सल्ल० ने तंहाई में एक को देकर कहा कि मैंने अच्छा सुलूक किया या नहीं ? उसने कहा, हां, फ़रमाया सहाबा के सामने जाकर कहा देगा ? उसने कहा, हां, लेकिन बाहर आकर उसने कहा, कोई अच्छा सुलूक नहीं किया। हुज़ूर सल्ल० उसे लेकर दोबारा गए कहा कितने माल को मिल जाने को तू अच्छा सुलूक समझेगा ? जितना उसने कहा उतना दिया, फिर उसने बाहर आकर सहाबा में

कहा, मुहम्मद सल्ल० ने मुझसे अच्छा सुलूक किया है। हर तरह के लोगों को निभा लेना नहीं आता है हम तो नख़रों में ही फंसे हुए दूसरों के नखरे से लेने की ज़रूरत है लगे रहो। कभी तो ये सब कुछ मिल जाएगा, अब दरूद शरीफ़ पढ़ो दुआ के बाद जमाअतों को रूख़सत करके बाक़ी हज़रात को क़रीब करके कहा बहुत से साथी जा चुके, बहुत से जाने वाले हैं, बाक़ी रहने वाले यह समझें कि एक तो अपने हिस्से का काम करना है और जाने वालों के हिस्सा का भी काम करना है। मस्जिद के लिए वक़्त पहले से ज़्यादा कर दिया जाए, अक्सर अरब हुज्जाज वापस जा चुके हैं, अक्सीरियत उर्दू वाले हुज्जाज की है। उनमें भी, अरब मुहल्लों में भी मेहनत कर ली जाए ताकि यहां की आमद के असली मक़्सद के साथ लूंटे जितना दीन बाक़ी है। आलम में मक्का मदीना की आमद की वजह से है, अल्लाह कैसे पाल सकते हैं अस्बाब के बग़ैर इसका यक़ीन मक्का से लो, और ईमान व अमल को सारे आलम में लाने के लिए तक्लीफ़ें (उठाना) तुम मदीना से सीखो, जितनी मस्जिदें आबाद होंगी, जितना इल्म व ज़िक्र व दावत ज़िंदा होगी उतने तुम मुसलमान ज़िंदा होंगे। मक्का मदीना शुरू से ही इबादत के वास्ते बनाए गए हैं, इसी वजह से हुक्काम व सलातीन इन दोनों शहरों में नहीं रहे हैं यहां नबी रहे है या इनके रंग पर चलने वाले ख़ुलफ़ा, मुल्क के मर्कज़ों मिस्र, शाम, इराक़ बनते रहे। यह दुआओं का अख़्लाक़ व अज़्कार का, दावत व ईमान का मर्कज़ है, मर्कज़ में सही मेहनत कर ली तो यह दौलतें बहुत मिलेंगी ख़ुदा ने दोनों शहरों की हिफ़ाज़त का ग़ैबी निज़ाम बना रखा है। फ़रिश्ते दज्जाल को घुसने न देंगे, रूस अमेरीका भी हमला कर दें मक्का मदीना पर तो हलाक हो जाएंगे, दूसरे तो इस पर हाथ डाल नहीं सकते हैं। अलबत्ता मुसलमान अपनी बे-उन्वानियों से इस ताक़त को खो दें तो इसकी क़िस्मत, हुज़ूर सल्ल० ने आने से पहले किसी बादशाह ने मदीना पर हमला करके सबको क़त्ल करने की नीयत की तो

मदीना के उलेमा ने उससे कहा कि आख़िरी नबी के मुहाजिर पर हमला करके अपने ही को तबह कर लोगे और वह रूक गया। हुज़ूर सल्ल० की तशरीफ़ आने के बाद तो मालूम नहीं मदीना के बरकत व ग़ैबी ख़ैरात में कितना इज़ाफ़ा हो गया होगा, दूसरा अपनी चीज़ें गाना–नाच, अरयानी लाते हैं। मुसलमान आलाकार बनते हैं अगर मेहनत करके दीन वाला माहौल बना लें तो उन दूसरों पर ख़ुदा अपनी कुदरत वाला हाथ डाल देंगे, यहां का सदक़ा जारिया यह है कि यहां वालों को इस मेहनत पर लगा दो, राहतें कुरबान करो तो काम बढ़ेगा। राहतें बढ़ाओगे तो काम कुरबान होगा, असर के बाद तुम ख़ुद ही आओ, फ़जर और मग़्रिब के हलक़ों में जुड़ो, अपने ज़िम्मेदारों से अपने लिए खुद ही काम मांगो। उर्दू वाले ज़्यादा है फिर हलके भी ज़्यादा हो सकते हैं यहां मेहनत करने के बाद वापसी से लोग मेहनत करने वाले जहां ख़ूद क़ीमती बनेंगे वहां यहां वाले भी मेहनत को लेंगे।

उमूमी बयान न० 9

नफ़्स व शैतान का मकर व फ़रेब

मंगल, 9, मई, 1956

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़मराया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

इंसान के अन्दर गंदगियां बहुत हैं इंसान गंदगियों को मज्मूआ है, जहां भी दाख़िल होगा गंदगियों के साथ होगा मस्जिद में बैतुल्लाह में जाए तो नफ़्स इसके साथ है, गौ शैतान बन्द हो तो ख़ुदा से भूलाने वालो इसके मूसवा की तरफ़ खींचने वाला माद्दा इंसान में मौजूद है, जहां जाए नमाज़, रोज़ा, हज हर जगह नफ़्स काम करता है। नमाज़ में वसवसा डाला कि लोग मुझे बुज़ुग जानेंगे, तब्लीग़ वग़ैरह हर जगह नफ़्स साथ है, अब मामला नाज़ुक हुआ भूख है तो भी नफ़्स आ गया भूख के अन्दर घुसकर ऐसे बात लाएगा कि हम ख़ुदा से महरूम रहें शैतान भी इसी कोशीश में है नफ़्स को शैतान से मेल है।

लिहाज़ा फ़िक्र करो कि नफ़्स का आमाल न हो कोई अमल नफ़्स का न हो नफ़्स की पहली कोशीश यह है कि नफ़्स के अमल हों पहले उन अमलों में लगाता है कि ख़ुदाई अमल होने की गुंजाइश न हो, माज़ी व गुनाहों में लाता है कि ज़ाहिर व बातिन से भी ग़ैर ख़ुदा के आमाल हों, ज़िना चोरी, डकेती की तरफ़ ले जाता है। अगर इसी को शैतानी अमल जानकर इससे बचने और ख़ुदाई अमल पर क़दम रखे, नमाज़ी बना तो नफ़्स पैंतरा बदलकर बुज़ुग बनकर आया है पहले तो शराबी था अब नमाज़ी है बहुत अच्छा है। अब सवर बिठाया है तो पहले तो नमाज़ की तरफ़ आने न दिया जब आया तो सर पर प्यार का हाथ फेरा कि तू तो शैतान

के फंदे से बिल्कुल निकल गया, अब तो नमाज़ी बन गया अच्छा हो गया बढ़िया होगा, तो أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ शैतान ने कहा था या नफ़्स भी शैतान के पास ले गया तसव्वुर यह पैदा किया कि मैं ओरों से बढ़िया हूं यह बिठाया। शैतान ने आदम अलै० को इसी लिए सज्दा न किया कहा, أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ तो नमाज़ रोज़ा أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ की तरफ़ पहुंचाए वह सब शैतान के क़रीब कर रहे हैं नफ़्स बहुत खुश होता है तो बहुत करता है कि तहज्जुद इश्राक़ सब कुछ है अब तो तू वली बन गया, अब कोई पानी मांगे तो गुस्सा आता है कि मैं वली हूं और पानी मांगता है अगर जूता कोई मांगे तो गुस्सा आता है फिर बोलता है मैं तो बुर्जुग हूं यह أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ है।

इबादतों को खुलासा तो यह है कि मैं बदतरीन हूं यह ज़हन में बैठ जाए अमल करके अमल से यह खुले कि मैं बदतरीन हूं बेहतर नहीं हूं यह खुल गया अब ख़ुदा के सामने रोना पीटना शुरू करे अपनी हक़ीकत इंसान पहचान गया अब ख़ुदा राज़ी है। कीड़ा अपने को कीड़ा कहे फूल कहेगा तो ख़फ़ा होंगे, अपने को बत्तर कहकर रोए अब खुश होंगे अताया के दरवाज़े खुलेंगे। ऐ ख़ुदा ! मैं तो बत्तर हूं तो बत्तरों को बख़्शने वाला है, सारे ज़मीन के गुनाह और गुनाहों के बे–पायां समुंद्रों को ख़ुदा की रहमत का एक क़तरा सबको माफ़ करा सकता है। इसकी रहमत की इंतिहा नहीं है, अपने को बत्तर जानना है नमाज़ पढ़े और अपने को बत्तर जाने कुरआन का हक़ अदा न किया मैं बत्तर हूं इस पर रोए अब शैतान أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ वाली बात लाएगा तो अपने बत्तरी की मश्क़ करे और अपने को हर एक से बत्तर जाने।

शेख़ शहाबुद्दीन रह० से हिला को ख़ान या चंगेज़ ने पूछा कि तू बेहतर है कि मेरा कुत्ता मरने के बाद मेरी मग़्फ़िरत हो गई तो मैं बेहतर न हुई तो कुत्ता बेहतर है ज़िंदगी में यह फ़ैसला नहीं कर सकता हूं। बादशाह पर असर हुआ और मुसलमान हो गया।

आप सल्ल० का फ़रमान है شیبتنی ھود (हदीस) एक बुज़ुर्ग को परेशानी हुई कि होद में क्या है ख़्वाब में आप सल्ल० की ज़ियारत हुई तो पूछा तो इर्शाद फ़रमाया कि فاستقم کما امرت ने बूढा कर दिया, जो भी करकर आ गए और आख़िरत में अगर अल्लाह ने कह दिया कि मैंने यों नहीं कहा था तो मेरा क्या होगा उस मैदान में क्या करूंगा। तो असल मरने के बाद का मस्अला है अगर मस्अला सिर्फ़ इतना हो कि मुजाहेदा किया और लोगों ने अच्छा कहा और ख़ुद भी अच्छा जाना इस पर मस्अला नहीं है क़ियामत में ख़ुदा के सामने फ़ैसला होगा कि कौन बदत्तर है فلا تزکوا انفسکم ھو اعلم بمن اتقیٰ पहले तो नफ़्स ख़ैर की तरफ़ नहीं आने दे देता या अमल ख़ैर में अपना हिस्सा पैदा करके अल्लाह का अमल रहने नहीं देता जब जाह व माल डालता है दो घोड़ों के दर्मियान हैं, (1) ख़ुदा का अमल न करें, (2) अपना जज़्बा डालकर ख़ुदा का अमल न रहे लिहाज़ा ख़ुदा वाला अमल बढ़ाए और डरता है मुतहम जाने और दूसरों को जाने कि अल्लाह के लिए कह रहा है ख़ुद मुतमइन न रहे। कई बार इंसान के ध्यान में नहीं होता कि ग़ैर-अल्लाह के वास्ते है एक बुर्जुग को तीस साल तक शहादत का नफ़्स ने मुतालबा किया तो नफ़्स से कहा कि शहादत अच्छी चीज़ है तो क्यों दरपे है बीस साल बाद पता चला तो कहा कि नहीं शहीद होने दूंगा। बात यह थी हर वक़्त जो मैं तुझे रगड़ता हूं ताकि एक दम मर जाऊं अल्लाह के वास्ते नहीं अपने इत्मिनान की वजह से है ग़ैर अल्लाह के लिए है लिहाज़ा अपने ख़लूस पर एतमाद न करना मैं तो ख़लूस वाला हूं जिस ख़लूस के सिवाए ख़ुदा के सिवा किसी को पता नहीं मेरे ख़लूस का भी मुझे पता नहीं है ख़ुदा को पता है इतनी छुपी हुई चीज़ का जल्दी फ़तवा मत दो कि फ़लां शख़्स या मैं मुख़लिस हूं ख़लूस का फ़ैसला तो ख़ुदा करेगा, दुआ करो कि अल्लाह हम सबको मुखलिस कर दे। (आमीन)

उमूमी बयान न० 10

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई दीन की मेहनत में इनसानियत की हिदायत व निजात है

बुध, 10, मइ, 1956 ई०

ख़ाली सूराही को मैंने (मौलाना उमर पालनपूरी रह०) अंडेला तो पानी न निकला तो हज़रत ने ख़ुद पानी मंगवाकर पिलाया और मुझे ख़िताब करते हुए फ़रमाया पानी पिलाने और रोटी खिलाने का बहुत सवाब है तो ख़ुदा के दीन मेहनत का कितना सवाब होगा फिर दो वाक़िअे सुनाए। (1) रंडी का कुत्ते को पानी पिलाना और जन्नत में जाना मशहूर है (2) एक आबिद ने अपने सूमआ में साठ साल इबादत की फिर दुनिया की सेर को निकला रास्ते में एक औरत मिली तो हमदर्दी में बात शुरू कर दी शहवत उठी ज़िना कर बैठा, अब तौबा की सूझी तो ग़ुस्ल का इरादा किया कपड़े निकाले साथ में दो रोटियां थीं। कोई भूखा मिला सवाल किया तो दोनों रोटियां दे दी बाद में कुत्ता काटा मर गया बिला तौबा मरा अल्लाह के यहां साठ साल की इबादत तो ली गई ज़िना का पलड़ा भारी हो गया। जहन्नम का फ़ैसला हो गया बाद में एक पर्ची दो रोटियों की तोली गई तो वह ज़िना से भी भारी निकली

जन्नत में गया यह रोटी खिलाने की फ़ज़ीलत है।

खुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

दोस्तों बुज़ुर्गों ! देखो यह दुनिया ख़त्म होने वाली है बाक़ी नहीं है यहां की ज़िंदगी ख़त्म होने वाली है आख़िरत की ज़िंदगी हमेशा रहेगी आख़िरत में कामियाब वह होगा। जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत को अपनाया और दूसरों में चालू करने की मेहनत की, तो वे कामियाब है वरना ना–काम होगा और यह भी फ़ैसला है कि तो गिरोह आप सल्ल० पर मेहनत करने वाला बनेगा तो दुनिया में भी चमकेगा वरना परेशान होगा अल्लाह का दस्तूर है कि हिदायत अल्लाह के हाथ में है, बंदों के हाथ में कुछ नहीं है। जब लोग ख़ुदा के बंदों के लिए हिदायत के तालिब बनकर मेहनत करेंगे, इलाक़ों में ठोकरे खाएंगे तो अल्लाह हिदायत के सूरज तुलूअ फ़रमाएंगे तो क़ौमें हिदायत पर आएंगी और मेहनत करने वालों को दुनिया व आख़िरत में अताया से नवाज़ेंगे यह अल्लाह का फ़ैसला है। आप सल्ल० ने अरब पर मेहनत की शुरू में अफ़राद के लिए हिदायत आई दूसरी सूरत क़ौम के लिए हिदायत आए मक्का में हिदायत अफ़राद के लिए थी मक्का में पूरे अरब के लिए हिदायत आई मदीना में सब इलाक़ों में वफ़ूद गए डेढ़ सौ बड़ी छोटी जमाअतें निकलीं, 7, 8 जमाअत से लेकर तबूक में तीस हज़ार की जमाअत थी। चार की भी जमाअत थी, अबू उमामा बहेली रज़ि० को अपनी क़ौम में अकेला भेजा था अकेला भेजा था यह पहनने और क़ौम बाहिला को दावत दी तो सबने दीन वग़ैरह को बुरा–भला कहा, खाने पर भी न बुलाया भूख लगी थी यह अपना अमामा सर पर लपेटकर लेट गए तो आसमान से डाले उतरा उसमें पानी था दूध का मज़ा और मिठास थी ख़ूब पिया तो भूख प्यास सब दूर हो गई आंख खुली तो सेराब थे क़ौम से ख़िताब किया कि कम से कम खाने को तो पूछते मैं तो मरने के लिए लेटा था मगर ख़ुदा ने खिलाया पेट तम हुआ दिखलाया तो सारी क़ौम

मुसलमान हो गई एक से तीस हज़ार तक ने नक़ल व हरकत की सब दाई बनकर उठे थे मुल्क व माल के लिए न उठे थे गौ मिल गया था आप सल्ल० सारे नबियों से ऊंचे थे सहाबा और लोगों से ऊंचे थे लाखों ने रियाज़त व मुजाहेदे किए तो उनके दस्तरख़्वान पर खाने आए।

मिर्ज़ा मज़हर जानजाना के दस्तरख़्वान पर शहज़ादे आने की तमन्ना करते थे, बादशाह से भी ज़्यादा खाने आते थे बादशाह से लेकर वज़ीर मज़दूर तक मुरीद थे, हर शख़्स बढ़िया खाना लाता तो दस्तख़्वान पर होता था बादशाह वज़ीर वग़ैरह के सब बढ़िया खाने वहां जाते थे तो शहज़ादे खाने की तमा करते थे मगर मुजाहेदा इस खाने के लिए न था जब एक उम्मती के वास्ते यह गवारा नहीं तो आप सल्ल० के लिए कैसे गवारा हो सकता है कि मुल्क व माल मिले एक तो किसी चीज़ के लिए करना है एक मिल जाना है लोग धोखे खाते हैं अल्लाह ने क़ैसर व किसरा दे दिया। इसके लिए मेहनत न थी। आप सल्ल० तो ऊंचे थे जब एक छोटा सा उम्मती रोटी इज़्ज़त के लिए मुजाहेदा नहीं करता है तो आप सल्ल० ने भी मुल्क व माल के लिए नहीं किया इनको शख़्सी तौर (हालात) पर और इज्तिमाइ हालात पर मिलेगा आख़िरत में आप सल्ल० से ज़्यादा ऊंचे होंगे सारे अंबिया से अफ़ज़ल हैं जब एक आमदी से तीस हज़ार तक नक़ल व हरकत हुई कहीं इस्लाहतन गए कहीं मरूर के तौर पर गए अब हिदायत के दरवाज़े खुल गए जहां अला सबीलुल मरूर गए वहां से वफ़्द आए। जब इज्तिमाई दावत पर एक आदमी को क़त्ल कराना चाहा कि अगर बैतुल्लाह के कपड़े भी पकड़े हो तो भी क़त्ल कर दो, हालांकि मक्का में क़त्ल हराम है तो भी क़त्ल करने को इर्शाद फ़मराते हैं आप सल्ल० ने बहुत इंतिज़ार किया कि कोई क़त्ल करे आप सल्ल० इस जुर्म कबीर पर क़त्ल चाहते थे आप सल्ल० का जी न चाहा कि वह कलिमा पढ़े मगर इसने कलिमा पढ़ लिया क्योंकि हिदायत

का दरवाज़ा खुल गया था पर उस्मान रज़ि० उसे ले गए।

तुम हिदायत के दाई बनकर सारे मुल्क में तीन–तीन चिल्ले लेकर चलो फिरो व किसान की तरह कि ज़मीन के हर हिस्से पर हल चलाता है सारी ज़मीन में फैल जाओ फिर हिदायत का दरवाज़ा खुलेगा जो न चाहेगा उसके लिए भी हिदायत का दरवाज़ा खुलेगा तीन–तीन चिल्ले (की तश्कील से) तो अब तुम्हारी जान निकलती है, पहले तो ख़ूब जान व माल ख़र्च किया सुन्नतुल वफ़ूद में वफ़ूद को मदीना वालों से ख़ूब दिलवाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दुनिया से तशरीफ़ ले गए तो लोग कंगाल थे मगर जवाहारात ईमान, तवक्कुल, दीन का मुजाहेदा, हुब्बे मौत, हब्बी जिहाद, इख़्लास, अख़्लाक़ के जवाहारात अता फ़रमाए जिस पर मुल्क मिला करते हैं दो ब्लाक मिले क़ैसर व किसरा मिले यह आप सल्ल० के बाद मिला।

उमूमी बयान न० 11

असल कामियाबी और कामियाबी का धोखा

बुध, असर की नमाज़ के बाद, 10, मई 1956 ई०

ख़ुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे दोस्तों बुज़ुर्गो इस दुनिया में इंसान कामियाबियों के हासिल करने के लिए मेहनत करते हैं ताकी ना–कामी से बचे और कामियाबी यानी खुदा ने इंसान में जो तकाज़े रखे हैं उनके पूरे होने का नाम कामियाबी पूरा न हो तो ना–कामी मिसाल के तौर पर पेट भरना, सैराबी, ख़ादिम वग़ैरह के तक़ाज़े हैं हासिल हो तो कामियाबी वरना ना–कामी है ऐसे ही इज़्ज़त है फिर इसके बाद में यह भी ना–कामी ही है कि जो तकाज़े हैं वह थोड़ी देर के लिए पूरे हों बाद में फिर टूट जाएं आज पेट भरा कल भूख हुई यह भी अक़्लमंदों के नज़दीक ना–कामी है ओरों के हां दुनिया में कामियाबी है मगर जब तक़ाज़ा टूटेगा वह भी ना–कामी कहेंगे। आज मुल्क मिला कल को छीन गया यह कामियाबी नहीं है सारे इंसान कामियाबियों के लिए मेहनत करते हैं। लेकिन इंसान को मुशाहेदा है यह कामियाबियों को चीज़ों में देखते हैं, चीज़ों को मेहनत में देखते हैं कि इससे तकाज़े पूरे होंगे हम कामियाब होंगे चीज़ों से आगे निगाह न बढ़ी आमतौर पर चीज़ें हैं, लेकिन अंबिया और आप सल्ल० को भी अल्लाह ने बताया कि इंसानों को बताएं कि कामियाबी चीज़ों से न होगी, चीज़ें खुदा के क़ब्ज़े में है लेकिन खुदा से कामियाबी का ताल्लुक़ है जिसके क़ब्ज़े में (यह चीज़ें) हैं मालियात पर कामियाबियां नहीं, वही तर्सरूफ़ डालता है। उसी अल्लाह पर कामियाबी है सारे नबियों ने यही बतलाया, वह खुदा जिसने चीज़ों को बनाया है आज भी ख़ासियत बदलने पर क़ादिर है गल्ले में मौत, भूख में हायात, फलों में सममियत

और अक्स करें जिसकी चाहे तो ख़ासियत बदलें यह नहीं कि चीज़ें बनाकर ख़ासियत का मस्अला अल्लाह के हाथ से निकल गया हो या नहीं है। चाहे बनाएं या न बनाएं अल्लाह बनाकर चाहे बाक़ी रखे या न रखें रखकर कामियाबी दें या न दें, दूसरी बात अंबिया ने कही कि कामियाबी ज़िंदगी के नक़्शों में बदन के अमल के साथ से है वरना ना–कामी है, अगर बदन के अमल ख़राब हों और ज़मीन की चीज़ें अच्छी हो सोना, चांदी, जवाहारात, बाग़ात, हवाई जहाज़ सब इंसान के पास हैं मगर आमाल ख़राब हैं तो वह इंसान ना–काम होगा इसकी ना–कामी चाहे आज या कल मौत के बाद ज़ाहिर फ़रमा दें। चीज़ें हैं मगर अमल ख़राब हैं तो ऐसे इंसान ना–काम होंगे, चाहे बादशाह हो या मालदार हो या नबियों ने बतलाया है और यह भी कहा है कि इंसान के पास चीज़ें न हो मगर अमल सही हो तो यह इंसान कामियाब होकर रहेगा चाहे आज या कल हो या मौत के बाद होगा। अभी तो लोग जागकर भी नहीं सुनते बल्कि पानी डालकर सुनाया जाता है और चौंककर आसमान की तरफ़ देखते हैं सुनने वाले सो रहे हैं कहने वाले को जागना पड़ता है, यों काम चल रहा है हौज़ का पानी बावास्ता पंखे से आ रहा है बारिश का नहीं है तो मैंने अर्ज़ किया कि अंबिया की जो तहक़ीक़ है और अल्लाह ने भी यह कहा है कि इंसान की कामियाबी और ना–कामी का ताल्लुक़ पूरे कुरआन में आमाल से बतलाया है। أولئك هم المفلحون، هم الفائزون चीज़ों में नहीं बतलाया अल्लाह की मुहब्बत व इताअत हो तो मुफ़लिहून फ़रमाया है अब सारा कुरआन देखो तो कामियाबी की ख़बर हसर के साथ फ़रमाई सिर्फ़ यही लोग कामियाब हैं इनके अलावा कामियाब नहीं जिनके आमाल ठीक हैं तो कामियाब वरना नहीं सिर्फ़ कुरआन ही में नहीं बल्कि पांच मर्तबा आज़ान आ रही है حی علی الصلوة، حی علی الفلاح नमाज़ को बुला रहे हैं चाहे दुकान में हो या खेत में वज़ीर, गवर्नर सबको कहा कि यहां

कामियाबी है नमाज़ यानी अपने खुदा की मर्जी पर इस्तेमाल होने का नाम नमाज़ है खुदाई तर्तीब पर चलो, जो बुलवाएं बोलो, जैसे हाथ रखवाएं रखो, यह तरीक़ा इस्तेमाल खुदा ने बतलाया यह अच्छा अमल है, हय्या अलल फ़ला कहा कि अपने को खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल करने पर आ जाओ, तेरी कामियाबी है मुल्क व माल में नहीं है सर–तस्लीम खम है। जो मिजाज यार में आए तो कहें वही कर तो कामियाब है अपने को इस तरह इस्तेमाल कर जिस तरह अल्लाह ने बताया है इसके अलावा जो कुछ है खसारा है, पूरी सूरत उसी पर उतरी والعصر ان الانسان لفی خسر अलीफ़ ला इस्तिराक़ के अलावा मुस्तशना के सब मुराद हैं रूस और अमेरीका दोनों ब्लाक, हवाई जहाज़ के मौजीद, गवर्नर, हुक्काम, माद्दे वाले 'अल–इंसान' में आ गए यह खसारे वाले हैं क़सम खाकर खुदा ने कहा कि टोटे में है अब इस्तिशाना क्या कि जिनका यक़ीन सही है और बाहर से अमल सही हो और आपस में ख्वाहिशों पर सब्र की वसीयत और हक़ पर जमने की वसीयत करते हैं इनके सिवा सब नुक्सान में हैं। दुनिया में सोने–चांदी वाले सब नुक्सान में है ये खसारा है हमें तो कामियाब नजर आते हैं उड़ते हैं अब तो यह है जब जंजीर में जगड़ेंगे और आग में डालेंगे अल्लाह को इंसान का सब कुछ नजर आता है, इसे देखकर कहा है जो उसे कामियाबी जाने अंधा है अंजाम की खबर नहीं है हाल की खबर है माल की खबर नहीं कि सांप और अस्दे लिपटेंगे ये अंबिया की तहक़ीक़ और इंसान को बनाने वाले की तहक़ीक़ है। इंसान अपने तरीक़े पर जीना चाहें जबकि ان الله اشتری من المؤمنین जो हमारी बताई हुई कामियाबी चाहता हुआ उसके जान व माल को खरीद लिया तबादला उस वक़्त का हुआ कि इंसान के पास जान व माल था इसमें इख़्तियार था कि जहां चाहे जान माल लगाए इसको अल्लाह से ख़रीद लिया इख़्तियार को खरीद लिया इसके बदले में जन्नत दे दी कामियाबियों को आला मैदान दिया

खुद उस जान व माल से क्या कराएंगे पहली बात तो यह कि मैं खुदा का हो गया तो मौत से न डरो, वरना ख़ुदा वाला रास्ता शुरू न होगा। तीन चिल्ले मौत के डर की वजह से नहीं देते कि कारोबार ठप होगा रूपये न होंगे तो मर जाएंगे मौत सड़क पर पहुंची है, मौत से डरे कानून के ख़िलाफ़ मोटर में बिठाया तो ख़बर दूसरे ने दी कि कहां जा रहा है सरजांट है तो घुमाकर ले जा रहा है अब जहां जाए सरजांट मिले। आग लगी हो या फ़साद हो तो बचता है अल्लाह के रास्ते में शैतान एक साइन बोर्ड डालता है कि मर जाएगा اِهدنا الصراط المستقيم में शैतान ने मौत से डराया कि भूख से मारूंगा तो अल्लाह ने डर निकाला कि मरने के लिए ख़रीदा है इसको मुक़द्दम कर दिया और आख़िरी को पहले कर दिया يقاتلون في سبيل الله فيقتلون و يقتلون ये आख़िरी को अव्वल बताना तर्तीब बाद में आएगी चिल्ले में मौत का फंदा जाना अल्लाह ने ख़रीद लिया बिक गया अपने न रहे बक़रा-ईद के मौके पर लाखों रूपये ख़र्च किए जानवर ख़रीदे काटकर खांएगे ख़ुदा का हुक्म है मार डालने के वास्ते ख़रीदा चाहे कितना ये भागे एक न सुन्नी काटकर खाएगा। अगर इनमें ज़ुबान हो और पूछे कि क्यों मारते हो कहोगे कि मारने को ख़रीदा है अल्लाह ने भी मारने को ख़रीदा है, मुश्रिक को भी मारेंगे लेकिन मौत का मुआवज़ा न मिलेगा, मुसलमान को मौत का मुआवज़ा मिलेगा।

फिर अब बतलाया कि क्यों ख़रीदा التائبون सच्ची तौबा हो ग़लत तरीक़े से तौबा न हो 'العابدون' सही तरीक़ो का इख़्तियार में तो मुसीबत भी आए तो 'الحامدون' हम्द करने वाले हो अल-हम्दु लिल्लाह कहें चाहे कुछ भी गुज़रे ग़लत ज़िंदगी से जुड़कर हम्द करते हैं अब पारसा बनते हैं कारोबार ख़त्म हुआ तो ना-शुक्री की ऐसा न किया हम्द करने वाले हैं इसलिए ख़रीदा है तौबा करने वाले हैं السائحون सिर्फ़ अपनी ज़ात से नहीं बल्कि ख़ुदा के दीन को लेकर दुनिया में फिरने वाले

السياحة فى دينى الجهاد فى سبيل الله

الراكعون الساجدون الآمرون بالمعروف والناهون عن المنكر

الحفظون لحدود الله हदूद अल्लाह पर अगर जान देने का मौक़ा आया तो दे दें अब क़त्ताल आया पहले वाले सारे औसाफ़ के बाद क़त्ताल है जान देने का मौक़ा आए तो दो लेने का मौक़ा हो तो लो। हम हमारे पर इज़हार की मेहनत से कामियाबी नहीं है ख़ुदा के देने से है, एक को सारा मुल्क देकर ना–काम करें अल्लाह पर यक़ीन करे तो अल्लाह ने सारा जान माल ख़रीदा जो ख़ुदा की बात पर न आएं तो क़सम खाकर कहा कि तुम ख़सारे में हो जब कामियाबी चीज़ों में नहीं अमल में है तो अब बताओ बुनियादी मेहनत कौन–सी है अंबिया ने कहा कि अपने अमलों को ठीक करने की मेहनत करनी है जब अमल को ख़ुदा कुबूल करे तो सही है वरना ग़लत है सलात, सौम, ज़कात, हज, सोना–जागना ये सब अमल सही खी हैं और ग़लत भी है ख़ुदा कुबूल करे तो सही हैं वरना ग़लत हैं।

ईमान के साथ अमल कुबूल होगा शिर्क से न होगा इख़्लास हो शक्ल सही हो आप सल्ल० वाले शक्ल हो तो मक़बूल है, बदन इंसान के आमाल कुबूल होने के लिए यक़ीन, नीयत, इल्म ताम, ध्यान, शक्ल मुजाहेदा, मेहनत और अपनी नफ़सानियत के इस्तेमाल का ढंग और तरीक़ा सही हो एक इंसान अपने अमलो की सेहत पर जान माल ख़र्च करे तो कामियाबी मिलेगी वरना अगर पूरी दुनिया भी मिले तो ना–कामी है बशर्तेकि अपने अमल की सेहत की फ़िक्र न हो तो ना–काम है अगर अमल सही करे और माल न हो तो तब भी कामियाब है।

ईमान सीखो अमली मैदान से बाहर है पाख़ाना, पेशाब सब दीन बन जाए ये सब कामियाबी पर पहुंच जाएंगे इनके लिए सबकी मशतरक माया ईमान, इख़्लास, इल्म की सेहत सबमें मुशतरक है,

तास्सरात ध्यान तवज्जोह का सही होना सारे अमल में शर्त है सही यक़ीन हो, सही शक्ल हो, सही रहना तरीक़ा इस्तेमाल भी हो पाख़ाना करना (फ़ारिग़ होने) गए धक्का दिया और घुस गए तो गुनाहगार हुए वह मुक़द्दम था यह अख़्लाक़ है अख़्लाक़ के न होने से भी ख़राब हुए, अख़्लाक़ तो ज़ोर से बरते लेकिन अन्दर बैतुल्लाह की तरफ़ मुंह किया तो शक्ल ख़राब हुई काग़ज़ से पोंछकर आया तो यह आप सल्ल० वाली शक्ल न रही धेला लेकर पानी इस्तेमाल करता तो यह दीन बन गया। नीयत यह है कि अल्लाह को राज़ी करने के लिए यह शक्ल कर रहा हूं और ख़ुदा मुझे उससे कामियाब करेंगे उससे जन्नत देंगे यह ईमान है उससे जन्नत में जाएगा अगर नीयत ख़राब हो यक़ीन अख़्लाक़ वग़ैरह ख़राब हों और सोना ख़र्च करे तो तब भी ना–काम है।

लिहाज़ा पहले उन छः बुनियादों के दुरुस्त होने के लिए वक़्त लगाओ, ईमान यानी ख़ुदा की ज़ात व सिफ़ात, आप सल्ल० की ख़बरों पर और आमाल सालेह से कामियाबियों पर यक़ीन जमाओ चीज़ों से यक़ीन हटाओ ठीक करो शक्ल सही करो असल बात यह है कि इन छः नम्बरों के सीखने की मेहनत करो एक मर्तबा तो बाहर निकलकर मेहनत करो मश्क़ करो चार महीने की यह माइने नहीं कि इन छः में पूरा कामियाब होगा।

तसव्वुफ़ का ख़ुलासा तसीह नीयत है' हज़रत (मैलाना इलयास साहब रह०) ने कहा कि ख़लूस का ताल्लुक़ ज़ुबान से नहीं है दिल से है अल्लाह के वास्ते कहने से ख़लूस न हुआ सबसे पहले सही शक्ल नमाज़ में है हर हिस्से के लिए तरीक़े बतलाए हैं कि हाथ–पांव कहां रखे रुकूअ कैसे करे शक्ल की तहक़ीक़ आज नहीं करते हैं कैसे उंगलियां फैलाइ जाएं हर चीज़ की शक्ल है जिस्म से रूह तक, सर से पैर तक हर हिस्से की शक्लें हैं नमाज़ के तमाम हिस्सों को सही किया तो सारे अमलों को वह शक्लों पर लाएगा रूह कहीं, निगाह कहीं है, दिल कहीं है ऐसी नमाज़ होगी तो सारी

चीज़ें ख़राब होंगी नमाज़ की शक्ल सही करो। असल बात यह है कि इन छः चीज़ों के सीखने की मेहनत हो एक मर्तबा तो बाहर निकलकर मश्क़ करे चार महीने के यह माइने नहीं है कि इन छः में पूरा कामियाब होगा तसव्वुफ़ का खुलासा नीयत है यह हज़रत रह० ने कहा कि खलूस का ताल्लुक़ ज़ुबान से नहीं है दिल से है अल्लाह के वास्ते कहने से ख़लूस न हुआ दिल में सफ़ाई रखो, दिल के अन्दर जो है कही नीयत है

اذاجاء ك المنافقون قالو انشهد انك لرسول الله و الله

يعلم انك لرسوله والله يشهدان المنفقين لكذبون

अल्लाह भी जानते हैं والله يشهد ان المنفقين لكذبون झूठे क्योंकि दिल से नहीं कहते हैं दिल में जब तक गै़र ,होगा अल्लाह की नीयत न आएगी मगर नमाज़ इसलिए पढ़ना है कि बचाया माल बच जाए यह अल्लाह के वास्ते नहीं है जब तक दिल गै़र से पाक न हो नीयत सही नहीं है। सूफ़िया किराम ने कहा उलेमा तो बीवी—बच्चों का जोड़ बिठाएंगे सूफ़िया ने ये गै़र को दिल से निकालो चाहे बीवी—बच्चे मरे मरें यार है दिल पर मेहनत की कि गै़र अल्लाह निकले जब तक अगयार से पाक न होगा। खुदा दिल में न आएगा मिसाल के तौर पर दिल में ज़ैद से दुश्मनी है और ज़ैद से मुहब्बत का इज़हार किया दोनों में फ़र्क़ हुआ लिहाज़ा जो ज़ुबान ने कहा वही दिल में हो ज़रूरी नहीं पूरे तसव्वुफ़ का निचोड़ दिल को पाक करना है तो बीस साल मेहनत करते हैं कि ख़लूस आए तो क्या चार महीने में पूरा आएगा एक नम्बर पर कमाल पर पहुंचने के लिए सारी उम्र काफ़ी नहीं।

तो चार महीने इसलिए है कि इन छः नम्बरों के साथ थोड़ी—थोड़ी मुनासबत पैदा की जाए बीवी बच्चों से निकले। जो दिल में है अब छः नम्बरों से मुनासबत होगी मकान में उन छः नम्बरों की मेहनत से बीवी—बच्चों की मेहनत में लगे गश्त, ज़िक्र, नमाज़ भी

सोहबत में बैठने की ग़ीबत की जगह से उठ जाए, एहतियात की ज़िंदगी गुज़ारे मक़ाम पर मक़ामी नक़्शे हों, घर में दाईयाना जाओ, मदअवाना न जाओ वहां ग़ीबत हो रही हो तो फ़ौरन रोक दो
عن عباس رضى الله عنه الغيبة اشد من الزنا अगर मां ने ग़ीबत की तो भी हलाल न होगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिसे हराम बताया क़ियामत तक हराम है हलाल हलाल है सारी दुनिया वाले शराब को हलाल करें तो सारे मलऊन होंगे क्योंकि नस क़तई है इजमा नसूसी क़ताइया पर न होगा।

लिहाज़ा बाहर निकलकर मेहनत करे चारे महीने वाले उतरें तरक़्क़ी होगी मक़ामी काम से बक़ा होगा तरक़्क़ी बाहर निकलने से होगी फिर छः नम्बर में कुव्वत होगी फिर खाना कमाना सब सही होगा।

जमाआतों के अजीब क़िस्से हैं एक जगह जमाअत को घेर लिया तो दुआ मांगना शुरू किया बिला पासपोर्ट के बद–दुआ के डर से छोड़ दिया, एक जगह हथकड़ी डाली तो ज़िक्र किया तो पुलीस वाले ने जादू जाना कि सारा जेल हिल रहा है ऐसे क़िस्से हैं दरिया में डला 24, 48 घंटे में निकले एक क़तरा भी पेट में न घुसा यह मश्रीक़ी पंजाब का क़िस्सा है चार थानेदार मुसलमान हो गए बाहर यह माया मिली घर जाकर खो देते हैं। बाहर की गई मेहनत में जान पड़ी गांव में गए तो सब भूल गए चार महीने वाली (माया) को ज़ाया कर देते हैं दस–बीस दिन वाली तो हवा में उड़ती है अल्लाह के रास्ते में छः नम्बरों की मश्क़ करो जितनी मेहनत करोगे कामियाबी क़दम चूमने आएगी, घर जाकर तालीम करो नफ़्ल, तस्बीह, ज़िक्र, जोड़ मेल का एहतिमाम करो, ज़ुल्म साथ न दो, किसी की चीज़ इस्तेमाल न करो, बाहर निकलोगे तो और तरक़्क़ी (होगी) घर करोगे तो बक़ा होगी, अख़्लाक़, इख़्लास, ईमान की माया अल्लाह देंगे फिर जिसको चाहे दीन बना लो।

वापस वालों से दो बात कही है कि रमज़ान का काम ख़त्म

हो रहा है और हज का ज़माना आ रहा है जैसे ज़मीनदार एक चीज़ काटी, दूसरी बोई, उस वक़्त फुर्सत नहीं मिलती है रमज़ान का काम ख़त्म हुआ उसे काटना है और इस्तिग़फ़ार करके कुबूल करवाना है और हज का काम शुरू करना है पांच अरकान जड़ और बुनियाद का काम है, अब वापस जा रहा हो तो हज के लिए पैसे लेने जा रहे हैं उस वक़्त तो खेती–बाड़ी नहीं है हुक़्क़े बजाते है।

अब काम नहीं है तो मकान बनाने की सूझी किसी की डोल फोड़ें और झगड़ते हैं दोनों तरफ़ से सर फूटे हैं तो अदालत में (250) की जमाअत बंधी है (50) ने तो मारा मारी की और (200) तो गवाही के लिए आए हैं एक भी कुरआन को माने तो फिर सर क्यों फोड़ा असल चीज़ यह है और मुशतरक मर्ज़ यह है कि शरीअत को सीखते नहीं है। ज़मीन एक दूसरे की देख रहे हैं एक तो पतर से मिलने गया दूसरे ने क़ब्ज़ा कर लिया, ज़मीनदारों की कमाई या तो मुक़द्दमा बाज़ी में जा रही है या तो औरतों पर लगाते हैं, अगर यह ख़र्च बचाएं तो इंग्लिस्तान जा सकते हो वाशिंगटन जा सकते हो मगर शैतान दिमाग़ों में घुस गया औरत यानी पेशाब की जगह पर लगा दिया दो पेशाबगाहों को मिलाया मुक़द्दमेबाज़ी का ख़र्च सर फोड़ने पर गया ये ज़ुल्म का ख़र्चा है।

अगर होश से काम लिया कि शादियों को सादा कर दो जैसे की आप सल्ल० ने किया है यहां 'नौता' को फिरेंगे, नौते आएंगे पैसे जाकर रख आएंगे, शुक्राने करेंगे दुकानदार में कार्ड छपेंगे, चालीस–पचास रूपये कार्ड में लगे। फिर तारीख़ जुटाते हैं ताकि पैसा इकट्ठा करके शान दिखाएं, जो क़ौम शादियों और मुकद्दमों में शान दिखाए तो कामियाब कैसे होंगे, वहां तो जहन्नम की धमकी है हक़ छोड़ते थे एक पाई भी मुक़द्दमें ख़र्च न होती थी निकाह में फ़ौरन शादी हो गई तारीख़ का पता भी नहीं है। ब्याह कर दिया ग़ज़्वा में जा रहे है, ख़ुत्बा पढ़ाकर खड़े–खड़े शादी हुई, शादी

ख़र्च कोई चीज़ न थी, इमाम शाफ़ई रह० ने फ़रमाया शादी तो चीज़ ख़रीदने का नाम है शरअ में इसकी कोई असल नहीं है क़ौम ने मिटने की अस्बाब इख़्तियार किए तो शादियों को अहम बनाया। रबीआ अस्लामी रज़ि० अरब आदमी हैं आप सल्ल० की ख़िदमत करते थे आप सल्ल० ने शादी को कहा तो अर्ज़ किया मेरे पास कुछ नहीं है, आप सल्ल० तीन चार मर्तबा कहा तो कहा कि माल नहीं फिर कहा आप सल्ल० की मर्ज़ी हो तो करूं ग़रीब हूं। आप सल्ल० के दरवाज़े पर पड़े रहते थे फिर फ़रमाया तो कहा कि आप सल्ल० पर छोड़ा तो फ़रमाया कि फ़लाने घर जाकर कहो कि आप सल्ल० ने फ़रमाया कि अपनी फ़लानी लड़की से मेरा ब्याह कर दो जाकर कहा तो कहा مرحبا برسول رسول الله जमा होकर निकाह हुआ आप सल्ल० के क़ौल की गवाही फिर न मांगी। अब महर का आप सल्ल० ने पूछा चंदा फ़रमाया महर के ब-क़द्र हुआ तो ससुराल में सब ख़ुश हुए वाह वाह कहा, थोड़ा न जाना अब वलीमे को कहा कुछ चंदा किया साढ़े तीन सेर जो आइशा रज़ि० के पास से ले लो, एक दुंबा ख़रीदा ख़ुद का घर न था ससुराल में पहुंचे तो कहा कि एक काम हम करेंगे आटा, जौ, ज्वार और गोश्त रोटी कहा कि ख़ुदा की क़सम यह पहला दिन था कि गोश्त रोटी रबीआ अस्लामी के घर हुआ शादी पर ख़र्च करने वाले मस्अले ऐसे हुए।

अबू दाऊद में है दो आदमी आए आप सल्ल० के चचाज़ाद हैं अब्बास रज़ि० व हारिस रज़ि० के बेटे हैं उन दोनों के बाप ने कहा कि आप सल्ल० के पास जाकर कहो हम जवान है वालिद के पास निकाह का बंदोबस्त नहीं है लिहाज़ा ज़कात का माल सुपुर्द कर दें कुछ मिलेगा तो निकाह होगा, इतने में हज़रत अली रज़ि० आए तो कहा यह सवाल कुबूल न होगा, मस्अला हज़रत अली रज़ि० को मालूम था, तो कहा कि तू हसद करता है आप सल्ल० की बेटी से निकाह हुआ हमने हसद न किया, हज़रत अली वहीं बैठे। दोनों

जवान हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० के दरवाज़े पर पहुंचे आप सल्ल० दोनों का कान पकड़कर अन्दर ले गए, पूछा क्यों आए हो शरमाए एक ने कहा महर नहीं, माल नहीं ज़कात का अमल करवा लें। आप सल्ल० ने छत पर निगाह डाली इस्तिराक़ था छत पर घंटों निगाह डाली हज़रत का ख़्याल है कि क़ियामत तक मेरी आल पर क्या होगा सिर्फ़ उन दोनों का फ़िक्र न था सबका फ़िक्र था दोनों ने चलने का इरादा किया, उम्मे सलमा रज़ि० ने कहा तुम्हारे ही लिए सोचते हैं फ़्लां-फ़्लां को बुलाकर उनकी बेटियों से शादी हुई। दोनों के बापों को बुलाकर निकाह कर दिया गया कि अगर ग़रीबी के ज़माने के ब्याह हैं तो आज हुकूमत है ? सलमान फ़ारसी रज़ि० गवर्नर किसरा के दारूल सलतनत में गवर्नर थे ब्याह किया लड़की दी कौनसा जहेज़ देगा आज तो बादशाह नहीं है माल समेटने वाले हैं आप सल्ल० तो माल देने वाले हैं बादशाहत थी सब था घर में सब कुछ था, गवर्नर साहब को बेटी दी वहां गए तो ग़ुलाम बांदी बहुत थे ये जहेज अंदर बाहर का काम करने के लिए दिए सबको अज़ाद किया। आगे मकान देखा पर्दों से सजा हुआ है बैगम बैठी है तो कहा कि काबा किन्दा में मुंतिक़ल हुआ, उस मकान को बुख़ार चड़ा हुआ है कि कपड़ा डाला है तो कहा कि आपके ब्याह के लिए है, तो बरात फ़रमाई सब कपड़े उतरवाए आगे संदूक़ थे जहेज़ था। आप सल्ल० ने फ़रमाया ऊंट पर जितना सामान आए उतना रखो संदूक़ हटवाए आगे देखा तो दस-बीस औरतें थीं कहा कि मैंने एक से ब्याह किया है बीसों नहीं किया, अब किवाड़ बन्द करके बीवी से कहा कि तू मेरा कहा मानेंगी, तो कहा आप सल्ल० ने फ़रमाया कि मियां-बीवी नमाज़ में मश्ग़ूल हो। आगे सलमान रज़ि० पीछे बैगम नमाज़ पढ़ रहे हैं आधी रात नमाज़ में खड़े रहे दो घंटे सोए दस मिनट में काम किया दिन को पूछा रात क्या हुआ आजकल तो बेवाक़ूफ़ बा-ख़ुशी सुनाता है पूछा रात कैसी गुज़री बीवी को कैसे पाया, तीन दफ़ा पूछा तो ग़ुस्से में कहा ख़ुदा ने दीवारों और

पर्दा में करवाया इसका भांडा क्यों फोड़ूं। आप सल्ल० ने फ़रमाया जो मियां–बीवी रात को बात कहें तो वह दो गधे गधी की जुफ़्ती की तरह है यह बादशाह की शादी है उन नेमतों के ब्लाक डाले हम पर मुसीबतों के ब्लाक हैं उसी वक़्त दो ब्लाक रौंदे हैं चूंकि पैसा सही जगह ख़र्च होता था।

ब्याह में सादगी रखी रमज़ान की मेहनत को ब्याह की ख़ुराफ़ात में ख़राब न करना दूसरा यह कि ब्याह बरात से हमें कोई वास्ता नहीं है अलीगढ़ के चिल्ले में रूपये लेकर आओ अव्वल अगर इत्मिनान न हो तो न जाओ, अगर इत्मिनान हो तो अलीगढ़ इज्तिमे में आओ। एक औरत लेने या देने पर कितने पैसे लगाए हैं दुनिया की काली पतली औरत जो हैज़ पर मुअत्तल है पेशाब, पाख़ाने वाली हो गन्दगी वाली पर ढाई हज़ार लगाते हैं। ख़ुदा के रास्ते में सैकड़ों हूरें ख़ुश्बूदार, हसीन व जमील मज़ीन लिबास पूरे सूरज की रोशनी एक उंगली के बराबर न होगी जोड़ा ज़्यादा क़ीमती है एक तो औरत को हूर तक पहुंचाओ और सैकड़ों मिल रही हैं
ये सहाबा रज़ि० ने कहा, भाइयों यों न जानो कि हम रंडवे फिर रहे हैं एक–एक चीज़ पर कई–कई हज़ार लिखी जा रही होंगी जल्दी तब्लीग़ में आ जाओ और वक़्त पेश करो।

उमूमी बयान न० 12

हिक्मते तब्लीग़

बुध, नमाज़ ज़ुहर के बाद, 10 मई, 1956 ई०

ख़ुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

लोग सुबह की तक़रीर पर तैयार होते हैं तो एतिकाफ़ वालों ने दस तक़रीरें सुनीं रोज़ाना आने के कम से कम दस दिन हैं तो ढाई चिल्ला हो कुछ वक़्त ज़्यादा भी लगता है लिहाज़ा तीन चिल्ले दें। फिर फ़रमाया हज़रत रह० ने ऊपर वाला कमरा यूरोप के लिए बनाया था इसलिए इस पर जंगले बनवाए हैं और सीढ़ी भी इस नीयत से बनवाई की यहां से यूरोप वाले ऊपर चढ़ेंगे, उस वक़्त बात समझ में न आती थी आज समझ में आता है वुज़ू के वक़्त हज़रत रह० (मौलान इलयास) बंदा (मौलाना यूसुफ़ रह०) को 'शरह माते आमिल' का सबक़ दिया करते थे। एक वक़्त सबक़ के वक़्त फ़रमाया कि कुतुब बनने की तर्कीब यह है कि जो मुन्किर दुनिया में हो इसमे सोचो कौन सा मारूफ़ से दफ़अया होगा, इस मारूफ़ को कहां फैलाएगें तो कहां असर होगा। मिसाल के तौर पर अमेरीका में मुन्किर है तो उसकी ज़िद वाला मारूफ़ निज़ामुद्दीन में फैलाया जाए तो हिसाब जोड़ते जोड़ते अमेरीका का मुन्किर दूर होगा, तो जो शख़्स हिसाब जोड़कर मारूफ़ फैलाकर मुन्किर मिटाए वह कुतुब बने बग़ैर नहीं रहेगा।

जब यूरोप में हज़रत ने तब्लीग़ का हज़रत रह० ने ख़्याल किया तो तो लोगों ने हज़रत रह० से कहा कि यूरोप की तब्लीग़ के लिए यूसुफ़ व इनाम को अंग्रेज़ी पढ़ाओ तो इर्शाद फ़रमाया इनको अग्रेज़ी के चक्कर में क्यों डालों जो अग्रेज़ी पहले से सीखे हुए हैं इनको अग्रेज़ों में तब्लीग़ करना क्यों न सिखाओ।

बरतानिया (ने अपने तसल्लुत) के ज़माने में हिन्दु व मुस्लिम फ़साद कराया था हिन्दुओं को गाय मत काटो सिखाया और मुसलमानों को गाय ज़रूर काटों सिखाया, लड़वाकर फ़ौज क़ायम कर दी बड़ी तक्लीफ़ों का मंज़र था, बड़ा अफ़सर निज़ामुद्दीन में ठहरा था यहां ज़्यादा ख़तरा था तो भी बस हज़रत रह० ने 25 से ज़्यादा गाय की इजाज़त दी। गाय काटकर ख़ुद इस अंग्रेज़ को दावत देने तशरीफ़ ले गए, जाकर देखा मगर अंग्रेज़ी न जानते थे। एक मुर्तजम बनाया इस अंग्रेज़ ने कहा एक शख़्स बिल्कुल छोटा हो वह ऐसे बुलावे के मौक़े पर ख़बर दे कि फ़्ला जगह फ़साद हुआ तो क्या करोगे कहा कि फ़ौज भेजूंगा, कहा वह तो छोटा है कहा, भेजने में हरज नहीं है अगर फ़साद न हो तो वापस आ जाएगी और न भेजने में हरज है कि फ़साद हुआ तो मुसीबत होगी।

तो इर्शाद फ़रमाया आप सल्ल० को सबने सच्चा जाना था उन्होंने फ़रमाया मरने के बाद यह होगा तो तू उसका बंदोबस्त कर अगर हो तो काम आएगा वरना न करोगे तो मुसीबत में फंसोगे। यों दावत दी इतना कहकर हज़रत रह० आ गए वह अंग्रेज़ मुतासिर हो गया मस्जिद के पास आया वह हज़रत रह० को देखता था और हज़रत रह० उसे देखते थे मगर बात एक दूसरे की कोई नहीं जानता था तो तब्लीग़ का जज़्बा यूरोप के लिए उस वक़्त से था।

हिजाज़ में हज़रत रह० हज को गए एक मुअतक़द अरब तो हर वक़्त हज़रत रह० की दावत करता था इसको अपना आदमी जानकर हज़रत ने फ़रमाया कि मैं यहां तब्लीग़ करने आया हूं वह अरब सुनकर इतनी गालियां शुरू की कि कुरआन शरीफ़ हम पर उतरा बैतुल्लाह शरीफ़ हम में है तुम हमको क्या तब्लीग़ करोगे। आज अरब लोग इस जमाअत के काम के काइल हो गए तो मैं अर्ज़ कर रहा था अमेरीका के पांच आदमी पाकिस्तान मे तब्लीग़ में आए हैं जज़्बा है सब नौ मुस्लिम हैं, सब कुरबान कर दिया आदत है अगर उन्हें कुरबानी के लिए बढ़ाओगे तो बढ़ जाएंगे।

हदीस में है कि शैतान इंसान व इस्लाम के बीच में रूकावट बनता है कहा अगर इस्लाम लाया तो तेरा माल छीन जाएगा, औलाद छीन जाएगी जान और इज़्ज़त के लाले पड़ जाएंगे जब आदमी इस मरहले को तै कर लेता है तो हिजरत के दर्मियान हाइल होकर वही समझता है फिर जिहाद के दर्मियान हाइल होता है इतने मरहले शैतान के हैं तो उन अमेरीका वालों ने इस्लाम की घाटी पार की अब वे मुसलमान हैं हिजरत व जिहाद की घाटी देखेंगे तो खुद भी कुरबान करेंगे वरना ऐसा ही होगा कि एक पेड़ को उखाड़ कर दूसरी जगह जमा दिया वहां इसकी जड़ें जम गयीं तो फिर उखाड़ना मुश्किल होगा।

लिहाज़ा अमेरीका वालों के साथ फिरकर ख़ूब दीन का काम करो और कराओ एक मर्तबा हज़रत जी रह० हिजाज़ में गश्त में गए और साथ में और लोग भी थे जब तब्लीग़ की तो अरबों ने नाराज़गी ज़ाहिर की ये लोग फ़लिस्तीन के यहूदी हैं सबको गिरफ़्तार किया हज़रत (मौलाना यूसुफ़) को गिरफ़्तार किया क्योंकि अरबी लिबास था अरब जाना और जमाअत वालों को बुरा जाना ये यहूदियों के पास से आए हैं। हज़रत को अलग बिठाकर तस्दीक़ कराई हज़रत बच्चे थे 'नम नम' कहते रहे 'ला' कहते तो मारे जाते फिर रास्ता देखकर हज़रत जी रह० भाग आए तो अरबों ने और जमाअत को छोड़ दिया अब तो कोई हिमायती न रहा हज़रत जी रह० भी साथ थे ग़रज़ उस वक़्त इतना बाद था आज इतना कुर्ब है लिहाज़ा मेहनत की ज़रूरत है मेहनत करोगे तो पाओगे।

उमूमी बयान न० 13

हक़ीक़त रमज़ान

बुध नमाज़ तरावीह के बाद, 10 मई, 1956 ई०

ख़ुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे दोस्तों और बुज़ुर्गों ! रमज़ान अब बिल्कुल ख़त्म पर है अब यह दिनों और घंटों पर आ गया महीनों से बात हटी चंद दिन या चंद घंटे बाक़ी रहे सारा रमज़ान ख़त्म हुआ फिर ईद आ रही है एक महीने की मुजाहिद भूख प्यास के बाद अल्लाह ने ईद का चांद दिखलाया, आज ईद की बड़ी चहल–पहल है। नमाज़ कपड़े हैं अगले दिन अपने काम–काज में लगेंगे, मेहनत महीने भर की दिन ईद का एक है इस तरह पूरी ज़िंदगी को रमज़ान का महीना जानो इस पर तमाम फ़र्ज़ व आमाल के अल्लाह के इर्शादात मिलेंगे हाफ़िज़ इब्ने हिज्र रह० वग़ैरह ने लिखा कि दो सज्दों में पहला सज्दा منها خلقنكم है फिर दोबारा गया तो فيها نعيدكم है फिर उठा तो ومنها نخرجكم है पहले तो ज़मीन से इंसान बनाया फिर इसी में जाएगा फिर इसी से निकाला जाएगा। फिर बाद में क़ियाम हो या क़ायदा, ऐसे ही जैसे रमज़ान का एक महीना गुज़र गया भूख–प्यास की तक्लीफ़ों का पता चला, प्यास के बाद पानी के मज़े मालूम हुए भूख प्यास की तक्लीफ़ें और खाने–पीने की लज़्ज़त, गर्मी में ग़ुस्ल का मज़ा, रोज़ेवाले को ठंडे पानी से ग़ुस्ल करने से आधे रोज़े की तक्लीफ़ जाती रही यह सब मालूम हुआ यह मुजाहेदा ख़त्म होगा जैसे रमज़ान अपने मुजाहेदे से ख़त्म होगा ज़िंदगी भी गुज़र जाएगी।

अल्लाह ने बताया यों रमज़ान गुज़ारोगे तो ईद आएगी ईद

का दुनिया में नमूना और झलक दिखला रहे हैं कि अय्याम कल व शर्ब व निहाल है यह खुदा की मेहमानी का दिन है। अब इसके बाद जब मर जाएंगे तो एक दिन वाली ईद फैलकर सारी ज़िंदगी बनेगी और रमज़ान का महीना ख़त्म हो जाएगा, वहां हूरें मिलेंगे, बाब रय्यान वग़ैरह सब आख़िरत में मिलेगा थोड़ी से एक महीने के तक्लीफ़ें भूलाने के लिए ईद की झलक दिखलाई (30) दिन मुजाहेदा एक दिन ख़ुशी का है। चंद रोज़ा ज़िंदगी मां के पेट से क़ब्र तक मेहनत का वक़्त है फिर ईद ऐसी आएगी जो कभी ख़त्म न होगी, रमज़ान व ईद एक नमूना है कि अपने तबीयत पर न चलो रमज़ान में एक शख़्स ने रोज़ा वग़ैरह नहीं रखा उसके लिए ईद नहीं है عید الابرار وو عید الفجار धमकी का दिन फजीरों के लिए है खुदा के हुक्मों को तोड़ने वाले के लिए धमकियां हैं ख़ुदा का शुक्र है कि दीन से मेहनत अता फ़रमाई ताकि कुरबानी दे दें निस्बत खुदा की हो शोहरत मक़्सूद न हो तो ख़ुदा अपनी निस्बत पर तक्लीफ़ें उठाने वालों को बहुत कुछ देने का इरादा फ़रमाते हैं। الذین کفرو

ज़मीन आसमान में जो मिल रहा है उसे अल्लाह 'दुनिया' क़रार नहीं देते हैं متاع قلیل "لہو ولعب" تقلب इसकी कोई हैसीयत नहीं कुछ के नज़दीक दुनिया कुछ नहीं हमारे सामने आख़िरत रहे ख़ुदा के ख़ज़ाने रहें, तो दुनिया को हम ने कुछ जाना किसी जगह सिर्फ़ कुत्ते ही कुत्ते हैं, बकरी ऊंट न खाएंगे, शेरों, हर नौ को क्या जाने, वहां सिर्फ़ कुत्ते खाते हैं बकरी ऊंट हिरन न खाएंगे, वह तो है ही नहीं الدنیا جیفۃ و طالبہا کلاب मुर्दार और कुत्तों के सिवा कुछ नहीं है। ख़ुदा के ख़ज़ाने इसके सामने नहीं है पहले तो सोना—चांदी सामने हुआ करता था अब जस्ते मारी कागज़ दो रूपया एक पांच हज़ार का उसे बोसा लेते हैं मालियात के तसव्वुर पर ख़ुश हो रहे हैं दीवालिए निकल गए अब अल्लाह अक़्ल को और चपतमारी इस तसव्वुर में कि इसका काग़ज़

से होना मिलेगा। जैब में रखते हैं एक दिया सिलाई से करोड़ों की मालियत का कागज़ चले इनमें कुछ नहीं है ख़ुदा के ख़ज़ानों में सब कुछ है जिसको मालियत व नेमत खुदा ने कहा इसमें से देंगे अगर आदमी इसके के साथ रग़बत न करे तो ग़लत के साथ होगा यह आख़िरी अयाम हैं रोज़ा का भी आख़िरी है रमज़ान का भी आख़िर है दुआ मांगो अगले साल का कुछ पता नहीं है। अगले साल तौफ़ीक़ तन्दुरूस्ती मिलती है या नहीं इसलिए आइंदा के लिए भी दुआ मांगो इसी तरह अल्लाह तआला दीन की कुरबानी के लिए कुबूल फ़रमा लें। (आमीन)

उमूमी बयान न० 14

मोमिन जी तिजारत

जुमेरात, तरावीह की नमाज़, 11 मई, 1956 ई०

ईशा और नमाज़ तरावीह से फ़ारिग़ होकर हज़रत जी रह० ने हयातुस्सहाबा रज़ि० की तालीम की इसके बाद यह बयान फ़रमाया कि :

मेरे दोस्तों और बुज़ुर्गो ! ये उन जमाअतों का तज़्किरा है जो इस्लाम लेकर मदीना में आए जैसे बेल लेकर ज़मीनदार हल चलाता है और सारी ज़मीन में फिरता है लोहा ज़मीन पर है ऊपर किसान है जितनी ज़मीन है उसमें कोई जगह ऐसी नहीं छोड़ता जहां लोहा न जाए फिर बीच बिखेरता है। अल्लाह तलाला पानी देते हैं तो सब हलक़े में खेती होती है तो इसी लोग किसी मुल्क को छांटकर पूरे इलाक़े को खोदकर हर जगह कलिमे का बीच डालते हुए जाएं तो खुदा की रहमत के बादल आएंगे, सब जगह से ईमान आएगा। चाहे बिहार का या मशरीक़ी पंजाब का फ़साद–ज़दा इलाक़ा हो सब जगह रहमत आएगी, वहां तो किसान रोटी की लालच में करेगा, यहां ईमान के लालच में करेगा अल्लाह की बातें वाकाई जानता है। अब लोग दस दिन देते हैं इसमें सारा हिन्दुस्तान कहां से आएगा तीन– तीन चिल्ले हों हज़ारों आदमियों का तान्ता बंध रहा हो और सैकड़ों का खर्च लेकर आएं, पूरे हिन्दुस्तान में चक्कर काटकर फिरें और यक़ीन करे कि यहां ईमान आएगा तो खुदा की रहमत को जोश आएगा तो लोग तुम्हारे पास आएंगे अब तो तुम मारे–मारे फिरते हो फिर वह मारे–मारे फिरेंगे मुशतरक को ईमान मिलेगा तो फिर महबूब बनेगा। शरनाथी देहली में आए और मुसलमान वग़ैरह पंजाब में गए तो मक़ामी लोगों ने कड़वी निगाह से देखा

कि तिजारत पर छा जाएंगे मुहब्बत नहीं है दीमक की तरह एक दूसरे को कांटते हैं गोबर सी अक़्ल में यह बाई तो मेहनत की हालांकि अदालतों और बुग्ज़ का रास्ता है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली मेहनत क़ायम होगी सहाबा रज़ि० एक जगह गए मगर सारी जगह से वफूद आए और इस्लाम फैला, अरब से बाहर जहां वे फिरे वहां भी मुसलमान हुए एक आदमी से पूरा मुल्क पलटा खाया।

संगेपूर के बारे में इब्ने बातूता ने लिखा एक अरब नवजवान तिजारत के लिए आए थे कोई पहचान न थी एक बुढ़िया के यहां ठहरे थे वह खाना पकाती थी एक दिन वह चीख़ मारकर रोई कि हाय मेरी मरी, पूछने पर बतलाया कि दरिया में सेलाब से हलाकत आती है। इसलिए इसमें एक नवजवान लड़की कुरआ डालकर चढ़ाई जाती है इसकी लड़की का काम आया तो बुढ़िया रोई अरब ने कहा मुझे लड़की का लिबास पहनाकर डालो ख़ूबसूरत थे जलूस निकलता था वह उन्हें लेकर गए समुंद्र की तरफ़ बिठाकर उस तरफ़ से कोई बला आती तो वह सुबह को मरी हुई मिलती थी अरब साहब को बन्द कर दिया समुंद्र की तरफ़ भागे, तो मरे समुंद्र को देवता जाना वहां जाकर ज़नाना लिबास उतारा मर्दाना लिबास पहनकर ख़ूब सारी रात नमाज़ पढ़ी लिहाज़ा सेलाब न आया, बादशाह ने नज़र बंद रखा मगर मुसीबत न आई मर्द ख़ुशी के साथ मुसीबत न आई थी और दुकानों पर आए तो सारे संगापूर में इस्लाम आया।

चीन में दो अरबों ने तिजारत की इस्लाम उसूल पर तिजारत की सारा मज्मा वहीं ख़रीदने आने लगा, गेहूं की कसरत इतनी की मुलाज़िम देते देते थक जाते हैं, आज तो ताजिर ने क़ीमत घटा दी है हुकूमतों में लोगों ने कहा कि दो फ़सादी हैं, वहां से सिपाही ने आकर कहा कि कल से दुकान बंद कर दो इजाज़त नहीं है, पूछा ग़लती क्या है ? कहा की हुकूमत कल आ जाए हम भी तलवार से

मुक़ाबला करेंगे, सुबह हथियार लगाकर बैठे जब चर्चा हुआ कि दुकान बंद हो रही है तो सारे ग्राहक तलवार लेकर आए हज़ारों आदमी आए, दूसरे मोमिन और सारी हुकूमत पुलीस आती तो सब ने कलिमा पढ़ा।

मेहनत करो आज तो चाहे कुफ्र हो या इस्लाम हो मगर हमें रोटी मिले चाहे सुअर का गोश्त हो हमें तो गोश्त मिले, सूद, सुअर, झूठ और कुत्ते में कोई फ़र्क़ नहीं है। मीरास दबाने और सुअर खाने में फ़र्क़ नहीं है जो क़ौमें मीरास नहीं देतीं उनके मुसलमान करने में शुब्हा है हलाल व हराम से पेट भरना मक़्सद बना लिया है, अब इस्लाम क्या फैले, हराम और सुअर तो फैला हुआ है मुसलमान से अल्लाह क्या फैलाएंगे। सूद फैलाने के वास्ते काफ़िरों के हाथ में मुल्क अच्छा है, कुफ्र के हाथ में मुल्क की भाग दौड़ हो यह अच्छा है, क्योंकि हराम फैलाना है तो काफ़िर अच्छा है, यह मर्द औरत के अलावा सब जगह होगा, मुसलमान को तो डंडा मारो, टैक्स लगाओ, सैल टैक्स लगाओ, मुसीबत आए और काफ़िर हाकिम हो, तीन–तीन चिल्ले दो और इस्लाम फैलाओ।

उमूमी बयान न० 15

असल ईद आख़िरत की ईद है

जुमेरात, असर के बाद, 11, मई, 1956 ई०

मेरे बुज़ुर्गो और दोस्तो ! जिस तरह यह रमज़ान का महीना ख़त्म होकर शुरू हो रहा है और ईद आ रही है इसी तरह इंसान की ज़िंदगी शुरू होकर ख़त्म होती है कुछ की ज़िंदगी ईद पर ख़त्म होगी जैसे कि रमज़ान ईद के चांद पर ख़त्म होगा यह रमज़ान का महीना सिखो, हिन्दुओं, रोज़ेदारों, बे-रोज़ेदारो सब पर गुज़रा लेकिन बाद में ईद सबके लिए नहीं बल्कि عيد الابرار و عيد الفجار नेक-बख़्तों के लिए ईद है और जिन्होंने फ़रमानी की तो धमकी का दिन है इसी तरह जान लो कि एक वक़्त महदूद रखा रोज़ेदारों वग़ैरह रोज़ेदार का यह महदूद वक़्त गुज़र गया, एक का गुज़रकर ईद पर पहुंचा दूसरे का धमकी और पकड़ पर पहुंचा।

इसी तरह दुनिया की छोटी सी ज़िंदगी है आख़िरत के मुक़ाबले पर है जैसे यहां पूरे साल के मुक़ाबले में महीना छोटा है आख़िरत में तो ला-महदूद है मौत पर शुरू होकर ज़िंदगी पर ख़त्म न होगी न हज़ार साल के बाद कभी ख़त्म न होगी और जो ज़िंदगी मां के पेट से शुरू हुई मौत पर ख़त्म होगी। जिसका वक़्त ज़िंदगी के रमज़ान की तरह गुज़रे कि ख़्वाहिशों को कुचल रहा हो और ख़ुदा के हुक्मों को पूरा करें चाहे भूख व प्यास उठाना पड़े चाहे तक्लीफ़ें हो लेकिन ख़ुदा के हुक्म को तोड़ने न दिया। आज़ा को वहां इस्तेमाल न किया जहां से ख़ुदा ने रोका, रूह को ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जोह किया اِنّ فی خلق السموات يتفكرون दिमाग़ को ख़ुदा की मख़लूक़ात की फ़िक्र में ख़र्च किया। दिल में ग़ैर-अल्लाह

की मुहब्बत न रखें ख़ुदा ही ख़ुदा की तलब की हर हिस्से को सही ख़र्च किया और माल व चीज़ों को ख़ुदा पर ख़र्च किया तो इनकी मौत ईद का चांद है और यह ईद कभी ख़त्म न होगी, ज़िंदगी तो ख़त्म होगी मुजाहेदे और कानून का वक़्त तो ख़त्म हुआ अब इनकी ईद बाक़ी रह गई अब ईद पर खाने का दरवाज़ा खुला अगले रमज़ान तक खुला रहेगा, अगला रमज़ान आकर बंद करेगा।

मगर मौत जिस राहत को खोलेगी इसे कोई भी बंद न करेगा मौत ईद का चांद है दूसरे रोते हैं और यह हंसता है क्योंकि ईद है ख़ुदा का मेहमान बन रहा है ईद भी ऐसी कि कैसी बढ़िया कपड़े व ख़ादिम और मोती के मकानों 80 या 70 मेल बे–जोड़ मोती होगा इसका मकान होगा सोने चांदी के मकानात, बाग़ात हैं अंगूर के बाग़ात लाखों मेल तक चले गए। सेब, संतरे के बाग़ात हैं कम से कम सातों ज़मीन आसमान से दस गुनाह है 80 हज़ार ख़ादिम يطوف عليهم ولدان مخلدون सफ़ बांधकर ख़ादिम खड़े हैं। सीपी के मोती की तरह है अंजूर लेकर खड़े हैं, हूरें हैं, एक हूर एक उंगली दुनिया में निकाले तो सूरज काला नज़र आए, एक हूर को सत्तर जोड़ दिए जाएंगे, एक हूर की क़ीमत सारी दुनिया भी अदा नहीं कर सकती और जिन्होंने ज़्यादा कुरबानियां की थी ऐसे आदमियों को 25 लाख औरतें मिलेंगी, यह ईद का चांद है एक महीना मेहनत करके ईद आई खाओ पीयो लेकिन हैज़ में सोहबत न करो मर्द मोमिन की मौत ईद का चांद है।

सहाबा रज़ि० नूमने पर غداً نلقى الاحبه محمداً وحزبه कल दोस्तों से मिलेंगे यह अम्मार रज़ि० ने कहा, कल आई मैदान में आगे बढ़े, बूढ़े थे, सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली रज़ि० के साथ थे तीर लगा प्यास लगी थी पानी मांगा तो किसी ने दूध दिया तो कहा, अब तो महबूब से मिलेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि तुझे आख़िरी में दूध मिलेगा, अब असल ईद का चांद है, उसे याद दिलाता था दुनिया की ईद तो नक़ली ईद है

दूध वाली सिवाइयां पेशाब बन गईं, कपड़े मेले हो गए औरत को हैज़ आया सब ईद खट्टी हो गई यह ईद दूसरी ईद याद दिलाने के लिए है यह दारूल मुजाहेदा है इसमें तक्लीफ़ें बरदाश्त की तो ईद का चांद आ गया अब रोज़ा वग़ैरह सब ख़त्म हुआ जो जी चाहो वह खा सकते अब ईद आ गई है। इसी तरह दुनिया की ज़िंदगी ज़बरदस्त मेहनत का वक़्त है ताकि मौत ईद का चांद बन जाए, हदीस में है कि मर्द मोमिन की मौत के वक़्त फ़रिश्ते ख़ुशबू के साथ आते हैं नर्म—नर्म गद्दे लाते हैं يا ايتها النفس المطمئنة कहते हैं मत घबरा अल्लाह बुला रहे हैं वह रूह उनको देखते ही निकलना चाहती है वह रूह ख़ुदा के हुक्मों से मुफ़ीद थी आप सल्ल० ने फ़रमाया मर्द मोमिन की रूह इतनी ख़ुशबूदार होती है कि सारी दुनिया की ख़ुशबूएं भी इसका मुक़ाबला नहीं कर सकती नूरानी साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ होगी रेशम के गद्दों पर लेंगे। एक फ़रिश्ते ने कहा, दूसरे ने कहा मुझे दो कंधे बदलना फ़रिश्तों की नक़ल है पता चला वाह वाह ! ख़ुशबू वाला है, आसमान का दरवाज़ा खोला वहां तक फ़रिश्तों हदूद तक पहचाने जा रहे हैं ख़ुशबू से लज़्ज़त ली मशायात की हत्ता कि अल्लाह के अर्श तक पहुंची वहां से आवाज़ आई कि इसे मीठी नींद सुला दो।

फिर क़ब्र में रूह जाती है तीन सवाल होंगे من ربك "جواب" ربي الله "اور" دينك الاسلام، وهذا محمد और जवाब तशबिया है या माबूद ज़हनी है इलाक़े हट गए होंगे या चेहरा आप सल्ल० का ही होगा तो इनके बारे में पूछा जाएगा फिर कहा कि तू सच कहता है हमने ज़ाबता पूरा किया फिर نم كنومة العروس दूल्हे दुल्हन की तरह सो जाओ। अब तुझे वह जगाएगा जो ज़्यादा महबूब है, अर्श पर रूह को प्यार का जुमला कहा एज़ाज़ व इकराम किया भाई आराम करो थक गए बाद में उठकर खाना खाओ लिटा दिया।

दूसरा आदमी जिसने ख़ुदा के अहकाम तोड़े हराम काम किया,

अल्लाह के गै़र से जोड़ बिठाया, ख़ुदा के लिए क़दम न उठाया मुंह से हराम खाया मुश्रिक था अन्दल मौत फ़रिश्ते आएंगे, काले केरी आंखों वाले खुरदरी टाट लाएंगे, आंखें सुर्ख़ रूह को डांटकर कहेंगे निकल कमबख़्त खी़ंचेगा इस तरह रूह में कालापन और बदबू होगी अब फ़रिश्तों ने लानत की कि ख़ुदा उसे ग़ारत करे। हमारा दिमाग़ सड़ाया हम तो पहले ही जानते थे, पहले आसमान पर दरवाज़ा न खोला जाएगा यह गंदे ख़बीस की रूह है पांच सौल साल की मुसाफ़त है वहां से रूह ज़ोर से ज़मीन पर फेंक दी जाएगी, चीखती हुई ज़मीन पर गिरी क़ब्र में गई जवाब कुछ न दिया कहा हम तो पहले ही जानते थे, अल्लाह की तरफ़ से आवाज़ आएगी इसके लिए अंगारे बिछाओ ज़मीन दबाएगी पसलियां मिल जाएंगी इतनी ज़ोर से चिल्लाएगा मतूहश हो जाएंगे, तो यह मौत कुछ के लिए ईद का चांद और कुछ के लिए धमकी है अल्लाह के हुक्मों को मानने से बाक़ी रहने वाली ईद आएगी।

दोस्तों बुज़ुर्गो ! ख़्वाहिश की इत्तिबा करने के लिए आदमी मुजाहेदे करने की ज़रूरत नहीं, औरत, दुकान, खेत की ख़्वाहिशें हैं इस पर चलना है माद्दा मौजूद नहीं जमीनदार की तर्ग़ीब नहीं दे जाती क्योंकि माद्दा भरा हुआ है, ब्याह में भी किसी तर्ग़ीब की ज़रूरत नहीं। औरतों को रोटी की तर्ग़ीब की ज़रूरत नहीं है छोटे बच्चे भी खाना पकाते हैं हालांकि वाज़ न हुआ, खाने भी झूठ मूठ की खीर बनाते हैं ज़मीन, पानी, हवा, सोना, चांदी, ख़्वाहिशों भरी हैं इस पर तो आदमी अपने आप चलेंगे। इतने दिन हुए कि ईमान की तरफ़ खींचा गया, लेकिन दस दस दिन दिए अगर दौर निकल गए तो खुद भी भागने लगे अब अगर रोको तो जल्दी चले जाते हैं महीने भर भूखे रहे, तरावीह, इश्राक़, चाश्त, अव्वाबीन सब पढ़ा है, रोज़ाना 70, 80 रक्अतें बैठी हैं, भूख प्यास सब बरदाश्त किया, ये सब हुआ तक़रीरें हुईं 30 दिन तक तस्बीह हुई है फिर भी गांव का माद्दा भरा हुआ है ईद गांव की करेंगे हालांकि इसके लिए एक

भी तक़रीरें नहीं हुई, फिर भी हम क्यों जा रहे हैं इसलिए की अभी बोतल भरी हुई है ख़्वाहिशों से भरी है दुनिया की ज़िंदगी तो अपने आप चलेंगी इसके लिए तो कुछ भी नहीं चाहिए लिहाज़ा यह ज़िंदगी तो यों चलेगी।

दूसरी ज़िंदगी में जो कुछ अपने में भरा हुआ है इसको दबाओ जो नहीं है इसको लाओ जन्नत का शौक़, दोज़ख़ का ख़ौफ़, अल्लाह की मुहब्बत के जज़्बात भरे नहीं है इसी लिए रोज़ा, नमाज़, बाहर निकलना है। अब यह मेहनत का काम हो गया है ख़्वाहिशें ख़त्म हों और ख़ुदा के हुक्मों को पूरा करने का जज़्बा पैदा हो इसके लिए चिल्ला करो, जमाअत में निकलो और तस्बीह, कुरआन, किताब सब करो और सुनो गश्त करो क्योंकि है नहीं, सौ जतन करने पड़े हैं क्योंकि है नहीं, हम तो मनी के क़तरे से बने हैं उस बाप से चला आ रहा है कि ऐसी ज़ोर की ख़्वाहिश के हाथ, मुंह, हाथ आंख पूरे बदन में ख़्वाहिश की कुव्वत से तहरीक पैदा हुई पहले ख़्वाहिश है फिर मनी है और अम्मां जान में भी पहले ख़्वाहिश आई फिर क़तरा लिया तो ख़्वाहिश की तहरीक हमारे वजूद से पहले है जब क़तरा चलने से पहले इतनी ख़्वाहिशें थी तो क़तरा जब ख़्वाहिशों में चला होगा तो कितनी ख़्वाहिश से है। अब पूरा बदन मनी से बना आंख कान सब मनी से बने हैं मनी जिससे नबी है इससे हमें जोड़ है ज़मीन व आसमान के मशीन से गिज़ा बनी खाई वह हज़म हुई पूरी इंसान की मशीन चली तो ख़ून फिर मनी बनी तो मनी इस ज़मीन व आसमान के पूरे निज़ाम से बनी है, इसी लिए इंसान को हवा, पानी, ज़मीन, दूध, घी की ख़्वाहिशें हैं यह तो भरी हुई हैं आंख, कान, नाक, सब सब में ख़्वाहिशें भरी पड़ी हैं। ज़मीन, बीवी पर मरता है, बच्चों पर मरना चाहता है अब बताओ करने की बात क्या है मौत ऐसी सूरत में ईद का चांद बनकर न आएगी, अगर ख़्वाहिश को पूरा करने में लगे मौत ईद का चांद न होगी, इसी ख़्वाहिश को तोड़ा रोज़े में, खाना-पीना

छोड़ दे अगरचे 25 घंटे का वक़्त हो।

एक जहाज़ मिस्र मुसलमानों का था वह गया और रोज़ा रखा जहां इलाक़े में पहुंचा वहां चार, छः महीने तक सूरज न डूबे, वहां पहुंचे कप्तान ने कहा कि वक़्त हुआ रोज़ा खोलो तो उन्होंने कहा न खोलेंगे सूरज डूबेगा तब खोलेंगे छः महीने बाद खोलेंगे मगर रोज़ा न तोड़ा मौत से न डरे, जब मौत का ख़ौफ़ हुआ तो जहाज़ का वापस किया और सूरज डूबता हुआ देखा तो रोज़ा इफ़्तार किया पहले न खोला ऐसे इलाक़े हैं रोज़ा इसी लिए रखवाया है औरत से सोहबत वग़ैरह से रूका ताकि माद्दा दब जाए। 20 रक्अत पढ़ी मगर जमकर नहीं पढ़ते हैं नमाज़ के बाद किताब बराबर नहीं सुनते हैं पंद्रह घंटे पूरे किए एक घंटा न रूके माद्दा न दबा रोज़े की हक़ीक़त यह है कि माद्दा दब जाए। मौत ईद का चांद है इसके लिए सौ जतन करने पड़ेंगे ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ ख़ुदा के हुक्मों पर चलना आ जाए जी चाहेगा उस ख़्वाहिश को जिससे मनी बनी है मनी जिन इज्साम से बनी वही इंसान चाहेगा।

अगर दोनों जहां की नेमतें चाहो तो ख़्वाहिशों से बचो ऐ يا ايها الذين امنوا استعينوا بالصبر والصلوٰة अल्लाह पर यक़ीन करने वालों जिनके यक़ीन की माया ख़ुदा और आख़िरत के निज़ाम और फ़रिश्तों के साथ है तुम मदद हासिल करो सब्र और नमाज़ से, सब्र और नमाज़ ख़्वाहिशों के माद्दे को दबाते हैं। زين للناس حب الشهوات الصابرين इन शहवतों पर क़दम न बढ़ाने वलो दबाने वाले हों इसके बारे में रोकथाम करने वाला का नमा सब्र होगा।

नमाज़ क्या है हज़रत जी रह० ने कहा मुजीद दालिफ़ सानी ने अपने मक्तूब में लिखा है कि इंसान नमाज़ पढ़ता है (600) अहकाम की तामील करता है, वुज़ू कुरआन वग़ैरह मिला तो छः सौ अहकाम पूरे करता है, नमाज़ में रूह, आंख, कान, ज़ुबान, हाथों, पैरों, दिल व दिमाग़ के लिए अहकाम हैं तो ख़्वहिशों को दबाना

और हुक्मों को पूरा करना यह सब्र व नमाज़ है इन दो से हक़ीक़ी कामियाबी होगी इससे यह बात निकली ان اللہ مع الصابرین सब्र से ताअत है ख़्वाहिशों से न दबेंगी तो नेक न बनेगा ज़ोर का जज़्बा उभर रहा है, हुक़्क़े की तरह खर जाने की तड़प उभर रही है, घर, ज़मीन भैंस, गाया, की तड़ पर उठ रही है, दूध घी लस्सी वग़ैरह की याद आती है कि खुदा जाने यह कौन यह सब खा रहे होंगे यहां तब्लीग़ में तो चीनी खानी पड़ी। ففروا الى الله जहां भी जाओ अल्लाह की तरफ़ भागो यहां तक कि जान निकल जाए और हम लोग ففروا الى القرية गांव की तरफ़ भागते हैं, गांव की तरफ़ क्यों भागते हो सारी दुनिया में तो आख़िरत की कोई चीज़ नहीं आती है। गांव में तो औरतें सिवाइयां बनाती हैं खुजाती जाती हैं पसीना आता है एक उंगली के छठे हिस्से जितनी मोटी सिवाइयां होती है। दूध लस्सी औरतों की तरफ़ भागते हैं कुरआन ने तो अल्लाह की तरफ़ भागो कहा था, यह उलटे भाग रहे हैं गांव की तरफ़ भागना ज़ोर से होता है, बैल घोड़ा जब वापस जा रहा है तो ख़ूब भागता है क्योंकि गांव की तरफ़ जा रहा है। न तो दम खींचनी पड़े कि घर की तरफ़ जा रहा है, जब वापसी में मोटर तक पहुंचे हैं अब ज़ोर से दुम पकड़कर घसीटते हैं नीचे से पांव लगाते हैं क्योंकि गांव से दूसरी तरफ़ जा रहे हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सारे नबियों से अल्लाह ने बकरी चरवाई, सूफ़िया वग़ैरह ने सोचा तो तीन बातें निकली (1) आदमी जिनमें रहेगा असर पड़ेगा बकरी में मुसकिनत है लाठी उठाओ तो सर नीचा करेगी ऊंचा करेगी, चराने वाले के चारों तरफ़ बकरियां रहेंगी, ताकि इसमें मुसकिनत आए मस्किन माहौल बनाया और हम ऊंटों, बैलों, भैंसों में रहे हर वक़्त। किसी ज़मीनदार से पूछा कि तस्बीह पढ़ी ? तो कहे कि करनी है, बैल गाय के या तो आगे होगा या पीछे होगा ज़मीनदार बैल के मिज़ाज के (साथ) है तब्लीग़ में लगा तो खींचना पड़ता है, कंधे पर हाथ

रखा बैल की तरह दूसरी तरफ़ जा रहा है बैल का सा मिज़ाज हुआ, बकरी वाली मुसकिनत नबियों में पूरी आई, भैंस वाली बात भी है, जब ज़मीनदार पीछे और भैंस आगे हो तालाब की तरफ़ मुंह हुआ तो कहा गई भैंस पानी में, क़ाबू में न आया मालिक ने इसको पानी में देखा मिसाल के तौर पर इसको समझाया कि मान जा मैं मालिक हूं। हज़रत मौलाना, चौधरी सब ने कहा लेकिन न माना, फिर गालियां देनी शुरू कीं फिर डंडा मारना शुरू किया आगे चली गई ज़्यादा डंडे मारे तो मुंह नाक बर्बाद कर दिया अब भैंस कहां गई जो भैंस पानी में गई अब भूख लगेगी तो शाम को आएगी मगर मुसीबत तो ज़मीनदार की है क्योंकि इसमें भी भैंस का मिज़ाज गाय का मिज़ाज है, पहले तो बतलाया हज़ारों तो ले ले पंद्रह दिल गुज़रे घर को भागा। अब भैंस वाला मिज़ाज 'गई भैंस पानी में' ज़मीनदार जब घर गया तो उसे कौन निकालेगा, भैंस में पानी में ऐसे ही गया ज़मीनदार गांव में। यह है हम यहां तीन चिल्लों का ज़ोर बांधते हैं और यह गांव में जाता है, इसके आगे तो डालो लकड़ी ताकि न भागे, रस्सी लम्बी रखी है अब भागी रस्सी लम्बी थी भैंस काबू में आ गई, अब ज़मीनदार में रस्सी डालो मिज़ाज में भैंस जैसे हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऊंट वालो जफ़ा वालो कहा, बैल, भैंस वालों में ऐसे ही मिज़ाज होगा, अब मिज़ाज बैल का आ गया सब गांव से आए किताब के लिए आगे नहीं होते हैं। पीछे से हाथ लगाओ तो भागकर आगे जाता है, बैल की तरह है यह तो गांव की ज़िंदगी है और जो ज़िंदगी दीन सीखने के लिए है तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते पर बिछाते हैं और जब किताब खोलकर बैठ गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते पर बिछाकर बैठे हैं। जैसे परिन्दे पर बिछाकर बच्चों पर बैठते हैं तो अब لا يعصون الله ما امرهم ويفعلون مايومرون का मिज़ाज आ रहा है गांव से आए तो बैल की तरह हैं तब्लीग़ में

आकर फ़रिश्तों की तरह है तलब पर दीन सीखने निकल रहे हैं तो फ़रिश्तों की सिफ़त आ जाएगी, फ़रिश्ते सिफ़त हो जाओगे फ़रिश्तों में रहोगे तो फ़रिश्ते जैसे बनोगे और जानवरों में रहोगे तो जानवर जैसे बनोगे।

छः महीने में दस दिन देता है तो चार महीने का रिवाज डालो तो फ़रिश्तों वाली सिफ़त ला यासून का माद्दा पैदा होगा, ख़ुदा की क़सम ख़ुदा की नेमतें इससे पचास गुनाह ज़्यादा बरकत देंगी। ज़मीनदार से भी ज़्यादा ग़ल्ला मिलेगा· ثم شققنا الارض شقا؛ हमने ज़मीन को फ़ाड़ा ऊपर तक अल्लाह ले जा रहे हैं نا نبتنا فيها حبا खेती की यह गेहूं के दाने अल्लाह ने बनाए हैं जितना ख़ुदा के काम में मेहनत करोगे थोड़ी मेहनत में ज़्यादा दाने होंगे एक बीगा में पचास बीगा जैसे दाने होंगे। अल्लाह बनाते हैं एक अक़्ल का चक्कर है कि ज़मीन पर जितनी मेहनत करेंगे उतना दाना बनेगा, अगर ख़ुदा को देखो तो समझ में आएगा, अब हम दो बातें चाहेंगे सब गले में लकड़ी लो और रस्सी डालो, वायदा रस्सी पकड़ा जाओ यहां के खूंटे में रस्सी गले में बांधकर जाओ, भैंस से ज़्यादा मुश्किल है और एक इसको ढीला न छोड़ा जाए। लकड़ी वालों गांव में तालीम गश्त तस्बीह रखना आज़ादना रहना, लकड़ी में भागेगी तो घुटने टूटंगे, हलाल व हाराम का ख़्याल रखकर काम करना वायदे की रस्सी गले में डालो और मोटी रस्सी डालो। अब बताओ जिस तरह तुमने रोज़े के लिए मेहनत की अब हज के लिए मेहनत करो जितनी मेहनत करोगे ज़मीनों में बरकत होगी, सातों ज़मीन व आसमान दीन के ताबेअ हैं, दीन माल व दौलत, ज़मीन व आसमान का ताबेअ नहीं है लिहाज़ा जो इंसान दीन की मेहनत करने वाले इंसान बन जाएं तो चमकेंगे। बनी इसराइल चमके हज़ारों साल से कुचले जा रहे थे वही सरदार बन गए, रमज़ान का काम निमटा अब शीवाल से फुर्सत है, हां ब्याह, बारात का काम है निकाह तो कुरआन में है आजकल की रस्में बिदआत हैं, नाम व

नमूद है अभी एक जमाअत ने कहा कि लकड़ी वालों ने कहा अगर पांच सौ से कुछ कम लाया तो कोड़ी पे बिठाकर खिलाएंगे अगर पांच सौ आदमी लाया तो इज़्ज़त से खिलाएंगे। कमाई को इसमें खो रहे हैं नाम व नमूद रिया व दिखलावा कर रहा हैं, अब लड़का तौला लड़की तौली इसका बाप तौला, अब गांव को भी तौलो, यह ख़र्चे ख़ुदा को राज़ी करने वाले नहीं या मलऊनों के ख़र्चे हो रहे हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के निकाह सादे थे। उस्मान रज़ि० ने दस हज़ार आदमियों पर तबूक में तीन चार महीने ख़र्च किया, दीन के मक्तूबों पर ख़र्च करो, ब्याह में नई से कहेंगे हमारी नाक कट जाए पंद्रह रूपये लेकर आते है, ब्याह क्या है, ब्याह यानी मर्द औरत का जोड़ बिठाया, मां का बेटे से भाई का बहन से जोड़ा है। रोटी पकाकर खिलाया, कपड़ा सी दिया, बहन के लिए चीज़ लाया सारा जोड़ है, मगर दो सूराख़ का जोड़ किसी से नहीं यह जोड़ ब्याह में है और जोड़ तो पड़ोसन से भी है, रोटी, कपड़ा, दवा, सामान सब औरों से आया, असल जोड़ तो पेशाब की जगह है, हराम से बचने के वास्ते निकाह क़ायम किया इस पर नेमतें मिलेंगी मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला तरीक़ा इख़्तियार किया जाए, हर शख़्स अपनी शान दिखाता है, ख़ुदा के आगे कंगाल हो, बे-महल मालदारी साबित करोगे तो कंगाल हो जाओगे। जान व माल का असल मसरफ़ तब्लीग़ है ख़ुदा के बंदों को ख़ुदा से मिलाओ, सहाबा के यहां निकाह में फ़ौरन निकाह होता था, तारीख़ें नहीं मुक़र्रर की जाती थी, बराअतों को नीचा दिखाते थे इतना खाया कि वह खिला सका, या इतना पकाया कि वह खा न सके यह हार-जीत है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हां हार-जीत यह थी कि कुफ़्फ़ार को भगाया, तुम्हारे वाली हार-जीत पकड़ वादेगी, अब बोलो क्या है, बारातों का काम सुन्नत का काम नहीं है, हिन्दुओं की रस्में हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला रास्ता सादगी

वाला है महर में शादी में सादगी थी

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुशबहत करो तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसे बनोगे और हिन्दु तो पानी, सूरज, पेशाबगा तक पूजते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो सिर्फ़ ख़ुदा को पूजते थे, तारीख़ वग़ैरह न लगाओ दस पांच दिन में ब्याह करके आ जाओ, ब्याह में आठ सौ लगाते हो तो तब्लीग़ में ढाई सौ लगाओ तो अब बचत होगी।

उमूमी बयान न० 16

नुमाए इलाही का तरीक़ा हुसूल

11, मई, 1956 ई०

ख़ुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

भाइयों दोस्तों और बुज़ुर्गों ! अल्लाह के फ़ज़्ल से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें बहुत से इनाम दिलाने तशरीफ़ लाए हैं ताकि व तरीक़ा वह रास्ता बतलाएं जिससे हम ख़ुदा की ज़ात से बे–इंतिहा खज़ानों से इनाम हासिल कर सकें, इस वास्ते की बुनियाद 'ला इलाह इल्लल्लाह' है कि इंसान की कामियाबियों और ना–कामियाबियों का ताल्लुक़ ख़ुदा से है मरवजह बुनियादें रूपया, पैसा, डालर, हुकूमत है। पैसा होगा तो सब कुछ होगा कोई कहे यह बड़ी ज़िंदगी है इतनी बड़ी ज़िंदगी की हौस क्यों करूं।

एक बुनियाद जिसको सारे अंबिया लाए हैं, अल्लाह से ज़िंदगी का ताल्लुक़ है, एक यह कि लोहा पत्थर से होता है हालांकि खुदा के करने से होगा, यह कलिमा कि किसी के करने से न होगा, पेट भरना सेराबी ख़ुदा से होगी पानी में सेराबी ख़ुदा ने डाली है, ग़ल्ला में पेट भरना ख़ुदा ने रखा है, ख़ुदा चाहे तो बिला ग़ल्ला भी पेट भर दें, कलिमा से रिवाजी बुनियादों की तरदीद है। ग़ैर रिवाज की बुनियाद है जितनी सूरतें ख़ुदा के करने से है, चींटी का ख़ुदा पहाड़ बनाए अक्स करें, तयाक़ का ज़ाहिर अक्स करें, ख़ुदा से ताल्ललुक़ है, ग़ैर मख़्लूक़ है ख़ुदा इसमें जिस तरह तसर्रुफ़ करें होगा। ग़ैर इस्तेमाल होने वाला है ख़ुदा इस्तेमाल करने वाला है, ला इलाह इल्लल्लाह और कोई दख़ील नहीं, यह नहीं कि अल्लाह करते हैं और भी कुछ दाख़िल कर लेता होगा, यह नहीं है कि 'ला शरीक ला' खेतों में ग़ल्ला व दाना में शरीक नहीं है।

सिर्फ़ ख़ुदा बना देते हैं कोई शरीक नहीं है, इस बुनियाद पर मेहनत की कि कामियाबी का ताल्लुक़ अल्लाह से है ग़ैर से नहीं, ऐटम बम, क़िला, जहाज़ किसी से कामियाबी का ताल्लुक नहीं सब कुछ देकर नाम कर सकते हैं और सब कुछ छीनकर कामियाब कर सकते हैं, यह ला इलाल इल्लल्लाह बुनियाद आई है, इसको तस्लीम कर लो यह नबियों ने कहा।

कलिमा पढ़ो अमल में इस्बात की नफ़ी पढ़ और नफ़ी के इस्बात पर अमल रहे जिससे नहीं होता उस पर सारी मेहनत लगा दी जिनसे नहीं होता उन पर बारह महीने लगा दिए अल्लाह पर चार महीने भी न लगाए। नफ़ी पर मेहनत है इस्बात पर मेहनत छोड़ दी उलटा मामला हुआ सारी मेहनत ग़ैर पर लगा दी, मेहनत ग़ैर पर लगा दी ज़मीन से रोटी मिली मेहनत में तसव्वुर बदल गया, मेहनत से नफ़ी इस्बात पर आया और इस्बात नफ़ी के दर्जे में आया एक ज़ुबानी नफ़ी व इस्बात से एक मेहनत का नफ़ी व इस्बात है क़ौल का नफ़ी व इस्बात 'ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' अल्लाह के अलावा से नहीं होता अल्लाह से होता है वह तरीक़ा आप सल्ल० ने बतलाए।

अब मेहनत ज़मीन पर की दुकान वाले बने, कुछ ज़मीन वाले हुए, दुकान वाले हुए यह मेहनत के नाम है, ज़मीन पर मेहनत की वरना कहां से खाऊंगा, मेहनत ने बतलाया कि ज़मीन से होगा और कहीं से न होगा, क़ौल से जिस चीज़ का इस्बात किया मेहनत ने इसकी नफ़ी की और अक्स किया।

अंबिया और सहाबा रज़ि० सारी जगहों से मेहनत ला इलाह इल्लल्लाह में लाए, अल्लाह से इस्तिफ़ादा का कालिमा है, वह अल्लाह जिनका कलिमा सातों ज़मीन आसमान में फैला है जिनके इरादों पर सूरज, चांद, हवा सब चल रहे है। हुकूमतें, क़ौमें सब बदलती हैं, कोई ज़लील कोई अज़ीज़ बनता है, 'ला इलाह इल्लल्लाह' से इस्तिफ़ादा का कालिमा है अल्लाह की ज़ात से कैसे फ़ायदा हो,

अब यह मेहनत की बात है हमारी ज़ात से फ़ायदा हासिल करना बहुत आसान है कि पहला दर्जा लेना है तो नमाज़ शुरू कर दे, आज़ा व जवारह को ख़ुदा की तरफ़ लगाना है, सबको इस्तेमाल करना है।

सारी चीज़ों का तरीक़ा बतला दिया गया है, अपनी सारी चीज़ों को ख़ुदा पर इस्तेमाल करोगे तो तुमको फ़ायदा मिलेगा, पहले तो बुनियाद मानो आया माल, दुकान चीज़ों से होगा या अल्लाह से होगा तो ला इलाह इल्लल्लाह में अल्लाह ही से पलेंगे औरों से मुहब्बत न करेंगे। لا احب الافلين फ़ानी चीज़ें हमारी क्यो परवरिश करेंगी, गर्मी–सर्दी हर जगह वही ख़ुदा पालते हैं, उन्हीं से हम लेंगे, जो आज हैं कल नहीं हैं उनसे न पलेंगे।

दुनिया ही में देखो अगर पाकिस्तान जाओ तो सारी मिलकियत नहीं छोड़कर जाओ 50 रूपये ले जाओ और न ले जाओ ज़मीन में एक ही हवा, गर्मी, सर्दी, ख़राबी ऐश वग़ैरह सब एक सी है सब इंसान हैं महज़ पाकिस्तान कहने की वजह से यहां का रूपया वहां न जाएगा गाय न जाएगी, ऐसे मरने के बाद खड़ा भी न जाएगा, वहां तो अपने ही रिश्तेदार जला देंगे। पाकिस्तान जाओ तो कस्टम वाले बदन के कपड़े ही छोड़ेंगे, मरने के बाद रिश्तेदार कपड़े वग़ैरह सब छीन लेंगे, इस माल से ज़िंदगी न बनेगी उस ख़ुदा से ज़िंदगी बनेगी जो हर जगह हमारे साथ है। जब ख़ुदा के लिए अपनी जान को इस्तेमाल करोगे और नमाज़ में पेट और दूसरे हिस्सों को इस्तेमाल करोगे हज़ार हूर व ग़ुलमान तुम्हें मिलेंगे, कम से कम चालीसवा हिस्सा माल का फ़ुक़रा पर ज़रूरी लगाओ, अगर ख़ुदा की ज़ात और ख़ज़ानों से फ़ायदा हासिल करना है तो जान व माल मसरूफ़ बतलाया। जान व माल को ख़ुदा पर लगाने में कमाल पैदा करना हो तो दो सिफ़त और इख़्तियार करो और कामिल दर्जे चाहो तो दो दर्जे बढ़ाओ भूख प्यास बरदाश्त करके वतन छोड़कर मुल्कों में मारे–मारे फिरो, पहले वाला मंज़र रोज़े में है। खाना पीना जीमा

बंद कर दोगे तो ख़ुदा से तुम्हें फ़ायदा पहुंचेगे और आगे चलो ये ख़ुदा की नेमतों में इज़ाफ़ा चाहो तो ख़ुदा को बुनियाद बनाकर जान व माल को ख़ुदा पर ख़र्च करके भूख, प्यास, नींद, जीमा सब कुरबान करने का माद्दा आ जाए अपने प्यास को दबा लो, दूसरा दर्जा यह है कि अपने वतन राहत व आराम को छोड़कर दूसरी आब व हवा में जाओ इसका मज़हर हज है। जान व माल अल्लाह पर खर्च करना भूख व प्यास कुरबान करना मालियत के चक्कर से निकलो, वतन छोड़ो जान व माल को अल्लाह पर ख़र्च करो ईमान के साथ फ़ायदा हासिल करने के लिए चार रूकन हुए नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज जान व माल तो लेगाओ वतनों की कुरबानी है। इससे भी ज़्यादा हासिल करना हो तो ईमान की दावत को लेकर नमाज़ों, ज़कातों, हजों, रोज़े के क़ायम करने के जज़्बे को लेकर रोज़े की तरह भूख, प्यास, ज़कात, की तरह माल, हज की तरह वतन छोड़ना यह सब का मिज़ाज अल्लाह के रास्ते में बनता है आधे आदमी तो रोज़े इफ़्तार करने बैठ गए, बात नहीं सुनते ख़ुदा का काम इन चार रूकनों को दुनिया में क़ायम करने के लिए उठो, ज़कात बुख़्ल की आख़िरी मंज़िल है इतना पैसा जमा ही क्यों करे कि ज़कात फ़र्ज़ हो, एक साल में रखा तब ज़कात फ़र्ज़ हुई, एक अशरफ़ी भी पास रही हो तो रात भर चैन न रहे कि अल्लाह को क्या जवाब दूंगा।

अल्लाह ने इस रमज़ान के महीने में अपने रास्ते में निकलने की तौफ़ीक़ मरहम्मत फ़रमाई, रमज़ान ख़त्म हुआ तो फ़ौरन आख़िरत शुरू न होगी, बल्कि जन्नत में जाने तक मौत के चांद की ज़रूरत है फिर जन्नत में इनशाअल्लाह जाएंगे, जन्नत में जाइयो, अभी तो मौत का चांद तुलूअ नहीं हो रहा है, शिवाल का चांद तूलुअ हो रहा है ईमान के साथ जान निकल रही हो तो हक़ीक़ी व दवामी ईद वही है उस ईद के याद लाने के लिए छोटी सी ईद है। अगर ज़िंदगी सही गुज़री तो हमेशा ईद आएगी, काम करने वाले धोखा

खाकर जल्दी आए ईद के चांद को मौत का चांद जाना, भाई रमज़ान का काम ख़त्म हुआ और हज का काम शुरू हो रहा है, अब अल्लाह से दुआएं मांगो कि ऐ अल्लाह हज के काम के लिए हमें कुबूल फ़रमा।

उमूमी बयान न० 17

हक़ीक़त हज

12, मई, 1956 ई०

ख़ुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

इतनी बात खुशी की है कि सब लोग अल्लाह के रास्ते में रमज़ान में इतने ज़्यादा निकले तराज़ू के दो पलड़े एक घर से आने का और एक घर जाने का है, तराज़ू के पलड़े बराबर हों सो आने वाले सो जाने वाले हों तो तब्लीग़ में आने वाले पांच सौ हो तो तब्लीग़ की तरक़्क़ी है। अगर अक्स हो तो तब्लीग़ टूटे में है, अब इतने जो बैठे हैं जो घर में जाने वाले हैं अब बताओ तब्लीग़ में जाने वाले कहां है अगर नहीं है तो रमज़ान में तब्लीग़ अच्छी हुई और ईद पर तब्लीग़ का दिवालिया निकला ईद में टूटा न चाहा, ईद के दिन तो सदक़ा फ़ित्र दिलाकर फ़क़ीर को भी मालदार बनाया, तो जिस काम में ईद में टूटा हो तो मुहर्रम में कितना टूटा हो। यह तो ख़ुशी की बात है कि रमज़ान में तब्लीग़ की, यह ख़ुशी की बात है लेकिन अफ़सोस यह है कि अल्लाह अक्बर हौज़ के आगे इतने आदमी आए क्या यह सब वापस जाएंगे, यह सोचना बाहर दीन की तालीम तस्बीह सब हो रही थीं, ख़ुदा की रहमतें कितनी आने वाली होंगी घर में जाओ पूंजी पूरी हो गई, घर की भैंस, गाय का दूध पी लिया, सिवाइयां खा ली इसके बाद तब्लीग़ वालों ने ख़ूब ज़ोर लगाया मगर हमने न माना, सिवाइयों के शकराना लगा है। अब फ़लाने के भाई का साला है शकराना खाकर आए जो क़ौम ख़ुदा के रास्ते से सिवाइयां पर वापस हुई तो वह शकराना पर ज़रूर फंसेगी, घर का मज़ा मिलेगा लेकिन ख़ुदा के रास्ते की तरक़्क़ीयात ख़त्म होंगी। रमज़ान का काम ख़त्म हुआ और हज का काम शुरू होगा, ईद की शाम को हाजी बम्बई जाते हुए मिलेंगे तो यह माइने हुए कि रमज़ान का काम

ख़त्म कर दिया, तुम घर के काम को किसके सुपुर्द करते हो ? काम की दो क़िस्में हैं, घर के अन्दर का और बाहर का दुकान है, बाहर जानवर वग़ैरह है काम करने वाले घर में आ गए, घर का काम एतमाद वालों को देंगे कि रोड़े पोछने न लगाएगा न पानी लेगा न औरत को छेड़ेगा जिस पर एतमाद हो उसको घर आने दिया जाएगा यह अमानतदार है घर का काम दो। रमज़ान को महीना इम्तिहान के लिए है कि कौन भूख–प्यास बरदाश्त करता है, पानी वग़ैरह न ग़ुस्ल खाना में पीया न खाया वजूद यह कि तंहाई थी रमज़ान में इम्तिहान हुआ तो अब डिग्री दी कि अब अपने घर का काम तुझे दिया, तो पार उतर गया अब तो इस क़ाबिल है, इसलिए अल्लाह ने रमज़ान ख़त्म होते ही हज का काम शुरू करा दिया, यूरोप, ऐशिया से लोग रमज़ान के बाद सब जगह से हज के लिए ख़ुदा के घर की तरफ़ दौड़ेंगे, क्योंकि इम्तिहान में लोग पास हुए अब घर पर बुलाया। अब तक की इबादत हर जगह हो रही थी, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हर जगह हो रहा था, अब ख़ुदा ने एसा फ़रिज़ा दिया कि घर के अलावा न होगा अगर दूसरी जगह करें तो ज़ाल हैं, क़ाबिल गरदन ज़दनी हैं, हम तो चोखा के पास जंगल में हज करेंगे तो उन्हें समझा देंगे कि अगर न माना और कुव्वत हो तो फोड़ देंगे कि फ़रिज़ा सिर्फ़ ख़ुदा के घर पर होगा, जिसको इब्राहीम ने तामिर किया।

तो जब बाहर के काम करके दिखलाया तो अब अल्लाह ने कहा मेरे घर का काम कर दो घर भी वह जो सारी ज़मीन की जड़ है अमेरीका वग़ैरह सब शाख़ें हैं, अल्लाह ने जड़ तुम्हारे हाथ में दी शाख़ में फल देखा तो उसमें मेहनत की अगर जड़ कटी तो शाख़ कई जड़ हरी तो शाख़ हरी होगी। सारी ज़मीन पानी थी पहले बैतुल्लाह की जगह बुलबुला उठा अब उस बुलबुले को मश्रिक से मग़्रिब तक फैलाया, दुनिया के सब मालियत व मुमालिक इदारे हैं शाख़ें हैं और जड़ बैतुल्लाह है हमने अपने तवाफ़ों और नमाज़ों से निज़ाम आलम को घेर रखा है जिस दिन यह काम न होगा कुत्ते और भेड़िए बैतुल्लाह और बिलादुल

अक्दस पर पेशाब करेंगे तो कियामत होगी। सारी दुनिया की जड़ पर बुला रहे हैं जड़ का पानी खुदा के साथ इश्क व मुहब्बत का मुजाहेरा है, दीवानावार फिरना है आंसू बहाना है मुज़ाहेरा इश्क़ है, अब अल्लाह ने अपने घर का एक फ़रिज़ा क़ायम करा, जब डिप्टी बनने का वक़्त आया तो घर भाग रहा है तू बावले अगर तुझे डिप्टी वगै़रह न बनना था तो पैसों को यों पचास हज़ार को क्यों ज़ाया करता है। तो जिसने नमाज़ रोज़ा, ज़कात की डिग्री लाई, अब घर क्यों जाता है सबने 20, 20 रक्अत पढ़ी है जो दो रक्अत न पढ़े, अब रहमत का जोश आया तो ' ففروا الى الله ' मेरे पास आओ लामहाला घर जाना पड़ेगा ख़ुसूसी मुलाक़ात है, वज़ीर की खसूसी मुलाक़ात में जाना हो घर जाओ चार महीने का काम एक दिन में हुआ। कारवाई के रास्ते दस बारह साल लग जाएं, ऐसे ही अगर इलाक़ाई तौर पर दरख़्वास्त दाखिल करोगे तो देर होगी तुम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रास्ते से मेरे घर आ जाओ, हलाल माल, अख़्लाक़, ज़िक्र, तालीम, इश्क़ मुसलमीयत, ख़िदमत ख़ल्क के साथ मेरे घर पर आ जाओ। जो इलाक़ों में 15, 20 साल में काम होता है जिन्होंने नमाज़ वग़ैरह पर मेहनत करके ख़ुदा को राज़ी किया है उनके लिए दरवाज़ा खुला है यह खसूसी अताया का वक़्त आया है रोज़े, ज़कात की डिग्री हासिल की जब अपने रब के घर आ जाओ यह आख़िरी डिग्री है। ख़ुदा के घर का काम है जिससे हाजी को तालीम दी गश्त कराया, आज हमारी मस्जिद में, कल बम्बई फिर जद्दा फिर मक्का में तवाफ़ कर रहा है, इसी मस्जिद की मेहनत पर वह बैतुल्लाह पहुंचा है, तो बैतुल्लाह पर पहुंचना ज़रूरी नहीं तुम्हारी चंद दिनों की मेहनत पर वह बैतुल्लाह पहुंचेगा वे तो होंगे सूरत में और तुम होंगे हक़ीक़त में। क़सम आला व अदना चलेगी आला तो यह है कि यही से लग जाए और अदना यह है कि घर जाकर दो दिन में आ जाए सब कुरबान करके आठ दिन में आएंगे हज में काम करने आ जाएंगे, जी चाहे वहां हमें भेज दो, अब बोलो कौन तैयार है

उमूमी बयान न० 18

दीन की मेहनत के लिए कोई हद मुक़र्रर नहीं

10, अप्रैल, 1958 ई०

ख़ुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

भाइयों और दोस्तो ! रमज़ान के दो अश्रे ख़त्म एक बाक़ी है, बहुत क़ीमती वक़्त है ख़ुदा की ज़ात से निस्बत वाले आमाल के एतबार से है, चीज़ों के एतबार से और वक़्तों की तरह है। क़ुरआन के एतबार से अमल के एतबार से रमज़ान ऊंचा है, वह घड़ी आ गई जिसकी वजह से सारा महीना क़ीमती बना, जिसमें लोहे महफ़ूज़ से आसमान दुनिया में क़ुरआन एक रात में आया लैलतुल–क़द्र है क़ुरआन में है कि जिब्रील अलै० आते हैं फ़रिश्ते उतरते हैं ऐसे फ़रिश्ते भी उतरते हैं जो आप सल्ल० के बाद सिर्फ़ रमज़ान में आते हैं। सीधा रास्ता मुख़्तसर है तेढ़ा रास्ता लम्बा है सीधे में साढ़े तीन मील दिल्ली दूर और टेढ़े में मदरसे होते हुए दिल्ली आओ लम्बा होगा, समुंद्र में डूबकर और लम्बा बना दो, खुशकी ख़त्म समुंद्र में डूबो, हज़ार साल तक फिर दिल्ली के लिए तेरने के लिए कोई हदें है, सीधे रास्ते में इख़्तिसार है। दिल्ली से मक्का सीधे गए मुख़्तसर है और तेढ़ा निकले तो चीन, रूस भटककर मक्का जाए पचास साल होंगे। एक आदमी पानी के बहाव से जाए तो बीस दिन में जाए, टेढ़ा पचीस साल का भी हो जाएगा सीधा रास्ता मुख़्तसर है हम सबने टेढ़ा कर दिया।

यह सीधा रास्ता है तेरा ही कहा मानेंगे और अपने हवाइज व हालात में तुझसे मदद चाहेंगे करता धरता सब कुछ तू हैं, तू जो

करेगा वह होगा तुझसे करवाऊंगा यह सीधा रास्ता है। जो करता है इससे चाहो की करे, यह सीधा रास्ता है और जिनसे नहीं होता उनसे कराना यह टेढ़ा रास्ता है, सोने से नहीं होता सोने के मालिक से होता है, मेहनत करके पचास साल में एक मन सोना लाकर कहा कि यों हो जाए कुछ न होगा, चंद महीने के गिरने वाले से कहा कि करे, सीधा रास्ता यह है कि तुम यों करके मेरे से यों कहो मैं यों करूंगा और टेढ़ा रास्ता पचीस साला है। अल्लाह का हुक्म पूरा करने में जितनी तक्लीफ़ें उठाएगा तो खुदा देने का दरवाज़ा खोलेगा, रमज़ान में रोज़ा सीरातुल मुस्तक़ीम है करने वाले को राज़ी करके मांगो, रोज़े से करने वाला राज़ी होगा इख़्तीताम रोज़े पर दुआ मांगो कोई बात रोज़े में इनकी ना–राज़गी वाली न हो, शाम तक खुश होकर कहेगा कह क्या मांगता है, मांग यह सीधा रास्ता है। नमाज़ बढ़िया पढ़ो कि करने वाला ख़ुश होकर मंगवाए फिर मांगो क़ियामत में परेशान होकर नबी के पास जाएंगे कि फ़ैसला कराओ चाहे दोज़ख़ का हो, सब जवाब देंगे मगर आप सल्ल० ने कहा अच्छी बात है फिर सज्दे में गिरकर रोना शुरू करेंगे, हम्द सना के बाद अल्लाह ही का रहम मुतवज्जोह होगा। يا محمد ارفع واسك سل تعط اشفع تشفع (हदीस) ऐसा सर डाला कि तरस आया मांगों मिलेगा, सिफ़ारिश कुबूल होगी, पहले सज्दे में अल्लाह से कहलवाया कि कहो, कहा हुक्म पूरा करके अल्लाह से कहलवाओ की मांग, नमाज़, रोज़ा, बढ़िया करके कहलदाओ, हज व रोज़ा वग़ैरह के अहकामात हैं रोज़े में बीस दिन हुए ख़ूब चौल ढीले हुए आज बीस दिन हुए जब जान पर बनी तो एतिकाफ़ का सवाब बताया तो जल्दी से नहाकर रोज़े रखने की कोशीश में था अब एतिकाफ़ में नहाना बंद, बीवी बंद, सौदा लाना बंद, बाज़ार जाना भी बंद हुआ, मस्जिद में बैठ, नादान हो, आगे के वास्ते मुआहेदा करे, एतिकाफ़ के बाद ख़ुदा से मांग मिलेगा, रोज़े के बाद नमाज़ के बाद एतिकाफ़ है, एतिकाफ़ में एक क़दम भी बाहर न

निकलेगा।

फिर दुआ करो जितना जान पर खुदा के लिए बनती जाएगी, अताया के दरवाज़ो खुलेंगे चीज़ों से दरवाज़े न खुलेंगे, जान पर झेलो यह शख़्सी हालात है अगर तौफ़ीक़ दे दावत इल्ललाह के साथ नमाज़, रोज़े के बाद दुआ मांगो, नमाज़ रोज़े की मेहनत के बाद नमाज़ एतिकाफ़ के बाद रोकर दुआ करेगा तो मज्मूए के लिए दरवाज़े खुलेंगे कुफ़्फ़ार भी हिदयत पर आएंगे। ईमान के लिए मुजाहेदा करके मांगो ख़ूब इबादत करके मांगो अपनी और दूसरों की हिदायत के लिए जब दीन के लिए मेहनत का मैदान क़ायम करके मांगो इबादत के लिए मांगो मज्मूआ के लिए दरवाज़े खुलेंगे वरना शख़्सों के बारे में शख़्सों की चलेगी बातिल को तोड़ना हो तो दीन के दाई बनकर मांगो जैसे ज़मीनदार, दुकानदार, दफ़्तरी सरकार होता है चार क़िस्म हुए। इनमें से पांचवे बनों कि मैं दीन का ठेकेदार हूं दीनदार हूं मालिकदार हूं और दुकानदार नहीं हूं, दीनदार हूं दीन रखने वाला हूं जान व माल इसी पर लगेगा, ऐड़ी चोटी का ज़ोर सिर्फ़ दीन पर लगा दो, जब दुकानदार दुकान करता है या खेती करता है, तो दीन का ठेकेदार बनकर दुकान पर ताला लगा और खुदा के दीन के लिए फिर। तीन चार महीनों की हद तोड़ दे किसी और मैदान में हद है हिन्दुस्तान का आदमी हिन्द में फिरे तो हद नहीं है दूसरे मुल्क में महीने की हद होगी। अब दीनदार दीन के लिए मेहनत करे तो हद नहीं है, हां दुकानदार दीन की मेहनत करे तो हद लगेगी ज़मीनदार, काश्तकार, मुलाज़िम, सरकार वग़ैरह तब्लीग़ में हद लगाएंगे भूले से तब्लीग़ में आ गया, लेकिन दीन का ठेकेदार है तो वक़्त मत पूछो तौहीन है मैं तो दीन के लिए हूं। उनसे पूछो जो दूसरे काम करते हैं कभी दीन के लिए आते हैं पूछो की बीवी सहीबा से कितना वीज़ा लिया कितनी रक़म मंज़ूर करवाई, जो ख़ुदा का काम करे इसके लिए हद नहीं है, हिन्द वाले के लिए वीज़ा की ज़रूरत नहीं है न पैसे की क़ैद है,

दूसरे मुल्क में वीज़ा की हद है अपने मुल्क में क़ैद नहीं है लिहाज़ा बीस रूपये एक महीने तो ज़मींनदार का मालिक है तब्लीग़ में आया बीवी वज़ीरे आज़म ने महीना मुक़र्रर किया औरत से पूछकर आ गया है हद लग गई, औरतों से पैसे निकालकर आए तो दूसरे महीने मुक़र्रर किया तो दूसरे मुल्क से तब्लीग़ के मुल्क में आए।

अब रमज़ान में आख़िरी अश्रे में रोना क़ीमती है, अब तक अगर दीन का ठेकेदार न हो तो अब हो जाए, आप सल्ल० ने पूरी जान व माल लगाई हम तहदीद करते हैं यह कुसूर बड़ा है सारा जान व माल लगाकर दुआ मांगो तो ज़िंदगी के नक़्शों में तब्दीली होगी, तीसरा अश्रा शुरू होगा। हमारे पास इस महीने तब्लीग़ वाले नहीं आए ज़मीनदार, दुकानदार तो तब्लीग़ के लिए आए रमज़ान मुक़ाबले दुकान के पड़ा इसलिए इस्ताफ़ा है थोड़ा वक़्त देंगे, हमें अपने मुल्क का तक़ाज़ा है तब्लीग़ मुल्क के लिए बीवी ने पंद्रह दिन दिए हैं, सरकारी, दुकानदारी, मुलाज़मत, काश्तकारी के मुल्क के लोग आएं दीनदारी के मुल्क लोग न आए जो अपनी कश्ती जलाते थे, घोड़े के पैर कांटते थे वे न आए, सारे गुनाहों की जड़ यह है कि अपने को पिछलों की तरह न झौंकना यही बड़ा जुर्म है, भूल से बाहर निकलोगे तो एतिकाफ़ टूटेगा इसकी भी आदत डालो भूलो नहीं अश्रा के एतिकाफ़ की नीयत है।

मुकम्मल (6 भाग)

हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ साहब कांधलवी रह०

(भाग -6)

यासीन बुक डिपो
2127, रोदगरान, दिल्ली-6

विषय सूची

क्या कहां

हज़रत मौलान मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के बयानात, मलफ़ूज़ात, मकातिब की तर्तीब का काम जारी है जिन हज़रात के पास हज़रत मौलाना के बयानात या मकातिब या हज़रत मौलाना से मुताल्लिक़ किसी क़िस्म का कामवाद हो, वह बराहे करम दरज ज़ैल पता पर राब्ता फ़रमाएं ताकि इस क़ीमती जवाहार से इस्तिफ़ादा की शक्लें आसान हो और इनका नफ़ा आम व ताम हो, जो भी ख़र्च होगा, इनशाल्लाह अदा कर दिया जाए।

फ़क़्त व सलाम

मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी

तर्तीब देने पर बात

यह बंदा न तो अपने रब के हुज़ूर सर ब सजूद है और जुबान व कलम इस बात के शुक्र से आजिज़ है कि मुझ नाकारा को बुज़ुर्गों के इरशादात, बयानात, मकतूबात के जमा व तर्तीब में सबब के दरज में कुबूल फ़रमाया और इस मैदान में मज़ीद आगे बढ़ने के मौक़े अता फ़रमाए और सहूलतों का मामला अता फ़रमाया, इस मुबारक काम का सिलसिला हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब कांधलवी रह० के बयानात की इशाअत को है, पिछले हिस्सों की तरह इस हिस्से में भी तसीह का हद दरजा एहतिमाम किया गया। हज़रत मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम सहाब पूनवी मद्दा ज़िल्लाहू ने नज़र सानी फ़रमाकर कहीं–कहीं वज़ाहती नोट भी लिखे हैं। बहरहाल यह हिस्सा आप हज़रात की ख़िदमत में पेश है, अल्लाह पाक इसे अपनी बारगाह में शरफ़ कुबूल अता फ़रमाए और मेरे मोहसीनीन और मुआवीन को अपनी शाया–शान अज्र अता फ़रमाए ख़सूसन जनाब मुहम्मद याकूब साहब इब्ने मुहम्मद अब्दुल वाजिद साहब आदिल आबादी ज़ैद मुजद्दम ने मेरा बे–इंतिहा साथ दिया अल्लाह उन्हें मज़ीद दीनी ख़िदमात के लिए कुबूल फ़रमाए और मुवानाअत को दूर फ़रमाए मेरे लिए इस सिलसिले को ज़ख़ीरा आख़िरत और वसीला निजात फ़रमाए।

फ़क़्त व सलाम

मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी

दारूल उलूम सोनूरी तहसील मुरतज़ापूर ज़िला अकोला महराष्ट्र (इंडिया)

4, दिस्मबर, 2005 ई०

एक ज़रूरी वज़ाहत

जनाब हज़रत इस पहले दावत तब्लीग़ के सिलसिले में अकाबिर के मलफ़ूज़ात, मकतूबात और बयानात वग़ैरह की सूरत में मेरी चंद किताबें मंज़र-आम पर आईं और इन्शाल्लाह आगे भी आती रहेंगी, लेकिन इसके साथ इस बात की वज़ाहत करना ज़रूरी समझता हूं कि यह दावत वाला मुबारक काम सिर्फ़ किताबों के पढ़ने से समझने में नहीं आएगा। हां इतनी बात ज़रूर है कि इन किताबों में जो कुछ लिखा गया है वे सब इन काम के बड़ों की बातें हैं इसलिए ये किताबें काम के समझने में किसी दर्जे में मददगार तो बन सकती है लेकिन काम की हक़ीक़त, काम के फ़ायदे, इस काम के ज़रिए पूरे आलम से बे-दीनी का दूर होना, अल्लाह पाक से ताल्लुक़, सुन्नतों का शौक़, आमतौर से इंसानियत का और ख़ासतौर से उम्मते मुस्लिमा का दर्द और फ़िक्र दिल में आना, ईमान व आमाल का तरक्की में होना या तो दावत के काम में बड़ा हिस्सा लेने से होगा। इसलिए कि इस काम के बड़ों ने जो बाहर की नक़ल-हरकत के साथ मक़ामी काम की तर्तीब बताई है इसमें ख़ूब जमकर हिस्सा लिया जाए। सिर्फ़ किताबों के पढ़ने पर इक्तिफ़ाना किया जाए, अल्लाह पाक हम सबको इख़्लास के साथ अपनी इस्लाह की नीयत से ज़िदंगी की आख़िरी सांस तक दीन की ख़िदमत के लिए क़ुबूल फ़रमाए। आमीन

काम के उसूल की बातें उन किताबों में भी मिलेंगी। अगर उसूल ये है कि बंगले वाली मस्जिद, देहली की शौरा की जमाअत हाज़िर हालात के एतबार से जिस उसूल की तशरीह क़ुरआन व हदीस की रोशनी में करे वह उसूल ठहरेगा, लिहाज़ा हमें बंगले वाली मस्जिद के शूरा की जमाअत से रोशनी हासिल

मुहम्मद रोशन शाह क़ासमी

मक्तूब गिरामी

आरिफ़ बा–अल्लाह हज़रत मौलाना क़ारी साहब सिद्दीक़ अहमद साहब बांदवी रहमतुल्लाहि अलैहि
बानी जामेअ अरबिया, हथोरा बांधा (यू.पी)

जनाब मुफ़्ती मुहम्मद रोशन साहब

हालात का इल्म हुआ, अपनी तसनीफ़ की हुई तीन किताबें (1) मलफ़ूज़ात पहला हिस्सा (2) बयानात पहला हिस्सा (3) मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० मौसूल हुईं।

बहुत पसंद आई यह सिलसिला आप जारी रखें बहुत से लोगों को फ़ायदा पहुंचेगा।

अल्लाह पाक तमाम मुवाफ़े दूर फ़रमाएं, मेरे लिए दुआ करते रहे।

अहकर सिदि्क़ अहमद

मक्तूब–गिरामी

हज़रत अक्दस मौलाना मुफ़्ती शब्बीर अहमद साहब

हदीस व सदर मुफ़्ती मदरसा शाही मुरादाबाद

ख़लीफ़ा आरिफ़ बा–अल्लाह हज़रत अक्दस मौलाना क़ारी सिदीक़ अहमद बांदवी रह०

सुब्हाना व तआला

हज़रत मौलाना मुहम्मद रोशन साहब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि वबा रकातुहू

अल–हम्दु लिल्लाह हम तुम्हारी दिली दुआओं से ब–ख़ैर आफ़ियत हैं, खुदा करे तुम भी बा–आफ़ियत हो, तुम्हारी कोशीश करदा तीन किताबें, (1) मलफ़ूज़ात, (पहला हिस्सा), (2) बयानात (पहला हिस्सा) और (3) मकातिब हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० (पहला हिस्सा) मौसूल हुईं।

ये आपकी बहुत बड़ी ख़ुश–किस्मती है कि दुनिया के शहरे–अफ़ाक बुज़ुर्ग के रूहानी हालात और अक़वाल व अराअ पर काम करने की तौफ़ीक़ हुई, यह खुश–नसीबी हर किसी को नसीब नहीं होती, मुझे तुम्हारी इस ख़ुशकिस्मती पर कितनी ख़ुशी हो रही है इसकी इंतिहा नहीं है, यह तुम्हारे काम की इब्तिदा है। इन्शाअल्लाह आइंदा अलग–अलग हौसले, और तसनीफ़ी काम करने के लिए राह फ़राहम होने वाली है।

खाक़सार की फ़लाह दारेन के लिए दुआ फ़रमाएं बंदा तुम्हारे लिए हर वक़्त ख़ैरियत–ख़्वाह है, वस्सलाम

उमूमी बयान न० 1

मक्का मदीना में ग़लत माहौल चला दिया गया तो हादसे आएंगे

इतवार, नमाज़ फ़जर के बाद, हरम मदनी में, 24, मई, 1964 ई०

ख़ुत्बा मस्नूना के बाद इर्शाद फ़रमाया

मेरे भाइयों और दोस्तो !

अल्लाह तआला ने इंसान से पहले फ़रिश्तों को फिर इंसान को सिर्फ़ इबादत के लिए पैदा किया है, फ़रिश्ता तो गर्मी, सर्दी, भूख प्यास, बच्चों बीवी से आज़ाद, इंसान में दूसरा माद्दा रखकर इबादत का हुक्म दिया गया। अब मुआरिज़ माद्दा के होने की वजह यह इबादत मुजाहेदा बनेगी, कमाने, खाने–पीने, गर्मी, सर्दी, पहनने के तक़ाज़े को दबाकर इबादत में लगने की वजह से दर्जा बुलंद हुआ और ख़ुदा की सिफ़ात का मज़हर बना, सिफ़ात ख़ुदावंदी एक हज़ार हैं। बड़ी 99 हैं, इसी से ही अख़्लाक़ इलाही से आरस्ता होगा, अगर इबादत को रास्ता बना लें, इबादत की हक़ीक़त को हासिल कर लें तो जितनी इबदियत बढ़ती है इतने ही इसमें ख़ुदा वाले अख़्लाक़ से आरस्ता होगा और दिल व माल व दौलत भी इसकी तरफ़ खींचेगी, महबूब व मरजिअ होगा ख़लाइक़ का। जितना इसमें नूर इंसाफ़, सतर अय्यूब, रहम व इंसाफ़ आएगा उतना ही यह फ़रिश्तों, इंसानों, बर व बहर के जानदारों का महबूब बनेगा, बस अबदियत आए इसकी में निकलेगा, कमज़ोरी व गंदगी, अजज़ व अबदियत अपनी इस पर खुली हुई हो, यों ही समझे मुझे साहबज़ादे से कुछ नहीं होता है इस बरअक्स इस पर खुला हुआ न हो। गंदे क़तरे से बना, गंदी चीज़ों से भरा हुआ, ख़ुदा का सौ फ़िसद मुहताज

और अल्लाह जैसे हैं वैसा होना उस पर खुल जाए ख़ुदा की सिफ़ात का और अपनी ख़ुशियत व हालात का इंकिशाफ़ हो, इसी के एतबार से ज़िंदगी उठाए, तो इसे अव्वलन अल्लाह चाहते हैं फिर इसकी मुहब्बत का एलान हम्मलातुल अर्श में करते हैं कि मैं फ़लां से मुहब्बत करता हूं इससे मुहब्बत करो। फिर वह आगे बढ़ता है तो हम्मलात अर्श यही एलान सातवां आसमान के फ़रिश्तों में कर देते हैं, आख़िरत बढ़ते-बढ़ते समा दुनिया वालों में यह एलान कर देते हैं, चुने चाबे या गदड़ी पहले लेकिन अल्लाह जो मांगेगा, ख़ुदा वही कर देंगे, सब दिल से चाहेंगे इस मक़ाम पर पहनने के लिए इसे बनाया है। दुनिया की औरतें, नौकरों, मकानो, बाग़ों के वास्ते नहीं बनाया है, इनमें से हर चीज़ मुस्तक़ील तौर पर उसे जन्नत में मिलेगी, ख़ुदा ने मुस्तक़ील ख़ाका ऐश वाला जन्नत में इसके लिए बना रखा है जो अख़्लाक़ व इबादत इसे जन्नत दिला दें उनके लिए ख़ुदा ने उसे बनया है, आसमानों में फ़रिश्तों को इतना जमघटा है कि तिल रखने को जगह नहीं है। पैदाइश से आजतक वह लगातार ख़ुदा की इबादत में लगे हुए हैं एक ही हैबत नमाज़ में है, कुछ क़ियाम की हालत में है, कुछ रुकूअ की हालत, कुछ सज्दे की हालत में, कुछ क़ायदे की हालत में हैं और इसी हालत में क़ियाम साअत तक रहेंगे, इंसान कभी सज्दा में कभी रूकूअ में, इबादत के इस समावी निज़ाम से इंसान अपनी इबादत से जोड़ बिठा सकता है। हम्मलातुल अर्श इंसानी ज़िंदगी से तौबा करके इबादत के रास्ते तरक़्क़ी करने वालों के लिए दुआ करता हैं। फिर इनसे नीचे के सारे फ़रिश्ते इसके लिए दुआ करते हैं अकेले भी नमाज़ है तो जमा वाले सीया ही हैं'
इसमे जमा से मुराद वे फ़रिश्तें हैं जो इबादत में इंसान के साथ शरीक होने पर मामूर है। जो ही उसने नमाज़ की नीयत बांधी, फ़रिश्तों ने इसके साथ आकर नीयत बांधनी शुरू कर दी, अब नमाज़ की फ़ज़ाइल व मसाइल इल्म के हलक़ों से मालूम होंगे,

इबादत का वह तरीक़ा तालीम से मालूम किया जिससे इबादत ख़ुदा को पसन्द आएगी, जैसे मर्ज़ी आए वैसा सज्दा कर लो, यों नहीं है, बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर सज्दा और हर हिस्सा इबादत के हर-हर हिस्से पर ख़ुदा क्या देते हैं इसका इल्म भी मालूम करो, इबादत को दुरूस्त करने वाले इल्म की मज्लिसें हैं फ़रिश्ते आकर बैठने लगेंगे। जैसे हमारी उस मज्लिस में ईमान व इल्म व ज़िक्र की बातें हो रही हैं तो आकर उसे घेरने लग गए हैं जैसे मुर्ग़ी अंडों को चारों तरफ़ से घेरकर उन्हें गर्मी वाला असर पहुंचाकर उस अंडे में मुर्ग़ा या मुर्ग़ी करवा लेती है, इल्म की मज्लिस वालों को फ़रिश्ते अपने परों से ऐसे ही घेर लेते हैं और यह सिलसिला फ़रिश्तों को आसमान तक चला जाता है। ऐसे ही इंसानों तक शैतान अपने असरात नहीं पहुंचा सकता है, सारे पर वाले जानवर अपने गर्मी से अंडे में बच्चा बनवाते हैं ऐसे ही फ़रिश्तों के परों में बैठने से फ़रिश्तों वाला मिज़ाज मिलता है, शैतानी असरात जाते हैं फ़रिश्तों को मिज़ाज है कि जो हुक्म ख़ुदा का है उसे पूरा कर दो, उनका किसी से ताल्लुक़ नहीं है। ऐ फ़रिश्तों ! पूरे रूस को आग लगा दो, अमेरीका को समुंद्र में ग़र्क़ क़र दो, कौन मरता है या जीता है, फ़रिश्ते उसे नहीं देखेंगे, हुक्म ख़ुदा का पूरा कर देंगे। अगर मुर्ग़ी 24 घंटे न बैठी दो चार घंटे ही बैठी तो वह अंडे गंदे हो जाएंगे और मुर्ग़ी कुड़ुक न रहेगी, कुड़ुक मतलब यह है कि इसमें अंडो पर बैठने का माद्दा बन जाए, फिर उसे ज़बरदस्ती अंडों से मुर्ग़ो हटाए या इंसान इससे मुर्ग़ी नाराज़ हो जाएगी कि बीस नए जानवरों को छोड़कर खाने-पीने में हरगिज़ न लगेगी, सारे डाक्टर से सेहत ख़राब की वजह से भी हटा न सकेंगे जब ना-क़ाबिल अमल भूख-प्यास उसे लगेगी और जल्दी-जल्दी खाएगी, उस दौरान किसी से बात करेगी, इस बराबरी से अंडो पर बैठेगी कि अक्सर वक़्त में इसकी आंखें बन्द मिलेंगी। जिस इल्म से इबादत ख़ुदा को पसन्द आएगी, ख़ुदा वाला इनाम

मिलेंगे, इस इल्म में फ़रिश्ते इस तलब से बैठेंगे कि दुनिया भर के खाने, औरतें और दुनिया साज़ो-सामान फ़रिश्तों को हमसे हटा न सकेंगे, बल्कि वे परों से हम सब को घेरे रहेंगे, उनके इस तरह से हमको घेर बैठने से हममें माद्दा ताअत बनेगा और माद्दा असीयान निकल जाएगा, नमाज़, बद-अख़्लाक़, बुराइयां, शरीअत के ख़िलाफ़ से रोकती है। बशर्तेकि नमाज़ से फ़रिश्तों वाला मिज़ाज हासिल कर लिया जाए, फ़रिश्ते बहुत हैं, हर क़तरा बारिश के साथ एक फ़रिश्ता आता है कि उस क़तरे को ज़ाया कर दिया जाए या उस क़तरे से दाना निकले, अगर दाना निकेगा तो यह फ़रिश्ता उस दाने को इसके साहब तक पहुंचा देगा तब उसे छुट्टी मिलेगी लेकिन इसका अब दोबारा इस्तेमाल न होगा। दूसरे क़तरों के साथ दूसरे फ़रिश्ते आएंगे इस तरह की बाक़ी रह जाने वाले फ़रिश्ते बस इल्म की मज्लिसों में शरीक होते हैं, निज़ाम में इस्तेमाल होकर डियूटी पूरी कर देने वाले सत्तर हज़ार फ़रिश्ते ही तालिबे इल्म के क़दमों के नीचे पर बिछा देते हैं, ज़िक्र किया जाए, हदीस में है कि रात को तहज्जुद में उठो, मिसवाक करके नमाज़ शुरू की तो नमाज़ वाले के मुंह से फ़रिश्ता अपना मुंह लगाकर सारे कुरआन को अपने अंदर महफ़ूज़ कर लेगा। ज़िक्र और इबादत की मज्लिसों में फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते हैं कि मुसाहबत से मुसाहब वाला मिज़ाज मिलता है सारे नबियों से बकरियां चरवाई गई हैं, यहां तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी बकरियां चराई हैं इसमें हिक्मत यह है कि नुबूवत वाले काम में तीन चार बातों की ज़रूरत है जो बकरियों के चराने में मिलती हैं, दावत वाले काम में भाग दौड़ बहुत कम करनी पड़ती है ख़ुदा के हुक्मों पर फिरकी की तरह फिरना पड़ेगा। रहीस बनकर एक जगह न बैठ सकेगा और बकरी चराने वाले को भागना बहुत होता है इधर से बकरियों को रोका तो उधर निकलेंगी, बकरी चलाने वाले को एतिदाल इख़्तियार करना पड़ता है बड़े जानवर को गुस्से में ज़ोर से मार सकते हैं, लेकिन बकरी को गुस्से

में ज़रूरत की वजह से मारना भी पड़ता है लेकिन इनकी सिफ़ात का ख़्याल भी रखना पड़ता है ऐसे ही अंबिया अलैहिस्सलाम को उम्मतों में काम करना पड़ेगा, इनकी बे–उन्वानियों पर गुस्सा आएगा उसे अमल करना पड़ेगा, बड़ाई ख़ुदा की चादर है, जो उसे ख़ुदा से खींचेगा ख़ुदा उसे औंधा मुंह डाल देंगे, बकरी का मिज़ाज तवाज़ेह है तो बकरियों के चराने से नबियों में मुस्कनत व तवाज़ेह आएगी, ऊंट में कीना है नबियों को पहले बकरियों में लगाया फिर इनका काम फ़क़ीरों से माल की नहूसत से ख़ाली इंसानों से उठवाकर तक्मील करा दी। जिस मिज़ाज से ख़ुदा ख़ुश होते हैं जब वह उन्हें मिल गया तब नुबूवत दी सारे नबियों को उसी पर उठाया है जिनके माहौल में रहेगा इसी को लेगा यहां तक कि जिन जानवरों में रहेगा उनका ही असर मिलेगा, भैंसे और गाय चराने वालों को कितना सिरकने को कहा लो हल न देंगे। ज़रा हाथ लगा दोगे तो वह दूर चले जाएंगे क्योंकि उनको जानवरों में यही मिज़ाज है, जानवरों को अपने एहसानात गिनवाकर मिलने को कहेगा तो भी न मिलेगा, ऐसे ही सड़क पर खड़ी होने वाली भैंस हिरन से हरगिज़ न हिलेगी अगर हल्का सा धक्का मोटर से लगा दोगे तो एक से हटेगी, जा़मिद दुकानों में रहने वालों में जमूद ऐसा होगा जो लाख़ तकरीरों से ख़त्म न होगा, मस्जिदें बनी हैं कि तुम्हारा माहौल फ़रिश्तों वाला बन जाए फ़रिश्तों में रहना बढ़ जाए दूसरों में रहना घट जाए इल्म की मज्लिस, ज़िक्र के हलके में फ़रिश्ते हैं, नमाज़ में फ़रिश्ते हैं, ज़ियारत मुस्लिम को जाने वाले के लिए सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ के लिए मुक़र्रर हो जाते हैं। मस्जिदें इबादत पर मेहनत के वास्ते बनी हैं ईमान बनाने, इल्म लेने, ज़िक्र व नीयत के दुरुस्त करने की मेहनत इबादत ही की मेहनत कहलाएगी कि इन इन मेहनतों से ही नमाज़ में जान पड़ेगी एक शख़्स नमाज़ में

'انعمتُ، اللہ اکبار، ابتلیٰ ابراہیمُ

पढ़ता है तो इसकी नमाज़ ही न होगी। वुज़ू में हमेशा इसकी

कहुनी खुश्क रहती है इसकी इबादत दुरुस्त न होगी, इल्म मसाइल के बग़ैर इबादत बे–जान फ़ज़ाइल मालूम न होंगे तो इबादत कर लेने से न खुशी होगी न इबादत की तर्क से रंज होगा, इबादत से माहौल का फ़रिश्तों का माहौल बनेगा, इबादत पर मेहनत के लिए मस्जिद बनी है, मेहनत से इबादत में ताक़त पैदा होगी, ब–क़द्र कुव्वत इबादत से उसे अख़्लाक़ मिलेंगे। इबादत से इसमें ताअत का माद्दा भर जाएगा फिर इसकी दुआएं कुबूल होने लगेंगी, इबादत की मेहनत इल्म ज़िक्र, दावत से चलेगी और पहुंचे की, यहां तक हर–हर काम इबादत के तरीक़े पर हो, इमामत में वजू तरजीह में एक वजह यह भी है कि वह मुक़द्दम है जिसकी बीवी खुबसूरत हो, क्योंकि ऐसी बीवी वाला इधर–उधर हराम औरतों में ताक–झाक करेगा, ना–महरम को देखने से ही नमाज़ की जान निकल जाती है कि नमाज़ में इसी का ख़्याल आता रहेगा। बाहर के मुशाहेदे से तैयार होने वाले ख़्यालात मस्जिद के अन्दर के माहौल में रहकर ख़त्म कर लो, बाहर के अमलों से ही नमाज़ में जान पड़ती है और इन्हीं अमलों से ही जान निकलती है सिर्फ़ जानदार या बे–जान होने वाली नमाज़ के लिए मस्जिद नहीं है बल्कि नमाज़ को जानदार बनाने वाले आमाल के लिए मस्जिद बनी है। दावत, तालीम, ज़िक्र, इल्म, इकराम मुस्लिम, जहां नमाज़ को जानदार बनाते हैं वहां उनसे फ़रिश्तों वाला माहौल तैयार हो जाता है, जैसे अंबिया अलैहिस्सलाम को बकरियों चरवाकर बकरियों वाला मिज़ाज दिया गया है ऐसे ही मस्जिदों में उन आमाल के ज़रिए से हमें फ़रिश्तों वाला मिज़ाज मिलेगा मस्जिद में तुम खुश्बू लगाकर आओ, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि मिस्वाक करके बदबू दूर करके आओ वरना फ़रिश्ते तुमसे दूर रहेंगे। बदबूदार चीज़ खाकर मत आओ वरना फ़रिश्ते इस बदबू की वजह से तुमसे जुड़ेंगे नहीं और तुमको फ़रिश्तों वाला मिज़ाज न मिलेगा, बाहर के सारे शोब्हों में दीन उस वक़्त होगा जबकि हमको फ़रिश्तों वाला मिज़ाज मिल जाए

لا يعصون الله ما امرهم इन मस्जिदों के आमाल में लगना इंसानों और फ़रिश्तों का आपस में जुड़ना है, हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले, फ़रिश्तों वाला मिज़ाज ब-कसरत उनके साथ रहने से मिलेगा। अब चिल्ले से मिज़ाज बनेगा तो उसे बाक़ी रखना होगा, जब आंख बनती है फिर इसकी हिफ़ाज़त की जाए, जिस ज़माने में आंख बनती है तो मिलने जुलने से, हरकत करने से मना कर दिया जाता है कई बार तो अल्लाह के बंदे इशारे से भी नमाज़ को मना कर देते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास की बीनाई गई, उत्बा ने कहा इतने दिन नमाज़ को छोड़ना होगा तो बन जाएंगी, जवाब दिया कि आंखे न रहें मंज़ूर है लेकिन एक नमाज़ को छोड़ना मंज़ूर नहीं है और चारों तरफ़ से इब्ने अब्बास रज़ि० सहाबा रज़ि० की तरफ़ से इस मज़मून के ख़त पहुंचे कि हरगिज़ नमाज़ को न छोड़ना वरना ख़ुदा से ग़ज़ब की हालत में मिलोगे। ग़ालिबा मुआन इब्ने अदी रज़ि० की आंखें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद चली गईं, तो कहा बहुत अच्छा हुआ कि चली गईं कि मैं तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखना उन आंखों से चाहता रहा, वह गए आंखें भी जाएं। दुनियाभर की मस्जिदों में इन आमाल वाला माहौल तैयार हो, अगर ये माहौल तैयार न हो तो मिज़ाज दीन वाला न होगा और दीनी मिज़ाज के बग़ैर दीन का चलना ऐसा ही है जैसे समुंद्र पर महल बनाया, बग़ैर ज़मीन के ग़ल्ला हासिल करना फ़रिश्तों वाला मिज़ाज मिल जाए कि कुछ हो जाए ख़ुदा का हुक्म मानना है, इस मिज़ाज का वजूद इस्लाम को लाएगा हिन्दुवीयत, किसरावीयत, कैसरवीयत सबको नीचे ला डालता है। जब तक माहौल न बनेगा उस वक़्त से हैवानियत से मुल्कों के मिज़ाज की तरफ़ निकल न सकेगे, जैसे बाहर के कुंवे पर पहले ज़माने में हर वक़्त भीड़ लगी रहती थी बिल्कुल ऐसा ही हर वक़्त पहले मस्जिदें उन आमाल की वजह से फ़रिश्तों से आबाद रहती थी, इससे फ़रिश्तों वाला मिज़ाज आ जाता था। अरब जज़ीरा,

अफ़्रीका के इलाक़ों में यूरोप के मैदानों में भी यह मिज़ाज फैलता चला गया था, मक्का मदीना की तासी ही इबादत की वजह हुई, ख़ुदा से इबादत से मिलेगा, इबादत का मर्क़ज़ मक्का में ऐसी जगह बनाया गया जहां ख़ुदा के अलावा किसी और से लेना मुम्किन नहीं है بوادٍ غیرذی زرعٍ बग़ैर किसी ज़ाहिरी सबब के उस वादी ग़ैरज़ी ज़राअ में अपनी औलाद को इबादत की वजह डालता हूं तू सबके दिलों को उनकी तरफ़ मुतवज्जोह कर, जिन चीज़ों को इबादत की वजह से छोड़ा था, उनकी बारीश रात-दिन उन पर कर। शुक्र की तौफ़ीक़ भी दे, इस वजह से इबादत के लिए औलिया ग़ारों को ही मुंनख़ब करते थे, वे शहर मुंतख़ब न किए जहां रात दिन लोग मुर्ग़ों की तरह इक़तिदार पर, खाने पर कुत्तों की तरह जायदाद पर शद्दाद की तरह मर रहे हूं बल्कि जंगलों में जा पड़े किसी को भी न बुलाया इनकी इबादत जड़ वाली बनी, तो ख़ुदा ने उनकी मुहब्बत लोगों के दिलों में डाल दी, खाने की तक्लीफ़ है, सफ़र मुशक़्क़त वाला, न ख़ूबसूरत मकान, न खाने का नज़्म फिर भी लोग खींचे-खींचे चले आ रहे हैं। इसी वजह से ख़ुदा ने इबादत का मर्कज़ भी मक्का की सरज़मीन को बनाया, जहां रेत ही रेत थी, कुछ और न था कि मक्का मदीना में ऐसी ग़ैबी ताक़त है जो सब कुछ अपने हुक्म से कर दिखाने वाले दज्जाल को भी दाख़िल होने से रोक देगी, सारी दुनिया ख़ुदा की ख़ुदाई से दज्जाल की ख़ुदाई में दाख़िल हो रही होगी, ख़ुदा ने मक्का के मकानों, जायदादों, नक़्शों के लिए नहीं बनाया है। बल्कि इबादत में जान डालने वाले माहौल के लिए बना है इस वजह से हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला जो इबादत का माहौल बनाने के लिए है इसमें जब नहरें, सब्ज़े और बाग़ात लग जाएंगे तो क़ियामत क़ायम हो जाएगी, यह इलाक़ा सिर्फ़ इबादत के लिए है। इसमें जब इबादत वाला माहौल न रहेगा बल्कि दुन्यावी नक़्शों वाला माहौल बन जाएगा तो क़ियामत क़ायम

कर दी जाएगी और जियाद से एक जानवर निकलेगा जो एक रात में दुनिया के सारे इंसानों के माथे पर अपने दम से मुस्लिम या काफ़िर लिख देगा, इबादत के बाद खुदा के मांगने से शाही ख़ज़ाने से मिलेगा, दुनिया वह हक़ीर जगह है जिसे खुदा का शाही ख़ज़ाना नहीं कहा जा सकता है। इबादत से जो कामियाबियां, खुशियां, राहतें ख़ज़ाना शाही से मिलेंगी वह देर पा हूं कि अब तक मिलेंगी, मक्का की मरकज़ीयत बाक़ी रहे, लोग उसे दुनिया का ज़रिया न बनाएं, अल्लाह तज्वीज़ करदा माहौल बाक़ी रहे तो इसके लिए मदीना है खुदा से लेना होगा तो उसी के घर पर जाकर मांगना होगा, हज़रत इब्राहीम अलै० व इस्माइल अलै० मकान बनाते जा रहे हैं और मांगते जा रहे हैं कोई भी हो, दरबारे इलाही के सामने हाथ फैलाना होगा, दरबार से उतना ही मिलेगा जितनी ऊंची मेहनत करके खुदा से मांगा जाएगा। सबसे ऊंची ज़ुबान व मकान के लिहाज से मेहनत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली है इन मेहनत के लिए खुदा ने मदीने को पहले से तजवीज़ कर लिया था, मदीना मुहाजिर होने की इत्तिला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले के तमाम नबियों को खुदा ने दे रखी थी। हज़रत मूसा अलै० की क़ौम सत्तर हज़ार हज को आई तो यहां से जब गुज़रे तो उलेमा ने उस जगह को हज़रत मूसा अलै० की बताई हुई अलामतों से पहचान लिया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुहाजिर यही है, 400 उलेमा यहूद मूसा अलै० से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुसरत करने की नीयत से यहां ही ठहर गए थे। उनकी औलादों में से बनू कुरैज़ा, बनू नसीर, बनू क़ैनक़आ थे, इसके इसलाफ़ तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वजह से उतरे, लेकिन यह अदावत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में लग कर मग़ज़ूब वज़ाल बन गए, यह उलेमा नसल बाद नसल मौत से पहले अपने सबसे बड़े लड़के को ख़त लिखकर देते कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम आएंगे तो इनकी मदद नुसरत करना, आख़िर में अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० ने यह ख़त तारीख़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लाकर दिखाया था। सबा के क़बीले सेलाब की वजह से निकले, ग़स्सान शाम में हुमैर यमन में उतरे और औस व ख़ज़रज मदीना में, मक्का की तरह मदीना की हिफ़ाज़त भी ख़ुदा के ज़िम्मे है, मक्का पर जिसने हमले का इरादा किया उसे लोगों ने समझा दिया, या तो वे मान गया, अगर नहीं माना तो ख़ुदा ने हलाक कर दिया। किसी बादशाह को हासिदों ने मश्विरा दिया कि बैतुल्लाह को गिरा दो, रास्ते में इसे वे यहूदी उलेमा ने कहा, अगर अपनी और अपने ख़ानदार की सलामती चाहता है तो ऐसा मत कर, वे काम कर जो यहां किए जाते हैं, एहराम व तवाफ़, सअी हलक़ व ज़िब्ह, दिल इसका मान गया, हासिदों को क़त्ल कर दिया, हज वाले सारे काम किए, फिर ख़्वाब में देखा कि इस घर में पर्दा डाल दे, पर्दा डाला, दूसरे ख़्वाब में इससे अच्छे पर्दे के डालने का हुक्म हुआ और उसने ऐसा ही किया, तीसरे ख़्वाब में इससे भी अच्छे पर्दे का हुक्म हुआ उसने इस हुक्म को भी पूरा कर दिया। उस वक़्त से पर्दा बैतुल्लाह का शुरू हुआ, जिसने बैतुल्लाह की हुरमत को क़ायम रखा ख़ुदा उसकी नसल को बाक़ी रखा और जो बैतुल्लाह की हुरमत को गिराएगा उसका हश्र अबरहा की तरह होगा। बिल्कुल ऐसा ही क़िस्सा मदीने के भी हैं, किसी बादशाह के मदीना में मुक़र्रर करदा गवर्नर को मदीना वालों ने क़त्ल कर दिया, उस गवर्नर के बदले में सारे मदीना वालों के क़त्ल की थान ली, लश्कर लेकर चला तो उलेमा, यहूद ने उसे समझाया कि ऐसा न कर वरना तो नसलों समीत हलाक हो जाएगा। मक्का जिस इबादत का मर्कज़ है उसकी मेहनत आलम में मदीने से चली है जो मक्का मदीने का माहौल बिगड़ रहा है, फ़रिश्तों के बजाए शैतानों का माहौल बना रहे हैं ख़ुदा उन सबको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला माहौल तोड़कर अपना माहौल चला देने की

पादाश में पकड़कर ख़त्म कर देंगे, अगर हम मेहनत कर लें, अगर इबादत सारे इंसानों को मिली तो मक्का मदीना भी इन सबके लिए मर्कज़ है। दोनों जगह की इस मर्कज़ों को क़ायम रखने की मेहतन हर एक के ज़िम्मे है, इसी वजह से मक्का में शान व शौकत का ज़माना हुआ, मदीना में तो यह शान व शौकत कुछ है भी, फ़ातिहाना शान से दाख़िला के वक़्त आप हदूद मक्का बहुत ख़्याल रख रहे थे कि इन्होंने हमारे साथ बहुत कुछ किया है, लेकिन मक्का में रहने की वजह से वे सब कुछ माफ़। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सवारी शकीस्ता थी तवाज़ेह की कैफ़ियत तारी थी गरदन झुकी हुई, ज़ुबान पर यह कि सिर्फ़ खुदा ने किया, फ़त्ह मक्का के बाद सिर्फ़ हज के लिए गए मक्का में ख़ुदा को सिर्फ़ पस्ती ही पसंद है, नुबूवत के रंग पर जब तक ख़िलाफ़त रही मदीना में ख़िलाफ़त रही, जहां रंग बदलने लगा तो मर्कज़ कूफ़ा बन गया। इसके बाद आज तक मदीना पाया तख़्त या मर्कज़ हुकूमत नहीं बना है, अलबत्ता नुबूवत व ख़िलाफ़त का मर्कज़ है, ख़लीफ़े वे थे जो माल व मुल्क न चाहते थे, दुनिया की शान व शौकत सामने न थी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान फ़िक्र पसंद थी, मदीना व मक्का में छोटे हुए ही मकान आज से तीस साल पहले तक थे, मकान यहां बनाएं तो मदीना मक्का के मिज़ाज के मुताबिक़ ही बनाएं, ख़ुदा ने उसे मर्कज़ हुकूमत बनने ही न बनने दिया। अगर ख़ुदा न ख़ास्ता मक्का मदीना में दूसरा ग़लत माहौल चला दिया गया, फ़िस्क़ व फजूर के साथ ग़लत शहरों के साथ उन दो शहरों को लाकर खड़ा कर दिया गया तो इतने हादसे सौ फ़ीसद इंसानों पर आएंगे कि छठी का दूध याद आ जाएगा। अगर मेहनत करके दूसरा सही माहौल न बना लिया गया, जिस इलाक़े में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फिरे हैं, उसमें बनाओ सींगार, बाग़ व बहार, हुस्न व जमाल की चीज़ें बनाईं तो क़ियामत खड़ी कर दी जाएगी, इंसान इबादत के लिए बना है,

इबादत की मेहनत का मर्कज़ मदीना है तो इबादत का मर्कज़ मक्का है। मेहनत ले लो मदीने से, मर्कज़ीयता ले लो मक्का से, इबादत माबूद लेने के लिए है, इबादत पर मेहनत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इबादत के तरीके की तरह हासिल करो, इबादत का तरीक़ा, इबादत की मेहनत को तुमने हासिल कर लिया तो दीनदार बनोगे, तुम किसी भी जगह रहोगे इबादत वाला माहौल न बनाऊंगे। तो मर्कज़ वाली मेहनत छोड़ने के जुर्म में तुम्हारी अपनी इबादत तुम्हारी अपनी इबादत बे–जान हो जाएगी, मक्का व मदीने के मकर्ज़ का दायरा सारी दुनिया में है, सारी दुनिया में फिरो फिराओ बार–बार यहां आकर यहां मेहनत के बाद मांगते रहो, मेहनत करके मस्जिदों में इनको लगाओ जो मस्जिदों में नहीं आते हैं, मस्जिद में आते हैं, मस्जिदों में आने वालों को तालीम में जोड़कर इबादत वाली नुबूवी मेहनत में इनको लगाकर दुआएं नुबूवत वालों की तरह ख़ुदा से कुबूल करा लो, मदीना आकर इबादत वाले माहौल को बनाओ, आधी रात मस्जिद के अन्दर आमाल में। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी मस्जिदों में जो माहौल बनाया था उसे ही सारे आलम की मस्जिदों में ज़िंदा करने के लिए हरकत करो, तिहाई साल बाहर लगा दो, तिहाई साल मस्जिद में तिहाई साल घर और कमाई में तो यह इबादत वाली मेहनत सारे आलम में फैली। तो लोग इबादत में ज़्यादा मज़े महसूस करके हुकूमतों व खेती–बाड़ी को लाते मारने लगे, अब उस मेहनत में कितना वक़्त लगाना है उसे तै कर लो, अगर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले शहर में उनके वाले काम को लोगे तो उनके वाले अनवारात लेकर वापस जाओगे, फिर वापस जाकर उस मेहनत को उनकी वाली तर्तीब पर चलाओ और उस मेहनत के बाद ख़ुदा से मांगो कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले माहौल को मुसनंख करके अपना ग़लत बेहिमा माहौल चलाने वालों को हिदायत दे या हलाक कर अब मज़ीद बोलें, 4, 4

महीने के लिए यहीं से वक़्त लगाना शुरू कर दो, जब यहां वाले निकलेंगे तो निकलकर अपनी बंदरगाह पर सामान रखकर वक़्त पूरा कर लेना, फ़जर के बाद बयान सुनो, दो बजे तालीम करो, असर व तालीम के बाद गश्तों में जाओ, मग़रिब के बाद हरम में काम करो, जब तक यहां रहो उसी तर्तीब से वक़्त गुज़ारो, राहत व बाज़ार के एतबार से वक़्त न गुज़रे, चीज़ों व बलाओं के ख़रीदने के वास्ते दूसरे शहर बहुत हैं। जहां मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व साथियों रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीन–तीन दिन के फ़ाक़ों से दीन का काम किया हो चमड़े जलाकर खाए हों वहां अवारा खाते–पीते फिरना शायद ख़ुदा को पसन्द न आए, अस्बाब हलाक़त में से है, अपनी बाहर वाली ना–पाक ज़िंदगी को इस पाक शहर में गुज़ारना लोग मक्का से होकर यहां आते हैं, अपने इलाक़े में तो नमाज़ी के सामने से गुज़रने में बहुत एहतियात थी, मक्का आकर मौज़ूअल सज्दा को छोड़कर इजाज़त मिल गई तो लोगों ने बिल्कुल बे–एहयिाती कर ली लेकिन मदीना की इस मस्जिद में वह मस्जिद हराम वाला हुक्म नहीं है, अगली सफ़ की फ़ज़ीलत के हुसूल के लिए ऐसे हराम का इरतिकाब किया जिसके अज़ाब से हलका है चालीस साल इंतिज़ार में खड़े रहना, उस हुरमत का अमली हिस्सा सबसे पहले इसी मस्जिद में हुआ, इसी मस्जिद से यह हुक्म चला, यहां ही बे–एहतियाती मुनासीब नहीं है।

उमूमी बयान न० 2

ईमान का बनना दुनिया की चीज़ों पर निर्भर नहीं है

बुध, फ़जर के बाद, 27, मई 1964 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

जितने भी अंबिया किराम हैं अल्लाह तआला ने इन सबको एक रास्ते पर उठाया है, वह रास्ता है अल्लाह की कुदरत से फ़ायदा हासिल करना, एक है कुदरत से बनी हुई उन चीज़ों से फ़ायदा हासिल किया जाए जिनको कुदरत से जब चाहेंगे ख़त्म कर देंगे। बक़ा, फ़ना, तामीर, तब्लीदी, बनने वाली चीज़ में होता है, कुदरत ख़ुदा में यह तग़य्यूर व तब्ददुल नहीं है, कुदरत ख़ुदा की ज़ात में है और बने हुए से आज़ाद है जैसे पहली भैंस बनाने के वक़्त में कुदरत थी कि अपने मर्ज़ी के मुताबिक़ भैंसे बनाएंगे। अब वह कुदरत रखते हैं कि जैसे चाहें वैसे भैंसे बना दें, चीज़ें आरज़ी और बनी हुई हैं, जब चीज़ न थी तो भी कुदरत थी चीज़ का एक वक़्त में न रहेगी और कुदरत होगी, हर–हर जगह ज़मीन आसमान, जन्नत, जहन्नम में कुदरत है। ला–महदूद है इसकी हक़ीक़त का अदा हो नहीं सकता है जो कुदरत ख़ुदा से फ़ायदा हासिल करेंगे वह दुनिया, क़ब्र, क़ियामत, जन्नत के मज़े करेंगे, क्योंकि इन सब जगहों में कुदरत मौजूद है, आम इंसान बने हुए से फ़ायदा हासिल करने की मेहनत करते हैं बनाने वाले को सामने रखकर मेहनत नहीं करते हैं। इसी वजह से एक वक़्त में जिन चीज़ों से इज़्ज़त, सेहत, कुव्वत लाते हैं, दूसरे वक़्त में इन्हीं चीज़ों में ज़िल्लत, मर्ज़, कमज़ोरी ले आते हैं, मख़लूक़ की तरह मख़लूक़ से मिलने वाली

कामियाबी बहुत से बहुत मौत तक होगी कि मरते ही यहां की सारी चीज़ों से हाथ साफ़ हो गया और कुदरत से वास्ता पढ़ गया। कुदरत से फ़ायदा दोनों जहां में मिलेंगे कि यह दोनों जहां में मौजूद है, कुदरत से ख़सूसी तरीक़े से लेना मुराद है, वरना मख़लूक़ पर भी मेहनत करोगे तो भी कुदरत ख़ुदा से ही फ़ायदा मिलेंगे अगर बुतों से कामियाबी महसूस कर रहा है या साइंस से फ़ायदा ले रहा है तो यह सब कुछ उसे कुदरत से मिल रहा है, कुदरत फ़ायदा पहुंचाने के रूख़ पर न हो तो सांइसदानों को साइंस में, दुकानवालों को दुकान में, खेती वालों को खेती में कुछ न मिले, एक है ख़ुदा का अपनी कुदरत से देना, दूसरा है इंसान को सामने रखकर कुदरत से ले रहा है। अगर कुदरत को सामने रखकर कुदरत से नहीं ले रहा है बल्कि चीज़ों को सामने रखकर कुदरत से ले रहा है तो ख़ुदा आरज़ी क़ामियाबी दे देंगे, कुदरत के एतबार से कामियाबी न मिलेगी बल्कि ज़र्रा जो मख़लूक़ है उसी के ब–क़द्र से मिलेगा और उस वक़्त तक मिलेगा जब तक ख़ुदा चाहेंगे चाहे कुदरत से मिलना चीज़ के जाते रहने की वजह से हो या चीज़ के होते हुए बेकार हो जाने की वजह से बंद हुआ हो, ज़मीन, मकान, पेड़, शक्लें मौजूद हैं, लेकिन इनसे फ़ायदा ख़ुदा के इरादे को बदल देने की वजह से नहीं मिल रहा। अंबिया अलैहिस्सलाम ने मेहनत को कुदरत से लेने की तरफ़ मोड़ा है सारे नबियों को ख़ुदा चीज़ों के बग़ैर खड़ा किया, कुछ लोग ऐसा दांव जानते हैं जिससे वही करता है जिसके हाथ में लाठी है, अक्सीरियत क़ौम नूह को, क़ौमे सबा को, बाग़ शद्दाद को, हुकूमत नमरूद व फ़िऔन को ख़ुदा ने दी और अंबिया इन सबके बग़ैर थे। चीज़ों से बिलावास्ता कुदरत से होता है, ख़ालिक़ से बज़ात ख़ुद होता है, अपनी ज़ात की इरादे से बग़ैर मेहनत के माल दे दें, बग़ैर माल के चीज़ें दे दें, बग़ैर आग के जला दें बग़ैर पानी के डूबो दे, एक बार शैतान की कानफ्रेंस में कारगुज़ारी हो रही थी, हर एक दिन बयान करे कि मैंने यों लड़ाई

करा दी, यों ज़िना और शराब चला दी, शैतान वाह वाह करता रहा एक छोटे शैतान ने कहा कि मदरसा को जाने वाले तालिब इल्म को खेल में लगा दिया। तो इस छोटे को दूसरे बड़े शैतान ने ख़ूब तर्जीह दी और उसे सबसे ज़्यादा सराहा, दूसरों को यह ना-गवार गुज़रा तो शैतान इल्म से ख़ाली आबिद की तरफ़ इन सबको ले चला, जब ख़ुदा की ज़ात व सिफ़ात का सही इल्म होगा तो इसके मुताबिक़ ईमान होगा, दरवाज़ा खटखटाया, आबिद इबादत से फ़ारिग़ होकर दरवाज़ा खोला कि क्या बात है ? शैतान ने कहा कि आप हमारे शहर के सबसे बड़े आबिद हैं, इस मस्अले के इख़्तिलाफ़ को ख़त्म कर दें कि ख़ुदा ऊंट को सूई के नाके से निकल सकते है या नहीं ? आबिद ने कहा जब ऊंट निकल सकता है तो ख़ुदा उसे कैसे निकालेंगे, शैतान ने कहा मैं जब चाहूं उस आबिद की इबादत को ऐसे कलिमात कुफ़्र से ख़त्म कर दूं और सही इल्म वाले आलिम सिर्फ़ सुन्नत व फ़राइज़ के पाबंद कमाइयों में मश्ग़ूल के पास जा पहुंचे, उन्होंने जवाब में कहा, कौन शैतान कहता है कि ख़ुदा निकाल नहीं सकते हैं ? ان الله اذا اراد شیئاً فیقول له کن فیکون दलील है, इबादत को दुरूस्त करने वाले इल्म से शैतान ने बच्चे को हटाया था ऐसे ही एक आलिम ने ग़ुस्से में आकर अपने बच्चे को घर से निकाल दिया तो वह बच्चा एक आबिद के हां जा पहुंचा नफ़्स के ऐसे दुश्मन थे कि हरदम इसके ख़िलाफ़ करें। यहां तक कि नमाज़ के लिए वुज़ू किया, नफ़्स ख़ुश्बू की तरफ़ राग़िब हुआ तो पाख़ाने का फ़तीला बनाकर नाक में रख लिया, इस बच्चे ने कहा अरे इससे नमाज़ न होगी तब उन्होंने फ़तीला को दूर करके नमाज़ अदा की तो वह मज़ा पाया कि तो इससे पहले शायद ही मिला हो। वह सही रास्ता नहीं चल सकता है जो नफ़्स कशी का रास्ता ख़ुद बनाए, बल्कि जो सहाबा व रसूल सल्ल० के तरीक़े को आगे रखेगा वही सही चल सकेगा, अल्लाहु अक्बर व अक़्दर, ख़ुदा की कुदरत का तसव्वुर नहीं हो सकता है अगर सारे

सलातीन व मलूक, सारे उलेमा, जिहा, सारे अंबिया व फुक़रा और सारे उलूम साइंस वाले और दुनिया वाले एक मैदान में जमा हों। हर एक अपने मुबलीग़ इल्म के मुताबिक़ मांगे, साइंस वाले कहेंगे कि 500 चांद हों इन तक जाने का रास्ता भी हो जाए, किसान कहेगा एक ख़ुदा छः महीने के बजाए हर घंटे बाद ग़ल्ला मिल जाया करे, अंबिया आख़िरत की नेमतें मागेंगे, ख़ुदा उन सबकी मांग एक दम में सुन सकते हैं और उन सबकी मांग ख़ुदा उन सबको एक दम में दे सकता है और उस देने से ख़ज़ानो में इतनी कमी भी न आएगी जितनी सूई को डालकर निकाल लेने से समुंद्र में आ जाती है। मच्छर के पर से भी घटिया हैं यहां की चीज़ें, मख़लूक़ महसूस है और नज़र आता है, उन्हें देखने की वजह से इनकी तरफ़ झुकेगा, दुनिया व आख़िरत में सिर्फ़ कुदरत से होता है, जिस कुदरत से दोनों रूख़ चल रहे हैं इसको ही पकड़ लो अंबिया अलैहिस्सलाम बहुत होशियार हैं। कुदरत से फ़ायदा लेने क सख़्त सबसे ज़्यादा आसमान है, कुदरत ख़ुदा की ज़ात में है, ऐसे ही अताए ख़लक़, हिफ़्ज़, तन्दुरूस्त करने की सिफ़ात ख़ुदा की ज़ात में है ज़ात व सिफ़ात ला महदूद हैं और दुनिया में जो कुछ महदूद दिखाई दे रहा है वे सब कुछ ख़ुदा में ला महदूद तौर पर है अल्लाह की ज़ात से लेने के लिए अल्लाह की ग़ैर की शर्तें नहीं लगाई हैं। बस अपनी ज़ात में कुछ बातें पैदा कर लो तो ख़ुदा ग़ैर के बग़ैर अपनी ज़ात व सिफ़ात से तुम्हारे काम करेंगे, ख़ुदा ने अपनी ज़ात से लेने के लिए दूसरों की ज़ात पर यही शर्तें लगाई हैं, पहली शर्त ईमान है, ईमान बनाने के लिए किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। पैसे के आने से तो पैसा का यक़ीन बढ़ सकता है घट नहीं सकता है, दिल पहले से मौजूद है जिस मेहनत से दिल का यक़ीन ईमान वाला बनेगा वह मेहनत तुम्हारे अन्दर मौजूद है, ईमान घड़ियों की तरह न अमेरीका से आता है न इस पर कस्टम है, बल्कि अपनी ज़ात वाली मेहनत है अपने दिल में ईमान दुरूस्त

'لاتهنوا ولا تحزنوا وانتم الاعلون ان كنتم مؤمنين' हो सकता है।

सबका यक़ीन निकाल दो, ग़ैरों से ख़ुदा के बग़ैर कुछ न हो, इससे बग़ैर ग़ैरों के सब कुछ होता है यह "لااله الاالله" दूसरा محمد رسول الله हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक एक उंगली के एक अमल के बराबर दुनिया भर की सारी चीज़ें नहीं हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक अमल से सातों ज़मीन आसमान से ज़्यादा की कामियाबी मिलेगी।

उमूमी बयान न० 3

इंसान की कामियाबी अपने जिस्म के सही इस्तेमाल में है

जुमेरात, फ़जर के बाद, 28, मई, 1964 ई०

मेरे भाइयो और दोस्तो !

दुनिया में यह दस्तूर है कि जो इंसान जिन मशीनों को बनाते हें वही उनके इस्तेमाल के तरीक़े बनाते हैं बल्कि हर हर पुर्ज़ा के बारे में बताते हैं, बंदूक़, पिस्तौल, बम, राकेट, मशीन सिलाई के बनाने के साथ इसके इस्तेमाल का तरीक़ा भी दिया जाता है और यह आम ज़हन है जो बनाता है इससे उस चीज़ के इस्तेमाल करने का तरीक़ा मालूम कर जाए। यह पुर्ज़ा यों दबेगा, इसके हिलाने से मशीन रूकेगी बंदूक़ को इस तरह खोलकर दो कारतूस रखकर जिसको मारना है उसकी तरफ़ नलकी करके चलाओ और अहमक़ या बेवाकूफ़ कहकर हम भी तो अक़्ल वाले इंसान हैं हम तो आगे से कारतूस रखकर दुश्मन को मारेंगे, लेकिन नाली बीवी या बच्चा या अपने सीने की तरफ़ करेंगे, इस्तेमाल के तरीक़े का मुस्तक़ील पर्चा होता है। इसके मुताबिक़ अमली मश्क़ करनी पड़ती है जिसके बाद लाइंस हुकूमत से मिलता है चाही अमली मश्क़ कितनी अच्छी हो लेकिन लाइंस हासिल किए बग़ैर इस चीज़ को इस्तेमाल करना जुर्म बन जाता है। फ़क़ीर, हकीम या अयालदार, डाक्टर भी जिस तरह दवा इस्तेमाल करने को कहते हैं उस दवा को वैसे ही इस्तेमाल करते हैं, यों करें कि हकीम की ऐसी तेसी, हम भी आदमी है इसके घर में चूहे कूद रहे हैं, हम तो लाखों रूपये हज़ारों मकानों सैकड़ों कारखानों के मालिक हैं अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ उन अदविया को

इस्तेमाल करूंगा और सूंघने वाली दवा को खा लिया और खाने की दवा को नाक में डाल दिया, हर दवा को दूसरी जगह इस्तेमाल कर लिया, तो मरेगा, लेकिन इसांन के बारे में इस तरह नहीं सोचा जाता है हर चीज़ दूसरे से बनती नज़र आती है लेकिन इंसान को ख़ुदा ने बनाया, बारिश, बादल, पानी, खेती, रोटी, सालन, ख़ून, फिर मनी का इंतिक़ाल एक जगह से दूसरी जगह की तरफ़, आख़िर में इंसानी शक्ल और फिर बच्चे का वजूद साथ के साथ अल्लाह पाक ने इस्तेमाल के तरीक़ों के लिए आसमानी किताबें उतार दीं तौरात, इंजील, ज़बूर, कुरआन, इंसानी मशीन सारी मशीनों से अहम है। अगर यह मशीन ठीक तौर से इस्तेमाल हो गई तो मशीनों और चीज़ों से अच्छे हालात बन जाएंगे, इस आला मशीन के इस्तेमाल के मुकम्मल तरीक़े ख़ुदा ने बता दिए हैं, ऐ इंसान तेरे क़ब्ज़े में जितनी चीज़ें आएंगी उनसे तूझे फ़ायदा पहुंचेगा। दूसरी चीज़ों से भी नफ़ा मिलेगा अगर अपनी उस मशीन को सही तौर से इस्तेमाल कर लिया, वरना यह जगह से नुक़्सान मिलेगा, करोड़ की मोटर से हलाकत आ सकती है अगर ग़लत तौर से इस्तेमाल हो, लेकिन 200 की सैकंड हैंड मंज़िल मक़्सूद पर पहुंचा देगी अगर सही तौर से इस्तेमाल किया और अगर एक अरब की बेहतरीन कार को अरब के रिवाज के ख़िलाफ़, हिन्द या पाक के रिवाज के मुताबिक़ बाएं हाथ चलाने लगे तो आने वाले ट्रक से टक्कर जो लगी तो जद्दा के बजाए जन्नत या जहन्नम में जा पहुंचेगा या अस्पताल में पहुंच गए, बैगम इंतिज़ार करती रह जाएगी, तरीक़ा इस्तेमाल में कामियाबी है सिर्फ़ मोटर से कामियाबी नहीं है वज़ीर या लखपती बन गया तो यह ज़रूरी नहीं है कि जैसे भी इस्तेमाल हो तो कामियाब होगा बल्कि ग़लत इस्तेमाल ना–कामियाब होगा। अगर सही तौर से इस्तेमाल हो العاقبة للمتقين कामियाब बनने के लिए सबसे ज़्यादा मेहनत अपने ऊपर करनी पड़ती है कि चाहे वज़ीर न हो या जैल में चला जाओ लेकिन इस्तेमाल का

तरीक़ा दुरुस्त रहे, यूसुफ़ अलै० के सामने था कि इस्तेमाल का तरीक़ा सही रखूंगा तो इस घर के सारे मज़ो से महरूम रहूंगा और जैल में मरूंगा और ग़लत तरीक़े पर चल पड़ूं तो उस वज़ीर के घर में मज़े करूंगा। ज़ुलैखा से तलज़ करूंगा, सारे नौकरों पर चलेगी, ज़ुलैखा की वजह से सारा हुस्न मिस्र मेरे हाथ में होगा, लेकिन हज़रत यूसुफ़ अलै० ने अपने इस्तेमाल के तरीक़े को दुरुस्त रखा, इशारा कनाया से नहीं माना, हाथ पकड़ने से नहीं माने, ज़ुलैखा ने मकान दरमकान बनाया कि बाहर की आवाज़ अन्दर न आ सके, यूसुफ़ अलै० बाहर न निकल सके, आज तो काम करवा लेना है। यूसुफ़ अलै० को साथ ले गई, हर दरवाज़े पर ताले से दरवाज़े लगाती जाती, आख़िर उस ज़ुलैखा ने बात की, तरकीब सोचने को कुछ ख़ामोश हुए तो ज़ुलैखा समझी मान गए, उसने एक जगह पर पर्दा डाला, अरे ज़ुलैखा क्या है ? मैंने अपने देवता से छुपकर इस काम का इरादा किया है इससे यूसुफ़ अलै० को ख़्याल आया कि अच्छा मैं भी अपनी मॉबूद से छिपूं और डरूं। इसी ख़्याल से भाग पड़े एक रिवायत में यह है कि यूसुफ़ अलै० ने याकूब अलै० को उंगली मुंह में दबाए हुए देखा, उससे भाग पड़े और दरवाज़े से खुलते चले गए, आख़िरी दरवाज़ा खुला तो वज़ीर साहब मौजूद, क्या हुआ ? यूसुफ़ अलै० ख़ामोश रहे, अंबिया अलैहिस्सलाम दूसरो को बचा लेते हैं अपनी जान पर झेल लेते हैं, पीछे से ज़ुलैखा आई तो उसने फ़ौरन कहा कि दूध पीता बच्चा मेरा गवाह है इस बच्चे ने बोलना शुरू किया, कमीज़ आगे से फटी है तो ज़ुलैखा सच्ची, अगर पीछे से फटी है तो ज़ुलैखा झूठी, वज़री ने कहा, अरे ज़ुलैखा तेरी ही हरकत है। ऐ यूसुफ़ अलै० एराज़ कर ले और यूसुफ़ को वज़ीर ने जैल में डालवा दिया, जैसे ज़ुलैखा ग़लत इस्तेमाल होती थी, ऐसे ही वज़ीर भी ग़लत इस्तेमाल वाला था, वरना जान लेने के बाद तो ज़ुलैखा को सज़ा देता, यूसुफ़ अलै० ने जेल को बरदाश्त किया अज़ामकार वज़ीर बन गया,

ग़लत इस्तेमाल की सूरत में मुजरीम के तौर पर सिर्फ़ एक घर के सारे मज़े व हुस्न को पाते, इसको कुरबान किया तो ख़ुदा ने इस घर का दोबारा मालिक बमा ज़ुलैख़ा के बना दिया। जिस औरत को पैग़ाम निकाह दें, अब इज़्ज़त से वह सारे मिलने लगे, यूसुफ़ अलै० यों कहे कि जेलखाना ज़्यादा अच्छा है हालांकि जैल या क़ैद के नाम से ही इंसान घबरा जाता है अपने घर में, अपने बीवी–बच्चों के साथ नज़रबंद होने को तैयार नहीं है लेकिन इस मुसीबत को इख़्तियार कर लिया, तो सही इस्तेमाल से सब कुछ उन्हें मिल गया, जब सब कुछ मिल गया तो भी यूसुफ़ अलै० ने इस्तेमाल को सही रखा, अपनी मशीनों को ग़लत इस्तेमाल करने वाले बड़े भाइयों को बार–बार इस छोटे भाई के सामने आना पड़ा सदक़ा लेने जिसने इस्तेमाल को दुरूस्त रखा था एक बार कहा تصدق علينا यूसुफ़ अलै० ने कहा هل علمتم مافعلتم بيوسف इससे पहले कभी ख़्याल न आया था कि यह यूसुफ़ हो सकते हैं। फ़ौरन कहा أانت يوسف आवाज़ से पहचान लिया यूसुफ़ अलै० ने गोया बताया कि तुम्हारी उस वक़्त की मुसीबत की वजह से तुम्हारा ग़लत इस्तेमाल है, ख़ुदा ने मुल्क मिस्र भी दे दिया, मेरे साथ ही यह मामला नहीं है। बल्कि जो क़ियामत तक जो अपने इस्तेमाल को सही रखेगा उसके साथ ऐसा ही होगा, सही इस्तेमाल वाला क़ाबू पाकर छोड़ देता है, बद्दु ने आकर पूछा कि क़ियामत को हिसाब ख़ुद अल्लाह लेंगे या किसी के हवाले कर देंगे ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि नहीं, ख़ुदा ही लेंगे, उस बद्दु ने कहा, " نجونا ورب الكعبة हुज़ूर सल्ल० ने कहा क्यों ? उसने कहा الكريم اذاقدرعفا और यूसुफ़ अलै० के बारे में हुज़ूर सल्ल० ने कहा, अल करीम इब्ने अल करीम इब्ने अलकरीम यूसुफ़ बिन याकूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम यूसुफ़ अलै० ने कह दिया لاتثريب عليكم اليوم ऐसे ही जिन अहले मक्का ने तेरह साल लगातार हुज़ूर सल्ल० को तक्लीफ़ पर

तक्लीफ़ पहुंचाई और बद्र, खंदक़ में चढ़कर आए हज़रत हमज़ा रज़ि० का जिगर व दिल का हार पहना, हुज़ूर सल्ल० पर ऐसा रंज था कि फ़रमाया अगर मैं क़ादिर हुआ तो ऐसा सत्तर के साथ करूंगा कुरआन उतर आया, فان عاقبتم فعاقبوا بمثل ماعوقبتم به ولئن صبرتم فهو خير للصابرين हुज़ूर सल्ल० की साहबज़ादी रज़ि० का हमल साक़ित कर दिया। ऐसो में जब फ़त्ह मक्का में ग़ालिब हुए तो सबको जमा करके पूछा मैं क्या करूंगा ? सबने कहा, आप कर ही क्या सकते हैं करम ही करेंगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया لا تثريب عليكم اليوم اذهبوا فانتم الطلقا ऐसे उठे कुरैश गोया कि अभी क़ब्रों से निकले हों। उस माफ़ करने वाले को इज़्ज़त व मुहब्बत मिली, कामियाबी ना–कामियाबी का मिदार चीज़ों, जंगों, सड़कों पर नहीं है बल्कि इसके अपने इस्तेमाल पर है, सही इस्तेमाल से दोनों जहां में कामियाबी मिलेगी, इसी की आवाज़ पांच वक़्त लगती है सब कुछ छोड़ना है सिर्फ़ ख़ुदा बड़े हैं, दुनिया की हर चीज़ अनासीर अरबा से बनी है एक एक अनासीर जो कायनात में रखा हुआ है अगर वह ज़रा खुलकर आ जाए तो रूस व अमेरीका इनके दम पकड़ने वालों की हर चीज़ को ख़त्म करके रख दे एक घंटे में हवा को ख़ुदा ज़रा चला दें तो सारा ख़त्म इस कायनात के अन्दर रखी हुई, जहन्नम की नहीं, आग को ख़ुदा एक घंटे के लिए सारे अमेरीका सारे रूस, सारे आलम में छोड़ दें और फ़ायर बिरगैड़ में और इसके पानी में आग लगा दें, तो कोई क्या कर सकेगा। आधा घंटा में सब जलकर ख़ाक हो जाए, अगर जामूनों को रो रकाबियों में हिलाने की तरह ख़ुदा किसी मुल्क में या सारे आलम में ज़मीन को हिला दें या पानी चढ़ाकर ले आएं तो सब कुछ ख़त्म, इंसानों के हाथों का बनाया हुआ, अनासीर अरबा के सामने बे–हैसीयत है तो ख़ुद अनासीर अरबा ख़ुदा के सामने ज़र्रे के तरह हैं, यों कहा जाता है कि पुर्ज़ा तो छोटा है लेकिन इसके बग़ैर कुदरत ख़ुदा से न होगा। जिस

क़ुदरत से शख़्सों का उरूज व ज़वाल और क़ौमों की इज़्ज़त व ज़िल्लत होती है इस क़ुदरत के उसूल बताने के लिए ख़ुदा ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा है ख़ुद ही फ़ैसले न कर लो, उन्होंने अपने मशीन के इस्तेमाल करने में कामियाबी बताई है। हसीन हो या सिया, आलिम हो या उम्मी, वज़ीर हो या फ़क़ीर हर हाल में मशीन ठीक इस्तेमाल करो, दूसरी मशीन को तुमने ठीक इस्तेमाल कर लिया तो यह तुम्हारी कामियाबी नहीं है बल्कि तुम्हारी अपनी कामियाबी यह है कि तुम अपनी मशीन सही इस्तेमाल कर लो, फ़क्र व फ़ाक़ा में मूसा अलै० की तरह चमक जाओगे, वरना क़ारून की तरह हलाक हो जाओगे। मूसा अलै० की मशीन का हर पुर्ज़ा बनाने वाले तरीक़े के मुताबिक़ इस्तेमाल होता था तो चार आठ आने के अबा और चटनी रोटी में इज़्ज़त पाते हैं, मुल्क व इक़्तिदार वाला फ़िऔन भी ग़लत इस्तेमाल की वजह से ज़लील होता है, फ़िऔन और उसके साथी अपनी मशीन ग़लत इस्तेमाल कर रहे थे, अगरचें इनके पेड़ व नहरें, मुज़ारअ और इनके सारे जानवर, गधे मुर्ग़ियां सही इस्तेमाल हो रही थी, क़ारून का घोड़ा दुरूस्त इस्तेमाल होता था, उसने किसी चीज़ को ग़लत इस्तेमाल नहीं किया, जिसकी पादाश में उसको हलाक कर दिया हो बल्कि अपने मशीन को ग़लत इस्तेमाल करने पर उसे ख़त्म कर दिया, महकूम, अक़्लियत, ज़ौअफ़ा अरज़, फ़ुक़रा इज़्ज़त पालेंगे अगर अपना इस्तेमाल दुरूस्त कर लें, वरना हाकिम व अक्सीरियत, अग़निया होकर भी ज़लील होंगे। अंबिया अलैहिस्सलाम ने अपने हर साथी से यही कहा कि तुम अपना इस्तेमाल दुरूस्त कर लो, मूसा अलै० ने मेहनत करके सारी क़ौम का इस्तेमाल ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ करवा लिया था, यक़ीन चार तरह का बने, अल्लाह बग़ैर, ग़ैर से कुछ न होगा, तदबीर व तरकीब से दवा व ग़िज़ा से, खाना व शराब से अल्लाह बग़ैर कुछ न हो, ग़ैर के बग़ैर अल्लाह सब कुछ कर देंग, मलाकुल–मौत के बग़ैर ख़ुदा अपने हुक्म से मार देंगे,

अपने हुक्म से ज़िंदा कर दें, खुदा किसी के मुहताज नहीं है और यक़ीन बने कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले तरीक़े से बग़ैर माल व चीज़ों व जायदादों व मुल्क के फ़्लां मिल जाएगी, सारी चीज़ों से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले तरीक़े के बग़ैर फ़्लां व इज़्ज़त न मिल सकेगी, हज़रत मुहम्मद सल्ल० वाले तरीक़े से हर जगह हम हिफ़ाज़त, इज़्ज़त व फ़्ला हासिल कर लेंगे, रूस अमेरीका जूती बनें। चांद सूरज हाथ में आ जाए तो भी हम ज़लील हो जाएगे, अगर हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े पर हमारा इस्तेमाल नहीं है उस यक़ीन को दिल में ले आने पर सारे आख़िरत व दुनिया के मुनाफ़े दे देंगे, यक़ीन बोलने, सुनने, सोचने से बनता है, जिस रसूलों को किताबों, हश्र व नश्र, मब्दा व मुआद को माना है इसके तज़्किरे से ईमान बनेगा और जितने मुल्क व माल के तज़्किरे चल जाएंगे उतना ही ईमान कमज़ोर होता चले जाएगा। सबकी बड़ाई निकले और इनकी छोटाई दिल में आ जाए, सिर्फ़ खुदा की बड़ाई दिल में हो, इसी मेहनत के लिए मस्जिद नबी है, दावत का बोलना इल्म के साथ ही दुरुस्त हो सकेगा, कुरआन व हदीस में से ईमानियत से मुतालक़ा आयात व हदीस को सुनो, अपने हिस्से के तरीके इस्तेमाल को मालूम करो, कारतूस से ख़ाली करके पहले बंदूक़ चलाते हैं, मोटर सिलाई की मशीन को पहले ख़ाली चलाते हैं। अगर ख़ाली ठीक चल रही हो तो फिर मोटर व मशीन कारतूस में सवारियों और कपड़ों के साथ भी ठीक चल सकेगी। ऐसे ही नमाज़ में तमाम नक़्शों के इश्तग़लाल से, बीवी के सुनने सुनाने से, खाने-पीने से ख़ाली कर दिया गया, अगर सबसे ख़ाली होकर सही इस्तेमाल हो सकते हो तो सब मश्ग़ूल होकर भी सही इस्तेमाल हो सकोगे, एक तो है नमाज़, एक से दीन, मुल्क, सियासत, खेती, दुकान, दफ़्तार से ख़ाली होकर, नमाज़ के अन्दर का इस्तेमाल दुरुस्त कर लिया तो अब मख़्लूक़ के अन्दर का इस्तेमाल दुरुस्त कर सकोगे। नमाज़ की तरह हर काम

में ख़ुदा को राज़ी करने की नीयत करो, नमाज़ की तरह आंख, हाथ, पांव, ज़ुबान, कान को भी मुहम्मद के तरीक़े का पाबंद बनाओ जैसे नमाज़ में हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े से कामियाबी मिलती है, ऐसे ही सन्अत, तिजारत, खेती–बाड़ी में भी हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े से कामियाबी मिलती है जिसका इस्तेमाल हटकर सही न होगा, इसका मख़लूक़ में अलग कर इस्तेमाल दुरूस्त न होगा। नमाज़ के लिए हम अपने वतनों को छोड़कर ख़ुदा के वतन (मस्जिद) में आते हैं, हटकर इस्तेमाल जड़ है, लगकर इस्तेमाल शाख है हटकर इस्तेमाल होना असल है इस पर ज़ोर ज़्यादा लगाओ, इसलिए मस्जिद में आकर ख़ुब आमाल का उनके असरात व मुनाफ़े का ज़िक्र करो, चीज़ों की अच्छी तरह से तरदीद करो, ज़ाहिर से चीज़ों से हटे हो तो बातिन से भी इससे हट जाओ, बीवी–बच्चों, दुकान माल, बैंक, खेती से निकल आए तो वे चीज़ें भी तुमसे निकल जाएं, सिर्फ़ तुम्हारी उनसे निकल जाना काफ़ी नहीं है। असल कोशीश यह है जिनसे तुम निकले हो, उनकी मुहब्बत व तलब अपने दिलों में से निकालो, ख़ाली चार रक्अत से इंसान नहीं बदलता है जब तक माहौल बनाकर ज़िक्र, इल्म, इख़्लास व यक़ीन हासिल न करे, मतउलेमाना आलिमाना माहौल हो, इख़्लास वाला माहौल हो, राह रस्म वुज़रा से बनाने के लिए। किसी हसीन के तज़्किरे के लिए इस माहौल में जमा होना न हो, माहौल बनाकर रो रोकर कहो, ऐ ख़ुदा जिनसे हम निकलकर आते हैं उनका यक़ीन व मुहब्बत व तलब दिल से निकाल दे, दावत का अमल, मज्लिस इल्म, नमाज़, अल्लाह का ज़िक्र हमारे ठीक होने के अस्बाब हैं इनको इख़्तियार करके कहो, ऐ ख़ुदा ! दिन तेरे हाथ में है तो बदलेगा तो ठीक हो जाएगा اللهم مثبت القلوب الخ اللهم اجعل فی قلبی نورا الخ सब इख़्तियार करके जब दुआ मांगी जाएगी हिदायत मिलने के, नूर मिलने के, दिन के पीटने के अस्बाब इख़्तियार करके ख़ुदा से मांगा जाएगा तब ख़ुदा यह दौलतें देंगे, दिल मान जाएगा कि आनी जानी चीज़ों में मुल्क

व माल में कामियाबी नहीं है, इसके बाद तुम हर जगह हो, फ़क्र व दौलत में हो, गुरबत व ग़िना में, दुकान व ज़मीन में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला तरीक़ा न लिया तो फ़क़ीर बनकर भी कामियाबी न मिलेगी। बस इसके लिए ऐसा माहौल मस्जिद के अन्दर तैयार कर लो कि जो इसमें किसी तरह पहुंच जाए वह बदल जाए अब तो मस्जिद नुबूवी में सिर्फ़ मुसलमान ही आते हैं हम इनको सीखाने, खिलाने का इंतिज़ाम नहीं कर रहे हैं, हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में यहां का माहौल ऐसा था कि इसमें कुफ़्फ़ार तक के खाने–पीने का, इनके सीखने सिखाने का नज़्म किया जाता था। हुज़ूर सल्ल० पर बहुत सख़्त बनू सक़ीफ़, क़ियाम मक्का में अहले मक्का से तंग आकर ताइफ़ गए, तो इनके किसी सरदार ने कहा, अल्लाह को नबी बनाने को और कोई नहीं मिला था, दूसरे ने कहा मैं तुमसे कभी बात न करूंगा, झूठे हो तो भी, सच्चे नबी हो तो भी, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम कुरैश से और आम लोगों से इसका तज़्किरा न करना। लेकिन उन सरदारों ने ताइफ़ के औबाश लोगों को उक्सा दिया जिन्होंने दो सफ़ें बनाकर हुज़ूर सल्ल० के क़दमों को ज़ख़्मी कर दिया, हालत ऐसी ख़राब कर दी कि हुज़ूर सल्ल० को मारने वाले उत्बा व शैबा तक को भी रहम आ गया, उन्होंने अद्दास के हाथ अपने बाग़ों से अंगूर भेजे तो व नतीजे में मुसलमान हो गया, इस पर वापसी में ग़ज़ब ख़ुदा जोश में आया, फ़रिश्ते न आकर कहा कहो तो ताइफ़ वालों को ख़त्म कर दें, आपकी रहमत जोश में आई, फ़रमाया इनके मरने से मुझे क्या मिलेगा अगर ज़िंदा रह गए तो इनकी औलादें मुसलमान हो सकती हैं इनकी तरफ़ एक दफ़ा रहमत मुहम्मदी मुतवज्जोह हो गई तो फ़त्ह मक्का के बाद हुज़ूर सल्ल० अगरचे लश्कर ताइफ़ की तरफ़ ले गए। लेकिन बाहर ही पड़ाव डाल दिया, एक औरत ने आकर कहा आप लड़ते क्यों नहीं ? कहा, ख़ुदा से हुक्म नहीं मिला, उसने कहा, फिर चलते क्यों नहीं ? और हुज़ूर सल्ल०

लश्कर को लेकर बग़ैर लड़े आ गए, अपनी साबक़ा रहमत के ख़िलाफ़ न किया। जब ताइफ़ वालों ने देखा कि हमारे चारों तरफ़ के सौ फ़ीसद अरब मुसलमान हो गए हैं अब कोई रास्ता नहीं रहा है सिवाए इसके कि इस्लाम में दाख़िल हो जाएं, इसके लिए इन्होंने वफ़्द भेजा, मजबूर होकर आने वाले की इज़्ज़त नहीं की जाती है बल्कि इसको ख़ुशआमद करने पर मजबूर किया जाता है लेकिन वाह जी क्या कहने हुज़ूर सल्ल० व सहाबा रज़ि० के कि किसी को हिदायत मिल जाए उसे अपना काम समझते थे इसलिए सहाबा ने ख़ूब ख़ुशआमद की, ताईफ़ का वफ़्द भेजा तो हज़रत मुग़ीरह रज़ि० अपनी बारी के जानवर चरा रहे थे। उन्होंने जब इस वफ़्द को देखा तो सब छोड़–छाड़कर हुज़ूर सल्ल० को इत्तिला देने के लिए दौड़ पड़े, रास्ते में हज़रत अबूबक्र रज़ि० से ज़िक्र कर दिया तो हज़रत अबूबक्र ने कहा तुझे क़सम है मैं जाकर इत्तिला करूंगा तू न कर, हज़रत मुग़ीरह रज़ि० लौटे तो मस्जिद वाला अमल तालीम का शुरू कर दिया, हुज़ूर सल्ल० को कैसे सलाम करें, सारे रास्ते सीखाते आए, मदीने से बाहर ही कुफ़्फ़ार को सीखाने का अमल चल रहा है लेकिन ऐसे उखड़े थे कि हुज़ूर सल्ल० को अपने ही तरीक़े से सलाम किया। इनमें से सख़्त क़िस्म के लोगों के लिए मस्जिद के अन्दर ख़ेमा डाल दिया गया और नर्म क़िस्म के लोगों को मदीना के किसी मुहल्ले में ठहराया गया, कहीं नर्म व सख़्त मिलकर नर्म भी सख़्त की तरह सख़्त न हो जाएं, इस क़िस्म के उसूल तो सीरत से ही हमने लिए हैं, क़ौमी एतबार से बनू मुआविया ऊंचे थे, उनकी नाक के बाल ख़ालिद बिन सईद रज़ि० को इनकी ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किया गया। इस्लाम था वरना यह ताइफ़ वाले ख़ालिद की ख़िदमत करते, हज़रत ख़ालिद सर पर खाना अलग–अलग क़िस्म का लेकर आते तो यह कहते तुम्हारी बातों को हमें एतबार नहीं, शायद ज़हर हो इसलिए तुम खाओ, इस तरह तीन दिन इनकी ख़िदमत हुई और उन्होंने आमाले मस्जिद को

सिर्फ़ देखा, असर के बाद हुज़ूर सल्ल० उनसे मामला करने आते, ताइफ़ वालों ने कहा कि पहली शर्त यह है कि मुसलमान हो जाएंगे लेकिन तीन साल तक बुत न छोड़ेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह मंज़ूर नहीं तोड़ने पड़ेंगे, उन्होंने कहा हम अपने हाथों से नहीं तोड़ सकते हैं फ़रमाया, अच्छा हम तुड़वा देंगे, ताइफ़ वालों ने दूसरी शर्त यह लगाई कि हम नमाज़ न पढ़ेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया لا خير في دين لا ركوع فيه उन्होंने कहा अच्छा तो फिर तुम्हारी तरह ऊपर नीचे हो जाएंगे, नमाज़ में लेकिन जिहाद व ज़कात में न लगेंगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अच्छा यह मंज़ूर है, आज के मुसलमानों को देख लेते तो सहाबा रज़ि० ताज्जुब न करते, लेकिन उन्होंने ताज्जुब किया कि यह कैसा इस्लाम है ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया नहीं, कलिमा व नमाज़ पर आ जाएं तो बाक़ी पर खुद आ जाएंगे, हुज़ूर सल्ल० बुत तोड़ने के लिए हज़रत मुग़ीरह रज़ि० ही को भेजा उन्होंने तमाशा किया कि बुत को एक गुर्ज़ मारकर एक टांग को ऊपर उठाकर इधर–उधर दौड़ना शुरू कर दिया। ताइफ़ वालों ने कहना शुरू कर दिया कि हमारे माबूद ने देखा टांग ख़राब कर दी, लेकिन अपनी दूसरी टांग सीधी करके कहा नहीं सारे बुतों के रेज़े–रेज़े कर दिए, मस्जिद को ऐसा माहौल था कि चंद दिन में काफ़िरों को भी बदल देता था, यह माहौल 24 घंटे का हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले आमाल में जान लगाने से बनता है हम सबको अपने जाने मस्जिद बनाने वाले माहौल के लिए पेश करनी हैं अपनी शहर की मस्जिदों में और बाहर की मस्जिदों में माहौल बनाने के लिए कितनी जान लगेगी इसकी तफ़्सील हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने बताई कि चार महीने बाहर, आधा दिन आधी रात मस्जिद में, आधा दिन रात घर व कमाई में, माल भी इस तरह ख़र्च हो जो माहौल मुतहरीक होता है वे सब जगह क़ायम हो जाता है, हमारा

माहौल अव्वल तो है नहीं अगर है कहीं तो चार दीवारी में बंद है बातिल मुतहरीक होने की वजह से छा गया। अगर अन्दरूनी मेहनत से अपने मस्जिदों में माहौल क़ायम कर लें और बेरूनी मेहनत से बाहर भी माहौल बना लें तो सबको ख़ुदा उस माहौल की तरफ़ खीचेंगे, जिसको खींचना न होगा, इनमें लड़ाकर, पत्थर बरसाकर, ज़मीन फाड़कर हलाक कर देंगे। बस हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाला माहौल का रूख़ पैदा कर दें, इसके लिए मौजूदा तर्तीब छोड़कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली तर्तीब ज़िंदगी में लेनी होगी, जितनी ज़रूरत है इतना बोलो, ज़िंदगी की मुसलस हो। माल व जान एक तिहाई बेरूनी नक़ल व हरकत में और अपनी मस्जिद में एक तिहाई लगेगा, आने वालों को खिलाओ और सीखाओ हाजतों पर लगाओ इस तर्तीब वाले एक शख़्स पर ख़ुदा हज़ारों को हिदायत देंगे, अब बोलो ? किसी न किसी तर्तीब पर ख़ुद को लाओ यहां का बोलना अपने मुल्क में बोलने से कहीं ज़्यारा असर रखता है।

उमूमी बयान न० 4

सहाबा रज़ि० की सियासत की बुनियाद अल्लाह का हुक्म पूरा हो जाना था

जुमा, नमाज़ फजर के बाद, 29, मई, 1964 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

हर चीज़ अपने माहौल से चलती है और माहौल इंसानों की मेहनत से बनता है, जैसा माहौल वैसे ज़िंदगी के तरीक़े होंगे, अगर माल व चीज़ों पर मेहनत हो तो चीज़ों वाले उस माहौल में चीज़ों के तरीक़े चलते हैं। मुल्क व माल के माहौल में इंसानी ज़िंदगी के सही तरीक़े नहीं चल सकते हैं, इबादत के माहौल में चल सकते हैं इंसान हैवान होकर भी इस्तेमाल हो सकता है और ख़लीफ़ा अल्लाह बनकर भी, या जानवर की ज़िंदगी इख़्तियार करेगा या ख़ुदा वाले तरीक़े, अगर जानवरों वाले तरीक़े हैं तो इंसानी ज़िंदगी आपस में ही टकराकर ख़त्म होगी। हैवानी ज़िंदगी है कि अपनी ज़िंदगी को बढ़ाने, अपने दायरे की ज़रूरत को पूरा करने में जान व माल लगाना, अपना पेट भरना, अपने बच्चों से खेलना, अपना मकान बनाना, अपनी बड़ाई हासिल करना रिज़्क़ अपने लिए समेटना, ये सारे काम हैवानों के हैं चाहे इंसान भी उन्हें कर ले। जानवर भी मकान के बनाने में ख़ूब बारिकयां करते हैं, मैंने रमज़ान में देखा, मुझे नींद नहीं आ रही थी, चुड़ा तिनके लाता उस तिनके को तर्तीब से उसे इधर–उधर देखकर रूकती, बिल्कुल मामर की तरह चिड़े ने एक तिनके को खुद मकान में लाकर रख दिया तो चुड़िया

ने उसे गुस्से में चोंच मारकर गिरा दिया। चिड़े ने लाकर दिया तो फिर चिड़िया ने उसे अपनी साबिक तर्तीब से इस घौंसले में जोड़ा, बालाखाने जानवर बनाते हैं, बीवी को मुर्गी खिलाता है खुद खाते हैं और बच्चों को भी, चिंटियों में भी रिस्क़ समेटना है, बिल्ली और कबूतर अपने लिबास को साफ़ करते हैं, इक़्तिदार पर क़ब्ज़ा करना बड़ा बनना मुर्ग़े में मौजूद है। बड़े घर में सुबह व शाम दाने मिलेंगे, चलने फिरने की जगह अच्छी है, पंद्रह बीस मुर्ग़ियां हैं, एक ही मुर्ग़ा है तुम दूसरा ले आओगे तो दोनों आपस में लड़ेंगे, यह लड़ाई खाने या जगह की कमी की वजह से नहीं हैं, मुर्ग़ों की कमी की वजह से नहीं है। सिर्फ़ मेरे हाथ में इस घर की हुक्मरानी हो, इस फ़िक्र में यह दोनों ख़ूनम ख़ून हो रहे हैं, हालांकि घर के बड़े दूसरे हैं जो इन दोनों में जीत गया, हो सकता है कल को इसको ज़िब्ह करके खा जाएं, दोनों मुर्ग़ों ने लड़ने में ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया, एक जीत गया एक हार गया, जितने वाला सीना तानकर चल रहा था। जो खाए जिस मुर्ग़े की बलाए, हारने वाला गरदन नीचे करके दुम दबाकर चलेगा, यह कहीं खाएगा तो दूसरा मुर्ग़े पर हिलाकर आंखे घुमाकर कहेगा, तूझे इस घर में खाने का हक़ नहीं है, अग़र न माना तो आकर उसे दो–चार चोंचे मार देगा, बल्कि ऐसे ही इलैक्शनों में जीत जाने वाला मिम्बर दूसरे के साथ करेगा, उसे दूसरे को बोलने ही न देगा अगर इंसान सिर्फ़ इन्हीं कामों में लगा रहेगा, तो फिर इसकी ज़िंदगी जानवरों वाली शुमार हुई है। खुदा इससे बिल्कुल खुश नहीं हैं

يا كلون كما تاكل الانعام والنار مثوى لهم

सिर्फ़ अपने घर अपने लिबास व खाना, अपने बीवी–बच्चों, अपनी इज़्ज़त की फ़िक्र है, दूसरी ज़िंदगी ख़िलाफ़त वाली है जिसमे इंसान खुदा की नीयाबत करता है कि जो कुछ जानवर अपने लिए करता है उसे ही खुदा दूसरों के लिए करते हैं, अल्लाह खाते नहीं खिलाते हैं, पीते नहीं पिलाते हैं, दूसरों को इज़्ज़त व माल देते हैं दूसरों को बच्चे देते हैं ख़ुद बच्चा नहीं रखते हैं अपने नेमते दूसरों पर

लगाते हैं। इनमें कोई तक़ाज़े वाला नहीं है वह इंसानों के तक़ाज़े पूरे करते हैं, जाहिल को इल्म, गुमराह को रास्ता ख़ौफ़ज़दा को अम्न देते हैं ग़लतियों से दरगुज़र करते हैं ज़िंदगी दूसरों की बनाते हैं, खुद ख़ुदा बड़े हैं, कोई इनकी बड़ाई बयान करे या नहीं अल्लाह हमसे अपनी बड़ाई कहलवाते हैं हमको देने के लिए ही, अल्लाह हर हाल में बड़े हैं। हुज़ूर सल्ल० या किसी और के ख़ुदा की बड़ाई बयान करने से ख़ुदा की बड़ाई में इज़ाफ़ा नहीं होता है, अगर सब ख़ुदा को छोटा कहें तो ख़ुदा की बड़ाई में ज़र्रा भर फ़र्क़ न आएगा, हमारी पाकी बयान करने से पाकी ख़ुदा में इज़ाफ़ा नहीं होता है ख़ुदा हर हाल में जैसे हैं वैसे हैं, बस हम यह सब कहेंगे ताकि हमें मिले। फ़ायदा ख़ुदा किसी से लेते नहीं हैं हर एक को फ़ायदा पहुंचाते हैं, वह हर एक से पाक व बे-नीयाज़ हैं, किसी की इनको हाजत नहीं, इनकी कोई सिफ़त कम ज़्यादा नहीं होती है क्योंकि कम होता तो नुक़्स है और ज़्यादती ज़माने साबिक में कमी के वजूद को लाज़िम है, ज़्यादती नुक़्स को मुस्तलज़म है। अल्लाह की ज़ात व क़ब्ज़ा व ख़ज़ाना व इल्म में न कमी न ज़्यादती है, जानवर दूसरों को फ़ायदा नहीं पहुंचाता है, बच्चे से छीन लिया, यहां मुंह मार लिया, वहां के पत्ते खा गया, ख़ुदा ने इसमें इंसानी ज़िंदगी का बनना बिगड़ना रखा है कि हैवान ज़िन्दगी इनमें चलेगी तो हालात बिगड़ेंगे, जैसे रंडी हर वक़्त सोचती रहती है कि इस गुज़रने वाले से कैसे लू ? इसके लिए वह इशरा करेगी। ऐसे ही आज के हुक्काम बैठकर यही सोच सकेंगे कि तिजारत, मोटर वालों से साइकल वालो से कैसे वसूल किया जाए, सीटी देते ही न रूकने की वजह से हुकूमत पचीस रूपये का जुर्माना कर रही है वज़ीर वग़ैरह की इस्तक़बाल में ख़र्च करने के लिए पुलीस वालों को कह दिया जाता है कि लोगों से रक़म वसूल करो, यह बत्ती क्यो जल रही है, अभी से क्यों नहीं जलाई ? इतने तेज़ क्यों जा रहे हो ? ऐसे बहानों से वसूल करते हैं। हुक्काम तो महकूम से लेने

की सोचते रहे, महकूमों ने सोचा, अच्छा हम भी देखेंगे, हुक्काम तो महकूम के ही रिश्तेदार हैं, महकूम ने 50 हज़ार लेकर चीज़ 15 हज़ार में बनाकर 35 हज़ार अपने पास रख लिए। अरब सारे पुल सारी इमारतें हुकूमत की कमज़ोर होंगी, इनका आपस में कभी जुड़ना न होगा, हर एक दूसरे से लेने पर तुला हुआ है, हमारे हां किसी चीज़ ग़ालिबन मोम बत्ती के आने पर कस्टम लगाया तो ताजिर ने बड़ी मिक्दार में मंगवाया कि एक में से 4, 4 बना लें। हैवानियत की एक हद है जिस तक तो ख़ून-खराबा नहीं होता है फिर बाद में ख़ून-ख़राबा के साथ हैवानी ज़िंदगी चलती है, कुछ जानवर ऐसे भी हैं कि दूसरे को बिगाड़े बग़ैर अपनी ज़िंदगी बनाते हैं, इंसानों में बाद में यह ख़ून वाली ज़िंदगी चलती है, कभी अक्सीरियत से अक्लीयत का, अक्लीयत से अक्सीरियत का ख़ून गिरता रहेगा। एक एक की दूसरे से ज़िंदगी बिगड़ेगी, हर उस बुनियाद की ज़िंदगी वाले हर फ़साद में रहेंगे, कभी इंसानों के हाथ दूसरों के हालात ख़राब होंगे, इत्मिनान के साथ एक घड़ी न गुज़ार सकेगा, मारकर इस रास्ते पर चलने वाले आख़िरत के अज़ाब को भुगतेंगे। दूसरा रास्ता ख़िलाफ़त है ऐसा मुआशरा जिसके हाकिम व महकूम, मकामी परदेसी कुछ अपने-अपने घरवालों पर लगाकर बाक़ी दूसरों पर लगा देते हैं, हर नूह का हर आदमी अपने दायरे पर ख़र्च करे माल व जान को, कुछ ख़ुदा के बंदों के नफ़ा पर लगाए, ऐसे मुआशरे का वजूद इंसानी ज़िंदगी के मुसीबतों से निकलता है। इस मुआशरे के हुक्काम बैठकर यह न सोंचेगे कि जो कुछ महकूम के पास है उससे अपनी ज़िंदगी कैसे बनाएं, बल्कि यह सोचेंगे कि महकूम को किस तरह से दीन, इनके हर काम में सहूलत कैसे पैदा करें, माल वाले ग़रीबों की ज़िंदगी माल लगा लगा कर बनाने को सोचेंगे कि कैसे माल लगाकर इनके बद-अख़्लाक़ी के मंज़रों व ज़िना को चोरी को ख़त्म करा दें। हर एक दूसरे को फ़ायदा पहुंचए, इस मुआशरे में कुछ की ज़िंदगी बनेगी, ऐसे के इलाक़े में

खुदा जंगों व सेलाबों को रोक देंगे, जंग दूसरे इलाक़े में होती रहेगी, खुदा की तरफ़ से जंग इस वजह से वजूद में आती है ताकि ग़लत खत्म हो, खुद इस मुआशरे की आग, सेलाब, भूचाल, हर मुसीबत से हिफ़ाज़त करेंगे, और हैवानियत वाले मुआशरों को हाथ डालकर तोड़ेंगे, अब यह मुआशरा बनेगा कैसे ? हर तबक़ा हर फ़र्द जान ख़िदमत भी माली ख़िदमत भी पैश करे, बीवी, बच्चों के घर कारोबार के मस्अले को पस्त पुश डाल दे, ख़ुदाई अख़्लाक़ पर यह मुआशरा उतरे इसके लिए थोड़ी सी मश्क़ सबको करनी होगी। इस मुआशरे पर आने के लिए इबादत पर मेहनत करनी होगी, انی جاعل فی الارض خلیفة में खुदा ने इंसान को ताअरुफ नतीजा वाली सिफ़ात से कराया है और وماخلقت الجن والانس الا لیعبدون में इब्तिदाई सिफ़त से ताअरूफ़ कराया है, अदल व इंसाफ़ वाला, ताऊन व रहम वाला मुआशरा चीज़ों के नक़्शे कम रखता होगा, अमल ज़्यादा आज का सारा मुआशरा मक्का मदीना वाला भी यहूद नसारा का हैवानी मुआशरा है ख़ुलफ़ा व सहाबा रज़ि० वाला मुआशरा नहीं है इस मुआशरे से दो हैवानियत मक्का मदीना में पहुंच रही है जिसको सहाबा रज़ि० यूरोप, बिलाद अरबिया, ईरान व पाकिस्तान तक से निकाल दिया था ख़िलाफ़त वाली ज़िंदगी से। जिस सहाबी की ज़िंदगी पढ़ोगे तो उसमें ख़िलाफ़त ही ख़िलाफ़त देखोगे, आज के मुसलमान तो नफ़्स व शैतान के, यहूदी व नसारा के आलाकार बन कर चल रहे हैं। ख़िलाफ़त वाली ज़िंदगी का फल है इबादत का, जब इबादत में ताक़त पड़ जाए, इबादत से मस्अले हल होने लगें तो इबादत से इंसानी अख़्लाक़ का फल निकलता है, जब जड़ों का अन्दर, पड़ का बाहर फैलाओ पूरा हो जाता है तो फल, फूल ख़ुद ब ख़ुद निकल आएंगे, अगर जड़ व पेड़ के बग़ैर ही फल की मेहनत करें तो फल मिल ही न सकेगा, इबादत लाए बग़ैर कितनी मेहनत कर लें। अख़्लाक़ न ताऊन व मुहब्बत हमदर्दी को वजूद मिल ही न सकेगा, बस इबादत मेहनत

से करो, यक़ीन दवाओं, कपड़ों, मोटरों, दुकानों, माल व मुल्क का है, इल्म चीज़ों का ख़ूब है लेकिन ऐसा आदमी नमाज़ को आया नमाज़ पर न यक़ीन है न नमाज़ के किसी हिस्से के फ़ायदे का इल्म है। नमाज़ के हिस्सों फ़ायदे तो मेहनत से मालूम होते हैं मेहनत तो सारी बीवी–बच्चों, मालिका कटोड़िया को ख़ुशी करने में लग रही है नमाज़ के लिए इसने इल्म व ज़िक्र भी न बनाया और यक़ीन व इख़्लास भी न बनाया, ध्यान बचला हुआ, यक़ीन ग़लत, इल्म यूरोप व एशिया की चीज़ों का यह है इबादत की रस्म या बग़ैर रूह का इंसान बग़ैर रूह की इबादत में किसी एक मस्अले का हल दिखाई न देगा। जैसे बे–रूह के इंसान में कोई फ़ायदा नज़र नहीं आता है इसी वजह से लोग कहते हैं ख़ाली नमाज़ से क्या होता है, कुछ और भी हो और कुछ मुक़द्दमे भी हो, मुक़द्दमे मे वकील के हसब हाल कहने पर झूठ बोलो, मुन्किरीन मुलहदीन जो कर रहे हैं वह सब करना पड़ेगा, हालांकि हज़रत मुहम्मद सल्ल० या किसी नबी ने ख़ब्सा ज़माना के आमाल में से किसी अमल को न किया था। इन आमाल के बग़ैर सिर्फ़ नमाज़ पर मूसा अलै० ने फ़िरऔन को ख़त्म करा दिया, ख़ाली नमाज़ से नहीं होता है इसका मतलब है कि अंबिया अलैहिस्लाम ने जो कुछ किया है ख़ाली इससे कामियाबी नहीं मिलती है अलबत्ता यहूद नसारा के ख़ाली कामों से कामियाबी मिल जाएगी। अरे ख़ाली मुल्क माल के आ जाने से ऐटमियत के बन जाने से कहां ज़िंदगी बनती है ? जब तक यक़ीन व अख़्लाक़ व जुराइत न हो, जब यक़ीन व जुराइत थी, ख़ुदा पर एतिमाद था, नमाज़ में कुछ न कुछ थीं उस ज़माने में महमूद ग़ज़नवी ने हिन्द के सत्तर मक़ामात पर क़ब्ज़ा कर लिया था सिर्फ़ लूटेरा ही न था पूरा मुंतज़म था। हिन्द में इसका नाइब था क्योंकि मक़्बूज़ात को जाने में चक्कर पड़ता था सिर्फ़ इसी वजह से एक ही हमले में कश्मीर को क़ब्ज़ा कर लिया था हर जगह उसने अपने नाइब मुक़र्रर किए थे, जुराई व हिम्मत के बग़ैर हाथियार चलाने

की सूरत हो नहीं सकती है जुराइत व हिम्मत नहीं है इसी वजह से हाथियार रूस अमेरीका ने कितने बना लिए हैं लेकिन इस्तेमाल नहीं करते हैं या इन्होंने कोई हाथियार बनाया ही नहीं है वैसे ही शोर मचा रखा है। ईमान जुराइत वाले ज़माने में सोते शेर को मारना ऐब समझा जाता था, हुज़ूर सल्ल० ने ऐसी-ऐसी ताक़त को ज़ेर किया है जो अपना मवाज़ना शेरों से किया करते थे, जिसे बहादुर बनाना चाहते थे उसे घर से निकाल देते थे, घर के बाहर निकलकर मारे मारे फिरने से वह बहादुर बन जाता है। एक शख़्स ऐसा ही था, उसने हमला करके एक काफ़िले से जवान लड़की को छीना, रात को सोहबत करने लगा कि हुस्न से तलज़्ज़ुज़ का हक़ सिर्फ़ बहादुर को है कि अगर बहादुरी की वजह से यह हुस्न को लूटा है तो मुझसे ज़्यादा हसीन फ़लां क़बीले की लड़की है वह लड़की उसके चचा की ही थी जिसने उसे निकाला था, चचा ने कहा तू अवारा है लड़की तूझे न दूंगा। उसने इस ख़ानदान का दस साल तक अकेले ही मुहासरा किया, उस ख़ानदान को कहीं जाने न दिया, तो ख़ानदान वालो ने कहा कि या तो लड़की की शादी इससे कर दे या हम तूझे मआ लड़की के इसके हवाले कर देंगे। उसने सोचकर इससे कहा फ़लां क़बीले के सौ ऊंट लाकर दे दे और यह ख़्याल था कि जल्दी की वजह से यह लम्बे रास्ते के बजाए मुख़्तसर और एक सांप और एक शेर वाले रास्ते से जाएगा, पहले तो सांप या शेर से मर जाएगा नहीं तो क़बीला ही हलाक कर देगा चुनांचे वह मुख़्तसर रास्ते से चला, शेर मिला, उसने शेर की ज़ुबान को इस ज़ोर से पकड़ लिया कि इसका जबड़ा खुल गया और शेर इसको कांट न सका। जब देखा मेरी ताक़त शेर से ज़्यादा है तब उसे तलवार से क़त्ल किया और उसके ख़ून से कुरते पर शेर बहादुरी के लिखकर छोड़कर चल दिया कि बिल्ली की तरह शेर मेरे हाथ में था, उधर चचा ने उस कुरते के शेरों से और मुर्दा शेर से इसकी बहादुरी को मान लिया और उसने कोशीश

की अज़्दे से मुठभेड़ से पहले इसे रोक ले। वह चला तो उस वक़्त वह बहादुर अज़्दा है से ज़ोर अज़माई कर रहा था और बावजूद हज़ार कोशीश के अज़्दा इसके जिस्म को लिपट न सका तो उससे भी क़त्ल कर दिया उसे वापसी ले गया और लड़की से शादी कर दी। इंसानी ताक़त की आख़िरी हदूद से आगे ही है ईमान की ताक़त, जान की ताक़त में ज़माने में जल्दी से क़िस्सा हल हो जाते थे, यज़ीद के दरबार में बांधी आई, वह बांधी यज़ीद के किसी दरबारी व साहब को देखने लगी जो ख़ुबसूरत भी था, यज़ीद ने कहा शायद यह आदमी उसे पसंद आ गया है उसने वह बांधी अपने इस मसाहब इब्ने अम्र को दे दी, सुबह को वह बांधी घर से ग़ायब, तलाश से मिली, (पूछा) अरी तू क्यों भागी है ? उसने कहा मेरा मालिक बहादुर था, फ़क़्र ने उसे बेचने पर मज्बूर किया, वह मुझे लेकर चला, आख़िरी रात में उसने कहा तू जाने वाली है सोहबत ही कर लूं, सोहबत करने लगा तो शेर आ गया, वह मुझसे हटकर शेर को मारकर आया, लेकिन इसकी ताक़त में फ़र्क़ न था और यह मसाहब सोहबत करने लगे चूहा ऊपर से क़ूदा जिसकी वजह से यह ऐसे बे–होश होकर गिरे कि मुझे मौत का ख़तरा हुआ तो मैं भाग उठी ताकि मुझ पर क़त्ल का ग़लत इलज़ाम न लग जाए। सारे दरबारी उससे हंसने लगे, उस दरबारी के पास राकेट, बम आ जाएं तो क्या करेगा ? ज़रा शोर से गुज़ार जाएं तो उन्हें राकेट से आगे की चीज़ दे दो तो भी कुछ न कर सकेंगे और ईमान वाले किसी शक्ल से भी असर न लेंगे और अल्लाह अक्बर कहकर इस्लाह के बग़ैर सब कुछ हासिल कर लेंगे। अख़्लाक़ लेने के लिए अब्द बनना पड़ता है, अब्दियत की ज़मीन पर ख़िलाफ़त फूल व फल आते हैं अनानीयत की ज़मीन पर नहीं, इंसान की क़ीमत अपने जिस्म के एतबार नहीं है। बल्कि जिसके लिए बना है इसके एतबार से इसकी क़ीमत है, मिट्टी से बना तो हैज़ का ख़ून इसके बदन के हर हिस्से में हो गया, मुंह से नीचे जाते ही हलवे

की खुश्बू ख़त्म, कै करके देख लो, यह अपने मौज़ूअ के एतबार से क़ीमत रखता है अपनी ज़ात के एतबार से नहीं यों कहे इस ज़मीन में बेहतरीन पानी है इसमें अच्छी चीज़ हो सकती है तुमने उस ज़मीन को ख़रीदा और उस पर पड़ गए, तो कुछ भी न मिलेगा, जब तक मेहनत न करोगे, मेहनत करके इस ज़मीन में से पानी, सोना, पैट्रोल निकालकर मालदार बन सकते हो, ऐसे ही सिर्फ़ इबादत की मेहनत से ख़िलाफ़त व अख़्लाक़ वाली मेहनत है। सहाबा रज़ि० पर इलज़ाम है कि उन्होंने मुल्क पर मेहनत की है, बल्कि वह इबादत करे खुदा को राज़ी करके अख़्लाक़ का हासिल कर गए थे, मक्का में मेहनत चलाई ईमान है, इबादत वहीं मिल गई उसके लिए यहां आकर सबसे पहले मस्जिद ही बनाई जिसमें अल्लाह का ज़िक्र है। इबादत में सारे मस्अलों का इन्हिसार बताया जा रहा है। वफ़्द बाहर से आया, उसने आपस में सोचा कि अगर हर एक अपने-अपने सामान व सवारी की फ़िक्र में लग गया तो हर एक का इल्म नाक़िस होगा, लिहाज़ा एक आदमी उसके लिए मुक़र्रर कर दो, एक साहब ने ख़ुद को पेश कर दिया, अब सारे लोग हुज़ूर सल्ल० से इल्म लेने में लग गए। यह भी हुज़ूर सल्ल० मस्जिद में नमाज़ पढ़ें, कभी जंगल में जानवरों के पास ही पढ़ लेते, एक बार उन्होंने सोचा कि मेरे साथियों को इल्म की दौलत मिलेगी, मुझे कुछ भी नहीं मिला, मैं जैसा अपने हां था वैसा ही यहां हूं। एक दम सब जानवर छोड़कर मस्जिद में आ पहुंचे, तो हुज़ूर सल्ल० जिन हदीसों को सुनाकर गए थे इनका मुज़ाकरा हो रहा था कि जो अच्छी तरह वुज़ू करके दो रक्अत नमाज़ पढ़ेगा उसके गुनाह माफ़ होंगे बख़-बख़ क्या ही अच्छी बात है दूसरे ने इस पहली वाली बात से भी अच्छी बात कही, वह क्या थी ? कि जो कलिमा शहादत पढ़ेगा जन्नत में जाएगा, हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा को बाज़ार के मुक़ाबले में डाला था, उसके लिए मस्जिद को आमाल से आबाद किया था, मस्जिद नुबूवी में

तिलावत थी, ईमान का मुज़ाकरा था, दूसरों को सीखाना था, इन्हीं आमाल को लेकर नक़ल व हरकत करते। इस मस्जिद में वक़्त लगाकर बाज़ार के कामों से मुक़ाबला करते, कभी बाहर निकलकर बाज़ार से मुक़ाबला करते, नमाज़ वाला अमल उन आमाल की तरफ़ डालता रहता था नमाज़ के बाद फिर वही पहले वाला काम शुरू कर देते या नमाज़ के बाद दूसरा अमल शुरू हो जाता जिन आमाल से इज्तिमाई ज़िंदगी बनेगी वह मुक़ाबले में है। उन आमाल के जो ज़ाती ज़िंदगी बनाते हैं उसके लिए कमाई का ख़ूब मुक़ाबला कराया गया है अगर तुमको इबादत व अख़्लाक़ वाली मेहनत के लिए कमाइयों को छोड़ना आ जाए, अपने नफ़्स से हर एक मुक़ाबला करे, गर्मी व कहत की शिद्दत, फ़क्र की ज़ियादती रूकने को कहती थी, मुनाफ़िक़ीन कहते थे कि रूम पर हाथ डालना हंसी खेल नहीं है, सब मर जाएंगे इस सबको बावजूद सहाबा किराम निकले हुज़ूर सल्ल० ने मस्जिद को बाज़ार के मुक़ाबले में खड़ा कर दिया कि हुज़ूर सल्ल० पहले बाज़ार की किसी चीज़ का नफ़ा बताते थे फिर उससे ज़्यादा नफ़ा मस्जिद के किसी अमल में बताते थे और जो बाज़ार के हक़ में पहले ही वोट दे दे तो उसने तो इस क़िस्म की सारी हदीसों का ज़िक्र कर दिया। नमाज़ को आने वाला ताजिर कहते है कि तुमने नमाज़ के बाद मुझसे मस्जिद में रूकने को क्यों कहा, बाज़ारी हूं मस्जिद का नहीं हूं अगर ज़्यादा पीछे पड़ोगे तो नमाज़ को भी न आएंगे, इतने में हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए, उन्होंने सलाम किया, हुज़ूर सल्ल० ने एराज़ किया, जवाब न दिया, उन्होंने कहा कि आप नाराज़ क्यों हैं ? तूझे दस अच्छे लगते या एक ? उसने कहा, हुज़ूर सल्ल० मैं समझ गया, मैं तो चला, यानी उनके मस्जिद में आते ही वह दस अपने ऊंटों को संभालने चले गए थे उनको भी दस का अज्र मिला, हुज़ूर सल्ल० को भी। आदमी मिल गए पब्लीकी तौर पर इस मस्जिद में इबादत पर मेहनत करना और मुल्क का इबादत की तरफ़ फ़ेरना अली रज़ि०,

हसन रज़ि० तक के खलीफ़ा ने इबादत सामने रखकर ज़िंदगी चलाई थी, आज के मुल्क व माल के कुत्ते यों कहते हैं फ़लां को सियासत आती थी और फ़लां को नहीं अरे इनका ज़ौक और था और तुम्हारी सियासत और है इनकी बुनियाद यह थी कि अल्लाह का हुक्म पूरा करना है मुल्क रहे या नहीं साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने क़ादसिया के फ़त्ह के बाद कहा बद्र की इज़्ज़त व बड़ाई मंसूस है वरना मैं कहता कि क़ादसिया वाले बद्र से अफ़ज़ल हैं क्योंकि इनमें से किसी के दिल में भी दुनिया न थी, सिर्फ तीन के बारे में शुब्हा था वह भी दुरूस्त निकले, किसी ने माल न छिपाया। हज़रत जरीर बजली रज़ि० मोतियों के ताजिर थे उन्होंने जितने मोती किसरा के हाथे बेचे थे उसकी ख़बर उनको ही थी और लोग साज़ो सामान लूटने में लगे, यह जाकर उस संदूची को लेकर आए और टाट पहने हुए थे ज़ुबान से कहते जा रहे थे कि तक़्वा न होता तो संदूची तेरी किसी को ख़बर न होने देता, उस ख़ज़ाने की क़ीमत सारे माल ग़नीमत से ज़्यादा थी सबने अपने हिस्से क़ादसिया मदीना भेज दिए कि वहां वाले भी देख लें कि किस माल व दौलत में लगकर किसरा हलाक हुआ। यह सारा ख़ज़ाना मदीना में आकर मस्जिद के सहेन में डाल दिया गया रात को हज़रत उमर रज़ि० बिन औफ़ ने नमाज़ पढ़ते हुए पहरेदारी की, सुबह को सूरज की किरनों ने उस साज़ो सामान में जगमग पैदा की तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ख़ुदा की क़सम इस माल को भेजने वाले मुत्तिक़ी व अख़्लाक़ वाले थे। लोगों ने कहा, आप ऐसे बने तो लोग ऐसे बने, उमर रज़ि० ने कहा, इस पर छत न आने दूंगा, यानी इसको बैतुलमाल में जमा न करूंगा और ऐसे वैसे ही तक़्सीम कर दूंगा, इबादत को मैदान मेहनत बना दें, इसके मुताबिक़ ध्यान, यक़ीन, माहौल बना दें, माहौल जानों से बनता है। मस्जिदें कितनी अच्छी बना दो उससे माहौल न बनेगा, बल्कि टूटी फूटी मस्जिद में ज़िक्र, ईमान, इल्म के हलके हों, नमाज़ तिलावत की

कसरत हो तो यह इबादत का माहौल है, हर चीज़ अपने माहौल में चलती है, मछली को जलने के माहौल में डाल दोगे तो मर जाएगी। ख़ज़ानों के माहौल में बाग़ उजड़ जाएंगे, ऐसे ही चीज़ों के माहौल में इबादत जल जाती है, इबादत को लाज़िम पकड़ लें, हमारा किसी तरफ़ झुकाव न रहे, सिर्फ़ एक ही तरफ़ झुकना है आज ग़रीब माल वालों के सामने और महकूम हुक्काम के सामने झुकते है, लेकिन इन दोनों झुकनों से इबादत की जान चली जाती है। हज़रत अहमद बिन हम्बल रह० हुकूमत के सामने न झुके तो हुकूमत उनके सामने झुकी लेकिन उन्होंने किसी वक़्त भी हुकूमत से फ़ायदा न लिया, ख़ुलफ़ा तक के सामने भी मुसलमान न झुकते थे, ऐ शख़्स ने आकर कहा, ओ उस्मान, मेरी हाजत है जिसको मैं ख़ुदा के सामने पेश कर चुका हूं अगर तूने पूरा कर दिया तो कहूंगा ख़ुदा ने ऐसा ही इरादा कर लिया और अगर तूने पूरा न किया तो तेरा शिकवा न करूंगा कि ख़ुदा ने तेरे दिल में डाला ही नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने हर क़िस्म के झुकने से मना फ़रमा दिया, अहमद बिन हम्बल रह० को मुअतसम बा अल्लाह ने तक्लीफ़ें दीं या मुअतसम गया तो वासिक़ बा अल्लाह ने कहा अहमद ख़ज़ाई और अहमद बिन हम्बल रह० की तक्लीफ़ें ग़लत हैं और वासिक़ ने देखा कि साबिक़ बादशाह के मुअतमदीन में से एक को ऐसा मर्ज़ हुआ कि आग हर वक़्त इधर-उधर दहेकती, आख़िर उसी में जलकर मरा, दूसरे को टुकड़े करके ख़त्म किया गया तो फिर वासिक़ बा अल्लाह इनके सामने झुका, लेकिन हज़रत इमाम अहमद रह० किसी हाल में इस दुनिया की तरफ़ न झुके, चाहे यह दुनिया सख़्ती के रंग में थी या नर्मी व ख़िदमत के रंग में। इनको बादशाह ने 15 दिन तक अपना मेहमान बनाया तो इसका खाना खाया कि वह हराम माल से था, न अपना खाया कि बादशाह की मेहमानी के ख़िलाफ़ था, आख़िर पंद्रहवें दिन साहबज़ादे अब्दुल्लाह ने बादशाह से कहा कि इजाज़त दे दो वरना मर जाएंगे, इनके बेटे हुकूमत से लेते थे

लेकिन यह इस बेटे के हां से न खाते थे, यहां तक कि इनकी लड़की इस बेटे के तन्दूर से रोटी पका लाई तो उसे न खाया। हुकूमत का माल सूअर से ज़्यादा हराम है कि पहले तो हराम वालों से लिया गया है फिर मज़ीद हराम नया आ गया, शायद कमी इबादत में जान पड़ गई तो फिर देखना इबादत कैसे रंग लाती है फिर अख़्लाक़ से इस्लाम कैसे फैलता है, इस्लाम तलवार से नहीं अख़्लाक़ से फैला है जो इबादत की मेहनत को इसके लिए नक़ल व हरकत को असल काम बना लें, बचा–कूचा वक़्त कमाने में लगा दें, मुल्क व माल से बे–नियाज़ हों, आख़िरत सामने हो, इबादत में जान डलवाकर अख़्लाक़ दुरुस्त कर लें तो उनके लिए तर्तीब आलम बदलेगी। इबादत को मक़्सद ज़िंदगी बना लोगे तो अख़्लाक़ मिल सकेंगे वरना नहीं सहाबा रज़ि० वाली तक़्सीम कर लो, तिहाई माल व जान बेरूनी नक़ल व हरकत, तिहाई माल जान मक़ामी मेहनत, तिहाई माल व जान कमाने खाने में या इससे कम कर लो। अपनी तर्तीब बदल लोगे तो आलम की तर्तीब बदलेगी, जानवरों वाली ज़िंदगी से तो सिफ़ात मिटेंगी अल्लाह वाली सिफ़ात से तो इंसानी कमालात उभरते हैं, जमाअतें मुल्कों में जा चुकी हैं, अब सारे इत्मिनान में आ गए, हाब्शा, तुर्की, अफ़ग़ानिस्तान और इंडोनेशिया के लिए जमाअतें जल्द से जल्द बननी चाहिए, किसी एक जमाअत में चले जाओ।

उमूमी बयान न० 5

हुस्न की एक अदा छिपना भी है

सनीचर, फ़जर के बाद, 30, मई, 1964 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

इंसान की मेहनत से माहौल बनता है और माहौल के एतबार से आमाल और आमाल के एतबार से हालात बनते हैं, हालात और आमाल का जोड़ा है, चीज़ों और हालात को नहीं जोड़ा। सबके हालात को इनके आमाल के साथ जोड़ा है जैसे बोलने का ज़ुबान से, सुनने का कान से, देखने का आंख से ताल्लुक़ है चीज़ों से नहीं है, आमाल के एतबार से हालात ख़ुदा की तरफ़ से आते हैं, चीज़ों से हटकर आमाल दुरुस्त कर लिए तो हालात ख़ुदा अच्छा कर देंगे और अगर करोड़ों में इंसान अपने आमाल ख़राब कर बैठे तो हालात भी ख़ुदा ख़राब कर देंगे। अल्लाह तआला मक्का मदीना से दिखाने को बुला रहे हैं कि उस ज़माने को सोचो जब यहां मक्का में कोई इंसान, कोई सामान, कोई पेड़, कोई राहत व खाने का सामान नहीं था, हज़रत इब्राहीम अलै० हज़रत हजरा व हज़रत इस्माइल अलै० ने वे आमाल किए जो ख़ुदा को पसंद थे तो इस घराने के आमाल पर इस जगह को मरजआ आलम बना दिया। जहां एक घर के खाने व रहने का नज़्म न था अब वहां लाखों आते हैं और खाने व रहने का सामान पाते हैं, हज़रत इब्राहीम अलै० हज़रत इस्माइल अलै० की इज़्ज़त बग़ैर मुल्क व माल के सिर्फ़ आमाल से ख़ुदा ने बना दी कि उनकी ही नक़ल हज बन गया, मैलीन अख़सारीन में मसआी में भागना व चलना हज़रत हाजरा की नक़ल है। हज़ारों साल से इन तीनों के अलग–अलग आमाल की नक़ल हरकत होती चली आ रही है, फिर ख़ुदा ने मदीना मुनव्वरा में बुलाया कि तसव्वुर करो कि

हज़रत अबूबक्र रज़ि० व हुज़ूर सल्ल० रात की अंधेरी में मक्का से चले। क़दम–क़दम पर जान का ख़तरा था सर के सौ ऊंट लग चुके थे, ख़ौफ़ व ख़तरे में यहां तशरीफ़ लाए, लेकिन खाने–पीने, मकान व बाग़ों के नक़्शे क़ायम न किए, अलबत्ता दीन के वजूद व अदम के लिए 10 साल में बे–हद तक्लीफ़ें उठाई,

हम लोग अपने एक घर की भूख की तक्लीफ़ देख नहीं सकते हैं, हुज़ूर सल्ल० के पास अरब की 10 औरतें थीं, आप बजाए इसके कि उनके खाने, लिबास, मकान, राहत का फ़िक्र करते, उनसे भी तक्लीफ़ों में घुसने को कहते हैं। एक घर को कुरबान करना तो रिवाज है, हुज़ूर सल्ल० 10 घर कुरबान किए, हुज़ूर सल्ल० के मकानात बहुत छोटे–छोटे थे, हज़रत आइशा से हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत का ख़्याल ख़ुदा और लोग भी करते, हज़रत आइशा बारी वाले दिन में ख़ुदा वही ख़ूब उतारते और लोग उस दिन तोहफ़े देते, लेकिन दस साल में किसी घर में दिया न जला, कभी दस के दस घरों में फ़ाक़ा हो जाता। हज़रत आइशा महबूबा के हुजरे में सिर्फ़ चार क़ब्रों की जगह थी, तीन हो चुकी हैं, सिर्फ़ एक क़ब्र ईसा अलै० के लिए बाक़ी है तक्लीफ़ें हर क़िस्म की आपने ख़ूब उठाई, अगर दूसरी औरतों की तरह अज़्वाजे मुताहरात ने मुतालबा किया कि हमारे नान व नफ़क़े का इंतिज़ाम करो तो जो इनको मिलता है उसे हुज़ूर सल्ल० चंद दिनों में इंसानों व मुसलमानों की हाजतों में लगवा देते थे। यहां तक हुज़ूर सल्ल० क़ासिद भेजकर सब घरों से मंगवा लिया करते थे, उन दस बीवियों ने आपस में तै किया कि हमारे खाने व लिबास का हुज़ूर सल्ल० पर हक़ है, लिहाज़ा हुज़ूर सल्ल० से तै कर लो कि हम अच्छे मकान व लिबास नहीं चाहती हैं, लेकिन रूखी–सूखी तो मिलती रहे, यह क़िस्सा दो बार पेश आया, हुज़ूर सल्ल० मकान में थे, हज़रत अबूबक्र ने इजाज़त मांगी न मिली फ़िर हज़रत उमर रज़ि० ने इजाज़त मांगी तो इनको भी न मिली थोड़ी देर में हुज़ूर सल्ल० ने दोनों को इजाज़त दे दी, देखा कि सारी अज़्वाजे जमा

हैं। हुज़ूर सल्ल० साकत व हज़ीं हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने इस फ़िज़ा को तोड़ने के लिए बात शुरू की कि हम मक्का में बादशाह थे, औरत को किसी बात में बोलने का हक़ नहीं था, उससे किसी बात में पूछने का सवाल ही न था, मदीना में आकर तो ये शेर हो गयीं हैं, इनके इशारे पर चलो तो ख़ुश हैं मेरी बीवी ने भी मुझसे नान नुफ़्क़ा का मुतालबा कर लिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया अरे मुझसे भी मुतालबा करने यह आई हैं और आप मुस्कारा दिए। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने जूती लेकर (हज़रत) आइशा रज़ि० को और हज़रत उमर रज़ि० (हज़रत) हफ़्सा रज़ि० को ख़ूब पीटा, हुज़ूर सल्ल० ख़ुश हो गए कि जब ज़रूरत पड़े तो हमसे कहा करो हुज़ूर सल्ल० से न कहा करो, न मालूम कितने अरमानों के ख़ून से इस्लामी ज़िंदगी बनी है, फिर दो तीन साल बाद नान–नुफ़्क़ा के मुतालबा की बात दोबारा चली, हुज़ूर सल्ल० से कहा तो हुज़ूर सल्ल० ने क़सम ख़ाली एक महीने जुदाई की और मुशरबा में जाकर बैठ गए। यह बात मशहूर हो गई कि हुज़ूर सल्ल० ने बीवियों को तलाक़ दे दी जो सुनता, सारे काम छोड़–छाड़ मस्जिद नुबूवी में आकर रोने लग जाता, उतने में एक सहाबी ने दरवाज़ा खटखटाकर कहा ऐ अमर रज़ि० जल्दी निकल सख़्त हादसा पेश आ गया है। उमर रज़ि० ने कहा क्या ग़स्सान ने हमला कर दिया है ? सहाबी रज़ि० ने कहा इससे भी सख़्त मरहला आ गया है कि हुज़ूर सल्ल० ने सारी बीवियों को तलाक दे दी, हुज़ूर सल्ल० को ग़म था कि मेरी बीवियों में तलब दुनिया आ गई तो दूसरों का क्या हाल होगा। सहाबा को इस बात का ग़म व फ़िक्र हुआ कि जब इन बरगिज़दा दस औरतों के साथ हुज़ूर सल्ल० का निबा न हो सका तो कहीं हुज़ूर सल्ल० को ख़ुदा उठा न लें, हज़रत उमर रज़ि० ने जाकर हज़रत हफ़्सा रज़ि० से कहा हुज़ूर सल्ल० ने तलाक़ दे दी ? हज़रत हफ़्सा ने कहा, नहीं और रो पड़ीं, हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, पहले ही कहा करता था कि आइशा लाडली की नक़ल न किया कर,

मस्जिद में गए सबको रोता देखकर कि हज़रत उमर रज़ि० का दिल भी रोने को चाहे, लेकिन बग़ैर तह्क़ीक़ रोने को मुनासिब न समझा, इसके पहले हज़रत बिलाल बिन रबाहा रज़ि० के ज़रिए से हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त मंगवाई थी लेकिन न मिली थी। अब दोबारा गए और यों कहा कि हुज़ूर सल्ल० शायद समझ रहे हैं कि मैं हफ़्सा रज़ि० की हिमायत करूंगा, अगर हुज़ूर सल्ल० हुक्म दें तो हफ़्सा का सर काटकर साथ ले आऊं, इसको सुनकर हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त दे दी। हज़रत उमर रज़ि० ने एक दम जाकर तलाक़ का सवाल न किया, बल्कि यों कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप इतने तक्लीफ़ में कि बोरिए के निशान आप पर, घर में चटाई और चन्द मुट्ठी जो और यह यहूद व नसारा जहन्नमी मज़ों में ? हुज़ूर सल्ल० ने एक दम बैठकर कहा कि अरे उमर रज़ि० अभी तक तू चीज़ों के चक्कर में है ! जिनको यहां मिलेगा इनको मर्कज़ न मिलेगा एक महीना सख़्त तक्लीफ़ का गुज़ार तो आयत तखइयार उतरी, जिसे लेकर हुज़ूर सल्ल० सबसे पहले हज़रत आइशा के यहां गए, ऐ अज़वाज चाहो तो हुज़ूर सल्ल० के साथ रहकर तक्लीफ़ों को बरदाश्त करके आला जन्नत ले लो, या हुज़ूर सल्ल० से तलाक़ लेकर यहां के मज़े ले लो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया अरी आइशा एक बात कहूंगा जवाब में जल्दी न करना, मां बाप से पूछ लेना और यह आयत पढ़ दी। हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा इस में मां–बाप से क्या पूछने की क्या बात है, हम तो हर क़ीमत पर आप को लेने के लिए तैयार हैं, हमेशा के फ़ाक़ों और तक्लीफ़ों के लिए तैयार हूं हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्ल० की कोई बीवी मेरी राय के बारे में पूछे तो उसे बताना, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि कोई पूछेगी तो उसे बता दूंगा, इसके बाद से कभी उन औरतों ने राहत व सामान की तरफ़ मुतावज्जोह न की। चाहे ज़माने में लोगों को कितना मकान व माल दौलत समेटता हुआ देख लिया हो। बोरियों और कच्चे मकानों ही में सारी ज़िंदगी गुज़ार दी, मदीना वाले वैसे मकान बना देंगे जैसे

बाहर के देखेंगे और बाहर वाले मदीना जैसे मकान बना देंगे। अल्लाह को जो दोस्त बनता है उसे तक्लीफ़ उठानी पड़ती है, हुज़ूर सल्ल० को हुज़ूर सल्ल० के दोस्तों को मुशक्क़त व तक्लीफ़ उठानी पड़ती थी। हज़रत अबूबक्र चले और हज़रत उमर रज़ि० बाद में इस मस्जिद में आकर बैठे दोनों के घरो में तीन दिन के फ़ाक़े थे, इतने में हुज़ूर सल्ल० ने आकर पूछा कि दोनों क्यों उस वक़्त आए हो, सख़्त भूख ने घर से बाहर निकाल दिया, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया मैं भी इसी वजह से घर से बाहर निकला हूं तीनों चले, एक क़िस्से में अबुल हैशम रज़ि०, दूसरे क़िस्से में हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० के मकान पर गए, पहले खजूर आई तीन क़िस्म की, फिर गोश्त व रोटी, खाने लगे तो हुज़ूर सल्ल० ने गोश्त का एक टुकड़ा रोटी में लपेटकर हज़रत फ़ातिमा के घर भिजवाया, खाकर कहा एक दस्तरख़्वान पर पांच नेमतें, बसर, रतब, तमर, गोश्त, रोटी इनके बारे सवाल होगा कि दीन के लिए तुमने इन नेमतों के इस्तेमाल के बाद क्या किया हम होते तो उनको बहुत थोड़ा करके बयान करते दस–बीस क़िस्म की खजूरें खाने को हम यों कहेंगे हमने कुछ खाया नहीं, बस खजूर ही खाई। हुज़ूर सल्ल० ने एक ही क़िस्म की खजूर की तीन क़िस्मों को अलग–अलग शुमार किया, हज़रत उमर रज़ि० रो पड़े कि तीन दिन बाद खाने को मिले और इस पर भी हमसे क़ियामत को पूछ होगी, ग़ौर से सुन लो ! दीन कभी हुकूमत से नहीं चला है और न चलेगा, हुकूमत से दीन की मिट्टी पलीद होती है दीन हमेशा तक्लीफ़ों से चलता है। दीन सिर्फ़ उनसे चलेगा जो अलग–अलग क़िस्म की तक्लीफ़ें बरदाश्त करके माहौल बना लें, हुज़ूर सल्ल० और सहाबा को तक्लीफ़ वाले माहौल में ही दीन दिया गया था, आपका तरीक़ा राहतों में चलने का नहीं है बल्कि तक्लीफ़ों में चलने का है, सहाबा रज़ि० ने घरवाली और कारोबार वाली सारी तर्तीब छोड़ दी। इस मौसम में घर की मरम्मत करनी है, इस मौक़े पर बच्चे की शादी करनी है, उस वक़्त ज़मीन में खुदाई करनी है

ऐसे मौक़ों को इंसान छोड़ा नहीं करता है। लेकिन दीन के लिए यह सारे मौक़े सहाबा रज़ि० ने छोड़े, दीन का माहौल बनता ही उसी वक़्त है जबकि राहतों से ज़्यादा तक्लीफ़ मरग़ूब बन जाएं, हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी में सिर्फ़ तक्लीफ़ें ही हैं, इसलिए राहत वाली हालात का भी बनना ऐसा है जैसे तहारत में तयम्मुम, क़ालिन का इस्तेमाल अगर हमारी कमज़ोरी की वजह से बे-दीनी नहीं है तो यह हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा भी न कहलाएगा, पांच सालन एक दस्तख्वान पर खाना बे-दीनी नहीं है तो यह भी नहीं सकते कि यह हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा है। हर क़िस्म की तक्लीफ़ों को सहने की मश्क़ करो, गर्मी सर्दी को दोस्तों, रिश्तेदारों के तअन तशनी, बीवियों के नख़रे बरदाश्त कर सको, एक है अपने 24 घंटों को हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ों पर ले आना, एक है चौबीस घंटों में कुछ वक़्त हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर गुज़ार लेना, हमने अपने तरज़ ज़िंदगी में वक़्त निकाल कर नमाज़ पढ़ ली। हुज़ूर सल्ल० की अपनी शादी में या किसी साहबज़ादी की शादी में न तारीख़ चढ़ी न बारात गई, हज़रत ख़दीजा रज़ि० से ब्याह भी ऐसा ही हो गया वह मर गईं किसी ने कहा शादी न करेंगे ? करूंगा औरत ने कहा, कुंवारी से या बेवा से ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, दोनों से ही, औरत ने कहा, कुंवारी तो बिन्त अबी बक्र है और बेवा सौदा बिन्त ज़मा है दोनों ही से बात हुई तो दोनो तैयार (हज़रत) आइशा मदीना में पेड़ पर झूला झूल रही थीं, मां ने मुंह पकड़कर मुंह धुलाया। दोपट्टे से मुंह साफ़ करके दोपट्टा उढ़ाकर हुजरे में दाख़िल करके कहा, हुज़ूर सल्ल० अहलिया मुबारक हो, सिर्फ़ एक बीवी के वलीमे में गोश्त रोटी होती है, बाक़ी 9, 10 बीवियों के वलीमों में तो खजूर ही हैं हमने 9, 10 वलीमों को छोड़कर एक मर्तबा वाले वलीमे को इख़्तियार ऐसा किया बाक़ी 9 वलीमों को छोड़कर सिर्फ़ एक मर्तबा वाले वलीमे को इख़्तियार किया कि बाक़ी 9 वलीमों को इख़्तियार करना सबके ताज्जुब की बात बन गई है चाहे ऐन सुन्नत है ज़ैनब के निकाह में गोश्त पानी में उबला,

बे–छने जो के आटे की रोटी, दस–दस करके सहाबा रज़ि० आए और खाकर चले जाते, उस हुजरे में एक कोने में नई नवेली दुल्हन (हज़रत) ज़ैनब रज़ि० बैठी हुई थीं, कुछ सहाबा वहीं बैठकर बातचीत शुरू कर दी। हुज़ूर सल्ल० वहां से इस ख़्याल में उठे कि शायद यह भी उठ जाएंगे लेकिन न उठे, हुज़ूर सल्ल० वापस आकर दोबारा देखकर वापस चले गए, इससे हुज़ूर सल्ल० को अज़ियत पहुंची ख़ुदा ने आयत भी उतारी, यानी जिस वलीमे में गोश्त रोटी हुई उसमें हुज़ूर सल्ल० को सहाबा रज़ि० की तरफ़ से अज़ियत पहुंची, अब हमने इस गोश्त रोटी को सुन्नत पकड़कर सारे वह काम कर डाले जिनसे हुज़ूर सल्ल० ने मना किया होगा और चूंकि ख़ास खाना है इस वजह से इस इत्तिला के लिए पहले एक कागज़ का कार्ड छपना था, अब इसके साथ दूसरा भी लगा दिया, यानी हुज़ूर सल्ल० के दस वलीमों में कुल जितना ख़र्च हुआ होगा हम उससे ज़्यादा एक वलीमे के दावती कार्डों में ख़र्च कर देते हैं, अरे यह मना और हुज़ूर सल्ल० की सुन्नत, हुज़ूर सल्ल० का दीन बलाओ के चोखे पर तक्लीफ़ों के हंडिया में पका है। मुसीबतों की गिठाओ में परवान चढ़ा था, यूरोप तुम्हें नख़रे करने वाली राहत वाली बना रहे है, हुज़ूर सल्ल० ने औरतों को मर्दों से ज़्यादा आगे भेजा मुजाहेदे में कर दिया था, औरतें फ़ाक़ा, सौम, मुजाहेदा व मुशक़्क़त में मर्दों की दोश–बदोश थीं, इनको जितना मिला दूसरों पर लगा दिया अपनी जान पर तक्लीफ़ उठाना, ज़िंदगी सीधी सादी बनाना, जो दीन की मेहनत करे, तालीम व दावत में लगे, घर में फ़ाके व तक्लीफ़ ले आए, इस पर ऐसे ही नेमतें बरसेंगी जैसे आज की मदीना वाले मज़े ले रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने सारी ज़िंदगी 23 साल तक्लीफ़ों में गुज़ारे, हज़रत उस्मान रज़ि० की शुरू की ज़िंदगी राहत वाली है तो ख़ुदा ने ख़िलाफ़त के बाद तक्लीफ़ को डाल दिया, भूख के मौक़ों पर हज़रत उस्मान रज़ि० खाने लेकर पहुंचा करते थे। सिर्फ़ तक्लीफ़ों से ही हुज़ूर सल्ल० के रास्ते की तरक़्क़ियां मिलती हैं, तक्लीफ़ों से घबराने

वाले को यह तरक़्क़ी नहीं मिलती है, तो वरम के रान तक चढ़ जाने के लिए तैयार है वही लम्बी नमाज़ पढ़ सकेगा, तक्लीफ़ों की मश्क करना इस काम की मुस्तिकल मश्क है, खुदा ने रोज़ा दिया है ताकि भूख प्यास की ज़कात में दूसरों पर लगाने की तक्लीफ़, बरदाश्त कर लें, रोज़े में जहां बीवी का तक़ाज़ा दबाया वह नींद के वक़्त में तक़द्दुम ताख़ीर भी बरदाश्त करो। लोगों को मांगने से मना कर दिया तो माल वालों से कहा गया कि फ़क्र हो तो उस वक़्त मागेंगे जब बिल्कुल खाने को न रहेगा इस पर तुम तजस्सुस फ़र्ज़ है, इस तजस्सुस के लिए तुम अचानक इबादत या तगय्यूरात या ख़ाली ज़ियारत को बीवी के साथ जा पहुंचो, इससे घर का हाल मालूम हो जाएगा कि घर में छः लड़कियां जवान हैं, शादी तो क्या खाने के पैसे भी नहीं है, ज़कात का माल तेरा नहीं है ख़ुदा का है, आज ज़कात का मस्‌अला बिगड़ गया है, बरकत से ख़ाली है फ़ुक़रा मांगने पर उतर आए हैं, हालांकि अख़्फ़ाए हाल का इनको हुक्म था, अमीर नख़रे पर आ गए हैं, हालांकि इन पर तजस्सुस लाज़िम था, अब ज़कात से न माल की तहारत से न बरकत है। तब्लीग़ी में तक्लीफ़ें बरदाश्त करने की मश्क़ है, आम लोगों से इख़्तिलात नींद व खाने की तर्तीब को तोड़ना, अपने पसंदीदा को हुज़ूर सल्ल० की पसंदीदा पर कुरबान करो, बिस्तर से उठाओ व सहाबा रज़ि० तो हुज़ूर सल्ल० की चाह को अपनी चाह पर मुक़द्दम कर लेते थे, पहले लफ़्ज़ बैअत से इस्लाम में दाख़िला होता था बैअत से यह ज़हन बनता था कि मुल्क माल व जान पर ख़ुदा का क़ब्ज़ा हो गया है, मैं इनका ज़ैर ख़रीदार गुलाम हूं। फ़त्ह मक्का के मौक़े पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बाप ने बैअत को हाथ बढ़ाया, हज़रत अबूबक्र के लिए ख़ुशी का मौक़ा था कि बाप जन्नती बन रहा है लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० इस ख़्याल से रो पड़े कि हुज़ूर सल्ल० के चचा मुसलमान होते तो हुज़ूर सल्ल० को ज़्यादा ख़ुशी होती। इन्हीं से सहाबा रज़ि० कामियाबी की चोटी पर पहुंचे, हमारी चाह है कि यों माल व दौलत हो,

कारोबार अच्छा हो, हुज़ूर सल्ल० की चाह है कि मैं क़त्ल हूं, हुज़ूर सल्ल० कुरबान होना चाहते थे فاترك ما اريد لما يريد

हुज़ूर सल्ल० को नमाज़, रोज़ा, अल्लाह की राह में निकलकर तक्लीफ़ें बरदाश्त करना पसंद था, तो इनको इख़्तियार करे। फिर यों कहें ऐ खुदा ! तूने मुझे अपने करम से मनी बनाया, मनी से जिस्म बनाया, हर जगह मेरी हिफ़ाज़त तूने की, मुझे इंसान बनाया है बस तेरा शुक्र करता हूं कि अब मैं हुज़ूर सल्ल० से मुहब्बत तो इख़्तियार नहीं है, खुदा दिल में मुहब्बत डालते हैं, अरे तुम्हारे इख़्तियार में तालीम का हलक़ा, मस्जिद की ख़िदमत, मस्जिद में झाड़ू देना, अपने आराम राहत व घर कारोबार को छोड़ना अस्बाब मेहनत मुहम्मदी हैं इन अस्बाब को इख़्तियार करके कहो कि ऐ ख़ुदा ! हमारे हर तरफ़ से अपनी और हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ फेर दे, तक्लीफ़ों की मुहब्बत दिलों में उतार दे, बग़ैर तक्लीफ़ों की मुहब्बत के कमाल हरगिज़ नहीं पा सकते है, हज़रत ख़ालिद का कहना है कि सर्दी की रात अंधेरी बारिश वाली हो, सिर्फ़ डाल से बारिश के बचाओ के नज़्म में सुबह को क़त्ल हो जाऊं। ये तक्लीफ़ वाली रात उससे ज़्यादा मज़े वाली और पसन्द है कि पहले नम्बर की हसीन औरत मिले, आजकल मुक़ाबला हुस्न में जिसे पहले नम्बर हुस्न का देते हैं लेकिन हुस्न की एक अदा छिपना भी है उससे तू महरूम है। यह औरत कुत्तिया की तरह बे–हया है उससे मिलने पर मुझे लड़के की बशारत मिले, एक दफ़ा कहा कि मैं आज जानवर की तरह मर रहा हूं मेरी रूह किसी ज़ख़्म से नहीं निकल रही बल्कि नाक से निकल रही है, ख़ुदा ना–मर्दों, बुज़दिलों की नींद ख़राब कर दे, तक्लीफ़ की रग़बत के बग़ैर कमाल नहीं मिलता है, जब तक इस्लाम वाली बातों में कमाल न होगा, उस वक़्त तक कुफ़्र व नसारा व यहूदी की कमाल वाले तैश की ज़िंदगी न तोड़ेंगे काफ़िरों की तरक़्क़ी चीज़ों के कमाल में हैं, हमारी तरक़्क़ी आमाल के कमाल में हैं। आमाल में कमाल आएगा तो उससे चीज़ों को कमाल ज़वाल की तरफ़ चलेगा, मुस्लिम

वे क़सम है जो इंसानियत व अख़्लाक़ व इबादात, मुजाहेदा कुरबानी में कमाल के लिए بعثت لا تمم مكارم الاخلاق अब मेहनत करके चीज़ों का माहौल भी बन सकता है और आमाल का भी, आदमी तक्लीफ़ों की मश्क़ के लिए तैयार हो, आफ़ियत ख़ुदा से मांगता रहे, तक्लीफ़ों से न घबराए, खाना-खाना कमाल नहीं है, खाने मकान लिबास की तक्लीफ़ें उठाना कमाल है, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने ये सारी तक्लीफ़ें उठाई, रातों को तक्लीफ़ें उठाना कमाल है, हज़रत इब्ने औफ़ को कहा है कि सारी कामियाबियां और कमालात मुजाहेदा मुशक़्क़त व तहम्मुल मुसीबत में पाई हैं। सारी ना-कामियां तानीश व राहत में हैं, सारी हुकूमतें तैश व राहत के वजूद से ज़वाल पज़ीर होती हैं। गौरी से हार के बाद क़सम खा ली थी कि ज़मीन पर ही लेटूंगा, सिर्फ़ ग़ुस्ल जनाबत करूंगा और कोई ग़ुस्ल न करूंगा, यहां तक कि इस जगह इज़्ज़त से न पहुंच जाऊं जहां से ज़िल्लत से निकले हैं तक्लीफ़ उठाने से ही लोग ऊपर आते हैं, लखनऊ में अंग्रेज़ घुसे तो अब कह रहे थे कि मुझे यह क़रीब की रखी हुई जूती उठा दे ताकि उसे पहन कर मैं भी भाग जाऊं, लेकिन राहत का ऐसा आदी कि ख़ुद उठकर जूती न पहनी गई। ख़ुद्दाम सारे छोड़कर भाग चुके थे, आख़िर उसे अंग्रेज़ों ने उसे गिरफ़्तार कर लिया, हमेशा उसे ही अलू व बुलन्दी मिलती है जो तक्लीफ़ो में ख़ुद को डाले, वरना राहते और सहूलतें तो कुछ हाथ में होता है उसे भी छोड़ देती हैं। तुमको ख़ुदा ने मदीना दिखा दिया, जिसकी उस मस्जिद की पहली सफ़ फ़जर में भूख की वजह से गिर गई थी, अब तक ख़ुदा उन नेमतों पर तक्लीफ़ें बरसा रहा है जहां तक्लीफ़ होगी वहां बाद में राहत आएगी, हज़रत इस्माइल अलै० की तक्लीफ़ से क़ियामत तक के लिए ज़म-ज़म मिल गया, जो ख़ुदा के लिए तक्लीफ़ उठाएगा वह चमकेगा, इसके लिए चार महीने इब्तिदाई मश्क़ है एक बीमारी के लिए लोग 6, 6 महीने अस्पतालों में तक्लीफ़ों से गुज़ारते हैं तो क्या रूहानी बीमारियों के लिए हम 4, 6 महीने की तक्लीफ़ें बरदाश्त

नहीं कर सकते हैं। हमारा हर अज़ू बीमार है, क्योंकि हर अज़ू से आमाल मुहम्मदी सल्ल० के ख़िलाफ़ हो रहा है, तक्लीफ़ें उठाओ, दुनिया क़दमों में झुकेगी, यहां इसलिए बुलाया था कि यहां वालों की तक्लीफ़ों को याद करो और सुनो और घरों में जाकर तक्लीफ़ पर खुद को लाओ लेकिन मदीना में आकर आंख तुमको आज कोई तक्लीफ़ न दिखाएगी, अलबत्ता कान हदीसों से हुज़ूर सल्ल० की तक्लीफ़ें सुना सकते हैं। वरना जाहिल लोग तो यह ही समझते होंगे कि यह मस्जिद नुबूवी इस तरह हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में सामानों से भरी हुई थी, हुज़ूर सल्ल० का मकान आज मदीना के किसी मकान से याद नहीं आएगा, मोटर पर बैठकर खंदक़ की ज़ियारत करने गए ख़ूब नाश्ता करके वहां जाते हैं प्यास की शिद्दत में बोतले चढ़ा लीं, ख़ंदक़ का असली मंज़र क्या था ? इसका ज़रा तसव्वुर नहीं है اذبلغت القلوب الحناجر खौफ़, भूख, सर्दी, व क़िल्लत इस्ला का था। ऐसा ख़ौफ़नाक मंज़र न इससे पहले कभी हुआ न इसके बाद, यहां की सूरतें देखकर नुबूवी ज़िंदगी सामने नहीं आएगी, एक मां थोड़ी देर के दर्दज़ा उठाने से बच्चे पर कितने हुकूक़ बनवा लेती है, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने उम्मत के वजूद के लिए लगातार मौत तक तक्लीफ़ें उठाईं हैं हम इनका हक़ अदा करने से आजिज़ हैं, और तै करें कि ज़ुबान के चटख़ारे, नफ़्स की हौस की वजह से ज़िंदगी हुज़ूर सल्ल० वाली तोड़ेंगे, कुरबानी देंगे, फिर दारुद पढ़ेंगे कि ऐ खुदा ! इस कुरबानी के बाद भी हुज़ूर सल्ल० का हक़ अदा न कर सके, तो ही दरूद भेज। अब बाहर निकलो हुज़ूर सल्ल० नबियों के सरदार अलग–अलग क़िस्म की तक्लीफ़ें उठा चुके हैं, तुम कौन–से नवाब हो कि तक्लीफ़ तुम पर न आए, जो तक्लीफ़ों के लिए तैयार होगा वह कोई उज़्र न रखेगा।

उमूमी बयान न० 6

साइंस वाले चांद में मकान बनाने के लिए सऔी हैं

इतवार, फ़जर की नमाज़ के बाद, 31, मई, 1964 ई०

मेरे भाइयो और दोस्तो !

किसी लफ़्ज़ का हासिल करना थोड़ी सी मेहनत से मिल जाता है, औरत भी थोड़ी मेहनत से मिल जाएगी, अलबत्ता हक़ीक़त के हासिल करने के लिए लम्बी चौड़ी मेहनत की ज़रूरत है लफ़्ज़ ज़ुबान से जल्दी अदा हो जाता है, बच्चे से लफ़्ज़ कहलवाने के लिए शायद कुछ मेहनत मां–बाप की लगती हो। लफ़्ज़ की हक़ीक़त की सूरत कागज़ पर या किसी लकड़ी वग़ैरह पर ज़रा और मेहनत करने से हासिल हो जाएगी, लेकिन हक़ीक़त हासिल करने के लिए ख़ूब मेहनत करनी पड़ती है, मस्जिद नुबूवी की हक़ीक़त जान व माल के सही तरीक़े लगने से हासिल हो सकती है, मुल्क का लफ़्ज़ आसानी से कह लोगे, नक़्शा सारे मुल्कों का दो तीन रूपये में मिल जाएगा, लेकिन मुल्क के हासिल करने में कितना माल, कितना वक़्त लगेगा, कितनी लड़ाई होगी, बड़ी–मेहनत से एक एक मुल्क कली हक़ीक़त हासिल होगी, दुनिया में इस्तेमाल होने वाले हर लफ़्ज़ की कोई न कोई हक़ीक़त होती है लफ़्ज़ के बाद जितने फ़ायदे बयान किए जाएंगे वह इस लफ़्ज़ में न समझेंगे बल्कि इस चीज़ की हक़ीक़त में समझेंगे, सोने से मकान, मुल्की, मोटर मिल सकती है, यानी सोने की हक़ीक़त से ये सारे नफ़े मिल सकते हैं। लफ़्ज़ सोना किसी किसी को दोगे तो वह जवाब में मोटर का लफ़्ज़ ही देगा और सोने की सूरत हो, पीतल पर सोने का तमा

कर दिया जाए तो भी इससे सोने वाले मुनाफ़े न मिलेंगे जैसे दुनिया के तमाम अलफ़ाज़, बाग़, गेहूं, मोटर, सोने के हकाइक़ हैं जिनमें तमाम फ़ायदे पाएं जाएंगे। शेर के लफ़्ज़ का नफ़ा व नुक़्सान शेर की हक़ीक़त है, ऐसे ही खुदा की ज़ात से चलने वाले अलफ़ाज़ सच्चाई सदक़, इंसाफ़ ईमान तवक्कुल, तहारत अपनी-अपनी हक़ीकत रखते हैं, लफ़्ज़ और इसकी सूरत जल्दी मिल सकती है लेकिन हक़ाइक़ इनको ही मिलेंगे जो हाथ पांव मारकर मेहनत करेंगे, तमाम अलफ़ाज़ के हक़ाइक़ आरज़ी हैं। ख़ुदा और रसूल के अलफ़ाज़ दाइमी हैं, ईमान, मरने के बाद सारे मुग़ियात को देख लेने से ख़ूब बढ़ेगा, कुरआन वाले अलफ़ाज़ अल्लाह की तरफ़ से हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ आने वाले हदीसों वाले अलफ़ाज़ हक़ाइक़ रखते हैं। अगर हम लफ़्ज़ को ही हक़ीक़त क़रार दें, ज़ुबान से इताअत, ईमान, तवक्कुल के अलफ़ाज़ निकलें और इनको ही हक़ाइक़ क़रार दें तो मुनाफ़ा न मिलेगा, जो भैंसे के लफ़्ज़ को ही भैंसे मानेगा वह दूध लेने के लिए बाज़ार जाएगा, भैंस की तस्वीर से भी दूध लेने का ख़्याल न आएगा इस कहने को ही हक़ीक़त समझ लिया तो मुसीबत में कभी हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े की तरफ़ न आएगा, बोलेगा बद्र में सिर्फ़ दुआ व नमाज़ से फ़त्ह मिली। खंदक़ में बाहर से सारे अरब ज़िंदा हुए, अंदर से सारे यहूद मुक़ाबले पर आ गए तो हुज़ूर सल्ल० ने मस्जिदों में नमाज़ अदा की तो ख़ुदा ने वह हवा भेजी जो मदीना वालों को मीठी नींद सुला रही थी, लेकिन कुफ़्फ़ार पर सख़्त आंधी खेमें उखाड़ने वाली बन गई थी। इस बोलने को ही हक़ीक़त समझ लिया तो मुसीबत में यह कभी नमाज़ को न आएगा, जैसे बम व राकेट व जहाज़ की हक़ीक़त है, ऐसे ही नमाज़ की हक़ीक़त है, तमाम चीज़ों सोने चांदी, राकेट, वज़ीरों, हाकिमों, फ़ोजियों सब पर ग़ालिब आ जाएगी, सारे मस्अलों को ताल्लुक़ हक़ीक़त से होता है लफ़्ज़ व सूरत से नहीं, मेहनत ही से इंसान लफ़्ज़ की हक़ीक़त हासिल कर सकता है। कलिमा दिया गया कि मेहनत

करके इसकी हक़ीक़त हासिल करो और कहा गया कि इस कलिमे का वज़न सातों ज़मीन व आसमान से और इसके दर्मियान की सारी चीज़ों से ज़्यादा है। यानी जिस दिल में कलिमे की हक़ीक़त उतरेगी उससे आसमान व ज़मीन और दर्मियान की हर चीज़ दबेगी, अंबिया अलैहिस्सलाम का नमूना हैं, कलिमा की हक़ीक़त वाले हुज़ूर सल्ल० की उंगली का एक इशारा चांद के दो टुकड़े कर सकता है आज की साइंस वाले चांद में पहुंचे और वहां मकान बनाने के लिए सअी हैं। एक परवाज़ में चांद तक पहुंचना मुश्किल है इसलिए दर्मियान में बग़ैर सतून के इस्टेशन बनाएंगे, अब ख़ुदा इनकी साइंस को तोड़ देंगे, साइंस को टूटकर गिरना है ज़रूर। लेकिन इसके सर इसके टूटने का सेहरा बंधेगा जो कुरबानी अंबिया वाली दे दे, अभी तक साइंस तो एतराफ़ है कि चांद तक पहुंच नहीं सके हैं, चांद पर हमारा न असर पड़ा है, सिर्फ़ दूर से आलात से हमें यह सब कुछ मालूम हुआ है लेकिन कालिमा वाला उंगली के इशारे से चांद को तोड़ देता है, कलिमा वाले यक़ीन के साथ नमाज़ पढ़ने से सूरज व चांद की रोशनी वापस आ जाएगी, गए हुए बादल वापस आ जाएंगे, दुनिया का सारा निज़ाम कलिमे से बदलता है, चीज़ों की सूरतें और हक़ीक़तें तक कलिमे से बदल जाती हैं। कलिमा वाले इब्राहीम अलै० के लिए ख़ुदा ने आग में से जलाने की सिफ़त निकालकर ठंडक व सलामती वाली सिफ़त पैदा कर दी, अगर तो हमेशा कलिमे वालों के लिए गुलज़ार बनती रहेगी, चुनाचे मुसलैमा कज़्ज़ाब अबू मुस्लिम ताबई को पकड़कर कहा, मुझे नबी मान, अबू मुस्लिम ने कहा, मा अस्मा, उसने कहा, (हज़रत) मुहम्मद सल्ल० को नबी मानते हो ? अबू मुस्लिम रह० ने कहा, हां, हां, मुसलैमा ने कहा, मुझे नबी मानते हो ? जवाब दिया मा अस्मा, हुज़ूर सल्ल० को नबी मानते हो ? हां, हां, मुसलैमा को गुस्सा आ गया कि यह कैसा कान है उसने आग जलाकर अबू मुस्लिम रह० को उसमें डाल दिया। लोग समझे कि जलकर राख बन गए हैं, देखा तो अबू

मुस्लिम रह० आग में इत्मिनान से बैठे हुए थे, मुसलैमा के हवारियों ने मुसलैमा से कहा कि इसको मुल्क से निकाल दो, वरना इनकी इस करामत की वजह से लोग इनके नबी को मान लेंगे, मुसलैमा ने इनको निकाल दिया तो सीधे मदीना में आकर हुज़ूर सल्ल० पर सलात व सलाम के बाद नमाज़ में लग गए। हज़रत उमर रज़ि० ने देखा कि अजनबी आदमी है, पूछा कि कहां से आए हो ? जवाब दिया कि यमन से हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा उस आदमी का क्या हाल हुआ जिसे मुसलैमा ने आग में डाल दिया था। फ़रमाया कि हां ख़ैरियत से है, वह अब्दुल्लाह बिन सवब है, अबू मुस्लिम अपनी कुन्नियत से मशहूर थे, जैसे अबूबक्र रज़ि० कुन्नियत से मशहूर थी, नाम अब्दुल्लाह था, अबू कहाफ़ा रज़ि० भी कुन्नियत मशहूर थी उस्मान नाम था इनके इस तरह इख़्फ़ा के बावजूद हज़रत उमर रज़ि० ने समझ लिया और कहा, तुम ही अब्दुल्लाह बिन सवब रज़ि० हो ? उससे लिपट गए और उन्हें अबूबक्र रज़ि० के पास ले गए और कहा यह वह हैं जिनके लिए आग गुलज़ार बनी, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपने और हज़रत उमर रज़ि० के दर्मियान बिठाकर अल्लाह का शुक्र अदा किया हमारे दर्मियान में वह आदमी है जिसके लिए आग हज़रत इब्राहीम की तरह ठंडी हुई, हुज़ूर सल्ल० के मुआजज़ात का सिलसिला हुज़ूर सल्ल० से क़ायम हुआ है और नबियों के मुआजज़ात का सिलसिला तो उनके दौर के बाद ख़त्म हो जाता था। हर नबी का दौर दुआ पर ख़त्म हुआ है, बल्कि हर काम दुआ पर ख़त्म होता है, हर नबी ने दुनिया ही में आख़िर दुआ कर ली। हुज़ूर सल्ल० का ज़माना नुबूवत क़ियामत से कुछ हिस्से तक है, इसी लिए हुज़ूर सल्ल० की दुआ क़ियामत को ही होगी, शिफ़ाअत कबरी वाली, अंबिया चीज़ों के मुक़ाबले में कलिमा व नमाज़ से सब कुछ हो जाने की आवाज़ लगाते हैं, अक्सीरियत फ़ौज, बम, अस्ला से होने के बोल इंसानों के हैं अंबिया अलैहिस्सलाम का नारा ला इलाह इल्लल्लाह है, बज़ात ख़ुदा से होता है और

किसी से बज़ाते खुद नहीं होता है अल्लाह अल्लाह करें तो किसी और से हो जाएगा वरना नहीं। अंबिया अलैहिस्सलाम तमाम इंसानों से अलग बुनियाद लाते हैं कि ज़मीन आसमान और इनके दर्मियान की किसी चीज़ से नहीं होता है सिर्फ़ अल्लाह से होता है और अल्लाह सिर्फ़ अपनी कुदरत से करते हैं अल्लाह तो शुरू से कर रहे हैं, कुदरत भी शुरू से है, चीज़ें तो बाद में बनी हैं और जल्द टूट जाएगी। यहां तक कि फ़रिश्ते तक ख़त्म कर दिए जाएंगे अल्लाह कहेंगे, कौन–कौन रह गया ऐ मलाकुत मौत ? जवाब देंगे हम्मालतुल अर्श, हम चार बड़े फ़रिश्ते और फ़रमाएंगे हम्मलातुल अर्श और बाक़ी तीन फ़रिश्तों की जाकर रूह निकाल लो, वह रूह निकालकर कहेगा, अब तो सिर्फ़ आप हैं या मैं अल्लाह फ़रमाएंगे तुम भी मर जाओ और वह मर जाएगा यह सब आरज़ी है, कभी न था, कभी हो गया, कभी ख़त्म होकर फिर आ जाएगा, सारी ज़मीन को दोबारा लाकर इसकी एक रोटी बनाई जाएगी। हज़रत आदम अलै० से लेकर अब तक के सारे इंसान उसे खा न सके हैं ज़मीन की रोटी को जितनी मछली के जिगर से जन्नत से पहले ही खाएंगे और हौज़े कौसर से पानी पिएंगे, चांद व सूरज को क़ियामत के बाद दोबारा ज़िंदा करके लाया जाएगा और इनको जहन्नम में डाल दिया जाएगा कि अगर ये दोनों ख़ुदा होते तो जहन्नत में न होते, ला इलाह इल्लल्लाह आरज़ी को आरज़ी और मुस्तक़ील को मुस्तक़ील बताता है और मस्अले को हर आरज़ी से कटकर मुस्तक़ील के साथ जुड़ता है, तगय्यूर व तब्दुल करने वाले ख़ुदा से होगा, बदल जाने वाले आरज़ी से न होगा। आदम अलै० से ईसा अलै० तक ख़ुदा ने अलग–अलग नबियों के लिए अलग–अलग तरह कुदरत ज़ाहिर करता रहा, नूह अलै० के लिए कुदरत से अक्सीरियत को ख़त्म करके सिर्फ़ अक़्लीयत को ज़िंदा रखा, सारे अवाम, सारे बाग़ात, सारे मकानात, और मंडियों फ़िऔन के क़ब्ज़े में हैं। मूसा अलै० तो इस क़ौम में से थे जिसके क़त्ल का फ़िऔनी अज़्म कर चुके थे,

अगर कुछ लोग अज़ादी का नारा लगाकर हर मर्द व औरत को कुत्ता कुत्तिया की तरह बना दें तो इनकी हर चीज़ को तर्क करके दीन पर जमने वालों वजूद पर इनको बदल दिया जाएगा फ़िऔन पहले थोड़ा-थोड़ा क़त्ल कर रहा था। उसने आख़िर में तै कर लिया कि सारी ही इसराइलो को क़त्ल कर दो, मूसा अलै० से कह गया तो जवाब दिया ۔ يٰقومى

استعينو اباللہ واصبروان الارض للہ क़ौम ने कहा कलिमा व नमाज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पढ़ा وذينا من قبل ان تاتينا و من بعد ماجئتنا मूसा अलै० ने जवाब दिया ذيا، عسىٰ ربكم ان يهلك عدوكم.
यानी तुमको अदूद पर ग़ालिब आना है, लिहाज़ा मुल्क व माल के मिल जाने के बाद सही तौर से चलने की अभी से तैयारी करो। हुज़ूर सल्ल० की सोहबत व रफ़ाक़त का कमाल था कि दुनिया भर का ऐश हाथ में है लेकिन उसे दूसरों पर लगा रहे हैं, हज़रत अली रज़ि० ने कूफ़ा के 4 साला क़ियाम में कूफ़ा की कोई चीज़ न खाई, मदीना का सत्तू मंगवाते और संदूक़ और दर-संदूक़ महफ़ूज़ रखते, एक साहब का कहना है कि मुझे हज़रत अली रज़ि० ने गवर्नर बनाया और कहा जाने से पहले मुझसे मिलना, मैं मिलने गया तो उन्होंने संदूक़ दर-संदक़, रूमाल दर रूमाल निकालना शुरू किया, मैं समझा जवाहारात में मुझ से कुछ देंगे, बाद में सत्तू का डिब्बा निकालकर मुझे उसमें से पिलाया और कहा मैं सिर्फ़ अपने पेट में मदीना का सत्तू ही डालूंगा, इराक़ की कोई चीज़ डालना नहीं चाहता हूं। हज़रत अली रज़ि० ने एक बार फ़ालूदा हाथ में लेकर कहा कि ऐ फ़ालूदा तेरा रंग कितना अच्छा, तेरा मज़ा कितना बढ़िया, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने नहीं पीया है इसलिए तूझे नहीं पीयूंगा। मूसा अलै० ने कहा कि दुश्मन की हलाकत तो तै हो चुकी है, फिक्र है कि मुल्क व माल मिलने के बाद तुम बिगड़ न जाओ, मुल्क व माल व कुर्सी में नशा है, इसके मिलते ही इसांन बदलता

है, अंबिया की सबसे बड़ी मेहनत अपने मुतबाइन के बनाने पर होती रही है एक नाई बादशाह की हजामत करने लगा, तो कहने लगा तेरी लड़की जवान मेरा लड़का जवान है, जोड़ा अच्छा है दोनों की शादी कर दो, बादशाह गुस्से में आ गया, हज्जाम ने बार–बार उसे दोहराया तो उसने वज़ीर का बुलवाया। उस ज़माने में वज़ीर समझदार हुआ करते थे, आजकल के वज़ीर तो माल व ज़र के बल बूते से वज़ीर बन जाते हैं, वह समझ गया और दूसरी जगह ले जाकर पूछा कि क्या कहते हो नाई ने कहा हुज़ूर में क्या कह सकता हूं और कांपने लग गया। फिर उसी जगह लाकर खड़ा किया तो उसने उस्तारा चमड़े पर फेरते हुए कहा कि मेरा लड़का जवान और तेरी लड़की जवान दोनो की शादी हो जाए तो अच्छा है, वज़ीर ने कहा कि इस ज़मीन के नीचे ख़ज़ाना है, तो वाक़ई वहां से बहुत बड़ा ख़ज़ाना निकला जिसका असर नाई को ख़राब कर रहा था, मुल्क व माल इंसान के मिज़ाज में आता है जिससे इससे जुल्म करे, ज़िना करे, माल व औरत छीने, नबियों की मेहनत यह है कि मुल्क व माल की बड़ी से बड़ी तायदाद उनके मिज़ाज को बदल न सके। कुस्तुन्तुनिया, अफ़ग़ास्तिान, अफ़्रीका, व यमन तक के इलाक़े के मुल्क हज़रत उमर रज़ि० का यह हाल था कि अरब हा अरब माल तराज़ू से तक़्सीम कर दिया लेकिन हुज़ूर सल्ल० जो ज़ाहिद व यक़ीन व आमाल का मज़ा देकर गए थे इसकी वजह से एक मकान पक्का मदीना में न था, जहां जहां हुज़ूर सल्ल० ने बताया था वहां सारा माल लग रहा था। माल या मुल्क के आने से कलिमा वाला मिज़ाज न टूटा और मुल्क व माल वाला मिज़ाज इनमें न आया, सारे नबियों ने मेहनत की कि कलिमे वाली बुनियाद पर लोग आएं, फिर खुदा इस बुनियाद पर इबादत, फिर अख़्लाक़ दिए, कलिमे की बुनियाद पर जंग इस तरह होगी, हुकूमत इस तरह चलेगी। इसी को मूसा अलै० ने कहा कि तुम्हारा बच जाना, फ़िऔन का मर जाना, मुल्क का मिलना अहम नहीं है

कि ख़ुदा उस तै कर चुके हैं, अहम यह है कि मुल्म व माल के मिल जाने के बाद फ़िऔन की तरह बहरूबर में महल बनाओगे या मेरी तरह के झोपड़े बनाओगे। हुज़ूर सल्ल० का फ़रमान है तुम पर फ़क्र का ख़ौफ़ नहीं है, लेकिन दुनिया तुम्हारे पास आएगी तो तुम बदल जाओगे या नहीं इसका ख़तरा है, फ़क्र ने तुम्हारी तहज्जुद न तुड़वाई, भूखे के घर में सिरी आई तो सात घरों से चक्कर लगाकर पहले घर में आ गई, फ़ाक़े में ऐसी हमदर्दी, निज़ाअ के वक़्त ज़ख़्मों के साथ की प्यास में भी दूसरे की प्यास को मुक़द्दम किया तीनों की जान निकल गई। यह एक दफ़ा उहुद में भी पेश आया और यरमूक़ में भी इक्रिमा रज़ि० और हारिस रज़ि० के साथ पेश आया, हुज़ूर सल्ल० को डर था कि मुल्क व माल चीज़ों के मिल जाने के बाद तुम्हारे लिबास व खाना व मकान का म्यार न बदल जाए। जो यक़ीन नबी को हासिल है अपने दिल में उतार लो, इबादत व कलिमे की हक़ीक़त ले लोगे तो फिर अख़्लाक़ की दौलत मिलेगी, अपने माल व जान को इस तरह ख़र्च करो कि पब्लिक की ज़िंदगी बने, अपनी ज़िदगी ऊंची न बनाओ, अपने खाने को मामूली बनाकर दूसरों के खाने पर बाक़ी सब ख़र्च कर दो। इमाम जैनुल आबिदीन हुज़ूर सल्ल० के नवासे, हुसैन रज़ि० के साहबज़ादे के ज़माने में मदीने के एक सौ पच्चीस घरो को मालूम नहीं था कि उन्हें कहां से मिल रहा है, फ़जर के लिए दरवाज़े खोलते तो दीवारों से लगी हुई बोरियां पड़ी हुई मिलतीं, जिनमें नक़्दी, सब्ज़ियां, ग़ल्ले और कपड़े होते थे, इमाम जैनुल आबिदीन रज़ि० की मौत पर देखा गया तो उनके बोरियों के उठाने के निशान थे। इधर 150 घरों में कुछ न आया तो उससे मालूम हुआ कि इमाम साहब यह कर रहे थे सारे नबियों की बुनियाद थी कि तरीक़ा नबी वालों के सामने मुल्क व माल वाले झुकेंगे। इमानियात और इबादात (ऐसी इबादत जिससे ख़ुदा से मिलना सब कुछ नज़र आए) फिर अख़्लाक़ सहाबा रज़ि० ने दुआ व नमाज़ से बद्र व

ख़ंदक़ में कामियाबी ले ली, बारिश दुआ हज़रत उमर रज़ि० से आ गई। अनस रज़ि० ने गुलाम से कहा ज़मीन सूख गई, बाग़ उजड़ रहे हैं, ग़ुलाम के साथ जाकर बाग़ में नमाज़ पढ़ी, दुआ मांगी तो फ़ौरन बदली ने आकर बरसाना शुरू किया, ग़ुलाम ने जाकर देखा तो मालूम हुआ कि इनकी सारी ज़मीन सेराब हो गई और दूसरी ज़मीन के एक बालिश्त टुकड़े पर भी पानी नहीं है। दुकान से इस्तिफ़ादा के लिए तिजारत, मुल्क से इस्तिफ़ादा के लिए सियासत, हुकूमत से इस्तिफ़ादा के लिए मुलाज़मत है तो ख़ुदा से इस्तिफ़ादा के लिए नमाज़ है और नमाज़ भी सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली हो, जिस नमाज़ का एक–एक हिस्सा सातों ज़मीन आसमान से ज़्यादा क़ीमती है वह बग़ैर मेहनत के कैसे मिल जाए जबकि मामूली से मामूली चीज़ बग़ैर मेहनत के नहीं मिलती है और नबियों के मुआजज़े सिर्फ़ उनके ज़माने तक थे। हुज़ूर सल्ल० के मुआजज़े क़ियामत तक के लिए हैं, हिस्से मूसा अलै० यद बीज़ा, मक़ामे इब्राहीम के पत्थर के मुआजज़ात ख़त्म हो चके हैं, हुज़ूर सल्ल० के मुआजज़ात वक़्ती नहीं हैं, सही आमाल पर कामियाबी और सारी कुदरत का साथ हो जाना बताकर गए हैं। हज़रत मेहदी व ईसा आख़िर में आएंगे तो सारी उम्मत हर लिहाज़ से सहाबा रज़ि० वाले दीन पर होगी, अंसार मेहदी का दर्जा बद्रियों के बराबर होगा, हज़रत ईसा अलै० अपनी नुबूवत को चलाने नहीं आएंगे बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत पर चलने के लिए आएंगे। हज़रत मेहदी हज़रत इब्राहीम को इमामत के लिए कहेंगे तो हज़रत ईसा अलै० कहेंगे कि इस उम्मत की इमामत इस उम्मत का आदमी ही करेगा, क़त्ल दज्जाल, क़त्ल याजूज–माजूज पहाड़ों पर मुसलमानों का सिर्फ़ ज़िक्र से चलेंगे दिन तक पेट भर जाना, जैसे मन व सलवा उतारने या दस्तरख़्वान उतारने में कुदरत का ज़हूर है ऐसे ही सिर्फ़ ज़िक्र से पेट का भर जाना कुदरत का ज़हूर है, हुज़ूर सल्ल० ने जमाअत भेजी, वे खाना लेने आई तो हुज़ूर सल्ल० ने

कहा कि इधर उधर लेकर दे दो या दुआ करो ? जिससे ताक़त बनी रहे ? उन्होंने दुआ को इख़्तियार किया, इस जगह गए तो वहां से वापस आए, खाने बग़ैर ताक़त बनी रही, हुज़ूर सल्ल० तो हमें यक़ीन व आमाल व अख़्लाक़ पर सब कुछ बता चुके हैं। जो हुज़ूर सल्ल० वाले नहज पर पूरा उतरेगा उसके लिए कुदरत का मुज़ाहेरा नक़्शों व चीज़ों के ख़िलाफ़ होगा, जो हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ों को पकड़े, ज़िल्लत आए या इज़्ज़त, फ़ाक़ा आए या राहत छोड़कर न दे तो वह हुकूमती नक़्शों, माली शक्लों, अक्सीरियती सूरतों के मुक़ाबले में कुदरत से इस्तिफ़ादा करेगा। यकीन इबादात व अख़्लाक़ से कुदरत साथ होगी जिस कुदरत से से इस्तिफ़ादा को हज़रत नूह अलै० ने सिर्फ़ इसी के लिए या हज़रत मूसा अलै० ने सिर्फ़ बनी इसराइल के लिए, शुऐब ने सिर्फ़ अहले मदाइन के लिए चालू कराया था। हुज़ूर सल्ल० इस तरीक़ा को सौ फ़ीसद सारे इंसानों को देने आए हैं कि सब कुदरत से इस्तिफ़ादा के तरीक़े पर आए हैं, हर नबी को मेहनत के बाद दुआ मिलती थी कि फ़ौरन पूरी हो जाती थी, हज़रत नूह अलै० ने رب لا تذر वाली, हज़रत मूसा अलै० ربنا اطمس على اموالهم वाली दुआ मांगी, हुज़ूर सल्ल० ने मेहनत ख़ूब की, साथियों पर मेहनत पर डाल गए कि काम पूरा नहीं हुआ। हुज़ूर सल्ल० वाली मेहनत चल रही है और उम्मत में से जाना ख़ैर का है कि मुझ पर हर पीर, हर जुमेरात को उम्मत के आमाल पेश होंगे तो अच्छे आमाल पर दुआ दूंगा और बुरे आमाल के लिए अल्लाह से दुआ करूंगा, जब सब मेहनत करेंगे, सब का दर्जा मेहनत के एतबार से भी क़ायम हो जाएगा और क़ियाम का साअत का अमल हो जाएगा तो हुज़ूर सल्ल० दुआ करेंगे, उम्मत की मग़्फ़िरत की शिफ़ाअत करेंगे। हुज़ूर सल्ल० फरमा गए कि दीन की मेहनत करो और मांगो, क़ियामत को तुम्हारे मुश्किल मस्अले को दुआ से हल करा दूंगा, हज़रत अली रज़ि० कहते थे कि सबसे ज़्यादा उम्मीद की

आयत لا تقنطوا من رحمة الله को लोग क़रार देते हैं लेकिन हम अहले बैअत के नज़दीक ولسوف يعطيك ربك فترضى से बहुत उम्मीद है और हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त तक राज़ी न होंगे जब तक सारी उम्मत को जन्नत में दाखि़ल न करवा लें। हुज़ूर सल्ल० की उम्मत पर बहुत शफ़क़त थी, जो उम्मत से शफ़क़त करेगा, हुज़ूर सल्ल० से क़रीब पाएगा, लफ़्ज़ चोर सुनते ही उसकी हमदर्दी सबकी ख़त्म हो जाती है। चोर के हाथ कांटने का हुज़ूर सल्ल० पर ऐसा असर हुआ कि रंग ज़र्द, आंखों से आंसू, हुज़ूर सल्ल० से कहा गया तो फ़रमाया सब के बीच में मेरे एक उम्मती का हाथ कट रहा है क्यों न ग़म व रंज करूं। हुज़ूर सल्ल० फिर कांटने का हुक्म न देते ? फ़रमाया कि वह अमीर बहुत बुरा है कि हद वाजिब हो जाए और उसे जारी न करे, तुमने बुरा किया कि उसे पकड़कर ले आए हो, उसे वहीं बुरा–भला कहकर छोड़ देते, शैतान मेरी उम्मत को ज़लील करना चाहता है, तुमने इस तरह ज़लील करके शैतान की इआनत की है। हुज़ूर सल्ल० की दुआ व शिफ़ाअत से क़ियामत का मस्अला हल हो जाएगा, आमतौर से चीज़ों, अस्ला, सियासत से होने को लोग कहते हैं लेकिन अंबिया का कहना है कि किसी से कुछ नहीं होता है सिर्फ़ दुआ से ख़ुदा से होता है दुआ के लिए दाखि़ली तैयारी करनी पड़ती है, कलिमा चार यक़ीनों का मज्मूआ है अल्लाह के ग़ैर से नफ़ा व नुक़्सान अल्लाह के बग़ैर मिल नहीं सकता है, अल्लाह इरादों से ग़ैरों के बग़ैर नफ़ा व नुक़्सान दे सकते हैं। अल्लाह के इरादे से जान निकल जाएगी चाहे मलाकुल मौत कुछ न करे, मलाकुल मौत चाहे लाख कोशीश करे ख़ुदा के बग़ैर जान न निकाल सकेगी। तीसरा और चौथा यक़ीन है चीज़ों के बग़ैर आमाल मुहम्मद सल्ल० से कामियाबी मिल जाएगी लेकिन आमाल के बग़ैर चीज़ों से कामियाबी नहीं मिलती है यह यक़ीन दिल में आमाल पर मेहनत करने से गढ़ेगा, आमाल की सबसे पहली और

सबसे आख़िरी शक्ल नमाज़ के अंदर वाले आमाल की है। हुज़ूर सल्ल० के आमाल तो हर जगह हैं लेकिन सबसे क़ीमती अमल हुज़ूर सल्ल० के पास इस इबादत के हैं जिसमें हुज़ूर सल्ल० सबको छोड़कर लगते थे। हुज़ूर सल्ल० के पेशाब पाख़ाना में 34 आदाब हैं इनमें से हर अदब पूरी दुनिया की हुकूमतों और अमवाल से ज़्यादा क़ीमती है, फिर हुज़ूर सल्ल० के आमाल भी बड़े छोटे हैं, नमाज़ वाले आमाल सबसे ऊंचे हैं, नमाज़ के अंदर वाला कलिमा तीसरा या दारूद या कुरआन बाहल वाले कलिमे, दारूद व कुरआन से कई दर्जा अफ़ज़ल है, सारी शक्लों के मुक़ाबले में नमाज़ वाले अमल से मिलेगा حی علی الصلوٰۃ حی علی الفلاح अपनी फ़ौज व पुलीस में से अपने मकान व महल में से निकलकर आओ और कामियाबी ले लो, यानी जिनको छोड़कर आए हो उनमें कामियाबी नहीं है उनको छोड़कर यहां आने ही में कामियाबी है जिस वज़ीर, दुकान, बीवी, बच्चो या जिस खेती दफ़्तर की वजह से नमाज़ को छोड़ दे या नमाज़ को जल्दी-जल्दी अदा कर दे तो तवक्कुल को उसी से परेशानी ला हक़ होगी, फ़लां दोनों जहां की कामियाबी है, फौज़ सिर्फ़ आख़िरत की कामियाबी है। सफ़ बनाओ, सीधी सफ़ है तो इज्तिमाई ज़िंदगी जोड़ वाली होगी, हाकिम महकूम में, हिन्दी, तुर्की में अबीज़ व अस्वद में जोड़ होगा और अगर सफ़ें टेढ़ी हो तो जैसे इस मस्जिद में है कि इमाम استووا कहता है, अजमी तो समझते नहीं हैं तो इसके मुताबिक़ एहतिमाम नहीं करते हैं। सफ़ें टेढ़ी होंगी तो हालात बिगड़ेंगे जिस ज़माने में नमाज़ से सब कुछ हुआ था तो दौरे नुबूवी व फ़ारूक़ी रज़ि० व उस्मानी रज़ि० में यह था कि सफ़ों के दुरूस्त करने में पंद्रह बीस मिनट लग जाते थे, हज़रत उमर रज़ि० या हज़रत उस्मान रज़ि० किसी को सफ़ सीधी करने भेज देते और इक़ामत के बाद यह लोग बात-चीत में लग जाते, फिर पंद्रह बीस मिनट बाद यह लोग

आकर कहते सफ़ें सीधी हो चुकी हैं, तो नमाज़ शुरू करते, नमाज़ जान की मेहनत है हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े से शख़्सी और जमाअती नमाज़ टूटी हुई है हर बड़ी मिक़्दार वाली जमाअत में बिगाड़ इससे छोटी वाली से ज़्यादा है। नमाज़ की मेहनत नहीं है, इसी वजह से आज नमाज़ में आज हज़ार बे–उन्वानियां हैं, नमाज़ दीन की रीढ़ वाली हड्डी है इस नमाज़ को ख़राब कर लेने की वजह से मुसलमानों की कोई इज़्ज़त नहीं है, हर तरफ़ देखेगा कभी इसको कभी उसको। आमाल बना लें तो फिर सब ही मुसलमानों के सामने झुकेंगे, हमने किसी ग़लत वाले का साथ नहीं देना है, किसी के सामने झुकने वाला, घुटने टेकने वाला न बने, कलिमा का मौज़ूअ दावत बनाओ, हज़रत मुहम्मद सल्ल० वाले आमाल की क़ीमत जानो, हर शक्ल साबक़ा व आइंदा मिट्टी के दर्मियान में रखो। जैसे मिट्टी से नहीं होता है ऐसे ही ज़मीन से बनने वाली किसी चीज़ से नहीं होता है, हज़रत उमर रज़ि० ने सारे ज़िम्मेदारों को काढ़ी के गिर्द ले जाकर खड़ा कर दिया कि सूघों, साथियों ने कहा, यह सूघंने की चीज़ है ? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, यह तो वही खाने हैं जिनमें को तुम ऐ दूसरे से छीनते हो। हज़रत उमर रज़ि० के सामने खाया आया तो रो पड़े, एक वक़्त ऐसा आएगा कि भाई–भाई को क़त्ल करेगा, खाने की ख़्वाहिशें एक–दूसरे को क़त्ल करवा देंगी। कलिमे की दावत चले, नमाज़ पर मेहनत हो, फ़ज़ाइल व मसाइल मालूम हो, किस अमल में कौन–सी कामियाबी है जैसे बारिश के माहौल में फल–फूल जल्दी से बढ़ते हैं ऐसे ही नमाज़ भी अपने माहौल से ताक़तवर बनेगी, फिर अख़्लाक़ का फल लगेगा इबादत के पेड़ पर, इबादत, दावत, व ज़िक्र, इल्म व ख़िदमत के ज़रिए से सही शक्ल पर आती है, नमाज़ अपने माहौल से सही बनती है, फिर नमाज़ी को नमाज़ बदलती है नमाज़ ने नमाज़ी के तरीक़े बदल दिए तो नमाज़ी के हालात भी बदल जाते हैं।

उमूमी बयान न० 7

इक्रिमा रज़ि० आल अबू जह्ल ने वह किया जो किसी और आल से नहीं हो सका

पीर, फ़जर की नमाज़ के बाद, जून, 1964

मेरे भाइयों और दोस्तो !

कुरबानी से इज्तिमाई ज़िंदगी बनती हैं और कुरबानी ही से इज्तिमाई ज़िंदगी बिगड़ती है, अगर मज़्मूआ की ज़िंदगी बनाने के लिए अपनी ज़िंदगी को कुरबान करे तो मज्मूआ के ज़िंदगी बनेगी, अगर दूसरे की ज़िंदगी कुरबान करे तो इज़्तिमाई ज़िंदगी बिगड़ेगी, ये दो बुनियादें हैं, दूसरों की ज़िंदगी ऐश व राहत व घर को अपनी ज़िंदगी बनाने के लिए कुरबान करना, हुकूमत की बुनियाद है। माल वाले भी ऐसे ही दूसरों के मसाइल कुरबान करे अगर अपनी इमारत लम्बी, अपने सवारी अच्छी, अपना लिबासा उम्दा बनाते हैं, मुल्क व माल वाले हमेशा दूसरों की ज़िंदगी कुरबान करते चले गए किसी की भूख प्यास, नंगेपन से असर न लिया। दूसरों के मसाइल बिगाड़ दिए अपनी बनाने के लिए, अल्लाह को यह बहुत बुरी लगती है, ऐसे आदमी खुदा के हां इंतिहाई गिरे हुए हैं। हुज़ूर सल्ल० का फ़रमान है
वे होंगे जो दुनिया में किसी उहूदे पर रहें होंगे क्योंकि दूसरों को कुरबान करके अपनी बनाई थी, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो दस पर या कम से कम ज़्यादा पर बड़ा बना हो वह क़ियामत के हाथ बंधा हुआ पेश होगा, इसकी तहक़ीक़ होगी, अगर अच्छे निकले

दूसरों की ज़िंदगियों की रियायत करते हुए चले तो हाथ खुलवाकर जन्नत में भेज देंगे और अगर दूसरों की ज़िंदगी कुरबान की हों अपनी बनाई हो तो उसे हाथ बांधे ही जहन्नम में फेंक देंगे, अगर आधा या तीसरा हिस्सा तुम दूसरों पर नहीं लगा सकते हो तो फिर कम स कम चालीसवां हिस्सा दूसरों की ज़िंदगी के बनने नंगे पन या फ़ाक़ा के दौर होने में लगाओ, जब जो चालीसवां हिस्सा अपने ऐश व ज़िंदगी के मसाइल में से निकालकर न देगा तो खुदा उसकी ज़िंदगी को बिगाड़ देंगे, अफ़वाह जुनूब व ज़हूर पर इस माल से दाग़ लगाए जाएंगे। शरह हदीस ने कहा है कि ग़रीब ने अगर हाजत रखी, इसका मुंह चिढ़ा, माथे पर शिकन पड़ गई, इस शिकन के जवाब में माथे पर दाग़ लगेगा, फ़क़ीर ने मज़ीद सवाल किया तो उससे मुंह मोड़कर पहलू कर दिया, लिहाज़ा पहलू पर भी दाग़ लगेगा। जब साइल ने मज़ीद इक़रार किया तो उसकी तरफ़ बैठ करके चल दिए, तो अब पीठ पर दाग़ लगेंगे, जो दूसरों को मुसीबतों में धकेले अपनी बनाए ऐसो की ज़िंदगी खुदा आख़िरत में और दुनिया में बिगाड़ देते हैं, दूसरों की ज़िंदगी नज़रअंदाज़ कर दे या दूसरों में लेने के लिए घुसे तो ख़ुदा दूसरों की कुरबान करने वालों से कभी राज़ी न होंगे। मुल्क व माल वालों को आमतौर से रास्ता यही है इसी वजह से खुदा ने उसमें ज़िंदगी का बिगाड़ना रखा है, आज तुम घुसकर देखोगे तो यही महसूस कर देगा कि दूसरों की ज़िंदगी ख़राब कर दी तो खुदा ने उसकी ज़िंदगी अचानक बिगाड़ दी, तारीख़ की किताब में लिखा है कि एक आदमी के लिए बीवी ने मुर्ग़ व पराठे तैयार किए आदमी खाने लगा तो साइल की आवाज़ आई, आदमी ने कहा, सारा मुर्ग़ उसे दे दो, बीवी ने कहा, उसे दो चार रूपये दे दो, मैंने मुर्ग़ा तेरे लिए पकाया है तू ही खा। आदमी के इसरार पर वह मुर्ग़ा देने गई तो साइल को देखकर चीख़ मारी, मर्द ने आकर पूछा क्या हुआ ? उसने कहा कि यह मेरा साबिक़ ख़ाविंद है मैं ग़रीब थी यह शहर का अरबपती

था, मुझसे निकाह किया मुझे आंख का तारा बनाया, मैंने उसके लिए मुर्ग़ मुसल्लम तैयार किया, साइल ने आकर मांगा तो उसे गुस्सा आ गया कि दुकान में हर वक़्त आते रहते हो यहां घर में भी चैन लेने नहीं देते हो और साइल को जाकर लातें और जूते मारे। बस इसके बाद से हमारे कारोबार में ख़सारा आने लगा, आख़िर क़र्ज़े में कसरत से तंग आकर वह तलाक़ देकर भाग गया, आज सामने आया है इसके सारे एहसानात याद आए तो मेरी चीख़ निकल गई तो उस मौजूदा ख़ाविंद ने कहा, अच्छा मेरी भी सुनो, मैं वही फ़क़ीर हूं जिसको उस दिन मार मारकर निकल दिया गया था, अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल व करम से यहां पहुंचा दिया।

تلك الايام نداولها بين الناس इस तरह बहुत से ऊपर से नीचे और बहुत से नीचे से ऊपर आते हैं, जो दूसरों को बनाते हैं ख़ुदा उनको ऊपर लाते हैं जो दूसरों को बिगाड़ते हैं उन्हें ख़ुदा नीचे लाएंगे, जो दूसरों के लिए माल व जान में से हिस्सा न निकाले वह ख़ुदा को बुरा लगता है उससे बुरो वह है जो दूसरों को बिगाड़ बिगाड़कर अपनी बनाए, इसी सांस पर हुकूमतें चलती हैं। इसी वजह से यह हुकूमतें ख़ुदा को पसंद नहीं हैं, इसी वजह से क़ियामत को हुक्काम ही सबसे ज़्यादा अज़ाब में होंगे, इसी वजह से ख़ुदा को जानने वालों ने हुक्काम के माल को सूअर क़ी तरह हराम समझा। सूफ़ियान सोरी रह०, अहमद बिन हम्बल रह० वग़ैरह हुकूमत के माल व दौलत से ऐश व इश्रत से बचते रहते थे भूख की हालत में भी एक लुक़्मा हुकूमत का न खाते, हज़रत सूफ़ियान सोरी रह० को रास्ता चलते हुकूमत को कोई आदमी नज़र आता तो दीवार की तरफ़ मुंह करके खड़े हो जाते, जब वह चला जाता तो फिर सीधा मुंह करके चलने लगते पूछने पर बताया कि यह तो मलऊन व मतज़ूब हैं। हर वक़्त इन पर अज़ाब का ख़तरा है कहीं ऐसा न हो कि अज़ाब के पत्थर इन पर गिरें और मैं उसे देख रहा तो एक पत्थर मुझ पर आ गिरे, आज हम जिस हुकूमत की तरफ़

लपक रहे हैं उससे यह सब भागते थे यह खुश्क न थे बल्कि सूफ़ियान सोरी रह० का मज़हब आइमा अरबा की तरह कई सदियों तक चला है, मुहद्दिस फ़िक़्ह ज़बरदस्त आबिद थे। दूसरा रास्ता नुबूवत वाला है कि ख़ुद को अपने ऐश व खाने पीने को अपने सकून व राहत को दूसरे की ज़िंदगी के वास्ते कुरबान किया है, उसी वजह से अल्लाह को अंबिया अलैहिस्सलाम सबसे ज़्यादा पसंद हैं, हज़रत इब्राहीम अलै० को देखो, अच्छे खासे व वज़ारत घर के आदमी थे, वज़ारत कुदा के नूर नज़र व सरताज थे वज़ारत वाले सारे मुनाफ़े को इसलिए कुरबान किया कि लोगों की ज़िंदगी दुनिया व आख़िरत के साथ ख़तरात की तरफ़ जा रही है बस इनको बचाने की मेहनत के लिए घर को कुरबान किया, बाप ने मुख़लफ़त की, क़ौम दुश्मन बनी, आग में गिरे, वतन छोड़ा, फ़िर हज़रत हाजरा, व हज़रत इस्माइल अलै० वाला घर कुरबान किया, उससे मुताअलक़ा सारी लज़्ज़तें और सारे मसाइल कुरबान किए ताकि कुरबानी देने वाली उम्मत आए, जिससे सबको कामियाबी मिले, यहां से वह कुरबानी उठे जिसमें घर व ज़ात को कुरबान करना होता कि दूसरों की ज़िंदगी दुनिया व आख़िरत की बन जाए राहतों को कुरबान करके इंसानी ज़िंदगी बनें। अपने घर को कुरबान करके दुआ मांगी ऐ ख़ुदा इस कुरबानी को कुबूल कर, हमारी औलाद को कुरबानी देने वाला बना, एक उम्मत ऐसी ही कुरबानी देने वाली तो उठा दे, सौ फ़ीसद यह कुरबानी मशरीक़ से मग़रिब जा पहुंचे, अब हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने आकर वे कुरबानी सैकड़ों घरो से दिलवाई जो हज़रत इब्राहीम अलै० ने एक घर से दी थी। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने उम्मत के लिए कुरबानी का बेड़ा उठाया, औलाद अज़वाज की दिलचस्पियां कुरबान करे, शादी और खाने के जज़्बात को कुरबान करे, आख़िरत में इसका बदला लेने का रूख़ हो, नुबूवत से पहले आप सल्ल० हज़रत ख़दीजा रज़ि० से ब्याह करके माल की वजह से सबसे ज़्यादा मालदार बन गए। हज़रत ख़दीजा रज़ि० तो हुज़ूर

सल्ल० को चाहने वाली थीं, आज की औरतें तो पहले ही महर की नान व नुफ़क़ा की तफ़्सील लिख लेती हैं कि जहां ख़ाविंद की निगाह फिरे वहां हुकूमती ज़राए से ख़ाविंद से ख़ूब वसूल कर लिया जाए, यह (हाल) है मग़्रिबी तहज़ीब का हमारी जमाअत वालों ने एक मिस्री को तैयार किया, उसने बीवी के ख़र्चे का इंतिज़ाम किया, अपना ख़र्चा बनाया, दुकान व ज़मीन का हिसाब तै किया लेकिन चलने से पहले इसकी बीवी की तरफ़ से मुक़द्दमा दायर हो गया कि मेरा ख़ाविंद मेरे नान व नुफ़क़ा के बग़ैर ही यहां से जा रहा है उसकी अदालत में तलबी हुई तो वह मुक़द्दमा बीवी के इस वकील ने दायर किया था जिस वकील को यह आदमी सारे ख़र्च वग़ैरह के पैसे देकर जा रहा था। हज़रत ख़दीजा रज़ि० पर जां–निसार, हुज़ूर सल्ल० की निगाह पर माल लगाने वाली थी, नुबूवत मिल गई तो मज़े से गुज़रने वाली कुरबान होने लगी हज़रत अबूबक्र रज़ि० को ख़ुदा ने माल व हैसियत से नवाज़ा था। मक्का वालों की तरफ़ से मुल्कों को सफ़ीर बनकर जाते थे हज़रत उमर रज़ि० भी मालदार थे, हिजरत करके यहां आए तो उमर रज़ि० के पास अय्याश बिन रबीअ रज़ि० आ गए, तो अबू जहल व हारिस अय्याश को वापस लेने आए, अबू जहल व अय्याश रज़ि० व हारिस तीनों की मां एक थी। दोनों आकर कहा न कंघी करेगी न धूप से हटेगी, यहां तक कि तूझे देख लूं, अय्याश रज़ि० उससे मुतासिर हो गए, हज़रत उमर रज़ि० से कहा, मैं मां के पास हो आऊं ? हज़रत उमर रज़ि० ने जब धूप लगेगी ख़ुद ही साया में जाएगी, जूएं काटेंगी तो उन्हें ख़ुद ही निकालेगी, अय्याश ने कहा, अच्छा, मैं जाकर अपना माल ही ले आता हूं ताकि मदीना में ग़रीब वाली ज़िंदगी न गुज़ारू तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं सबसे ज़्यादार मालदार हूं, सारा माल लेकर आया हूं इससे मालूम हुआ कि हज़रत उमर रज़ि० भी मालदारों में से थे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा लिहाज़ा तू मां की वजह से मत जा, मेरे आधा तेरे सारे से ज़्यादा

होगा, अय्याश रज़ि० को बहुत समझाया कि अबू जहल ग़लत कह रहा है तूझे पकड़ने और फांसने को ले जा रहे हैं। अय्याश रज़ि० जाने पर ही रही तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, कि यह मेरी ऊंटनी ले जा सबसे ज़्यादा दौड़ती है जहां तू ख़तरा महसूस करे उस पर दौड़कर जान बचा लेना, रास्ते में अबू जहल ने कहा, ऐ भाई ज़रा सोच तो सही हम दो इस कमज़ोर ऊंटनी पर और तू अकेला इस मज़बूत ऊंटनी पर तू हमारे ऊंटनी पर आ जा हम तेरी ऊंटनी पर सवार हो जाएं। वह अपनी ऊंटनी से उतरकर कमज़ोर ऊंटनी पर सवार होने लगे और हज़रत उमर रज़ि० की सारी बातें भूल गए तो दोनों ने उन्हें जल्दी से पकड़कर बांध लिया, हालांकि यह खुद मक्का जा रहे थे अपने जज़्बे से लेकिन फिर भी ग़ुलामों की तरह बांधकर ले चले। हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर ये तीनों हज़रात माल व ऐश व राहत वाली ज़िंदगी पर थे, अब कुरबानी देने लगे कुरबानी देने वाली एक उम्मत तैयार की, यहां तक कि इस कुरबानी के तईदिया का घर मदीना बना। जिसको हज़रत इब्राहीम अलै० ने अपने एक घर से पेश किया था हर आदमी अपने मस्अले, अपने कमाने की तर्तीब, अपने घर के ख़ानदानी या क़ौमी ज़िंदगी को कुरबान करे, उस मेहनत के लिए जिससे इज्तिमाई ज़िंदगी को रूख़ अलू व कामियाबी की तरफ़ हो जाए, हुज़ूर सल्ल० ने शुरू से उस पर उठाया था कि अपनी राय पर चलना छोड़ दो। ख़ुदा जैसा कहें वैसा ही करो, अल्लाह के हुक्मों को पूरा करने के लिए सहाबा रज़ि० ने हर चीज़ कुरबान की उस बुनियाद से कुरबानी उठी, हिजरत का हुक्म पूरा हुआ, आज भी रात दिन चारों तरफ़ से लोग हिजरत करके यहां आ रहे हैं। मुहाजिर बनने के बाद सबका ज़हन यह है कि जो कुछ अपने वतन में कर रहे थे उसे ही यहां करेंगे, सिर्फ़ एक शहर या मुल्क से हिजरत करके दूसरा शहर व मुल्क इख़्तियार कर लिया। ज़िंदगी की तर्तीब दोनों जगह एक ही रखी है, अपनी तर्तीब को बर्मा.

हिन्द या पाक मदीना मक्का में चलाएंगे, जैसे यहूद व नसारा ने सीनेमा वाली वहशियाना यूरोप की बचाए अरब की ज़मीन पर चलाने की स्कीम बनाई है जैसा मकान, खाना, लिबास वहां था वैसा मकान, खाना, लिबास यहां भी चलाओ कहो तो अपने आपको मुसलमान फिर जिस तरह चाहे करो। हमारे मुल्क वालों की कोशीश है कि हिन्दु खुद को कहकर जो चाहे करो, ऐसे ही मुहाजिरीन बनने से कोई पाबन्दी नहीं लगी है जो चाहे करो, वही इसराफ़, वही तेश, वही ज़िंदगी यहां आकर चलाओ, मुश्रिकीन जब इस्लाम की तरफ़ पलटते थे पूरी तौर से पलटते थे। हज़रत इक्रिमा ने सारी ज़िंदगी इस्लाम के ख़िलाफ़ किया, फ़त्ह मक्का के मौक़े पर भागे कि आज बचाव नहीं हो सकता है उनकी बीवी हुज़ूर सल्ल० से अमन लेकर उनको यमन से लेकर वापस आई। आकर कहा यह कहती है आपने अमन दे दिया है ? हां मैंने अमन दे दिया है तो हज़रत इक्रिमा सवारी से उतरे, ऐ मुहम्मद सल्ल० आप क्या कहते हैं ? फिर हुज़ूर सल्ल० ने इमान व इबादात व अख़्लाक़ सब पेश किया, कहा, यह सब अच्छा है ऐ मुहम्मद सल्ल० अब मैं क्या कहूं ? ऐ इक्रिमा कहो कि मैं मुस्लिम हूं, मुस्लिम के माइने गरदन झुकाने वाला है। गरदन झुकाकर न मानना मुराद नहीं है बल्कि गरदन झुकाकर जो कहा जाए कर लेना चाहिए गरदन न भी झुकाए मगर कर ले तो गरदन झुकाना हो जाएगा। लफ़्ज़ मुस्लिम से समझ गए कि खुदा हुक्म दिया करेगा और मैं उसे पूरा करूंगा, ऐ मुहम्मद सल्ल० अब क्या कहूं ? हुज़ूर सल्ल० ने कहा, मुहाजिर कहो हज़रत इक्रिमा ने कहा मैं मुहाजिर हूं, हममें तो कोई मुहाजिर है, लेकिन हिजरत से क्या करना चाहिए उसकी फ़िक्र नहीं आप मुहाजिर हैं ? जी आप क्या करते हैं ? मेरे पास खजूर के बाग़ है मेरी दुकान है मेरे बेटों का कारोबार है। मुहाजिर का असली मतलब है कि अपनी छोड़ने वाला, अब छोड़कर करेगा क्या ? तो कहा हुज़ूर सल्ल० और क्या कहूं ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मुजाहिद कहो, उन्होंने

कहा कि मैं मुजाहिद हूं, मुजाहिद के माइने हैं कि जो ख़ुदा कहेंगे उसे करूंगा उसे करने के लिए जो छोड़ना पड़ेगा उसे छोडूंगा। अब जो मुजाहिद हमारे ज़माने में हैं वह कोई काम जिहाद वाला न करें, तीनों बोल बोलकर यह शख़्स खुद क़सम खाता है कि जितना माल व जान का हिस्सा इस्लाम की रूकावट में लगा चुका हूं, इससे दो गुना इस्लाम के फैलाने में लगाऊंगा आप दुआ कर दें ख़ुदा मेरी पीछली माफ़ कर दें। हुज़ूर सल्ल० ने दुआ की ऐ ख़ुदा इसने जितना इस्लाम के ख़िलाफ़ किया है उसे माफ़ कर दे फिर इक्रिमा और आल अबू जहल ने मैदान में छलांग लगाकर वे कर दिखाया जो और किसी आल से नहीं हो सका। आल अबू जहल के उसी घर निकले, हारिस अख़्वाबी जहल ने व इक्रिमा रज़ि० बिन अबी जहल ने, उसे के बाद फिरकर ज़िंदगी गुज़ारी है जब मक्का से निकले तो सारा मक्का बाहर निकल आया था। वे बच्चा भी निकल आया थ जो मां के दूध से ग़िज़ा की तरफ़ आ गया था, सबको जोड़कर कह रहे थे मक्का छोड़कर न जाओ वरना सारा लुत्फ़ व मज़ा ख़त्म हो जाएगा आगे इक्रिमा और हारिस रोते हुए जा रहे थे पीछे अहले मक्का रोते हुए। एक जगह रूककर अहले मक्का से कहा, यहां से निकलने की वजह किसी दूसरे शहर का पसंद आ जाना नहीं है सबसे ज़्यादा महबूब शहर यही है किसी और क़ौम की मुहब्बत की वजह से नहीं निकल रहे हैं क्योंकि हुज़ूर सल्ल० वाली क़ौम से अच्छी कौन सी हो सकती है अलबत्ता बात यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने आवाज़ लगाई, कुछ ऐसो ने पहले कर ली जो हमसे कम दर्जे थे उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के साथ मेहनत की अब हम उसी मेहनत में जान लगा देंगे ताकि हम उनके साथ क़ियामत में हो सकें, यह बात हज़रत उमर रज़ि० की नहज ने इनमें पैदा की। हज़रत उमर रज़ि० बद्र वालों से बहुत मुहब्बत करते थे, जहां कोई बद्री आता उसे सबसे आगे बिठा देते, एक दफ़ा सरदार मक्का हकीम रज़ि० बिन अबी जहल वग़ैरह हज़रत

उमर रज़ि० के उस मकान के सामने जमा हुए जो उस मस्जिद में आ गया था। हज़रत उमर रज़ि० से इजाज़त मांगी तो कहा कि मैं मश्गूल हूं बैठ जाओ, पीटने वाले ग़ुलाम आ गए हज़रत उमर रज़ि० ने फ़ौरन इजाज़त दे दी, सारे काम काज छोड़ दिए, सरदार बाहर रह गए, ग़ुलाम अंदर सीधे चले गए, उन सरदारों में बात चली की ग़ुलामों को हम पर इतनी तर्जीह हमसे गवारा नहीं है, बग़ावत का जज़्बा उभरा तो हकीम बिन हज़ाम रज़ि० समझदार आदमी ने खड़े होकर कहा कि उमर रज़ि० ने जो किया है वही हुज़ूर सल्ल० करते और अल्लाह भी यही करेंगे कि ग़ुलामों को तुम पर हर जगह तर्जीह मिलेगी, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने उन ग़ुलामों को और तुमको भी इकट्ठा दावत दी थी। इन्होने मानकर मैंदान मेहनत गर्म कर लिया, तुम बहुत बाद में आए, कि क़ियामत की इज़्ज़त की फ़िक्र कर लो कि कल को कहीं खुदा तुम्हें उनसे पीछे न कर दे। खुदा से तुम कुछ न कह सकोगे, मक्का के सरदारों ने हुज़ूर सल्ल० से कहा कि आप ऐसा वक़्त तै कर लो कि ऐरा गेरा नत्थू खे़रा साइल नास न हो तो फिर हम आपसे बात सुनेंगे। हुज़ूर सल्ल० सरदारान के इस्लामी लालच में उन सरदारान के लिए वक़्त मुक़र्रर कर चुके, हुज़ूर सल्ल० उनको लेकर बैठे ही थे कि इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० आयत मालूम करने आ पहुंचे, हुज़ूर सल्ल० को ना–गवार गुज़रा, खुदा ने उतार दिया عبس وتولی इसके बदले में हुज़ूर सल्ल० इब्ने मक्तूम रज़ि० को कई तरह से नवाज़ा, मदीना का हाकिम आला बनाकर कई मर्तबा बाहर तश्रीफ़ ले गए दूसरी आयत भी उतरी اما من استغنی فانت له تصدی' चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने वह दस्तावेज़ फेंकी जिस पर फ़ुक़रा व ग़ुरबा से अलग होकर सिर्फ़ सरदारों से बात करने के लिए वक़्त मुक़र्रर किया गया था। हुज़ूर सल्ल० गए और जाकर उन फ़ुक़रा व ज़ऊफ़तन नास से गले लगे, ऐसे ही मदीना में हुज़ूर सल्ल० सारे फ़ुक़रा व ग़ुरबा से अलग होकर कुछ क़ौमों के चौधरियों से बात

करने में लगे कि कहीं उन फुक़रा की मौजूदगी से यह उलटा असर न लें, सुलह होने का रूख बन गया, मज्लिस का इख़्तिमाम होने लगा खुदा ने आयत उतारी واصبر نفسك مع الذين अपने आपको ऐसे फ़क़ीरों में जमा कर रखो, इस वजह से उस तबके में से मज्लिस में कोई फ़र्द, जब तक रहता, हुज़ूर सल्ल० ख़ुद न उठते। हज़रत इब्ने मसऊद, सुहैब रज़ि०, बिलाल रज़ि०, वग़ैरह उसी फ़क़ीर तबक़े में से थे, तो सहाबा रज़ि० इसका ख़्याल करते कि जब अंदाज़ करते कि हुज़ूर सल्ल० के उठने का वक़्त आ गया है तो ख़ुद पहले उठ जाते, ताकि उनके बैठे रहने से हुज़ूर सल्ल० को मज़ीद बैठना पड़े। ऐसे ही एक मर्तबा यह सरदारान मक्का में हज़रत उमर रज़ि० के पास बैठे हुए थे, वे फुक़रा बारी–बारी आने लगे, हज़रत उमर रज़ि० उनसे मुहब्बत करते थे और इनकी वजह से सरदारों को पीछे करते गए उनके पास बिठाते गए यहां तक कि सारे सरदार दरवाज़े पर पहुंच गए। इतने में आकर हारिस रज़ि० ने उमर रज़ि० से कहा तुम जो कर रहे हो बिल्कुल दुरूस्त है, यह तक़दीम के हम ताख़ीर के ही मुस्तहीक़ है, लेकिन तू भी तो अपनी क़ौम, अपने ख़ानदान वालों के लिए सोच कि क़ियामत को यह उनसे आगे न हो सकेंगे तो कम से कम इनके बराबर तो हो जाएं। हज़रत उमर रज़ि० गरदन झुकाई, बहुत सोचकर कहा जिस काम के लिए उन्होंने पहल की तुम उसके लिए जान दे दो, बस आख़िरत में हज़रत बिलाल रज़ि० के बराबर हो जाने के इरादे से उसी घरों का मक्का से लेकर निकलो। जानवरों की पश्तों को घर बना लिया, सख़्त ख़तरात में घुसे, हज़रत इक्रिमा ने आगे घोड़े को बढ़ाया, हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने उसकी बाग को थाम लिया और कहा ऐ इक्रिमा आगे मत बढ़, तेरी मौत सारे अरब पर शाख़ है। हज़रत इक्रिमा ने कहा ऐ ख़ालिद रज़ि० तूने मुझे दीन की मुख़लफ़त में आगे बढ़ने से कभी न रोका आज दीन पर जाने देने में आगे बढ़ने से रोक रहा है, यह कहकर इक्रिमा ने एड़ी मारी

और आगे बढ़ गए और शहीद हो गए। हज़रत इक्रिमा रज़ि० का सर अपनी रान पर रखा और इसी हाल में इनका इंतिक़ाल हुआ। इस नसल के अफ़राद इसी तरह अलग–अलग जगहों में मदफ़ून होते रहे, कोई यहां कोई वहां इस पूरी नसल में से एक लड़का और एक लड़की ही वापस हुए। मदीना मुनव्वरा आए तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि इन दोनों को आपस में निकाह कर दो ताकि इस नसल की बाक़ी सूरत बन जाए, अबी जहल की नसल को भी तो देखो, इस्लाम इक्रिमा से पहले अबी जहल को बुरा कहा जाता था। उनके मुसलमान होते ही हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया दिया कि अबू जहल को बुरा भला मत कहा करो, हालांकि अबू जहल की बुराई दिल के गोशे में थी, इस ज़माने में मुसलमान होने के माइने कुरबान होने के थे, इस वजह से इसी में तरक़्क़ी हुआ करती थी। अपनी बात को छोड़ देना हिजरत है, अल्लाह वाला काम करना जिहाद है, इससे बनता है इस्लाम मुजाहेदा मुहाजिर है मुस्लिम किसी की आंख न देखे, हुक्काम व माल वालों को ने देखे, सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म को, हुज़ूर सल्ल० के अमल को देखे, 24 घंटे की ज़िंदगी में सिर्फ़ ख़ुदा का तक़ाज़ा व दाइया रहे, सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल० वाला तरीक़ा रहे, इस नहज के वजूद से उम्मते मुस्लिमा का वजूद होगा, दूसरे पर जितना जान व माल लगाने को कहा है उतना दूसरों पर लगाओ और अपने पर सिर्फ़ ब–क़द्र ज़रूरत लगाओ, माल व जान तो ख़ुदा की है अपनी मत समझो जान व माल को अपना समझते हो, ख़ुदा का ज़र ख़रीद नहीं समझते हो तो ईमान कमज़ोर है, اشترى من المومنين के बाद है التائبون इंसानी मिज़ाज व तबीयत के एतबार से माल व जान का एक ज़र्रा ख़र्च न हो, العابدون हुज़ूर सल्ल० वाली तर्तीब पर पड़ने वाले उस तर्तीब में असल नमाज़ है, नमाज़ ही की कुबूलियत के लिए माल के कमाने, माल के ख़र्च करने और मुअशरत को दुरूस्त करना होगा क़ौमियत व असबियत की वजह से लिसान व मुल्क

की वजह से किसी की मदद करेंगे, तो जाहिलियत की मौत मरेगा, इसकी कोई इबादत कुबूल न होगी, कमाई, ख़र्च, मुआशरत ग़लत है तो नमाज़ इबादत कुबूल न होगी ग़ीबत से सारी इबादत दूसरे को मिल जाएगी, सिर्फ़ क़ौम की हिमायत है कि मैं तो क़ौम के साथ हूं हक़ ना–हक़ में तो भी इबादत कुबूल न होगी, الحامدون तौबा व इबादत के बाद माल व चीज़ों में ज़्यादती भी हो सकती है और इसके बरअक्स कमी भी हो सकती है। पहले मोटर थी, अब गधे पर सवार हो रहा हैं, यानी हर हाल में ख़ुदा का शुक्र करें कि हराम तरीक़ा तो ख़त्म हुआ, चाहे कार चली गई, गधे पर सवार होना पड़ा 'السائحون'' (سیاحة امتی الجهاد فی سبیل الله तौबा व इबादत व हम्द वाली ज़िंदगी सारे आलम में फैलाओ, जिस वक़्त कुछ झुकने को कहें उस वक़्त कुछ झुक जाओ, जिस वक़्त सारा झुकने को कहें उस वक़्त सारे झुक जाओ ऐसे ही जब कुछ माल व जान का मुतालबा हो तो कुछ माल व जान लगा दो, जब सारे माल व जान का मुताबला हो तो उसे भी पूरा कर दो।

الآمرون بالمعروف و الناهون عن المنكر मारूफ़ हुज़ूर सल्ल० वाला दीन है तो मुन्किर बे–दीनी है, बे–दीनी से रूको, दीन की कहो फिर है, الحافظون التائبون इस हिफ़ाज़त में कभी क़ताल भी आ जाएगा इस सारी तर्तीब पर वही आएगा, जो माल व जान ख़ुदा का समझे, जो उम्मत कुरबानी वाली होगी उसे ही इंसाफ़ व रहम व अदल व ग़ुरबा परवारी की तौफ़ीक़ मिलेगी हुज़ूर सल्ल० ने हर एतबार से उम्मत को कुरबान पर डाला, बीवी–बच्चों सेहत नींद, कमाई के एतबार से न चलो, बल्कि दीन की मेहनत को सामने रखो, मस्जिद वाला माहौल चलेगा तो इबादत व अख़्लाक़ वाले पाकीज़ा तरीक़े चल सकेंगे, यह मस्जिद नुबूवी है इसमें अलग–अलग। क़ौमों, वतनों के लोग जमा हुए, सबने वह मेहनत की जिससे मुल्की, इलाक़ाई, तबक़ाती तफ़रीक़ ख़त्म हुई। इज्तिमाई ज़िंदगी कुरबानियों से ज़िंदा कराई गई भूख से

चेहरा ज़र्द है तो भी यहां के हलके, इल्म में आकर बैठो, हुज़ूर सल्ल० मस्जिद में आए तो हलके में देखा कि भूख से चेहरे ज़र्द हैं और कपड़ों की कमी की वजह से एक दूसरे से छिप रहा था इल्म लेने की ऐसी तलब पैदा की कि हुज़ूर सल्ल० हज के सफ़र में थे एक बद्दु अपनी सवारी से आगे हो होकर मसाइल पूछ रहा था कि सवारी बिदकी, ज़मीन पर गिरे और मर गए हुज़ूर सल्ल० ने कहा, इसका पेट देखो, देखा तो पेट भूख की वजह से कमरे से लगा हुआ है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया इस वजह से हूरें मरते ही इसका खाना लेकर आ गईं थीं, यानी भूख की शिद्दत बावजूद भी इल्म लेने के लिए आया और भूख दूर करने का इंतिज़ाम करने न गया, मस्जिद के माहौल बनाने को असल काम बनाओ, कमाई को बिल्कुल न छोड़ो अलबत्ता इसमें इश्तिग़ाल कम करो, हर एक से यह कुरबानी दिलवाई, सारे साल खेती दुकान में लगने वालों की तर्तीब दूसरी बना दी कि चार महीने तो बाहर ही लगा दो, आठ महीने में से आधा वक़्त मस्जिद में आमाल व मज्लिस ईमान में लगा दो, ईमानियात मुग़िबात में, ग़ैब का यक़ीन इस ग़ैब की कसरत ज़िक्र से मिलता है। अमेरीका का यक़ीन बार-बार सुनने से मुझमें बन गया है वरना मैंने अमेरीका देखा नहीं है, ईमानियात व मुग़ीबात के खुब तज़्किरे करोगे, तब इनका यक़ीन नसीब होगा, मस्जिद का माहौल सबका जान लगाने से बनेगा, मक़ाम की भी तर्तीब बदली गई दिन रात में से आधा वक़्त अपनी मस्जिद में लगा दो, उसमें हर शख़्स को अपने दुकान व खेती वाली (ज़िंदगी) कुरबान करनी पड़ी, इस इज्तिमाई मुजाहेदे से इनका दिल जोड़ दिया, आमाल का रूख़ पड़ गया। सहाबा रज़ि० का ख़र्च चार तरीक़े से बढ़ाया दिया गया, अपने निकलने का ख़र्च, बाहर से आने वफ़ूद की ज़ियाफ़त का ख़र्च, वफ़ूद की वापसी पर हदिए देने, इस्लाम ने कमाई को तिहाई करके ख़र्च चार गुनाह मज़ीद बढ़ा दिया। पहले साल भर कमाकर अपने घर पर ही लगाते, अब तीन चार महीने कमाकर ख़र्च और

जगाहों में भी करो, काम करने वाले ऐसे रख कि कमाई कम। पब्लीकी ज़िंदगी पर ख़र्च ज़्यादा हो, माल कम हो तो ज़िंदगी ख़ुद ब ख़ुद सादी होगी, काम चलाना है पक्के मकान के पैसे कहां से निकलेंगे, कच्चा ही बना लो, ब्याह निकाह सादा कर लिया, ख़र्च न बढ़कर कमाई ने कम होकर सहाबा रज़ि० की हाजतों को सादा कर दिया। हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा कि इस पांच दिरहम वाले कुरते को यह लड़की पहनना पसंद नहीं करती है, हालांकि इसी कुरते में कई दुल्हनों ने शबे ज़फ़ाफ़ मनाई है क़ौमें अस्बाब से ही तरक़्क़ी करती हैं और अस्बाब से ही गिरती हैं, यह नक़ल व हरकत है न दूसरों पर लगाना है, न इल्म का हलक़ा है न ज़िक्र की फ़िज़ा है, हुज़ूर सल्ल० वाली तर्तीब हम खो बैठे हैं, यहूद नसारा के हाथ में फंस चुके हैं जहां इनकी नज़र टेढ़ी होती हैं हमारी ख़ून की नदियां बहने लगती हैं। बीवी मश्विरा इसका न देगी, बच्चे इसे न मानेंगे कमाई इसकी इजाज़त न देगी, इसलिए हम ख़ुद को हज़रत इब्राहीम अलै० की तरह कुरबानी पर उठाओ, जो मज़हब कुरबानियों से तेज़ी से चला था, आज कुरबानियों के न होने की वजह से तेज़ी से गिर रहा है। यह चमकेगा तो कुरबानी देने वालों को चमकाकर चमकेगा और अगर गिरेगा तो कुरबानी न देने वालों को मिटाकर गिरेगा, एक बार चार महीने लगा दो और अल्लाह से मांगो, ऐ ख़ुदा हमें हमारे ख़ानदानों को इसी कुरबानी के लिए कुबूल कर जिसके लिए हुज़ूर सल्ल०, आल हुज़ूर सल्ल०, अस्हाबे मुहम्मद को तूने कुबूल किया। तुममें से पहले चौबीस जमाअतें रवाना हो चुकी हैं अब तुममें से मज़ीद 4 जमाअतें तुर्की, हब्शा, अफ़ग़ानिस्तान, इंडोनेशिया के लिए बनें, ख़ुदा तो जब चाहें किसी को मुक़द्दमा या बीमार या टैक्स में डालकर कुरबानी में डाल दें और कुरबानी ले लें, मज़ा तो जब है जब कि ख़ुदा को कुरबानी पेश की जाए।

उमूमी बयान न० 8

टेलीवीज़न के नुक़सानात

मंगल, नमाज़ फ़जर के बाद, 2, जून, 1964 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

जितने भी इंसानी मसाइल है, एक सूरत के एतबार से माल का रास्ता है, माल में मसाइल के हल की सूरत नज़र आती है, हुकूमतों को अपने मसाइल का हल माल में दिखाई देता है, लेकिन हक़ीक़त में माल में मसाइल का हल नहीं है और यही माल गुरबत वालों को नज़र आता है माल का रास्ता अगर चलता है तो बहुत से बहुत मौत तक चलता है, मौत के बाद यहां का सांप बनकर कांटता है या इसी से दाग़ लगाए जाते हैं, सोने की तख़्तीयां बनाकर दोज़ख़ में गर्म करके दाग़ने का ज़रिया बनेगा। वह ज़मीन जो यहां किसी की दबाई थी और उसी में कामियाबी महसूस कर रहे थे तो आख़िर सातों ज़मीन में से लेकर इसी के गले का तौक़ बना दिया जाएगा। ज़मीन ही को ज़मीन वाले के लिए अज़ाब कर दिया गया हमने भैंस, बकरी, गाय, बढ़ाने ही में कामियाबी समझी, जानवर बढ़ा लिए माल वाले रास्ते से, फिर भी जानवर अज़ाब बन जाएंगे, हश्र के मैदान में हज़ारों भैंसों, बकरियों ऊंटों वाला पड़ा हुआ होगा और सारे जानवर उस पर से गुज़र का जाएंगे दायरे की शक्ल में, इन मालों या जानवरों की ज़कातें हुक्म खुदा के मुताबिक़ अदा न की गईं, जानवर इंतिहाई मोटे, ताज़े, खुर इनके तेज़ होंगे, ऊपर इन जानवरों के चलने की तक्लीफ़ 50 हज़ार साल बरदाश्त करेगा, भूख–प्यास मुसल्लत जिन बैगमात के साथ हम माल वाले रास्ते पर चल रहे यही कल को ख़विंदों को जूते मारेंगी औलाद भी ऐसा ही करेगी। मसाइल के हल का दूसरा रास्ता दुआ का है माल वाले रास्ते की

हर चीज़ मौत के बाद अज़ाब बन जाती है, दुआ वाले रास्ते में तक्लीफ़ अगर है तो सिर्फ़ मौत तक मौत आज भी आ सकती है। खाने या बात में मश्ग़ूल थे, मौत आ गई, जद्दा जाते हुए मर गए, मौत पर तक्लीफ़ ख़त्म और कामियाबी शुरू हो गई, कई दफ़ा ऐसा भी होता है कि खुदा मौत से पहले ही माल वाले को परेशान कर देते हैं, मुसीबतों, मुक़द्दमों व बीमारों से ज़िंदगी अजीरन कर देते हैं, बिसा अवक़ात दुआ वाले को दुनिया ही में चैन अता फ़रमा देते हैं। दुआ वाले को और इसकी नसलों की ज़िंदगी दोनो जहान में बना देते हैं, देखने में माल वाला रास्ता आसान है, लेकिन हक़ीक़त में दुआ वाला आसान है माल में ख़ारजी ज़राए की ज़रूरत है माल के रास्ते में पैसा, मकान लिबास, लिबास औरत वज़ीरों की ख़ुशआमद की ज़रूरत है माल के रास्ते में दाख़िली अस्बाब नहीं हैं,। ईमान दिल में हो या शिर्क दुकान से पैसे मिल जाएंगे, इख़्लास हो या बद–नीयती ज़मीन से ग़ल्ला मिल जाएगा, ज़मीन हो, हल हो, बीच व पानी हो, इंसानी मेहनत साथ हो, ये ज़मीने से लेने की शर्ते हैं जो सब ख़ारजी हैं, ज़िक्र करते हुए हल चलाएं, या गालियां देते हुए, शर्त नहीं है। अल्लाह चाहे तो इस ज़मीन से आंधी, सेलाब, टिड्डी की वजह से ग़ल्ला न मिले, अगर ग़ल्ला मिले तो चाहे ज़िंदगी बनाएं या बिगाड़ें दुकान की मेहनत नहीं ज़रूरत है कि जो बेचना है वह मुहय्या हो, हुकूमत मौजूदा का लाइसेंस हो, बाहर से माल मगाने पर टैक्स अदा करो, यह ज़ाहिरी शर्ते हैं। अब इस दुकान से या तो मिलेगा नहीं, मिलेगा तो आग से जल गया डाकू ले गया या उसी माल से चीज़ें मिलने दें या न, चीज़ें मिलें तो हालात बना दें या न, हराम से बचो या न, दुकान से लेने के लिए सिर्फ़ ख़ारजी शर्ते में, खुदा उन रास्तों में सब कुछ दे देते हैं लेकिन कामियाबी नहीं देते हैं कामियाबी दाख़िला चीज़ है कोठी से राहत मिले बच्चों से फरहत मिले, बीवी से रूहानी मुसर्रत मयस्सर हो ये सब बातिनी कैफ़ियत बातिनी शर्तें से ही मिलेंगी। अपने माल वाले रास्ते से बरूनी शर्ते

पूरी कर दीं, रेडियो, दुकान, बाग़, मकान, टेलीवीज़न, दुकानों पर दुकानें, कारखानों पर कारखाने बनाए, अब दिल को सुकून हासिल हो, दोस्तों और हम में मुहब्बत हो, हुकूमत से आसानी मिले, ये बातिनी कैफ़ियत बातिनी शर्तें ने होने की वजह से मिल न सकेंगी। बिल्डिंग पर बिल्डिंग बना दी, हर बेटा अपनी बीवी के साथ लगकर उसे छोड़–छोड़कर जा रहा है, बुढ़ापे में अकेला ग़मगीन है, कामियाबी उस सूरत का नाम नहीं है बल्कि अन्दुरूनी हालत का नाम है आपने डाक्टरों के मश्विरे से दवांए ली, टेलीवीज़न पर नाच देखा नाचने वाली पर दिल फंसा, तो साथ वाली बीवी में दिल ही न लगा। ना–मालूम टेलीवीज़नी की वजह से कितनी जाने ख़त्म होंगी, कितनी ख़ूद कुशियां होंगी माल वाले रास्ते में अमानत अदल, सच्चाई, किसी बातिनी शर्त की ज़रूरत नहीं है। किसी तरह माल कमाओ माल से चीज़ें बनाओ, चीज़ें घर में जमा कर लें, बंगले का कमरा दवाइयों से भर लिया, अपना मुस्तक़ील डाक्टर रख लिया, सर के दर्द को उन दवाओं में से कोई दवा दूर न कर सके तो ना–कामी है, न पेट का दर्द ख़त्म हो रहा है, यह ना–कामी है अगरचें दवाइयां ख़ूब घर में हैं, ना–कामी व कामियाबी अंदर के हालात हैं, ख़ौफ़ अंदर की (ना–कामी) का नाम है। बमबार ज़हाज़, हवाई जहाज़, बम राकेट जमा थे किसी ने इत्तिला दी कि दुश्मन फ़ौजें हमला शुरू कर चुकी हैं, अब सारी रात ख़ौफ़ में पेशाब–पाख़ाना ख़ता होने के साथ गुज़र रही है। हुज़ूर सल्ल० बोरिए, झोपड़े, अंधेरों में हैं, चिराग़ नहीं जल रहा है, पेट पर तीन दिन के फ़ाक़े की पट्टी है, लिबास फटे हुए, दिन को जिस टाट से दरवाज़े का पर्दा बंधता है रात को उसे ही बिस्तर बनाते हैं। बे–छने जौ की रोटी ज़ैतून से खाई जा रही है लेकिन इस नक़्शे में ख़ुदा ने इज़्ज़त दी कि आज तक कोठियों वाले, हज़ारों खाने वाले हाथ जोड़े खड़े हैं, आदमी के अन्दर जो हालत अच्छी या बुरी आएगी यही कामियाबी ना–कामी है। 25 लाख की कोठी 7 लाख का फ़र्नीचर, 3 लाख का खाना, 2 लाख का दवाखाना

है लेकिन अन्दर में मुहलिक बीमारी है, ख़ुशआमद करने के बाद कोई काम नहीं करता है तो यह ज़िल्लत की हालत है और अगर झोपड़े में है इसके इशारे पर लोग काम करें, बल्कि इसका काम करना अपनी इज़्ज़त समझें तो यह इज़्ज़त है। इसी लिए ख़ुदा ने कामियाबी के लिए अन्दर की शर्तें लगाई हैं, कमाने, दुकान चलाने, दवाख़ाने में तरीक़े दुआ वाले हुज़ूर सल्ल० से इख़्तियार करो, हुज़ूर सल्ल० ने जिस काम जो तरीक़ा बताया है इस काम को इस तरीक़े पर करने से दुआ कुबूल होगी। कामियाबी यह है तो हालात अन्दर की अच्छी हो, शेर या वज़ीरों को गिरोह क़ातिलों के हमराह मौजूद है लेकिन अन्दर इत्मिनान है तो यह कामियाबी है, संगीन पहरों के अंदर भी डर है तो यह ख़ौफ़ है बारिश की वजह से सबके कपड़े भीगे, लिहाज़ा सहाबा ने धूप के एतबार से दूर दूर पड़ाव डाला। हुज़ूर सल्ल० कपड़े और तलवारें पेड़ पर टांगकर लेट गए, उस इलाक़े के एक बहादुर ने इस मौक़े को ग़नीमत समझा, पहाड़ से नीचे उतरा, पेड़ पहाड़ की जड़ में था उतरकर उसने तलवार सौंत ली, सब साथी दूर, क़त्ल होने से पहले कोई मदद को नहीं पहुंच सकेगा। बा–ज़ाहिर तलवार सौंतने वाला कामियाबी में है, लेकिन हुज़ूर सल्ल० निहायत इत्मिनान से फ़रमाते हैं कि अल्लाह बचांएगे और कपकपी की वजह से तलवार गिर जाती है अब तलवार लेकर फ़रमाया, तूझे कौन बचाएगा, जो लफ़्ज़ अल्लाह सुनकर तलवार हाथ में होते हुए कपकपा गया उसकी तो सिटी गुम हो गई जब तलवार अल्लाह वाले के हाथ मे होगी नक़्शे का नाम कामियाबी नहीं है लोग समझते हैं कि हाथियार बहुत हो तो कामियाबी ज़रूरी नहीं है हो सकता है कि दूसरा मारने लग जाए। हम हाथियार अपनी मौत के डर से न इस्तेमाल करें, हिम्मत नहीं लाठी हीं पास है, लेकिन मौक़ों पर उसे चलाने की हिम्मत है तो कामियाबी है, तुर्क मार खा रहे हैं, अगरचें कितनी बड़ी फ़ौज इसके पास है कामियाब, ना–कामी अंदर की कैफ़ियत का नाम है, दुआ वाले रास्ते कामियाबी यक़ीन है दुआ

वाला रास्ता दाख़िली है ख़ारजी नहीं कुछ पास नहीं है न हुकूमत न जानवर, न नक़्दी, न खाना है तो भी दुआ वाला बन सकता है। सब कुछ पास है तो भी दुआ वाला बन सकता है, सुलैमान अलै० हुकूमत के नक़्शे में, हज़रत ईसा अलै० ज़ाहिर के नक़्शे में दुआ वाले थे, ईसा अलै० सारी दुनिया को लात मारकर चले सिर्फ़ तकिया और प्याला साथ लिया एक जगह देखा कि एक शख़्स चिल्लू से पानी पी रहा है दूसरा कुहनी को तकिया बनाकर सो रहा है तो प्याला और तकिया दोनों को फेंक दिया, यह भी दुआ वाले हैं हज़रत सुलैमान अलै० के हां सारे करोफ़र जिन्नों, हैवानों, इंसानों पर हुकूमत है हवा भी मुस्ख़र, सब साथ चलते हैं लेकिन दुआ वाले हैं आदमी हर हाल में दुआ वाला बन सकता है बस अंदर की कुछ शर्तें पूरी कर दें। कुछ सहाबा बारह आने के कपड़े में ज़िंदगी गुज़ार गए, जैसे (हज़रात) अली, उमर और सलमान रज़ियल्लाहु अन्हुम कुछ हज़ार के जोड़े पहनने वाले हैं, जैसे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० और सब दुआ वाले हैं जो दाख़िली शर्तें पर पूरा उतरेगा वही कामियाब और दुआ वाला। एक आदमी चला हर एक उसे इज़्ज़त से देख रहा हैं यह कामियाबी वाली हालत है, इसी वजह से कालों, गौरों, कमज़ोरों, ताक़तवारों, ग़रीबों, अमीरों, सबको निदा लगती है। अल्लाहु अक्बर, सिर्फ़ अल्लाह बड़े हैं बाक़ी सब छोटा, फिर اشہد ان لا الہ الا اللہ तरक़ीब व तदबीर से अस्लाह व तमआ से फ़ौजों व असाकीर से कामियाबी व हिफ़ाज़त व इज़्ज़त व सेहत नहीं है अल्लाह के देने से यह कामियाबी मिलेगी, वह बग़ैर दवा के सेहत देते हैं, अल्लाह से कामियाबी लेने का ज़ाब्ता اشہد ان محمد ارسول اللہ है हुज़ूर सल्ल० बताएंगे, حی علی الصلوٰہ حی علی الفلاح हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुदा की तरफ़ से कामियाबी के हक़ाइक़ का मिलना नमाज़ पर बताया है, ख़ारजी हिस्सा नमाज़ का तो यहूदी नसराई, मिलहद व हिन्दु व सीख, इख़्तियार कर सकते हैं, सी, आई, डी को

हर मज़हीब के इस्लाम की नमाज़ क़िरात और मसाइल से वाक़ज़ियत लेनी पड़ती है। उन्हें तहज्जुद, तस्बीह की आंख से रोज़े की मश्क भी करनी पड़ती है, जैसे यूरोप में मसनूई रोना सीखाया जाता है, वग़ैरह मुस्लिम नमाज़ के जितने आमाल कर सकता है उतने आमाल में कामियाबी नहीं है। बस नमाज़ के जितने आमाल ग़ैर–मुस्लिम नहीं कर सकता हैं उनमें ही असल कामियाबी है, ईमान व इख़्लास, अल्लाह के ध्यान हुज़ूर सल्ल० के बताए हुए तरीक़े के लेने की उम्मीद और ग़लत आमाल की सज़ाओं के ख़ौफ़ के साथ नमाज़ अदा नहीं कर सकता है। कामियाबी की जड़ें वह हैं जो ग़ैर मुस्लिम नहीं ले सकता है, कामियाबी की हक़ीक़त नमाज़ से मिलेगी, दिलों में तुम्हारी मुहब्बत व इज़्ज़त बैठे, तुम्हारे पड़ोसियों में तुम्हारी मुआवनत का जज़्बा पैदा होगा, नमाज़ का वह हिस्सा इख़्तियार कर लो जिसे नसरानी बुत परस्त, यहूदी इख़्तियार नहीं कर सकते हैं, यह तो नमाज़ की सूरत पर आ सकते हैं, सी आई डी वाले मुसलमानों के हालात मालूम करने के लिए हज भी करेंगे। तुमसे पहले आएगा, तुमसे अच्छी तस्बीह होगी, शायद तुमसे ज़्यादा कंकरियां 9, 10 जुमरा को मार दे, इबादत के अन्दर का नूर नहीं बन सकता है अगर वह अन्दर की चीज़ें हासिल कर ले तो ग़ैर मुस्लिम नहीं है, अगर अन्दर की चीज़ नहीं है तो यह सी आई डी दग़ा बाज़ है, नमाज़ी नहीं है, दवा वाले रास्ते से सारे मसाइल हल होते हैं, ख़ुदा ने तमाम मरकज़ अंबिया दुआ वाले ख़त्म कर दिए। सिर्फ़ मक्का और हुज़ूर सल्ल० का शहर मर्कज़ बाक़ी है बैतुल्लाह पर भी दुआ हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े से ही कुबूल होगी, हर–हर अमल, शादी, मुलाक़ात करना, खाना–पीना, मकान बनाना, हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े पर हो, अब जो इस तरीक़े पर आ गया वह दुआ वाला बन गया, तरीक़े में एक सूरत है एक सीरत। असल कामियाबी सीरत के तरीक़े से मिलती है, सूरत के तरीक़े से मक़सूद सीरत तरीक़ा बनाना है, 'हय्या अल्ल सला' नमाज़ की जिन अंदरूनी कैफ़ियत से इल्म के तासीर,

रहबत व रग़बत ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ इस्तिसर क़लब को ग़ैर–मुस्लिम हासिल नहीं कर सकता है उन कैफ़ियत के साथ नमाज़ अदा करो, ग़ैर मुस्लिम कुरआन व हदीस की अंदर की बातों को जान सकता है लेकिन इसमें इल्म मुहम्मदी सल्ल० का तासीर न होगा, कुरआन व हदीस को अजम व मुस्लिम इतना नहीं जानते हैं जितना हज़रत मुहम्मद सल्ल० के ज़माने में अबू जहल, अबू लहब व मुश्रिकीन मक्का जानते थे, इल्म का ताअसर आ गया तो ग़ैर मुलिम न रहेगा, हुज़ूर सल्ल० ने कुरआन पढ़ा अबूबक्र रज़ि० व उमर रज़ि० व मुहाजिरीन व अंसार ने भी मुश्रिकीन मक्का ने भी सुना, सबने उसे समझ लिया लेकिन मुस्लिम सहाबा रज़ि० मुतासिर हो रहे हैं, कुफ़्फ़ार पर ज़रा ताअसर नहीं है। हज़रत अबूबक्र की कमर एक आयत के सुनने से टूटने लगी थी, लेकिन हम तर्जुमे के साथ कुरआन पढ़ लें तो भी कोई ताअसर हममें पैदा नहीं होता, नक़्शा कौन–सा भी हो, इसकी फ़िक्र न करो, तुम नमाज़ की सीरत और सूरत इख़्तियार करो, ख़ुदा की वह आवाज़ जो फ़रिश्ता देकर गया है हर जगह लग रही है और हर एक को मुख़ातिब बनाया जा रहा है कि कामियाबी लेनी है तो नमाज़ की हक़ीक़त तैयार करके ख़ुद को नमाज़ वाली नहज पर डालो, नमाज़ में पहले नमाज़ की तैयारी है फिर नमाज़ है, फिर दुआ है नमाज़ की तैयारी ज़ाहिरी भी है और बातिनी भी, वुज़ू किया पाक कपड़े पहने, घर छोड़ा, मस्जिद में आकर क़िब्ला रूख़ होकर खड़े हो गए, बातिनी तैयारी है कि जिन चीज़ों से निकल आए हो उनके यक़ीन व तलब को ख़ुद में से निकाल लो, चीज़ों में से ख़ुद निकलकर आ जाना तो सहल है लेकिन इनके दिल से निकाल देना मुश्किल है, दिल के आइने में है तस्वीर यार, जब ज़रा गरदन झुकाई देख ली चीज़ों से निकलना पहला क़दम है और सूरत है चीज़ों की तलब व यक़ीन को दिल से निकाल देना, दूसरा क़दम है और सीरत है हुज़ूर सल्ल० नुबूवत के बाद तिजारत, ज़राअत, मुलाज़मत, मज़दूरी में नहीं लगे हम इन कामों में निकलें जो हुज़ूर सल्ल० के हां

न थे उन आमाल की तरफ़ जो इनके हां थे। यक़ीन बनाया जाए कि जिन चीज़ों हुज़ूर सल्ल० न थे उनमें कामियाबी नहीं है, बल्कि उन आमाल से कामियाबी है जो हुज़ूर सल्ल० के पास थे, एक ता:सीर से दूसरे तासीर के तरफ़ एक यक़ीन से दूसरे यक़ीन की तरफ़ निकले, ऐसी नमाज़ की बाद की दुआओं से मुसल्लत होने वाली ज़ालिम हुकूमत ख़त्म होगी। ज़ालिम पड़ोसी भी जाएगा या सीधा हो जाएगा, इन्हीं दुआओं से बीवी के दिल व आंख की ठंडक बनेगी, चीज़ों के यक़ीन व तासीर से आमाल के यक़ीन व तासीर की तरफ़ आना है। पानी से बाहर के हिस्सों को पाक करो, तो यक़ीने से अन्दर को पाक करो, बग़ैर बिस्मिल्लाह के वुज़ू से सिर्फ़ अज़ा वुज़ू ही पाक होते हैं और अगर यक़ीन तलब व ध्यान से बिस्मिल्लाह कहकर अज़ाए वुज़ू धोये तो सारे आज़ा पाक हो जाएंगे। इसके लिए उस मस्जिदों के लिए वे आमाल तजवीज़ किए गए जिनसे अंदर की माया तैयार हो, इन्हीं आमाल के न रहने की वजह से अन्दर के यह माया पैदा होनी बन्द हो गई है। नुबूवत के चौदवें साल में मस्जिद नबी है, इन चौदाह सालों में जो सीखाया है उसी के लिए मस्जिद नुबूवी बनी है, कलिमा बोलो, कलिमा सुनो, कलिमा समझो, कलिमा समझाओ, अब मुसलमान ने कलिमा बोलना शुरू किया, दुनिया से अलग–अलग चीज़ों के होने के बोल–चाल रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने आवाज़ लगाई 'ला इलाह इल्लल्लाह' अल्लाह के बग़ैर तुम्हारी किसी चीज़ से कुछ न होगा और अल्लाह से चीज़ों के बग़ैर सब कुछ हो जाएगा। हज़रत इस्माइल को खेती बाग़ और ग़ल्ला के बग़ैर रेतीले मैदान में ख़ुदा ने पाल दिया, दूसरी तरफ़ बहुत से लोगों को ख़ुदा ने खेतों, बाग़ों में ख़त्म कर दिया, नार, बतन हौत, कुवां में हिफ़ाज़त करें, जेल से वज़ारत पा ले जाएं। सारा मुल्क अरब क़त्ल मुहम्मद सल्ल० का ख़्वाहां था, लेकिन वे मारने वाले आशिक़ ज़ार बने या मार दिए गए, अबू जहल दुश्मनी पर मरा, अबू जहल के बेटे वग़ैरह दोस्त बन गए अबू लहब वैसे ही मर गया तो उसके बेटे

बेटी दोस्ते पर मरे, दुर्रा रज़ि० बिन्त अबी लहब हिजरत करके हब्शा आई तो किसी ने कह दिया कि तेरी हिजरत से क्या होता है ? और

تبت يدا ابى لهب وتب सूरः पढ़ दी। हुज़ूर सल्ल० से दुर्रा रज़ि० ने आकर कह दिया तो हुज़ूर सल्ल० ने सबको जमा करके कहा, मेरी शिफ़ाअत तो दूर तक के रिश्तेदारों तक पहुंचेगी, तो क्या तुम इस क़रीब के रिश्तेदार की रियायत नहीं करते हो, इसे न कहो। अमेरीका से रूस तक, राकेटों से डंडों तक से सिर्फ़ वही होगा जो खुदा चाहेंगे अल्लाह से उनके बग़ैर सब कुछ हो जाएगा, दूसरी आवाज़ थी, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह ग़ैरो, जहाज़ों, मकानों, डाक्टरों, इंजैक्शन दवा के बग़ैर खुदा कामियाब करेंगे, लेकिन हुज़ूर सल्ल० की इताअत व मुहब्बत के बग़ैर कामियाबी न देंगे। औलिया, जंगलों में जा पहुंचे, ज़िक्र इबादत व अख़्लाक़ मुहम्मदी सल्ल० की मश्क़ कर ली, इन्होंने कुछ न बनाया था लोग हर तरफ़ से इनकी तरफ़ आए तो इन्होंने इनकी ख़ानक़ाह बना दी थीं। हुज़ूर सल्ल० ने ऐसी मस्जिद न बनाई थी, सिर्फ़ ज़मीन ख़रीदने का ख़र्चा इस मस्जिद में था और दरी, रोशनी, पानी तक का इंतिज़ाम न था, कुछ दूसरें कुवों से वुज़ू कर लिया करते थे, इस मस्जिद के लिए एक कुवां तक न था मस्जिद के अन्दर सर्दी गर्मी व बरसात घुस जाती थी, गर्मी की शिद्दत की वजह से कई बार सहाबा रज़ि० तपती हुई कंकरियों पर सज्दा करते थे। इब्ने उमर रज़ि० का कहना है कि इस मस्जिद पर लेटते तो

काफ़िर तक इस मस्जिद में रहते थे कि इस्लाम का फैलना मक़्सूद था, बाहर से एक शख़्स आए, यहां मस्जिद में दावत, तालीम, हलक़ा, इल्म ज़िक्र व नमाज़ से फ़रागत के बाद इशा पढ़कर सब बैठे रहते। हुज़ूर सल्ल० किसी बीवी के घर से बाहर आते तो मकामी व बेरूनी सहाबा रज़ि०, जमा हो जाते और बाहर वाले सहाबा रज़ि०

मक़ामी लोगों पर तक़्सीम कर दिए जाते हज़रत साद रज़ि० बिन उबादा रोज़ाना 80 मेहमान ले जाते, सबसे बच जाते तो आप उन्हें बना लेते। जहजा गिफ़ारी रज़ि० का क़िस्सा है कि सहाबा रज़ि० ने मुझे बहुत मोटा, लम्बा तडंगा देखा तो सबने मुझे छोड़ दिया कि अकेला बहुत सो का हिस्सा खा जाएगा, मैं मुश्रिक था, हुज़ूर सल्ल० मुझे मस्जिद से ले गए, सबसे पहले उसे ही दिया, सातों बकरियों को सारा दूध पी गया, फिर खाने की चीज़ भी सारी खा गया, सारे घरवालों का हिस्सा खा गया। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० की ज़ुबान से निकल गया, अल्लाह इसका पेट न भरे जिसने आल रसूल को भूखा रखा, हुज़ूर सल्ल० ने झड़का कि ये तो था ही इसकी क़िस्मत का, उसी ने खाना था अब अगले दिन जहजा रज़ि० और इसके साथी आपस में बातें करने लगे कि हमने इतना खाया, अगले दिन जहजा रज़ि० फिर हुज़ूर सल्ल० के हिस्से में आए, किसी सहाबी रज़ि० ने उन्हें न लिया, इस जहजा को लेकर हुज़ूर सल्ल० घर पहुंचे तो सारे घरवाले घबरा गए कि कल को भी यह सारा खा गया था आज यह खाएगा फिर दो दिन की भूख हो जाएगी, खै़र हुज़ूर सल्ल० ने दूध लाकर रखा, तो उसने सिर्फ़ एक बकरी का दूध पीया और बाक़ी चीज़ों में भी कम खाया, घरवालों ने कहा, आज क्या दूसरा आदमी है ? हुज़ूर सल्ल० फ़रमाया नहीं, मोमिन एक अतड़ी में खाता है और काफ़िर सात में मस्जिद में वे आमाल तो है ही नहीं जो उस ज़माने में चलाए गए थे। सिर्फ़ चीज़ें रह गई हैं, आज के क़ैसर व किसरा हम मुसलमानों को नचा रहे हैं, लेकिन सहाबा रज़ि० ने किसरा व कैसर को नचाया था, चीज़ों के बग़ैर आमाल मुहम्मद सल्ल० से कामियाबी मिल सकती है। लेकिन आमाल के बग़ैर चीज़ों से कामियाबी मिल नहीं सकती है, हज़रत अम्मार पर अंगारों पर डाला गया, सीने पर सिल्ली रख दी गई, हज़रत उस्मान रज़ि० को उनके चचा ने मश्क़ में लपेटकर आग की धूनी दी, इस तरह की मुसीबतों के बरदाश्त करने से यह कलिमा दिल में उतारा

गया, एक-एक को जाकर पकड़ना उसे भी कलिमा समझाना, जो कलिमा पढ़ रहा है वह इसी काम में लग रहा है। अगर किसी जगह की पब्लिक लगे काम में, मुसीबतें आने लगीं तो मिसाले दी जाएंगी कि अमेरीका वालों ने ऐसी-ऐसी तक्लीफ़ें बरदाश्त कीं तो आज़ादी ले ही ली, अब कलिमा के काम करने वालों जमाने के लिए गुज़रे हुए रसूलों के क़िस्से कुरआन में ख़ूब लाए गए। इस्लाम के ख़िलाफ़ ज़िना, सूद, क़ौमियत व लसानियत ने बार-बार क़दम उठाए, लेकिन कुदरत ख़ुदा उन्हें ख़त्म करती रही, कलिमा का अलफ़ाज़ ज़ुबान का बोल न रहे, दिल का यक़ीन बन जाए, हर एक इंतिक़ाल के वक़्त इसी दावत में लगा रहा। हुज़ूर सल्ल० भी नज़ाअ के वक़्त भी सलात की तर्ग़ीब देते रहे, हज़रत अली रज़ि० ने इंतिक़ाल के बाद सीने पर कान रखकर सुना तो सलात का लफ़्ज़ महसूस हुआ, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुस्लिम होते ही छः अकाबिर सहाबा रज़ि० को मुस्लिम किया था, तो इंतिक़ाल के वक़्त यही फ़िक्र है कि हमारे ही यह उम्मत ठीक चलती रहे सिर्फ़ मेरा क्या होगा ? इसका फ़िक्र हज़रत अबूबक्र रज़ि० को नहीं है जैसे कि हुज़ूर सल्ल० भी उम्मत की फ़िक्र में ही जान देते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० को मकान इसी मस्जिद के अंदर आ चुका है। हज़रत अबूबक्र रज़ि० नज़ाअ के वक़्त भी उम्मत के बारे में मश्विरे कर रहे हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा उमर रज़ि० कैसा है ? किसी ने कहा, उमर रज़ि० उससे ज़्यादा अच्छा है जितना तुम समझते हो, एक ने दुआ मांगी ऐ ख़ुदा जो उम्मत के लिए ख़ैर है उसे ही मुक़र्रर कर, बेहोशी की हालत में लिखवाते रहे, हज़रत उमर रज़ि० बुलाकर नसीहतें कीं, कुरआन व हदीस पर चलना मेरे अमल को पकड़ना कि मेरा हर अमल ज़रूर किसी न किसी हदीस की बुनियाद पर होगा, चाहे वह हदीस तुम्हें मालूम न हो, हज़रत उमर रज़ि० गए तो दुआ देते रहे, फिर कहा, ऐ ख़ुदा जो सबसे अच्छा था उसे अमीर बनाकर जा रहा हूं, आगे तो उसे दुरूस्त रखे तो तेरी मर्ज़ी, किसी ने कहा, उमर रज़ि० तो सख़्त

है कहा, मुझे न बताओ, फिर कहा अल्लाह से मुझको डराते हो, हालांकि अल्लाह को तुमसे ज़्यादा जानता हूं, सबसे अच्छे को मुक़र्रर करके जा रहा हूं सख़्त नर्म को नहीं जानता हूं। बीवी हामला थीं, हज़रत आइशा रज़ि० से कहा कि इस पेट वाले का मिरास में ख़्याल रखना, हज़रत अबूबक्र रज़ि० आख़िरी वक़्त तक उम्मत की तरफ़ मुतवज्जोह रहे, हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ हज़रत उमर रज़ि० में और इसमें यहां थोड़ा-सा फ़र्क़ है, हज़रत उमर रज़ि० ने पहले फ़िक्र अपनी की कि मेरे लिए आइशा से हुजरे में दफ़न होने के लिए इजाज़त मांगो, क्योंकि हज़रत आइशा रज़ि० ने वह जगह अपने लिए रखी थी। हज़रत आइशा रज़ि० ने तर्जीह उमर रज़ि० को ख़ुद पर दे दी, इसके बाद हज़रत उमर रज़ि० ने उम्मत की फ़िक्र फ़रमाई कि छः आदमी मश्विरे करने के लिए मुक़र्रर किए ज़ाहिर है कि हज़रत अबूबक्र पहले थे हज़रत 121 वें यह काम चलेगा कलिमे की दावत के साथ साथ तालीम कुरआन से। मक्का के तेरह साल के कुरआन में आगे के दे दे हैं या गुज़रे हुए क़िस्से थे, सबको इस तालीम में लगाया, दावत की क्या क्या शर्तें हैं, दाई कैसे मदऊ से कैसे इंतिफ़ाअ से बे-नियाज़ हो ? ईमान व यक़ीन से मुताअलक़ा तालीम ईमान से इफ़्तीतह हुआ, फिर जो अमल आता रहा उसकी तालीम चलती रही, साथ के साथ कसरत से ज़िक्र ख़ुदा होने लगा, फ़ाक़ों में बीवी को ख़ुशआमद करने में, बच्चों को मचलने में भी ख़ुदा का ध्यान बांधे जाने लगा। एक दूसरे की ज़िंदगी को बनाने में लगो, ताउन बाहेमी, ये आमाल नमाज़ से भी पहले आए छठी चीज़ इख़्लास है इन तमाम औसाफ़ वाला नमाज़ में लगा तो नमाज़ की हक़ीक़त को जो पहुंचा, उन आमाल से नमाज़ का बातिन तैयार होगा, ऐसा माहौल बने जिससे सौ फ़िसद नमाज़ी बातिनी सिफ़ात से मज़ीन हों। अब यह ख़ुदा का हाथ हम पर पड़ रहा है कि बहुत बड़ी माया मौजूद है इससे मुंह फेरकर तुम ईरान तौरान को खाने जोते हो, ज़रा तो मेहनत करके अंदरूनी ताक़त हासिल कर ले, काफ़िर की ज़िदगी से

खुद को मुमताज़ कर ले, इसके लिए मस्जिद के अन्दर आमाल वाला माहौल बनाओ। आज मेहनत न होने की वजह से नमाज़ रह गई लेकिन अंदर से ख़ाली है हक़ीक़त व सीरात निकल गई, अब सारी ज़िंदगी नमाज़ के ठीक होने पर की हुई है, नमाज़ ठीक हो गई, अमल से ज़िंदगी बनने का यक़ीन आ गया तो फिर सारे आमाल सहल हो जाएंगे, ऐसी नमाज़ बनाओ जिसके बाद की दुआ कुबूल हो, अगर एक आदमी हज़ारों को मेहनत करके अच्छे माहौल में ला खड़ा करे तो उन हज़ारों का सवाब हासिल करेगा, वक़्त, माल व जान की एक तर्तीब क़ायम करे, कि यही हमारे बस में है। इससे आगे सही माहौल ख़ुदा ही पैदा करेंगे, इन गुज़रे हुए आमाल को जहां कर लोगे वहां ही माहौल दें और बन जाएगा। हुज़ूर सल्ल० ने इस माहौल को ज़िंदा करने पर सबको एक ख़ास तर्तीब पर डाला था, फिर वे उन आमाल को करते हुए और इन्हीं आमाल को अपनी मस्जिदों में चलाओ, वफ़ूद अपने यहां लेकर आओ, आधा वक़्त मस्जिद का, आधा घर दुकान को, बारह घंटे खाने-कमाने के, बारह घंटे मस्जिद के अंदर लगें, यहां तक पहुंचने की नीयत करके साल के चालीस दिन, महीने में तीन दिन, मस्जिदों में तालीम एक दो घंटे की रखो, जितना माहौल मसाइद होता जाए उतना ही उसे बढ़ाते जाएं, अब भी लोग चीज़ों की हिफ़ाज़त के वास्ते 25 30 रियाल पर इस मस्जिद में पड़े हुए हैं, जैसे अपनी कोठी की हिफ़ाज़त करवाते हैं ऐसे ही मस्जिद को कोठी बना लिया, तो उसकी हिफ़ाज़त की ज़रूरत है लेकिन जो माल दे रहा है वह जान लगाकर मस्जिद का माहौल नहीं बना रहा है। अत्तिहीयात व सूरतें, कुल हुवल्लाहु सीखना सिखाना छोटा अमल समझते हैं, किताब पढ़ने में शामिल है तो उसे बड़ा समझते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इसी मस्जिद के मिंबर पर सबको अत्तिहीयात सिखाई, हुज़ूर सल्ल० ने मिंबर के पहले दिन में मिंबर पर ही नमाज़ सिखाई, रूकूअ तक मिंबर पर अदा किया, सज्दा ज़मीन पर उतारकर किया, क्योंकि मिंबर पर सज्दा न हो सकता

था। हुज़ूर सल्ल० ख़ुद सफ़ों को सीधा करते फिर रहे हैं, लकड़ी हाथ में होती थी, अब चूंकि नमाज़ से कामियाबी नहीं समझी जाती है इस वजह से इसकी तरफ़ तवज्जोह नहीं है एक सहाबी रज़ि० को पेट सबसे आगे निकल रहा था हुज़ूर सल्ल० ने सख़्ती से डांटा कि सफ़ें टेढ़ी कीं तो दिल सख़्त होंगे। हज़रत उमर रज़ि० आदमी भेजते, जो सफ़ें आख़िर तक की सीधी करके आता फिर नमाज़ करते, दौरे ख़िलाफ़त अलहिया में ऐसा ही होता रहा, क्योंकि सबके सामने था कि सिर्फ़ नमाज़ ही से दोनों जहां की हर चीज़ ले सकते हैं असल काम नमाज़ है नमाज़ में चाहे जितना वक़्त लग जाए कभी नमाज़ आज़ान होते ही पढ़ देते, कभी दो चार घंटे ताख़ीर कर लेते, حتی ذھب عامۃ اللیل
कुछ दफ़ा आधी रात को इशा पढ़ी, अज़ान से नमाज़ तक आमाल मस्जिदों में ही होते रहते। हज़रत अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हु सुबह सादिक़ से तुलूअ शम्स के क़रीब तक में चार पौन चार सिपारे पढ़ते, हज़रत अबूबक्र ने फ़जर को सलाम फेरा तो हज़रत उमर रज़ि० छत पर चढ़ गए, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा क्या देखते हो ? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, सूरज को हज़रत अबूबक्र "لو طلعت لم تجدنا غافلین"
हज़रत उमर रज़ि० इस तरह से पढ़ते तो आख़िरी सफ़ तक वाले चीख़ों से रोते, अब किसी ने अव्वल वक़्त ले लिया, ग़लस में ही नमाज़ ख़त्म कर दी, किसी ने आख़िरी वक़्त इसफ़ार का ले लिया, ग़लस से इसफ़ार तक की नमाज़ न रही, न घुटनों में जान रही न आंखों में आंसू कहीं तो ख़ुद नमाज़ में घंटे लगते हैं, कहीं नमाज़ के इंतिज़ार में घंटे लग रहे हैं, इस तरह से नमाज़ का माहौल बना था, बस आज जज़ियात पर लड़ झगड़ रहे हैं कि तुझमें ईमान नहीं है तू मुश्रिक है हालांकि जिस यक़ीन पर हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने उठाया था वह किसी के पास नहीं है न इनके वाले आमाल है तो अब बोलो हिम्मत करो, मस्जिद नुबूवी में हिम्मत न करोगे तो कहां करोगा ?

उमूमी बयान न० 9

सारे नबियों की मेहनत का नूर दावत में है

दिन जुमेरात, 12, जुलाई 1962 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

मेहनत की दो क़िस्मे हैं और क़िस्म में मेहनत के दो दर्जे हैं हर क़िस्म के साथ अल्लाह तआला के मामलात अलग अलग हैं, एक क़िस्म तो वह है जो दुनिया में राइज है, पहले दर्जे में माल पर मेहनत करके माल तक पहुंचना, माल ही पर यक़ीन करना, माल से चीज़ें हासिल करना, चीज़ों को तर्तीब देकर चीज़ों के नक़्शों से पलना, यक़ीन भी इंसान का माल का ही है, तर्तीब इस्तेमाल भी माल ही के एतबार से है, अमल का म्यार भी माल ही के एतबार से है। यह रास्ता इंतिहाई सफ़ली इंतिहाई ज़लील घटिया, इंतिहाई मबग़ूज़ ख़ुदा के हां है इस रास्ते में धोखा लगता है हम कामियाब बन रहे हैं, इंसान चीज़ें देखता रहता है, ख़ुश होता रहता है और रात दिन इसी की तर्तीब को उस पर चलाता रहता है जान लगाकर माल बढ़ाना, माल बढ़ाकर नक़्शा बनाना। जब इंसान ग़लू के दर्जे में पहुंचता है तो तमाम आमाल का म्यार ग़लत हो जाता है, यक़ीन की तमाम हदें बिगड़ जाती हैं, इज़्ज़त की शक्लों में अटकता है और ज़िल्लत में मुबतला कर दिया जाता है अगर हालात के बिगाड़ से आंख न खुले तो अल्लाह इसकी चीज़ों को बिगाड़ते हैं। अल्लाह और अल्लाह के रसूल और सारे दाना इंसान पहले दर्जे को ना–कामी कहते हैं लेकिन यह शक्लों की वजह से नहीं समझता तो अब दूसरा रुख़ लाते हैं, ज़मीन डूब गई, बच्चे मरने लगे, मगर अब भी समझ

में न आई, हम सहारनपूर से मोटर कार में बैठे हुए आ रहे थे, बारिश हो गई, पानी बहुत ड्राइवर ने गाड़ी बहुत तेज़ कर दी मोटर की तरफ़ भैंस आ गई, गाड़ी सिलीप हो गई, ड़राम पर से गुज़रकर नीचे उतर गई, सामने पेड़, गड्ढे में अटक गई। ड्राइवर कोशीश कर ले कि अब गाड़ी निकल जाए, गाड़ी निकलने में ख़तरा था लेकिन वह कोशीश करता ही रहा पहले इस तरह गाड़ी चलाता रहा, यह न सोचा कि अब रोकना बेहतर है, तो इसी तरह मौत आ जाएगी। एकदम ज़िंदगी टूटेगी, क़ब्र में चीख़ मारता है तो मश्रिक से मग़्रिब तक के सब जानवर सुनते हैं, हश्र का और सख़्त मंज़र है, क्योंकि मुललमान एक तरफ़ तो क़ायल है सारी बातों का और एक तरफ़ इसी रास्ते पर चल रहा है, नतीजा क्या निकला, आख़िरत में मुसीबतों से निमटकर जन्नत दे देंगे और इस दुनिया में मुसीबतें डालते रहेंगे, इसलातन यह रास्ता गैर–मुस्लिमों का है दूसरा रास्ता बिल्कुल अलग मुक़ाबला का है, कहीं जोड़ नहीं इस रास्ते के साथ, पहले मेहनत करके हिदायत हासिल की जाए, इतनी मेहनत की जाए कि हिदायत मिल जाए। हिदायत माल के मुक़ाबले में एक माया है इस माया के लेने के लिए माल के मेहनत के मुक़ाबले में हिदायत की मेहनत है, हिदायत के मिलने के बाद फिर मेहनत की जाएगी जैसे माल मिलने के बाद मेहनत की जाती है घरवाले भी मेहनत करते हैं, कपड़े मिल रहे हैं, बिस्तरे बन रहे हैं। गोश्त भून रहे हैं वह बाहर से चीज़ें लाकर डालता है, हिदायत मिलने के बाद 24 घंटे अपने अमल ठीक बनाने पड़ते हैं मस्जिदों के, कमाई के, अदालती, मुआशरती, खलूत के अमल ठीक करने पड़ते हैं, जब यह अमली मेहनत पूरी हो जाए और इंसान के सर से लेकर पैर तक अमल का म्यार क़ायम हो जाए तो अल्लाह पाक कामियाब करके दिखाते हैं। अल्लाह तआला इनको उहूदें माल भी दे देंगे, पहले मुक़ाबला किया है पहला मुक़ाबला यही है कि हिदायत लेने के लिए मेहनत की जाए और माल की मेहनत से अपने आपको निकाला जाए, हिदायत का काम है, जो कुछ माल में चीज़ें

दिखाई देती हैं वे सारी की सारी आमाल में दिखाई देने लगीं, हमें अपनी मेहनत में माल दिखाई देता है, हिदायत क्या होगी, जब हम हिदायत वाली मेहनत करेंगे तो अल्लाह माल देंगे, अल्लाह इसी मेहनत पर चीज़ें देंगे अल्लाह इसी मेहनत पर कामियाबी देंगे वे अमल हैं जब हम इन पर मेहनत करेंगे तो अल्लाह हमें हिदायत देंगे। सारा कुरआन पढ़ जाओ कुरआन हिदायत है यह है कि किताब, इसके अन्दर जो बतलाया है अगर वे तुम्हारे दिल में आ गया तो हिदायत मिल गई और अगर नहीं आया तो नहीं मिली हिदायत, कुरआन पाक में अव्वल तो अक़्वाल के ज़रिए सब कुछ आमाल में बतलाया है, अक़्वाल के ज़रिए यह बतलाया कि माल से चीज़ें नहीं मिलतीं, चीज़ों से हिफ़ाज़त नहीं होती चीज़ों से इज़्ज़त नहीं मिलती। अल्लाह तआला ज़िंदगी बनाते हैं वही बिगाड़ते हैं, हिफ़ाज़त वही करते हैं, मुतमइन वही करते हैं, अल्लाह ने अपने अक़्वाले मुबारका के अन्दर पूरी की पूरी कामियाबियां जो चीज़ों में नज़र आती हैं वे अमल में बतला रखी हैं पूरे कुरआन के अन्दर अव्वल से आख़िर तक ख़ुदा का आमाल पर ज़िंदगियों का बनाना। आमाल की ख़राबी पर ज़िंदगियों को बिगड़ना, सन्अत वालों के अमल ख़राब थे, सन्अत वालों को ख़त्म कर दिया, इब्राहीम अलै० और इनके साथियों के अमल अच्छे थे, हमने इनकी ज़िंदगी को कामियाब बना दिया, नमरूद की हुकूमत की ज़िंदगी को किस तरह बिगाड़ा अमल ख़राब हैं हमने इनकी ज़िंदगी को बिगाड़ दिया, नाकाम कर दिया। हुज़ूर सल्ल० के तशरीफ़ लाने तक सारी तारीख़ बयान की है कुरआन में कि अमल से कामियाबी होगी चीज़ों से कामियाबी न होगी, जब वे अमल होंगे जिनसे नाकामी आती है, मुल्क व माल के चाहे जितने बड़े नक़्शे बन जाएं नाकामी होगी। हिदायत हासिल करने के लिए मेहनत करनी पड़ेगी, एक मेहनत की, एक मेहनत हिदायत की जहां दो का मुक़ाबला पड़ जाए हिदायत वाली मेहनत कर ले माल वाली मेहनत को छोड़ दे, जो बात हमारे दिल में आ रही, जैसे दवा इंजैक्शन में है तो तू कैसे तंदरुस्त हो

जाएगा, ताक़त इंजैक्शन में है तो तू कैसे ताक़तवर हो जाएगा, तू तो ताक़तवर जब होगा जब इंजैक्शन की तक्लीफ़ उठाएगा, चारपाई पर पड़ा पड़ा कह रहा है हज़ार इंजैक्शन है मेरे पास, कुरआन में हिदायत है तो हमारी ज़िंदगी कैसे बन जाए। हमारी ज़िंदगी जब बनेगी, जब हिदायत हमारे अन्दर आ जाए, इंजैक्शन से तक्लीफ़ हो, हट जाए तो दवा अन्दर जाएगी इसी तरह हिदायत की मेहनत में तक्लीफ़ ही भाग जाए तो हिदायत न मिलेगी, ज़मींनदार कहता है मौलवी साहब खेती कर लूं, माल हाथ में होगा जब ही तो मस्अले हल होंगे, तब्लीग़ ही जब होगी, यह आदमी ज़लालत भरी हुई है इसके दिल में, मेहनत करूंगा तो हिदयात मिलेगी, हिदायत मिलेगी तो अमल ठीक होंगे, अमल ठीक होंगे तो कामियाब हो जाऊंगा, हिदायत रोशनी है, रोशनी में हर चीज़ साफ़–साफ़ दिखाई देगी। नमाज़ से सच से, ज़िक्र से यों कामियाबी मिल जाएगी, इंसाफ़ से दुआ मांगने से यों हो जाएगा, यह दिखाई देगा कि पैसे से कुछ नहीं होता, तवक्कुल पर, तक़्वे पर, हक़ की हिमायत करने पर यह होगा, वज़ारत से कुछ नहीं होता वे दिखाई दे जो कुरआन दिखा रहा है। कुरआन की रोशनी आपके दिल में हो, आपको साफ़ दिखाई देता हो, उन चीज़ों से कुछ नहीं होता अब इस आदमी का दिल हिदायत से भर गया, सारे बुरे अमल छोड़ेंगे अच्छे अमल करेंगे, अगली मेहनतें बहुत–बहुत जल्दी–जल्दी होती हैं, 100 रूपये हासिल करने में बहुत देर लगी, सामान जल्दी–जल्दी लाकर डाल दिया, बैगम साहिबा ने कहा, बाज़ार से जल्दी सौदा ला दो, यह मेहनत आधा–आधा घंटा पंद्रह–पंद्रह मिंनट होती है। हिदायत मिलने के बाद जो मेहनतें हैं वे आसान हैं, हिदायत मिलने के बाद मुआशरती मेहनत में बहुत जल्दी तब्दीली पैदा हो जाएगी, ये हैं हिदायत पाने वाले वे जो इतनी मेहनत कर जाएंगे कि आज़माइशों में से निकल जाएं, माल की नौयत पर ज़द पड़ेगा, तू तो पुराना आदमी है, तीन चिल्ले दिए हुए हैं अब चल जलसा है, हां भाई चिल्ले में भेज देंगे, हिदायत वाली मेहनत

मुसलसल मेहनत है इसी तरह जैसे माल वाली मेहनत मुसलसल मेहनत है, पहले हज़ार का नक़्शा वाला था, अब दस हज़ार के नक़्शे वाला बन गया, इसी तरह हिदायत के आला म्यार पर पहुंचने के लिए मुसलसल मेहनत हिदायत लेने की है रोज़ हिदायत की मेहनत की जाएगी, इसी सिफ़त के साथ की जब माल की मेहनत और हिदायत की मेहनत का मुक़ाबला पड़े तो माल की मेहनत को छोड़ दो, माल की मेहनत का मुक़ाबला ख़त्म हो जाए तो माल की मेहनत भी करो, माल की हैसियत क्या है, तेरा दर्जा यही है कि हिदायत की मेहनत न हो रही हो तो माल की मेहनत भी करेंगे। हिदायत की मेहनत क्या है, पहली मेहनत है हिदायत लेने की, मस्जिदें बनवाईं सारे अंबिया वाली बरकात अनवारात मदद उन अमलों पर हैं जो हिदायत के लिए दिए गए, जितने हमारे तबक़ात हैं मज़दूरी, मुलाज़मत, हुकूमत के उस सबके लिए पहली मेहनत है, सारी लाइनों में चलने की छठी है, लेकिन यह छठी नहीं कि माल वाली मेहनत को मुक़द्दम कर दे और हिदायत वाली मेहनत को पीछे कर दे, वे अमल जिनकी मेहनत करने से अल्लाह पाक आंख की रोशनी अता फ़रमाएंगे और आंख जो चीज़ें देखती है उन अमलों में देखेगी, सारे नबियों की मेहनत का नूर दावत में है, ये सारे नबियों की मुशतरका मेहनत है सबसे पहले अल्लाह ने दावत दी, فَاخلع نعليك अल्लाह ने दावत दी हज़रत मूसा अलै० को, यही दावत हज़रत मूसा अलै० ने फ़िऔन को जाकर दी, जो अल्लाह ने बताया वही फ़िरऔन को जाकर बताया, तुम्हारे हाथ में क्या है, लकड़ी है वह काम कर दो, यह लकड़ी भी तो कुदरत से है। कुदरत से अज़्दा और अज़्दे से लकड़ी बनाकर दिख दे, इसी लकड़ी से पत्थर से 12 चश्में निकल दिए, समुंद्र से बारह रास्ते बना दिए।

उमूमी बयान न० 10

ऐ मुल्क परसतों देख लो कि सही अमल करने से क्या नहीं मिलता

जुमेरात असर की नमाज़ के बाद, 12, जुलाई, 1962 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

सबसे ज़्यादा सरमाया इंसान के पास अमल का है, यानी अमल की मिक्दार चौबीस घंटे में जितनी इंसान की तैयारी होती है इतनी कोई चीज़ तैयार नहीं होती, देखने, बोलने सुनने आज़ाए जवारह के अमल, उन अमल के एतबार से यक़ीन भी तैयार होता है, ज़िंदगी का ताल्लुक़ हक़ीक़त के एतबार से इंसान के अमल से हो और यह अमल की तरफ़ इलतिफ़ात न करे और दूसरी चीज़ों को सामने रखकर उनके एतबार से चलता रहे तो अमल का सरमाया बिगड़ जाता है इसके आमाल के ख़राबी रंग लाती है, ज़िंदगियों में बिगाड़ पैदा होता है घर का सरमाया हाथ से जाता रहे, डाका पड़ जाए, फ़ाक़ा आ जाए कभी ये शक्ल होती है सबका सब हाथ में है, न बीवी के साथ मज़ा आता है न बच्चों के साथ मज़ा आता है। आमाल के बिगड़ जाने पर ज़िंदगियों में बिगाड़ आता है अगर अमल की तरफ़ से बिल्कुल तवज्जोह हटा ली जाए तो ज़िंदगी किसी न किसी वक़्त बिगड़कर रहती है, अगर अल्लाह तौफ़ीक़ दे दें, यह बात समझ में आ जाए और आदमी अपना मौज़ूअ यह बना ले कि जो मेरा ज़ाती जोहर है उसे बनाना है जो ख़ारजी नक़्शे हैं उनको सानवी दर्जे दे दें अमल को सरमाया हयात, सरमाया इज़्ज़त समझे अमल को असल क़रार दे। अमल इंसान की ज़ात में असरात डालता है ज़ात में अमल आ रहा है तो इसके अंदरून में ख़ुशबू और नूर पैदा होता है, जब

इंसान का अमल ठीक न हो तो इसके अन्दुरून में बदबू और जुलमत पैदा होती है, चीज़ों के बनाने में कितनी मेहनत करे इतनी चीजें नहीं बना सकता है। अगर अमल बनाने पर आ जाए तो चीजें उतनी नहीं बना सकता, चीजें मुंतकिल नहीं होती, अमल मुंतकिल हो सकता है, आंख पर कभी कस्टम नहीं लगा, चीज़ों बहुत–सा हिस्सा वे है जो आप ले जा नहीं सकते 75 रूपये ले सकते हो, बाक़ी नहीं ले जा सकते, आप अगर अपने अमलों को अगर ले जाना चाहें तो पूरे के पूरे बिना कस्टम ले जाएं हर मुल्क के अन्दर अपना इंसाफ़, अपनी गुरबा परवरी। अमल के ज़रिए कामियाब बनना सीख जाए तो इंसान जहां जाए मज़े की ज़िंदगी गुज़ारेगा, शहरों में होगा, कामियाब होगा, क़ब्र में बर्ज़ख़ में, हश्र में कामियाब होगा, ज़ुबान लेकर जा रहा है तो ज़ुबान की गालियां भी और ज़िक्र भी ले जाएगा, अमल को जितना बना सकता है उतना और किसी चीज़ को नहीं बना सकता और अमल को लेकर जितना फिर सकता है, उतना और किसी चीज़ को लेकर नहीं फिर सकता, अंबिया की जो लाइन है। वह सारी इसी के लिए है, ख़ुदा ज़िंदगी बनाता और बिगाड़ता है अमलों पर बनाता और बिगाड़ता है, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में अक्सीरियत डूबकर ख़त्म हुई, क्या सबब बताया कुरआन में इनके अमल ख़राब थे, अक्सीरियत के पास कश्तियां थीं, उनके पास सिर्फ़ एक कश्ती थी जिन कशतियों में ख़राब अमल वाले थे वे डूब गईं, अक्सीरियत के पास लाखों बाग़ात थे, वे भी डूबोकर ख़त्म कर दिए गए, हज़रत नूह अलै० के पास एक छोटी पोध थी जो आज तक चल रही है। हमारे पास कोई जायदाद न रहे नाकामी की दलील नहीं अगर जायदाद हाथ में आ जाए तो कामियाबी की दलील नहीं, अमल ख़राब होंगे, नाकाम होंगे, अमल सही होंगे कामियाबी मिलेगी। क़ौम समूद के अमल ख़राब थे, क़ौमी संअत में ना–काम हो गए, क़ौम आद की अमल ख़राब थे क़ौमी क़ुव्वत में ना–काम हो गए, सारी तफ़्सील का खुलासा है चीज़ तक़रीब है अमल की, अमल

बुनियाद है कामियाबी या ना–कामी की अमल होने में चीज़ का होना न होना बराबर है। हमारे पास अगर रोटी नहीं है तो अमल करेंगे, सब्र करेंगे, अल्लाह से पाएंगे, जल्दी कमाने के लिए क़दम उठाएंगे, रोटी है तो खाकर बाक़ी रख देंगे या तक़्सीम कर देंगे चीज़ का होना भी तक़रीब अमल है और चीज़ का न होना भी तक़रीब अमल है, अमल बन गया तो कामियाबी मिल जाएगी, कायनात चीज़ों की मशीन है इसका मौज़ूअ चीज़ों का बनता है, देखने में यह नज़र आता है कि छोटी मशीन बड़ी मशीन के ताबेअ है, हक़ीक़त में इस छोटी मशीन की ताबेअ है बड़ी मशीन। अगर छोटी मशीन के अमल बेहतर हो जाएंगे, तो इल्म के अन्दर चीज़ों को वजूद भी बढ़ेगा; हिफ़ाज़त, ताक़त, सेहत, तक़्सीम भी बढ़ेगी, जिसको पेट भरने के लिए बनाया है इसमें फिरना पड़ेगा, अगर अमल ख़राब हो जाएं तो चीज़ें घटनी शुरू हो जाएंगी, भूचाल आया, सैलाब आया, हिफ़ाज़त वाली चीज़ों में से हिफ़ाज़त निकाल ली जाती है। सेहत वाली चीज़ों में से सेहत कम कर दी जाती है, अमल बिल्कुल ख़राब हो जाएं तो सेहत की चीज़ों में से सेहत बिल्कुल ख़त्म कर दी जाती है पहले अंबिया तशरीफ़ लाए अमल पर यह होता है, अमल की ख़राबी पर ज़िंदगियां बिगड़ती हैं, अमल की सेहत पर ज़िंदगी यों बनती है, इस मशीन से जो कुछ बनकर तैयार हुई चीज़ें वे हाथ में हैं और इंसानी मशीन से जो चीज़ें तैयार हुई वे ख़राब। अब ज़िंदगी बिगाड़कर दिखलाई इन नमूनों के अंदर और एक तरफ़ कायनाती मशीन के नक़्शे हाथ में हैं और इंसानी मशीन की चीज़ अमल अच्छे हैं इनको कामियाब करके दिखाया, इसी बुनियाद को सारी दुनिया में चलाने के लिए बैक वक़्त हज़रत मुहम्मद सल्ल० को तमाम ज़ुबानों, तमाम कच्चे और पक्के मकानों क़ौमी और कमज़ोर के लिए, नबी बनाकर भेज दिया। अगर इस दुनिया में कामियाबी इंसाफ़, रहम, अख़वत, मुहब्बत की हक़ीक़त, ख़ून की हिफ़ाज़त के मुबारक दिन को देखना चाहा हो, सैलाब न आई, लहराते बाग़ात को देखना चाहते हो,

पैदावार हज़ारों गुनी बढ़ गई तो अमल पर मेहनत का मैदान क़ायम करो, अंबिया ने कभी चीज़ पर मेहनत नहीं की, अमल पर चीज़ दिलवाकर दिखलाई हज़रत सलमान ने अमल से मुल्क लेकर दिखलाया। छोटी सी हुकूमत में लम्बा चौड़ा ख़र्चा करके अजब क़िस्म के घोड़े मंगवाए, देखने में मस्सत हुए नमाज़ का ख़्याल न रहा, चीज़ का मुशाहेदा कैसा है, मुतनबा हुए, देखा तो नमाज़ क़ज़ा, हज़रत सुलेमान खलूत में जाकर तड़प कर रोते, मुल्क की मंशा के ख़िलाफ़ हो जाए तो तड़पकर रोए, सुलेमान का क़ुसूर माफ़ कर दिया, मांगों क्या मांगते हो। ऐ ख़ुदा ! ऐसा मुल्क मांगता हूं जो मुझसे पहले न बाद में किसी को मिले, ऐ मुल्क के दीवानों देख लो अगर अमल करके मुल्क मांगते तो मुल्क यों मिलता है। हज़रत सुलेमान का तख़्त जा रहा है, परिंदों ने साया कर रखा है नीचे जानवर मशायत कर रहे हैं, एक आदमी की ज़ुबान से निकल गया, 'अल्लाहु अक्बर' कैसा मुल्क दिया है, हवा ने जासूसी की, मेरा तख़्त उतारो, उस आदमी को पकड़कर लाओ, क्यों जी तुमने हमारे बारे में क्या कहा ? हुज़ूर मैंने तो कुछ न कहा, मैंने सिर्फ़ यह कहा, झल्लाकर फ़रमाया तू उस कहने को कैसा समझता है, ख़ुदाए पाक की क़सम एक बार जो अल्लाह कहने में मज़ा आता है वह इस सारी दुनिया की हुकूमत में नहीं है। हज़रत अय्यूब ने दिखाया अमल पर घरेलू ज़िंदगी यों बनती है, अमल वाला इंसान जिसने अपने अमल का म्यार इतना क़ायम कर लिया हो कि हर मुशक़्क़त करता हो, लेकिन अमल को बिगड़ने नहीं देता, निकले कीड़ों को डालते थे मेरे ख़ुदा ने भेजे हैं, एक दिन रो दिए चीज़ पर कभी न रोए, जान की तक्लीफ़ पर न रोए, उस दिन रोए जिस दिन खटका हुआ कि शैतान हमारे यक़ीन और अमल पर डाका डालने खड़ा हो गया। एक रिवायत में यह है कि इनकी बीवी मज़दूरी करके लाया करती थीं, शैतान ने सबके घरों में जाकर कह दिया बीमारी फैल न जाए कहीं मज़दूरी न मिले, तबीयत बेकार हो गई, सेर के तिहाई बाल मूंडे

इसकी रोटी लाकर खिलाई। हज़रत अय्यूब ने दूसरे दिन पूछा, ऐ बीवी कहां से लाई और किस सूरत से लाई, बीवी रोने लगीं, अपना दोपट्टा हटाया दो हिस्से बाल ग़ायब हज़रत अय्यूब रोने लगे। एक रिवायत में यह है कि शैतान ने पिछला सारा नक़्शा दिखलाया कि यह बला इस वजह से आई कि अय्यूब ने मुझे न माना मैं यूं न कहूं कि मुझे अल्लाह की तरह मानें मैं यूं कहूं कि थोड़ा-सा मुझे भी इस इल्म के निज़ाम में शरीक कर लें, मुर्ग़ी का बच्चा ज़िब्ह कर दें खुश होकर आई, आज पाप कट जाएगा, खुदा जिस दिन मुझे तंदरूस्त करेगा सौ कोड़े मारूंगा। رب انی مسنی الضر وانت ارحم الراحمین रोकर कहा, जबकि आदमी नक़्शों की चीज़ों की जान की माल की आल की परवाह निकाल दे नक़्शे के मुक़ाबले में ज़िंदगी बनाता है, अय्यूब हम बहुत देर से इंतिज़ार में थे किसी दिन मांगो और हम दें, चाहो तो वही बच्चा दे दें चाहो तो और दें। पहला सारा नक़्शा वापस कर दिया, बाक़ायदा सोना बरसा है, टिड्डियों की शक्ल में बरसता था, अय्यूब जमा करने लगे, कहा, अय्यूब हिरस करते हो, कहा आपकी नेमत की क़द्र करता हूं, अमल पर ज़िंदगी बनती है बग़ैर चीज़ों के, अमल की ख़राबी से ज़िंदगी बिगड़ती है चीज़ों के अन्दर, क़ारून को धंसाकर दिखला रहा हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तशरीफ़ आवरी हुई दुनिया के इंसानों की मेहनत को मोड़ने के लिए आप तशरीफ़ लाए, सारी दुनिया के इंसानों को अमल की तरफ़ मोड़ने के लिए तशरीफ़ लाए, इसी के लिए मस्जिदें बनाई गईं, जिनके पेड़ सूख गए यह मस्जिदें इसी अमल की मेहनत के लिए बनी थीं, जितने क़िस्म के आदमी दुनिया में बस्ते हों सबके लिए एक आवाज़ थी, अल्लाहु अक्बर जो कुछ तुम देख रहे हो यह सब झूठा है इससे किसी दर्जे में भी कुछ नहीं होता। जो बड़ा है इससे सब कुछ होता है और वे फ़क्त अपनी ज़ात से करता है, पानी से नहीं होता, उस खुदा की कुदरत से होता है जिस कुदरत से पानी बना है जो तुम देखते हो होना, वहां से ताल्लुक़ नहीं रखता कुदरत से ताल्लुक़

रखता है। सिफ़ात का सिफ़ात से ताल्लुक़ है पैदा करना सिफ़त है अल्लाह की कुदरत से ताल्लुक़ है पैदा करने का, पैदा करने की सिफ़त चीज़ से नहीं है, पैदा करने की सिफ़त कुदरत से है। छोटे से कुछ नहीं होता बड़ा करता है, वह अपनी कुदरत की सिफ़त से बीमार करता है, वह अपनी कुदरत की सिफ़त से सेहत देता है अपनी कुदरत से चाहे आग में जलाएं, अपनी कुदरत से चाहें गुलज़ार बना दें, तिजारतें, मिल, वज़ारतें, एटम, राकेट बहुत छोटे हैं, अल्लाह बहुत बड़े हैं। जो छोटा है उससे होता नहीं जो बड़ा है उससे होगा, अल्लाह 'समद' और तो सब इसके मुहताज हैं इसकी किसी की ज़रूरत नहीं है, फिर इसकी तहक़ीक़ करो जो बड़ा है करता है इसके ज़ाब्ते बतलाने के वास्ते हज़रत मुहम्मद रसूल सल्ल० को बाहर भेजा है, वज़ीर के साथ किस पर क्या करेंगे ताजिर को कौन–से अमल पर कामियाबी करेंगे, कौन से अमल पर नाकामियाब करेंगे। इसके बताने के लिए अल्लाह ने मुहम्मद सल्ल० को भेजा है इनका मौज़ूअ यह नहीं होता है सोना बतलाए कि सोने में क्या है वह कहेंगे कि सोने में कुछ नहीं है, तुझे जो ग़ैरों में नज़र आ रहा है यह तेरे देखने का नुक़्स है, इस नुक़्स को बद्रका करने के लिए मुहम्मद सल्ल० को भेजा। इस ज़माने में शोर व शग़ब ज़्यादा हो गया तो अल्लाह ने लाउड़ स्पीकर लगवा दिए, कान में आवाज़ पहुंचवा दी, अमल ठीक करने के लिए नक़्शों को छोड़कर आ जाइये, यह आवाज़ है अमल कैसे ठीक होंगे, वे अमल मस्जिद में नहीं है जो बहुत दीनदार शुमार हो इनकी दीनदारी पर है कि वह नमाज़ पढ़ें, नमाज़ खुद दूसरे अमलों पर मौक़ूफ़ है अगर दूसरों अमलों के लिए बग़ैर नमाज़ पढ़ी जाएगी तो नमाज़ का तसव्वुर क़ायम होगा हक़ीक़त न आएगी आप सारी तारीख़ से आंख बंद करके यों कहेंगे कि ख़ाली नमाज़ से क्या होता है मैं भी यह कहता हूं कि बग़ैर ईमान सीखे ख़ाली नमाज़ से क्या होगा, मुहम्मद सल्ल० ने नमाज़ से पहले जो अमल बतलाए हैं वे अमल कर, इसके अलावा और कुछ चाहिये।

लोग कहते हैं कि वज़ीर का ताल्लुक़ चाहिए, वज़ीर के ताल्लुक़ और नमाज़ का क्या जोड़, पाख़ाना और फूल मिला दिया, फूल की हैसियत ख़त्म हो गई जहां वज़ीर से जोड़ बिठाया नमाज़ की जान निकल गई, जब पैसा और नमाज़ मिला दी तो नमाज़ की जान निकल गई, इसके लिए तीन मुशक़्क़तें हैं पहले और तीन मुशक़्क़तें हैं बाद में, पहले तीन मुशक़्क़तें क्या हैं। यक़ीन बदलने की मश्क़, बश्र से क्या होगा, एक यक़ीन वाक़ियात अंबिया वाक़ियात औलिया तो अब अज़ाब सुनकर जन्नत, दोज़ख़ सुनकर, फ़रिश्ते सुनकर बनता है, इतना मस्जिद में बैठकर सुनो कि जब कोई चीज़ देखो तो सुनने वाला यक़ीन सामने आ जाए, वज़ीर जा रहा है, वज़ीर को देखो, तुमने सुन रखा था कि हुकूमत से कुछ नहीं होता, ऐसा सुनने का यक़ीन ग़ालिब आ गया कि कहा, कि इससे कुछ नहीं होता, अब सुनना बढ़ाओ देखने से, ख़ूब ग़ौर से सुन अल्लाह के सामने पेशी और अज़ाब को, फ़िऔनी हुकूमत के डूबने को, नीयत करके सुन, ग़ौर से सुन, तेरे अन्दर का यक़ीन बाहर के यक़ीन को फेंककर मारेगा। सहाबा किराम ने सबसे पहले जो मेहनत की है मक्का के अन्दर यक़ीन की मेहनत करनी पड़ती है मुशाहेदा के मुक़ाबले में, अबू जहल कह रहा है तुम कहते हो लात व उज़्ज़ा कुछ नहीं करता, हम लात व उज़्ज़ा के मानने वाले हैं सब कुछ कर देंगे, मार रहे, पीट रहे, कह रहे हैं अल्लाह इम्तिहान कर रहे हैं एक दम में पलट देंगे, जब करने पर आ जाएंगे। एक इल्म सुनकर आता है एक इल्म देखकर आता है मस्जिद में बैठो, कुरआन व हदीस सुनकर जो इल्म आता है वह हासिल करो, देखकर इल्म आता है सोने से घी से दूध से यों काम चलेगा, मस्जिद में बैठकर यह इल्म हासिल करो कि अमल से क्या होता है, यक़ीन के मुक़ाबले में यक़ीन की मश्क़। एक ध्यान देखकर बनता है एक ध्यान मश्क़ से बनता है कोठी देख ली, अब इसका ध्यान आया, एक ध्यान बनता है मश्क़ से, इतना ज़िक्र करो अल्लाह का कि तुम्हारे दिल की बोतल इसके ध्यान से

इतनी भर जाए कि देख रहे हो औरत ध्यान आ रहा है अल्लाह का, देख रहे हो फ़ौज ध्यान आ रहा है अल्लाह का। दूसरा दर्जा है ध्यान अगर आ गया लाहौल और ला इलाह पढ़ा, ध्यान ठीक कर लो, अब नमाज़ पढ़ो, यह यक़ीन हो कि नमाज़ के रुकूअ, क़ायदे सज्दे से अल्लाह राज़ी होंगे, जो मांगूंगा कुदरत से देंगे, एक-एक हिस्से के साथ इल्म की शक्ल पर ले आओ, अल्लाह का ध्यान आ जाए अब यह नमाज़ तुम्हें कामियाबियां दिलवाएगी, नमाज़ के बाद की मश्क़ क्या है जब तुम उन मश्क़ों पर आ रहे हो। अब हमारा ज़हन यह बनेगा ईमान की मश्क़ करूंगा, मेरा अल्लाह मेरे लिए रिज़्क़ के दरवाज़े खोलेगा इल्म की ध्यान की मश्क़ कर रहा हो। आवाज़ लगी नमाज़ को आ जाओ कामियाबी को आ जाओ, अब यह यक़ीन बना कि कमाई बहुत छोटी है अल्लाह बड़े हैं, नमाज़ से मिलना शुरू हो जाएगा, नमाज़ से लेते रहना और बढ़ते रहना, इसके बाद भी मेहनतें करनी हैं, कमाई के अमल, घरेलू ज़िंदगी के अमल और मुआशरत के अमल ठीक करो, कमाई को ऐसा बनाओ जैसी कामियाबी वाले की नमाज़ अल्लाह तआला कुबूल करते हैं। अब इन तीनों चीज़ों को कमाई के अन्दर ले जाओ, इल्म का पाबन्द बनकर कमाऊंगा तो अल्लाह देगा, ईमान के साथ कमाऊंगा तो अल्लाह देगा, जब पैसा हाथ में आ जाए तो ईमान को, इल्म को ख़ुदा के ध्यान को ले जाओ, घर पर, कितना पैसा ख़ुदा घर पर ख़र्च करने को कहते हैं, कितना अपने पर ख़र्च करने को कहते हैं, क़ौमियत से अपनी मुआशरत को हटाओ तुम पर्टी के अंधे बनकर साथी न बनो, अगर मुसलमान मज़लूम है तो साथी मुसलमान के, अगर मुसलमान ज़ालिम है तो साथी ग़ैर मुस्लिम के जिसके चार थप्पड़ लगे हैं ज़ल्मा चाहे कम्यूनिस्ट हो इसके साथ होगे। मुसलमान के चार थप्पड़ लगवाओगे पांच नहीं लगने दोगे हर ज़ुबान हर क़ौम, हर मज़हब से हमदर्दी रखने वाले बना, इस नमाज़ पर जो मगोगे वे मिलेगा, यह न कहो कि ख़ाली नमाज़ से क्या होगा, मैं यूं कहता हूं कि जैसी नमाज़ तुम ख़ाली पढ़ते हो उस नमाज़ से क्या होगा।

उमूमी बयान न० 11

अच्छे बुरे अमल के एतबार से अल्लाह की चाह का फ़ैसला होगा

जुमा, फ़जर की नमाज़ के बाद, 13 जुलाई 1962 ई०

मेरे भाइयो और दोस्तो !

ये ज़मीन व आसमान इसके अन्दर के नक़्शे इन सबमें अल्लाह की मशियत और इरादे सरायत किए हुए हैं जिस तरह रूह जिस्म के एक–एक हिस्से में सरायत किए हुए है और जो कुछ होगा वह रूह के ताल्लुक़ से होगा अगर सियाह बाल बन रहा है तो रूह के ताल्लुक़ से, अगर ख़ाल में कोई बात है तो वह भी रूह से और इंसान को बढ़ना, इसका नशोनूमा जिस तरह रूह से ताल्लुक़ रखता है इसी तरह सातों ज़मीन व आसमान में जितने नक़्शे हैं चाहे वह सियासी हो या हुकूमती। इनमें अल्लाह की मशियत और इरादे फैले हुए हैं इनसे वह होगा जो अल्लाह चाहेंगे, जिनकी ज़िंदगी को बनाना चाहेंगे बना देंगे और जिसको बिगाड़ चाहेंगे उससे बिगाड़ देंगे, जो वह चाहेंगे वह होगा और अगर ये सब न हो तब भी जो अल्लाह चाहेंगे वह होगा। अगर एक शख़्स के पास इज़्ज़त, हिफ़ाज़त की कोई शक्ल नहीं सिर्फ़ शक्ल इंसानी है इस पर भी अल्लाह की माशियत फैली हुई है चाहेंगे इज़्ज़त देंगे, चाहेंगे महबूब बना देंगे इस एक शक्ल पर जो अल्लाह चाहेंगे वह होगा मस्अलों के हल का एक धोखा तो लगता है कि यह मस्अला हल हो गया, सारा मुल्क भी हाथ में देकर धोखा है, यह कामियाब नहीं ना–कामियाब, हुकूमत की शक्लें हाथ में नहीं मगर अल्लाह ने सेहत व आफ़ियत इज़्ज़त से नवाज़ दिया तो यों कहा जाएगा कि यह कामियाब हैं।

मगर कामियाबी ख़ाली मुल्क व माल के हासिल करने से नहीं होती और न इनके जाते रहने से, बल्कि कामियाबी अल्लाह तआला के हाथों में है, यही हमें अल्लाह तआला ने दिखलाया कि हज़रत आदम के पास कोई शक्ल नहीं ख़ाली अपना वजूद अल्लाह ने चाहा तो हज़रत हव्वा को बना दिया जन्नत को बना दिया और जब अल्लाह तआला ने चाहा तो दोनों को बिगाड़ दिया। जब आदमी अपनी अक़्ल पर आए तो वहीं यह मार खाएगा अगर जिस तरह अल्लाह चाहें वैसा ही करे तो ठीक, दोनों जन्नत के मज़े कर रहे थे, अभी आरज़ी दाख़िला था, एक पेड़ को रोक दिया कि इसको न खाइयो। शैतान फिर रहा था कि मुझे तो ख़लीफ़ा बनाया नहीं हालांकि मैं इबादतगुज़ार था, किसी फ़रिश्ते से सज्दे को न कहा, मगर यह आदमी मिट्टी से बना है और बग़ैर इबादत किए हुए सज्दा कराया, इसके दिल में हसद की आग लग गई कि मैं तो डूबा अब इन्हें भी डूबाओं। किसी सूरते से हव्वा के पास चला गया और कहा कि अल्लाह ने क्यों इस पेड़ से खाने से रोक दिया, तो हव्वा ने कहा कि मुझे तो यह पता नहीं तो उसने कहा कि मुझे पता है कि क्यों रोक दिया, इसकी वजह यह है कि तुम्हें जन्नत से किसी दिन निकलना है अगर खा लोगी तो मुस्तक़ील रहोगी। अब हज़रत हव्वा आदम के पीछे पढ़ गईं और शैतान चल दिया, हव्वा ने कहा, कुछ दाने खा लो तो हम मुस्तक़ील जन्नती बन जाएंगे, उन्होंने कहा नहीं बहुत ग़लत बात है, अल्लाह ने करम किया जन्नत अता फ़रमाई, हम ऐसा न करेंगे, बस हज़रत हव्वा ने औरतों वाले जितने हरबे होते हैं वे इस्तेमाल किए। मगर अल्लाह तआला ने तै कर रखा था कि जब तक यह हमारा कहना मानेंगे और उसे न खांएगे जब तक जन्नत में रखेंगे वरना निकाल देंगे, बस शैतान उलटी ही पढ़ा दे, इसलिए अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बहुत तज़्किरा किया है कि हम तो तुम्हारे पालने वाले हैं, मगर यह हमेशा उलटी पट्टी पढ़ाएगा। इसलिए देख लो

तुम्हारे अब्बा जी के साथ ऐसा किया, जिस तरह हज़रत आदम अलै० व हव्वा की ज़िंदगी हुक्म तोड़ने से बिगड़ती इस तरह जब अल्लाह का हुक्म तोड़ेगा तो फिर इस पर मुसीबतें आती हैं जैसे आदम अलै० के ऊपर आई, अब जन्नत के कपड़े उतारकर नंगा मश्रिक में डाला और एक को मग़्रिब में और कहा की जाओ। जन्नत से महरूम दुनिया में डाल दिया गया, चालीस साल दोनों मियां–बीवी को गुज़रे, सालों का चिल्ला एक हुक्म के तोड़ने पर रोते हुए गुज़ारा, सिवाए इसके कि चौबीस घंटे हज़रत आदम अलै० और हव्वा रोया करते थे न इनके बदन पर कपड़े न खाना, कुछ नहीं रात दिन रोते फिरते कि अल्लाह का हुक्म टूट गया, चालीस साल तक रोते रहे तो अल्लाह को रहम आया और इनका रूख़ बैतुल्लाह की तरफ़ कर दिया, जहां लोग हज को जाते हैं। बाल ख़ूब बढ़े हुए किसी ने किसी को नहीं पहचाना, दोनों एक हरकत देख रहे थे यहां तक कि दोनों आरफ़त के मैदान में दाख़िल हो गए, क़रीब हुए तो एक तरफ़ से बेसा खित्ता आदम और दूसरी तरफ़ से हव्वा निकलीं। दोनों एक दूसरे से लिपटकर रोए, दोनों हाथ उठाकर मैदान उज़्मात में दुआ की अगर आपने मग़्फ़िरत न फ़रमाई, राज़ी न हुए तो हम टूटे वालों में होंगे, अल्लाह ने कहा, जाओ, मगर अब हमारा हुक्म न तोड़ना चाहे खाना जाए ज़मीन जाए मगर मेरा हुक्म तुम्हारे हाथ से न जाए। सबके लिए क़ियामत तक के लिए यही इरादा और ज़ाब्ता है, दोनों जहां के मज़े और कामियाबियां मेरा हुक्म सामने रखकर चलो, यह शैतान तुम्हारे पीछे पड़ा रहेगा और क़ियामत तक यही समझाएगा कि यह नक़्शा बिगड़ जाएगा अगर ऐसा करोगा الشيطان يعدكم الفقر जब इंसान शक्लों को सामने रखकर चलता है तो हुक्म पूरा नहीं करता। तो खेती नहीं, बच्चा नहीं, अल्लाह को क्या दिखाना है शक्ल से होता नहीं, हुकूमत की शक्ल बनाने के दरपे है तो हुकूमत बनने देंगे, हिन्दुस्तानियों ने पचास साल आज़ादी की जद्दोजहद की, ख़ून

क़ीमती हो जाएगा, ख़ून की हिफ़ाज़त हो जाएगी, अमन हो, आफ़ियत हो, किराए सस्ते हों, मोटरें सस्ती हों, कस्टम टैक्स भी नहीं होगा, इतना टैक्स लेते हैं, तुम्हारा ही मुल्क होगा। जहां चाहे कूदते फिर लो, अल्लाह ने कहा कि इन्हें यह दिखा दो कि शक्लों से नहीं होता, इन्हें हिन्दुस्तान मिल गया, उन्हें पाकिस्तान मिल गया, अब दिखलाओ की रेलवे के किराए कितने सस्ते हुए, टैक्सों में कितनी कमी हुई, अब मामला पहले से भी दस हाथ आगे, हम तो तुम्हारे भाई हैं पैसा तुम्हारा नहीं हमारा है। बाहर नहीं ले जा सकते, सेठ साहब 75 रूपये लिए हुए है जैसे 75 करोड़ हों, बेचारे यों तलाशी करे, एक रूपये की जगह दो आने की जगह मिल जाए, कोई फ़ी सबिल्लाह फंड से इस्तेमाल हो जाए, बहुत हालात हो गए, नमूने के तौर पर एक दो बातें कह दें। यह ख़ुदा के हक़ाइक़ से जिहालत है शक्लों में कामियाबियां समझते हैं, शक्लें देकर ख़ुदा चाहे तो नाकाम कर दें, कोठी को बाग़ की शक्ल भी दे दी, शक्लें न हो तो जो चाहें वे हो जाएगा, शक्लें दूसरों के पास हो तो वे जो इसके लिए चाहेगा और तुम्हारे लिए चाहेगा वे हो जाएगा। शक्लें चाहे हों या न हों, दोस्त के पास हों या दुश्मन के पास हों, उन शक्लों से वे होगा जो अल्लाह की चाह होगी, चाहे पक्के मकान की शक्ल हो जाए, शक्ल से न इज़्ज़त होगी न ज़िल्लत होगी, अल्लाह के चाहने से हिफ़ाज़त होगी, अल्लाह के चाहने से ख़ून बहेगा। शक्लों की अहमियत ख़त्म हो गई, अब इस बात पर ग़ौर करना पड़ेगा कि अल्लाह तआला क्या चाहते हैं। वज़ारत की शक्लें चाहें ओरों के पास चली जाएं कोई परवाह की बात नहीं, जिस तरह पूरे मुल्क में जो चाहे वह नहीं हुआ, इसी तरह अपने अन्दर की शक्ल में जो चाहेंगे एक दिन वह न होगा और ख़ून के आंसू रोने पड़ेंगे। गवर्नर को अपनी गवर्नरी में, ताजिर के तिजारत में, जिन लोगों को ख़ुदा तौफ़ीक़ दे दें, अल्लाह के चाहने के ज़ाब्ते क्या हैं ख़ुदा ज़िल्लत किस के लिए कब चाहते हैं, ख़ुदा इज़्ज़त

किसी के लिए कब चाहते हैं, चाहे शक्लें जैसी हूं, शक्लों के अन्दर ज़िंदगियों की जो कामियाबियां और नाकामियां आईंगी वह अल्लाह की चाह पर आएंगी और इस शक्ल के अंदर आदमी के अमलों पर अल्लाह की चाह का फ़ैसला होगा। करोड़ों के मकान के अंदर रातों को तड़पेगा रोएगा और वह झोपड़े के अन्दर मज़े से खुशी से सोएगा, इसी की बीवी सारी रात जूते लिए खड़ी रही और इसकी बीवी बदन दबाती क़दम चाटती रहीं, बाहर से फ़ैसले दिए जा रहे हैं और अंदर से ज़िंदगी गुज़र रही है अगर यह बात होती कि क़िला वाली शक्ल होगी तो अल्लाह हिफ़ाज़त चाहेंगे, शक्लों पर चाह होती तो चीज़ों की मेहनत बिल्कुल ठीक होती। अल्लाह की माशियत शक्लों पर नहीं होती, बल्कि शक्लों के अंदर रहने वाले इंसानों के अमलों पर होती है, शक्लों का वजूद अदम बराबर, अब तो यह हो गया कि कौन सा अमल पर ख़ुदा कामियाबी चाहेंगे कौन से अमल पर ख़ुदा ना–कामी चाहेंगे। नमरूद की हुकूमत पूरी हुकूमत की शक्ल के अन्दर अल्लाह ने चाहा जो वह हुआ, जो यह करना चाह रहा है वह न हुआ, जिसकी कामियाबी चाही आग की शक्ल में कामियाब हुआ, जिसकी ना–कामी चाही वह हुकूमत की शक्ल में नाकाम हुआ, इंसान के इरादों से हालात नहीं बनेंगे, इंसान की चाह, इंसान का इरादा तलब वजूद है, अल्लाह का चाहना वजूद है, अल्लाह चाहें हमें इज़्ज़त मिले तो यह इज़्ज़त का वजूद हो गया, हम चाहें इज़्ज़त मिले तो यह तलब वजदू है, अल्लाह जो शक्लों से चाहेंगे वह हो जाएगा।

तुम्हारा अमल सच्चाई का होगा मैं तुम्हारी कामियाबी चाहूंगा
तुम्हारा अमल झूठ का होगा मैं तुम्हारी नाकामी चाहूंगा
तुम्हारा अमल इंसाफ़ का होगा मैं तुम्हारी कामियाबी चाहूंगा
तुम्हारा अमल ज़ुल्म का होगा मैं तुम्हारी नाकामी चाहूंगा
तुम्हारा अमल ज़िक्र का होगा मैं तुम्हारी कामियाबी चाहूंगा
तुम्हारा अमल ग़फ़लत का होगा मैं तुम्हारी नाकामी चाहूंगा

तुम्हारा अमल सख़ावत का होगा मैं तुम्हारी कामियाबी चाहूंगा
तुम्हारा अमल बुख़्ल का होगा मैं तुम्हारी नाकामी चाहूंगा
तुम्हारा अमल क़नाअत का होगा मैं तुम्हारी कामियाबी चाहूंगा
तुम्हारा अमल इसराफ़ का होगा मैं तुम्हारी नाकामी चाहूंगा

सारे कुरआन में अपनी चाह के ज़ब्ते बताए हैं, वजूद तो वह होगा जो अल्लाह चाहेंगे, अगर तुम्हारे अंदर धोखे के अमल आ गए नाकामी चाहूंगा, अगर तुम्हारे अन्दर मुहम्मद के उसूलों से हटकर अमल आ गए नाकामी चाहूंगा, ख़ूब तफ़्सील से एक जुज़ पर बताया गया है। हाकिम महकूम माल वाले ग़रीब, बड़े बाग़ों वाले छोटे-छोटे काश्तवाले सारी तक्लीफ़ें बराबर हैं, शक्लों में रहने वाले जितने इंसान हैं बिल्कुल एक सफ़ के अन्दर खड़े हुए हैं, शक्लों या इनकी अपनी चाह से कामियाबियां नहीं होगी। जब भूचाल आता है तो हर शक्ल में घुसता है, ठंडी हवा आती है तो हर शक्ल में घुसती है अल्लाह की तरफ़ से कामियाबियां और नाकामियां जो आएंगी वे हर शक्ल में घुस जाएंगी, तिजारत करते रहो, अल्लाह तआला ने ये अमल दिए हैं, इन अमल के पाबंद बनोगे अल्लाह कामियाबी चाहेंगे, उनको तोड़कर चलोगे, अल्लाह तुम्हारी नाकामी चाहेंगे। अल्लाह ने अमल की शक्ल की पाबंदी कर दी, तुम किसी भी शक्ल की तरफ़ चलो इस शक्ल में उस बुनियाद पर चलो कि मेरे अमल वे हों कि अल्लाह मेरी मुवाफ़क़त पर आ जाएं मस्जिदें अमलों की मश्क़ के लिए बनाई गई हैं। उन मस्जिदों में आओ, देखो, जो तुम्हें दिखाई दे रहा है वह धोखा है, हक़ीक़त को मालूम करना चाहते हो तो इत्मिनान से बैठो, ख़ुदा को पहचानो, अमलों को मालूम करो, कुदरत की माशियत के ख़ज़ाने को कवाइद ज़वाबित को पहचानो, अमलों को मालूम करो, वह अमल कौन से हैं जिन पर तुम्हारे ख़ून बहने को चाहेंगे और वह अमल कौन से हैं जिन पर तुम्हारे ख़ून की हिफ़ाज़त चाहेंगे जितनी चाहें शक्लों वाले इंसान हों, सबके कानों में आवाज़ पहुंचाई गई कि कामियाबी का ताल्लुक़

इसके अमल से है जितनी शक्लों वाले हैं, सबको मस्जिद में लाया, शैख़ का वक़्त है, लाखों करोड़ों मुरीद हैं, कामियाब बनना चाहते हो मस्जिद में आओ। सब बन्दे हैं, बन्दे को हमेशा बन्दगी की लाइन दी जाती है, जो बन्दा है, बन्दगी में जितना बढ़ेगा, उसके लिए बंदगी के ज़वाबित और सख़्त होते चले जाएंगे, बन्दगी के मक़ाम में सबसे आगे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

وانذر عشيرتك الاقربين

हुक्म आया, आपने सोचा कि आपके सारे रिश्तेदार सरदार थे, सरदार दबते नहीं, पहले तो आएंगे नहीं और आ गए तो सुनेंगे नहीं, सारे मक्का के बीच में इनको जमा करूं आप की बात दूसरे के सामने नहीं काटीं जाती। इस नुक्ते पर आपने इस आयत की तामील की, सारे कुरैश को पुकारा या आल काब कहा, सारा मक्का आ गया, चारों तरफ़ से सब दौड़कर आए, तुम ने आल काब को पुकारा था वे आ गए, पोते की औलाद को पुकारा, बाक़ी तीन की औलाद परे रह गईं, एक की औलाद आगे आ गई, फिर इसके बेटों में से इसकी आल को पुकारा जिसकी औलाद में आप थे, फिर आपने ऐसा ही किया आल हाशिम को बुलाया वह आगे आ गए, फिर आपने तौहीद व रिसालत को पेश किया, अबू लहब ने कहा, अरे फ़क़्त इतनी से बात पर सारे मक्के को जमा किया ? आपने सोचा था दूसरो की वजह से अपने भी सुन लेंगे, रंजीदा वापस आए, ऐ मुहम्मद सल्ल० ! अल्लाह ने यह फ़रमाया जो बात हम जिस तरह कहें इस तरह न करोगे तो तुमको अज़ाब दिया जाएगा, बहुत बोझ पड़ा, ग़ुलामी में बढ़ता है तो इतनी-इतनी बात पर पकड़ हो जाती है कि वहां बिठाकर बात क्यों नहीं की, वहां खड़े होकर क्यों नहीं की, पकड़ भी बढ़ती है और दहशत भी बढ़ जाती है। सारे अंबिया से आगे हुज़ूर सल्ल० हैं, जो बात अल्लाह ने फ़रमा दी बिल्कुल इस तरह किया कोई रियायत नहीं की, इस पर मिली है सारे नबियों की सरदारी। हुदैबिया के मौक़े पर तशरीफ़ ले

गए, मक्का वाले अड़ गए कि उमरा नहीं करने देंगे, सारे सहाबा रज़ि० इस पर कि अल्लाह की मददों के साथ लड़ेंगे, देखे कौन जीते, अच्छा सुलह कर लो, वापस चले जाओ उमरा नहीं करने देंगे, इस वक़्त वापस चले जाओ ताकि हमारी बात अरब में ऊंची रहे लाओ लिखना शुरू कर दिया, जो कोई मुसलमान होकर तुम्हारे पास पहुंचे वह वापस करना पड़ेगा। एक अबूबक्र रज़ि० के अलावा कोई सहाबा रज़ि० ने चाह, किसी की समझ में न आई क्यों सुलह कर रहे हैं, क्या आप अल्लाह के रसूल सल्ल० नहीं ? दबकर सुलह क्यों करें, मैं सयासी नुक़्ते पर देख ही नहीं रहा, मैं तो अल्लाह का बंदा और अल्लाह का रसूल हूं, जो वह कहता है वह करूंगा, आप तो कहा करते थे कि मक्का फ़त्ह होगा ? हां यह तो नहीं कहा था कि इसी साल फ़त्ह होगा। फिर अबूबक्र रज़ि० के पास आए वही सवाल, अरे तूझे क्या हो गया वह अल्लाह के बन्दे अल्लाह के रसूल सल्ल० हैं, हज़रत उमर रज़ि० के अंदर यह हो रही है कि यह हो क्या रहा है, सुलह नामा लिखा गया आपने इमला किया है بسم الله الرحمن الرحيم ठहरो जी, यह तो आप का इसतिलाही लफ़्ज़ है हम तो बाप दादा से بسمك اللهم लिखते आए हैं, मुसलमानों ने फिर जमना चाहा, उन्होंने कहा, سुलह नहीं होगी, هذا ما عاهد عليه من محمد رسول الله ठहरो जी, अगर रसूल अल्लाह मान लें तो झगड़ा क्या है, आपने खुद उसे मिटाया, सुहैल के बेटे अबू जंदल रज़ि० आ गए, वह जो दफ़ा तै हुई है जो पहला शख़्स वापस जाएगा वह मेरा बेटा होगा, आपने फ़रमाया अभी यह दफ़ा लिखी नहीं गई उसने कहा तै तो हो गई चांटे मारता ले गया। सब मुसलमानों के बीच में अकेला खड़ा हुआ है उसने पिटाई शुरू कर दी, मुसलमानों तुम्हारे बीच में भी पीट रहा हूं, जोश आया है, उस जोश को दबाया है, इसका काम है इताअत, हज़रत उमर रज़ि० ने एक तरफ़ तलवार लटकाई और अबू जंदल के पास गए और समझाना शुरू किया, जब चलने

लगे انا فتحنا
नाज़िल हुई, खुली फ़त्ह हो गई। हुज़ूर सल्ल० ने बहुत खुश होकर बुलाया आओ उमर रज़ि०, अगर हुज़ूर सल्ल० बे नफ़्स नफ़ीस आपने यह बात अपनी ज़ुबान से न कही होती तो मैं कभी न मानता, हज़रत अबूबक्र रज़ि० फ़रमाने लगे जितनी बड़ी फ़त्ह इस्लाम में हुदैबिया है वैसी कोई है ही नहीं। वही सुहैल रज़ि० आप के थूक को अपने मुंह पर मलते हैं आंखों से आपके बालों को लिपटाते हैं। जूते मारने वाला सर पर जूते रखना वाला बन जाए, उन्होंने हमारे कहने पर क्या तो हमने भी तै कर दिया कि आज जो यह सारे ख़ूनख़्वार बन रहे हैं यही इनकी जूतियां सीधी करेंगे, यही सुहैल रज़ि० बूढे मैदान जंग के अंदर चौकी पर रहा करते थे। मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया था जो सरहदों पर ज़िंदगी गुज़ारे उसे अल्लाह ये देंगे, अबू जहल के भाई हारिस, अबू जहल के बेटे इक्रिमा रज़ि०, हज़रत ख़ालिद ने ज़माना इस्लाम में हज़रत इक्रिमा से कहा, इक्रिमा रज़ि० ख़तरा है आगे मत जाओ, मैं मुहम्मद के मुक़ाबले पर जब आया जब कभी न कहा कि ख़तरा है। आज जब इनके रास्ते पर मर रहा हूं तो कहता है कि ख़तरा है, झल्लाकर कहा हटो आगे से, जब आदमी बंदगी पर आता है तो थोड़ी-थोड़ी बात पर पकड़ होती है यह म्यार कामियाबी है कि कौन आदमी बंदगी पर आता है आपकी बंदगी के कमाल ने क़ियामत तक इस उम्मत का बक़ा तै करा दिया। आख़िरत के अन्दर यह पूरी की पूरी उम्मत जन्नत में जाएगी, अगर दायरा इस्लाम में हों, 120 सफ़ों में से 80 आप की उम्मत की होंगी, 40 सफ़े बाक़ी उम्मतों की होंगी, 5 मर्तबा मश्क़ रखी गई इस बात की शक्लों को छोड़ना और अमलों पर क़दम बढ़ाना आ जाए, यह मश्क के लिए है वरना अमल का म्यार 24 घंटे की ज़िंदगी में फैला हुआ है। अपनी जानों पर तक्लीफ़ों को उठाने के लिए अहकामात हमारे ज़िम्मे, अदल व इंसाफ़ के दुनिया के क़ायम करने के अहकामात हमारे ज़िम्मे हर नंगे को कपड़े पहनाने

के अहकामात हमारे ज़िम्मे, हज़ारों गुना अहकामात हैं जो हमारे ज़िम्मे हैं, असर की आज़ान की आवाज़ पहुंची, सारी शक्लें जिनमें तुम हो छोड़कर हुक्म पर आ जाओ जब दावत के अहकामात की आवाज़ आ जाए तो इस तरह शक्लें छोड़कर चले आओ जैसे फ़जर के लिए शक्लें छोड़कर आ गए थे दीन के मिटने की तरफ़ मुतवज्जोह किया जाए, लोग मुहताज हैं। सैलाब व तूफ़ान आया, कमाने के अहकामत सबसे छोटे हैं, आख़िर में आते हैं यह अफ़राद से ताल्लुक़ रखते हैं, दावत के, तालीम व तर्बीयत के, गुरबा परवरी के अख़्लाक़ के अहकामात मज्मूआ से ताल्लुक़ रखते हैं, इन अहकामात की तामील होगी तो अल्लाह सब के लिए इज़्ज़त और ग़िना को चाहेंगे तो यह हुक्म टूटे सबके लिए ज़िल्लत व फ़क्र को चाहेंगे। जब अहकामात बड़े हैं तो उन अहकामात के लिए शक्लों को छोड़ो, अल्लाह तुम्हारे लिए कामियाबी चाह लेंगे, आज खेती सारे साल दिखाई देते हैं, जब हुक्मों पर ज़िंदगी आ जाएगी तो आप शक्लों में बहुत कम दिखाई देंगे, जब आप अहकामात के ऊपर आएंगे तो शक्लों में बहुत कम नज़र आएंगे, जब आप जवा मर्दी का सबूत देंगे। हम गर्मी सर्दी से नहीं घबराते, फ़क्र व ग़िना को बराबर समझते हैं खेती हो जाए, अलहम्दु लिल्लाह खेती न हो, अलहम्दु अला कुल हाल, अब चाहे तुम क़िला के बचाए झोपड़े में आ जाओ, कारोबार में छोटे पैमाने पर आ जाओ, फिर अल्लाह तुम्हारे लिए कामियाबी चाहेंगे और छोटी-छोटी शक्लों में कामियाब करके दिखाएंगे और दूसरों को बड़े-बड़े राकटों की एटम की शक्लों में नाकाम करेंगे, अब हम शक्लों से निकलने की मश्क़ नहीं करते। 17 मिनट तो पाख़ाना ही में लग जाएं, कौन-सी शक्ल बिगड़ जाएगी यह सोचकर जाते हैं इनके सामने यह है इतने मिनट में शक्ल पर कोई कोई फ़र्क़ नहीं आएगा, मुश्किलों से ज़िंदगी बनने का ज़हन है और इसी में से यों कहें कि इतनी देर में शक्ल का क्या बिगड़ जाएगा, इसका शक्ल को छोड़ना नहीं कहते, यह तो ऐसे है जैसे बैठे-बैठे

थक गए और थकन उतारने के लिए उठ गए, पहले शक्लों को छोड़ना था, फ़लां नमाज़ के बाद तालीम, फ़लां नमाज़ के बाद तस्बीह, फ़लां नमाज़ के बाद दावत, दावत यहां थी, दीन के लिए मेहनत यहां थी, तालीम के लिए जाना भी पड़ता था, फ़लां इलाक़े वालों पर फ़ाक़े पड़ रहे हैं, यह ले लो और इनको जाकर यह देकर आओ, जितना हुक्मों को पूरा करने में शक्लों को तोड़ोगे उतना अल्लाह तआला तुम्हारी चाह को पूरा करेंगे, नमाज़ के बाद आपसे मुझे काम है बहुत अच्छी बात है वहां मुझे काम में न लगाया गया तो आपकी ख़िदमत के लिए हाज़िर हूं, वह भी इस लाइन का आदमी है यह तो है और कामों के एतबार से, अज़ान वक़्त की ख़बर देने के लिए है या नमाज़ की इत्तिला देने के लिए है नमाज़ खड़ी हो गई, हुज़ूर सल्ल० के ताम्मुल दोनों तरह के थे वक़्त होते ही अज़ान हो गई, नमाज़ हो रही डेढ़ दो घंटे के बाद, रात दिन के आदमियों से हर इलाक़े की बात मालूम कर ली जाती थी। आख़बरात नहीं थे, हालात मालूम कर लिया करते थे, मुहम्मद सल्ल० तक बात पहुंचाकर फ़ैसला कर लिया करते थे इनके शौरा इमाम के पास काम करने वाले सारे पहली सफ़ में, हज़रत उमर रज़ि० तक रहीं। यह बात एक आदमी कहें कि मैं नमाज़ के लिए पहुंचा वह लोग मश्विरे में मश्ग़ूल थे, मैं पहली सफ़ में जाकर बैठ गया, नमाज़ खड़ी हुई तो किसी ने पकड़कर मुझे पीछे कर दिया और खुद आगे बढ़ गया, मुझे बहुत गुस्से आया, नमाज़ के बाद वह साहब आए और कहा, मैं उबई बिन काब रज़ि० हूं, हुज़ूर सल्ल० का हुक्म है कि समझ बूझ वाले हमारे पास रहा करें जितनी तक्लीफ़ें उस जैल में तुम पर गुज़रेंगी वह अल्लाह की माशियत तुम्हारे मुवाफ़िक़ कर देंगी जो नक़्शे बनाने में अमल तोड़े हैं, उन सबक लिए अल्लाह उनके मग़लूब होने को चाह लेंगे, जब वह चाह लेंगे तो तुम झोपड़े में बुलन्द हो जाओगे और जब वह चाह लेंगे तो क़िला में पस्त हो जाओगे, मस्जिद का मुक़ाबले बाज़ी की शक्लों

से है। हर आदमी के घर से हर आदमी की दुकान से मस्जिद का मुक़ाबला है, कभी चार माह कभी छः माह का मुक़ाबला है, हर आदमी की अपने शक्लों से मस्जिद का मुक़ाबला है, अपनी कमाई और अपनी घरेलू शक्लों को जो शिकस्त दे दे अल्लाह की कामियाबी चाह लेंगे, जो आदमी अपने मस्जिद वाले अमलों को शिकस्त दे देगा, बाहर की शक्लों को फ़त्ह दे देगा। अल्लाह इसके ख़िलाफ़ चाह लेंगे, असल मेरा वजूद नहीं असल अल्लाह का वजूद है, मेरी बात टूटे टूट जाए अल्लाह की बात न टूटे, मेरी ख़्वाहिश टूटे टूट जाए, जो इस तरह मस्जिद को ग़लबा दे दे अल्लाह तआला उसकी मुवाफ़क़्त चाह लेंगे, अगर कोई आदमी यह चाहे कि दुनिया आख़िरत के सारे मसाइल में अल्लाह की सारी माशियत मेरे मुवाफ़िक़ हो तो अल्लाह के हुक्म को हर हर शक्ल को छोड़कर दिखालाए, ग़िना छोड़कर फ़क़्र को इख़्तियार करके दिखलाए, अल्लाह की माशियत मुवाफ़िक़ हो जाएगी। अल्लाह नीचे लाएंगे, हुक्म पूरा किया, एक बालिश्त शक्ल नीचे रह गई, चेहरा देखते रहे नीचे लाते रहे, किसी को ले जाते ले जाते उसकी शक्ल को जड़ तक निकालकर फेंक दिया फिर जो ज़िंदगी उठाई है आसमानों पर पहुंचा दिया, मौलवी साहब बात तो समझ में आ गई, बस वह एक शक्ल अटक रही है बस ज़रा इंतिज़ाम कर दूं, यह एक इम्तिहान है इस शक्ल को छोड़कर चल दिया। बस एक शक्ल हो रही है बस ज़रा इंतिज़ाम कर दूं, यह एक इम्तिहान है इस शक्ल को छोड़कर चल दिया, बस एक शक्ल हो रही मैं तो हर वक़्त तब्लीग़ में फिरूं हूं, मुंशी जी भी कह दें कि मां जी, अब वह शक्ल बनें कैसे, शक्ल रहे लेकिन शक्ल के वास्ते तो अपने आपको मत समझ لا رهبانية فى الا سلام न शक्ल ख़त्म करो, न शक्ल परस्त बनो, ऐसा बनना चाहते हैं, जब ऐसा आदमी बन जाए तो अपनी कुदरत ज़ाहिर फ़रमाते हैं। दुश्मनों को भी बदल देते हैं या करते हैं या हिदायत देते हैं, बड़ी–बड़ी नामसाइद शक्लों पर अल्लाह कामियाब कर देते हैं, निसाब

तो मश्क़ है, मश्क़ हो जाए तो फिर कोई निसाब नहीं, मुतालबा क्या है ? जिस वक़्त अल्लाह का हुक्म कान में पड़ जाए शक्लों को छोड़कर हुक्म में लग जाओ हुक्म सौ से ताल्लुक़ रखता है सो शक्लों को तोड़कर चले जाओ जिस रात मदीना पर हमला की इत्तिला आ चुकी थी उस रात को अबूबक्र रज़ि० ने सबको मदीने से निकाल दिया। कुत्ते और दरिंदे भेड़िये हमारी लाशों को पकड़कर ले जाएं कोई दबाने वाला न हो, फिरने से बाज़ न आएंगे, अल्लाह ने चाह लिया कि सारे अरब में इनकी ही चले, आठ दस हज़ार आदमी न होंगे, जो हमले के लिए आ रहे थे वे पांच लाख से कम न थे, हुज़ूर सल्ल० फ़रमा रहे हैं ईमान के लिए फिरो, इरतिदाद फैल रहा है, बैठना कहा से निकाल सकते हो, अबूबक्र रज़ि० का ज़माना है। आज मुसलमानों में ज़बरदस्त इरतिदाद है, एक इरतिदाद अमली है लोग हुज़ूर सल्ल० के अमल छोड़ना शुरू करते हैं, दूसरा इरतिदाद एतक़ादी है जिस अमल के बारे में जो बतलाया था उसका यक़ीन निकलना शुरू होता है, जो अमल छोड़ता है उसके हिस्से का यक़ीन भी छोड़ता है चलते चलते सारे अमल सारा यक़ीन निकल जाता है बस अब ज़ुबान से कह ले मैं इसाई हूं, जो इरतिदाद एतक़ादी इरतिदाद अमली हो इसका नतीजा है इरतिदाद लसानी, आज मुसलमानों की ज़िंदगी में इरतिदाद चल रहा है। चाहे इसकी कोशीश करे न करे, खुद इरतिदाद चल रहा है, हज़रत उमर रज़ि० आए और कहा इस वक़्त ख़तरे की हालत है हर बात पर लड़ाई की धमकी देनी ठीक नहीं है उस वक़्त तीन इरतिदाद थे।

1. बिल्कुल मुर्तद मुसलैमा को मानने वाले,
2. ज़कात नहीं देंगे,
3. ज़कात देंगे लेकिन मदीना नहीं भेजेंगे, ख़ुदा की क़सम अगर रस्सी का भी इंकार करेगा तो क़त्ल करूंगा अगर ऐसी सूरत की जाए कि नमाज़ नमाज़ पर जोड़ कर लो, फिर हमारे आदमी ज़्यादा

हो जाएंगे, जाहिलयत के ज़माने में ख़ून—ख्वार था अब बुज़दली दिखाता है तू तो जहां की बातों में भी आ जाएगा, मुहम्मद सल्ल० इंतिक़ाल फ़रमा चुके हैं, वही पूरी हो गई, जो आज मिट गई वह क़ियामत तक के लिए मिट गई, मुसलमानो ! ख़ुदाए पाक की क़सम! बिल्कुल अबूबक्र के ज़माने के तरह आज इरतिदाद चल रहा है हममें से कोई इससे ख़ाली नहीं।

उमूमी बयान न० 12

अल्लाह की बड़ाई दिल में बिठाते बिठाते मर जाओ

पीर फजर के बाद, 16 जुलाई 1962 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

अल्लाह तआला जब किसी गिरोह क़ौम या तबक़े को या मुल्क को या शख़्सों व अफ़राद को कामियाबियों से नवाज़ना चाहते हैं तो उनके लिए अहकामात के सिलसिले क़ायम फ़रमाते हैं तुम्हारी जितनी क़िस्म की कामियाबियां हैं वह सारी इन हुक्मों की तामील पर देंगे, राहत व चैन, ऐश व सुकून का मामला सारे एतबारों से कामियाबियों को वायदा फ़रमाते हैं और वह कामियाबियां देकर दिखाते हैं जबकि आदमी हुक्मों की तामील पर लग जाएं इस यक़ीन के साथ कि हर बात इस हुक्म के पूरा करने से होगी, पैसा भी इसी हुक्म के पूरा करने से मिलेगा। चीज़ें इसी हुक्म के पूरा करने से मिलेंगी, परवरिश इसी हुक्म के पूरा करने से होगी, जब एक हुक्म पर अमल करने वाला बने और इस एक हुक्म पर यक़ीन ले आए तो अल्लाह दूसरा हुक्म दे दें, फिर तीसरा, फिर चौथा हुक्म दे दें जितना नवाज़ना चाहते हैं अहकामात को बढ़ाना चाहते हैं और जों जों हुक्म बढ़ाते जाएंगे कामियाबी का म्यार बढ़ता चला जाएगा। कामियाबियां महदूद नहीं मस्अला अगर वह होता है जो इस मुल्क के हिन्दुओं ने बना रखा है तो कोई मुश्किल बात नहीं, फिर यही वापस हो जाएं, बन्दर बनकर आ गए, चूहा, खनखजूरा बनकर आ गए, वाक़ई में इंसान है या बिच्छू है। एक गोरख़ धंधा है चाहे महल बना लें, जब मरेंगे तो पता चल जाएगा कि कहां

जाकर पीटते हैं, इंसाफ़ की मुहादात की पाबन्दी की कोई सूरत नहीं। अमल का म्यार क़ायम होने के कोई माइने नहीं, इसाइयों में भी अमल की कोई ज़रूरत नहीं, इन्होंने ईसा अलै० को बेटा बना दिया, बाप बेटे का पाबन्द है रह गए हम मुसलमान, न किसी को अल्लाह का बेटे, न बीवी न भाई, न बाप न मायें, वह तन तन्हा है। हमारे एक एक अमल को देखेगा, अच्छे अमल पर जन्नत देगा बुरे अमल पर दोज़ख़ में डालेगा, ज़ुल्म करेंगे किसी का पैसा दबाएंगे, बे हयाई की, ज़मीन दबाई, ख़ून चूसा तो मुसीबतें आएंगी, ज़िंदगी के बनने बिगड़ने में का सारा मस्अला हो गया, इनका तो कोई काम ही नहीं, ख़ूब मकान बनाएं यों कहें कि कल को जानवर बनकर आएंगे, ख़ुदा आज ही जानवर कहें 'اولئك كالانعام، يا كلون كماتا كلون' अल्लाह तआला ने अहकामात का सिलसिला क़ायम फ़रमाया, हुक्म पर जो ईनाम मिलते हैं वे हमेशा के लिए होते हैं, चीज़ से जो ज़िंदगी बनती है वह फ़ानी होती है, खाना-पीना पेट भरने का मस्अला आधे दिन का हल हुआ। कोठियों और मालियत से जो मस्अला हल होता है उतनी ही मिक्दार के अन्दर होता है जितना रोटी से पेट भरने का हल हुआ, अल्लाह तआला एक बार पेट भर दें हुक्म पर, फिर कभी भूख नहीं आएगी, एक बार सेराब कर दें हुक्म पर, फिर कभी प्यास नहीं आएगी, माल पर जो चीज़ मिली, वक़्त मुक़र्रर के लिए मिली है' 'انا خلقنه شئى بقدر' वक़्त मुक़र्रर के बाद या कामियाबियां निकल जाएंगी या चीज़ें निकल जाएंगी, हर चीज़ अपनी तर्तीब से ली जाए है, तर्तीब पर जो पहले आता है अगर उसे न करो तो आख़िर तक सारी तर्तीब बिगड़ गई, सबसे पहले हुक्म हमारी कायिमाबी के लिए दिया है वह है अल्लाह की बड़ाई बयान करो يا ايها المدثر قم فانذروربك وكبر وثيابك فطهر ख़ुदा की बड़ाई बयान करो और अपने अमल पाक करो, एक हदीस में है कि आदमी जिस लिबास में मरेगा उस लिबास में उठाया

जाएगा। जिस सहाबा रज़ि० ने यह हदीस बयान की है उन्होंने इंतिक़ाल के वक़्त अच्छे कपड़े मंगाकर पहने और बाक़ी सब मुहक़्क़ीन कहते हैं सारे अंबिया सिद्दीक़ीन, शोहदा, नंगे उठाएंगे जाएंगे। सबसे पहला जोड़ा हज़रत मूसा अलै० को पहनाया जाएगा, कपड़ों से आमाल मुराद हैं, झूठ पर मरा तो झूठ पर उठाया जाएगा, सूद पर, धोखे पर, हराम करता हुआ मरा, हज करता हुआ मरा तो हज करता हुआ उठाया जाएगा। وربك فكبر यह एक हुक्म दे दिया अल्लाह की बड़ाई बयान करो, अल्लाह से फ़ायदा हासिल करने के लिए पाकिज़ा करो, हुज़ूर सल्ल० ने यह हुक्म की तामील शुरू कर दी, अल्लाह की बड़ाई बयान करने के वास्ते दूसरे की छोटाई बयान करनी पड़ेगी, अल्लाह बड़ाई क़ायम नहीं होगी जब तक मसूवा की बड़ाई न टूटे, हुकूमतें की, बाग़ात की, कारख़ानों की बड़ाई दिल से निकालो, एक अल्लाह ही बड़े हैं। सारे इंसान मिलकर अल्लाह की ज़ात के मुक़ाबले में बहुत छोटे चींटी शेर से बहुत छोटी, पत्थर कौआ हिमालय से बहुत छोटा, अगर इस तरह लेते चले जाओ बड़ाइयां छोटाइयां क़ायम करो तो यहां पहुंचोगे कि जिब्रील बहुत बड़े, एक कद पूरा करने में 14 हज़ार साल की जिसामत है। सातों ज़मीन से लेकर अर्शे इलाही तक, हर खिला की हर मिला की मुसाफ़त पांच सौ बरस, अल्लाह के मुक़ाबले में जिब्रील बहुत छोटे जब अल्लाह की अज़्मत और बड़ाई को जिब्रील को ख़्याल आता है तो सिकुड़ते सिकुड़ते छोटी चिड़िया की तरह रह जाते हैं। अल्लाह के सामने इतने से, इतने से भी नहीं तुम्हारे समझने को है बात, अल्लाह बहुत बड़े हैं, इसराइल बहुत छोटे हैं वह मलाकुल मौत जो जिब्रील की भी जान निकलेगा, इसराइल की भी निकालेगा, मिकाइल की भी निकालेगा अब कौन रह गया, तू भी मर जा, वह भी मर गए, सातों ज़मीन व आसमान में सबसे बड़ी मुश्किल बनती है वे इन फ़रिश्तों की बनती है, मुसलमानों को पहला हुक्म यही दिया गया कि अल्लाह की बड़ाई

बयान करो, जितना अल्लाह की बड़ाई बयान करोगे उतना तुमको मकान मिलेंगे। दूध शराब की नहरें मिलेंगी, ख़ौफ़ व हरास इतना दूर होगा जितना तुम्हारा वक़्त अल्लाह की बड़ाई बयान करने लग जाएगा, रोटी कैसे मिलेगी, दुश्मन कब पांव चूमेंगे, ज़मीन कैसे मिलेगी, अल्लाह की बड़ाई ब्यान करो, दुकान बहुत छोटी है, मैं बहुत छोटा हूं, मेरी मेहनत से क्या होगा, मैं अल्लाह की बड़ाई बयान करूंगा, अल्लाह मुझे देगा, यह नट वट आते हैं, यह जहां जाएं वहां वालों के बड़ों की बड़ाई बयान करें। जो छोटे हैं जब यह बड़ा कहने पर दे देते हैं जो वाक़ाई में बड़ा है इसको जब बड़ा कहा जाएगा तो कितना मिलेगा, ख़िलाफ़ वाक़िआ है छोटे को बड़ा कहना इस पर भी मिल जाता है, सातों आसमान व ज़मीन से बड़ी जन्नत मिली तूने अल्लाह को बड़ा कहा, सहाबा किराम रज़ि० ने मक्का में खड़े होकर अल्लाह की बड़ाई बयान करना शुरू की। जितना अल्लाह की बड़ाई बयान करेंगे अल्लाह पालेंगे खाने को देंगे, हज़रत अबूबक्र, उस्मान, तलहा, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन सब अल्लाह की बड़ाई बयान करने पर लग गए, हज़रत उमर रज़ि० तो 121 वें में आएंगे। अब मक्का के अन्दर सबकी बड़ाई की धज्जियां बिखर रही हैं, लात व उज़्ज़ा बहुत छोटे हैं, जितनी बड़ाइयां क़ायम थी शहर में इन सबके मुक़ाबले में अल्लाह की बड़ाई क़ायम की जा रही है, अब यक़ीन बन रहा है कि अल्लाह की बड़ाई बयान करने से ज़िंदगी बनेगी, अल्लाहु अक्बर ज़िक्र के तौर पर कहो तो इनाम मिलेंगे और दावत के तौर पर कहो तो इनाम मिलेंगे, अहकामात आने शुरू हुए, हुक्मों पर मेहनत करो, अल्लाह की बड़ाई के गीत गाओ, चप्पे–चप्पे पर पहुंचकर कहो अल्लाहु अक्बर। बात कहो तो दावत के तौर पर कहो अल्लाहु अक्बर चिपके रहो तो ज़िक्र के तौर पर कहो अल्लाहु अक्बर, पारलीमेन्ट में जाओ, वे कहें सियासत दां बहुत बड़े, मुल्क बहुत बड़ा, तुम कहो मुल्क बहुत छोटा तुम बहुत छोटे, मनी के क़तरे से

बने हो, अल्लाह बहुत बड़े, अल्लाह तआला कुसुर माफ़ करने में, कहार होने में, सत्तार होने में बहुत रहे। अल्लाह के अलावा हर बात में बहुत छोटा, एक औरत में रहम है अपने बच्चे के ब–क़द्र अल्लाह का सब पर रहम है, अल्लाह बहुत बड़े हैं रहम में, करम में, सख़ावत में, सब जगह अल्लाह की बड़ाई करो, कोई बड़ाई अल्लाह की बयान करता हो हम सुनें या ख़ुद अल्लाह की बड़ाई बयान करें ज़िक्र के तौर पर या दावत के तौर पर जब अल्लाह की बड़ाई से दिल तुम्हारे भर जाएंगे शेर और अज़्दा और हाथियारों वाले लरज़ जाएंगे। हर एक छोटा नज़र आएगा, सातों आसमान छोटे नज़र आएंगे, हमारे आगे बड़े हैं, अल्लाह के आगे बहुत छोटे हैं, वह नबियों में बड़े हैं, हुज़ूर सल्ल० जितनी बातों के एतबार से हमारे बड़ें हैं, अल्लाह तआला जितना हमारे बड़े हैं उतने ही एतबारात से मुहम्मद सल्ल० के बड़े हैं। चींटी, मकोड़ा, शेर, पहाड़, आसमान एक दूसरे से बड़े छोटे हैं, अंबिया की बड़ाई, मख़लूक़ात से बड़े है लेकिन ख़ुदा की ज़ात के मुक़ाबले में इनकी कोई हैसियत नहीं दम मारने की ताक़त नहीं, नबियों की बड़ाई इस तरह की नहीं कि ख़ुदा के मुहाज़त में कहीं आएं। बाप किसी बेटे की बात को बहुत सुनता है, बहुत से बच्चे हैं, ख़ुदा के साथ में वैसी छोटा का ताल्लुक़ है, ऐसे छोटे हैं कि जो अल्लाह से मांगते हैं वह दे देते हैं, वह बड़े हैं इसलिए कि उन्होंने अपने आपको छोटा मान लिया, हज़रत ईसा के बारे में ईसाइयों ने कहा कि यह इतने बड़े हैं कि ख़ुदा के जिन्स से हो गए, नहीं भाई अल्लाह क़ादिर हैं, अल्लाह ख़ालिक़ हैं, यह मख़लूक़ है एक आदमी अपनी लकड़ी आग में डाल दे, कहोगे बड़ा ज़ुल्म है ? नहीं भाई अल्लाह अगर चाहें तो सारे नबियों को आग में डाल दें, यह सब ख़ुदा की मिल्क है। पहली बात जो हमे दी गई अपनी परवरिश हिफ़ाज़त के वास्ते अल्लाह की बड़ाई को लेकर दर–दर फिरो, सहाबा रज़ि० ने काम इसी को बना लिया, अल्लाह बहुत बड़े हैं अल्लाह के कहने के मुताबिक़ चलोगे तो बहुत

बड़े मुनाफ़े से नवाज़ेंगे और अगर अल्लाह का कहना माना तो बहुत बड़े नुक़्सानात भुगतने पड़ेंगे, बड़े के कहने के मुताबिक़ अपने ज़िंदगी को मोड़ा तो बड़ा तुमको ख़सारे से बचाएगा, अगर तुमने छोटे को बड़ा माना तो ऐसे ऐसे अज़ाब आएंगे कि कोई हिसाब नहीं, ऐसे ऐसे अज़्दे हज़ारों लिपटे हुए होंगे, जितना बड़ा अज़्दा, ज़हर में उतना ही बड़ा, एक सांस अगर एक अज़्दा ले ले चालीस साल तक सब्ज़ी का पत्ता न उगे। ईरान, इराक़ में क़हत पड़ा, रूस से अमेरीका से मांग लिया तो क़हत ख़त्म हो गया, दोज़ख़ में एक बार कई–कई हज़ार अज़्दे होंगे, दोज़ख़ियों को गिनो तो सही कितने हैं, हर एक के हज़ार अज़्दे लगाओ, दोज़ख़ ख़ुदा का ख़ज़ाना नहीं है, ख़ज़ाना से मख़्लूक़ है दोज़ख़ ख़ुदा के ख़ज़ानों पर मख़्लूक़ का लफ़्ज़ नहीं आता, दोज़ख़ के ज़हर को इतना बड़ा माद्दा ख़ज़ानों के मुक़ाबले में मच्छर के पर के बराबर नहीं, जन्नत की ख़ुश्बू का ज़र्रा डाल दें तो इसकी शिद्दत से सबकी जान निकल जाए, एक एक जन्नती को मनों ख़ुश्बूएं, सारे जन्नतीयों को ख़ुश्बू, ख़ुदा के ख़ज़ाने की ख़ुश्बूओं के मुक़ाबले ज़र्रा के बराबर नहीं, सारे दुनिया के इंसानों की भूख दोज़ख़ के एक फ़र्द की भूख के मुक़ाबले में ज़र्रा के बराबर नहीं और दोज़ख़ की मज्मूई भूख अल्लाह के ख़ज़ानों के मुक़ाबले में ज़र्रा के बराबर नहीं जो कुछ भूख, मुसीबत, ज़हर अल्लाह के ख़ज़ानों में है अल्लाह इन सबसे बचाएंगे जब यह ख़ुदा की बड़ाई बयान करेगा और सारे इनाम के दरवाज़े खुल जाएंगे जब यह अल्लाह की बड़ाई बयान करेगा, फौज, पुलीस, हुकूमत, सदारत, वज़ारत बहुत छोटी, आपस की बड़ाई छोटाई को इस तरह समझने लगे की अल्लाह की बड़ाई पर गिर्द पड़ने लगी, यह बहुत बड़े हैं आपस में इनकी बड़ाई मख़लूक़ वाली है, मख़लूक़ में तग़य्यूर व तब्दुल आएगा। अक्सीरियत के साथ अल्लाह जो करेंगे वह होगा, वज़ीर के साथ अल्लाह जो करेंगे वह होगा, इंसान छोटा है जिन्स वह है जो छोटी है, मनी के क़तरे से बनी है, यह हमारी यूनीवर्सटी

के बहुत बड़े आदमी हैं, बटनों के कारखाने के बहुत बड़े आदमी हैं, बड़े कहते कहते लाखों करने वाले क़रार दे दिए गए। करने वाला उनमें से एक भी नहीं, उनसे यह हो जाएगा, डिप्टी कमिश्नर साहब यह कर देंगे उनसे होने का ज़हन क्यों बना इनकी बड़ाई का ज़हन का ज़हन बन गया, छोटा होना मुरादिफ़ इसके है कि इसके कुछ होगा नहीं, जब लड़ाई हो तो क्या कहेंगे, तो है क्या, तू छोटा है, मैं बड़ा हूं, कई बेटे हैं, यह बड़े बेटे हैं अब बाप से भी यह कहे कि अब्बा जी बड़ा हूं, मैं यों कर दूंगा मैं यों कर दूंगा, तेरी जिन्स ही वह है जो छोटी है तो बेटा है, मैं बड़ा हूं ज़्यादा बड़ा बने फिरे है, निकल जा मेरे घर से, कानूनी तौर पर सब कुछ बाप के नाम है बेटों के नाम कुछ नहीं है। जब बड़ाई मुक़ाबले पर आ जाती है मख़्लूक़ के अन्दर जो बड़ाई के बोल एक दूसरे के तर्ज़ पर बोले गए थे, यह सारी मख़्लूक़ छोटी है मुल्क के सामने, जब यों हो गया कि उनसे हो जाए तो अल्लाह की बड़ाई मुक़ाबले पर आ गई अब खेती वाले को खेती में नचा रखा है, मुल्क वाले को मुल्क में नचा रखा है, अमरीका कहने में इतना बड़ा, अल्लाह ने नचा रखा है हज़ार और करोड़ का फ़र्क़ बताने को था, करोड़ बड़े है, करोड़ हज़ार सारे मिलकर जिन्स तो छोटी है। मख़ालूक़, अमेरीका, रूस मख़्लूक़, इंडियन यूनियन मख़्लूक़, पहाड़ मख़्लूक़, मच्छर मख़्लूक़, मख़्लूक़ जिन्स वही है जो छोटी है, यह बहुत बड़ा मच्छर है, पूरी देहली को ख़त्म कर देगा, जो मच्छर को जानते होंगे वे कहेंगे पागलखाने भेजो, सारी दुनिया में जब लफ़्ज़ मख़्लूक़ ही हुआ, इंसान मख़्लूक़, यह बहुत बड़ा आदमी है यह मुल्क में यों कर देगा, ख़ुदा के हां मख़्लूक़ उस हक़ीर व वजूद का नाम है जिससे कुछ होता नहीं, दिल में से बड़ाई निकालों मख़्लूक़ की, मेरी एक बेचारे की क्या बिसात, सारे इंसान मिलकर बहुत छोटे हैं। अल्लाह बड़े हैं तमाम अव्वलीन व आख़िरीन एक मैदान मे जमा हों, ख़ुदा

का सुनना इतना बड़ा है कि सबकी बराबर एक सुन लेंगे (हदीस) (1) उलेमा का अश्काल, सूई पर की नमी से समुंद्र में कमी आती है, इतनी कमी वाक़ई हो जाएगी ? अब बताओ ख़ुदा कितने बड़े हैं, अल्लाह तआला से लेने की सूरत यही है कि इनकी बड़ाई के बयान करने वाले बन जाओ यही तुम्हारा काम है अरे ज़मीनदार मत बन मुकब्बिर बन ज़मीन छोटी है इस पर मेहनत करेगा थोड़ा पाएगा, अल्लाह बड़े हैं, अल्लाह की बड़ाई फैलाने पर मेहनत करेगा, एक अकेला है बड़ा है एक सबको इस्तेमाल करता है, ख़ज़ाने इसके सबसे बड़े हैं ख़ुदा के हुक्मों को तोड़ने लगे दूसरे के हुक्मों पर, ख़ुदा के तरीक़ों को छोड़ने लगे दूसरे के तरीक़ों पर, अब रात बुलाएं कि अल्लाह की बड़ाई फैलाने को निकलो, साहब ज़मींनदार बिगड़ जाएगा, ताजिर तिजारत से निकलने को तैयार नहीं, अल्लाह को बड़ा समझते और इनको छोटा समझते होते तो एक आवाज़ पर छोड़कर चले आते, अल्लाह तआला की बड़ाई आज ऐसी रह गई आओ इसी के लिए मेहनत करें दुनिया में कि सब एक अल्लाह को बड़ा मानें और बाक़ी सबको छोटा मानें, बात तो ठीक है मगर चलूंगा कैसे, ज़मींदार 4 बीखे का इतना बड़ा हो गया कि अल्लाह के वास्ते छोड़ने को तैयार नहीं, पहला ज़माना भी एक था अल्लाह अक्बर की आवाज़ से क़िलों की दीवारें गिरी हैं। यहूद नसारा के ऊपर इख़्तिलाज की कैफ़ियत आई हैं, अदालत में गए अल्लाहु अक्बर कहा, जिसकी बड़ाई निकालनी है इसको छोड़, तेरा घर, तेरा कारोबार छोटा है इसको बड़े के लिए छोड़, अब तो बड़े की बड़ाई के गीत गाता फिर, बड़ा तो था एक, हमने बना लिए बहुत सारे, सारी दुनिया के वज़ीरों को जमा करो तो एक छोटा–सा मुल्क भर जाएगा।

---

1. मुराद यह है कि अल्लाह की इतनी अता पर भी तुम अपनी समझ के एतबार मिसाल दे सकते हो तो वह समुंद्र के मुक़ाबले में सूई की नमी तरी क्या कम कर लेगी अल्लाह के वहां तो इतनी भी कमी नहीं होती है, अब्दुस्सलाम पूनवी

अल्लाह की बड़ाई का बोल रह गया, अल्लाह बहुत बड़े, अल्लाह की बड़ाई पर आंसू नहीं टपकते, अल्लाह की बड़ाई पर सूद नहीं छोड़ा जाता, अदालतों में ज़ालिमों की खुशअमद चापलूसी नहीं छोड़ी जाती, हमारे अल्लाहु अक्बर में जान पड़ जाए तो बड़े की बड़ाई साथ हो जाए, कोई समझे अत्तिहयात सीखाने के लिए बुला रहे हैं, हमने सीख ली, चार महीने को चल दिए हर एक की कमाई इसका पजामा है, हारून रशीन का एक बेटा था, सारे मुल्क इसके हाथ में, ईरान, सिंध वग़ैरह इसके हाथ में है, अफ्रिका, स्पेन, तुर्की का बादशाह है हारून रशीन ज़बरदस्त बादशाह है। उरूज और दबदबे का ज़ोर था अब्बा जान इस शान व शौकत पर, साहब ज़दा बिल्कुल ज़ाहिद हो गया, सीधा साधा मोटा झूठा लिबास, टूटे चप्पल फटी से टोपी, एक कुरता एक पाजामा वह भी मामूली, आख़िरत का बादशाह बनने की ज़बरदस्त तैयारी कर रहा (हारून रशीद ने कहा) तूने मेरी इज़्ज़त को ख़ाक में मिलाया, अब्बा जान तुमने मेरे ऊपर बट्टा लगा दिया। जब लोग कहते हैं कि इसका बाप हारून है तो मुझे शर्म आती है, मेरा बाप होकर दुनिया में इतना मुन्हमीक, उसने पहचाना था अल्लाह अक्बर, मैं जा रहा हूं अब तुमको मुंह न दिखाऊंगा, अल्लाह के लिए लगने को ज़िल्लत समझते हो, कुरआन, तस्बीह लेकर वहां से निकला, मां ने एक मोती बांध दिया, मज़दूरी करूंगा एक दिन मज़दूरी लूंगा आठ दिन की (यह मुकम्मल वाक़िआ इख़्तिसार फ़ज़ाइले सदक़ात में मौजूद है) उसने मुझे वसीयत की, मसअली और तावीज़ व कुरआन हारून रशीद को पहुंचा दो और मेरा सलाम कह दो यह मेरी चीज़ बेचकर मेरा कफ़न कर दो, नहीं कुछ पता नहीं हारून रशीद का क्या जोड़ है एक बेटे यों लात मार गया, तू झूठा है, अल्लाह बड़े हैं, तू कहता है कि तेरे पर बट्टा लगता है, मैं कहता हूं कि मुझे बट्टा लगता है मेरा बाप यों दुनिया का कुत्ता बना फिरे, एक भाई मजज़ूब नंगे धड़ंगने फिरते थे। पाजामा पहन लो, पाजामा पहनने से सारा खड़ाक सर पर आए तो मैं पजामा क्यों पहनूं, हर एक की कमाई

इसका पजामा है, जिसकी कमाई बड़ी है अब वह सिपाही अब वह सिपाही जो आपको पकड़कर ले जाएगा तो वह सिपाही कितना बड़ा होगा फिर वह अदालत जो दो डाई साल की क़ैद का फ़ैसला दे दें, ख़्वाह ना-हक़ हो वह अदालत कितनी बड़ी होगी, अमेरीका और रूस से क्या होगा, तुम एक बड़े हो तुमसे यह हो जाएगा तुम्हारे मुक़ाबले पर 36 करोड़ से क्या होगा, अब अगर तुम अपनी कमाई का पजामा निकाल दो, अपनी और इसकी बड़ाई निकाल दो तो आख़िरत का यक़ीन निकल जाएगा। सारी दुनिया एक बाल बाक़ा नहीं कर सकती, अल्लाह जितने बड़े हैं वह पकड़ेंगे तो इतनी पकड़ आएगी जितने वह बड़े हैं, अल्लाह जैसे बड़े हैं वह दे देंगे तो इतनी ही दहशत आएगी, जितने वह बड़े हैं, उतने दिन दे दो कि अल्लाह की बड़ाई ऐसा आ जाए कि हर जगह जब आवाज़ लग जाए तो अल्लाह के लिए हर चीज़ छोड़कर निकल जाओ। दो दिन में यह बड़ाई दिल में आ जाए तो दो दिन दे दो।

एक तरफ़ इसकी बड़ाई की तरफ़ आवाज़ लगाई जा रही है, बड़ाई का इल्म हासिल किया जा रहा है बड़ाई का ध्यान जमाया जा रहा है इसकी बड़ाई अपनी छोटाई की मश्क़ नमाज़ में की जा रही है। अल्लाहु अक्बर कहकर उठना, अल्लाहु अक्बर कहकर बैठना, अल्लाह की बड़ाई दिल में आ जाए, ऐसे बन जाओ कि जब अल्लाह की आवाज़ लग जाए तो यों न कहो कि मेरी बीवी बीमार है। मरने को हो रही है जहां जाओ अल्लाह की बड़ाई सामने आए, जब बीमार अपने आपको अस्पताल में दाख़िल करे तो कब निकले, जब डाक्टर यह कह दे कि हां अच्छा हो गया बस इस तरह निकल जाओ कि जब हम कह दें कि हां अल्लाह की बड़ाई आ गई या बड़ाई अल्लाह के दिल में बिठाते-बिठाते मर जाओ दुनिया देख ले कि हां इनके दिल में बड़ाई अल्लाह की है, अब चाहे महीना भर में बन जाओ ऐसे हम देखेंगे, इम्तिहान लेंगे, पुलीसवालों में भेजेंगे, वज़ीरों में भेजेंगे, फ़ौजियों में भेजेंगे।

उमूमी बयान न० 13

यक़ीन की अलामत बोलना नहीं है

मंगल बाद फ़जर, 17, जुलाई 1962 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो !

सबसे बड़ी माया जिसकी हासिल किए बग़ैर इंसान की ज़िंदगी ख़तरात में घिरी हुई है, वह है ईमान का सीखना, अपने यक़ीनों को मोड़ना, अव्वल तो यक़ीन के बग़ैर अमल कुबूल नहीं होंगे और दूसरे ईमान के बग़ैर अमल पर इस्तिक़ामत हासिल नहीं होती, इसका समराह भी मुरतब्ब नहीं होगा, यही वजह है कि लोग अपने ईमानों की तरफ़ मुतावज्जोह नहीं, तब्लीग़ में लगें कम और जमें कम और जब करनी आ जाए तो घरों में जाकर बैठ जाएं, यक़ीन नहीं सीखा अमल सीख लिया, सबसे पहले हुज़ूर सल्ल० ने ईमान सिखाया, ईमान सिखाकर अमल का सिलसिला क़ायम किया गया, यहां लोग ईमान नहीं सीखते अमल सीख लेते हैं, अच्छे से अच्छे अमल मौजूद लेकिन दुनिया में जूतियां खा रहे हैं, चाहे दुनिया तरक़्क़ी में कहीं पहुंच गई है। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाए हुए अमल उन सब नक़्शों को गिराने की ताक़त रखते हैं, हमने ईमान न सीखा, न इसका दाइया, न कोई फ़िक्र, तब्लीग़ में दो क़िस्म के आदमी निकले, एक तो कमाई वाले कमाई में से न निकलेंगे, अपनी कमाई के इर्द गिर्द चक्कर कांटते रहेंगे, दस दिन से देखा कमाई से फ़ुर्सत का मौक़ा है तो दस दिन को आ गया, यक़ीन एक ख़ास शक्ल के साथ है इस यक़ीन को बाक़ी रखते हुए नमाज़ पढ़ने को, हज करने को, तब्लीग़, ज़िक्र को तैयार हैं। ईमान सीखने को तैयार नहीं ईमान के बग़ैर अमल ऐसा जैसे बग़ैर करंट के बिजली का तार, आज शैतान अमल से ज़्यादा नहीं रोकता,

अमल अगर इसने कर ही लिया तो क्या खुश–फ़हमी पैदा होगी, अगर अमल कर लिया तो मेरी क़सम तैयार होगी, ऐसे बनेंगे जो राइंदा दरगाह हों, अमल आदमी को बिगाड़ने की कोशीश करता है आदमी के पास ईमान की कुव्वत न हो तो अमल से बिगड़े है, अमल क्या बड़ाई पैदा हो गई, शोहरत का जज़्बा आ गया, यह अमल मुंह पर खेंचकर मारा जाएगा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया सबसे पहले आख़िरत में तीन आदमी पेश होंगे, एक पढ़ा हुआ, सदक़ा और और ख़ैरात करने वाला और शहीद, हमने तुझे कुरआन दिया था तूने क्या किया था ? आपने जो कुरआन दिया था मैंने ख़ूब अमल किया, रात को नमाज़ में पढ़ता था दिन में वैसे पढ़ता था। झूठ बोलता था, तूने बड़ा भारी बुज़ुर्ग बनने के वास्ते किया, नीयत ठीक नहीं थी, नीयत ग़ैर की थी, अगर यक़ीन ठीक होता तो नीयत भी ठीक होती, हदीसों में आया है अमल सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए हो तो कुबूल होता है यक़ीन कमज़ोर है तो नीयत ग़ैर अल्लाह की बन जाएगी, इस के पांव पकड़कर उठाया जाएगा और जहन्नम में डाल दिया जाएगा, ये है पढ़े लिखे अमल करने वाले जिन्होंने अल्लाह के ग़ैर के लिए अमल किया, (दूसरा कहेगा) ऐ अल्लाह मैंने ख़ूब मदरसों में, ख़ानक़ाहों में पैसा लुटाया, (जवाब दिया जाएगा) लोगों ने तूझे सख़ी कह लिया, मेरे पास तेरे लिए कुछ नहीं है, तीसरे नम्बर पर वह (होगा) जो ख़ुद ख़ुदा के रास्ते में निकलता था, कभी जान की भी परवाह न की, यह तीन आदमी, जिनसे दोज़ख़ को सबसे पहले भरा जाएगा, जिन्होंने (कमज़ोर ईमान के साथ) अमल किए इनका यह हश्र बनेगा और जिन्होंने (ईमान) हासिल नहीं किया और अमल भी नहीं किए तो इनको तो बग़ैर पूछे दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। ख़ुदा की बातों पर यक़ीन आ जाएगा तो उसके ऊपर सब कुछ मिलेगा, इल्म आ गया, अमल आया तो दोज़ख़, इल्म न आया तो दोज़ख़ और अगर इल्म आ गया और अमल भी कर लिया (लेकिन) यक़ीन न आया तो दोज़ख़,

अव्वल तो जन्नत (सिर्फ़) ईमान पर मिलेगी, शिर्क वालों के मुक़ाबले में ईमान से चमकाया जाएगा अमल से नहीं, असल चीज़ सीखने की है ईमान और यह ईमान सीखने को तैयार नहीं, एक तो कमाने वाले हैं जिनका पूरा यक़ीन अपनी कमाई पर है दूसरा तबक़ा वह है जो कमाता नहीं, जुबान से कहें कि अल्लाह दें। किसी ने किसी पर यक़ीन रखे कि फ़्लां कर देगा, तब्लीग़ तो ख़ूब हो रही है, अन्दर से टटोलो तो उसके दिल के अंदर गोबर भरा हुआ होगा, ईमान के लिए इल्म, ईमान ही के लिए है नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, आख़िर में यह है कि जो आदमी ईमान पर मरेगा, वह जाएगा जन्नत में। आख़िर की दुआ यह है कि जिसे ज़िंदा रखे अमलों पर ज़िंदा रख और मरे तो ईमान पर मर, (यह दुआ) मरने वाले के लिए मांगते हैं, मरने वाला तो मर गया, इसकी दुआ तो यह है اَللّٰهم اغفر لحينا وميتنا मरने वाला ईमान पर मरा या शिर्क पर मरा यह तो अल्लाह जाने, क़ब्र में जाते ही यह सवाल होगा कि तेरा पालने वाला कौन है ? आदमी अपने ज़हन में जिससे पला हुआ इसकी हर वक़्त रियायत करे, ज़मीनंदार के ज़हन में यह बैठा हुआ है कि मैं ज़मींदार से पलूंगा चाहे कितना ही समझ लो, बारिश हो गई बग़ैर खेती के पलते नहीं, खेती बग़ैर , बैल बग़ैर पैसे के नहीं, सूद पर क़र्ज़ लिया, बैल ख़रीद लिया, ज़मींनदारों की अक्सीरियत आज ऐसे ही मिलेगी, खेती से नही पलता अल्लाह पालता हैं, जिनका यक़ीन होगा अल्लाह से पलने का क़र्ज़ा न मिला तो वह बैल ख़रीदने का इरादा निकाल देगा। बटाई पर दे देगा या वह काम करेगा जिससे बैल के बग़ैर काम चल जाए (झल्ली, टोकरा) झल्ली भी डो सकता है। जिसका यक़ीन यह है कि ज़मींदार से चल रहा हूं वह सूद भी ले ले है, रिश्वत भी दे है झूठे बयान भी दे है मरा यह आदमी, मरते ही पहला सवाल (होगा) कि तेरा पालने वाला कौन ? कमाने वाला या न कमाने वाला भी कोई ज़रूरत आकर पड़ेगी (यों कहेंगे) पीर साहब

यों कर देंगे, मुंशी जी यों कर देंगे मरते ही पूरी ज़िंदगा का खुलासा पूछ लिया कि बता तेरा पालने वाला कौन है ? अगर यह यक़ीन लेकर गया कि ख़ुदा पालता है, न कमाई से न किसी शक्ल से व सूरत से पलने का ताल्लुक़ है अगर सारी दुनिया में कोई न हो तो भी मुझे पालेंगे, तो झूठ कह देगा कि मेरा पालने वाला अल्लाह हैं। अगर दिल में नहीं तो ज़ुबान से कैसे निकलेगा, मश्क़ करके दिल में यह बात ले गया कि बिल्कुल कहीं से नहीं पलता, न दुकान से न खेतों से, इसके लिए तैयारियां भी कीं, कमाई की परवाह न की, आदमियों पर निगाह न डाली, जान पर तक्लीफ़ें उठाईं और मुहब्बत करते करते वक़्त गुज़ार दिया, हर हुक्म को पूरा किया, कमाया तो झूठ नहीं बोला, सूद नहीं, रिश्वतें नहीं दीं, आबरू रेज़ी न की, अल्लाह का हुक्म पूरा करूंगा अल्लाह पालेंगे। कटाई के वक़्त आवाज़ लगा दी तो उसी वक़्त दौड़ गया, कोई सूरत नहीं बनी पलने की, जहां गया सबने झंडी दिखा दी, मौलवी ने, पीर ने, मुंशी जी ने झंडी दिखा दी, अल्लाह पालने वाले हैं, सबको छोड़कर चल दिया, अल्लाह ज़मीन फाड़कर देगा, जिसका अपने पलने के बारे में ग़ैर अल्लाह से यक़ीन टूट जाए, ख़ुदा से यक़ीन जुड़ जाए तो यह ईमान वाला बनेगा, जब यह तैयारी करके जाएगा तो कह देगा कि अल्लाह ही पालने वाला, हुज़ूर सल्ल० अच्छी तरह बता गए साफ़ साफ़, जाते ही पूछेंगे तेरा रब कौन है ? देख ले रटने से जवाब नहीं दे सकेगा, दिल में रखने से जवाब दे सकेगा। जब कह दिया कि अल्लाह पालने वाले हैं, अच्छा यह बतलाओ जब अल्लाह पालने वाले थे तो तुमने उससे पलने के वास्ते क्या तरीक़ा इख़्तियार किया ? बिरादरी का तरीक़ा इख़्तियार किया था, इंडियन यूनियन के तरीक़े पर पला करता था। अमेरीका रूस ने जो बताया था यो चलता था यों तो न कह सकेगा क्योंकि इसकी पिटाई हो रही है, हा, हा करेगा (फिर पूछा जाएगा) बताओ इन आदमी को क्या कहूं ? पैसे आ गए तो ऐसी कोठी बनाएंगे

जैसी फ़्लां ने बनाई, जिनकी ज़ुबान पर जान माल ख़र्च करने पर ग़ैर चढ़े हुए थे, वह न कह सकेगा कौन हैं ? जिसकी ज़ुबान पर हुज़ूर सल्ल० चढ़े हुए थे वह कह सकेगा कि यह हमारे नबी पाक हैं, इल्म पर ज़ुबान नहीं बोलेगी, ईमान व अमल पर बोलेगी, ख़ुशूअ की तक़रीर हो रही है, ख़ुशूअ का पता नहीं, ख़िदमत ख़लक़ की तक़रीर हो रही है ख़िदमत ख़लक़ का पता नहीं, बे ईमान की ईमान पर तक़रीर हो, एक यहूदी, मुश्रिक, बुत परस्त, ख़ुदा पर तक़रीर कर सकता है, नसरानी वुज़रा हिन्दु पंडित, अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्ल० पर, इस्लाम पर ख़ूब बोल जावें हैं। हुज़ूर सल्ल० के माने बग़ैर भी हुज़ूर सल्ल० पर तक़रीर हो सकती है, यक़ीन की अलामत बोलना नहीं है, आज ग़ैर–मुस्लिम भी बोल रहे हैं और इनका बोलना इनके मुंह पर मार दिया जाएगा एक कोढ़ी एक ज़र्रा नहीं मिलेगा, सारी बात ईमान सीखना है, यक़ीन मोड़ते हैं वह यक़ीन पैदा करना है जो मुहम्मद सल्ल० लेकर आए, 'अल्लाहु अक्बर' अल्लाह बहुत बड़े हैं सातों ज़मीन व आसमान इनके एक हुक्म के मुक़ाबले में मच्छर के बराबर नहीं, फ़र्श कुर्सी टूट कर गिर जाएं। एक हुक्म से इस सबसे ज़्यादा बनाकर दिखा दें, इसना मसवा इनके मुक़ाबले में एक ज़र्रा की हैसियत नहीं रखता, अल्लाह इज़्ज़त देने में, ज़िल्लत देने में अल्लाह पैदा करने में बहुत बड़े हैं, अल्लाह मुअत्ती, अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर रंज में बहुत बड़े हैं, ग़म लाने में बहुत बड़े हैं। पिटाई लाएं तो ऐसी पिटाई लाएं कि तुम तसव्वुर न कर सको, एक आध में बात नहीं हर बात में बड़े हैं, छिपने में बहुत बड़े हैं, तसव्वुर न कर सको क्या छीन सकते हैं, झुकाने में आएं तो तुम्हारे सामने झुकाने में बहुत बड़े, मुसल्लत करने आएं तो चींटी को इस तरह मुसल्लत कर दें कि यह ऐटम वाले कुछ न कर सके, बड़े बहुत हैं 'ला इलाह इल्लल्लाह' जो कुछ करने में बड़े हैं उसने इनको ग़ैर की ज़रूरत नहीं इन सबके बग़ैर जो चाहेंगे करेंगे। यह चीज़ को कुदरत के बग़ैर इसके असल जिन्स

को बना दें, चीज़ों के बग़ैर इज़्ज़त बना दें, पहले यों कहा, अल्लाह बहुत बड़े, बड़ाइयों को अगर एक दूसरे की मिलाने चले जाओ चींटी अपने बच्चों से बड़ी है, चलते-चलते इसराफ़ील तक ले जाओ ताक़त के एतबार से शक्ल के एतबार से जिब्रील का क़द सातों आसमान व ज़मीन जितना बड़ा है, नीचे से लेकर छोटे से बड़े होते चले गए। मुक़ाबले में बड़ाई छोटाई ग़ैरों के एतबार से बोली जाती, हक़ीक़त के एतबार से एक अल्लाह बड़े हैं और सारे छोटे हैं, यह जो कुछ तुम्हारे सामने है यह सब कुछ बड़े से हुआ छोटे से नहीं हुआ। अंबिया जितने हुए यह उस बड़े से हुए और किसी से नहीं हुए, बड़े ने इसराफ़िल को ऐसी ताक़त वाला बनाया सबके बग़ैर महज़ अपनी कुदरत से, यह हालात जो तुम दुनिया में देख रहे हो यह हालात उसी बड़े ने बनाए हैं आख़िर में क्या कहें 'अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर' ला इलाह इल्लल्लाह' एक दिन वह बड़ा अपनी बड़ाई को तोड़ने पर लाएंगे कोई भी न रहेगा वह अकेला रह जाएगा, यह यक़ीन बनाना है, सबकी बड़ाई दिल से निकल जाए मेरा तो बहुत बड़ा ज़मीदारा है मैं कैसे जाऊं, शैतान कहीं के तू इस ज़मींदार को बड़ा कह रहा है, सातों ज़मीन व आसमान भी बड़े नहीं तू इस सदर वज़ीर को बड़ा कह रहा है। यहां तो वह मलाकुल मौत भी बड़ा नहीं जो इन सबकी जान एक वक़्त में निकाल ले लोगों को बड़ा कह रहा है, यहां तो इसराफ़िल भी बड़ा नहीं, अपने जितने मसअले हैं, (उनके) चारों तरफ़ सिलसिले जा रहे हैं, जब (एक) एक सिलसिले को देखना शुरू करोगे बड़ा लम्बा चौड़ा दिखाई देगा, नौकरों में, आक़ाओं में जाओ, ख़ारजा में दाख़िला में जाओ बड़ा सिलसिला है, ज़मीन व आमसान ख़ुद ही झूले हैं, (इसी तरह) इनके अन्दर के सारे सिलसिले छोटे हैं अपनी मेहनत से यक़ीन मोड़ना है। सातों ज़मीन व आसमान से यक़ीन मोड़ना है, अल्लाह की बड़ाई दिल में बहलाओ हमें 'अल्लाहु अक्बर, ला इलाह इल्लल्लाह, सुबहान्ल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह' आ जाए (बस) एक

की बड़ाई दिल में बैठ जाए (सब) छोटे, अल्लाह के अलावा होता नहीं अल्लाहु अक्बर जब यह आया जब जो चीज़ सामने आई, बहुत बड़ी कोठी (देखी) तो कहा ज़मीन व आसमान भी बड़ा नहीं कोठी से क्या होगा। सुब्हानल्लाह मेरा ख़ुदा आजिज़ होने से पाक है ज़ौफ़ से हर ना–मुनासिब से पाक है अल्लाह पाक है इससे कि पैसा का, मकान का पाबन्द हो, जो कुछ तूने नबी में देखा (इसकी तारीफ़ की) इसकी तारीफ़ ख़ुदा की तरफ़ से लूटेगी, नबी में जो कुछ नज़र आता है ख़ुदा न रखा है, हिफ़ाज़त तेरे मकान से नहीं हुई, इसकी तारीफ़ अल्लाह की तरफ़ जाएगी, सारे कुरआन का खुलासा है तीसरा कलिमा। अल्लाह की बड़ाई का बयान है कुरआन में, नबी बहुत छोटे हैं, अल्लाह बहुत बड़े हैं मुहम्मद सल्ल० में जो तुम हिदायत देखते हो वह हिदायत मुहम्मद सल्ल० ने नहीं दी है, ख़ुदा ने रखी है बर्ज़ख़ में देखना क्या–क्या करेगा, हश्र में देखना क्या–क्या करेगा, जन्नत में दोज़ख़ में देखना क्या–क्या करेगा। अभी क्या देखा है, (अंधेरे) में हो, ख़ुदा की कुदरत के तमाशे और शक्लें आगे क्या क्या आएंगी, अब यक़ीन देखना यक़ीन बनाने के वास्ते अमल दिए गए हैं। अमलों में मुक़ाबला चीज़ का रख दिया गया, मुक़ाबले के दरजात बीच में रख दिए गए, नमाज़ मुक़ाबला है कमाइयों से, घरेलू कामों से, मुआशरत के कामों रोज़ा हज भी, मुक़ाबला है ख़ुदा के रास्ते की नक़ल व हरकत, ईमान की, दीन की मेहनत भी मुक़ाबला है। दुनिया के जो राइज निज़ाम में नक़्शे हैं ये पांचों चीज़ें मुक़ाबला हैं इनसे निकलकर, जितना इंसान इन पांचों के लिए नक़्शों से निकलेगा उतना ईमान आएगा, जिस दर्जे का मुक़ाबला करोगे उतना ईमान तुम्हारा क़व्वी होगा, एक आदमी नमाज़ के वास्ते पंद्रह मिनट लगाए, मुक़ाबला क्या पंद्रह मिन्ट, रोज़े रखकर सारे काम करता रहा, यह मुक़ाबला बहुत छोटे दर्जे में है। हवाई जहाज़ पंद्रह दिन में हज करके आ गया, पंद्रह दिन का मुक़ाबला रहा, ज़कात के लिए 250 रूपये दे गया कहीं लगा देना,

थोड़ी मिक्दार में मुक़ाबला हुआ, ईमान थोड़ा–सा आएगा एक मुक़ाबला होगा मालुहू मा आलिया, सीखने के वास्ते पूरा वक़्त दिया, हज की मालूमात कीं, ग़ीबत छोड़, झूठ छोड़, गाली बकना ख़त्म कर, एसार की आदत डाल, नमाज़ की तालीम की, ज़िक्र की मश्क़ कर, जन्नत का तसव्वुर बांधने की मश्क़ कर, हज का इल्म हासिल करने की मश्क़ कर, दो चार महीने पहले तैयारी में वक़्त लगाया, चार महीने हज में लगाए, अब मुक़ाबला बन गया, सिर्फ़ हज करने से मुक़ाबला न बना। सारी चीज़ें मालूम करने में और फिर उन पर अमल करने में वक़्त लगेगा, कुसूर माफ़ कराए ग़ीबत माफ़ कराई, नमाज़ पर वक़्त लगाया, नफ़ा, नुक़्सान सीखे, सूद छोड़ेगा, ग़ीबत छोड़ेगा तो नमाज़ कुबूल होगी, किसी नमाज़ को दो घंटे किसी नमाज़ को डाई घंटे दे दे जितनी नमाज़ की मेहनत पर आता चला गया. ईमान बढ़ता चला गया। ख़ुदा की बढ़ाई दिल में बैठेगी नमाज़ की मेहनत में वक़्त ज़्यादा लगेगा, नमाज़ के बारे में बैठकर सुनना और यक़ीन को उसके मुताबिक़ बनाना, सबसे बड़ा मुक़ाबला तब्लीग़ से बनता है, हज का वक़्त मुक़र्रर, रमज़ान का वक़्त मुक़र्रर है, नमाज़ का वक़्त मुक़र्रर है पहले से इंतिज़ाम करेगा, अचानक मुक़ाबला आकर पड़ेगा (कहा जाएगा कि) तब्लीग़ में चल असल में अल्लाह हमें पालने वाले हैं, सारे इंतिज़ाम जिसमें टूटेंगे, इधर बच्चा बीमार हो रहा है, छत में सूराख़ हो रहा है, दीवार टूट रही है, जमआत बन गई है इसका संभालने वाला कोई नहीं, तू चला जा, यह इस तरह कहेगा, तब्लीग़ हो जाए ईमान न आए, इस तरह कह दे कि कल को चला जाऊंगा, तो काब रज़ियल्लाहु अन्हु जैसा हाल हो जाएगा, वह तो बद्र जैसा हाल बना देंगे। अचानक लाकर बात डालेंगे, मुंशी जी मेरा तो बैवन्त नहीं, मेरी तो तबीयत ख़राब हो रही है, अब ईमान न पैदा होगा, अगर कमाने वाला है तू तो और कमाने वाला नहीं है तो तेरी साख़त पर ज़ोर पड़ेगी। जब अल्लाह की बात कान में पड़ जाए तो कोइ चीज़ देखने की है नहीं, वही करने

वाला है, मेरी तर्कीब व तदबीर से नहीं होता, अल्लाह ही पालते, सवारी नहीं थी, बगैर सवारी के चल दिए, बेशक यह बड़ा एतमाद वाला है। चीज़ों पर ज़िद पड़ी, अल्लाह ख़ुश होंगे, कायनात के नक़्शे के मुक़ाबले से आएगा ईमान यह है ख़ारजी मुक़ाबले ख़ारजी मुक़ाबला करना आ जाए तो दाख़िली मुक़ाबला पड़ेगा, इस कमाई में सूद न हो, इस वक़्त सूद पर पांच हज़ार लें तो पचास हज़ार बन जाएंगे, बग़ैर सूद के पांच सौ बनें तो वे लेने हैं। पांच हज़ार पर लात मारनी है, मुक़ाबला पड़ेगा, थोड़ी सी रिश्तवत दे दूं तो दस बीगा से पचास बीगा बन जाएं, मुझे तो रिश्वत नहीं देनी इसी वास्ते की अल्लाह नाराज़ हो जाएंगे, पैसे हाथ में आ गए तो फिर मुक़ाबला होगा कोठियां यों कहेंगी तू भी ऐसी ही बना। मुझे यह सारे नक़्शे नहीं बनाने, मुझे हज़रत मुहम्मद सल्ल० के उसूलों पर जान व माल ख़र्च करना है, चप्पे-चप्पे पर मुक़ाबला है, फिर ईमान में भी कमाल, आमाल में भी कमाल रहती दुनिया तक इज़्ज़त क़ायम रहेगी जब अल्लाह इज़्ज़त देंगे तो अल्लाह बहुत बड़े हैं। जब अल्लाह शोहरत देंगे तो अल्लाह बहुत बड़े हैं, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त आजतक चल रही है आख़िरत में बाक़ी रहने वाला नक़्श, होगा अगर यह रास्ता सीखना है तो मुक़ाबले के वास्ते तैयार हो जाओ, अपनी ज़िंदगी के अन्दर ईमान सीखने के लिए अपने-अपने नक़्शे के लिए तैयार हो जाओ।

उमूमी बयान न० 14

स्वीडज़रलैंड के दो सियाहों से बातचीत

मंगल, असर की नमाज़ के बाद, 17, जुलाई, 1962 ई०

इस ज़माने में चीज़ों पर बहुत ज़बरदस्त मेहनत हो रही है और बावजूद इंतिहाई तरीक़े की चीज़ें बन जाने के इंसानी हालात बदतर है बेहतर नहीं है और हालात की बदतरी यह है कि इंसान जितने क़िस्म के तबक़ात हैं और बड़े और छोटे, हुकूमत के मालदारी के, सब अपने-अपने नक़्शों में अपने को परेशान पा रहे हैं, अपने को उलझा हुआ देख रहे हैं और जो कुछ वे करना चाह रहे हैं नाकाम देख रहे हैं। वजह इसकी यह है कि इंसान का इस वक़्त दुनिया में मेहनत का जो रूख़ है वे चीज़ों को बनाने की तरफ़ है और यही वह अपना मक़्सद समझता है कि मेरे से दुनिया में कुछ चीज़ें बन जाएं। इंसान अपना मक़्सद इसके सिवा कुछ नहीं समझता कि इसकी दुनिया की मेहनत से दुनिया में कुछ चीज़ों का इज़ाफ़ा हो जाए, इंसान के इसी नुक़्ते ने बावजूद इंतिहाई चीज़ों की कसरत के इसको परेशानी के अन्दर मुब्तला कर दिया है, चीज़ों के लिए अल्लाह तआला ने इंसानों को नहीं बनाया, बल्कि चीज़ों के बनने के लिए आसमान व ज़मीन की मशीनें तैयार की हैं, जितनी चीज़ें बनती हैं उसी मशीन से बनती हैं, इंसान को अमल की मशीन बनाया है, इंसान को अल्लाह तआला ने जो मक़्सद तजवीज़ किया है वे अपने अमल को ठीक करने की मेहनत है इसको यह बतलाया गया कि

दुनिया में मश्गूल करते हैं, इंसान के अन्दर अल्लाह तआला ने जानवर वाला हिस्सा भी रखा है और इंसान के अन्दर बाक़ी जानवरों के अलावा बा–एतबार इंसान होने के अमल के कुछ दूसरे पहलू भी रखते हैं, अगर इंसान अपने अमल के दूसरे पहलू को न पहचाने और दूसरे जानवरों की तरह अपने आपको इस्तेमाल करे तो यह इंसानी मक़ाम से गिरता है और परेशानियों में मुब्तला होता है अगर अब वे चीज़ें ग़ौर की जाएं जो इंसान करता है और जानवरों में पाई जा रही हैं तो बहर से निकलेंगी, सारे जानवर रिज़्क़ मौहय्या करने के लिए मेहनत करते हैं मुहय्या होने के बाद खाते हैं। बहुत से जानवर अपने बच्चों और मादा को लाकर खाते हैं बहुत से जानवर पेड़ों के अन्दर या हवादार जगहों के अन्दर मकान बनाते हैं, बहुत से जानवर ज़मीनों के अन्दर मक़ामात भी बनाते हैं। बहुत से जानवर अपने बदन की और अपने लिबास की सफ़ाई भी करते हैं, जानवर अपनी मादाओं के साथ सोहबत करते हैं, अपने बच्चों के साथ खेलते हैं और सियाहत व तफ़रीह भी करते हैं, सोते भी हैं, उड़ते भी हैं, पानी में भी चलते हैं बाज़ा जानवर बाज़ा जानवर पर बड़ा बनने के लिए हाथ पैर मारते हैं। आपने देखा होगा कि अगर एक घर के अन्दर दस मुर्ग़ी और एक मुर्ग़ा रहते हों और एक और लाकर छोड़ दिया जाए तो लड़ाई होगी। एक ग़ालिब हो जाता है एक मग़लूब हो जाता है अगर इंसानी ज़िंदगी का मुहोर हो इतना ही हो जितना सारे जानवरों का है, मैंने बताया तो फिर ख़ुदा के हां इसका शुमार इंसानों का नहीं बल्कि जानवरों की तरह है ऐसे इंसानों को अल्लाह तआला अपनी किताब पाक में जानवरों ही की क़रार देते हैं बल्कि बत्तर क़रार देते हैं ऐसे ही इंसान अपनी तारीख़ में यह तलाश करते हैं कि हम पहले जानवर थे इंसान बनते बनते बन गए, अपनी बद अमली की वजह से जानवर ही ख़ुदा के हां क़रार पा गए, दूसरा रूख़ जिसके लिए इंसानों को बनाया गया है इंसान अपनी जान व माल से दूसरे इंसानों के

तक़ाज़े पूरा करने वाले बने, अपनी जान में से, अपने माल में से दूसरे इंसानों की ज़िंदगी बनाने के लिए हिस्से निकाले अपने खाने में से निकाले, बे खाने वाले को खिलाए, अपनी बीवी के ख़र्चों में से निकाले और दूसरी हाजत मंद और ज़रूरत मंद परेशानहाल औरतों पर ख़र्च करे। अपने बच्चों की ज़रूरतों में से पैसे बचाए और दूसरे नादार परेशान हाल बच्चों को तलाश करके इन पर पैसा ख़र्च करे, अपने मकान व लिबास की दिलचस्पियों में से पैसा बचाए और दूसरे इंसानों की ज़िंदगी के अन्दर हाथ हटाने के तौर पर पैसा ख़र्च करे। जान व माल का हिस्सा ख़ुदा ने जितना दे दिया ख़ाली अपना न समझना बल्कि जितना आपने पर ख़र्च करने को बतलाया उतना अपने पर और जितना दूसरों पर ख़र्च करने को बतलाया है उतने दूसरो पर ख़र्च करे, जब इंसान में से हर–हर इंसान अपनी जान व माल को अपने पर ख़र्च करता है और दूसरो की जान व माल में से अपने लिए नफ़े खींचता है तो फ़िर्क़ा क़ायम होता है। ज़ुबानों, मज़हब, मुल्कों के एतबार से लड़ते हैं जो कुछ हाथ में आ जाए वे सब कुछ लड़ाइयों में ख़र्च होता है, मुसीबतें उठाते हैं; मुहब्बत के मनाज़िर इनके सामने नहीं आते और कोई इनको प्यार करने वाला नहीं होता। इस ज़िंदगी में जब कोई वज़ीर मरता है तो मिम्बर ख़ुशियां मनाते हैं कि अब वज़ारत मिलेगी, मिम्बरों में से कोई मरे तो नीचे वाले ख़ुशियां मनाते हैं, मालदार मरते हैं तो इनके नीचे वाले ख़ुशियां मनाते हैं कि मालदार मर गया माल हमारे हाथ में आएगा, रस्म परस्ती के सोग मनाते हैं और मज्लिसों में ख़ुशियां मनाई जाती हैं (लोग) नक़ली रोना करते हैं और (अंदर से) इनके दिल हंसते हैं, दूसरी वह ज़िंदगी है जिसमें इंसान अपने मक़ाम को हासिल करे दूसरो की ज़िंदगी बनाने पर, जान को भी माल को भी ख़र्च करे तो इससे इंसानी ज़िंदगी के अन्दर मुहब्बतें क़ायम होती हैं, ऐसा इंसान जो अपने जान व माल से इंसानी ज़िंदगी में काम आता हो ऐसे इंसान के मरने को लोग

पसंद नहीं करते दिल से रोते हैं और इसके लिए जान व माल ख़र्च करने को तैयार होते हैं। इस अमली बुनियाद पर इंसाफ़ रहम, सख़ावत ज़िंदा होती है, सारे कमालात इंसानी इसी से निकलते हैं, जब इंसान इस ज़िंदगी के तरीक़ों को इस्तेमाल करता है मेहनत करके तो खुश होकर अल्लाह तआला भी इंसानों के हालात बेहतर बनाते हैं बरकत, राहत, वुसअत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, परेशानियां बलाएं रोक दी जाती हैं वह आम जानवरों की ज़िंदगी है इस पर चलने के लिए इंसान को कुछ नहीं करना पड़ता, आंखों से नक़्शे दिखाई देते हैं और अंदर नक़्शों के जज़्बात भरे हुए है, दूसरी ज़िंदगी के लिए रियाज़त व मुजाहेदा करना पड़ता है अपने अन्दर तख़रीबी व तामीरी माद्दों के लिए पहुंचने की मेहनत करनी पड़ती है और तख़रीबी माद्दों को उभारने की मेहनत करनी पड़ती है, अब आप हमारी इस बात को अच्छी तरह ग़ौर कर लें और इस बात को भी जब हमने पहले अर्ज़ की थी तो इन्शाअल्लाह आइंदा मज्लिस में यह बताएंगे कि तख़रीबी माद्दों को दबाने के लिए और तामीरी माद्दों को उभारने के लिए किस तरह और किस मेहनत की ज़रूरत है।

मुआशरत : तुम किसी क़ौम के, किसी मुल्क के, किसी वतन के, किसी बिरादारी बनकर ज़िंदगी मत गुज़ारो तुम सारी दुनिया वालों के लिए अल्लाह के बनकर ज़िंदगी गुज़ारों, तुम न बाप के हों न मां के तुम न भाई के हो न बहन के अल्लाह जिस के पैर पकड़ने को कहें इनके पैर पकड़कर दिखाओ, हर मज़लूम की मदद करो, अगर बाप ने किसी को (ना हक़) दो थप्पड़ मारे तो मज़लूम का साथ दो, मुआशरत बंदगी पर आ जाए, असबियत और नफ़सानियत से हट जाए।

उमूमी बयान न० 15

ख़ुदा की कुदरत और इसकी अता के ज़ाब्ते बदलते नहीं हैं

जुमेरात बाद नमाज़ इशा, 19, जुलाई, सन् 1962 ई०

जितने भी दुनिया में इंसान हैं सूफ़ी सद को अल्लाह ने जान दे रखी है, बहुत सो को माल भी दे रखा है ज़्यादा या कम, अल्लाह ने इस बात पर मौकूफ़ कर दिया कि जो जान माल को अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्ल० पर ख़र्च कर दे अल्लाह उनकी जानों में मुहब्बत डाल देंगे। जो जान व माल लगाएगा, इसकी भी कामियाबी और जिन पर लगाया जाएगा उनकी भी कामियाबी, इस दुनिया की भी कामियाबी और आख़िरत की भी कामियाबी जान व माल को सही तौर पर ख़र्च करने के रास्ते से इंसान बड़ा बनेगा, लोगों के कुलूब इसकी तरफ़ ख़ीचेंगे और अगर वहां न ख़र्च करे जहां अल्लाह ने बताया है तो जानों में अदावतें आएंगी और इक़्तिसादियात की तंगी आ जाएगी। आज बहुत कमाते हैं और रोते हैं कि हमारे पास कुछ नहीं, रूपये में चौदह आने हुकूमत खींच लेती है सहाबा किराम ने अपने आपको इस पर डाल दिया कि जान जहां ख़र्च करने को बतलाई वहां वहां जान ख़र्च की, ख़ुवाहिश के ख़िलाफ़ किया, इसी तरह माल में भी करके दिखाया, आजतक इनकी मुहब्बतें बाक़ी हैं। दुनिया का अक्सर हिस्सा इनसे मुहब्बत करता है अगरचे यहूद नसारा की बहुत कोशीश है कि इन पर एतराज़ात खड़े हो जाएं, इनको चौदहवीं सदी तक के आदमी चाह रहे है हमको हमारे ज़माने के नहीं चाह रहे है, हमने भी ख़ुदा को माना नबी को माना उन्होंने मानते ही जान व माल

की ख़र्च की तर्तीब बदल दी, ख़्वाहिश का महुर बहुत छोटा है, माल घर पर ख़र्च हो, कपड़े, सवारी, बैगम, बच्चे ऐसे हों, ख़्वाहिश का दायरा बहुत छोटा है, एक दुकान एक घर जान व माल के ख़र्च का दायरा यही है, दूसरा दायरा वह है जो लम्बा चौड़ा कुरआन मजीद ने क़ायम किया है, ईमानियात के सुनने में अपनी जान ख़र्च करो, इबादात ख़िदमत ख़लक़ में जान लगाओ, कमाई में भी जान लगाओ, अपने घर के काम में भी जान लगाओ, ख़ुदा के रास्ते की नक़ल व हरकत में हौसले से पैसे ख़र्च करो। जहां दीन सीखाने जाओ ख़ुद खाओ, जो आएं उनको खिलाओ, हाजतमंदों, ज़रूरतमंदों को बेवाओं, मिस्कीनों को तलाश करो, अपने घर पर भी अपने कारोबार में भी लगाओ, पैसे की इस तरह से तक़्सीम करेंगे तो ऐसे मकान न बनाएंगे ऐसे खाने न खाएंगे। हमारी ज़िंदगी सौ से पचास पर आ जाए (और हमारी मेहनत और कुरबानियों से) मुल्क की ज़िंदगी सफ़र से पचीस पर आ जाए (तो इनमें हमारी मुहब्बत इस तरह आ जाएगी कि) हम को (ज़रा सी) चोट लगेगी और (वह फ़ौरन हमारी) मदद को दौड़ेंगे, तुमको देख लिया, तुम दूसरे की ज़िंदगी बनाने को अपना काम नहीं समझते तो फिर ख़ुदा औरों से लेकर तुमको क्यों दें पहलो को इसलिए दिए थे कि वह दूसरों पर लगाते थे और तुम अपने पर लगाते हो, एक–एक मौके पर एक–एक आदमी ने 10, 10 हज़ार आदमियों का ख़र्च उठाया है, जैसे हज़रत उस्मान रज़ि० एक एक मौक़े पर एक एक आदमी ने छः छः सौ मन खजूरें दी हैं। किसी ने पूरे का पूरा किसी ने आधा माल दिया है कोई दिन ऐसा नहीं था कि मदीना में सौ पचास आदमी न आते हों, रोज़ाना साद बिन उबादा रज़ि० अस्सी आदमियों को मेहमान ले जाया करते थे, दावत में ख़र्च तालीम में आने वालों को खिलाना जाते हुए हदिए देना, अगर छड़ी भी ले ली तो आपने फ़रमाया कि तूने दोज़ख़ की आग ली है अहनाफ़ के मुताक़दमीन का मज़हब यह है कि दीन सिखाने पर पैसा लेना

हराम है, इमाम मालिक रह० इमाम शाफ़ाई रह०, इमाम अहमद बिन हम्बल रह० ने नज़दीक जायज़ है, मुताख़रीन ने फ़तवा दिया कि इल्म के बक़ा की सूरत यह है कि उन सीखाने वालों को पैसा दिया जाए। जो ऐसा (सहाबी रज़ि०) गिरोह तैयार हो जाए तो हक़ यह है कि ख़ुदा सब दुनिया से माल समेटकर इनके पैरों में डाल दे, ख़ुदा की कुदरत और ख़ुदा के दहश के ज़ाब्ते बदले नहीं हैं, तर्जुबे करके देख लो, इस वक़्त यह बयान चल रहा है कि सहाबा किराम रज़ि० में नक़दी तक़्सीम करने का कितना रिवाज था। यह तो तै कर लिया था कि हुज़ूर सल्ल० का लिबास था वैसा ही (अपना) लिबास रखना है, जैसे आपने खाया वैसे ही खाएंगे, अब ख़र्च कहां करें ? कुरआन और हदीस से पूछ रहे हैं, जहां करने को बताया जा रहा है, वहां ख़र्च कर रहे हैं, हज़रत उमर रज़ि० के यहां रोज़ाना बैतुलमाल को साफ़ करके झाडू दे दी जाती थी। गवर्नर भी ऐसे थे पब्लीक भी ऐसी थी यह तो सब को अच्छा लगे है कि हम होते तो हमको भी मिलता, यह नहीं सोचंते कि हमको हौसला मिले तो हम भी ख़र्च करने वाले बनें, अबू उबैदा रज़ि०, मुआज़ बिन जबल रज़ि० के क़िस्से चल रहे हैं।

उमूमी बयान न० 16

जमाअत में यूरोप के मुल्कों में जाओ

सनीचर, फ़जर की नमाज़ के बाद, 21, जुलाई, 1962 ई०

दूसरा रास्ता वह है कि इसमें कामियाबियां दिखाई बिल्कुल नहीं देतीं, लेकिन इस रास्ते में इंसान अगर अपने आपको मेहनत पर डाल दे तो थोड़ी सी परेशनियों के बाद आदमी कामियाब होता चला जाता है और मरे तो जन्नत में पहुंचा दिया जाता है उन दो रास्तों को हर रकअत में दुआ के तौर पर कहलवाते हैं, ऐ अल्लाह इनाम की रास्ते की हिदायत नसीब फ़रमा, इस रास्ते को हमारे दिल में न डाल जिन पर ग़ज़ब हो और जो भटक गए। जिन पर तूने इनामात किए, उनके रास्ते पर डाल, यह एक दुआ है कुरआन व हदीस के अन्दर सैकड़ों, हज़ारों दुआएं हैं। तुम्हारे ज़िम्मे एक भी तैशुदा तौर पर फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है यह दुआ आइमा सलासा के नज़दीक एक फ़रिज़ा अहनाफ़ के नज़दीक वाजिब है लेकिन लफ़्ज़ों को पहचानने के वास्ते कुछ नीयतों को भी दख़ल होता है कुछ मेहनत भी करनी पड़ती है, हर आदमी रोज़ाना चालीस पचास दफ़ा पढ़ता है कभी समझ में नहीं आया। हिदायत व ज़लालत दो कैफ़ियतें हैं, जो इंसानों के दिलों में डाली जाती हैं अंधेरा और चांदना दुनिया में डाला जाता है, अंधेरे में सीढ़ी या कुवां दिखाई नहीं देता, फूल आ रहा है या पत्थर आ रहा है अंधेरे में नहीं दिखाई देता, ज़लालत, यों समझ दिल का वह अंधेरा जिसमें आदमी को कुछ न दिखाई दे। सांप लकड़ी पर डाला हाथ, सांप पर पड़ा, इसने काट लिया तरयाक ? ज़हर उठाकर खा लिया, ज़लालत दिलों के अंधेरे का एक नाम है, इसमें नफ़ा नुक़्सान नहीं देता, नफ़ा तजवीज़ करते हैं, नुक़्सान में मुब्तला होते हैं अगर तौफ़ीक

ख़ुदा दें दिलों का नूर हासिल हो जाएगा तो पता चलता है, क़ातिल दिखाई देता है इससे बचता है दोस्त दिखाई देता है इसकी तरफ़ बढ़ता है, मेहनत अंधेरे में ज़्यादा करनी पड़ती है, हिदायत और ज़लालत मिन जानिब अल्लाह ख़ुदा की तरफ़ से डाली जाती है। अल्लाह ने दो मेहनतें रखी हैं, ज़लालत वाली मेहनत, हिदायत वाली मेहनत, ज़लालत वाली मेहनत हो गई, खुदा दिलों को अंधेरे से भर देंगे, दो मेहनतें हैं, एक मेहनत अल्लाह ने बतला दी, दूसरी को इससे समझ जाओ, पहले अल्लाह ने हक़ीक़त बयान की, दुआ बाद में मंगवाई अल हम्दु लिल्लाह रब्बिल आलमीन, तर्बीयत करने वाले अल्लाह हैं। अंधेरा क्या है, हमारे मस्अले माल से मुताल्लिक़ हैं या मुल्क से मुताल्लिक़ हैं, अल्लाह तआला बीमार करने वाले हैं, तंदुरूस्त करने वाले, ख़ौफ़ज़दा करने वाले मुतमइन करने वाले जो कुछ तुम्हें ज़मीनों, ज़मीनदारियों, ग़ल्लों, फ़ौज, डाक्टर, क़ज़ाक़, क़ातिल में जहां कहीं से होता दिखाई दे रहा है, वे सारा सिलसिला अल्लाह से चल रहा है, अल्लाह कर रहे हैं, ज़लालत आपको वह बात जो अल्लाह से है वह वज़ीर से दिखाएगी, फ़ौज यों कर देगी, खेती यों कर देगी ग़ैर अल्लाह में अगर अपने मस्अले दिखाई दे रहे हैं तो यह गोया अलामत है इसकी दिल में अंधेरा है, अगर यह दिखाई दे रहा है कि मस्अला अल्लाह से होगा, यह दिल का वजूदान है तो यह दिल का नूर है, ग़ैर अल्लाह का वजूदान हुआ है तो ज़लालत है और अल्लाह का वजूदान हुआ है तो हिदायत है। एक ज़लालत व हिदायत और दीनदारों को लगे है, हां सब करते बिल्कुल अल्लाह ही हैं, सब भी तो हो, कुछ करना भी तो पड़ेगा, पैसे पर, उहूदों पर, ज़मीन व आसमान पर करना दिखाई दे, अब रास्ते की क़सम की ज़लालत है अगर दिल में यह आए कि हम अल्लाह का कहा मानेंगे, अल्लाह से मांगेंगे,

अल्लाह से बुलन्दी, अल्लाह से उरूज सेहत, इज़्ज़त लेने का तरीक़ा, जो तू कहेगा करेंगे, जो हमारा मस्अला होगा वह दुआ तेरे सामने

रखेंगे, न ओहदे न चीज़ें, न मकान का रास्ता है, हुक्मों पर ज़िंदगी डाल दो हाथ फैलाकर उससे मागं लो।

अगर दिल में यह बैठ गई कि हमने अमल सही कर लिए तो अल्लाह से मागेंगे अल्लाह देंगे ख़ुदा से मांगते रहेंगे कि ऐ अल्लाह हम तो मेहनत में लग गए तू दिल का नूर दे दे। मेहनत मख़्लूक़ है, मख़्लूक़ से वजूद नहीं होता, हिदायत वह देंगे, तुम दुआ मांगोगे, इंसानी मस्अले एक इज्तिमाई हैं एक इंफ़िरादी है, एक इज्तिमाई एक इंफ़िरादी, मेहनत एक इज्तिमाई है एक इंफ़िरादी है, वह मेहनत करोगे जो एक फ़र्द से ताल्लुक़ रखती है तो हिदायत एक को मिलेगी, मस्अले इंफ़िरादी हल होंगे, अगर हम यह चाहें कि पूरे आलम को हिदायत मिले, हम मेहनत फ़र्द वाली कर रहे हैं और सारे हिन्दुस्तान के लिए दुआ मांग रहे हैं। फ़र्क़ क्या होगा, एक को हिदायत मिल गई, ज़िंदगी के अमल दुरूस्त कर लिए, लेकिन बाक़ी को हिदायत न मिली, अब इन पर जो कुछ आएगा यह फ़र्द महफ़ूज़ रहेगा इसलिए आदमी के अपने मस्अलों का हल भी यह है मज्मा में हिदायत आ जाए, न फ़ौज से, न मुल्क से, न हुकूमत से, न माल से होगा, अल्लाह के करने से होगा अल्लाह मेरे अमल के सही होने पर सब कुछ देंगे। झूठ पर यह होगा सच पर यह होगा, सूद पर यह होगा, जितना आपको आज चीज़ों में दिखाई दे रहा है, आपको ये सारा अमलों में दिखाई दे अम्र बिल मारूफ़ करने से यह फ़ायदा होगा, नही अनिल मुन्कर करने से यह फ़ायदा होगा, ज़मीन डूब गई इसलिए कि हमारे यहां शादियों में ज़्यादतियां हुई, आफ़त इसलिए कि ज़िना हुआ था, साइंस की भी तरदीद

ठीक जवाब दे दिए तो कहा सही जवाब न देता तो मैं तेरी दोनों आंखें निकालकर फेंक देता, ईमान की धज्जियां बिखर जातीं अगर हज़रत अली क़दम रोक देते, हिदायत नाम किसका है ? जो कुछ दुनिया चीज़ों में देखती है वे तुम अमल में देखो, फ़लां अमल करूंगा, अल्लाह दुश्मन से हिफ़ाज़त करेगा। मुल्क से माल से अपना ज़हन हटाना पड़ेगा, अमलों का ज़हन बनकर नहीं देगा, अमल करते हुए खुदा से रो रोकर मांगो, ऐ अल्लाह ! मैंने तो मेहनत कर ली, अब तू हिदायत दे दे पहले चीज़ें छुड़ाईं, वुज़ू कराया, काबा की तरफ़ मुंह कराया, अहकाम में लगाया, अब दुआ मांगने को कहा, अब अमल दे दिया अल्लाह ने अपने सारे मस्अलों के लिए, इस अमल पर यक़ीन जमाओ, नमाज़ से होगा परेशानियों से बचना, रोटी कपड़े का मिलना, हिफ़ाज़त का मिलना, घरेलू ज़िंदगी का बनना, सेलाब की रोकथाम नमाज़ से होगी, क़र्ज़ा नमाज़ से उतरेगा, हिफ़ाज़त नमाज़ से होगी, मुल्क, वज़ारत, हुकूमत नमाज़ से मिलेगी, तमाम मस्अले नमाज़ से होंगे, नमाज़ से जब होंगे, जब तू नमाज़ से पहली वाली मेहनत भी करे, दरवाज़ा खुलकर बंद हो जाएगा, अगर नमाज़ की बाद वाली मेहनत न की, अगर इस मेहनत को अपनी ज़ात से करोगे तो शख़्सी हिदायत आएगी और शख़्सी मसाइल का हल होगा। इज्तिमाई मेहनत करोगे तो इज्तिमाई हिदायत आएगी, इज्तिमाई मसाइल का हल होगा, मेहनत वही होगी (यानी) इज्तिमाई हालत नौइयत के लिए मज्मे में घुसकर मेहनत करनी होगी। सबसे पहले है यक़ीन बदलने की मेहनत, दुनिया में एक यक़ीन देखकर पैदा होता है, खेतियों, जानवर, सोना–चांदी, मकानात, पुलीस, फ़ौज, अदालत, परलीमेन्ट, गवर्नर, हुक्काम, औरतें देखोगे इस देखने से यक़ीन बनेगा, वह यक़ीन शिर्क है, हिदायत आ जाने के बाद देखोगे इससे क्या होगा, सोना देखोगे इससे सब कुछ होगा, एक यक़ीन सुनने से बनता है अल्लाह की ज़ात, सिफ़ात, बड़ाई को सुनो, अल्लाह बड़े हैं, इतने बड़े की इनकी बड़ाई की हद नहीं, खुदा ने किस तरह इस ज़मीन व

आसमान को पैदा किया, कैसे फ़रिश्ते फैला रखे हैं, कैसे इसको तोड़कर फेंक देंगे। कुरआन हदीस और सहाबा रज़ि० की सही तारीख़ सुनोगे, बैठकर तो यह आएगा यह यक़ीन, आज इसका कोई इंतिज़ाम नहीं, पढ़े लिखो के लिए कोई भी इंतिज़ाम नहीं, सिर्फ़ व नहू, मुन्तक़ व फ़लसफ़ पढ़ते रहे, सात साल पढ़ा, ख़ुदा की क़सम एक चीज़ ऐसी नहीं जिससे ईमान तैयार हो, आठवे साल में देखे तो फसाहत व बलाग़त को तलाश करते रहें, मदरसे में मिश्कात शरीफ़ वापस कर दी। किताबुल ईमान को फिर उठाकर नहीं देखा, नवें साल में ईमान अलग–अलग बेहसें देखीं, अब निकल गए, सात साल वाली पढ़ाई में पढ़ने लग गए, अब रोटी का कैसे इंतिज़ाम हो, कोई शक्ल लेकर बैठ गए, देखकर जो यक़ीन बनता है वह तेज़ हो गया, सुनकर जो यक़ीन आता है वह ग़ायब हो गया। मैं तो हवाई जहाज़ को देख आया, इसमें जो बद–अमलियां की जाती हैं, देखकर ख़्याल करता हूं कि ऐ अल्लाह उसे गिरना हो तो परे को गिरे, हमारे साथी नीचे से ऊपर आते रहे और हम ऊपर से नीचे जाते रहे हमारे साथियों ने फ़स्ट कलास का टिकट डिलाया मुझे सारी रात नींद न आई कि अल्लाह नाराज़ होकर इस जहाज़ को डूबो न दें, वहां नाच गाना हो रहा था अब बताओ सुनकर जो यक़ीन बनता था वह ग़ायब हो रहा है जहाज़ तो चले ही यों है ऊंट की चाल इसके बाद से जब तक जहाज़ पानी में रहा, मुझे नींद न आई, नीचे आकर लेटे तो नींद आई, जन्नत, दोज़ख़, हश्र, क़ब्र को इतना सुनो कि सुनते–सुनते दिल में उतर जाएं, यह सबसे पहली मेहनत है अगर हिदायत लेनी है और आमाल से कामियाबियों पर पहुंचना है तो जन्नत के अन्दर की बाग़ व बाहर और दोज़ख़ के अन्दर की तक्लीफ़ें बैठकर सुनो कि सुनते–सुनते दिल में उतर जाएं, यह सबसे पहले मेहनत है अगर हिदायत लेनी है और आमाल से कामियाबियों पर पहुंचना है तो जन्नत के अन्दर के बाग़ व बहार और दोज़ख़ की अन्दर की तक्लीफ़ें बैठकर सुनो। ख़लक़ आलम, तक़दीर को बैठकर सुनो,

इतना सुनो की सुनने का यक़ीन तुम्हारे दिल में आ जाए, इस यक़ीन को लेने के लिए रोज़ सुनना पड़ेगा, इन चीज़ों को जिन पर यक़ीन तैयार हो, देखना गवर्नर को जब मिले थे, तो (इसका) यक़ीन आया, हमारा यक़ीन टूटा, यक़ीन बनाने के वास्ते फिर बैठो, वुज़ू जिस्म की पाकी है, यक़ीन दिल की पाकी है, तेरा दिल तो सनम आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में, सौ फ़ीसद ये अमल मस्जिद में बैठकर रोज़ाना करते थे। देखने वाले यक़ीन के मुक़ाबले में सुनने वाला यक़ीन पैदा करो सुन सुनकर, अमेरीका का यक़ीन सुनने से बना है, सारी दुनिया का यक़ीन कुछ देखकर बना और बहुत सा यक़ीन सुनकर बना, सुनकर यक़ीन बहुत बड़ी मिक़्दार में बनता है, देखने की मिक़्दार बहुत छोटी है, देखकर भी वही यक़ीन बन रहा है सुनकर भी वही यक़ीन बन रहा है। वह सुनो जो अल्लाह, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया है, इसको इतना सुनो की सुनते–सुनते तुम्हारे दिल का यक़ीन बदल जाए, दूसरी मेहनत है कि इल्म हासिल करो, एक इल्म सुनकर मिलता है एक इल्म देखकर मिलता है, चीज़ों को आप देखकर जानेंगे। अमलों को आप सुनकर जानेंगे चीज़ों का इल्म देखने से आता है, मस्जिद में बैठकर देखने वाले इल्म के मुक़ाबले का इल्म हासिल करो, जन्नत दोज़ख़ की तज़्किरें करेंगे क्या होगा, इंसाफ़ करने से क्या कामियाबियां मिलेंगी, किताबों को फ़ज़ाइल को बैठकर सुनो, साथ के साथ अमल को बैठकर सीखो, नमाज़ से इज़्ज़त हिफ़ाज़त मिलेगी, वह इल्म लोग जो सुनने वाला इल्म है तो तुम्हें सब कुछ नमाज़ में दिखाई देगा, आंख का अमल ठीक हो, सज्दे में पैर सही तरीक़ों पर हों, क़ायदे में, क़ियाम में यों हाथ रखने चाहिए। अब इन सबकी अहमियत पैदा हो जाएगी, क्योंकि आपको नमाज़ पर यों होगा, अब इल्म पर मेहनत कर लो, जो कुछ तुम आज नादानी, जिहालत से चीज़ों में जानते हो वे अमलों में जानने लगो किताबों में से सुनते–सुनते असल अमल नमाज़ ही है, चाहे कितने ही अमल कर लो, सबका बंधन नमाज़ ही है, तरकीबों, तदबीरों से

नहीं बनती, चीज़ अमल से मिलती है, देखने से एक ध्यान बनता है, सारा ध्यान क़िले की तरफ़ से हो गया है, गवर्नर हाऊस को देख रहा हो, निज़ामुद्दीन गया था। लाल क़िला देखा था, सबको ध्यान आ गया, इसका नाम ग़फ़लत है जो देखकर ध्यान बनता है, देखे तो ध्यान उसी वक़्त हो और बाद में जब सुने तो इसका ध्यान आ जाए, एक ध्यान आता है मश्क़ से अल्लाह का ज़िक्र इतना करो, जो तुमको देखे तो खुदा का ध्यान आए, ज़िक्र को क़िला कहा, जब कोई हमला करे तो इससे हिफ़ाज़त, अरे यह तो सारे हमले करें, हाकिम का वजूद इस बात का मुताक़ज़ी है कि इसका ध्यान आए, तुम्हारे अन्दर अल्लाह का ज़िक्र इसका ध्यान आने से रूकेगा। कलैक्टर से बात हो रही है इसको कलैक्टर का ध्यान नहीं ज़िक्र से हिफ़ाज़त हो रही है साफ़–साफ़ कहेगा, अब नमाज़ पढ़ो इस तरह की इसका एक जुज़ जुज़ सही हो, यक़ीन हो, नमाज़ पढ़कर दुआ मांगने से सब कुछ होता है, अगर तुम क़र्ज़ा की अदाएगी मांगोंगे क़र्ज़ा अदा होगा, मुक़द्दमे में कामीयाबी मांगोगे, कामियाबी मिलेगी, ख़ाली नमाज़ की मश्क़ से नमाज़ नहीं आई, इन तीन से मश्क़ उठाओ तो नमाज़ की शक्ल जानदार बनेगी। मस्जिद में बैठकर ईमान की मज्लिस में बैठने वाले इल्म के हलकों में बैठने वाले, ज़िक्र करने वाले बन जाओ, अब दस पांच मिनट का क़िस्सा ख़त्म, अब घंटों की नमाज़ हो गई, जब मेरी तस्बीह ख़त्म हो जाएगी, तो आऊंगा, आज वाली नमाज़ न रहेगी, जिसमें कुछ दिखाई नहीं दे रहा है, अब मश्क़ होगी, ख़ूब ईमान की बातें सुनते हों, ख़ूब तालीम में बैठते हो, ख़ूब ज़िक्र करते हो, ख़ूब नमाज़ पढ़कर रो रोकर मांगते हो, ऐ अल्लाह मुझे हिदायत दे दे अल्लाह तआला किसी भी वक़्त तुम्हारे दिलों में एक दम रोशनी पैदा कर देंगे। जब आदमी ने वुज़ू शुरू कर दिया, सारा नमाज़ का हिसाब बन गया, मस्जिद में नमाज़ के लिए जाने से नमाज़ का हिसाब शुरू हो जाता है जब कोई मस्अला आएगा हुज़ूर सल्ल० की तरह मस्जिद में जाओगे। लीडरों के आगे हाथ जोड़ना ख़त्म, आफ़सरों

की खुशआमद करना ख़त्म, रिश्वतें खिलाना ख़त्म, और सच्ची बाते कहूं कि बुज़ुर्गों के पास जाकर इनको ख़ुदा की तरह बनाकर पैर पकड़ना ख़त्म, अब ख़ुदा ने तुमको विलायत के रास्ते पर डाल दिया, वह उसी रास्ते से बने हैं, विलायत के रास्ते पर चलते हुए इनका तुम्हारा ताल्लुक़ समुंद्र वाला है, अमल से मिलता कमाने से नहीं मिलता है, कमाने से नहीं मिलता, अल्लाह देता है, ज़मीन से नहीं मिलता, अब ज़मीन जो दबाई हुई थी वापस कर रहा हूं, ईमान से, इल्म की रोशनी से वापस कर रहा हूं, झूठ बोलता है, झूठ ख़त्म कर दे, धोखा ख़त्म कर दे, ज़मीन देखकर मत चल, ख़ुदा को देखकर चल जौनसी भी कमाई हो ख़ुदा की यक़ीन के साथ चलाओ, अगर कमाई को ईमान पर, इल्म ख़ुदा पर ले आया तो ख़ुदा मुझे कमाई पर भी दे देंगे। अभी तो मैं कमाई में कमा नहीं रहा, खो रहा हूं फिर यह कमाई मुझे आफ़तों से निकलवा देगी, कमाई पर मेहनत करके बिल्कुल यक़ीन पर लाइये, अब इस कमाई के अंदर के अमल ठीक हों, अब उन चीज़ों को घर में लाओ, अब पैसे को यक़ीन पर, इल्म पर ध्यान पर ख़र्च करो, बैगम साहिबा ने कहा, बीवी बच्चे ने कहा, अपने नफ़्स ने कहा वैसे ख़र्च करो, अगर मैंने ख़ुदा के मुताबिक़ ख़र्च किया तो लाखो मिलेंगे। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कहां कहां ख़र्च करना बतलाया है, भूखों, बेवाओं, मुहताजो, नंगों पर लगा, अपने पर और रिश्तेदारों पर लगा, रिश्तेदारों ने झगड़ा कर रखा है पड़ोसी न लड़ाई बांध रखी है, डाई हज़ार लग गए डाई सौ लगा देता वह डाई हज़ार न ख़र्च करने पढ़ते रिश्तेदारों के बारे में अहकामात तोड़े वह दुश्मन हो गए, पड़ोसी दुश्मन हो गए, अब तो दुनिया में किसी ख़ानदान, क़ौम, क़ब्ज़े, पार्टी का बनकर मत चल। तुझे ईमान पर, ख़ुदा के यक़ीन पर अपने को इस्तेमाल करना है, देख ले, ज़ालिम कौन है, मज़लूम कौन है अगर तेरा गांव ग़लती कर रहा है तो दूसरे गांव वालों की मदद कर। मुस्लिम ग़ैर मुस्लिम का मस्अला है अगर मुसलमान ने ज़मीन दबाई ग़ैर मुस्लिम की तुम्हें अदालत में

जाकर कहना फ़र्ज़ है कि मुसलमान ज़ालिम, ग़ैर मुस्लिम मज़लूम है अंधे बनकर किसी के साथ नहीं होना, मेरा बेटे, मेरी बीवी, मेरी मां कोई बात नहीं, मज़लूम की हिमायत करो और ज़ालिम से जिस वक़्त तक बदला न ले लो, उस वक़्त तक चैन न आएगा, अगर यहूदी मज़लूम है तो उसका साथ देंगे हम तो ख़ुदा के हैं क्या पता अगर हमने पलबने वालों का साथ दे दिया या सारा घर बिगड़ जाए। उन सारी चीज़ों को इस तरह चलाओ जिस तरह बताया, सारा मस्अला नमाज़ के साथ है इल्म के ऊपर, हक़ व सदाक़त पर मुआशरत लाओ, उन सारी चीज़ों पर अपने आपको लाओ, जो तुम पर हाथ डालेगा ख़ुदा उसकी ज़िंदगी बिगाड़कर खांएगे अगर दिल में बैठ गई तो हिदायत है, नहीं बैठी तो अंधेरा है। अब उन चीज़ों के दुनिया में फैलने के लिए तुम दुनिया में फैल गए, कभी इस इलाक़े में गए कभी उस इलाक़े में गए। तो ख़ुदा के हां तुम महबूब क़रार दिए जाओगे, तीन चिल्ले तो दे दो पहले तीन चीज़ों की मश्क़ के लिए फिर तीन चिल्ले देना, दूसरे तीन चीज़ों के सीखने के लिए फिर तीन चिल्ले दुनिया मुल्कों के एतबार से तर्तीब सोचने के लिए फिर तीन चिल्ले दे देना बाहर मुल्कों में जाने के लिए पहले तीन चिल्ले तो अभी दे सकते हो, पैदल चलो, पत्ते खाओ, उसूलों से गुज़ार लो चिल्ला तो पार निकल जाओ और दूसरा भी लगा लो तो और पार और तीसरा भी लगा लो तो और पार निकल जाओ। दूसरी मर्तबा यों कहें कि मदारिस जाओ क्या पैदल चले जाएं ? नहीं सवारी से जाओ, अब नमाज़ पढ़ पढ़कर मांग रहे हैं, अल्लाह ने पैसे दे दिए चले गए, तीसरी मर्तबा अरब के मुल्कों में जाओ, चौथी मर्तबा बाहर यूरोप के मुल्कों में जाओ, इनकी औरतों पर थूकना, कारों पर पेशाब करना और कोठियों पर पाख़ाना करना आ जाए तो यूरोप तुम्हारे हाथों पलट खा जाए।

उमूमी बयान न० 17

परेशानियों की वजह जान व माल की तक़्सीम की तर्तीब का बिगड़ जाना है

सनीचर, ईशा की नमाज़ के बाद, 21, जुलाई 1962 ई०

हर शख़्स को ख़ुदा ने बनाया है, हर शख़्स को माल ख़ुदा ने दिया है हर शख़्स के लिए चाहे बादशाह, वज़ीर, हुक्काम, सरमायादार, ज़मींदार, काश्तकार, मशाइख़, मुरीदीन हों ख़ुदा ने जान दी हैं, हर शख़्स को माल दिया है, फ़ज़्ल है ख़ुदा का, अब आगे वह फ़ज़्ल ही रहेगा यह ख़ुदा की पकड़ बनेगी, अगर जान को ख़र्च किया और माल को सही ख़र्च किया तो तमाम जानों के अन्दर इसकी मुहब्बत डाल देंगे और माल में बरकत अता कर देंगे और अगर ख़ुदा की तक़्सीम जान व माल के बारे में छोड़ दी तो अल्लाह नाराज़ होकर जानों में से इसकी मुहब्बतें निकाल देंगे और माल छीन लेंगे। जो शख़्स जहां माल ख़र्च कर रहा है अल्लाह हर शख़्स को देख रहे हैं, इसी के एतबार से अल्लाह तआला हर शख़्स के साथ मामला फ़रमा रहे हैं और आइंदा भी फ़रमाएंगे, जितनी इक्तिसादियात की ख़राबी है, जान की ख़्वाहिश है कि माल ज़्यादा मिले, माल को कमाने वाली जान के ऊपर, बीवी बच्चों के ऊपर ख़र्च कर दिया जाए। यह ख़्वाहिश का दायरा है, यह ख़त्म नहीं होता, जहां पहुंचता है उससे आगे बढ़ता है ख़्वाहिश कभी मकान के और ग़िज़ा के बारे में नहीं रूकेगी, ख़्वहिश जितना पैसा होगा उस सबको इस इंसान की तरफ़ खींचेगी, माल का

मक़्सद सिर्फ़ कमाना ही हर जाए तो पहले मालदारों से ग़रीबों से मालदारों की ज़िंदगी टूटती है। पहले अल्लाह दोनों फ़रीक़ों को बिगाड़ते हैं और आख़िरत में दोनों को जहन्नम में डालेंगे, दूसरा रास्ता वह है, जान की तक़्सीम करो, जो ख़ुदा के हां बड़ा काम है इस पर जान ज़्यादा लगाओ। जो ख़ुदा के हां छोटा काम उस पर जान कम लगाओ, ईमान की दावत पर तालीम पर, ज़िक्र पर, नमाज़ पर जान लगाओ, जिन घरों में सूद असलफ़ की वक़्त है ऐसे घरों को अपने ज़िम्मे ले लो, जब तुम नक़ल व हरकत करो और लोगों के पास जाओ तो वहां भूखों को भी खिलाओ, हौसले की बात यह है कि जब खाना तुम तैयार करो और लोगों के पास जाओ तो वहां भूखों को भी खिलाओ, हौसले की बात यह है कि जब खाना तुम तैयार करो तो दस के बजाए बीस का पकाओ भूखों को खिलाओ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० सौ ऊंट खाने के, सौ ऊंट पर साथी और सौ ऊंट ख़ाली, राह गीरों के लिए, इस तरह माल ख़र्च होगा, एक रूपये से ज़िंदगी चार आने वाले की बनती है, हाकिम महकूमों की ज़िंदगी बनाते हैं, महकूम हाकिम की ज़िंदगी बनाते हैं, एक दूसरे की ज़िंदगी बिगाड़ते नहीं, एक दूसरे की ज़िंदगी बना देते हैं, फिर अल्लाह तआला दरवाज़े खोल देते हैं। इस तरह इक्तिसादियात ठीक होती है, माल कमाना जो आ जाए उस सबको अपनी हाजत पर लगा देना, इससे इक्तिसादियात और ज़्यादा बिगड़ती हैं। हिन्दुस्तान का मुसलमान रात दिन कहता मेरे पास कुछ नहीं रहा, ख़ुदाए पाक की क़सम हिन्दुस्तान के मुसलमान के पास सहाबा किराम से करोड़ो गुना ज़्यादा है अपनी बद किरदारी और बद अमली की वजह से रात दिन का रोना है, अपनी रायों को कुरबान किया, अपनी जानों को मोड़ा। अल्लाह पाक ने क़ैसर व किसरा के ख़ज़ानों को मोड़ दिया, मुसलमानों की तरफ़, जब मुसलमानों ने अपनी ज़िंदगी का रूख़ मोड़ा तो फिर ख़ुदा ने मुल्क लेने शुरू किए, फिर अफ़राद लेने

शुरू किए, फिर हिजाज़ व इराक़ व मिस्र को सबको ग़ैरों के हाथ में दे दिया।

आज का निज़ाम मुसलमानों के लिए खुदा का अज़ाब है, अब इस अज़ाब से निकलने की इसके सिवा कोई सूरत नहीं कि अपनी जान व माल की तर्तीब को बदला जाए, यह वह ज़िंदगी है जिस पर किसरा व क़ैसर के ख़ज़ाने इधर से उधर मुंन्किल हुए थे, आज किसरा व क़ैसर वाली ज़िंदगी हम गुज़ार रहे हैं।

उमूमी बयान न० 18

इंसाफ़ सीखो, क़ौम के साथ अंधे बनकर मत लगो

इतवार, फ़ज्र की नमाज़ के बाद, 22, जुलाई 1962 ई०

जितने भी लफ़्ज़ है वह जुज़ और कुल दोनों पर बोले जाते हैं ज़मीन एक बीघा को भी कहेंगे और सारे मुल्कों की ज़मीन को भी ज़मीन कहेंगे और सारी दुनिया की ज़मीन भी ज़मीन ही होगी, एक ज़र्रा भी सोना, ऐ ईंट भी सोना और सारी दुनिया में जितना सोना है वह भी सोना कहा जाएगा। अगर लफ़्ज़ बोला जा रहा है एक बीघा पर तो नफ़ा भी एक बिघा के बराबर होगा और अगर लफ़्ज़ बोला गया मुल्क के एतबार से या दुनिया के एतबार से तो उनके एतबार से फ़ायदा होगा, सोना बोला गया ज़र्रा के लिए तो इसके एतबार से फ़ायदा होगा और बा एतबार पूरे मुल्क के सोना बोला गया है तो इसके एतबार से फ़ायदा होगा, कुरआन हदीस की लाइन में दीन के रास्ते पर भी जो अलफ़ाज़ हैं वह जुज़ व कुल दोनों पर बोले जाते हैं, सारे लफ़्ज़ों में यही बात चलेगी, जितने भी लफ़्ज़ हैं वह हक़ीक़तें रखते हैं जुज़ का फ़ायदा यह होगा, कभी न कभी मर मराकर जन्नत मिल जाएगी। फ़्लाना बड़ा दीनदार है (यानी) सारे बे–नमाज़ी थे (और यह सिर्फ़) एक दो वक़्त की ही नमाज़ें पढ़ता है इसको भी कहेंगी दीनदार, उसे यहां भी उसका दीन मुसीबतों से बचाएगा न क़ब्र में मुसीबतों से बचावेगी न हश्र में (बस इतना होगा कि सब कुछ भुगतने के बाद) एक दिन जन्नत में पहुंचा देगी, तक़्वा जुज़ के एतबार से भी बोला जाएगा और कुल के एतबार से भी बोला जाएगा हारून रशीद को

रात को एक आयत याद आई इसकी नींद उड़ गई, उलेमा को बुलाना शुरू किया, बात तो यही है बात तो यही है बादशाह डरता चला गया, इमाम शाफ़ई रह० को बुलाया, बादशाह यह तो बताओ कभी तुमने ख़ौफ़ किया है ? हां ! तुम जन्नत में जाओगे फ़िक्र न करो, अल्लाह तआला ने बहुत सारे अहकामात दिए हैं, जिस हुक्म को पूरा कर रहा है इसके एतबार से कामियाबी मिलेगी और जो अहकामात छोड़ेगा इसके एतबार से नाकामी, हुक्म छोड़ने पर मुसीबतें आएंगी, हर हुक्म के दर्जे हैं, जिस दर्जा तामील करेगा (उसी दर्जा) इनाम मिलेगा, दुनिया में दीन कहीं बाक़ी है वह जुज़ के तौर पर कुल के तौर पर नहीं है, जुज़ के तौर पर तो दुनिया में नहीं मिलता, आख़िरत में मिलता है दीन छोड़ने की सज़ाएं पहले देंगे (आज जितने अहकामात ज़िंदगी से निकले) आज जितने अहकामात ज़िंदगी में से निकले होते हैं, अल्लाह के यहां यह पूरे दीनदार नहीं हैं, अब दो रास्ते हैं, बजाए जुज़वी के कुली मेहनत करने वाले, जितने अहकामत हैं और जितने दरजात हैं हम इन सबको पूरा करें तो हमारे मसाइल का हल होगा, दुनिया में चैन, इज़्ज़त, सर–बुलन्दी कुव्वत के लिए है और आख़िरत में आला दरजात दिलाने के लिए है। जो यहां भी चमकवाएगा और वहां भी चमकवाएगा वह पूरे दीन पर है يا ايها الذين امنوا ادخلوا في السلم كافة बावजूद अमेरीका, रूस की ईजादात व एटमियात के जो दीन पर पूरा आ जाएगा इसके सामने तो कोई नक़्शा नहीं ठहर सकता, जो पूरे दीन वाले न बनेंगे तो जो पास है वह भी न रहेगा, अहिस्ता–अहिस्ता पूरे मुल्क की ज़मीनें क़ौमियाई जाएंगी। सारी दुकानें क़ौमियाई जाएंगी तो सिर्फ़ मज़दूर रहेगा, आज हमारे पास दीन बहुत थोड़ा है, आलिम के पास हाजी के पास भी थोड़ा है इस वजह से हमारी मुसीबतों को ख़ात्मा नहीं हो रहा है, किसी के पास ईंट के बराबर, किसी के पास पत्थर के बराबर या तो मेहनत करने पूरे दीन वाले बनें तो दुनिया के भी

सारे मस्अले हल होंगे और आख़िरत के भी सारे मस्अले हल होंगे। दुनिया की ज़िंदगी इन तरीक़ों से बनाएं जो रास्ते आज चल रहे हैं जितना हम दूसरे रास्ते पर चलेंगे और मस्अलों का हल करना चाहा तो जितना आज दीन है उतना सौ दिन के बाद नहीं रहेगा, जितना चार सौ दिन के बाद है उतना हज़ारों के बाद नहीं रहेगा। जिस दिन यह मरेगा उस दिन यह बे-दीन बे-ईमान होगा, जितनी बे-दीनी थी इस पर उतनी ही आफ़त आई, सूद लेता था, ग़ज़ब करता था, झगड़े करता था, मुसीबतें आईं, मुक़द्दमें में फंसा, छोटे बयानात दिए, छोटे गवाह तैयार किए, ज़ालिम जाबिर हुक्काम के पांव पकड़े, बे-दीनी और बढ़ गई, झूठे बयान के हिस्से की आफ़त आएगी और मुसीबत बढ़ेगी बे-दीनी और बढ़ा दी और चीज़ें बढ़ाएगा और बे-दीनी बढ़ेगी और आफ़त आएगी, यहां तक कि दीन कम होता रहेगा और आख़िरकर काफ़िर होकर मर जाएगा, चाहे रोटी कपड़ा न मिले मुझे दीनदारी आ जाए, अगर मुझे पूरी शरीअत पर चलना आ गया तो ख़ुदा मेरी दुनिया भी बनाएंगे और आख़िरत भी बनाएंगे। इस दुनिया के अन्दर दीन के रास्ते से ज़िंदगी बनाएंगे और जब यह मर जाएगा तो आख़िरत में भी पूरे-पूरे इनामात पाएगा, दावत का, दीन की मेहनत के हुक्म भी पूरा हो, ज़िक्र व दुआ के भी अहकामात पूरे हों, जान के ख़र्च करने के और माल के ख़र्च करने के जितने अहकामात हैं, हर हुक्म आला दर्जे के साथ पूरा करना आ जाए, अल्लाह तआला एक तरफ़ दुनिया के निज़ाम को बदलेंगे, जिस निज़ाम के अन्दर हम परेशान हाल हैं, हमें उस निज़ाम में ख़ुशहाल बनाएंगे। अगर हम अपने को पूरे दीन पर डाल दिया, उस ज़माने के अन्दर हमारा रिवाज दीन से पले का नहीं है, यह बीमारी दीनदारों, पढ़े लिखे लोगों में घुसी हुई है, समझते हैं मेहनत से पैसा, पैसे से चीज़ें, चीज़ों से पलना, ज़िंदगी तो पैसों से बनेगी और पैसे अपने ज़रियों से मिलेंगे, यहां से बात बिगड़ी है सारी बात का बिगाड़ यहां से है, परवरिश का होना,

चीज़ों से, चीज़ों का मिलना पैसे से और पैसे का मिलना मुतारिफ़ तरीक़ों से, जब तक पैसा न मिलेगा, चीज़ें न मिलेंगी, चीज़ें न होंगी तो हालात ठीक न होंगे उन ही तख़ीलात बातिला ने हमारे दीन को बर्बाद कर दिया, दीन तो वह मख़सूस तरीक़ा है जो अल्लाह से फ़ायदा हासिल करने के लिए दिया है। हुकूमत, पैसे, ज़मीन, आसमान के मुक़ाबले में अल्लाह की कुदरत से फ़ायदा लेने के लिए, अल्लाह को कुदरत है बग़ैर मेहनत के माल दे दें, दीन वह तरीक़ा है जिस पर मेहनत के बग़ैर पैसे मिलें, अल्लाह को कुदरत है पैसे के बग़ैर चीज़ें दे दें, खाने की बग़ैर पेट भर दें, पानी की बग़ैर सेराब कर दें, अल्लाह की कुदरत पाबन्द नहीं है नक़्शों की और अल्लाह की कुदरत आज़ाद है, नक़्शे पाबन्द हैं, अल्लाह दीन रात कुदरत दिखा रहे हैं। बने हुए को तोड़ते हैं और बे बने को बना रहे हैं, इंसान दोनों तरफ़ देखे इधर बनना देखे उधर टूटना देखे, इधर नक़्शों के अन्दर बनी हुई ज़िंदगी बिगाड़कर खा रहे हैं, कोई यों रो रहा है बच्चे बहुत हैं खाएं कहां से, कोई यों रो रहा है कि चीज़ें बहुत हैं बच्चा कोई भी नहीं। ये सब अल्लाह अपनी कुदरत के मुज़ाहेरे कर रहे हैं, यहां कुदरत दिखाई है तदरीजा, क़ियामत के दिन एकदम अपनी कुदरत दिखाएंगे, यहां दस बीस हज़ार साल में जितने इंसान बने हैं एक हुक्म से इन सारे इंसानों को बनाकर खड़ा कर देंगे, एक हुक्म से सारे जानवरों को खड़ा कर देंगे। दीन की बुनियाद से इस्तिफ़ादा है कानयात से इस्तिफ़ादा नहीं है, यक़ीन यह हो, नीयत यह हो, यह भी करो यह भी करो, यक़ीन करो अल्लाह तआला इस पर ख़ुश होकर अपनी कुदरत से इंतिहाई ख़ूबी से पालेंगे, पैसा मकान, मुल्क सामने रखो जो तहतुल कुदरत हैं, जिस ख़ुदा के बनाने से ज़िंदगी बनती है इसको सामने रखो, इससे पलने का यक़ीन करो, चीज़ों के मिलने का माल मिलने का मेहनत के मुतारिफ़ तरीक़ों से यक़ीन न करो कुदरत से यक़ीन करो। जब किसी की जड़ न रहे तो पेड़ कहां से

आए, दीन की जो बुनियाद हैं वह यह खेती से न मिलेगा अल्लाह की कुदरत से मिलेगा, चीज़ें होंगी, तो ख़ुदा की कुदरत से मिलेगा और चीज़ें ने होंगी तो भी ख़ुदा की कुदरत से पल जाऊंगा। मेहनत से पैसा मिलेगा, पैसे से चीज़ें मिलेगी, चीज़ से ज़िंदगी बनेगी, ख़ुदा की कुदरत को मुक़ीद कर दिया, तो ख़ुदा की हिक्मत का तक़ाज़ा है कि दिखलाएं कि मेरी कुदरत मुक़ीद नहीं है, जिस पैसे से समझता था कि चीज़ें मिलेंगी उस पैसे दिखाएंगे कि चीज़ें न मिलेंगी कल जिस पैसे चीज़ें मिल जाती थीं आज उतने पैसे में चीज़ें न मिलेंगी, कमाई बिगाड़ देंगे कमाई चलती रहे। पैसे की बचत न हो कर दे, चीज़ें हैं, खौफ़ज़दा बीमार, ज़लील, परेशान हाल, अल्लाह तआला सारी लाइनों में, जहां जहां इसने ख़ुदा की कुदरत को मुक़दी क़रार दिया, चीज़ों में परवरिश बिगाड़ कर दिखालाएंगे। उसने अल्लाह तआला के बारे में वह बोल बोला जिससे ख़ुदा पाक हैं, ख़ुदा पाक है उससे कि इससे कि इनका कोई फ़ाल किसी पर मौकूफ़ हो, नबी तक पर हिदायत मौकूफ़ नहीं, हज़रत इब्राहीम अलै० को हिदायत कैसे मिली, बग़ैर नबी के वास्ते से हज़रत मूसा अलै० को सीधे आवाज़ लगाई, अल्लाह का फ़ाल हिदायत देने का जिब्रील अलै० पर भी मौकूफ़ नहीं, يفعل ما يشاء ويحكم ما يريد اذا اراد الله شئى आज जिसे देखो पेरशान है कहीं सुकून मय्यसर नहीं, ख़ुदा को यह दिखाना है मैं ख़ुदा हूं, आज़ाद हूं, मेरी कुदरत से यह होता है, चीज़ों से नहीं होता, अगर समझ में आ जाए तो रास्ता मोड़ लें तो चमका दूं। पहली बात तो यह है कि अल्लाह से पालने वाले चीज़ों से नहीं पलते, कुदरत से पलते हैं, अल्लाह हफ़ीज़ हैं, लाल क़िला से हिफ़ाज़त नहीं करते अपने कुदरत से हिफ़ाज़त करते हैं, इंसानों में इंसानों को अपनी कुदरत से पैदा करते हैं, चाहें मांओं के पेट के बग़ैर बाप के सोहबत के बग़ैर पैदा करके दिखा दें। अल्लाह तआला की सिफ़ात का ख़लिक़ की सिफ़ात से जोड़ नहीं है, ख़ुदा की सिफ़ात ख़ुदा ही की

सिफ़ात पर लगेंगी, मख़्लूक़ात पर नहीं लगेंगी, ख़ुदा हिफ़ाज़त करते हैं लाल क़िले से हिफ़ाज़त करेंगे ! पहले पत्थर था किसी काम न था, हमने इसके अंदर शक्ल बनाकर मन्दिर में ले जाकर रख दिया, अब यह ख़ुदा हो गया, अब यह बच्चा भी देता है। जब शक्ल थी नहीं जब तो अल्लाह कुछ न करते, अब आपने माश्अल्लाह शक्ल बनाई, घर में पैसे आए चीज़ें सजा दीं, अल्लाह अब पालेंगे, तू जो क़दम उठाता है, ख़ुदा उठाएंगे तो उठेगा नहीं तो नहीं उठेगा, एक आदमी जा रहा है, भैंस लेने जा रहा हूं, इन्शाअल्लाह तो कह दे, इन्शाअल्लाह की क्या बात पैसे मेरे पास हैं, भैंस वहां है, अब वापस आ रहा है, जब पैसा रहे जैब में तो पैसे हो होगा जब पैसा न रहे तो अल्लाह ही से होगा। अब भी ज़हेन में बिगाड़ है, ज़हेन के अन्दर यह है कि अब में वकील के पास जाएंगा वही गोबर खाऊंगा अगर अल्लाह को मुझसे कोई काम कराना है तो मस्अला मेरा बना दे, अल्लाह कहें कि मुझे तो कोई काम नहीं कराना, अंबिया यक़ीन लाए हैं, ला इलाह इल्लाह जो शक्ल तुम्हारे पास हैं उनसे नहीं होता, शक्लों की तरफ़ मत दोड़ौ, शक्लें बनाने के चक्कर में मत रहो, अल्लाह से फ़ायदा हासिल करने के लिए, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तरीक़ों पर आमिल बनकर दिखलाओ, तुम्हारे कामियाबी इतनी है जितने तुम्हारे अन्दर हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अमल मौजूद हैं अगर जुज़वी है तो दुनिया में मुसीबतों में रहूं। माल आएगा बारिश की तरह, दुनिया की क़ौमें नीचे आएंगी शक्लें वाली क़ौमें ज़मीन की तरह और ख़ुदा की रहमतें आएंगी हवाओं की तरह, पहला काम है यक़ीन बदलने की मेहनत का, यक़ीन बदल दो, दो खेतों से, दुकानों से, मुलाज़मतों, मज़दूरियों से कुछ नहीं मिलता, अल्लाह के देने से मिलता है ईमान की सही होने की, यक़ीन के सही होने की मेहनत करूंगा जितना यक़ीन ठीक होगा उतनी बुलन्दी होगी, अगर मेरे 24 घंटे के अमल ठीक हो गए तो अल्लाह मेरे लिए ग़ैब से दरवाज़े खोलेंगे। जो

तक़्वा वाला बन जाएगा अल्लाह तआला ऐसी जगह से मुसीबतों की खुलासी करेंगे जो वहम व गुमान में न हो, दो यक़ीन बदले जाएंगे, अल्लाह के अलावा कुछ नहीं होता, सब कुछ सीधा अल्लाह से होता है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, देखना जूती का तस्मा भी टूट जाए तो अल्लाह ही से मांगो, अल्लाह से मांगकर यक़ीन कर लो कि अल्लाह वहां ही पहुंचा देंगे, बड़ी–बड़ी हुकूमतों में से लेकर छोटे–छोटे जूती के तस्मों तक सारे मस्अले अल्लाह से मुताल्लिक़ हैं। एक अल्लाह का यक़ीन ले लो और सबका निकाल दो, पेट में लुकमा अल्लाह के इरादे से उतरेगा अल्लाह हंसा देंगे, अल्लाह ला देंगे, هواضحك وابكى अगर हमने हज़रत मुहम्मद सल्ल० वाले अमल इख़्तियार किए तो अल्लाह हमारे मुवाफ़िक़ करेंगे, उस यक़ीन को पैदा करने के लिए अल्लाह की बड़ाई को बैठकर सुनो, ज़मींनदारों ने बीस–तीस साल से यह सुना है कि खेती, बैल से यों होता है, आंखों से देख रहा है खेती से ज़िंदगी को बनते हुए इसकी बड़ाई दिल में बैठ गई, खुदा की बड़ाई बैठी नहीं, कारखानों को बहुत बड़ा सुना, सारे ग़ैर, जमीन व आसमान मिलकर अल्लाह के सामने ज़र्रा की हैसियत नहीं बनती। बचपन से काम सुन रहें हैं, ये बहुत बड़े वे बहुत बड़े, पूरे सूबे का गवर्नर डिप्टी साहब, कलक्टर साहब, थानेदार साहब से भी बड़ा है, बड़ा–बड़ा कहते कहते मालिक भी कह दिया, मुतासरूफ़ भी कह दिया, बचपन में सारे लाइनों में बड़ाइयां सुनते चले आएं हैं। ज़मीन से गाय से, बैल से, भैंस से, सुनना शुरू किया, मुर्ग़ी बडी क़ीमती है, बैल बड़ा क़ीमती है, बड़े का लफ़्ज़ ऐसा बोला गया कि छोड़कर न दिया, बड़ा–बड़ा सुनते–सुनते यह ज़हेन में बैठ गया कि बहुत से बड़े हैं और बड़े के माइने यह है कि इससे काम बनेगा, अब यह मौलवी इसको रख धंधे से निकले, उन्होंने सिर्फ़ व नहू से शुरू किया। हज़ारों लाखों की बड़ाइयां यह बैठते–बैठते सुनते रहे, आज कौन आ रहे हैं ? बहुज बड़े वज़ीरे आज़म आ रहे हैं, यह बड़ाई तारूफ़ की तौर पर थी छोटों के

मुक़ाबले में, बड़ा बेटा है, साहब अब तो मैं बड़ा हो गया, अब्बा जी से जो बढ़ू बोलने लगे तो हिमाक़त हो गई, (क्योंकि) बाप जिन्स बड़ी है बेटा जिन्स छोटी है, मख़लूक़ जो जिन्स है वे बहुत छोटी है अब जो यह कह गया कि अल्लाह बड़े हैं तो वह ऐसे बड़े हैं कि तमाम फ़रिश्ते, सातों ज़मीन व आसमान की बड़ाई के मुक़ाबले में बहुत छोटे है। सब कुछ वहीं करता है और कोई कुछ नहीं करता, वज़ीर नहीं करते ख़ुदा करता है सारी दुनियाभर के वज़ीर चींटी की सी पायाखाने की सी हैसियत नहीं रखते, सबसे पहले जो मश्क़ रखी गई अल्लाहु अक्बर की रखी गई, दूसरी मश्क़ ला इलाह इल्लल्लाह की और तीसरी मश्क़ मुहम्मद रसूलुल्लाह की, लोगों को ख़ुदा की बड़ाई का पता नहीं है, वज़ीरे आज़म बहुत बड़े हैं मेरे पास लोहा हो तो मैं यों कर दूं, या यों समझें कि ख़ुदा भी ऐसी चीज़ें होंगी तो पालेंगे, अरे वज़ीर तो लोहा तो भी कुछ नहीं कर सकता और ख़ुदा हर चीज़ के बग़ैर सब कुछ कर देंगे। ख़ुदा से पालने का पहला यक़ीन, अगर आदमी के दिल में अल्लाह की बड़ाई है तो वह अल्लाह की बड़ाई को जानता नहीं, फ़लां बहुत बड़े थे, बड़ाई क्या इनकी ? वह ख़ुदा की बड़ाई को समझ गए थे, सारे नबियों के जुमले पढ़े, मेरे ख़ुदा का फ़ज़्ल मुझे जन्नत में लेकर जाएगा, मेरा अमल भी जन्नत में न पहुंचाएगा, ख़ुदा की रहमत मुझे पहुंचाएगी इनकी बड़ाई यह है कि करने वाले को पहचानकर अपना न करना। इस वास्ते ख़ुदा ने इनकी बड़ाई हमारे दिलों में बिठा दी, अल्लाह सारे कुरआन में इसको बता रहे है, अल्लाह के ग़ैर जिन्स छोटी है, अल्लाह बड़े हैं अपनी हक़ीक़त के एतबार से, अल्लाह का ग़ैर छोटा है अपने वजूद और हैसियत के एतबार से 'ला इलाह इल्लल्लाह' मेहनत से नहीं होता ग़ल्ला, माल, माल से नहीं मिलती चीज़ों और चीज़ों से नहीं पलते, इस चौखे में आग नहीं है तो आग के लिए क्यों मर रहा है जहां आदमी को ख़ुद नहीं दिखाई दिया करता वहां देखने वाले की माना करता है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने अल्लाह को देखा है, देखने वाले की मानो, मुहंम्मद रसूलुल्लाह, दिन बिल्कुल उन सारी चीज़ों से बल्कि यह, अब दर व बस्त अपने दिल व दिमाग़ में यह बात बिठा लो, हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिस तरह कहेंगे बिल्कुल उसी तरह चलेंगे, जितने साइंसदां है, अंधी बेहरी, हुकूमतें, अल्लाह तआला से फ़ायदा होसिल करने के तरीक़े बिल्कुल दिखाई नहीं देते, अपने से कायनात से दिखाई देते हैं, तुम्हारे बुनियाद हुई, न तुममें कुछ न ग़ैरों में कुछ हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने देखा है वही ख़ुदा की ज़ात से फ़ायदा हासिल करने के तरीक़े जानते हैं ' علی الصلوۃ حی علی الفلاح सर से लेकर पैर तक अपने अमलों पर मेहनत करो, दिल पर मेहनत करो बा–एतबार यक़ीन के, ध्यान के, इख़्लास के सर से लेकर पैर तक सारे हिस्से का इस्तेमाल हज़रत मुहम्मद सल्ल० के तरीक़े पर आ जाए। जहां–जहां दुनिया में खड़े होते हो, हर हिस्सा हज़रत मुहम्मद सल्ल० के तरीक़े पर आ जाए, जहां झुकते हो या देखते हो या बोलते हो या सुनते हो या हाथ उठाते हो, वह बिल्कुल हज़रत मुहम्मद सल्ल० के तरीक़े पर आ जाए, इसमें तुम्हारी कामियाबी, जहां तुम्हारा खड़ा होना हो इसको हज़रत मुहम्मद सल्ल० का अमल बनाआ, कमाई में भी अमल बनाने हैं घरेलू ज़िंदगी में भी अमल बनाने हैं अदालतों में, मुक़द्दमों में अमल बनाने हैं। यक़ीन बनाओ और अमल बनाओ, तुम्हारी कामियाबियां इसी में हैं, 24 घंटे की ज़िंदगी में उठने बैठने के, बोलने के, लेटने के जितने भी अमल तुम कर रहे हो सब जगह अमल बनाओ, हर हिस्से से हज़रत मुहम्मद सल्ल० वाला और यक़ीन बनाओ अल्लाह वाला, لاالہ الااللہ محمد رسول اللہ यही तुम्हारी कामियाबी का ज़ाब्ता है, समुंद्रों में हो तो कामियाब, जहाज़ टूट जाए तो कामियाब, अगर किसी जज़ीरे में जाकर उतर जाओ तो कामियाब, पैसे के एतबार से तुम्हारा अमल न रहे, किसी औ़र की मुहब्बत के एतबार से अमल न रहे, न बीवी के साथ की मुहब्बत बिगाड़ ला सकती हो। इसी के एतबार से तुम्हारी कामियाबी

है सौ फ़िसद अमल आ गए, सौ फ़िसद यक़ीन बन गया, दुनिया में भी कामियाब वहां भी कामियाब होने के लिए ख़ुद दीन है, ख़ुद आमाल हैं, पैसा नहीं है, आज पूरी ज़िंदगी पैसे पर आ गई, पैसे इंसानी तर्कीब व तदबीर पर आ गया। दीन भी पैसे पर आ गया, पैसा होगा तो अल्लाह पर यक़ीन करेगा, ऐसा ज़बरदस्त बिगाड़ पैदा हो गया, जहां से इलाज को सोचें वहीं से बिगाड़ पैदा हो, अल्लाह की बड़ाई बोलूंगा, अल्लाह की बड़ाई सुनूंगा तौहीद बयान करूंगा अल्लाह का इल्म हासिल करूंगा, दूसरे को इल्म पहुंचाऊंगा, अल्लाह का ज़िक्र करूंगा नमाज़ पढूंगा तो अल्लाह पाक मुझे देंगे कमाई से नहीं मिलता, पहला क़दम यही है पैसे से तालीम नहीं तालीम से पैसा है ईमान से पैसा भी है ईमान से चीज़ें भी हैं तालीम से परवरिश भी है, ज़िक्र से पैसा भी है, ज़िक्र से चीज़ें भी हैं ज़िक्र से परवरिश भी है मैं ईमान की बातें सुनाऊंगा, इल्म हासिल करूंगा, ज़िक्र करूंगा, बंदगान ख़ुदा पर मेहनत करूंगा मेरे अल्लाह मुझे पैसे भी देगो। हुज़ूर सल्ल० ने जो तर्तीब से बताया उस सबको सुनने से अल्लाह की बड़ाई अल्लाह का ध्यान पैदा होगा, मस्जिद में ख़ुदा से होने के तज़्किरे चल रहे हों, ख़ुदा की बड़ाई ख़ुदा की रबूबियत, ख़ुदा से होना दिल में उतरे, तालीम अमलों की हुई, जितना अल्लाह वाले यक़ीन पर हमारा वक़्त गुज़रेगा अल्लाह के इल्म में लगेंगे अल्लाह पैसे देंगे, यह तो सारे झूठे हैं यह सारे फ़क़ीर हैं कहीं फ़क़ीर भी दिया करता है, अल्लाह ग़नी है, अमल का इल्म, अल्लाह की पहचान का इल्म, इल्मों को सुनो सबसे पहले नमाज़ के ही अमल को सुनो, मस्जिद वाले अमल की है पहली तालीम, मस्जिद ज़िक्र की जगह है, ख़ुदा के ज़िक्र से क्या-क्या होगा, नमाज़ से क्या-क्या होगा तब्लीग़ की जगह है फ़ज़ाइल तब्लीग़ बैठ-बैठकर सुनो। अभी अपने दिमाग़ को इधर उधर न ले जाओ, इधर क़ुरआन के फ़ज़ाइल हो उधर क़ुरआन सीखा जाए, इधर नमाज़ का यक़ीन बनाया जाए, नमाज़ से क्या-क्या

होगा उसे मालूम किया जाएगा अगर यह अमल आ गए तो ख़ुदा इन्हीं अमलों पर दे देंगे, उन अमलों से दुनिया व आख़िरत के सारे मस्अलों के हल का यक़ीन आ जाए, पैसा तो वहां से मिले, खेती करके अच्छी बात है तालीम लगना, जब उन अमलों से मिलने का यक़ीन न होगा बल्कि मुलाज़मत से होगा तो आदमी को जिनसे मिलने का यक़ीन है उनके एतबार से इस्तेमाल होता है। जब आप खेती के एतबार से इस्तेमाल होंगे तो दीन टूटेगा और जब ज़िक्र नमाज़ इल्म के एतबार से इस्तेमाल होंगे तो दीन बनेगा, यह ज़राए हैं हमारे पलने के और अदाद अल्लाह के मक़हूर होने के ज़राए यह हैं। अगर मैंने ईमान के साथ कमाया मस्जिद के इल्म के मुताबिक़ कमाई हुई ख़ुदा के ध्यान के साथ कमाया तो उस कमाने पर इल्म का मिलेगा फ़िसाक़ व फ़ुजार की ख़ुश–आमद छोटी दी, झूठ, ज़ुल्म छोड़ दिया, आपकी कमाई शाख़ बन गई मस्जिद की तालीम की, आपकी कमाई ज़िक्र की शाख़ बनेगी, मस्जिद मरकज़ बनेगी, मस्जिद तालीम का मरकज़ होगी और कमाई आपकी शाख़ होगी इस तालीम की। मस्जिद मरकज़ बनेगी ईमान और कमाई शाख़ होगी ईमान की, कमाई पर नहीं मिलता, कमाई में जिस इल्म पर कमाया है इस इल्म पर अल्लाह देंगे, क़ियामत के दिन अंबिया शुहदा, सिद्दीक़ीन के साथ के साथ उठाया जाएगा अगर तू ताजिर है, जब तुम कमाइयों की रियायत नहीं करोगे और अल्लाह के रास्ते में फिरने वाले बनोगे, फ़लां इलाक़े में ज़िंदगी अगर ईमान, इल्म, ज़िक्र पर न आई तो अल्लाह का वबाल आ जाएगा, अब भी तुम फिर रहे हो और तुम्हारे भाई कमाई पर हैं, कभी तुम्हारे भाई फिर रहे हैं तुम कमाई पर हो अगर उस पैसे को अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ ख़र्च किया तो अल्लाह की तरफ़ से दुनिया व आख़िरत में इनाम मिलेंगे, ज़िक्र ईमान घर में घुस जाए, इस घर के अन्दर जो कुछ तुम्हारा ख़र्चा हो रहा है और जहां–जहां ख़र्च कर रहे हो, अब मुआशरत को ईमान पर लाओ, इल्म पर अल्लाह के ध्यान, नमाज़ पर लाओ,

तमाम दुनिया भर के इंसानों को गले से लगाओ, आमाल के एतबार से दर्जे होंगे, क़ौमें के एतबार से दर्जे न होंगे, यह जो पैसा है इसको ज़रूरत के एतबार से ख़र्च करो, क़ौम के एतबार से नहीं, वतन के एतबार से नहीं तुम जों साथ दोगे, एक दूसरे की मदद करोगे, एक दूसरे के ख़िलाफ़ आओगे, यह हिमायत इल्म के एतबार से हो, जो हक़ पर हो इसकी हिमायत करो, जो हक़ के ख़िलाफ़ हो इसके ख़िलाफ़ हिमायत करो, मुस्लिम की हिमायत, इताअत, हुक्म तोड़ने वाले के वास्ते इंसाफ़ का हुक्म है मुसलमान मज़लूम है इसका साथ दो, ग़ैर–मुस्लिम मज़लूम है इसका साथ दो, ज़मीन मुसलमान ने दबा ली, समझा–बुझाकर वापस कर दो, खुदा ज़ालीम पर फ़ौरन पकड़ करते हैं। इंसाफ़ सीखो, क़ौम के साथ अंधे बनकर मत लगो, आपसदारी में साथ देना ही पड़े है, कल को ख़ुदा इसको दोज़ख़ में डालेंगे तो तुमको साथ ही डालेंगे, तुम सब मुसीबतों के शिकार होगे। शरीर बदमाश इसके साथ क्यों हुआ मेरे साथ क्यों न हुआ यह सारी चीज़ें ठीक हो जाएं तो कहा जाएगा कि यह पूरा दीनदार है, इससे दुनिया व आख़िरत में इनाम के दरवाज़े खुलेंग, हुक्म पूरा करो, कमाने का हुक्म हो तो कमाओ, पलने का ज़रिया है ख़ुदा की बड़ाई बयान करना, कम्बल को ओढ़कर लेटने वाले खड़ा हुआ और डरा, ख़ुदा की बड़ाई बयान कर, जितने मौलवी होंगे उनके ज़हेन में हिदाया की बात तक्बीर इफतिताह आ जाएगी। यह दावत वाली बड़ाई है, यह पूरा दीन ज़िंदगी में रहा नहीं इसलिए दीन से परवरिश ज़हेनों में नहीं आती, जितना कमाई को बढ़ाओगे दीन को खोओगे और दीन खोकर मुसीबतें बढ़ाओगे, ये चीज़ें हैं मस्जिद की जो मैंने बयान की हैं इन पर खुदा पालेंगे, अभी तो यह यक़ीन, कमाने से पैसे मिले है तब्लीग़ भी पैसे ही से चले, यह नहीं कि हम इन कामों को करेंगे तो अल्लाह करेगा, अगर दीनदार बनना है तो फूटी आंख को बंद करके अंदर की आंख खोलकर बे–धड़क आदमी चार महीने के लिए निकल जाए,

जो कुछ हो जाए हो जाए कुछ परवाह न करो, तक्लीफ़ उठा लो, आजतक ग़लत करता रहा, आज सही पर पड़ा हूं ज़मींदारी में भी तक्लीफ़ उठाते हो, मुताइयन तौर पर न ज़मींदार पर ज़मीदारा फ़र्ज़ है, ना ताजिर पर तिजारत फ़र्ज़ है आपके ज़िम्मे अगर कमाना फ़र्ज़ है तो कोई शक्ल मुताइयन तौर पर फ़र्ज़ नहीं, झूठ पर बचना मुताइयन तौर पर फ़र्ज़ है, सूद पर बचना मुताइयन तौर पर फ़र्ज़ है, सूद से बचना मुताइयन तौर पर फ़र्ज़ है, मस्जिद में बैठा रो रहा है हिचकियों से दोज़ख़ पर रो रहा है, वह यों कहते हैं कि तेरे अमलों का बिगाड़ है कमाई हराम है। तेरा रोना कुबूल नहीं, चार महीने पूरे होने को आ रहे हैं कि हमने दे दिए, एक रिवायत छः महीने की भी है और यों भी सोच सकते हो कि इस ज़हेन से चार महीने तो हमने दे दिए नहीं कि उन अमलों से पलेंगे, इस ज़हेन से देते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आख़िरी तक़रीर मुआशरत पर थी।

उमूमी बयान न० 19

माल में एहतियात बहुत ज़रूरी है

इतवार, इशा की नमाज़ के बाद, 22, जुलाई, 1962 ई०

(इशा के बाद हयातुस्सहाबा की तालीम के मौक़े पर)

यह माल फ़ित्ना है, यानी इंसान को ख़ुदा से हटाता है, फिसलाता है जन्नत से निकलाता है, दोज़ख़ की तरफ़ खींचकर ले जाता है शख़्सी हो, चाहे इज्तिमाई हो, बैतुलमाल औक़ाफ़ का हो, मस्जिदों का, मदरसों का जो इंसान इसको फ़ित्ना समझे अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्ल० के हुक्म पर ख़र्च करेगा, शख़्सी हो या इज्तिमाई हो, माल सब अल्लाह का है, इस ज़माने में तमाम ज़िंदगी में माल के बारे में बद-उन्वानियां चली हुई हैं, न शख़्सी मालों में एहतियात है न इज्तिमाई मालों में एहतियात है, शख़्सी माल नफ़्स व ख़्वाहिश पर बहुत ख़र्च हो रहा है अल्लाह के रास्ते की नक़ल व हरकत पर, तालीम पर तर्बीयत के ज़ैल में आने वाले मेहमानों पर, मुहताजों, ज़रूरत मंदों पर ख़र्च करना ज़्यादा बताया है, जो माल अलग-अलग लोगों से आया हो या इज्तिमाई हो इदारे का हो, नज़ाकत हद से ज़्यादा बढ़ जाती है। लोग ज़ाती समझकर ख़र्च करते हैं, फ़ित्नों के दरवाज़े खुलते हैं, मस्जिद की चीज़ मदरसे की चीज़, तब्लीग़ की चीज़ अपने पर, अपने रिश्तेदारों पर न लगाए, अकाबिर सहाबा रज़ि० बहुत ज़बरदस्त मुक़ाम के हैं जब हम बच्चे थे, मुहतम्म साहब दो दवा मे रखते थे, ऐ मोम बत्ती रखते थे, कोई अगर बात करता था अगर निजी बात हुई तो मदरसा की लालटेन बुझा दी जाती और मोम बत्ती जला लेते आज ज़ाती खत इदारे के कार्ड पर लिख देते हैं। इज्तिमाई में से एहतियातें निकल गई, बरकत उड़ गई, जब भी हालात का तज़्किरा होगा। अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि० व उस्मान रज़ि० व अली रज़ि० के तज़्किरे आएंगे, इब्ने साद की रिवायत में है, उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने बैतुलमाल के माल को माल को बा-मंज़िला यतीम के माल के उतार लिया है।

उमूमी बयान न० 20

इस्लाम यह है कि अपनी ज़िंदगी कुरबान करके दूसरों की बनाओ

पीर, नमाज़ फ़जर के बाद, 23, जुलाई, 1962 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो ! जो इंसार अपनी ज़िंदगी को सामने रखकर चलते हैं वे दूसरों को कुरबान करते हैं जो दूसरों की ज़िंदगी को सामने रखकर चलते हैं वे अपने को कुरबान करते हैं, बहरहाल की हर वक़्त ज़िंदगी की कुरबानी चलती रहती है, ग़लत तरीक़े की कुरबानी यह है कि इंसान दूसरों की आज़ादी कुरबान करके अपनी आज़ादी हासिल करे, दूसरों का ऐश बिगाड़कर अपना ऐश हासिल करे, ऐसे मालदार, ऐसे ग़रीब, ऐसे हाकिम भी बलाओं में मुब्तला होते हैं जो दूसरों की ज़िंदगी कुरबान करते हैं, अंबिया किराम, सहाबा किराम रज़ि०, औलिया अल्लाह वह महबूब जिस्म है जिन्होंने अपने को कुरबान करके दूसरों की ज़िंगदी बनाई, मुसलमान को इस पर उठाया कि जैसे मकान, खाना दाना चाहता है इसको कुरबान करे, यह कुरबानी अदल व इंसाफ़, तक़वा व परहेज़गारी को लाती है जब यह अपनी ज़िंदगी को दूसरों पर कुरबान करेंगे तो पहले इनके पास जो थोड़ा सा सरमाया है इससे दूसरों की बनेगी। फिर अल्लाह तआला उनसे ख़ुश होकर सबके लिए रहमत के दरवाज़े खोल देंगे, जिन्होंने अपनी ज़िंदगी को कुरबान करके दूसरों की ज़िंदगी बनाई इनको हज़ारो साल तक कामियाब करते हैं, हज़रत मूसा अलै०, हज़रत इब्राहीम अलै० और हज़रत मुहम्मद सल्ल०, हज़रत अबूबक्र रज़ि०, व उमर रज़ि० के तज़्किरे आजतक होते हैं अल्लाह तआला हमेशा इनकी तारीफ़ किया करेंगे। जो

अपनी ज़िंदगी कुरबान करते हैं दूसरों की ज़िंदगी बनाने के लिए और जिन्होंने करके अपनी ज़िंदगी को बुलंद किया इनके तज़्किरे बुराई के साथ कुरआन में हैं, जन्नत में आठवां दिन हां अल्लाह के हां दावत होगी अपनी जन्नत में बड़े-बड़े मज़े, न नमाज़, रोज़ा, जिहाद, तालीम ज़िम्मे सारे काम अपने आप अल्लाह की कुदरत से हो रहे हैं। उड़ने वाले घोड़ों पर बैठकर एक दूसरे पर जाते हैं, अपने खाने पीने कुरबान किए थे अल्लाह ने खाने पीने के दरवाज़े खोल दिए, इज़्ज़त को कुरबान किया था, इज़्ज़त के दरवाज़े खुल गए, सिवाए खाने पीने के कुछ भी नहीं, दुनिया के लिए कुरबान किया था वह ख़त्म, दीन ज़िंदा हो इसके लिए कुरबान पेश करो, ख़ालिक़ ख़ुदा की हाजतें पूरी होने के लिए कुरबान पेश करो, अपना पेट काटकर दूसरों को खिलाओ, वहां पेट कांटने को मना कर दिया, जहन्नमी पर जन्नत के खाने हराम हैं। हदिए आपस में ज़रूर देंगे, दूसरे इंसानों की ज़िंदगी बनने के लिए अपने मस्अलों को कुरबान किया, अपनी बड़ाई अपने इख़्तियारात कुरबान किए, जो कुरबान किया था वही काम बना गया। सोहबत करते रहो अब यही काम है, कुल ज़िंदगी सोहबत करने की चालीस साल है दस बीस दिन लगातार सोहबत करे तो सेहत ख़राब, बीवी के तक़ाज़े दबाए। अल्लाह के रास्ते में निकलो, इसके बदले में यों मिल गया, जब जन्नती जन्नत में दुल्हन बनकर पहुंचेगा, दुल्हे का कुछ एज़ाज़ इकराम किया जावा है, फ़र्श बिछाए जावें, ख़ुबसूरत बच्चे नज़र आए तो ख़ुश होकर बहुत अच्छी औरत मिलेगी। अभी ब्याह न होने के हज़ार अहतमाल हैं घर खाता पीता ज़ोर दार है, सोच रहा है जहेज़ भी बहुत आवेगा, बच्चा वह लफ़्ज़ बोल रहे हैं जिन पर ख़ुश बड़ी रही है, एक दम क्या मिल गया, अस्सी मील तक नज़र आ रहा होगा, सारी चीज़ें देख रहा होगा देखने के मज़े में ग़र्क़ हो गया, इस्तेमाल करके भी देख कैसे मज़े हैं। दूसरों की ज़िंदगी कुरबान करके के लिए अपनी सोहबत कुरबान की थी, एक

हूर लाकर देंगे अब ज़रा इन हमारी हूरों को तो देखो इनमें कैसा मज़ा है एक–एक औरत से चालीस चालीस साल सोहबत होगी, अगर किसी की औरतें सत्तर ही हैं तो (70 * 40 = 2800) कितना ज़माना हो गया और अगर 25 लाख हूरें हैं तो 2500000, * 40 = 100000000, साल चख रहा हैं, अब छठी जो जी चाहे कि, यह नहीं कि भूख लग आई, सोहबत छोड़कर खाना खाओ, ख़ूब सोहबत की ख़ूब खाना खाया, पेट में गुंजाइश है और नेमतें खुली हुई, पेट जवाब नहीं देगा, नेमत ख़त्म न होगी, जितना चाहे खा जब तक चाहे खा, भूलों की कोई कमी नहीं, जानवर उड़ते फिर रहे हैं, जी चाहा उनके कबाब बनकर आ जाएं, तूने अपनी खेतियां कुरबान की थी, मेरा यों जी चाहा यहां खेती हो, फ़ौरन खेती बनी, खुद कटी, सामने आ गई, सैकण्ड सैकण्ड में बन रही है कट रही है, बाग़ कुरबान किए थे यह बाग हैं मकान कुरबान किए थे, यह सोने चांदी के, खोखले मोतियों के मकान हैं, जौनसा तेरा नक़्शा बनाने को जी चाहा, तेरा जी चाहा मकान वैसा बन गया, ज़ैब व ज़ीनत अपनी कुरबान की थी, बिखरे वालों वाला गिर्द आलूद ख़ुदा के रास्ते में मारा मारा फिरता था। यहां चाहे जितना बनाओ सिंगार करे इसकी सरूत नहीं बदलती, वैसी रहे तूने दुनिया में अपनी ज़ैब व ज़ीनत को कुरबान किया था एक बाज़ार होगा तस्वीर का, इसमें هوالمصور के मुज़ाहिर होंगे, हर आठवें दिन इस बाज़ार में जाया करेंगे, वहां तस्वीर खरीदी नहीं जाएगी, मैं तो ऐसा होता बस वैसा बनकर आ गया बाज़ार से, अब बैगम साहिबा कह रही हैं आज तो बहुत बढ़िया हो, तुम्हारे क्या कहने तुम भी बहुत बढ़िया हो। अल्लाह ने इनकी जन्नत पर भी नूर व जमाल की बारिश कर दी, वह आठंवे दिन कुंवारी बन बनकर आएंगी, माद्दा वही रहेगा, लेकिन सूरत बदलती रहेगी, हर आठवें दिन ऐसी हो जाएगी कि छोड़कर दे। ये उन इंसानों के लिए तो है जो अपनी ज़िंदगी के मस्अलों को कुरबान करें दूसरों की ज़िंदगी बनने के लिए, खिलाना–

पिलाना, लोगों की ख़ैर ख़बर लेना, इनको ईमान की दावत देना, जन्नत रखी है और इसी में जन्नत के दर्जे हैं कि कौन इंसानी ज़िंदगी के बनने के लिए कितने मस्अले क़ुरबान करता है, 25 लाख हूरों वाली जन्नत अंबिया, सिद्दीक़ीन व शुहदा के लिए होगी, हर नबी को, हर सिद्दीक़ को हर शहीद को वह जन्नत मिलेगी, जो 25 लाख हूरों वाली जन्नत है। यह तीनों मिलकर वह क़िस्म बन गई जो इंसानी ज़िंदगी को सही तरीक़े के लिए मेहनत करते हैं, इंसान अपनी ज़िंदगी को बनाने के वास्ते दूसरों के मस्अले क़ुरबान कर रहे हैं, एक आदमी अपनी ज़मींदारा को बढ़ाने के वास्ते दूसरे की ज़मीन दबाता है, इस पर मुक़द्दमे चलते हैं, एक के पास बच्चे ज़्यादा हैं इसके पास मकान छोटा है, दूसरे के बच्चे थोड़े हैं मकान ज़्यादा बड़ा है, ज़मीन बड़ी है अब तंग आमद बजंग आमद मुक़द्दमे चल रहे हैं, अपनी बढ़ाने के लिए दूसरे की गिराता है जिसकी गिरती है वह लड़ता है और अपनी क़ुव्वत से क़ाबू पाना चाहता है इस पर लड़ाई होती है, हर हाकिम के सामने दूसरे मुल्क वालों की ज़िंदगी हैं इसके लिए टैक्स लगाते हैं पहले मोटर कारें हो, अब जहाज़ों की ज़रूरत पेश आई और बढ़िया जहाज़ चाहें, ऐयर-कंडिशन चाहे, मौजूदा ऐश हैं। ख़र्चा इनके पास इसके बराबर नहीं और अगला नक़्शा इनके सामने है इसलिए रात दिन टैक्स लगा रहे हैं दूसरी तरफ़ पर्टीयां बन रही हैं कि यह हाकिम तो जन्नत में पहुंच जाएं, इनको हटाओ हम पहुंचे, हर नीचे वाले की निगाह ऊपर वाले नक़्शे पर पड़ रही है इसका पैसा इसके लिए काफ़ी नहीं, इसलिए वह गिरदा पेश पर हाथ डालता है हाकिम बनने के माइने यही है कि वह तुम्हारे काम करने के वास्ते बना है। अब काम के जिए जाओ तो कहता है दिलवाओ क्या दिलवाते हो इधर से उधर के हुक़ूक़ पर हमले, अपनी ज़िंदगी को और नीचे गिराएंगे, यह ज़िंदगी का मुआशरा बना नहीं है यह ज़िंदगी पुरानी है, इंसान बतौर बग़ैर रहबरी के इसी नक़्शे पर चलता है जो आज चल रहा

है सबसे पहले लड़ाई इंसान की इसी बात पर हुई हाबिल, काबिल का क़िस्सा, एक बच्चा सुबह को एक बच्चा शाम को, शादी किस पर हो। हज़रत आदम व हव्वा की (औलाद) की शादी है इस दिन का लड़का लिया जाए एक दिन की लड़की, एक दिन हाबिल और उसकी बहन थी, काबिल के साथ जो पैदा हुई वह अच्छी सूरत की थी, हाबिल के साथ जो पैदा हुई वह अच्छी सूरत की न थी, मैं तो अपनी साथ वाली के साथ ब्याह करूंगा, देख यह ग़लत है हज़रत आदम अलै० ने कहा इस पर क़त्ल किया। औरत और माल पर लड़ाई है, दूसरों की ज़िंदगी बनने के लिए अपने मस्‌अले कुरबान करने ये है पसंद, हर शख़्स अपना माल, अपनी राहत, अपनी ज़मीन, अपने ग़लबा, इज़्ज़त बड़ाई की कुरबानी पेश करेगा, फिर एतिदाल, समझ पैदा होगी, जब सब कुरबान करेंगे तो नज़्म व नुक़ कैसे हो, फिर लोग समझदारों को लाएंगे, फिर समझदार कौन होंगे जो सबसे ज़्यादा कुरबानी दें, मुल्क लेने के वास्ते अपना कुरबान कर देना इसका नाम कुरबानी नहीं, इंसानी ज़िंदगी बनने के लिए अपनी चीज़ों को कुरबान कर देना, इनकी तारीख़ में यह क़िस्से न मिलेंगे कि भूखों के पास उन्होंने पेट काटकर भेजा हो, उन्होंने मुल्क छिनने में कुरबानी पेश की, कुरबानी पेश की मुल्क लेने के वास्ते क्योंकि ज़िंदगी के बनने के लिए कुरबानी न दी इसलिए मुल्क हाथ में आते ही ऐश करने बैठ गया। सहाबा किराम रज़ि० की कुरबानी तफ़्सील थी, इनकी कुरबानी इजमाली, वह एक तरफ़ अल्लाह की राह में नक़ल व हरकत में कुरबानी देते थे और दूसरी तरफ़ लोगों की ज़िंदगी बनाने के लिए कुरबानी कर गए, लोगों ने माल में से कुछ न लिया, अपने माल देकर ज़िंदगी के तरीक़े बदलकर ग़रीब को सैकड़ों साल तक के लिए दुनिया में चमकाएगा। हमारे घर में जो चाहे गुज़र जाए, हम अपने कमाई के नक़्शे कुरबान करके दूसरों की ज़िंदगी बना दें, अगर हम किसी की ज़मीन का एक भी टुकड़ा न दबाएं, चार पैसे न दबाएं जब भी हम कुरबान

दूसरों को अपने पर अगर हम दूसरों की ज़िंदगी बनाने में ख़र्च नहीं कर रहे, दबाया भी नहीं, लगाया भी नहीं, लगाया नहीं तो कुरबान दूसरों की ज़िंदगी की। जिनके घर में मदद करनी थी उसने न की तो उसने दूसरों की ज़िंदगी को कुरबान किया अपने लिए, दूसरों की ज़िंदगी बनाने वाला वह है जो अपनी ब्याह शादी सादा करे, इस ज़िंदगी के दुनिया में राइज होने के लिए अपनी कमाई को कुरबान करे और मारा मारा फिरे, यह क़िस्म अंबिया और सिद्दिक़ीन की होगी, जैसे कपड़े, मकान सवारी चाहता है वैसे न बनाए, पैसे की बचत करके चारों तरफ़ दूसरे इंसानों की ज़िंदगी बनने के अन्दर अपनी कुरबानी पेश करे। एक आदमी ने अपनी ज़िंदगी कुरबान करके दूसरों की ज़िंदगी बनाने में मेहनत की, कुरबानी का जो ग़लत रूख़ क़ायम हो गया इसको सही करने के लिए दुनिया में मारा–मारा फिरना, इंसान इसलिए है कि तुम इसकी ख़िदमत करोगे ख़ुदा तुम्हारे लिए ख़ादिमों का इंतिज़ाम करेंगे, तुमने इस भूखे को न खिलाया ख़ुदा तुम्हारा खाना बन्द कर देंगे, अल्लाह की ज़ात से लेने के एतबार से ज़िंदगी इख़्तियार की जाए। अल्लाह की ज़ात से लेने के वास्ते नमाज़ सीखी जाएगी, ऐसी क़िरात कुरआन, ऐसा ध्यान हो, इस नमाज़ पर हाथ फैलाकर मांगोगे तो मिलेगा नमाज़ के अल्लाह के हां से लेने के लिए दरवाज़ा जो खुलेगा तो उन अख़्लाक़ पर खुलेगा, अख़्लाक़ दिए गए, एक ग़लत ज़िंदगी को नक़्शा बन गया, ग़लत तो ग़लत है, लोगों ने झूठ कह दिया क़ाबिल अमल नहीं है वे ख़ूब क़ाबिल अमल है, इस्लाम इसी पर है कि ज़िंदगी कुरबान करके दूसरों की बनाओ रिवाज यह है कि अपनी बनाने के लिए दूसरों की कुरबान करो, बुनियाद बदल गई, बुनियाद सही हो जाए, इंसानी ज़िंदगी बनाई है तो इस्लाम से बेहतर कोई तरीक़ा नहीं मिलेगा, अब शोर से इंसानी मसाइल के हल होने का कर लिया और पैसा सारा अपनी ज़िंदगी बनाने पर ख़र्च करें तो वाक़िइ इस्लाम से मुश्किल कोई चीज़ नहीं, ना–क़ाबिल अमल है

और वाक़ाई ये नारे सही हो कि हर आदमी को रोटी मिले, हर आदमी को मकान मिले तो इस्लाम से बेहतर रास्ता नहीं है, कर कुछ रही है, कह रही है इंसानी ज़िंदगी बने और बन रही है एक ख़ास ज़िंदगी जो हर एक से छीनने पर हो उनसे हर एक को कपड़ा नहीं मिलता, हर एक को मकान भी नहीं मिलता, जो हर एक को देने वाले हो उनसे हर एक को मिलता है। हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० को इसकी मश्क़ कराई थी, हर एक को देने वाला बनाया था 23 साल मश्क के बाद फिर दौरे उमरी हाथ आया जिसमें पूरे अरब में एक बच्चा ऐसा न था जिसको रोटी न मिली हो। हुज़ूर सल्ल० ने हर एक को ज़मीन पर सोना सिखाया, सूद हराम किया, झूठ, धोखा हराम किया, शख़्सी ज़िंदगी बनेगी, पब्लिक की ज़िंदगी को नुक़सान होगा ज़कात फ़र्ज़ी कर दी, चालीसवां हिस्सा दूसरों पर लगाना फ़र्ज़ किया, फ़ुक़रा को देने से हक़ अदा होगा, मिस्कीनों, ग़रीब, बेवा, यतीम हो, पब्लिक ज़िंदगी पर लगाना फ़र्ज़ कर दिया, उनसे खींचना हराम कर दिया। ऐसे आदमी तैयार किए जिनसे लोगों की भूख से कुढ़न हो, नंगों को देखकर इनकी आंखों में आंसू आ जाएं भूखे को देखकर तिलमिला उठे उनसे सबको रोटी मिली, फ़लां इलाक़े में भूखे हैं। मैं ले जाऊंगा तो मुझे कितना मिलेगा, 250 इधर से लिए, उधर से तिहाई ले लिए, अपने आदमियों को वहां ले जाएगा और उन्हीं में तक़्सीम कर देगा, तिहाई भी (हक़दारों को) न पहुंचा आज जो आदमी बनाए जा रहे हैं, वह लेने वाले हैं देने वाले नहीं हैं, जितने यह ऊपर से मस्अले उठा दें यह ऐसी ज़मीन है कि पानी वहीं पी जाए, नाली में चलकर देता ही नहीं, पूरा मुआशरा ग़लत है जब तक मुआशरा बदलेगा नहीं उस वक़्त तक आलिम के मसाइल हल न होंगे। जो अपने बीवी–बच्चों के मस्अलों में कटकर दूसरों को देने वाला नहीं बनता जो इसको दिया जाएगा वह दूसरों को नहीं देगा अपना बनाएगा, आदमी बनाए जाएंगे, मस्अला यहां से चलेगा। अगर आदमी की

ज़िंदगी न बदली तो इंसानी ज़िंदगी दोज़ख़ में जाएगी, अपनी जान ली, अपना माल लिया, अल्लाह ज़िंदगी बनाते हैं, अमलों पर बनाते हैं, मौजूदा ज़िंदगी को बदलने के लिए जान व माल लगाऊं, यक़ीन व अमल बदलें, तालीम में लगा, दूसरों को तालीम में लगाया, नमाज़ बनाई, दूसरों को नमाज़ बनाने के लिए मेहनत की, अख़्लाक़ की मेहनत की, अपनी जान व माल ख़र्च करके अख़्लाक़ी ज़िंदगी बनने के लिए मेहनत शुरू की। अख़्लाक़ की बुनियाद बन गई, यहां से चला इसी पर दूसरों को उठाता चला गया, यक़ीनों की तब्दीली, अल्लाह का इल्म, अल्लाह के बन्दों के साथ अख़्लाक़ की मश्क़ करने पर उठेंगे तो हमारी ज़िंदगी भी बनेगी और इनकी भी बनेगी इस पर उठे और उठाया, सिखाया, भूखा देखा, तर्ग़ीब दी और खाना खुद खिला दिया, अपना काट–काटकर दूसरों पर लगाने वाले बनोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे लिए दरवाज़े खोलेंगे। उन डाकूओं के मुक़ाबल में जो अपनी बनाने के लिए दूसरों की बिगाड़ रहे हैं, पहले तुमको शख़्सी तौर पर देंगे, कारोबार में बरकत दे दी, हदिया दिलवा दिया, तुम ने बहे और तुम्हारे साथी जो तुम तैयार किए वह भी न बहे अब मुहब्बत क़ायम हो जाएगी हुकूमत वालों के लिए, अब या वे बदलेंगे या ख़ुदा इनको अज़ाब देकर ख़त्म कर देंगे। यह नबियों वाला रास्ता है इसमें अपनी ज़िंदगी के मस्अलों को कुरबान किया, एक नमूना उठाया चलते चलते बातिल को या पलट दिया, या अज़ाब भेजकर या लड़ाकर ख़त्म कर दिया। जो इंसान एक घर के बनकर चल रहे हैं उनसे इंसानी ज़िंदगी के मस्अले बिल्कुल हल न होंगे अगर वे ज़ेर बनकर आ गए तो भी अपने घर के आदमी हैं और अगर एक–एक इंसान वह है जो इंसानी ज़िंदगी को सामने रखकर चले, उनके पास उहूदे माल नहीं हैं तब भी वह इंसानी ज़िंदगी के बनने की क़िस्म के इंसान हैं, आदमी बनना पड़ेगा हज़रत उमर रज़ि० तश्रीफ़ ले जा रहे हैं। रास्ते में ईंट सर पर रखकर लेट गए ओ आदमी (देहात की एक

औरत आई) अमीरूल मोमिनीन ने मुहम्मद बिन मुसलैमा को माल तक़सीम करने के लिए भेजा वह औरों को देकर चले गए मुझे कुछ न दिया, गुलाम से कहा, मुहम्मद बिन मुसलैमा को बुलाकर लाओ, वह औरत कहने लगी कि जी बड़े आदमी यों बुलाने से थोड़ा ही आते हैं अमीरूल मोमिनीन के भेजे हुए आदमी हैं, अमीरूल मोमिनीन को पहचाना नहीं, इतने में मुहम्मद बिन मुसलैमा आ गए, ऐ मुहम्मद बिन मुसलैमा बता कल को इस औरत का हक़ ख़ुदा के हां कौन देगा, मैं तुम पर एतिमाद करता हूं, इधर हज़रत मुहम्मद बिन मुसलैमा के आंसू टपके उधर हज़रत उमर रज़ि० रोना शुरू हो गए। ख़ौफ़ ख़ुदा पैदा हो जाए, जवाबदेही का फ़िक्र पैदा हो जाए, फ़रमाया अभी लाओ, इसके वास्ते एक ऊंट मंगवाया, ग़ल्ला लादा, नक़दी दी, कपड़ा दिया, तो बहन यह ले जाओ वक़्त हमारे पास कुछ नहीं, ख़ैबर में आना वहां भी दूंगा, मैंने मुहम्मद बिन मुसलैमा से कह दिया है वह छठे महीने तुमको इतना दे देंगे तुमको कभी तक्लीफ़ न होगी, ऐसे आदमी बनेंगे, आज मुल्क फिर मुसीबत में है मुसलमानों से ज़्यादा ग़ैर–मुस्लिम मुसीबत में है। एक टैक्स आता है, हार्ट फ़ैल ग़ैर मुस्लिम के हों, मुसलमान के सामने तो आख़िरत की ज़िंदगी है मरके जन्नत मिल जाएगी, कहे तो है दीन में कुछ नहीं कितनी मुसीबतें दीन की वजह से ही बरदाश्त हो गई। जितनी पिटाई मुसलमानों की हो गई, अगर तीन बार भी मुल्क के हिस्सों में ग़ैर मुस्लिम की पिटाई हो जाती है तो एक नज़र न आता, बिल पास हुआ, सेठ साहब का हार्ट फ़ैल हो गया, मुसलमान में तो सहार पैदा हो गई, बिल्कुल बे–सब्रा तो ग़ैर मुस्लिम बन रहा है तुममें जितने ग़रीबों में ख़र्च करने वाले हैं उतने ग़ैर–मुस्लिमों में नहीं हैं, दूसरों को गिराकर अपनों को बढ़ाया गया है, यह ग़ैर–मुस्लिमो की ज़िंदगी है। हज़रत उमर रज़ि० अच्छी क़िस्म के खाने से चीड़ते थे, एक मर्तबा दस्तरख़्वान पर अच्छा खाना आ गया, छूटते ही फ़रमाया हमें ये मिल रहा है ग़रीबों को क्या मिल रहा होगा, एक

साहब की ज़ुबान से निकल गया उन्हें जन्नत मिल जाएगी, फ़रमाया फिर भी तो तक़्सीम में हमारा बड़ा ख़सारा है इस तक़्सीम के लिए हम राज़ी नहीं, हम ऐसे खाने खा जाएं ग़रीबों को इनकी तक्लीफ़ पर जन्नत मिल जाए। अब एक ज़िंदगी आएगी दुनिया में क़ुरबानी की मश्क़ करने से यही नबियों को शआर था कुरबानी पेश करो, हज़रत मूसा अलै० दस साल की कमाई जंगल में छोड़कर चल दिये, हज़रत इब्राहीम अलै० ने अपने घर के सारे मस्‌अलों को कुरबान किया तो उम्मते मुस्लिमा को दाग़ बैल पड़ी। हुज़ूर सल्ल० ने इब्राहीम अलै० के क़दम–क़दम पर उठाया ’ملة ابیکم ابراہیم واتبع ملة ابراہیم حنیفا‘‘‘ ’’قد کان لکم فیه اسوة حسنة हज़रत इब्राहीम अलै० ने उम्मत के दुनिया में वजूद में आने के लिए कुरबानी दी हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने भी कुरबानी दी, मुहाजिर अंसार को कुरबानी पर डाला, तालीम देने वाले हज़ारों मुफ़्त समझाने वाले सारा काम मुफ़्त हो रहा है। दुनिया से कुछ नहीं लिया जा रहा, अंबिया, सिद्दिक़ीन शोहदा अपने मस्‌अले कुरबान करके दुनिया को इंसानी ज़िंदगी बताने की तरफ़ मोड़ना अल्लाह के बन्दों में देने पर आ जाएं और अल्लाह से लेने पर आ जाएं, बन्दों को देने का नाम है अख़्लाक़ और ख़ालिक़ से काम लेने का नाम है इबादात, कमाई के अख़्लाक़ होंगे ऐसी चीज़ें न बेचो जिससे लोगों के अख़्लाक़ ख़राब हों। सबसे ज़्यादा कमाई शराब की दुकान पर है, चोरी करकर बीवी का ज़ेवर देकर भी शराब पिएगा, सबसे ज़्यादा पक्की आदत शराब की है, शराब वाला अपनी बिगाड़ेगा दूसरे की भी बिगाड़ेगा, शराब बेचना हराम है। कोई क़र्ज़ा लेने आया, मैं मजबूर हो गया हूं क़र्ज़ा लेने पर, अगर फ़ाक़े पड़ रहे हैं, हमें क्या दोगे, सूद वाले इतने ख़बीस हैं ज़मीर इनका मर गया, इनसे पूछो तो सही अख़्लाक़ क्या हों, इस्लाम सिखाता है इसको क़र्ज़ा न दो इसकी मदद करो, अदना अख़्लाक़ यह हुए कि क़र्ज़ा दे दो और यह है बद अख़्लाक़ी कि इधर से मुसीबत पड़ रही थी उधर मरते को मार रहे हैं, बावजूद

सूद के जो क़र्ज़ा ले रहा है इसका सबूत है कि वह इंतिहाई ग़ैर मुसताती इंसान है इससे सूद लेना इंतिहाई ज़लालत और कमीनगी है। दुनिया बदतरीन बद-अख़्लाक़ी का शिकार हो चुकी अब रूकावटें नज़र आई हैं इंसानी ज़िंदगी का गला ज़िब्ह करने में, ख़ून चूसने में तरक़्क़ी को तिजारती तरक़्क़ी का नाम दे दिया, वह ज़िंदगी कब आएगी, अपनी ज़िंदगी को कुरबान करो, इसी ज़िंदगी से जो दुनिया में ज़िंदगी आ रही है मुसलमान ग़ैर मुस्लिमों बे-रहमी व दरन्दगी के साथ जिन तरीक़ों पर चल रहा है इनको बदलने में भूखा मर जाना बेहतर है। बग़ैर दूसरों की जान माल लेने के अपनी ज़िंदगी कुरबान करने वाले बन जाओगे, बे ताज के बादशाह होगे, बोरियों में महबूब होगे, फ़ाक़ों में सरदार, वज़ारतें क़दमों में टूटेंगी, आख़िरत में अल्लाह पाक 25 लाख हूरों वाली जन्नत दे देंगे। सही ज़िंदगी समझते हुए, सीखते सिखाते हुए, दुनिया में मेहनत करते फिर रहे हैं अल्लाह से लेने के तरीक़ा आ जाएं, इल्म ज़िक्र, अख़्लाक़ इनमें आएं, दूसरों की ज़िंदगी पर अपने मस्अलों को कुरबान करना उनके अन्दर आए, यह नबियों वाली लाइन है, नबी ने दूसरों की ज़िंदगी को कुरबान नहीं किया अपनी ज़िंदगी को कुरबान किया है। आज के जो ऊपर वाले ज़िंदगी बनाने को सोचेंगे तो टैक्स लगाएंगे, अब बीच वाले ग़रीबों से ऐठें और ग़रीब डाकू न बनेंगे तो क्या हो और कम्योनिस्ट न बनेंगे तो क्या हो। कुरबानी की मश्क़ के वास्ते चार महीने दे दो, फिर तीन क़िस्में बनेगी, आला क़िस्म क्या है इसी कुरबानी को रिवाज देने के लिए दुनिया में फिरना काम बना लो, तीन चिल्ले देकर आए, दस पंद्रह दिन बाद फिर तीन चिल्ले के लिए आ गए। दूसरी क़िस्म है हर साल में तीन चिल्ले दे आओ और तीसरी क़िस्म यह है हर साल चिल्ला दे दो, जब कुरबान होना ही है एक रास्ते पर मरना ही है तो मरने वाले को तंदरूस्ती की क्या ज़रूरत, मरने वाले को खाने की क्या ज़रूरत है यह तै कर लो, हमें ज़िंदा रहना है या मरना है या अपनी ज़िंदगी बनानी

है या दूसरों की बनाने के लिए अपनी ज़िंदगी बिगाड़नी है, बात तो समझ में आ गई, इंतिज़ाम करके आएंगे। हक़ीक़त में बात ही समझ में न आई, इंतिज़ाम को पीछे डाल तक्लीफ़ों को तैयार होकर आगे आ, जब फ़ाक़े बरदाश्त करके सही ज़िंदगी के आने के लिए मेहनत में उतरोगे तो एक मिनट के लिए अपनी भूख किसी को न बताओ इस भूख पर दुनिया हिला दि जाएगी, आख़िरत में क्या होगा ?

उमूमी बयान न० 21

माल को रद्द भी किया जा सकता है

पीर, ईशा की नमाज़ के बाद, 23, जुलाई, 1962 ई०

(ईशा के बाद हयातुस्सहाबा रज़ि० की तालीम के मौके़ पर)

इस वक़्त हमारी ज़िंदगी में जान व माल का ख़र्च बिगड़ गया है माल का यक़ीन, माल की तलब, माल की मुहब्बत हमारे दिलों में बैठ गई, जान का मौज़ूअ बन गया माल कमाना और माल का मौज़ूअ बन गया अपनी जान पर लगाना, जान में आप सल्ल० की तर्तीब हो। जहां जहां जान लगाने को बताया आपके तरीके़ पर वहां लगाई जाए, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दीन की दावत पर, नक़ल व हरकत पर, तालीम पर जान लगाई, ज़िक्र में ख़िदमत ख़लक में जान लगानी बता गए थे। फिर बीवी बच्चों में, घर में, कारोबार में लगानी, दूर के इलाक़ों में जनाज़े नहलाए भी पैसों में जा रहे हैं, दफ़नाए भी पैसों में जा रहे हैं, क़ब्र में भी पैसों पर खुदवाई कराई जा रही हैं। अपने बेटे को दूसरों को दे दिया, पैसे दे दिए इसको दबा आओ, हुज़ूर सल्ल० ने यहां तब कहा है कि दूसरे के घरों के काम करो। दिल्ली आए तो शहर वालों से मुहल्ले वालों से पूछ आए कोई सौदा मंगवाना हो तो लेता आऊंगा, इसको अपनी जान का काम समझते थे, जैसे नमाज़ अपनी जान का काम है अब लोग अपने नौकर रखते हैं, घर की ख़िदमत भी छोड़ दी, दूसरों की भी छोड़ दी, आवाज़ दी बहन बाज़ार जा रहा हूं, सौदा मंगवाना हो तो बता दो, कल से फ़ाक़ा है अब पैसे लगाने का मौहल निकल आया। अब हम ख़ुद को अपने घर का ज़िम्मेदार समझते, माल की मुहब्बत पैदा हो गई, माल के क़िस्से चल रहे हैं, हुज़ूर सल्ल० मालियात को किस तरह ख़र्च करते थे, आज का

उन्वान यह है माल को रद्द करना। हमने लोगों से पैसे न लिए, रद्द कर दिए कि तुमने तब्लीग में वक़्त नहीं दिया तो मेरे ऊपर एतराज़ किया गया, इस वजह से मैंने सहाबा की ज़िंदगी से बाब बांधा अबू राफ़ेअ जब क्या होगा, जब मेरे बाद तेरी बीनाई जाती रहेगी, फ़क़ीर हो जाए तो फिर क्या होगा सब्र करूंगा। हां, ज़रूरत से ज़्यादा न लीजियो, है कोई आदमी जो इस शख़्स पर सदक़ा करे जिसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी थी कि फ़क़ीर हो जाएगा, किसी ने दो दिरहम दे दिए, एक वापस कर दिया, लेने की सूरत में यह इत्मिनान हो कि तुम्हारी मुआशरत नहीं बिगड़ेगी और ज़रूरतमंदों पर ख़र्च करोगे तो ले लो, अगर हाजत हो तो ब–क़द्र हाजत ले लो, इत्मिनान न हो, हाजत न हो तो वापस कर दो, अब तो कोई दे, नोट दिखाई दिए तो कहा, हां, मैं भी सोच रहा था कि अल्लाह कहीं से भेजें, रद्द का माद्दा ही न रहा, इस वास्ते की सारा यक़ीन माल पर आ गया। अबूबक्र रज़ि० व उमर रज़ि० से बग़ैर पैसे के ख़िलाफ़त चलवाई और हज़रत उस्मान को पैसे देकर ख़िलाफ़त चलवाई, लेकिन ऊंचाई फ़क्र वाली ख़िलाफ़त में बनी है, जो कुर्ब चाहे उसे कुर्ब बख़शते हैं, लेकिन कुर्ब के आदाब हैं, कुर्ब के आदाब में यह है कि अल्लाह के अलावा किसी से ज़ाहिर न करे।

उमूमी बयान न० 22

आफ़त मुसलमान होने की वजह से नहीं ना–फ़रमान होने की वजह से आ रही है

मंगल, ईशा की नमाज़ के बाद, 24 जुलाई, 1962 ई०

बाद नमाज़ ईश हयातुस्सहाबा की तालीम के मौक़े पर

इस ज़माने में माल का यक़ीन, माल की तलब, माल की मुहब्बत दिलों में इतनी बैठ गई कि कोई हद हिसाब नहीं है, जिस शख़्स के पास जितना माल आ जाए वह नक़्दी भी रखना चाहता है, सवारियां, मकान, कपड़े भी बनाना चाहते है, अपने बीवी और बच्चे पर लगाना चाहता है। ठुकराने का सवाल ही नहीं करते, मेरे भाई ख़ुदा की नेमत के होने की वजह से सीने से लगा रहा है कुछ आदमी चंद अमल करते हैं इस्लाम के बाक़ी असली इस्लामी ज़िंदगी जिसने कैसर व किसरा को ख़त्म किया था वह हमारे हाथ से निकल गई। अब जान भी माल के कमाने में लग गई, माल के चक्कर में आकर जान के सारे अमल गए, न दावत, तालीम व ताल्लुम, ज़िक्र व दुआ रही, न रोज़े रहे, तब्लीग़ व दीन की मसाई, ख़िदमत ख़लक़ के सारे मसाइल ख़त्म, जान के सारे अमल ख़त्म हो गए, साहबज़ादे माल कमा रहे हैं। आगे चलकर माल के सारे अमल ख़त्म, ख़ुदा के रास्ते में दावत के लिए माल लगाना, तालीम व तर्तीब में माल लगाना, पब्लिक के मुफ़ाद पर लगाना, जो वबाल में आ जाएं उन पर लगाना यह सब ख़त्म, माल की मुहब्बत है, माल को सिर्फ़ अपने पर ख़र्च करना चाहता है और किसी पर ख़र्च

करना नहीं चाहता, सुबह से शाम तक बैठे बैठे गुज़ार दी, नमाज़ नहीं पढ़ते मियां अंधे हो रहे हो क़ायदा नमाज़ में नहीं है, जब कहो दीन का फ़्लां काम नहीं करते देखते नहीं कमाने में लगा हुआ हूं, साहबज़ादे जिस तरह मुश्रीकीन व नसारा कमा रहे हैं तू भी कमा रहा है सुबह से शाम तक बैठे रहना नमाज़ नहीं है सिर्फ़ क़ायदा का नाम नमाज़ नहीं है। महदूद वक़्त में चारों चीज़ों के करने का नाम नमाज़ है, इस्लामी ज़िंदगी हममें टूटी हुई है अगर हमारा कमाना खाना अल्लाह के यहां इस्लाम क़रार दे दिया गया होता तो मजाल नहीं थी कि हमारे खेतों में कोई आग लगा जाए, सेलाब आ जाए, हमारे घरों में कोई आग लगा दे, इस्लामी ज़िंदगी के साथ ख़ुदा की हिमायत है ख़ुदा की हिमायत पर कोई हाथ नहीं डाल सकता। असल इस्लामी ज़िंदगी हाथ से निकल गई, जो बाक़ी है वह ख़्वाहिश बन गई है, जो तेरे पर आफ़त आ रही है मुसलमान होने की वजह से नहीं आ रही, साहबज़ादे यह आफ़त तेरे नाफ़रमान होने की वजह से आ रही है, यों कहो मैं नाफ़रमान हूं, यह दुआ मांग खुदा मुझे तौफ़िक़ दे कि नाफ़रमानी छोड़ दूं, जब इस्लामी ज़िंदगी बन जाए, फिर ख़ुदा मुसीबते काफ़िरों के हाथ से नहीं पहुंचवाते, ख़ुद मुसीबतों में चाहे मुब्तला कर दें दरजात देने को, तीस हज़ार ताऊन (प्लेग) में मुब्तला होकर मरे, आफ़त आई, अल्लाह की तरफ़ से आई, मुसलमान होने की वजह से कोई मुसीबत नहीं है लिखकर टाकींग दो, नाफ़रमान होने की वजह से मुसीबतें हैं, मुस्लिम के माइने फ़रमांबरदार के हैं, कमाइयों में नाफ़रमान, घरेलू ज़िंदगी में, शादियों में, मकान बनाने में नाफ़रमान, 24 घंटे की ज़िंदगी में नाफ़रमानी में मुसीबतें आ रही हैं, यों कहा नाफ़रमान हूं साहब, खुद भी धोखे में पड़े, दूसरे को भी धोखे में डाले। मुंशी जी भी आएं कि बड़ा अच्छा आदमी है पहले दर्जे का शैतान आदमी है, मुब्लिग़ आदमी है, सरकारी टट्टू, अपने आप कभी तब्लीग़ में निकलकर नहीं आया, जब जमाअत पड़ गई, जलसा हो गया कोई

आफ़त आ गई, वक़्त लगाकर बैठ गया, इस्लामी ज़िंदगी का दाइया ही नहीं। शादी में ढ़ाई हज़ार लगा दे, मुक़द्दमात में झूठे बयानात दे, काफ़िरों की ख़ुशआमद करे, ख़ूब पता है कैसा तब्लीग़ी आदमी है। शादी करे तो सौ की बारात लेकर जाए, ख़ुदा की रास्ते में आए तो बीस रूपये लेकर आए, क़र्ज़ लेकर आया हूं, तब्लीग़ करता ख़ुद की भी मुसीबतें दूर हो तो दूसरे की मुसीबतें दूर होती, यह तब्लीग़ को मुंह चिड़ा रहा है, ख़ुद भी मुसीबतों में पढ़ता है दूसरों को भी मुसीबतों में मुब्तला कराता है, बच्चा बीमार हो गया तो तब्लीग़ ख़त्म, घर में इक्तिसादियात का नक़्शा ख़राब हो गया तो तब्लीग़ ख़त्म। अपनी जान व माल झौंक दो, दूसरे के माल पर ठोकर मारो, एक हाथ लटक रहा है, सहाबी का जंग में रूकावट बन रहा है, इसको पैर के नीचे रखकर अलग कर दिया और जंग में लग गए।

उमूमी बयान न० 23

जब अमल वाली मेहनत पूरी हो जाएगी तो माल वाले अमल वालों के पैरों में पढ़ जाएंगे

फ़जर की नमाज़ के बाद, सनीचर, 14, जुलाई, 1962 ई०

मेरे भाइयों और दोस्तो ! दो रास्ते मेहनत के, एक रास्ते में दिखाई बहुत कुछ देता है लेकिन इंसान नाकामियों का शिकार होता है एक रास्ते में दिखाई कुछ नहीं देता लेकिन इंसान कामियाबियों को पहुंचता है, मेहनत करके माल हासिल करना, माल से चीज़ें और चीज़ों से अपनी ज़िंदगी के मस्अलों को बनाना। यह रास्ता क़दम क़दम पर दिखाई देता है आगे चलकर पैसा बड़े तो घर में दिखाई देगा, मकान कपड़े, चीज़ें दिखाई देती रहेंगी। इनसे परवरिश दिखाई देती रहेगी, इस रास्ते की मुसीबतें छिपी रहेंगी राहतें दिखाई देती रहेंगी, किसी भी दिन ख़ुदा का ग़ज़ब मुतावज्जोह होगा। दिल फ़ाड़ दिए बीवी बच्चों के या आग लगाकर घर या दुकान के नक़्शे को ख़त्म कर दिया यह रास्ता बहुत घटिया है, ख़ुदा को पसंद नहीं है, चीज़ें ही दिल में हो, चीज़ें ही आंखों के सामने हों, इसी पर यक़ीन, इसी की मुहब्बत, इस्लातन यह रास्ता अपने ना मानने वालों को दिया है, इस रास्ते से अव्वल बनाते हैं और आख़िर बिगाड़ते हैं, आख़िर ला महदूद है और अव्वल बहुत थोड़ा सा है, दूसरा रास्ता बिल्कुल इसके मुक़ाबिल है वह यह है कि मेहनत करके हिदायत हासिल की जावे, हिदायत हासिल करके कामियाबी ली जाएं, इस रास्ते में क़दम–क़दम पर ना–कामियाबियां दिखाई देंगी। चीज़ों की, माल की कमी दिखाई देगी, इसके अंदर आमाल क़ायम किए जाएंगे,

इसकी कामियाबियां, राहतें, हिफ़ाज़त, इज़्ज़त छुपी हुई होगी, ना–कामियां खुली हुई होंगी, लोग ताने देंगे यही है अल्लाह वाले, किसी भी दिन अल्लाह तआला इनके लिए एक दम दरवाज़ा खोलेंगे और बिगड़ी हुई ज़िंदगी बनाएंगे। माल पर करें मेहनत और आमाल का करें इक़रार, इस ज़माने के मुसलमानों ने यह रास्ता बना लिया, तज़्किरे अमल के करें, इक़रार अमल का करें, ज़िंदगी माल से बनाएं, अल्लाह तआला ने तीसरे रास्ते वालों के वास्ते तीसरी क़सम रखी है एक नरे आमाल वाली, एक नरी माल वाली और एक ख़लत मलत, ज़िंदगी की सारी मेहनत माल पर, थोड़ा सा वक़्त आमाल पर, रिवाज के या कहने सुनने या देखने के एतबार से कुछ अमल कर लिए, तीनों के साथ अल्लाह का मामला अलग है जिनका का मक़्सद यह है कि मेहनत से माल, माल से चीज़, चीज़ से ज़िंदगी, अल्लाह तआला इनकी पहली बनाएंगे और बाद की बिगाड़ देंगे दूसरे यह कि मेहनत करके हिदायत, हिदायत से अमल, अमल से कामियाबी, इनकी पहली की बिगाड़ेंगे बाद की बनाएंगे, जब यह अमल की मेहनत मुकम्मल हो जाएगी। तो ग़ैब से ऐसी सूरत ज़ाहिर फ़रमाएंगे कि माल वाले अमल वालों के पैरों में पड़ जाएंगे कि मुल्क की खेती बाड़ी, कारोबारी निज़ाम भी मुंतिक़ल कर देंगे, अमल वाले अमल के रास्ते से जब तक लेने पर न आ जाएं, तीसरा रास्ता जो अमल ख़राब किए हैं दुनिया में इसकी तक्लीफ़ें उठाएंगे, आसमान से भी आफ़तें, ज़मीन वालों से भी आफ़तें इनकी सज़ा होगी जो अमल थोड़े हैं और जो अमल किए हैं इनकी जन्नत मिल जाएगी। जब तक अमल का म्यार क़ायम हो दुनिया में मुसीबत में रहेंगे और जब अमल का म्यार क़ायम हो जाएगा तो आख़िरत भी दे देंगे माल का रास्ता चालू है। अमल के रास्ते से कामियाबी लेने का रास्ता ख़त्म हो रहा है, माल का रास्ता और अमल का रास्ता बिल्कुल मुक़ाबले में है, मेहनत की दो क़िस्में हैं, हर क़िस्म में दो शाख़ें हैं, तीसरी को अलग रखो, माल की मेहनत में पहली मेहनत माल हाथ में आ जाए।